4196

भगवती-जोड़

(खण्ड-३)

श्रीमज्जयाचार्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन आगमों के मुख्य दो विभाग हैं- अंग और अंग बाह्य। अंग बारह थे। आज केवल ग्यारह अंग ही उपलब्ध होते हैं। उनमें पांचवां अंग है- भगवती। इसका दूसरा नाम व्याख्या-प्रज्ञप्ति है। इसमें अनेक प्रश्नों के व्याकरण हैं। जीव-विज्ञान, परमाणु-विज्ञान, सृष्टि-विधान, रहस्यवाद, अध्यात्म - विद्या, वनस्पति- विज्ञान आदि विद्याओं का यह आकर-ग्रन्थ है। उपलब्ध आगमों में यह सबसे बडा है। इसका ग्रन्थमान १६००० अनुष्टुप् श्लोक प्रमाण माना जाता है। नवांगी टीकाकार अभयदेव सूरी ने इस पर टीका लिखी। उसका ग्रन्थमान अठारह हजार श्लोक प्रमाण है।

भगवती सूत्र की सबसे बड़ी व्याख्या है- यह 'भगवती जोड़'। इस की भाषा है राजस्थानी। यह पद्यात्मक व्याख्या है, इसलिए इसे 'जोड़' की संज्ञा दी गई है।

इस ग्रन्थ में सर्व प्रथम जयाचार्य द्वारा प्रस्तुत जोड़ के पद्य और ठीक उनके सामने उन पद्यों के आधार-स्थल दिये गये हैं। जयाचार्य ने मूल के अनुवाद के साथ-साथ अपनी ओर से स्वतंत्र समीक्षा भी की है।

*

आवरण पृष्ठ पर मुद्रित हस्त-लिखित पत्र ग्रन्थ की ऐतिहासिक पाण्डुलिपि के नमूने हैं। इनकी लेखिका हैं- तेरापंथ धर्मसंघ की विदुषी साध्वी गुलाब, जो आशु- लेखन की कला में सिद्धहस्त थीं। जयाचार्य भगवती-जोड की रचना करते हुए पद्यों का सृजन कर बोलते जाते और महासती गुलाब अविकल रूप से उन्हें कलम की नोक से कागज पर उतारती जातीं। उस प्रथम ऐतिहासिक प्रति के ये पत्र प्रज्ञा, कला और ग्रहण-शीलता की समन्विति के जीवन्त साक्ष्य हैं। मुद्रण का आधार यही प्रति है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only

भगवती-जोड़

(श० ९ से ११)

श्रीमज्जयाचार्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जय वाङ्मय : ग्रन्थ १४

भगवती-जोड़

खण्ड ३

(श० ६ से ११)

प्रवाचक

आचार्य तुलसी

प्रधान सम्पादक

युवाचार्य महाप्रज्ञ

प्रकाशक

जैन विश्व भारती

लाडनूं (राजस्थान)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्पादन

साध्वी-प्रमुखा कनकप्रभा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रबन्ध-सम्पादक :
श्रीचन्द रामपुरिया
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन
(जैन विश्व भारती)

प्रथम संस्करण :
१६६०

मूल्य जैन विश्व भारती
मूल्य ४००/-

मुद्रक :
मित्र परिषद् कलकत्ता के आर्थिक सौजन्य से स्थापित
जैन विश्व भारती प्रेस, लाडनूं (राजस्थान)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

'भगवती-जोड़' का प्रथम खण्ड जयाचार्य निर्वाण शताब्दी के अवसर पर 'जय वाङ्मय' के चतुर्दश ग्रन्थ के रूप में सन् १९८१ में प्रकाशित हुआ था। इसका दूसरा खण्ड सन् १९८६ में प्रकाशित हुआ। अब उसी ग्रन्थ का तृतीय खंड पाठकों के हाथों में सौंपते हुए अति हर्ष का अनुभव हो रहा है।

प्रथम खण्ड में उक्त ग्रन्थ के चार शतक समाहित है। द्वितीय खण्ड में पांचवें से लेकर आठवें शतक तक की सामग्री समाहित है। प्रस्तुत खण्ड में नौवें से ग्यारहवें तक तीन शतक संगृहीत हैं।

साहित्य की बहुविध दिशाओं में आगम ग्रन्थों पर श्रीमज्जयाचार्य ने जो कार्य किया है वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। प्राकृत आगमों को राजस्थानी जनता के लिए सुबोध करने की दृष्टि से उन्होंने उनका राजस्थानी पद्यानुवाद किया जो सुमधुर रागिनियों में ग्रथित है।

प्रथम आचारांग की जोड़, उत्तराध्ययन की जोड़, अनुयोगद्वार की जोड़, पन्नवणा की जोड़, संजया की जोड़, नियंठा की जोड़—ये कृतियां उक्त दिशा में जयाचार्य के विस्तृत कार्य की परिचायक हैं।

"भगवई" अंग ग्रन्थों में सबसे विशाल है। विषयों की दृष्टि से यह एक महान् उदधि है। जयाचार्य ने इस अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण आगम-ग्रन्थ का भी राजस्थानी भाषा में गीतिकाबद्ध पद्यानुवाद किया। यह राजस्थानी भाषा का सबसे बड़ा ग्रंथ माना गया है। इसमें मूल के साथ टीका ग्रंथों का भी अनुवाद है और वार्तिक के रूप में अपने मंतव्यों को बड़ी स्पष्टता के साथ प्रस्तुत किया है। इसमें विभिन्न लय ग्रथित ५०१ ढालें तथा कुछ अन्तर ढालें हैं। ४१ ढालें केवल दोहों में हैं। ग्रन्थ में ३२९ रागिनियां प्रयुक्त हैं।

इसमें ४९९३ दोहे, २२२५४ गाथाएं, ६५५२ सोरठे, ४३१ विभिन्न छन्द, १८४८ प्राकृत, संस्कृत पद्य तथा ७४४६ पद्य-परिमाण ११९० गीतिकाएं, ९३२९ पद्य-परिमाण ४०४ यन्त्रचित्र आदि हैं। इसका अनुष्टुप् पद्य-परिमाण ग्रंथाग्र ६०९०६ है।

प्रस्तुत खंड में मूल राजस्थानी कृति के साथ सम्बन्धित आगम पाठ और टीका की व्याख्या गाथाओं के समकक्ष में दे दी गई है। इससे पाठकों को समझने की सुविधा के साथ-साथ मूल कृति के विशेष मंतव्य की जानकारी भी हो सकेगी।

इस ग्रंथ का कार्य युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी के तत्त्वाधान में हुआ है और साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी ने उनका पूरा-पूरा हाथ बंटाया है। उनका श्रम पग-पग पर अनुभूत होता-सा दृग्गोचर होता है।

योगक्षेम वर्ष की सम्पन्नता के बाद बहुत शीघ्र ही ऐसे ग्रंथ-रत्न के तृतीय खंड को पाठकों के हाथों में प्रदान करते हुए जैन विश्व भारती अपने आपको अत्यन्त गौरवान्वित अनुभव करती है।

इस ग्रंथ का मुद्रण कार्य जैन विश्व भारती के निजी मुद्रणालय में संपन्न हुआ है, जिसकी स्थापना जयाचार्य निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में मित्र परिषद् कलकत्ता के आर्थिक सौजन्य से हुई थी।

श्रीचन्द रामपुरिया
कुलपति
जैन विश्व भारती

४-३-९०
सुजानगढ़

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्पादकीय

भगवती जोड़ का तीसरा खण्ड तीन शतकों का समवाय है। प्रथम और द्वितीय खण्ड में चार-चार शतक हैं। प्रस्तुत खण्ड में नौवां शतक बहुत विस्तृत है, इसलिए तीन ही शतक आ पाए हैं। नौवें शतक की विषय वस्तु इसकी संग्रहणी गाथा में संकलित है। उस गाथा की जोड़ इस प्रकार है—

प्रथम उद्देशे मेव, जंबूद्वीप नीं वारता।
द्वितीय ज्योतिषी देव, वक्तव्यता तेहनी अछै ।।
अन्तर्द्वीपा जेह, अष्टवीस उद्देश तसु।
असोच्चा नैं गंगेय, उद्देशक बत्तीसमो ।।
कुंडग्राम बलि जाण, पुरुष हणे जे पुरुष नैं।
नवमे शतक पिछाण, उद्देशा चउतीस ए ।।

प्रथम उद्देशक में जंबूद्वीप का वर्णन है। जंबूद्वीप के संबंध में जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति में विस्तृत विवेचन है। उसका उल्लेख करते हुए यहां कुछ संक्षिप्त सूचनाओं का आकलन किया गया है।

दूसरे उद्देशक में यह बताया गया है कि जम्बूद्वीप क्षेत्र में दो चन्द्रमा और दो सूर्य हैं। लवण समुद्र में चार चन्द्रमा और चार सूर्य हैं। धातकी खण्ड में बारह चन्द्रमा और बारह सूर्य हैं। कालोदधि में चन्द्रमा और सूर्य की संख्या बयालीस-बयालीस है। पुष्करद्वीप में एक सौ चम्मालीस चन्द्रमा और एक सौ चम्मालीस सूर्य हैं। इनमें से बहत्तर चन्द्रमा और बहत्तर सूर्य गतिशील हैं। शेष मनुष्य क्षेत्र से बाहर होने के कारण स्थिर हैं। इस वर्णन के अनुसार मनुष्य क्षेत्र में एक सौ बत्तीस चन्द्रमा और एक सौ बत्तीस सूर्य गति करते हैं। यह जैन आगमों का ज्योतिर्विज्ञान है। आधुनिक विज्ञान के साथ इसकी संगति कैसे बैठती है, यह काम शोधकर्ताओं का है।

तीसरे से तीसवें तक अट्ठावीस उद्देशकों में अन्तर्द्वीपों का वर्णन है। यह वर्णन बहुत संक्षिप्त है। फिर भी इसमें द्वीपों के नाम और उनकी लम्बाई चौड़ाई को स्पष्ट रूप से निर्दशित किया गया है।

इकतीसवें उद्देशक में असोच्चा केवली का प्रकरण है। प्रस्तुत ग्रंथ के बीस पृष्ठों में इस प्रसंग को सहज और सरल रूप में प्रतिपादित किया गया है। असोच्चा केवली के साथ प्रसंगवश सोच्चा केवली का भी संक्षिप्त विवेचन दिया गया है।

नौवें शतक का बत्तीसवां उद्देशक विलक्षण है। यह उद्देशक या शतक विशेष रूप से गंगेयजी के भंगों के नाम से प्रसिद्ध है। गंगेय तीर्थंकर पार्श्वनाथ की परम्परा का साधु था। वह भगवान महावीर के पास आया। उसने भगवान से नैरयिक जीवों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में प्रश्न पूछे। भगवान ने उन प्रश्नों के उत्तर दिये। उत्तर में से प्रश्न निकलते गए और जिज्ञासा-समाधान का एक लंबा सिलसिला चल पड़ा। गणित के विद्यार्थियों के लिए यह बहुत ही रोचक विषय है। प्रस्तुत ग्रन्थ के १६० पृष्ठों में किया गया यह विवेचन ज्ञानवृद्धि के साथ मानसिक एकाग्रता के लिए भी अमोघ साधन है। पाठक की गणित में अभिरुचि न हो तो यह प्रसंग अनपेक्षित विस्तार की प्रतीति भी दे सकता है। जयाचार्य ने इस समग्र प्रसंग को जोड़ के साथ-साथ विविध यंत्रों में आबद्ध कर विशिष्ट सृजन प्रतिबद्धता का परिचय दिया है।

तेतीसवें उद्देशक में ऋषभदत्त और देवानन्दा की दीक्षा का प्रसंग है। इसी शृंखला में जमालि का विस्तृत वर्णन है। जमालि की दीक्षा और जनपद विहार की अनुमति मांगने तक का विवेचन सामान्य है। उसके बाद घटना दूसरा मोड़ लेती है। जमालि के बार-बार अनुरोध पर भी भगवान् ने उसको स्वतन्त्र विहार की अनुमति नहीं दी। भगवान् के मौन का लाभ उठाकर उसने अपने पांच सौ शिष्यों के साथ प्रस्थान कर दिया।

श्रावस्ती नगरी में जमालि अस्वस्थ हो गया। वहां उसने अपने शिष्यों को बिछौना बिछाने का निर्देश दिया। जमालि की अस्वस्थता बढ़ रही थी। वह बैठने में भी असमर्थ हो गया। उसने शिष्यों से दूसरी बार बिछौने के बारे में पूछा। शिष्यों ने कहा—बिछौना अब तक बिछा नहीं है, बिछाया जा रहा है। इस बात पर जमालि का मन संदिग्ध हो उठा। उसने भगवान महावीर के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'क्रियमाण कृत' सिद्धान्त को असत्य मानकर उनसे अपना संबंध विच्छेद कर लिया।

भगवान् से सम्बन्ध विच्छेद करने के बाद अपने मिथ्या अभिनिवेश के कारण जमालि असत् सिद्धान्तों का निरूपण करता रहा। आयुष्य पूर्ण होने पर वह किल्विषिक देव बना। यह पूरा प्रसंग स्पष्ट करता है कि गुरु की प्रत्यनीकता के कारण व्यक्ति अपना कितना अहित कर लेता है।

इस शतक के अन्तिम उद्देशक में कुछ स्फुट प्रसंग वर्णित हैं। कुल मिलाकर पूरे शतक की जोड़ पाठक की रुचि को परिष्कृत करने वाली है। अनेक स्थलों पर मूल पाठ के साथ वृत्ति की भी जोड़ की गई है।

दसवें शतक के भी चौतीस उद्देशक हैं उनकी सूचना संग्रहणी गाथा में इस प्रकार हैं—

दिस संवुड अणगारे आइड्ढी सामहत्थि देवि सभा।
उत्तर अन्तरदीवा दसमम्मि सयम्मि चउत्तीसा॥

प्रथम उद्देशक में दिशाओं का वर्णन है। शरीर के संबंध में यहां उल्लेख मात्र हुआ है। विस्तृत विवेचन के लिए प्रज्ञापना सूत्र के इक्कीसवें पद का संकेत किया है।

दूसरे उद्देशक में ऐर्यापथिकी और साम्परायिकी क्रियाओं की प्राप्ति का वर्णन है। मूल आगम में योनि वर्णन में प्रज्ञापना के नौवें पद का संकेत देकर पूरे प्रकरण को अत्यन्त संक्षिप्त रखा गया है। जोड़ में भगवती और प्रज्ञापना की वृत्ति के आधार कुछ विस्तार के साथ निरूपित किया गया है। इसके बाद वेदना, प्रतिमा, आराधना आदि का वर्णन है।

तीसरे उद्देशक की आदि में देवों का वर्णन है और उसके अन्तिम भाग में प्रज्ञापनी, आमंत्रणी आदि भाषाओं का विवेचन है। चौथे उद्देशक में असुरकुमार आदि देवों के मंत्रीस्थानीय त्रायस्त्रिंश देव तथा पांचवें उद्देशक में उनकी देवियों के परिवार का वर्णन है।

छठे उद्देशक में देवविमानों का वर्णन है। इसका प्रारंभ शक्र की सुधर्मा सभा के सम्बन्ध में प्रश्न उपस्थित करते हुए किया गया है। आगमकार ने राजप्रश्नीय सूत्र का उल्लेख कर पूरे प्रसंग को विराम दे दिया। वृत्तिकार ने इसको थोड़ा-सा आगे बढ़ाया है। भगवती-जोड़ में इस प्रसंग को बहुत विस्तार से दिया गया है। यह विस्तार राजप्रश्नीय सूत्र को आधार बनाकर किया गया है। इसकी सूचना देते हुए जयाचार्य ने लिखा है—

हिव वर्णक अभिषेक नुं इन्द्र तणो अवधार।
रायप्रश्नेणी सूत्र थी, कहियै इहां उदार॥

प्रस्तुत ग्रन्थ के ३४८ वें पृष्ठ से शुरू होकर ३८० वें पृष्ठ तक ३३ पृष्ठों में आबद्ध यह वर्णन स्वर्गलोक और उसकी परंपराओं का सजीव चित्र उपस्थित करने वाला है। इस प्रसंग में जयाचार्य ने मूर्तिपूजा के संबंध में आगमों के आधार पर एक लम्बी-चौड़ी समीक्षा (पृ० ३६८-३७३) लिखी है, जो सूक्ष्म दृष्टि से मननीय है।

शेष अट्ठाईस उद्देशकों में उत्तर दिशा स्थित अट्ठाईस अन्तर्द्वीपों का उल्लेख केवल दो दोहों में किया है—

प्रभु! उत्तर नां मनुष्य नो एकोरुक अभिधान।
तास द्वीप पिण एकरुक किहां कह्यो भगवान?
इम जिम जीवाभिगम में तिमज सर्व सुविशेष।
जाव शुद्धदंत द्वीप लग, ए अठवीस उद्देश॥

नौवें शतक में दक्षिण दिशा के अन्तर्द्वीपों का उल्लेख है और दसवें शतक में उत्तर दिशा के। इस प्रकार दक्षिण एवं उत्तर के अन्तर्द्वीपों को संयुक्त करने से इनकी संख्या छप्पन हो जाती है।

ग्यारहवें शतक के प्रथम आठ उद्देशकों में उत्पल आदि वनस्पति जीवों का वर्णन है। नौवें उद्देशक में राजर्षि शिव का जीवनवृत्त है। राजा शिव दिशापोखी तापस बना था। उस प्रसंग में होत्तिय, पोत्तिय आदि अनेक प्रकार के तापसों की चर्या पर प्रकाश डाला गया है। तापस चर्या का पालन करते-करते राजर्षि शिव को विभंग अज्ञान उत्पन्न हुआ। सात द्वीप और सात समुद्रों तक उसके ज्ञान की सीमा थी। उसने यह बात जनता के बीच में कही। गणधर गौतम ने यह बात सुनी। उनके माध्यम से सारी घटना भगवान् महावीर तक पहुंची। उन्होंने असंख्य द्वीप और असंख्य समुद्रों का निरूपण किया। राजर्षि शिव के पास यह संवाद पहुंचा। वह भगवान के पास आया। भगवान ने उसको प्रतिबोध दिया। प्रतिबुद्ध होकर भगवान की शरण में आ गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इस शतक के दसवें उद्देशक में लोक और अलोक का विवेचन है। ग्यारहवें उद्देशक में काल का वर्णन है। भगवान महावीर के पास काल सम्बन्धी प्रश्न सेठ सुदर्शन ने उठाया। उस प्रश्न के उत्तर में सेठ सुदर्शन के पिछले भव को विस्तार के साथ वर्णित किया है। बारहवें उद्देशक में ऋषिभद्र और पोग्गल परिव्राजक का वर्णन है।

प्रस्तुत खण्ड का सम्पादन भी पूर्व दो खण्डों की तरह परम श्रद्धास्पद आचार्य श्री तुलसी के सान्निध्य में बैठकर किया गया हैं। ग्रन्थ की भाषा, शैली तथा ग्रन्थाकार के सम्बन्ध में पूर्व दो खण्डों के सम्पादकीय में चर्चा हो चुकी है। इस दृष्टि से प्रस्तुत खंड में केवल तीन शतकों की विषय वस्तु को ही उल्लिखित किया गया है।

प्रथम दो खण्डों में ग्रन्थ के प्रारंभ में विषयानुक्रम नहीं है। अनुक्रम के संकेत बिना इतने बड़े ग्रन्थ में किसी विषय को खोजना बहुत कठिन प्रतीत हुआ। इस क्षेत्र में शोध करने वाले विद्वानों को इस कठिनाई का सामना न करना पड़े, इस दृष्टि से प्रस्तुत खण्ड में ग्रन्थ के प्रारम्भ में विषयानुक्रम दिया गया है। ग्रन्थ का एक बड़ा भाग मुद्रित होने के बाद यह बात ध्यान में आई इसलिए ग्रन्थ के बीच विषयों की सूचना नहीं दी जा सकी। इस कमी की पूर्ति अगले खण्ड में की जा सकेगी।

परमाराध्य आचार्यश्री का दिशाबोधक सान्निध्य समय-समय पर युवाचार्यश्री का मार्ग-दर्शन और सहकर्मी साधु-साध्वियों का आत्मीय सहयोग भगवती-जोड़ की इस यात्रा को आगे से आगे सरल और आह्लाददायक बनाता रहे, यही आकांक्षा है।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषयानुक्रम

विषय	पृष्ठ
१. जम्बूद्वीप पद	१
२. ज्योतिष पद	७
३. अन्तरद्वीप पद	१०
४. असोच्चा उपलब्धि पद	१५
५. सोच्चा उपलब्धि पद	३१
६. गांगेय प्रश्न	३५
७. ऋषभदत्त देवानन्दा पद	२२५
८. जमालि पद	२३७
९. एकवध-अनेकवध	३००
१०. आनापान पद	३०३
११. क्रिया पद	३०६
१२. दिशा पद	३११
१३. शरीर पद	३१६
१४. संवृतक्रिया पद	३१७
१५. योनि पद	३१९
१६. वेदना पद	३२२
१७. भिक्षु प्रतिमा पद	३२४
१८. आराधक-विराधक पद	३२४
१९. गमन आदि देव विनय पद	३२५
२०. प्रज्ञापनी भाषा पद	३२८
२१. त्रायस्त्रिंशग पद	३३१
२२. दिव्य भोग पद	३३६
२३. सुधर्मा सभा पद	३४७
२४. उत्पलादि जीवों का उत्पाद पद	३८५
२५. शिवराज ऋषि पद	३९६
२६. लोकालोक पद	४१४
२७. सुदर्शन सेठ पद	४२८
२८. ऋषिभद्र पुत्र पद	४६५
२९. पुद्गलपरिव्राजक पद	४६९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवम शतक

ढाल : १६९

सोरठा

१. शतक आठमों एह, हुओ संपूरण अर्थ थी।
नवमों हिवै कहेह, चित्त लगाई सांभलो।।
२. अष्टम शतक मझार, विविध पदारथ आखिया।
नवमें पिण सुविचार, तेहिज भंगंतर करी।।
३. प्रथम उद्देशे भेव, जंबूद्वीप नीं वारता।
द्वितीय जोतिषी देव, वक्तव्यता तेहनीं अछै।।
४. अंतरद्वीपा जेह, अष्टवीस उद्देश तसु।
असोच्चा नें गंगेय, उद्देशक बत्तीसमों।।
५. कुंडग्राम बलि जाण, पुरुष हणैं जे पुरुष नें।
नवमें शतक पिछाण, उद्देशा चउतीस ए।।

१. व्याख्यातमष्टमशतमथ नवममारभ्यते।
(वृ०प० ४२५)
२. अष्टमशते विविधाः पदार्था उक्ताः, नवमेऽपि त एव भंग्यन्तरेणोच्यन्ते। (वृ० प० ४२५)
३-५. जंबुद्दीवेजोइस अंतरदीवा असोच्च गंगेय।
कुंडग्गामे पुरिसे णवमम्मि सतम्मि चोत्तीसा ।।१।।
(श० ९ संगहणी-गाहा)
'जंबुद्दीवे' त्ति तत्र जम्बूद्वीपवक्तव्यताविषयः प्रथमोद्देशकः, 'जोइस' त्ति ज्योतिष्कविषयो द्वितीयः, 'अंतरदीव' त्ति अन्तरद्वीपविषया अष्टाविंशतिरुद्देशकाः........ 'गंगेय' त्ति गांगेयाभिधानगारवक्तव्यतार्थो द्वात्रिंशत्तमः........'पुरिसे' त्ति पुरुषः पुरुषं घ्नन्नित्यादिवक्तव्यतार्थश्चतुस्त्रिंशत्तमः। (वृ० प० ४२५)

६. तिण काले नें तिण समय, नगरी मिथला नाम।
माणभद्र है चैत्य वर, वर्णन अति अभिराम।।
७. समवसरचा स्वामी तिहां, परषद वंदण जाय।
जावत गोतम वीर नीं, सेव करी कहै वाय।।
८. जंबूद्वीप प्रभू! किहां, किण संठाण कहेव ?
जंबूद्वीपपन्नती में कह्यो, यावत एवामेव।।

६. तेणं कालेणं तेणं समएणं मिहिला नामं नगरी होत्था —वण्णओ। माणिभद्दे चेतिए—वण्णओ।
७. सामी समोसढे, परिसा निग्गता जाव भगवं गोयमे पज्जुवासमाणे एवं वदासी—
८. कहि णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे? किंसंठिए णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे? एवं जंबुद्दीवपण्णत्ती [१।७-६।१२६] भाणियव्वा जाव एवामेव।

९. चउद लक्ष छप्पन सहस्र, नदी तणैं परिवार।
पूरब पश्चिम थी मिलै, लवणसमुद्र मझार।।
१०. किहां वाचना-अंतरे, जंबूद्वीपपन्नत्ती मांय।
तिम कहिवो जोतिषी बिना, वर्णन सर्व कहाय।।
११. जंबूद्वीपपन्नत्ती विषे, जोतिषी वर्णन जाण।
ते तो इहां भणवूं नहीं, अपर समस्त बखाण।।
१२. जोतिषि वक्तव्यता बिना, जंबूद्वीपपन्नत्ती सूक्त।
इण उद्देशा नों अछै, वाचनांतरे उक्त।।

९. सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे चोद्दस सलिला-सयसहस्सा छप्पन्नं च सहस्सा भवंतीति मक्खाया।
(श० ९।१)

वा०—एवं जंबुद्दीवपण्णत्ती भाणियव्वा[1] इम कह्यो ते पाठ लिखिये छै—

केमहालए णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे ...किमागारभावपडोयारे णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे पण्णत्ते? गोयमा! अयं णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भितरए सव्वखुड्डाए वट्टे तेल्लापूयसंठाणसंठिए, वट्टे रहचक्कवालसंठाणसंठिए, वट्टे पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिए, वट्टे पडिपुण्णचंदसंठाणसंठिए एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं, (१।७)।

इत्यादि केतला लगै कहिवो ते कहै छै—एवामेवत्ति तिणहिज न्याये सपुव्वावरेण त्ति पूर्व तथा पश्चिम सहित नदी नां वृंद तिणे करी।

जंबुद्दीवे दीवे चोद्दस सलिलासयसहस्सा छप्पण्णं च सहस्सा भवंतीति मक्खायं[1]। चउदै लाख छप्पन हजार नदी नीं विगत—

वा०—'एवामेव' त्ति उक्तेनैव न्यायेन पूर्वापरसमुद्रगमनादिना 'सपुव्वावरेणं' त्ति सह पूर्वेण नदीवृन्देनापरं सपूर्वापरं तेन।

१. जं० ६।१९-२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भरतक्षेत्रे गंगा अनै सिंधु, एरवत क्षेत्रे रक्ता अनै रक्तवती ए चार महानदी प्रत्येके चउदे-चउदे सहस्र परिवारे युक्त छै तथा हेमवंत क्षेत्रे रोहिता अनैं रोहितांशा ऐरण्यवत क्षेत्रे सुवर्णकूला अनै रूप्यकूला ए चार प्रत्येके अठाईस सहस्र नदी युक्त छै तथा हरिवर्ष क्षेत्रे हरि अनै हरिकंता रम्यक क्षेत्रे नरकंता अनै नारीकंता ए चार महानदी प्रत्येके प्रत्येके छप्पन सहस्र नदी नें परिवार युक्त छै तथा महाविदेह खेत्र में सीता अनै सीतोदा महानदी प्रत्येके पांच लाख बत्तीस सहस्र नदी नें परिवारे युक्त छै। सर्व ए चउदै महानदी नों परिवार भेलो करै तिवारै चउदै लाख छप्पन सहस्र नदी हुवै।

किहाइक वाचनांतरे इम दीसै छै—

जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए तहा नेयव्वं जोइसविहूणं जाव—

खंडाजोयणवासापव्वयकूडा य तित्थ सेढीओ।

विजयद्दहसलिलाओ, पिंडए होइ संगहणी॥[1]

तिहां जोतिपविहूणंति जंबूद्वीपपन्नत्ती नें विषे जोतिष्क नीं वक्तव्यता छै तेणे हीन समस्त जंबूद्वीपपन्नत्ती सूत्र छै, ते इण उद्देशा नो सूत्र जाणवो। पिण किहा लगै ते कहै छै- तत्र खंडत्ति जंबूद्वीप नें विषे भरतक्षेत्र प्रमाण खंड केतला हुवै ते कहै छै--एक सौ नेऊ खंड हुवै।

जोयणत्ति जंबूद्वीप नां योजन-योजन प्रमाण खंड करियै तिवारै केतला खंड हुवै ते कहै छै—

सातसौ नेउ कोड़ छप्पन लाख चोणमें हजार एक सौ पचास योजन अनै साहियं कहितां कांइक जाझेरा सहित। जद कोइ पूछै—जाझेरू केतलो? ते आगल कहै छै—गाउयमेगं कहितां एक गाउ, पण्णरस धणुसया कहितां एक हजार पांचसौ धनुष्य, तह धणुणि पनरस कहितां तिमज पनरह धनुष्य, सट्ठिं च अंगुलाइं कहितां साठ आंगुल जम्बूद्वीप नो गणितपद ते इण प्रकार करिकै गणित नीं संज्ञा।

वासत्ति जंबूद्वीप नै विषे भरत हेमवंतादिक सात वर्ष क्षेत्र छै।

पव्वयत्ति जंबूद्वीप नै विषे केतला पर्वत छै? हिमवंतादिक छह तो वर्षधर पर्वत छै, एक मेरु पर्वत छै, एक चित्रकूट, एक विचित्रकूट—ए बे देवकुरु नें विषे छै, दो यमक पर्वत—ए बे उत्तरकुरु ने विषे छै, सीता सीतोदा नदी पासै बे सौ कांचनगिरि छै, बीस वक्खारा छै, चोत्रीस दीर्घ वैताढ्य, चार वर्तुल वैताढ्य इम दो सौ गुणंतर पर्वत छै।

कूडत्ति केतला पर्वत नां कूट छै? ते कहै छै—छप्पन तो वर्षधर नां कूट, छिनमें वक्खारा पर्वत नां कूट, वैताढ्य नां तीनसौ छह कूट अनै नौ मेरु पर्वत नां कूट छै।

तित्थत्ति जंबूद्वीप नें विषे केतला तीर्थ छै? बत्तीस विजय अनै भरत एरवत इम चौतीस खंड छै। तिहां एकीके खंडे त्रिण-त्रिण तीर्थ छै। सर्व एकसौ दो तीर्थ छै।

---

१. जं० ६।६

भरतैरावतयोर्गगासिन्धुरक्तारक्तवत्यः प्रत्येकं चतुर्दशभिर्नदीनां सहस्रैर्युक्ताः, तथा हैमवतैरण्यवतयोः रोहिद्रोहितांशासुवर्णकूलारूप्यकूलाः प्रत्येकमष्टाविंशत्या सहस्रैर्युक्ताः, तथा हरिवर्षरम्यकवर्षयोर्हरिहरिकान्ताः नरकान्तानारीकान्ताः प्रत्येकं षट्पञ्चाशता सहस्रैर्युक्ताः समुद्रमुपयान्ति, तथा महाविदेहे शीताशीतोदे प्रत्येकं पञ्चभिर्लक्षैर्द्वात्रिंशता च सहस्रैर्युक्ते समुद्रमुपयात इति, सर्वासां च मीलने सूत्रोक्तं प्रमाणं भवति।

वाचनान्तरे पुनरिदं दृश्यते—

'जोइसविहूणं' ति जंबूद्वीपप्रज्ञप्त्यां ज्योतिष्कवक्तव्यताऽस्ति तद्विहीनं समस्तं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रमस्योद्देशकस्य सूत्रं ज्ञेयं, किं पर्यवसानं पुनस्तद्? इत्याह—जाव खंडेत्यादि, तत्र खंडे त्ति जम्बूद्वीपो भरतक्षेत्रप्रमाणानि खण्डानि कियन्ति स्यात्? उच्यते, नवत्यधिकं खण्डशतं।

'जोयण' त्ति जम्बूद्वीपः कियन्ति योजनप्रमाणानि खण्डानि स्यात्? उच्यते—

सत्तेव य कोडिसया णउया छप्पन्नसयसहस्साइं।

चउणवइं च सहस्सा सयं दिवड्ढं च साहीयं॥

गाउयमेगं पन्नरस धणुस्सया तह धणूणि पन्नरस।

सट्ठिं च अंगुलाइं जंबुद्दीवस्स गणियपयं॥

इति, गणितपदमित्येवं प्रकारस्य गणितस्य संज्ञा।

'वास' त्ति जम्बूद्वीपे भरतहेमवतादीनि सप्त वर्षाणि क्षेत्राणीत्यर्थः।

'पव्वय' त्ति जम्बूद्वीपे कियन्तः पर्वताः? उच्यन्ते, षड्वर्षधरपर्वता हिमवदादयः एको मन्दरः एकश्चित्रकूटः एक एव विचित्रकूटः, एतौ च देवकुरुषु, द्वौ यमकपर्वतौ, एतौ चोत्तरकुरुषु, द्वे शते काञ्चनकानाम्, एते च शीताशीतोदयोः पार्श्वतो, विंशतिः वक्षस्काराः, चतुस्त्रिंशद्दीर्घविजयार्द्धपर्वताश्चत्वारो वर्त्तुलविजयार्द्धा, एवं द्वे शते एकोनसप्तत्यधिके पर्वतानां भवतः।

'कूड' त्ति कियन्ति पर्वतकूटानि? उच्यते, षट्पञ्चाशद्वर्षधरकूटानि षण्णवतिर्वक्षस्कारकूटानि त्रीणि षडुत्तराणि विजयार्द्धकूटानां शतानि नव च मन्दरकूटानि। 'तित्थ' त्ति जम्बूद्वीपे कियन्ति तीर्थानि? उच्यते, भरतादिषु चतुस्त्रिंशतिखण्डेषु-मागधवरदामप्रभासाख्यानि त्रीणि त्रीणि तीर्थानि भवन्ति, एवं चैकं द्व्युत्तरं तीर्थशतं भवतीति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेढीओत्ति विद्याधर-श्रेणि अनैं आभियोगिक श्रेणि केतली छै ? चौतीस वेताढ्य छै। एकेका उपरि बे-बे विद्याधर श्रेणि दो-दो आभियोगिक श्रेणि —इम एकसौ छत्तीस श्रेणि छै।

विजयत्ति चक्रवत्ति जीपवा योग्य खंड केतला छै ? चौतीस छै।

दहत्ति केतला मोटा द्रह छै ? पद्म द्रह प्रमुख छह द्रह छै। दश नीलवंत प्रमुख ते उत्तरकुरु देवकुरु मांहि छै। इम सोलह द्रह छै। नदी तो देखाड़ी छै।

एह सर्व परिकर नदी नीं संख्या महानदी सहित जाणवी अन्यथा सूत्र विरुद्ध वचन थावै ते भणी महानदी सहित संख्या जाणवी। इहां सर्व संख्या नैं विषे बारै अंतर नदी नो परिवार एकेकी नो अठावीस-अठावीस हजार नदी नो ते गण्यु नहीं, जे भणी अंतर नदी नें परिवार जणातो नथी अनै सूत्र मांहि कह्यो छै—

ते विजय नें बे पासे गंगा सिंधु अथवा रक्ता रक्तवती चउद-चउद हजार नें परिवारे अंतर नदी पासे थई नै सीता सीतोदा पहिं जायै छै। ते बे नदी नों परिवार उपचारपणें समीपपणां माटै अपर नदी नां परिवारपणें गण्यु जणाय छै। जे भणी जेह नदी नो अठावीस हजार नों परिवार छै ते नदी नों मूल प्रवाह पहुलपणें साढ़े बारह योजन छै अनै मुख प्रवाह एक सौ पचीस योजन छै। अनें एह बारह अंतर नदी नों मूल प्रवाह अनें मुख प्रवाह सरीखो एक सौ पचीस पहुलपणें छै जो परिवार हुवै तो मूल प्रवाह अनें मुख प्रवाह सरीखो न हुवै ते भणी इहां सर्व नदी संख्या नै विषे एह बारै अंतर नदी नो परिवार गण्यु नहीं। अनै जो ए बारै नदी नों तो अठावीस हजार नो परिवार गिणियै तो जंबूद्वीप नैं विषे सतर लाख अनै बाणु हजार सर्व नदी संख्या हुवै। यतः सुत्ते—

चउदस लक्खा छप्पण्ण सहस्स जंबूदीवं मि हुंति उ।
सतर सतस्स लक्खा बाणवइं सहस्स सलिलाओ॥

इहां एहवूं तत्व बहुश्रुतगम्य जाणवूं. एह जंबूद्वीप पदार्थ संग्रह वर्णन नामे छठो अधिकार थयो।

'सेढीओ' त्ति विद्याधरश्रेणयः आभियोगिकश्रेणयश्च कियन्त्यः ? उच्यते, अष्टषष्टिः प्रत्येकमासां भवन्ति, विजयार्द्धपर्वतेषु प्रत्येकं द्वयोर्द्वयोर्भावात्, एवं च षट्त्रिंशदधिकं श्रेणिशतं भवतीति।
'विजय' त्ति कियन्ति चक्रवर्तिविजेतव्यानि भूखण्डानि ? उच्यते, चतुस्त्रिंशत्।
'दह' त्ति कियन्तो महाह्रदाः ? उच्यते, पद्मादयः षड् दश च नीलवदादय उत्तरकुरुदेवकुरुमध्यवर्त्तिन इत्येवं षोडश, 'सलिल' त्ति नद्यस्तत्प्रमाणं च दर्शितमेव। (वृ० प० ४२५,२६)

दूहा

१३. सेवं भंते ! इम कही नवमें शतक निहाल।
प्रथम उद्देशक नों अरथ, आख्यो प्रवर विशाल॥

नवमशते प्रथमोद्देशकार्थः॥९।१॥

१३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति॥ (श० ९।२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महानदी नामानि	गंगा १	सिंधु २	रोहितांशा ३	रोहिता ४	हरिकंता ५	हरिसलिला ६	सीतोदा ७	सीता ८	नारीकंता ९	नरकंता १०
निर्गम वर्षधर पर्वत	चुल्लहिमवंत	चुल्लहिमवंत	चुल्लहिमवंत	महाहिमवंत	महाहिमवंत	निषध	निषध	नीलवंत	नीलवंत	रुप्यी
निर्गम द्रहा	पद्मद्रह	पद्मद्रह	पद्मद्रह	महापद्मद्रह	महापद्मद्रह	तिगिंच्छद्रह	तिगिच्छद्रह	केसरीद्रह	केसरीद्रह	महापुंडरीक द्रह
मूल प्रवाह विक्खंभ	यो० ६।	यो० ६।	१२॥	१२॥	२५	२५	५०	५०	२५	२५
मूल ऊंडपण	कोश ॥	कोश ॥	१	१	२	२	४	४	२	२
निर्गम क्षेत्र	भरत क्षेत्र	भरत क्षेत्र	हेमवंत क्षेत्र	हेमवंत क्षेत्र	हरिवर्ष	हरिवर्ष	महाविदेह	महाविदेह	रम्यक	रम्यक
समुद्रप्रवेश दिशि	पूर्व	पश्चिम	पश्चिम	पूर्व	पश्चिम	पूर्व	पश्चिम	पूर्व	पश्चिम	पूर्व
मुखप्रवाह विक्खंभ	यो० ६२॥	६२॥	१२५	१२५	२५०	२५०	५००	५००	२५०	२५०
मुखप्रवाह ऊंडपण	यो० १।	१।	२॥	२॥	५	५	१०	१०	५	५
परिवार	१४०००	१४०००	२८०००	२८०००	५६०००	५६०००	५३२०००	५३२०००	५६०००	५६०००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ा १०	रूप्यकूला ११	सुवर्णकूला १२	रक्तवती १३	रक्ता १४	नद्यः
	रूप्यी	शिखरी	शिखरी	शिखरी	निर्गता
डरीक ह	महापुंडरीक द्रह	पुंडरीकद्रह	पुंडरीक द्रह	पुंडरीकद्रह	व्यूढा
	१२॥	१२॥	६।	६।	योजन
	१	१	॥	॥	क्रोश
	हैरण्यवंत	हैरण्यवंत	ऐरवंत	ऐरवंत	क्षेत्र
	पश्चिम	पूर्व	पश्चिम	पूर्व	दिशि
	१२५	१२५	६२॥	६२॥	योजन
	२॥	२॥	१।	१।	योजन
	२८०००	२८०००	१४०००	१४०००	१४,५६,००० सर्व संख्या ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरठा

१४. प्रथम उद्देशे ताहि, जंबूद्वीप नीं वारता।
जंबूद्वीपादि मांहि, जोतिषि नी कहियै हिवै ॥

१५. *राजगृह नगर में जावत प्रश्न गोयम भला, सुगणा !
जंबूद्वीप नामा द्वीप विषे प्रभु ! केतला ? सुगणा !
चंद्र प्रभास कियो करै नें करिस्यै सही, सुगणा !
इम जिम जीवाभिगम में वक्तव्यता कही सुगणा !

१६. जाव नव सै पचास तारा गण कोड़ाकोड़ ही,
शोभ प्रतै शोभ्या शोभै शोभस्यै जोड़ ही।
जीवाभिगम[1] रै मांहि प्रश्न चंद्रादिक तणो,
वीर प्रभु दियो जाब संक्षेप कहूं सुणो ॥

१७. बे चंद्र प्रभास कियो रु करै करस्यै सही,
सूर्य दोय तप्या रु तपै तपस्यै वही।
छप्पन नक्षत्र चंद्र संघात बखाणियै,
जोग जोड़्या जोड़ै जोड़स्यै तेह पिछाणियै ॥

१८. ग्रह एक सौ नैं छिहुंतर जेह आकाश में,
चार प्रति चरचा काल अतीत हुलास में।
वर्त्तमान फुन चार प्रति चरै छै तिके,
काल अनागत मांहि चार चरस्यै जिके ॥

१९. एक लाख कोड़ाकोड़ी तारा जाणियै,
वलि तेतीस हजार कोड़ाकोड़ि आणियै।
नवसै कोड़ाकोड़ि पंचास कोड़ाकोड़ि जे,
शोभ प्रति शोभ्या शोभै शोभस्यै जोड़ि जे ॥

२०. हे प्रभु ! लवणसमुद्र विषे चंद्र केतला ?
इम जिम जीवाभिगम[2] जाव तारा जेतला।
ते इहविध कहिवाय च्यार चंद जाणियै,
सूर्य च्यार उदार कै कांत बखाणियै ॥

२१. नक्षत्र एक सौ द्वादश पवर सुहामणां,
तीन सौ बावन मोटा ग्रह रलियामणां।
तारा बे लख कोड़ाकोड़ नीं जोड़ है,
सतसठ सहस्र कोड़ाकोड़ि नवसै कोड़ाकोड़ है ॥

२२. धातकीखंड कालोद पुक्खरवरद्वीप ही,
अभ्यंतर - पुक्खरार्द्ध मनुष्यक्षेत्रे वही।
एह सर्व विषे जीवाभिगम जाव जोड़ जे,
एक शशि परिवार तारा कोड़ाकोड़ जे ॥

२३. बारै चंद बारै सूर धातकीखंड में,
रवि शशि बिहुं चोवीस हरष घमंड में।

---

१४. अनन्तरोद्देशके जम्बूद्वीपवक्तव्यतोक्ता द्वितीये तु जम्बू-
द्वीपादिषु ज्योतिष्कवक्तव्यताऽभिधीयते।
(वृ० प० ४२६)

१५. रायगिहे जाव एवं वयासी - जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे
केवइया चंदा पभासिंसु वा ? पभासेंति वा ? पभासि-
स्संति वा ? एवं जहा जीवाभिगमे

१६. जाव........
नव य सया पन्नासा, तारागण कोडीकोडीणं ॥
सोभिंसु, सोभिंति सोभिस्संति ॥ (जी० सू० ७०३)

१७. गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे दो चंदा पभासिंसु वा३ दो
सूरिया तविंसु वा३ छप्पन्नं नक्खत्ता जोगं जोइंसु
वा ३ (वृ प० ४२७)

१८. छावत्तरं गहसयं चारं चरिंसु वा ३
(वृ० प० ४२७)

१९. एगं च सयसहस्सं तेत्तीसं, खलु भवे सहस्साइं।
नव य सया पन्नासा, तारागण कोडिकोडीणं ॥
सोभिंसु, सोभिंति, सोभिस्संति। (श० ९।३)

२०. लवणे णं भंते ! समुद्दे केवतिया चंदा पभासिंसु वा ?
पभासेंति वा ? पभासिस्संति वा ?
एवं जहा जीवाभिगमे जाव ताराओ (....श० ९।४)
गोयमा ! लवणे णं समुद्दे चत्तारि चंदा पभासिंसु
वा ३। चत्तारि सूरिया तविंसु वा ३ (वृ० प० ४२७)

२१. बारसोत्तरं नक्खत्तसयं जोगं जोइंसु वा ३ तिन्नि
बावन्ना महग्गहसया चारं चरिंसु वा ३ दोन्नि सयस-
हस्सा सत्तट्ठिं च सहस्सा नवसया तारागणकोडिको-
डीणं सोहं सोहिंसु वा ३। (वृ० प० ४२७)

२२. धायइसंडे, कालोदे, पुक्खरवरे, अब्भिंतरपुक्खरद्धे, मणु-
स्सखेत्ते – एएसु सव्वेसु जहा जीवाभिगमे (सू० ८०९,
८१०, ८३०, ८३४) जाव—एगससीपरिवारो, तारा-
गणकोडिकोडीणं ॥ (श० ९।४)

२३. बारस चंदा पभासिंसु वा३ बारस सूरिया तविंसु वा३
एवं—"चउवीसं ससिरविणो नक्खत्तसया य तिन्नि
छत्तीसा।

---

*लय : इण सरवरिया री पाल

[1] (सू० ७०३) [2] (सू० ७२२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नक्षत्र त्रिण सौ छत्तीस अतिहि सोहता,
एक हजार नैं छप्पन ग्रह मन मोहता ।।

२४. तारा नीं संख्या अठ लाख कोड़ाकोड़ है,
तीन सहस्र कोड़ाकोड़ अधिक सुजोड़ है ।
सात सौ कोड़ाकोड़ वलि ऊपर कह्या,
एतला तारका धातकीखंड द्वीपे रह्या ।।

२५. कालोद चंद बयांल बयांलिस दिनकरा,
नक्षत्र एक हजार एक सौ छिहंतरा ।
तीन हजार नैं छसौ छिन्नूं ऊपरै,
एतला मोटा ग्रह ते सुरवर मन हरै ।।

२६. तारा अठावीस लाख तणी कोड़ाकोड़ है,
ऊपर द्वादश सहस्र कोड़ाकोड़ि जोड़ है ।
नवसौ कोड़ाकोड़ अधिक बखाणिया,
पचास कोड़ाकोड़ि कालोदधि आणिया ।।

२७. द्वीप पुक्खरवर चंद्र एक सौ चोमाल है,
रवि एक सौ चोमालीस चार विशाल है ।
चार चरै कह्यो ते रवि शशि सहु चर नहीं,
अभ्यंतर-पुक्खरार्द्ध बोहितर भमैं सही ।।

२८. नक्षत्र च्यार हजार नैं बत्तीस ऊपरं,
महाग्रह द्वादश सहस्र छह सौ रु बोहितरं ।
तारा छिन्नू लक्ष कोड़ाकोड़ नीं जोड़ है,
चोमालीस सहस्र च्यार सौ कोड़ाकोड़ है ।।

२९. अभ्यंतर-पुक्खरार्द्ध द्वीप नैं विषे सही,
चंद्र बोहितर सूर बोहितर गगन ही ।
मोटा ग्रह षट सहस्र तीनसौ छत्तीस है,
नक्षत्र दोय हजार नैं सोल जगीस है ।।

३०. अडतालीस लक्ष कोड़ाकोड़ि पिछाणज्यो,
बावीस सहस्र कोड़ाकोड़ि ऊपर आणज्यो,
दोय सौ कोड़ाकोड़ तारा शोभावता,
अभ्यंतर पुक्खरार्द्ध विषे सुख पावता ।।

३१. मनुष्य क्षेत्र में एक सौ बत्तीस चंद्रमां ।
सूर्य एक सौ बत्तीस अधिक आनंद मां ।
महाग्रह ग्यारै हजार छह सौ सोलै वली,
नक्षत्र तीन हजार छह सौ छिन्नु रली ।।

३२. तारा अठयासी लक्ष कोड़ाकोड़ि जोड़ है,
ऊपर चालीस सहस्र कोड़ाकोड़ है ।
सात सौ कोड़ाकोड़ ए पूरा ऊणां नहीं,
यावत एक शशि परिवार हिवै कहूं सही ।।

एगं च गहसहस्सं, छप्पन्नं धायईसंडे ।
(वृ० प० ४२७)

२४. अट्ठेव सयसहस्सा तिन्नि सहस्साइं सत्त य सयाइं ।
धायइसंडे दीवे तारागणकोडिकोडीणं ।
(वृ० प० ४२७)

२५. बायालीसं चंदा बायालीसं च दिणयरा दित्ता ।
कालोदहिंमि एए चरंति संबद्धलेसागा ।
नक्खत्तसहस्स एगं एगं छावत्तरं च सयमन्नं ।
छच्च सया छन्नउया महागहा तिन्नि य सहस्सा ।।
(वृ० प० ४२७)

२६. अट्ठावीसं कालोदहिंमि बारस य तह सहस्साइं ।
णव य सया पन्नासा तारागणकोडिकोडीणं ।।
(वृ० प० ४२७)

२७. चोयालं चंदसयं चोयालं चेव सूरियाण सयं ।
पुक्खरवरंमि दीवे भमंति एए पयासिंता ।
इह च यद्भ्रमणमुक्तं न तत्सर्वांश्चन्द्रादित्यानपेक्ष्य,
किं तर्हि ? पुष्करद्वीपाभ्यन्तरार्द्धवर्तिनो द्विसप्ततिमे-
वेति । (वृ० प० ४२७)

२८. चत्तारि सहस्साइं बत्तीसं चेव होंति नक्खत्ता ।
छच्च सया बावत्तरि महागहा बारससहस्सा ।।
छन्नउइ सयसहस्सा चोयालीसं भवे सहस्साइं ।
चत्तारि सया पुक्खरि तारागणकोडिकोडीणं ।।
(वृ०प० ४२७)

२९. बावत्तरिं च चंदा बावत्तरिमेव दिणयरा दित्ता ।
पुक्खरवरदीवड्ढे चरंति एए पभासिंता ।।
तिन्नि सया छत्तीसा छच्च सहस्सा महग्गहाणं तु ।
नक्खत्ताणं तु भवे सोलाइं दुवे सहस्साइं ।।
(वृ० प० ४२७)

३०. अडयाल सयसहस्सा बावीसं खलु भवे सहस्साइं ।
दो य सय पुक्खरद्धे तारागणकोडिकोडीणं ।।
(वृ० प० ४२७)

३१. बत्तीसं चंदसयं बत्तीसं चेव सूरियाण सयं ।
सयलं मणुस्सलोयं चरंति एए पयासिंता ।
एक्कारस य सहस्सा छप्पि य सोला महागहाणं तु ।
छच्च सया छण्णउया णक्खत्ता तिन्नि य सहस्सा ।।
(वृ० प० ४२७, २८)

३२. अडसीइ सयसहस्सा चालीस सहस्स मणुयलोगंमि ।
सत्त य सया अणूणा तारागणकोडिकोडीणं ।।
(वृ० प० ४२८)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३. एक शशि परिवार अठयासी ग्रह कह्या,
नक्षत्र अठावीस चंद्र साथै रह्या।
छयासठ सहस्र कोड़ाकोड़ि नवसौ कोड़ाकोड़ है।
पिचोत्तर कोड़ाकोड़ तारां नीं जोड़ है॥

३४. हिवै पुक्खरोद समुद्र विषे प्रभु ! केतला,
चंद्र प्रभास कियो करै करस्यै सुखनिला?
इम सहु द्वीप समुद्र विषे जोतिषि तणी,
जावत स्वयंभूरमण जाव शोभा घणी॥

वा०--पुक्खरोदे णं भंते ! समुद्दे केवतिया चंदा इत्यादि प्रश्ने ए उत्तर—संखेज्जा चंदा पभासिसु वा। इम आगलै सगलै द्वीप समुद्र नें विषे पूर्वे कह्यु तिम अनुक्रमे संख्याता असंख्याता चंद्रादिक जाणिवा।

द्वीप समुद्र नां नाम कहै छै--पुक्खरवर समुद्र तिवार पछी वरुण द्वीप, वरुणवर समुद्र। क्षीरवर द्वीप, क्षीरवर समुद्र। घृतवर द्वीप, घृतवर समुद्र। इक्षुवर द्वीप, इक्षुवर समुद्र। नंदीश्वर द्वीप, नंदीश्वर समुद्र,। अरुण द्वीप, अरुण समुद्र। अरुणवर द्वीप, अरुणवर समुद्र। अरुणवरावभास द्वीप, अरुणवरावभास समुद्र। कुंडल द्वीप, कुंडलोद समुद्र। कुंडलवर द्वीप, कुंडलवर समुद्र। कुंडलवरावभास द्वीप, कुंडलवरावभासोद समुद्र। रुचक द्वीप, रुचकोद समुद्र। रुचकवर द्वीप, रुचकवरोद समुद्र। रुचकवरावभास द्वीप, रुचकवरावभासोद समुद्र।

हार द्वीप, हारोद समुद्र। हारवरद्वीप, हारावरोद समुद्र। हारवरावभास द्वीप, हारवरावभासोद समुद्र।

रुचकद्वीप पछी असंख्याती योजन नीं कोड़ाकोड़ि नां द्वीप समुद्र असंख्याता छै। इम यावत् अर्द्ध राजू मझेरा में सर्व समुद्र द्वीप छै। अर्द्ध राजू जाझेरा में एक स्वयंभूरमण समुद्र छै त्रिण लाख जोजन अधिक अर्द्ध राजू मां छै। ते स्वयंभूरमण समुद्र पछै आगल अलोक छै। इम इत्यादिक नें विषे संख्याता जोतिषि चंद्रादिक तथा असंख्यात नक्षत्रादिक चार चरता हुआ गतकाले, चरै छै वर्त्तमान काले, चरस्यै आगामि काले[1]।

जीवाभिगम[2] में कहा भी है—

एसो तारापिंडो, सव्वसमासेण मणुयलोगंमि।
बहिया पुण ताराओ, जिणेहिं भणिया असंखेज्जा॥
अंतो मणुस्सखेत्ते हवंति चारोवगा य उववण्णा।
पंचविहा जोइसिया चंदा सूरा गहा गणा य॥
तेणं परं जे सेसा चंदाइच्चगहतारनक्खत्ता।
नत्थि गई णवि चारो, अवट्ठिया ते मुणेयव्वा॥
इत्यादि घणो छै ते पंडिते जाणिवो।

सोरठा

३५. 'जंबूद्वीप रै मांहि, बे चंदा बे सूर छै।
लवणे दुगुणां ताहि, चिउं चंदा दिनकर चिहुं॥

---

1. यह समग्र वर्णन देखें—जीवा० ३।८४८-९४६
2. जी० ३।८३८।१,२१,२२

३३. अट्ठासीइं च गहा अट्ठावीसं च होइ नक्खत्ता।
एगससीपरिवारो एत्तो ताराण वोच्छामि॥१॥
छावट्ठि सहस्साइं नव चेव सयाइं पंच सयराइं ति।
(वृ० प० ४२८)

३४. पुक्खरोदे णं भंते ! समुद्दे केवतिया चंदा पभासिसु वा? पभासेंति वा? पभासिस्संति वा?
एवं सव्वेसु दीवसमुद्देसु जोतिसियाणं भाणियव्वं जाव सयंभूरमणे जाव सोभिसु वा, सोभिंति वा, सोभिस्संति वा। (श० ९।५)

वा०—'पुक्खरोदे णं भंते ! समुद्दे केवइया चंदा' इत्यादौ प्रश्ने इदमुत्तरं दृश्यं-'संखेज्जा चंदा पभासिसु वा ३ इत्यादि, 'एवं सव्वेसु दीवसमुद्देसु' त्ति पूर्वोक्तेन प्रश्नेन यथासम्भवं संख्याता असंख्याताश्च चन्द्रादय इत्यादिना चोत्तरेणेत्यर्थः।

द्वीपसमुद्रनामानि चैवं—पुष्करोदसमुद्रादनन्तरो वरुणवरो द्वीपस्ततो वरुणोदः समुद्रः, एवं क्षीरवरक्षीरोदौ घृतवरघृतोदौ क्षोदवरक्षोदोदौ नंदीश्वरवरनंदीश्वरोदौ अरुणारुणौदौ अरुणवरारुणवरोदौ अरुणवरावभासारुणवरावभासोदौ कुण्डलकुण्डलोदौ कुण्डलवरकुण्डलवरोदौ कुण्डलवरावभासकुण्डलवरावभासोदौ रुचकरुचकोदौ रुचकवररुचकवरोदौ रुचकवरावभासरुचकवरावभासोदौ इत्यादीन्यसंख्यातानि, यतोऽसंख्याता द्वीपसमुद्रा इति॥ (वृ० प० ४२८)

......हारे दीवे हारे समुद्दे, हारवरे दीवे हारवरे समुद्दे, हारवरोभासे दीवे हारवरोभासे समुद्दे, ताओ च्चेव वत्तव्वताओ...... (जीवा० ३।९३५)

३५. जंबुद्दीवे ...जंबुद्दीवे णं दीवे दो चंदा पभासिसु....
(जीवा० ३।७०३)
लवणे....लवणे णं समुद्दे चत्तारि चंदा पभासिसु....
(जीवा० ३।७२२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३६. धातकीखंड मझार, बार चंद्र द्वादश रवि ।
आगल त्रिगुणा सार, पूरवला पिण भेलियै ।।
३७. बार धातकीखंड, तेहनें त्रिगुणा कीजियै ।
ह्वै छत्तीस सुमंड, पूरवला षट मेलियै ।।
३८. जंबूद्वीप नां दोय, लवणोदधि नां च्यार वलि ।
ए षट भेल्यां होय, बयांलीस कालोदधि ।।
३९. इहविध सगलै ठाम, त्रिगुणा करिने पूर्वला ।
भेलीजै अभिराम, आगल द्वीप समुद्र में ।।
४०. अर्थ विषे ए गाह, तिण अनुसारे म्हैं कह्यो ।
मिलतो न्याय सुराह, संख्या द्वीप समुद्र नीं' ।। (ज० स०)

३६. धायइसंडे····बारस चंदा पभासिसु····
(जीवा० ३।८०९)

३८. कालोए कालोए णं समुद्दे बायालीसं चंदा पभासिसु····
(जीवा० ३।८२०)

४१. *सेवं भंते ! अर्थ जे अंक बाणुं तणो,
एकसौ नैं गुणंतरमीं ढाले सुजश घणो ।
स्वाम भिक्खु भारीमाल राय नैं प्रसाद है,
'जय-जश' हरष आनन्द गण अहलाद है ।।

४१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

नवमशते द्वितीयोद्देशकार्थः ।।९।२।।

ढाल : १७०

सोरठा

१. द्वितीय उदेशा मांहि, द्वीप तणी कहि वारता ।
अन्य प्रकारे ताहि, तेहिज तृतीय उद्देश हिव ।।

१. द्वितीयोद्देशके द्वीपवरवक्तव्यतोक्ता, तृतीयेऽपि प्रकारान्तरेण सैवोच्यते । (वृ० प० ४२८)

दूहा

२. नगर राजगृह जाव इम, बोल्या गोतम स्वाम ।
हे भगवंत ! किहां अछै, दक्षिण दिशि नों ताम ।।
३. एगोरुक जे मनुष्य नों द्वीप एगोरुक नाम ।
अंतरद्वीप किहां कह्यो ? तब भाखै जिन स्वाम ।।
४. उत्तर दिशि में पिण अछै, अंतरद्वीप प्रसीध ।
इण कारण दक्षिण तणो, गोयम प्रश्न सुकीध ।।

२,३. रायगिहे जाव एवं वयासी– कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं एगूरुयमणुस्साणं एगूरुयदीवे नामं दीवे पण्णत्ते ?

४. 'दाहिणिल्लाणं' ति उत्तरान्तरद्वीपव्यवच्छेदार्थम् ।
(वृ० प० ४२८)

†अन्तरद्वीप वर्णन सुणो जी । (ध्रुपदं)

५. जंबूद्वीप नामा द्वीप में जी, मंदरगिरि नैं पिछाण ।
दक्षिण दिशि नैं विषे अछै जी, इम चूलहिमवंत गिरि जाण ।।
६. ते चूलहिमवंत वर्षधर गिरि, तेहनें कूण ईशाण ।
तेह तणां चरिमांत थी, छेहड़ा थकी पहिछाण ।।
७. जंबूद्वीप नीं जगती थकी, ऊपर थइ कहिवाय ।
लवणसमुद्र प्रतैं तिहां, ईशाणकूण रै मांय ।।

५,६. गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ ।

७. लवणसमुद्दं उत्तरपुरत्थिमे णं ।

*लय : इण सरवरिया री पाल
†लय : वीर वखाणी राणी चेलणा जी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. जोजन त्रिण सय उलंघिये, दक्षिण दिशि तणो ताम ।
एगोरुक मनुष्य तणो इहां, द्वीप एकोरुक नाम ।।

९. लांब विक्खंभपणैं कह्या, तीनसौ जोजन जेह ।
जोजन नवसौ गुणचास नीं परिधि किंचित उणेह ।।
१०. ते इक पद्मवरवेदिका, एक वन-खंड करि तेह ।
द्वीप ते सर्व थी बींटियो, इत्यादि पाठ कहेह ।।
११. वेदिका नैं वनखंड नुं, वर्णन अधिक विशाल ।
इम एणे अनुक्रमे करी, जिम जीवाभिगम विषे न्हाल ।।
१२. जाव शुद्धदंत द्वीपा लगै, जाव देवलोक में जाण ।
जावणहार ते मनुष्य छै, हे श्रमण! आयुष्यमन ! माण ।।
१३. जाव शब्द मांहे आखियो, तेह संक्षेप कहेह ।
वलि वर्णन कल्पवृक्ष नों, मनुष्य नो वर्णन जेह ।।
१४. ते सगलो कहिवूं इहां, ते द्वीप नां मनुष्य अवधार ।
चतुर्थ भक्त आहारी अछै, पृथ्वी-रस पुष्प फल आहार ।।
१५. ते द्वीप नां पृथ्वी नों रस अछै, खांड प्रमुख तणें तुल्य ।
गृहादिक अपर तिहां नथी, घर कल्पवृक्ष अमूल्य ।।
१६. ते नर नों आयु पल्य तणो असंख्यातमो भाग सुविशेख ।
छह मास आउ रहै थाकतो, जद जोड़लो जनमैं जी एक ।।

१७. इक्यासी दिन जोड़ला तणी, करै प्रतिपालना ताय ।
छींक बगासी करी मरी, ते सुरलोक में जाय ।।

८. तिण्णि जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं दाहिणिल्लाणं एगूरुयमणुस्साणं एगूरुयदीवे नामं दीवे पण्णत्ते ।
९. तिण्णि जोयणसयाइं आयाम-विक्खंभेणं, नव एगूणवन्ने जोयणसए किंचि विसेसूणे परिक्खेवेणं ।
१०. से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते ।
११. दोण्ह वि पमाणं वण्णओ य । एवं एएणं कमेणं एवं जहा जीवाभिगमे [३।२१७] ।
१२. जाव सुद्धदंतदीवे जाव देवलोगपरिग्गहा णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो !
१३. इह च वेदिकावनखण्डकल्पवृक्षमनुष्यमनुष्यीवर्णकोऽभिधीयते । (वृ० प० ४२८)
१४. तथा तन्मनुष्याणां चतुर्थभक्तादाहारार्थ उत्पद्यते, ते च पृथिवीरसपुष्पफलाहाराः । (वृ० प० ४२९)
१५. तत्पृथिवी च रसतः खण्डादितुल्या, ते च मनुष्या वृक्षगेहाः, तत्र च गेहाद्यभावः (वृ० प० ४२९)
१६. तन्मनुष्याणां च स्थितिः पल्योपमासंख्येयभागप्रमाणा, षण्मासावशेषायुषश्च ते मिथुनकानि प्रसुवते । (वृ० प० ४२९)
१७. एकाशीतिं च दिनानि तेऽपत्यमिथुनकानि पालयन्ति, उच्छ्वसितादिना च ते मृत्वा देवेषूत्पद्यन्ते । (वृ० प० ४२९)

वा०—वाचनांतरे इम दीसैं छे—एवं जहा जीवाभिगमे उत्तरकुरुवत्तव्वयाए णेयव्वो, णाणत्तं अट्ठ धणुसया उस्सेहो चउसट्ठी पिट्ठकरंडया अणुसज्जणा नत्थि त्ति ।

तिहां ए अर्थ—उत्तरकुरु नां मनुष्य नों त्रिण गाऊ नों शरीर मान कह्यो । इहां छप्पन अंतरद्वीपा मनुष्य नों आठसैं धनुष्य नों देहमान । वलि उत्तरकुरु नां मनुष्यां रै दो सौ छप्पन पृष्टकरंडक छैं अनैं छप्पन अंतरद्वीप नां नर नैं चौसठ पृष्ठकरंडक छै ।

तथा उत्तरकुराए णं भंते ! कुराए कतिविधा मणुया अणुसज्जंति ? गोयमा ! छव्विहा मणुया अणुसज्जंति, तं जहा पउमगंधा, मियगंधा अममा, तेतली सहा सणिचरा य[1] । छ प्रकार नां मनुष्य कह्या । ते जाति नां अंतरद्वीप नैं विषे मनुष्य नथी । अंतरद्वीप नैं इहां तीन नानात्व स्थान कह्या । वलि अनेरा पिण स्थित्यादिक में नानात्व छै, किन्तु अभियुक्त करिकै जाणवा । एकोरुक द्वीप नों उद्देशो ।

वा०—वाचनान्तरे त्विदं दृश्यते—एवं जहा जीवाभिगमे····

तत्रायमर्थः उत्तरकुरुषु मनुष्याणां त्रीणि गव्यूतान्युत्सेध उक्त इह त्वष्टौ धनुःशतानि, तथा तेषु मनुष्याणां द्वे शते षट्पञ्चाशदधिके पृष्ठकरण्डकानामुक्ते इह तु चतुःषष्टिरिति ।
तथा 'उत्तरकुराए णं भंते ! इत्येवं मनुष्याणामनुषञ्जना तत्रोक्ता इह तु सा नास्ति, तथाविधमनुष्याणां तत्राभावात्, एवं चेह त्रीणि नानात्वस्थानान्युक्तानि, सन्ति पुनरन्यान्यपि स्थित्यादीनि, किन्तु तान्यभियुक्तेन भावनीयानीति, अयं चेहैकोरुकद्वीपोद्देशकस्तृतीयः । (वृ० प० ४२९)

नवमशते तृतीयोद्देशकार्थः ।।९।३।।

ए वाचनांतरे कह्यो—हिवैं प्रकृत वाचना आश्रयी नैं कहियै छै । कठा तांइ, ए जीवाभिगम सूत्र इहां कहिवूं ते कहै छै—जाव इत्यादिक ज्यां लगैं शुद्धदंत द्वीप छै शुद्धदंत नामैं अठावीसमों अंतरद्वीप नीं वक्तव्यता ज्यां लगै, तिका पिण कठा तांइ

अथ प्रकृतवाचनामनुसृत्योच्यते—किमन्तमिदं जीवाभिगमसूत्रमिह वाच्यम् ? इत्याह—'जावे' त्यादि 'यावत् शुद्धदन्तद्वीपः शुद्धदन्ताभिधानाष्टाविंशतित-

१. जी० ३।६३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहिवी ते कहै छै --'देवलोगपरिग्गहेत्यादि देवलोक नें विषे परिग्रह ते गमन छै जेहनों, ते देवलोकपरिग्रह देवगतिगामी इत्यर्थ। अनें इहां एक-एक अंतरद्वीप नें विषे एक-एक उद्देशक वलि तिहां एकोरुक द्वीप नों उद्देशो कह्यो पाछै चोथो आभासिक द्वीप नों उद्देशो, तिहां सूत्र पाठ—

कहिं णं भंते ! दाहिणिल्लाणं आभासियमणुस्साणं आभासियदीवे णामं दीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासधरपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ दाहिणपुरत्थिमिल्लेणं लवणसमुद्दं तिण्णि जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं दाहिणिल्लाणं आभासियमणुस्साणं आभासियदीवे णामं दीवेपण्णत्ते।

बीजूं एकोरुक द्वीप नीं परै जाणवो।

मान्तरद्वीपवक्तव्यतां यावत्, साऽपि कियद्दूरं यावद्वाच्या ? इत्याह—'देवलोकपरिग्गहे' त्यादि, देवलोकः परिग्रहो येषां ते देवलोकपरिग्रहाः देवगतिगामिनः इत्यर्थः, इह चैकैकस्मिन्नन्तरद्वीपे एकैक उद्देशकः तत्र चैकोरुकद्वीपोद्देशकानन्तरमाभासिकद्वीपोद्देशकः तत्र चैवं सूत्रं। (वृ० प० ४२६)

सेसं जहा एगूरुयाणं। (जी० ३।२१६)

नवमशते चतुर्थोद्देशकार्थः ॥६।४॥

इम वैषाणिक द्वीप नों पंचमो उद्देशो पिण। णवरं दक्षिण पश्चिम नां चरिमांत थकी एतलै नैरुत कूण थी।

एवं वैषाणिकद्वीपोद्देशकोऽपि नवरंदक्षिणापराच्चरमान्तादिति पञ्चमः। (वृ० प० ४२६)

नवमशते पंचमोद्देशकार्थः ॥६।५॥

इम लांगूलिक द्वीप नों उद्देशो छठो पिण। णवरं उत्तर अनें पश्चिम ने चरिमांत थकी—एतलै वायव्य कूण थी।

एवं लांगूलिकद्वीपोद्देशकोऽपि नवरमुत्तरापराच्चरमान्तादिति षष्ठः। (वृ० प० ४२६)

नवमशते षष्ठोद्देशकार्थः ॥६।६॥

इम हयकर्ण द्वीप नों उद्देशो पिण। णवरं एकोरुक नां उत्तर पूर्व चरिमांत थकी—एतलै ईशाणकूण थकी लवणसमुद्र च्यारसौ योजन अवगाहीजै, तिवारै च्यारसौ योजन नों लाम्बो-पहुलो हयकर्ण द्वीप छै।

एवं हयकर्णद्वीपोद्देशको नवरमेकोरुकस्योत्तरपौरस्त्याच्चरमान्ताल्लवणसमुद्रं चत्वारि योजनशतान्यवगाह्य चतुर्योजनशतायामविष्कम्भो हयकर्णद्वीपो भवतीति सप्तमः। (वृ० प० ४२६)

नवमशते सप्तमोद्देशकार्थः ॥६।७॥

इम गजकर्ण द्वीप नों उदेशक पिण। णवरं ए आभासिक द्वीप नां दक्षिण पूर्व नां चरिमांत थकी—एतलै अग्निकूण थी च्यारसौ योजन लवणसमुद्र अवगाहीजै, तिवारै च्यारसौ योजन नों लांबो-पहुलो गजकर्ण द्वीप छै।

एवं गजकर्णद्वीपोद्देशकोऽपि, नवरं गजकर्णद्वीप आभासिकद्वीपस्य दक्षिणपौरस्त्याच्चरमान्ताल्लवणसमुद्रमवगाह्य चत्वारि योजनशतानि हयकर्णद्वीपसमो भवतीत्यष्टमः। (वृ० प० ४२६)

नवमशते अष्टमोद्देशकार्थः ॥६।८॥

इम गोकर्णद्वीप नों उद्देशो पिण। णवरं वैषाणिक द्वीप नें दक्षिण पश्चिम नां चरिमांत थकी लवणसमुद्रे च्यारसौ योजन अवगाहियै। तिहां गोकर्ण द्वीप। शेष हयकर्ण द्वीप सरीखो जाणवो।

एवं गोकर्णद्वीपोद्देशकोऽपि, नवरमसौ वैषाणिकद्वीपस्य दक्षिणापराच्चरमान्तादिति नवमः।

(वृ० प० ४२६)

नवमशते नवमोद्देशकार्थः ॥६।६॥

इम शष्कुलिकर्ण द्वीप नों उद्देशो पिण। णवरं लांगूलिक द्वीप नां उत्तर अपर चरिमांत थी—एतलै वायव्य कूण थी। शेष हयकर्ण सरीखो।

एवं शष्कुलीकर्णद्वीपोद्देशकोऽपि, नवरमसौ लांगूलिकद्वीपस्योत्तरापराच्चरमान्तादिति दशमः।

(वृ० प० ४२६)

नवमशते दशमोद्देशकार्थः ॥६।१०॥

इम आदर्शमुख द्वीप, मेढमुख द्वीप, अयोमुख द्वीप, गोमुख द्वीप ए च्यार, ते हयकर्णादिक च्यार द्वीप छै, तेहनें अनुक्रमे ईशाण, अग्नि, नैरुत, वायव्य कूण नां चरिमांत थकी पांचसौ योजन लवणसमुद्र अवगाही नें पांचसौ जोजन लांबा-चोड़ा, ते प्रतिपादक च्यार उद्देशा हुवैं इति।

एवमादर्शमुखद्वीपमेण्ढमुखद्वीपायोमुखद्वीपगोमुखद्वीपा हयकर्णादीनां चतुर्णां क्रमेण पूर्वोत्तरपूर्वदक्षिणदक्षिणापरापरोत्तरेभ्यश्चरमान्तेभ्यः पञ्च योजनशतानि लवणोदधिमवगाह्य पञ्चयोजनशतायामविष्कम्भा भवन्ति, तत्प्रतिपादकाश्चान्ये चत्वार उद्देशका भवन्तीति। (वृ० प० ४२६)

नवमशते एकादशादारभ्याचतुर्दशोद्देशकार्थः ॥६।११-१४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एहिज आदर्शमुखादिक नें ईशाण, अग्नि, नैरुत वायव्य कूण नां चरिमांत थकी छ सौ जोजन लवणसमुद्र अवगाही नें छ सौ योजन लांबा-चोड़ा अनुक्रम करिकै अश्वमुख द्वीप, हस्तिमुख द्वीप, सिंहमुख द्वीप, व्याघ्रमुख द्वीप हुवै, ते प्रतिपादक अनेरा च्यार उद्देशा हुवै इति ।

एतेषामेवादर्शमुखादीनां पूर्वोत्तरादिभ्यश्चरमान्तेभ्यः षड् योजनशतानि लवणसमुद्रमवगाह्य षड्योजनशतायामविष्कम्भाः क्रमेणाश्वमुखद्वीपहस्तिमुखद्वीपसिंहमुखद्वीपव्याघ्रमुखद्वीपा भवन्ति, तत्प्रतिपादकाश्चान्ये चत्वार उद्देशका भवन्तीति । (वृ० प० ४२६)

नवमशते पंचदशोद्देशकादारभ्याष्टादशोद्देशकार्थः ।।६।१५-१८।।

एहिज अश्वमुखादिक नें तिमहिज अनुक्रमे ईशाणादिक च्यार विदिशि नां चरिमांत थकी सात सौ योजन लवणसमुद्र अवगाही नें सातसौ जोजन लांबा चोड़ा अश्वकर्ण द्वीप, हस्तिकर्ण द्वीप, अकर्ण द्वीप, कर्णप्रावरण द्वीप हुवै, ते प्रतिपादक वलि अनेरा च्यारहीज उद्देशा इति ।

एतेषामेवाश्वमुखादीनां तथैव सप्त योजनशतानि लवणसमुद्रमवगाह्य सप्तयोजनशतायामविष्कम्भा अश्वकर्णद्वीपहस्तिकर्णद्वीपकर्णप्रावरणद्वीपाः प्रावरणद्वीपा भवन्ति, तत्प्रतिपादकाश्चापरे चत्वार एवोद्देशका इति[1] । (वृ० प० ४२६)

नवमशते एकोनविंशतितमोद्देशकादारभ्याद्वाविंशतितमोद्देशकार्थः ।।६।१६-२२।।

एहिज अश्वकर्णादिक नें तिमहिज अनुक्रमे ईशाणादिक च्यार विदिशि नां चरिमांत थकी आठ सौ योजन लवणसमुद्रे अवगाही नें आठ सौ योजन लांबा-चोड़ा उलकामुख द्वीप, मेघमुख द्वीप, विद्युन्मुख द्वीप, विद्युद्दंत द्वीप हुवै, ते प्रतिपादक वलि अनेरा च्यार हिज उद्देशा इति ।।

एतेषामेवाश्वकर्णादीनां तथैवाष्टयोजनशतानि लवणसमुद्रमवगाह्याष्टयोजनशतायामविष्कम्भा उल्कामुखद्वीपमेघमुखद्वीपविद्युन्मुखद्वीपविद्युद्दन्तद्वीपा भवन्ति, तत्प्रतिपादकाश्चान्ये चत्वार एवोद्देशका इति । (वृ० प० ४२६, ४३०)

नमवशते त्रयोविंशतितमोद्देशकादारभ्याषड्विंशतितमोद्देशकार्थः ।।६।२३-२६।।

एहिज उल्कामुख द्वीपादिक नें तिमहिज अनुक्रमे ईशाणादिक च्यार विदिशि नां चरिमांत थकी नो सौ योजन लवणसमुद्र अवगाही नें नो सौ योजन लांबा-चोड़ा घनदंत द्वीप, लष्टदंत द्वीप, गूढदंत द्वीप, शुद्धदंत द्वीप हुवै, ते प्रतिपादक वली अनेरा च्यारहीज उद्देशा । इहां तीसमों शुद्धदंत उद्देशक इति ।।

एतेषामेवोल्कामुखद्वीपादीनां तथैव नव योजनशतानि लवणसमुद्रमवगाह्य नवयोजनशतायामविष्कम्भाः घनदन्तद्वीपलष्टदन्तद्वीपगूढदन्तद्वीपशुद्धदन्तद्वीपा भवन्ति, तत्प्रतिपादकाश्चान्ये चत्वार एवोद्देशका इति, एवमादितोऽत्र त्रिंशत्तमः शुद्धदन्तोद्देशकः ।। (वृ० प० ४३०)

तथा पन्नवणा रा अर्थ में एहवूं कह्यु—छप्पन अंतरद्वीप हुवै अनै इहां अट्ठावीस कह्या, ते किम ? जे चुल्लहिमवंत वर्षधर पर्वत नें विषे पूर्व पश्चिम नें दिशि जेहवा जे प्रमाणे जेतलै अंतरै जे नामै अठावीस अंतरद्वीप छै, तेहवा ते प्रमाणे तेतलै अंतरै ते नामैज शिखरीपर्वत नें पूर्व पश्चिम पिण अट्ठावीस अंतरद्वीप छै, बे मिली छप्पन थावै । ते भणी सदृशपणां माटै इहां अठावीसज कह्या । हिवै ए द्वीप नुं विवरण कांइक लिखियै छै—

इहां जंबूद्वीप नें विषे भरतक्षेत्र नें सीमाकारी एक सत योजन ऊंचो, पंचवीस योजन ऊंडो, एक हजार नें बावन योजन अनें बार कला—एतलो पहुलो, पूर्वापर लवणसमुद्र पर्यंत लांबो सुवर्णमय चुल्लहिमवंत नामा वर्षधर पर्वत छै । तिण पर्वत नें बे छेहड़ै पूर्व पश्चिमे लवणसमुद्र मांहे गजदंताकारे बे दाढा नीकली छै । बे पूर्वे बे पश्चिमे—एवं च्यार दाढा छै । तिहां पूर्व दिशि ईशाणकूणे नीकली जे दाढा तेहनें विषे चुल्लहिमवंत नां छेहड़ा थी त्रिण सौ जोजने एकोरुक नामा द्वीप छै त्रिण सौ योजन लांबु-पहुलो, वृत्ताकारे नवसौ गुणपचास योजन कांयक ऊंणी परिधि ।

वलि हिमवंत नां छेहड़ा थी पूर्व दिशे अग्निकूणे जे दाढा छै तेहनें विषे त्रिण सौ योजने आभासिक नामा द्वीप छै एकोरुक प्रमाण ।

वली पश्चिम दिशि नैरुत कूणे जे दाढा छै, तेहनें विषे हिमवंत नां छेहड़ा थी त्रिण सौ योजने वैषाणिक नामा द्वीप छै एकोरुक प्रमाण ।

वलि पश्चिम दिशि वायव्य कूणे जे दाढा छै, तेहनें विषे हिमवंत नां छेहड़ा थी त्रिण सौ योजने नंगोलिक नामा द्वीप छै एकोरुक प्रमाण ।

---

१. यह समग्र वर्णन जीवाभिगम की तीसरी प्रतिपत्ति में प्राप्त होता है । वहां अन्तर द्वीपों के वर्णन में १७वां द्वीप अश्वकर्ण है और १८वां द्वीप सिंहकर्ण है । पन्नवणा (१।८६) में भी यही क्रम है । भगवती की वृत्ति में सिंहकर्ण द्वीप के स्थान पर हस्तिकर्ण द्वीप है । यह क्रम ठाणं (४।३२५) से मिलता है । इससे आगे वृत्ति में कर्णप्रावरण द्वीप और प्रावरण द्वीप का उल्लेख है । इसका मेल न तो जीवाभिगम, पन्नवणा और ठाणं के साथ है और न ही जयाचार्य द्वारा लिखित वार्तिक के साथ है । सम्भव है भगवती की वृत्ति के मुद्रणकाल में यह प्रमाद हुआ हो । जयाचार्य ने किसी हस्तलिखित प्रति के आधार पर अथवा ठाणं के आधार पर यह वार्तिक लिखा हो, ऐसा भी हो सकता है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इम ए च्यार द्वीप हिमवंत नैं च्यार कोणे च्यार दाढा नैं विषे सरीखे प्रमाणे छै। ए च्यार द्वीप केड़े च्यार सौ योजने अनैं जंबूद्वीप नीं जगती थकी पिण च्यार सौ-च्यार सौ योजने हयकर्ण, गयकर्ण, गोकर्ण, शष्कुलिकर्ण ए च्यार द्वीप छै। च्यार सौ योजन लांबा-पहुला, वृत्ताकारे बारैं सौ पैंसठ योजन परिधि:, यथा एकोरुक केड़ै हयकरण, आभासिक केडै गजकर्ण, वैषाणिक केडै गोकर्ण, नांगोलिक केडै शष्कुलि-कर्ण—इणी परैं सर्वत्र जाणवूं।

ए हयकर्णादि च्यार द्वीप केडैं पांच सौ योजन अनैं जगती थकी पिण पांच सौ-पांचसौ योजन आदर्शमुखद्वीप, मिंढमुख द्वीप, अयोमुख द्वीप, गोमुख द्वीप—ए च्यार द्वीप छै। पांचसौ-पांचसौ योजन लांबा-पहुला वृत्ताकारे, पनरैं सौ एक्यासी योजन परिधि। वलि ए आदर्शमुखादि च्यार द्वीप केडैं छह सौ-छह सौ योजने अनैं जगती थी पिण छह सौ-छह सौ योजने अश्वमुख, हस्तिमुख, सिंहमुख, व्याघ्रमुख—ए च्यार द्वीप छै। छहसौ-छहसौ योजन लांबा-पहुला वृत्ताकारे, अठारैं सौ सत्ताणु योजन परिधि।

वलि ए अश्वमुखादि च्यार द्वीप केडैं सातसौ-सातसौ योजने, जगती थकी पिण सातसौ-सातसौ योजने अश्वकर्ण, सिंहकर्ण, अकर्ण, कर्णप्रावरण—ए च्यार द्वीप छै। सातसौ-सातसौ योजन लांबा-पहुला वृत्ताकारे, बावीस सौ तेरै योजन परिधि।

वलि ए अश्वकर्णादि च्यार द्वीप केडै आठसौ-आठसौ योजने जगती थकी पिण आठसौ-आठसौ योजने उल्कामुख, मेघमुख, विद्युत्मुख, विद्युद्दंत—ए च्यार द्वीप छै। आठसौ योजन लांबा-पहुला वृत्ताकारे, पंचवीससौ गुणत्रीस योजन परिधि।

वलि ए उल्कामुख मेघमुखादि च्यार द्वीप केडै नवसौ-नवसौ योजने जंबूद्वीप नी जगती थकी पिण नवसौ-नवसौ योजने घनदंत, लष्टदंत, गूढदंत शुद्धदंत—ए च्यार द्वीप छै। नवसौ योजन लांबा-पहुला वृत्ताकारे, अट्ठावीससौ पैंतालीस योजन परिधि। एतलै चूलहेमवंत पर्वत नीं च्यार दाढा एह अट्ठावीस द्वीप छै इम शिखरी पर्वत नैं विषे पिण अठावीस द्वीप छै। एवं छप्पन अंतरद्वीप जाणवा।

एह सर्व द्वीप प्रत्येके-प्रत्येके पद्मवरवेदिकाए अनैं वनखंडे परिवेष्टित महा-रमणीक छै। एहनों वर्णन जीवाभिगम[1] सूत्र थी विशेष जाणवो। ते द्वीप नैं विषे युगलिया मनुष्य छै। ते मनुष्य नां अत्यंत महासुंदर रूप छै। पिण द्वीप नां नाम जेहवा आकारे नथी। जे भणी श्री जीवाभिगम सूत्र नैं विषे एहनां रूप सबल देवता थी अधिक वखाण्यो छै अनैं अत्यंत सुखी छै। ते मनुष्य नैं आठसौ धनुष्य ऊंचपणै शरीर अनैं पल्योपम नों असंख्यातमों भाग आउखो हुवै। यत :—

> अंतरदीवेसु नरा धणुसय अट्ठसिया सया मुइया।
> पालिंति मिहुणधम्मं पल्लस्स असंखभागाओ ॥१॥
> चउसट्ठि पिट्ठकरंडगाणि मणुआण वच्चपालणया।
> अउणासीइं तु दिणा चउत्थभत्तेण आहारो त्ति[2] ॥२॥

सोरठा

१८. वृत्ति विषे ए बात, गिरि पर अंतरद्वीप छै।
धर्मसीह आख्यात, लवणोदधि अंतर अछै॥

१९. *इम अठवीसज आखिया, अंतरद्वीप नां ताय।
लांबपणैं नैं विक्खंभपणैं, पोता-पोता नां कहिवाय॥

१९. एवं अट्ठावीसं वि अंतरदीवा सएणं सएणं आयाम-विक्खंभेणं भाणियव्वा।

*: वीर बखाणी राणी चेलना जी

१. जी० ३।२१६-२२७

२. अभिधान राजेन्द्र कोश भाग० १ पृ ६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०. णवरं जे इतलो विशेष छै, इक-इक द्वीप नो जोय।
सहु अठवीस उद्देसगा, सेवं भंते ! अवलोय ।।
२१. नवम शत उद्देशो तीसमों, इकसौ सित्तरमीं ए ढाल।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' हरष विशाल ।।

२०. नवरं दीवे दीवे उद्देसओ, एवं सव्वे वि अट्ठावीसं उद्देसगा ।। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति
(श० ९।७,८)

नवमशते सप्तविंशतितमोद्देशकादारभ्यात्रिंशत्तमोद्देशकार्थः ।।९।२७-३०।।

ढाल : १७१

सोरठा

१. कह्या अर्थ ए सार, ते तो श्री जिन धर्म थी।
जाणैं अधिक उदार, अणसुणियो पिण को लहै ।।
२. इत्यादिक जे अर्थ प्रतिपादन रै कारणैं।
कहियै हिवै तदर्थ, उद्देशक इकतीसमों ।।

१. उक्तरूपाश्चार्थाः केवलिधर्माद् ज्ञायन्ते तं चाऽश्रुत्वाऽपि कोऽपि लभते। (वृ० प० ४३०)
२. इत्याद्यर्थप्रतिपादनपरमेकत्रिंशत्तममुद्देशकमप्याह— (वृ० प० ४२९)

दूहा

३. नगर राजगृह जाव इम, बोल्या गोयम स्वाम।
धर्मफलादिक वचन प्रभु ! अणसांभलिया ताम ।।

३. रायगिहे जाव एवं वयासी—असोच्चा णं भंते ! अश्रुत्वा—धर्मफलादिप्रतिपादकवचनमनाकर्ण्य (वृ० प० ४३२)

४. केवलज्ञानी जिण तणैं पासै सुणियो नांय।
धर्म केवली-भाखियो, श्रवणपणैं करि पाय ।।

४. केवलिस्स वा।
'केवलिनः' जिनस्य। (वृ० प० ४३२)

सोरठा

५. श्रवणपणैं करि ख्यात, भाव धर्म सुणवा तणां।
एहवूं अर्थ जणात, वदै केवली तेह सत्य ।।
६. श्रवण रूप कहिवाय, वंछा रूप लहै जिको।
वंछै धर्म सुहाय, ते पिण जाणैं केवली ।।

दूहा

७. तथा केवली नें जिणे, स्वयमेव प्रश्न पूछेह।
पुनः केवली पैं सुण्यो, केवली श्रावक तेह।

७. केवलिसावगस्स वा।
'केवलिसावगस्स व' त्ति केवली येन स्वयमेव पृष्टः श्रुतं वा येन तद्वचनमसौ केवलिश्रावकस्तस्य। (वृ० प० ४३२)

८. इमज केवली नीं जिका, तंत श्राविका ताम।
ए बिहुं पैं अणसांभल्यां, धर्म लहै अभिराम ।।
९. सेव केवली नीं करै, अन्य भणीं कथ्यमान।
सुण धारै ते जिण तणो, कह्यो उपासग जान ।।

८. केवलिसावियाए वा।

९. केवलिउवासगस्स वा।
'केवलिउवासगस्स व' त्ति केवलिन उपासनां विदधानेन केवलिनैवान्यस्य कथ्यमानं श्रुतं येनासौ केवल्युपासकः। (वृ० प० ४३२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. इमज केवली नीं जिका, उपासगा गुणखान।
ए बिहुं पै अणसांभल्यां, धर्म लहै सुध मान ।।
११. अथवा केवली-पाक्षिक, स्वयंबुद्ध कहिवाय।
ते पासे सुणियां बिना, लहै धर्म सुखदाय ।।

१२. तथा स्वयंबुद्ध नो जिको, श्रावक गुण नीं राश।
स्वयंबुद्ध नीं श्राविका, अणसुणियै बिहुं पास ।।
१३. उपासग स्वयंबुद्ध नों, उपासगा वलि ताय।
ए बिहुं पे सुणियां बिना, धर्म पामवुं थाय ।।
१४. ए दश पे सुणियां बिना, केवली भाख्यो धर्म।
श्रुत नैं चारित्र रूप लहै, श्रवण रूप करि पर्म ।।

१५. जिन भाखै यां दश कनैं, सुणियां विण जिन धर्म।
सुणवो कोइक पामियै, कोइक न लहै मर्म ।।

१६. किण अर्थे प्रभु ! इम कह्यो, विण सुणियै दश पास।
कोइक धर्म सुणवो लहै, कोइक न लहै तास ?
१७. *जिन भाखै सुण गोयमा !
ज्ञानावरणी कर्म कांइ क्षयोपशम जिण कीधो, हो लाल।
ते दशुं पास सुण्यां बिना,
धर्म केवली भाख्यो कांइ सुणवो पामै सीधो, हो लाल ।।

सोरठा

१८. इहां बहु वच संवादि, नाणावरणिज्जा कह्यो।
मति ज्ञानावरणादि, बहु भेदे करि जाणवुं ।।
१९. फुन अवग्रह पिछाण, मति आवरणादिक तणां।
भेद करीनैं जाण, ते बहु भावपणां थकी ।।
२०. क्षयोपशम बहु भेद, तेह तणां आवरण थी।
बहु वच करि संवेद, ज्ञानावरणी नैं कह्यं ।।
२१. *ज्ञानावरणी क्षयोपशम नहिं कियो,
ते दश पै विण सुणियै कांइ जिन धर्म सुणवो न पावै।
तिण अर्थे कह्यो विण सुण्यो,
धर्म सुणवो कोइ पावै कोइक रै श्रवण न आवै ।।

सोरठा

२२. गिरि-सरिता पाषाण, तेह घोलणा न्याय करि।
कोइक नैं पहिछाण, पामै धर्मज इहविधे ।।
२३. क्षयोपशमईज जेह, अंतरंग कारण तसु।
जिनोक्त धर्म लहेह, श्रवणरूप भावे करी ।।

१०. केवलिउवासियाए वा।

११. तप्पक्खियस्स वा।
'तप्पक्खियस्स' त्ति केवलिनः पाक्षिकस्य स्वयंबुद्धस्य।
(वृ० प० ४३२)
१२. तप्पक्खियसावगस्स वा, तप्पक्खियसावियाए वा।

१३. तप्पक्खियउवासगस्स वा, तप्पक्खियउवासियाए वा।

१४. केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए ?
'धम्मं' ति श्रुतचारित्ररूपं 'लभेज्ज' त्ति प्राप्नुयात् 'सवणयाए' त्ति श्रवणतया श्रवणरूपतया श्रोतुमित्यर्थः। (वृ० प० ४३२)
१५. गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए। (श० ९।९)
१६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ--- असोच्चा णं जाव नो लभेज्ज सवणयाए ?
१७. गोयमा ! जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए।

१८-२०. 'नाणावरणिज्जाणं' ति बहुवचनं ज्ञानावरणीयस्य मतिज्ञानावरणादिभेदेनावग्रहमत्यावरणादिभेदेन च बहुत्वात्। (वृ० प० ४३२)

२१. जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवयणाए। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ---असोच्चा णं जाव नो लभेज्ज सवणयाए।
(श० ९।१०)
२२. ज्ञानावरणीयस्य क्षयोपशमश्च गिरिसरिदुपलघोलनान्यायेनापि कस्यचित्स्यात्। (वृ० प० ४३२)
२३. तत्सद्भावे चाश्रुत्वाऽपि धर्मं लभते श्रोतुं, क्षयोपशमस्यैव तल्लाभेऽन्तरङ्गकारणत्वादिति।
(वृ० प० ४३२)

*लय : पातक छानो नवि रहै

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. *हे प्रभु ! दश पे सुणियां बिना,
केवल शुद्ध सुजाणी कांइ बोध सम्यक्त्व सुपावै ?
प्रत्येकबुद्धादिक नीं परै,
जिन कहै कोइक पावै कोइक रै बोध न आवै ।।
२५. किण अर्थे ? तब जिन कहै,
दर्शणावरणी कर्मज कांइ क्षयोपशम जिण कीधो ।
ते दश पे सुणियां बिना,
सम्यक्‌दर्शण शुद्धज अनुभवै लहै ते सीधो ।।

२४,२५. असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बोहिं बुज्झेज्जा ?
गोयमा ! ·· अत्थेगतिए केवलं बोहिं बुज्झेज्जा अत्थेगतिए केवलं बोहिं नो बुज्झेज्जा । (श० ९।११)
से केणट्ठेणं भंते ! ····गोयमा ! जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बोहिं बुज्झेज्जा ।
'केवलं बोहिं' ति शुद्धं सम्यग्दर्शनं 'बुज्झेज्ज' त्ति बुद्ध्येतानुभवेदित्यर्थः यथा प्रत्येकबुद्धादिः ।
(वृ०प० ४३२)

२६. दर्शणावरणी क्षयोपशम नहिं कियो,
ते दश पे विण सुणियां सम्यक्त्व न पावै कोई ।
तिण अर्थे कह्यो विण सुण्यो,
कोइक बोधज पावै कोइक नैं बोध न होई ।।

२६. जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बोहिं नो बुज्झेज्जा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ- असोच्चा णं जाव केवलं बोहिं नो बुज्झेज्जा । (श० ९।१२)

सोरठा

२७. दर्शन सम्यक्त्व सोय, तास आवरणी कर्म ए ।
दर्शण मोहनी जोय, पिण दर्शणावरणी नहीं ।।
२८. दर्शणावरणी कर्म, तेहनों क्षयोपशम थयां ।
लहै सम्यक्त्व सुमर्म, बोधि सम्यक्त पर्याय छै ।।
२९. सम्यक्‌दर्शणहीज, बोधि कहीजै तेहनैं ।
ते माटैज कहीज, बोधि पर्याय सम्यक्त्व नों ।।

२७,२८. 'दरिसणावरणिज्जाणं' ति इह दर्शनावरणीयं दर्शनमोहनीयमभिगृह्यते, बोधेः सम्यग्दर्शनपर्यायत्वात् तल्लाभस्य च तत्क्षयोपशमजन्यत्वादिति ।
(वृ० प० ४३२)

३०. *हे प्रभु ! दश पै सुण्यां बिना,
केवल शुद्ध संपूर्ण अणगारपणो ते पावै ।
जिन कहै दश पै सुण्यां बिना,
कोइक साधु थावै कोइक मुनिपणो न भावै ।।

३०. असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा अत्थेगतिए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं नो पव्वएज्जा ।
(श० ९।१३)
'केवलां' शुद्धां सम्पूर्णां वाऽनगारितामिति योगः ।
(वृ० प० ४३२)

३१. किण अर्थे ? तब जिन कहै,
धर्म अंतराय कर्म कांइ क्षयोपशम जिण कीधो ।
ते दश पे सुणियां बिना,
केवल शुद्ध संपूर्ण मुंड थई मुनि ह्वै सीधो ।।

३१. से केणट्ठेणं भंते ! ····
गोयमा ! जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवति से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा ।

सोरठा

३२. धर्म चारित्र प्रतिपत्ति, तास विघ्नकारक जिको ।
चारित्र-मोह कथत्ति, सर्वविरति आवा न दै ।।

३२,३३. 'धम्मंतराइयाणं' ति अन्तरायो—विघ्नः सोऽस्ति येषु तान्यन्तरायिकाणि धर्मस्य—चारित्रप्रतिपत्तिलक्षणस्यान्तरायिकाणि धर्मान्तिरायिकाणि तेषां

*लय : पातक छानो नवि रहै

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३. तास क्षयोपशम थाय, मुंड थई लहै मुनिपणो।
एहवूं न्याय जणाय, वीर्य अंतराय वृत्ति में ॥

३४. *धर्म अंतराय कर्म जिणे,
क्षयोपशम नहिं कीधो अणगारपणो तसु नावै।
तिण अर्थे कह्यो बिण सुण्यो,
कोइक तो मुनि थावै कोइक मुनिपणों न भावै।

३५. हे प्रभु! दश पै सुण्यां बिना,
केवल शुद्ध संपूर्ण कांइ ब्रह्मचर्य ए पालै?
जिन कहै कोइक पालै सही,
कोइ एक नहीं पालै कांइ मिथुन प्रति नहीं टालै ॥

३६. किण अर्थे? तब जिन कहै,
चरित्तावरणी कर्मज कांइ क्षयोपशम जिण कीधो।
ते दश पे सुणियां बिना,
ब्रह्मचर्य शुद्ध पालै कांइ मिथुन-विरति गुण लीधो ॥

सोरठा

३७. चरित्तावरणी जाण, लक्षण पुं - वेदादि छै।
मिथुन-विरति पहिछाण, विशेष थी ग्रहिवूं इहां ॥

३८. *चरित्तावरणी कर्म जिण,
क्षयोपशम नहिं कीधो ते ब्रह्मचर्य नहिं पालै।
तिण अर्थे इम आखियो,
बिण सुण्यां ब्रह्म कोइ पालै कांइ कोइ मिथुन नहि टालै ॥

३९. हे प्रभु! दश पै सुण्यां विना,
संजम शुद्धज पालै कांइ अतिचार टालेवा।
जतना विशेष तिणे करी,
जिन कहै कोइक पामै कोइक नहिं पामेवा ॥

४०. किण अर्थे! तब जिन कहै,
जयणावरणी कर्मज कांइ क्षयोपशम जिण कीधो।
ते दश पास सुण्यां बिना,
जाव केवल चारित्र नें अति जतना पामै सीधो ॥

४१. जयणावरणी क्षयोपशम नहिं कियो,
ते दश पे विण सुणियां नहिं पामै जतना नामै।
तिण अर्थे कह्यो विण सुण्यां,
कोइक संजम पामै कोइक संजम न पामै ॥

*लय : पातक छानो नवि रहै

वीर्यान्तरायचारित्रमोहनीयभेदानामित्यर्थः।
(वृ० प० ४३२,४३३)

३४. जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवति से णं……केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं नो पव्वएज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ— असोच्चा णं जाव केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं नो पव्वएज्जा। (श० ९।१४)

३५. असोच्चा णं भंते! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खिय-उवासियाए वा केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा? गोयमा! अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवासं नो आवसेज्जा। (श० ९।१५)

३६. से केणट्ठेणं भंते!………
गोयमा! जस्स णं चरित्तावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा।

३७. 'चरित्तावरणिज्जाणं' ति इह वेदलक्षणानि चारित्रा-वरणीयानि विशेषतो ग्राह्याणि, मैथुनविरतिलक्षणस्य ब्रह्मचर्यवासस्य विशेषतस्तेषामेवावारकत्वात्।
(वृ० प० ४३३)

३८. जस्स णं चरित्तावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं बंभचेरवासं नो आवसेज्जा से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं बंभचेरवासं नो आवसेज्जा। (श० ९।१६)

३९. असोच्चा णं भंते! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खिय-उवासियाए वा केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा? गोयमा! ····अत्थेगतिए केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, अत्थेगतिए केवलेणं संजमेणं नो संजमेज्जा।
(श० ९।१७)

इह संयमः प्रतिपन्नचरित्रस्य तदतिचारपरिहाराय यतनाविशेषः। (वृ० प० ४३३)

४०. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ·······
गोयमा! जस्स णं जयणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा।

४१. जस्स णं जयणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्प-क्खियउवासियाए वा केवलेणं संजमेणं नो संजमेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ - असोच्चा णं जाव केवलेणं संजमेणं नो संजमेज्जा। (श० ९।१८)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४२. हे प्रभु ! दश पे सुण्यां विना,
केवल शुद्ध संपूर्ण संवर करि आतम भावै।
संवर शब्दे शुभ अध्यवसाय छै,
जिन कहै कोइक भावै कोइक संवर न पावै ।।

४३. किण अर्थे ? तब जिन कहै,
अध्यवसायावरणी कर्म क्षयोपशम थाये।
इहां भाव चारित्रावरणी कह्यो,
ते विण सुण्यां प्रवर्त्तै संवर शुभ अध्यवसाये ।।

सोरठा

४४. आख्या शुभ अध्यवसाय, चारित्ररूपपणें करि।
तसु आवरणी ताय, चारित्रावरणी वृत्ति में ।।
४५. 'कर्म रूंधण रा सार, अध्यवसाय संवर तिके।
त्रिहुं जोगां थो न्यार, बुद्धिवंत न्याय विचारज्यो ।।
४६. जोग व्यापार कहाय, चंचल स्वभाव जेहनों।
संवर गुण सुखदाय, स्थिर स्वभाव है तेहनों ।।
४७. पंचम ठाणे[1] पेख, फुन समवाअंग[2] पंचमे।
अजोग संवर लेख, पिण संवर शुभ जोग नहिं' ।। (ज० स०)

४८. *अध्यवसायावरणी कर्म नों,
क्षयोपशम नहि कीधो तसु शुद्ध संवर नहि होई।
तिण अर्थे कह्यो विण सुण्यां,
कोइक संवर लहियै नहिं पामै संवर कोई ।।

४९. हे प्रभु ! दश पे सुण्यां विना,
केवल आभिनिबोधिक ए प्रवर ज्ञान उपजावै ?
जिन कहै दश पे सुण्यां बिना,
आभिनिबोधिक ज्ञानज कोइ पावै को नहिं पावै ।।

५०. किण अर्थे ? तब जिन कहै,
आभिनिबोधिक ज्ञानावरणी क्षयोपशम कीधो।
ते दसुं पे सुणियां विना,
केवल शुद्ध संपूर्ण आभिनिबोधिक लहै सीधो ।।

---

*लय : पातक छानो नवि रहै

१. ठाण ५।११० । २. सम० ५।५ ।

४२. असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खिय-उवासियाए वा केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा ?
गोयमा ! ......अत्थेगतिए केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, अत्थेगतिए केवलेणं संवरेणं नो संवरेज्जा।
(श० ९।१९)
संवरशब्देन शुभाध्यवसायवृत्तेर्विवक्षितत्वात् ।
(वृ० प० ४३३)

४३. से केणट्ठेणं भंते ! ......
गोयमा ! जस्स णं अज्झवसाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा।
तस्याश्च भावचारित्ररूपत्वेन तदावरणक्षयोपशम-लभ्यत्वात् । (वृ० प० ४३३)

४४. अध्यवसानावरणीयशब्देनेह भावचारित्रावरणीयान्यु-क्तानीति । (वृ० प० ४३३)

४८. जस्स णं अज्झवसाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं....केवलेणं संवरेणं नो संवरेज्जा से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-- असोच्चा णं जाव केवलेणं संवरेणं नो संवरेज्जा।
(श० ९।२०)

४९. असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खिय-उवासियाए वा केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पा-डेज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खिय-उवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं आभिणिबोहिय-नाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलं आभिणिबोहि-यनाणं नो उप्पाडेज्जा। (श० ९।२१)

५०. से केणट्ठेणं भंते ! ......
गोयमा ! जस्स णं आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५१. आभिनिबोधिक ज्ञानावरणी कर्म नों,
क्षयोपशम नहिं कीधो ते दश पासै विन सुणियो।
ते मतिज्ञान पामै नहीं,
तिण अर्थे कोइ पामै कोइ नहिं पामै इम थुणियो ।।

५२. हे प्रभु ! दश पे सुण्यां विना,
केवल शुद्ध संपूरण कांइ श्रुतज्ञान ते लहियै ?
जिम मति तिम श्रुत ज्ञान छै,
णवरं तसु श्रुतज्ञानावरणी क्षयोपशम कहियै ।।

५३. शुद्ध अवधिज्ञान इमहीज छै,
णवरं अवधिज्ञानावरणी क्षयोपशम धरणी।
इम शुद्ध मनपज्जव लहै,
णवरं क्षयोपशम जे मनपज्जवज्ञानावरणी ।।

५४. हे प्रभु ! दश पे सुणियां विना,
केवलज्ञान उपावै ? इमहिज णवरं थावै।
केवल ज्ञानावरणी नों क्षय कह्युं,
शेष तिमज तिण अर्थे जावत केवल नहि पावै ।।

सोरठा

५५. पूर्वे आख्या अर्थ, वलि समुदाय करी सहु।
बोल इग्यार तदर्थ, कहियै छै हिव आगलै ।।

५६. *हे प्रभु ! दश पे सुण्यां विना,
धर्म केवली भाख्यो सुणवो भावै पहिलूं।
केवल बोध सम्यक्त्व लहै,
केवल मुंड थई नें अणगारपणुं लहै वहिलूं ।।

५७. शुद्ध ब्रह्मचर्यवासो वसै,
केवल संजम पामै केवल संवर संवरियै।
शुद्ध आभिनिबोधिक लहै,
जाव शुद्ध मनपज्जव वलि केवलज्ञान उचरियै ।।

५८. जिन कहै दश पे सुण्यां विना,
धर्म सुणवो कोइ पावै नहिं पावै छै वलि कोई।
कोइक शुद्ध सम्यक्त्व लहै,
कोइएक नहि पावै केवल शुद्ध सम्यक्त सोई ।।

५९. कोइक केवल मुंड थई,
गृहस्थावास थकी जे अणगारपणों अभिलाखै।
कोइक शुद्धज मुंड थई,
गृहस्थावास तजी नें अणगारपणों नहिं चाखै ।।

*लय : पातक छानो नवि रहै

५१. जस्स णं आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा। (श० ९।२२)

५२. असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं सुयनाणं उप्पाडेज्जा ?
एवं जहा आभिणिबोहियनाणस्स वत्तब्वया भणिया तहा सुयनाणस्स वि भाणियव्वा, नवरं—सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे।

५३. एवं चेव केवलं ओहिनाणं भाणियव्वं, नवरं—ओहिनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे। एवं केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा, नवरं—मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे। (सं० पा०) (श० ९।२३-२८)

५४. असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलनाणं उप्पाडेज्जा ?
एवं चेव, नवरं—केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए भाणियव्वे, सेसं तं चेव। (सं० पा०) से तेणट्ठेणं गोयमा ! ……जाव केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा। (श० ९।२९, ३०)

५५. पूर्वोक्तानेवार्थान् पुनः समुदायेनाह—
(वृ० प० ४३३)

५६. असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा—केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए केवलं बोहिं बुज्झेज्जा, केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा।

५७. केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा, जाव (सं० पा०) केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा, केवलनाणं उप्पाडेज्जा ?

५८. गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए केवलं बोहिं बुज्झेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बोहिं नो बुज्झेज्जा।

५९. अत्थेगतिए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, अत्थेगतिए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं नो पव्वएज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६०. कोइक शुद्ध ब्रह्मचर्य वसै,
कोइक शुद्ध संपूर्ण ब्रह्मचर्य नहिं पालै।
कोइक शुद्ध संजम वरै,
कोइक संजम न लहै अतिचार प्रतै नहिं टालै ॥

६१. इम कोइक संवर लहै,
कोइक संवर न लहै दश पास सुण्यां विण जाणी।
आभिनिबोधिक को लहै,
कोइक आभिनिबोधिक नहिं पामै पवर पिछाणी ॥

६२. इम यावत मनपज्जवे,
कोइ केवल पावै कोइक नैं केवल नावै।
किण अर्थे ? प्रभु ! विण सुण्यां,
तिमहिज जावत कोइक वर केवल नांहि उपावै ॥

६३. श्री जिन भाखै जेहनैं,
ज्ञानावरणी कर्मज क्षय-उपशम न कियो सोई।
दर्शणावरणी क्षयोपशम जिण नहिं कियो,
धर्म अंतराय कर्मज ते क्षयोपशम नहिं होई ॥

६४. इम चरित्रावरणी क्षयोपशम नहिं कियो,
जयणावरणी कर्मज कांइ क्षय उपशम नहिं ज्यांही।
अध्यवसायावरणी क्षयोपशम नहीं,
आभिनिबोधिक ज्ञानावरणी क्षयोपशम नांही ॥

६५. जावत वलि मनपज्जवे ज्ञानावरणीज,
कांइ क्षयोपशम नहिं थायो।
केवल ज्ञानावरणी जसु जावत क्षय नहिं,
कीधो हो तसु आगल फल कहिवायो ॥

६६. ते दश पास सुण्यां विना,
धर्म केवली भाख्यो कांइ सुणवो ते नहिं भावै।
केवल बोधि न अनुभवै,
जाव केवल नहिं पावै ए कर्म उदय फल थावै ॥

६७. जिन ज्ञानावरणी क्षयोपशम कियो,
दर्शणावरणी कर्मज कांइ क्षयोपशम जिण कीधो।
धर्मांतराय क्षयोपशम जसु,
जावत केवल ज्ञानावरणी जिण क्षय कर दीधो ॥

६८. ते दश पास सुण्यां विना,
धर्म केवली भाख्यो सुण लाधै सुखकारी।
केवल बोधज अनुभवै,
जाव केवल उपजावै ए गुण एकादश भारी ॥

६९. नवमें शत इकतीसम देश ए,
एक सौ इकोतरमी ए ढाल अनोपम भाखी।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी,
'जय-जश' हरष आनंदा कांइ गण वृद्धि संपति राखी ॥

६०. अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवासं नो आवसेज्जा। अत्थेगतिए केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, अत्थेगतिए केवलेणं सजमेणं नो संजमेज्जा।

६१. अत्थेगतिए केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, अत्थेगतिए केवलेणं संवरेणं नो संवरेज्जा, अत्थेगतिए केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलं आभिणीबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा।

६२. एवं जाव मणपज्जवनाणं (सं० पा०) अत्थेगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा। (श० ९।३१)
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं तं चेव जाव अत्थेगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ?

६३. गोयमा ! जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ।

६४. एवं चरित्तावरणिज्जाणं जयणावरणिज्जाणं अज्झवसाणावरणिज्जाणं आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाणं।

६५. जाव (सं० पा०) मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए नो कडे भवइ।

६६. से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए, केवलं बोहिं नो बुज्झेज्जा जाव केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा।

६७. जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ, जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ, जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ, एवं जाव जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए कडे भवइ।

६८. से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, केवलं बोहिं बुज्झेज्जा जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा।
(श० ९।३२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : १७२

दूहा

१. ते विण सुणियां तसु प्रभु ! उपजै केवलज्ञान।
ते केहनैं ए ऊपजै ? भाखै तब भगवान॥
२. बहुलपणैं छठ-छट्ठवंत, बाल तपस्वी ताय।
विभंग ऊपजै तेहनी, हिवैं वारता आय॥

*जिनवर कहै रे, इम होवै असोच्चा केवली रे॥ (ध्रुपदं)

३. अंतर-रहित छठ-छठ करै रे, ऊंचो बाहु बिहुं स्थापो रे।
आतापनभूमिका विषे रे, सूर्य स्हामी आतापो रे॥

४. स्वभावे भद्र सरलपणैं, स्वभावे उपशमवंतो।
क्रोध मान माया लोभ ते, स्वभावे पतला अत्यंतो॥
५. मृदु कहितां कोमल अछै, मार्दव निरहंकारो।
ए गुण सहितपणैं करी, आलीनपणैं उदारो॥
६. भद्र विनीतपणैं करी, अन्य दिवस ते किवारै।
शुभ अध्यवसाये करी, शुभ परिणाम तिवारै।
७. लेस्या विशुद्धमाने करी, तदावरणी क्षयोपशम जन्नो।
ईहा पोह मग्गण नी गवेषणा करतां विभंग अनाण उप्पन्नो॥

सोरठा

८. तदावरणी पहिछाण, विभंग अनाणावरणी ए।
पिण ए भेद सुजाण, अवधिज्ञानावरणी तणों॥
९. अवधिज्ञान अवलोय, वलि विभंग अज्ञान ए।
ए बेहूं नों जोय, दर्शण अवधिज एक है॥
१०. मति श्रुत ज्ञानावरण, क्षयोपशम तेहनुं थयां।
पामै ए गुण धरण, मति श्रुत ज्ञान अज्ञान बे॥
११. तिम अवधि ज्ञानावरणी जान, क्षयोपशम तेहनुं थयां।
पामै अवधि सुज्ञान, विभंग अनाण लहै वलि॥
१२. तदावरणी ते जान, विभंग अनाणावरणी ते।
धुर गुणठाण पिछाण, क्षयोपशम तेहनों थयो॥
१३. ईहा कहितां पेख, छता अर्थ प्रति जाणवा।
चेष्टा तास विशेख, तेह तणैं सन्मुख थयो॥
१४. अपोह पक्ष रहीत, धर्म ध्यान निर्णय करै।
एहवो अर्थ पुनीत, बडा टबा में आखियो॥
१५. मग्गण अन्वय धर्म, तेह तणी आलोचना।
गवेषणा ए मर्म, व्यतिरेक धर्म आलोचना॥
१६. करतां एह विचार, तेह बाल तपसी भणी।
विभंग अनाण तिवार, उपनों शुद्ध परिणाम थी॥

*लय : राज पामियो रे करकंड् कंचनपुर तणो

१. अथाश्रुत्वैव केवल्यादिवचनं यथा कश्चित् केवलज्ञान-मुत्पादयेत्तथा दर्शयितुमाह— (वृ० प० ४३३)
२. तत्प्रायः षष्ठतपश्चरणवतो बालतपस्विनो विभङ्गः—ज्ञानविशेष उत्पद्यत इति ज्ञापनार्थमिति। (वृ० प० ४३३)
३. तस्स णं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स।
४. पगइभद्दयाए पगइउवसंतयाए पगइपयणुकोह-माण-माया-लोभयाए
५. मिउमद्दवसंपन्नयाए, अल्लीणयाए
६. विणीययाए अण्णया कयावि सुभेणं अज्झवसाणेणं सुभेणं परिणामेणं
७. लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं-विसुज्झमाणीहिं तयावर-णिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापोहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स विब्भंगे नामं अण्णाणे समुप्पज्जइ।
८. 'तयावरणिज्जाणं' ति विभङ्गज्ञानावरणीयानाम्। (वृ० प० ४३३)
१३. इहेहा—सदर्थाभिमुखा ज्ञानचेष्टा। (वृ० प० ४३३)
१४. अपोहस्तु— विपक्षनिरासः। (वृ० प० ४३३)
१५. मार्गणं च—अन्वयधर्मालोचनं गवेषणं तु—व्यतिरेकधर्मालोचनमिति। (वृ० प० ४३३)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७. 'इहां कही विशुद्ध लेस, तेजू पद्मज शुक्ल ए।
ते भावे सुविशेष, द्रव्य प्रयोजन इहां नहीं ॥
१८. आख्या शुभ अध्यवसाय, शुभ परिणाम पिण भाव ए।
ते माटै कहिवाय, विशुद्ध लेश्या पिण भाव छै ॥
१९. शुक्ल लेश्या नां पेख, लक्षण उत्तराध्येन में।
चउतीसमें[1] सुदेख, आख्या छै एहवा तिहां ॥
२०. वर्जे आर्त्त रुद्र, धर्म शुक्ल ध्यावै तिको।
लेश्या शुक्ल अक्षुद्र, तेहनां ए लक्षण कह्या ॥

२१. विशिष्ट शुद्ध विशुद्ध, तेह शुक्ल ध्यावै तदा।
वर्ज्या आर्त्त रु रुद्र, धर्म शुक्ल आख्या जदा ॥
२२. शुक्ल लेश्या में जाण, गुणस्थानक तेरै अछै।
ऊपरलै गुणस्थान, शुक्ल ध्यान वर लीजियै ॥
२३. प्रथम आदि गुणस्थान, शक्ल लेश वर्त्तै यदा।
धर्म ध्यान पहिछान, निमल न्याय अवलोकियै ॥
२४. तिण कारण कहिवाय, तेह बाल तपसी तणां।
विशुद्ध लेश रै मांय, धर्म-ध्यान ए अर्थ शुद्ध ॥
२५. ते गुणठाणे अवलोय, ज्ञानावरणी कर्म नों।
थयो क्षयोपशम सोय, तिण सूं विभंग समुप्पनो ॥
२६. सुख विपाक अविरुद्ध, सुमुख सुदत्त प्रतिलाभिया।
त्रिविध जोग तसु शुद्ध, त्रिकरण शुद्ध कह्या वलि ॥
२७. ए पिण छै धर्म ध्यान, तेहथी परित संसार करि।
मनुष्यायु बंध जान, तिण सूं धुर गुणठाण ए ॥
२८. गज भव मेघकुंवार, सुसला री अनुकंप करि।
कियो परित्त संसार, ए पिण धर्म ध्याने करि ॥

२९. तामली सोमल आदि, अनित्य-चिंतवणा तसु कही।
अनित्य चिंतवणा साधि, धर्म ध्यान नों भेद है ॥
३०. तिम इहां पिण शुद्ध लेश, अध्यवसाय परिणाम शुभ।
धर्म ध्यान सुविशेष, तेहथी विभंग समुप्पनो' ॥ [ज० स०]

३१. *विभंग अनाण ऊपने छते, जघन्य थी आंगुल नो विशेखै।
असंख्यातमां भाग नैं, जाणैं नैं वलि देखै ॥
३२. ते उत्कृष्ट थकी वलि, जोजन असंख हजारो।
जाणैं नै देखै अछै, क्षय-उपशम गुण सारो ॥
३३. ते विभंग अनाण ऊपजवे करी, जाण्या जीव अजीवो।
पाखंड निज व्रत में रह्या, सारंभ सपरिग्रह अतीवो ॥

३४. महासंक्लिश्यमान जाणियो, अल्पसंक्लिशमान तेहो।
महा नी अपेक्षा विशुद्धमान ते, तेह प्रतै जाणेहो ॥

---

*लय : राज पामियो रे करकंडू कंचनपुर तणो

१. उ० ३४।३१

२०. अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता धम्मसुक्काणि झायए।
पसन्नचित्ते दन्तप्पा समिए गुत्ते य गुत्तिहिं ॥
(उत्तरा० ३४।३१)

२६,२७. तए णं तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं……तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे संसारे परित्तीकए।
(विपा० २।१।२३)

२८. तए णं तुमं मेहा! ताए पाणाणुकंपयाए……संसारे परित्तीकए, माणुस्साउए निबद्धे।
(ज्ञाता १।१।१८२)

२९. तए णं तस्स तामलिस्स……अणिच्चजागरियं जागरमाणस्स……। (भ० श० ३।३६)
धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ……।
(भ० श० २५।६०८)

३१,३२. से णं तेणं विब्भंगनाणेणं समुप्पन्नेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेण असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं जाणइ-पासइ।

३३. से णं तेणं विब्भंगनाणेणं समुप्पन्नेणं जीवे वि जाणइ, अजीवे वि जाणइ, पासंडत्थे सारंभे सपरिग्गहे
'पासंडत्थे' त्ति व्रतस्थान्। (वृ० प० ४३३)

३४. संकिलिस्समाणे वि जाणइ, विसुज्झमाणे वि जाणइ।
'संकिलिस्समाणे वि जाणइ' त्ति महत्या संक्लिश्यमानतया संक्लिश्यमानानपि जानाति 'विसुज्झमाणे वि जाणइ' त्ति अल्पीयस्याऽपि विशुद्धयमानतया विशुद्धयमानानपि जानाति। (वृ० प० ४३३)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३५. तेह प्रथम चारित्र थकी, पामैं सम्यक्त्व सारो ।
एह पूर्वलै गुणै करि, पाम्या बोधि उदारो ।।
३६. 'छठ-छठ तप पहिलां कियो, सूर्य स्हामी आतापो ।
प्रकृति भद्र उपशांतता, पतली चौकड़ी व्यापो ।।
३७. मृदु मार्दव आलीनता, भद्र विनीतपणें ताह्यो ।
जीव उज्जल थयां एकदा, आया शुभ अध्यवसायो ।।
३८. शुभ परिणाम लेश्या भलो, ए उत्तम गुण कर सीधो ।
विभंग ज्ञानावरणी कर्म नों, क्षयोपशम जिण कीधो ।।
३९. ईहापोह मार्गणा गवेषतो, पाम्यो विभंग अज्ञानो ।
जीव अजीव नैं जाण्या तेहथी, पायो सम्यक्त्व प्रधानो ।।
४०. तिण कारण ए गुण सहु, श्री जिन आज्ञा मांह्यो ।
निर्जर री करणी भली, तेहथी सम्यक्त्व पायो ।।
४१. सम्यक्त्व पडिवजियां पछै, समण धर्म प्रति रज्जै ।
समण धर्म नैं रोचवी, चारित्र नैं पडिवज्जै' ।। (ज० स०)
४२. भाव चारित्र नैं अंगीकरी, पडिवज्जै मुनिलिंग—वेषो ।
इम उत्तम गुण करि लह्यु, सम्यक्त्व चरण विशेषो ।।
४३. चरित्त आयां पहिलां तिको, सम्यक्त्व आवण टाणैं ।
मिथ्यात पजवा हीणा पड्या, सम्यक्त्व नां वड्ढमाणैं ।।
४४. सम्यक्त्व पायो तिण समय, विभंग अनाण नों ताह्यो ।
शीघ्र ही अवधि हुवैं सही, भाव चारित्र पछैं पायो ।।

सोरठा

४५. अवधि विभंग नो होय, सम्यक्त्व प्रतिपत्ति काल तसु ।
लेश्यादिक करि सोय, पूछै गोयम गणहरू ।।

४६. *ते प्रभु ! कति लेश्या विषे ? तब भाखै जिनराया ।
तीन विशुद्ध लेश्या विषे, तेजू आदि कहायो ।।

सोरठा

४७. भावे प्रशस्त लेश, तास विषेज हुवै अछै ।
सम्यक्त्व चरण विशेष, पडिवज्जै तिण अवसरे ।।

४८. *प्रभु! कति ज्ञान विषे हुवै ? जिन कहै त्रिण अवलोई ।
आभिनिबोधिक श्रुत विषे, अवधिज्ञान विषे होई ।।

४९. ते प्रभु ! स्युं सजोगी हुवै, अथवा अजोगी होई ?
जिन कहै सजोगी हुवै, अजोगी नहीं कोई ।।

सोरठा

५०. अवधि थयो ते काल, चारित्र ग्रहण समय वलि ।
सजोगी सुविशाल, अजोगी कहियै नहीं ।।

*लय : राज पामियो रे करकंडू कंचनपुर तणो

३५. से णं पुव्वामेव सम्मत्तं पडिवज्जइ ।
'पुव्वामेव' त्ति चारित्रप्रतिपत्तेः पूर्वमेव ।
(वृ० प० ४३३)

४१. सम्मत्तं पडिवज्जित्ता समणधम्मं रोएति, समणधम्मं रोएत्ता चरित्तं पडिवज्जइ ।
४२. चरित्तं पडिवज्जित्ता लिंगं पडिवज्जइ ।

४३,४४. तस्स णं तेहिं मिच्छत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं-परिहायमाणेहिं सम्मदंसणपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं-परिवड्ढमाणेहिं से विब्भंगे अण्णाणे सम्मत्तपरिग्गहिए खिप्पामेव ओही परावत्तइ । (श० ९।३३)
चारित्रप्रतिपत्तेः पूर्वं सम्यक्त्वप्रतिपत्तिकाल एव विभंगज्ञानस्यावधिभावो द्रष्टव्यः, सम्यक्त्वचारित्रभावे विभंगज्ञानस्याभावादिति । (वृ० प० ४३४)

४५. अथैनमेव लेश्यादिभिर्निरूपयन्नाह—
(वृ० प० ४३४)

४६. से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! तिसु विसुद्धलेस्सासु होज्जा, तं जहा—
तेउलेस्साए, पम्हलेस्साए, सुक्कलेस्साए ।

४७. यतो भावलेश्यासु प्रशस्तास्वेव सम्यक्त्वादि प्रतिपद्यते नाविशुद्धास्विति । (वृ० प० ४३५)

४८. से णं भंते ! कतिसु नाणेसु होज्जा ?
गोयमा ! तिसु—आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा । (श० ९।३५)

४९. से णं भंते ! किं सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ?
गोयमा ! सजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा ।

५०. अवधिज्ञानकालेऽयोगित्वस्याभावात् ।
(वृ० प० ४३५)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५१. *जो प्रभु ! सजोगी हुवै, स्यूं मनजोगी तेहो ।
अथवा वचनजोगी हुवै, कै कायजोगी कहेहो ?
५२. जिन कहै मनजोगी हुवै, अथवा ह्वै वचजोगी ।
अथवा कायजोगी हुवै, तसु इम न्याय प्रयोगो ।।

५१. जइ सजोगी होज्जा, किं मणजोगी होज्जा ? वइजोगी होज्जा ? कायजोगी होज्जा ?
५२. गोयमा ! मणजोगी वा होज्जा, वइजोगी वा होज्जा, कायजोगी वा होज्जा । (श० ९।३६)

सोरठा

५३. ते वेला इक जोग, प्रधानपणां नीं अपेक्षया ।
जिन वच प्रवर प्रयोग, न्याय विचारी लीजियै ।।
५४. *हे भगवंत ! हुवै तिको, सागारोवउत्ते वर्त्ततो ।
अणागारोवउत्ते हुवै ? भाखै हिव भगवंतो ।।
५५. सागारोवउत्त विषे हुवै, अथवा वर्त्तै अणागारो ।
एक पक्षे ए बिहुं विषे, लहै सम्यक्त्व अवधि उदारो ।।

५३. 'मणजोगी' त्यादि चैकतरयोगप्राधान्यापेक्षयाऽवगन्तव्यं । (वृ० प० ४३५)
५४. से णं भंते ! किं सागारोवउत्ते होज्जा ? अणागारोवउत्ते होज्जा ?
५५. गोयमा ! सागारोवउत्ते वा होज्जा, अणागारोवउत्ते वा होज्जा । (श० ९।३७)
तस्य हि विभङ्गज्ञानान्निवर्त्तमानस्योपयोगद्वयेऽपि वर्त्तमानस्य सम्यक्त्वावधिज्ञानप्रतिपत्तिरस्तीति ।
(वृ० प० ४३५)

सोरठा

५६. वृत्ति मझे इम वाय, सागारोवउत्ता नें विषे ।
सर्व लब्धि उपजाय, किणहिक ठामें इम कह्यो ।।
५७. अणागारवउत्तेह, सम्यक्त अवधि लहै इसो ।
आख्यो छै वच एह, तेह विरोध इम प्रश्न कृत ।।
५८. पिण इम नहिं छै एह, प्रवर्द्धमान परिणाम जसु ।
एहवा जीव विषेह, सागारवउत्ता मेंज हुवै ।।
५९. अवस्थित परिणाम, तेह तणी अपेक्षया ।
अनाकारे पिण ताम, लाभ लब्धि नों संभवै ।।
६०. *प्रभु ! किसा संघयण तिको ? तब भाखै जिनचंदो ।
वज्रऋषभ नाराच नें, होवै ते गुणवृंदो ।।

५६,५७. ननु 'सव्वाओ लद्धीओ सागारोवओगोवउत्तस्स भवंती' त्यागमादनाकारोपयोगे सम्यक्त्वावधिलब्धिविरोधः ? (वृ० प० ४३५)
५८. नैवं प्रवर्द्धमानपरिणामजीवविषयत्वात् तस्यागमस्य । (वृ० प० ४३५)
५९. अवस्थितपरिणामापेक्षया चानाकारोपयोगेऽपि लब्धिलाभस्य सम्भवादिति । (वृ० प० ४३५)
६०. से णं भंते ! कयरम्मि संघयणे होज्जा ?
गोयमा ! वइरोसभनारायसंघयणे होज्जा ।
(श० ९।३८)

सोरठा

६१. पामै केवलज्ञान, प्रथम संघयण विषेज जे ।
ते माटै पहिछान, अपर संघयण विषे नथी ।।
६२. *प्रभु ! किसा संठाण विषे हुवै? जिन कहै षट संठाणो ।
तेहमें एक संठाण में, होवै ते गुणखाणो ।।
६३. प्रभु ! कितलो ऊंचपणैं तनु? जिन भाखै शुभ संचो ।
जघन्य थकी कर सात नों, उत्कृष्ट धनु सय पंचो ।।
६४. प्रभु ! किता आउखा विषे हुवै, श्री जिन भाखै जोड़ो ।
जघन्य जाझो अठ वर्ष नों, उत्कृष्ट पूरव कोड़ो ।।
६५. ते प्रभु ! स्यूं सवेदी हुवै, अथवा अवेदी होयो ?
जिन भाखै सवेदी हुवै, अवेदी नहिं कोयो ।।

६१. प्राप्तव्यकेवलज्ञानत्वात्तस्य, केवलज्ञानप्राप्तिश्च प्रथमसंहनन एव भवतीति । (वृ० प० ४३५)
६२. से णं भंते ! कयरम्मि संठाणे होज्जा ?
गोयमा ! छण्हं संठाणाणं अण्णयरे संठाणे होज्जा ।
(श० ९।३९)
६३. से णं भंते ! कयरम्मि उच्चत्ते होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरयणीए, उक्कोसेणं पंचधणुसतिए होज्जा । (श० ९।४०)
६४. से णं भंते ! कयरम्मि आउए होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगट्ठवासाउए उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउए होज्जा । (श० ९।४१)
६५. से णं भंते ! किं सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा ।

* लय : राज पामियो रे करकंडू कंचनपुर तणो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सौरठा

६६. अवधि विभंग नों थाय, तेह काल समया विषे ।
वेद तणो क्षय नांय, तिण सुं सवेदीज है ।।

६७. *जो प्रभु ! सवेदी हुवै, स्यूं स्त्री-वेदे होयो ।
पुरिस तथा नपुंसके, कै पुरिस-नपुंसक जोयो ?

६८. जिन कहै स्त्री-वेदे नहीं, पुरिस-वेद ह्वै एहो ।
वेद नपुंसक पिण नहीं, पुरिस-नपुंसक तेहो ।।

सोरठा

६९. इहविध व्यतिकर जाण, स्वभाव थकीज स्त्री तणैं ।
तास अभाव पिछाण, जन्म नपुंसक पिण नहीं ।।

७०. पुरिस विषे ह्वै एह, पुरिस-नपुंस विषे वलि ।
कृत्रिम नपुंसक जेह, तेह विषे पिण हुवै अछै ।।

७१. *ते प्रभु ! सकषाई हुवै, कै ह्वै छै अकषाई ?
जिन कहै सकषाई हुवै, अकषाई नहि थाई ।।

सोरठा

७२. विभंग तणो संभाल, अवधि हुवे ते काल में ।
सकषाईज निहाल, उपशम क्षपक अभाव थी ।।

७३. *जो सकषाइ विषे हुवै, किती कषाय में थाइ ?
जिन भाखै संजल तणां, क्रोधादिक चिउं मांहि ।।

सोरठा

७४. अवधि विभंग नों न्हाल, चारित्र प्रतिपन्न समय वलि ।
संजलनौंज संभाल, क्रोधादिक नों उदय ह्वै ।।

७५. *हे प्रभु ! तेहनां किता कह्या, अध्यवसाय सुहाया ?
श्री जिन भाखै तेहनां, असंख्याता अध्यवसाया ।।

७६. हे प्रभु ! तेहनां प्रशस्त छै, कै अप्रशस्त अध्यवसायो ?
जिन भाखै प्रशस्त छै, अप्रशस्त नहि थायो ।।

सोरठा

७७ अवधि विभंग नों थाय, चारित्र प्रतिपन्न समय फुन ।
प्रशस्त अध्यवसाय, स्थानक प्रशस्त नांज ह्वै ।।

७८. *नवम शत देश इकतीस नों, इकसौ बोहितरमों ढालो ।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' हरष विशालो ।।

*लय : राज पामियो रे करकंडू कंचनपुर तणो ।

६६. 'सवेयए होज्ज' त्ति विभङ्गस्यावधिभावकाले न वेदक्षयोऽस्तीत्यसौ सवेद एव । (वृ० प० ४३५)

६७. जइ सवेदए होज्जा किं इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? पुरिसनपुंसकवेदए होज्जा ? नपुंसगवेदए होज्जा'[1] ?

६८. गोयमा ! नो इत्थिवेदए होज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, नो नपुंसगवेदए होज्जा, पुरिस-नपुंसगवेदए वा होज्जा । (श० ९।४२)

६९. 'नो इत्थिवेयए होज्ज' त्ति स्त्रिया एवंविधस्य व्यतिकरस्य स्वभावत एवाभावात् । (वृ० प० ४३५)

७०. 'पुरिसनपुंसगवेयए' त्ति वर्द्धितकत्वादिभ्वे नपुंसकः पुरुषनपुंसकः । (वृ० प० ४३५)

७१. से णं भंते ! किं सकसाई होज्जा ? अकसाई होज्जा ?
गोयमा ! सकसाई होज्जा, नो अकसाई होज्जा ।

७२. 'सकसाई होज्ज' त्ति विभङ्गावधिकाले कषायक्षयस्याभावात् । (वृ० प० ४३५)

७३. जइ सकसाई होज्जा से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
गोयमा ! चउसु---संजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा । (श० ९।४३)

७४. स ह्यवधिज्ञानतापरिणतविभङ्गज्ञानश्चरणं प्रतिपन्नः उक्तः, तस्य च तत्काले चरणयुक्तत्वात्संज्वलना एव क्रोधादयो भवन्तीति । (वृ० प० ४३५)

७५. तस्स णं भंते ! केवइया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता ।
(श० ९।४४)

७६. ते णं भंते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! पसत्था, नो अप्पसत्था । (श० ९।४५)

७७. 'पसत्थ' त्ति विभङ्गस्यावधिभावो हि नाप्रशस्ताध्यवसानस्य भवतीत्यत उक्तं—प्रशस्तान्यध्यवसायस्थानानीति । (वृ० प० ४३५)

१. जोड़ में पहले नपुंसक वेद और अन्त में पुरुषनपुंसक वेद है । संभव है जयाचार्य को प्राप्त प्रति में पाठ का यही क्रम रहा हो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा

१. हे भदंत ! तेहनां कह्या, प्रशस्त अध्यवसाय ।
तेहथी जे फल नीपजै, वीर बतावै न्याय ॥

*अणसुणियां इम केवल उपजे, श्री जिन वाण वदंता रे।
धुर गुणठाण मंडाण कियो, तेहथी अनुक्रम भव अंता रे ॥ (ध्रुपदं)

२. प्रशस्त अध्यवसाय वर्धमान, नारक भव जे अनंता रे।
काल अनागत भावी थकी, आत्मा नैं दूर करंता रे॥

३. तिर्यंच भव जे अनंत अनागत काल करै तिण सेती ।
आतमा नैं विसंजोड़ै करै दूर, निर्मल निष्पन्न खेती ॥

४. मनुष्य तणां भव अनंत थकी, आतमा नैं दूर करंतो ।
सुर भव अनंत थकी आतम प्रति, अलग करै गुणवंतो ॥

५. जे नाम कर्म तसु मूल प्रकृति नीं, उत्तर प्रकृति एहो ।
नरक तिर्यंच मनुष्य सुर गति चिहुं, नाम नीं उत्तर तेहो ॥

६. ए चिहुं नैं वलि अन्य प्रतै, उपष्टंभ तणो देणहारो ।
अनंतानुबंध क्रोधादिक चिउं नैं, तेह खपावै तिवारो ॥

७. अप्रत्याख्यान क्रोध मान माया लोभ, ए पिण ताम खपावै ।
पच्चक्खाणावरण क्रोधादिक चिहुं नैं, क्षय करि आतम भावै ॥

८. संजलण क्रोध मान माया लोभ, तास करै क्षय जाणी ।
पंचविधे ज्ञानावरणी कर्म नैं, क्षय करै उत्तम प्राणी ॥

९. नवविध दर्शणावरणी नैं करै क्षय, वलि पंचविध अंतरायो ।
किं कृत्वा स्यूं करी एह खपावै, सांभलज्यो चित ल्यायो ॥

१०. ताल मत्थाकडं मोह कर्म करि, ताल तरू शिर छेद्यो ।
जिम छिन्न-मस्तक ताल क्षीण हुवै, इहविध मोहणी भेद्यो ॥

वा०--ए मोहनीय नीं नोकषाय प्रकृति शेष भेद नीं अपेक्षा जाणवो ।

११. अथवा अनंतानुबंध्यादि प्रकृति, तेह खप्ये छते जाणी ।
ज्ञानावरणादिक तीन कर्म नैं, निश्चै खपावै नाणी ॥

१२. ताल मस्तक जिम कीधी क्रिया जसु, इहविध मोहणी छेदै ।
इति कृत्वा इम मोह खप्ये छते, ज्ञानावरण्यादिक भेदै ॥

---

*लय : प्रभवो चोर चोरां नैं समझावै

१,२. से णं भंते ! तेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं वड्ढमाणेहिं अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ ।

'अणंतेहिं' ति 'अनन्तैः' अनन्तानागतकालभाविभिः 'विसंजोएइ' त्ति विसंयोजयति, तत्प्राप्तियोग्यताया अपनोदादिति । (वृ० प० ४३५)

३. अणंतेहिं तिरिक्खजोणियभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ ।

४. अणंतेहिं मणुस्सभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं देवभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ ।

५. जाओ वि य से इमाओ नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवगतिनामाओ चत्तारि उत्तरपगडीओ ।
'उत्तरपयडीओ' त्ति नामकर्माभिधानाया मूलप्रकृते-रुत्तरभेदभूताः (वृ० प ४३५)

६. तासि च णं ओवग्गहिए अणंताणुबंधी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ ।
'उवग्गहिए' त्ति औपग्रहिकान्—उपष्टम्भप्रयोजनान् (वृ० प० ४३५)

७. खवेत्ता अपच्चक्खाणकसाए कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पच्चक्खाणावरणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ ।

८. खवेत्ता संजलणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पंचविहं नाणावरणिज्जं,

९. नवविहं दरिसणावरणिज्जं, पंचविहं अंतराइयं ।
किं कृत्वा ? इत्यत आह— (वृ० प० ४३६)

१०. तालमत्थाकडं च णं मोहणिज्जं कट्टु ।
यथा हि छिन्नमस्तकस्तालः क्षीणो भवति एवं मोहनीयं च क्षीणं कृत्वेति भावः । (वृ० प० ४३६)

वा०—इदं चोक्तमोहनीयभेदशेषापेक्षया द्रष्टव्य-मिति । (वृ० प० ४३६)

११. अथवाऽय कस्मादनन्तानुबन्ध्यादिस्वभावे तत्र क्षपिते सति ज्ञानावरणीयादि क्षपयत्येव ? (वृ० प० ४३६)

१२. तालमस्तकस्येव कृत्त्वं—क्रिया यस्य तत्तालमस्तक-कृत्त्वं तदेवविधं च मोहनीयं 'कट्टु' त्ति इतिशब्द-स्येह गम्यमानत्वादितिकृत्वा---इतिहेतोस्तत्र क्षपिते ज्ञानावरणीयादि क्षपयत्येवेति । (वृ० प० ४३६)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. ताल मस्तक अरु कर्म मोहनीं, ए बिहुं छेदन किरिया ।
साधर्म्य तेह सरीखपणों हिज, हिव तसु प्रगट उचरिया ।।

१४. जिम ताल शिर नैं विनाश करण री, क्रिया कियां छतां तासो ।
अवश्यभाव निश्चै करि होस्यै, ताल वृक्ष नों विनाशो ।।

१५. इहविध मोहनीकर्म विनाशन, क्रिया कियै सुविमासो ।
अवश्यंभावि निश्चै करि होस्यै, शेष कर्म नों विणासो ।।

वा० —जिम ताल नैं मस्तके सूई चांप्यां मस्तक हणाणे छते ताल वृक्ष नों नाश थावै । तिम मोहणी कर्म हणाणे छते शेष कर्म नों नाश थावै ।

१३. तालमस्तकमोहनीययोश्च क्रियासाधर्म्यमेव ।
(वृ० प० ४३६)

१४. यथा हि तालमस्तकविनाशक्रियाऽवश्यम्भावितालविनाशा । (वृ० प० ४३६)

१५. एवं मोहनीयकर्मविनाशक्रियाऽप्यवश्यम्भाविशेषकर्म्मविनाशेति । (वृ० प० ४३६)

वा०—मस्तकसूचिविनाशे तालस्य यथा ध्रुवो भवति नाशः ।
तद्वत्कर्मविनाशोऽपि मोहनीयक्षये नित्यम् ।।
(वृ० प० ४३६)

१६. कर्म रूप रज खेरणहारो, एहवो अपूर्वकरणो ।
जे अध्यवसाय कदे नहिं आया, तेहमें पेठो अघहरणो ।।

१६. कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणुप्पविट्ठस्स
अपूर्वकरणम्—असदृशाध्यवसायविशेषमनुप्रविष्टस्य ।
(वृ० प० ४३६)

१७. विषय अनंत थकीज अनंतहि, सर्वोत्तम इम न्यायो ।
केवलज्ञान नें कह्यो अनुत्तर परम ज्ञान सुखदायो ।।

१७. अणंते अणुत्तरे
अनन्तं विषयानन्त्यात् अनुत्तरं सर्वोत्तमत्वात् ।
(वृ० प० ४३६)

१८. भींत प्रमुख करिनैं अणहणवै, कहियै निर्व्याघातो ।
सर्वथा आवरण क्षय करिवा थी, निरावरण आख्यातो ।।

१८. निव्वाघाए निरावरणे
निर्व्याघातं कटकुड्यादिभिरप्रतिहननात् निरावरणं सर्वथा स्वावरणक्षयात् । (वृ० प० ४३६)

१९. सकल अर्थ नां ग्राहकपणां थी, कसिण तास इम उक्तो ।
प्रतिपूर्ण ते सकल स्व अंशज, तिण करिनैं ए युक्तो ।।

१९. कसिणे पडिपुण्णे
कृत्स्नं सकलार्थग्राहकत्वात् प्रतिपूर्णं सकलस्वांशयुक्ततयोत्पन्नत्वात् । (वृ० प० ४३६)

२०. केवल नाम ते शुद्ध संपूरण, समस्त ज्ञान रै मांह्यो ।
प्रवर प्रधान ते अन्य अपेक्षया, ज्ञान दर्शन ते पायो ।।

२१. ज्ञानावरणी दर्शणावरणी, अंतराय क्षय कीधा ।
केवल ज्ञान नैं दर्शन ऊपनां, सकल मनोरथ सीधा ।।

२०. केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जति । (श० ९।४६)
केवलवरज्ञानदर्शनं—केवलमभिधानतो वरं ज्ञानान्तरापेक्षया । ज्ञानं च दर्शनं च ज्ञानदर्शनम् ।
(वृ० प० ४३६)

२२. ते प्रभु ! अन्यलिंगी वर्त्तमान जे, केवली भाख्यो धरमो ।
आघवेज्जा शिष्य नैं अर्थ ग्रहावै, धर्म बतावै परमो ।।

२२. से णं भंते ! केवलिपण्णत्तं धम्मं आघवेज्ज वा ?
'आघवेज्ज' त्ति आग्राहयेच्छिष्यान् । (वृ० प० ४३६)

२३. पण्णवेज्ज भाखै भेद जूजुआ, अथवा बोधि उपावै ।
परूवेज्ज वा कहितां परूपै, युक्ति कहिण थी भावै ?

२३. पण्णवेज्ज वा ? परूवेज्ज वा ?
'पन्नवेज्ज' त्ति प्रज्ञापयेद्भेदभणनतो बोधयेद्वा 'परूवेज्ज' त्ति उपपत्तिकथनतः । (वृ० प० ४३६)

२४. जिन कहै अर्थ समर्थ ए नांही, एक ज्ञात दृष्टंतो ।
अथवा एक व्याकरण उत्तर इक, न कहै तिण उपरंतो ।।

२४. नो तिणट्ठे समट्ठे, नण्णत्थ एगनाएण वा, एगवागरणेण वा । (श० ९।४७)

सोरठा

२५. उदाहरण इक देह, अथवा इक उत्तर दियै ।
अन्य अर्थ न कहेह, तथाविध तसु कल्प थी ।।

२५. 'नन्नत्थ एगनाएण व' त्ति न इति योऽयं निषेधः सोऽन्यत्रैकज्ञाताद्, एकमुदाहरणं वर्जयित्वेत्यर्थः, तथाविधकल्पत्वादस्येति । (वृ० प० ४३६)

२६. *हे प्रभु ! ते अन्य लिंगे वर्त्ततो, प्रव्रज्या द्रव्य-लिंगो ।
अन्य भणी दे रजोहरणादिक, मुंडन लुंचन चंगो ?

२६. से णं भंते ! पव्वावेज्ज वा ? मुंडावेज्ज वा ?
'पव्वावेज्ज व' त्ति प्रव्राजयेद्रजोहरणादिद्रव्यलिङ्गदानतः 'मुंडावेज्ज व' त्ति मुण्डयेच्छिरोलुञ्चनतः ।
(वृ० प० ४३६)

लय : प्रभवो चोर चोरां नैं समझावै

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७. जिन कहै अर्थ समर्थ ए नांही, न दै कोइ नैं दीक्षा।
पिण उपदेश करै अमुका पै, लै संजम वर शिक्षा ।।

२७. णो तिणट्ठे समट्ठे, उवदेसं पुण करेज्जा।
(श० ६।१४८)
'उवएसं पुण करेज्ज' त्ति अमुष्य पार्श्वे प्रव्रजेत्यादिकमुपदेशं कुर्यात्। (वृ० प० ४३६)

२८. ते प्रभु ! सीज्झै जाव सर्व दुख—कर्म तणो करै अंतो ?
जिन कहै हंता सीज्झै यावत सहु दुख अंत करंतो ।।

२८. से णं भंते ! सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
हंता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति।
(श० ६।१४९)

२९. ते प्रभु ! स्यूं उर्द्ध लोक विषे ह्वै, कै हुवै छै अधो लोयो।
कै हुवै तिरछा लोक विषे ए ? हिव जिन उत्तर जोयो ।।
३०. ऊंचा लोक विषे हुवै अथवा, नीचा लोक में होयो।
अथवा तिरछा लोक विषे हुवै, हिव विवरो अवलोयो ।।
३१. उर्द्ध लोक विषे हुंतो थको, ए शब्दापाती जाणी।
वियडावइ गंधावइ मालवंत, वृत्त वैताढ्य पिछाणी ।।

२९. से णं भंते ! किं उड्ढं होज्जा ? अहे होज्जा ? तिरियं होज्जा ?
३०. गोयमा ! उड्ढं वा होज्जा, अहे वा होज्जा, तिरियं वा होज्जा।
३१. उड्ढं होमाणे सद्दावइ-वियडावइ-गंधावइ-मालवंत-परियाएसु वट्टवेयड्ढपव्वएसु होज्जा।

सोरठा

३२. यथाक्रमे ए जाण, जंबूदीवपण्णत्ती जे।
तसु अभिप्राय पिछाण, हेमवंतादिक क्षेत्र में ।।
३३. क्षेत्र हेमवंत मांहि, शब्दापाती[1] जाणज्यो।
हरिवर्ष में ताहि, वियडावइ[2] वैताढ्य वृत्त ।।
३४. रम्यक क्षेत्र मझार, गंधावति[3] वैताढ्य वृत्त।
ऐरणवते विचार, मालवंत[4] सूत्रे कह्यु ।।
३५. 'क्षेत्र-समासे'[5] तेथ हेमवत ऐरणवते।
हरिवर्ष रम्यक खेत, ए च्यारूं क्षेत्रां विषे ।।
३६. शब्दापाती सार, वियडावइ गंधावइ।
मालवंत ए च्यार, अनुक्रम मेलै तो विरुद्ध ।।
३७. योजन एक हजार, ऊंचपणें आख्या चिउं।
ऊंडपणै सुविचार, योजन अढ़ीसै कह्या ।।
३८. हेठै ऊपर जाण, लांबो-पहुलो सारिखो।
पाला नैं संठाण, ते पाला धान भरवा तणां ।।
३९. सर्व रत्न रै मांहि, एक पद्मवरवेदिका।
इक वनखंडे ताहि, वींट्या छै वैताढ्य वृत्त ।।
४०. गगनगामिनी लद्धि, तास प्रभावे त्यां गया।
केवलज्ञान समिद्धि, उपजै तिहां रह्या छतां ।।

३२-३४. शब्दापातिप्रभृतयो यथाक्रमं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यभिप्रायेण हैमवतहरिवर्षरम्यकैरण्यवतेषु। (वृ० प० ४३६)

३५. क्षेत्रसमासाभिप्रायेण तु हैमवतैरण्यवतहरिवर्षरम्यकेषु भवन्ति। (वृ० प० ४३६)

४०. तेषु च तस्य भाव आकाशगमनलब्धिसम्पन्नस्य तत्र गतस्य केवलज्ञानोत्पादसद्भावे सति।
(वृ० प० ४३६)

४१. *सुर साहरण करी लेइ मूक्यां, तेह पडुच्च सुजोयो।
मंदरगिरि वन तृतीय सोमनसे, तुर्य पंडगे होयो ।।

४१. साहरणं पडुच्च सोमणसवणे वा पंडगवणे वा होज्जा
'साहरणं पडुच्च' त्ति देवेन नयनं प्रतीत्य 'सोमणसवणे' त्ति सौमनसवनं मेरौ तृतीयं 'पंडगवणे' त्ति मेरौ चतुर्थं। (वृ० प० ४३६)

---

१. जं० व० ४।५७
२. जं० व० ४।८४
३. जं० व० ४।२६६
४. जं० व० ४।२७२
५. गा० ११०

***लय : प्रभवो चोर चोरां नै समझावै**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा०—नंदण वन नें विषे पिण संहरण हुवै छै। पिण ए नंदण वन तिरछा लोक में छै, ते भणी इहां ऊंचा लोक नां कथन माटै सोमनस, पंडग वनहीज कह्या। नंदण वन न कह्यो।

४२. अधोलोक विषे हुंतो थको जे, जोजन एक हजारो।
ऊंडी विजय तिहां ग्रामादिक छै, तेह विषे सुविचारो।

४३. अधोग्रामादिक भूमिभाग जे, गर्त्ता खाड विशेषे।
अथवा दरिये वा कहितां तेहिज, अति नीचे सुप्रदेशे।।

४४. देव संहरण ले जाइ मूकै, तो वलयमुखादि सुवरणो।
महापातालकलस विषे लहियै, अथवा भवणपति भवणो।।

४५. तिरछे लोक हुंतो थको पनर जे कर्मभूमि विषे जाणी।
पंच भरत नें पंच एरावत, पंच विदेह पिछाणी।।

४६. देव साहरण पडुच्च अढाई द्वीप विषे अवलोयो।
दोय समुद्र विषे तेहनां इक देशभाग में होयो।।

४७. ते प्रभु! एक समय कितला ह्वै? तब भाखै जिनरायो।
जघन्य एक तथा दोय तथा त्रिण, उत्कृष्ट दश कहिवायो।।

४८. तिण अर्थे गोयम! इम भाख्यो, दश पासे विण सुणियै।
कोइक धर्म लहै सुणवो, कोइ न लहै इहविध थुणियै।

४९. यावत कोइक केवलज्ञान उपावै ते वर लहियै।
कोई केवलज्ञान न पावै, अणसुणियै इम कहियै।।

५०. नवम शतक इगतीसम देश ए, इकसौ तिहंतरमीं ढालो।
भिक्खु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' हरष विशालो।।

४२. अहे होमाणे।

४३. गड्डाए वा दरीए वा होज्जा।
'गड्डाए व' त्ति गर्त्ते—निम्ने भूभागेऽधोलोकग्रामादौ 'दरीए व' त्ति तत्रैव निम्नतरप्रदेशे।
(वृ० प० ४३६)

४४. साहरणं पडुच्च पायाले वा भवणे वा होज्जा।
'पायाले व' त्ति महापातालकलशे वलयामुखादौ 'भवणे व' त्ति भवनवासिदेवनिवासे।
(वृ० प० ४३६)

४५. तिरियं होमाणे पण्णरससु कम्मभूमीसु होज्जा।
'पन्नरससु कम्मभूमीसु' त्ति पञ्च भरतानि पञ्च ऐरवतानि पञ्च महाविदेहा इत्येवं लक्षणासु।
(वृ० प० ४३६)

४६. साहरणं पडुच्च 'अड्ढाइज्जदीवसमुद्दतदेक्कदेसभाए होज्जा। (श० ९।५०)

४७. ते णं भंते! एगसमए णं केवतिया होज्जा?
गोयमा! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं दस।

४८. से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए।

४९. जाव अत्थेगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा। (श० ९।५१)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : १७४

सोरठा

१. अणसुणियां जे थाय, ते तो पूर्वे आखियो।
हिव सुणियां गुण पाय, ते विस्तार कहै अछै ।।

दूहा

२. हे प्रभु ! दश पासै सुणी, केवलि भाख्यो धर्म।
सुणवो लाभै छै तिको, श्रमण रूप करि पर्म ?

३. जिन भाखै दश पे सुण्यो, कोइक सुणवो पाय।
जेम असोच्चा-वत्तव्वया, तिम सोच्चा कहिवाय ।।

४. णवरं इतो विशेष छै, सोच्चा नैं अभिलाव।
शेष थाकतो तिमज ते, समस्तपणें कहाव ।।

५. यावत जेणे मनपज्जव-ज्ञानावरणी जाण।
क्षयउपशम कीधो हुवै, दशमों बोल पिछाण ।।

६. केवलज्ञानावरणी जिण, क्षय कीधो अवलोय।
ए छै बोल इग्यारमों, हिव तेहनों फल जोय ।।

७. ते दश पे सुणियां छतां, धर्म सुणवो पाय।
वलि शुद्ध सम्यक्त्व अनुभवै, जाव केवल उपजाय ।।

८. जे सुण केवलज्ञान लहै, ते कोइक नैं जाण।
बोध चरित्र लिंग सहित नैं, अट्ठम-अट्ठम माण ।।
*जी हो जिनराज कहै दश पै सुण्यांजी कांइ उपजै केवलनाण ।।
(ध्रुपद)

९. अट्ठम-अट्ठम जेहनैंजी कांइ, अंतर-रहित पिछाण।
तप कर आतम भावतो जी कांइ, प्रकृति भद्रक सुविहाण ।।

१०. †अठम-अठम प्रमुख आख्यूं बहुलपणें ते जाणियै।
विशिष्ट तप करि सहित मुनि नैं, अवधिज्ञान बखाणियै ।।

११. तेह जणावा अर्थ यावत, तिमज शुभ परिणाम छै।
अध्यवसाय शुभ विशुद्ध लेश्या, एकदा अभिराम छै ।।

सोरठा

१२. तदावरण ते जाण, अवधि-ज्ञानावरणी तिका।
कर्म प्रकृति पहिछाण, तेहनुं क्षयउपशम थयां ।।

---

*लय : वीरमती तरु अंब नै जी कांइ

† लय : पूज मोटा भांजे तोटा

---

१. अनन्तरं केवल्यादिवचनाश्रवणे यत्स्यात्तदुक्तमथ तच्छ्रवणे यत्स्यात्तदाह-- (वृ० प० ४३७)

२. सोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव (सं० पा०) तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए ?

३. गोयमा ! सोच्चा णं केवलिस्स वा जाव अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं। (श० ९।५२,५३)
एवं जा चेव असोच्चाए वत्तव्वया सा चेव सोच्चाए वि भाणियव्वा।

४. नवरं—अभिलावो सोच्चे त्ति, सेसं तं चेव निरवसेसं

५. जाव जस्स णं मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ।

६. जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए कडे भवइ।

७. से णं सोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, केवलं बोहिं बुज्झेज्जा जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा।
(श० ९।५४)

८. तस्स णं अट्ठमंअट्ठमेणं
'तस्स' त्ति यः श्रुत्वा केवलज्ञानमुत्पादयेत्तस्य कस्या-प्यर्थात् प्रतिपन्नसम्यग्दर्शनचारित्रलिंगस्य।
(वृ० प० ४३८)

९. अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स पगइ-भद्दयाए।

१०. 'अट्ठमंअट्ठमेण' मित्यादि च यदुक्तं तत्प्रायो विकृष्ट-तपश्चरणवतः साधोरवधिज्ञानमुत्पद्यत।
(वृ० प० ४३८)

११. इति ज्ञापनार्थमिति। (वृ० प० ४३८)
अण्णया कयावि सुभेणं अज्झवसाणेणं, सुभेणं परिणा-मेणं, लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं-विसुज्झमाणीहिं।

१२. तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. *ईहा अर्थ छताज सन्मुख, ज्ञान चेष्टा जसु सही।
अपोह ते तसु धर्म ध्यानज, पक्ष बीजो तसु नहीं॥
१४. मग्गण धर्म आलोचना, ए जाव शब्द में जाणियै।
गवेषणा ते अधिक धर्म आलोचना पहिछाणियै॥

१३,१४. ईहापोहमग्गणगवेसणं।

१५. †करता एम आलोचना जी कांइ, अवधिज्ञान उपजंत।
आंगुल नों भाग असंख्यातमों जी कांइ, जघन्य जाणै देखंत॥

१५. करेमाणस्स ओहिनाणे समुप्पज्जइ। से णं तेणं ओहिनाणेणं समुप्पन्नेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं।

१६. उत्कृष्टपणें अलोक में जी कांइ लोक प्रमाण विचार।
खंड असंख्याता तिको जी कांइ, जाणै देखै तिवार॥
१७. कति लेश्या विषे ते हुवै जी प्रभु! जिन भाखै षट लेस।
कृष्ण जाव शुक्ल विषे जी कांइ, हिव ज्ञानद्वार कहेस॥

१६. उक्कोसेणं असंखेज्जाइं अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं खंडाइं जाणइ-पासइ। (श० ९।१५५)

१७. से णं भंते! कतिसु लेस्सासु होज्जा?
गोयमा! छसु लेस्सासु होज्जा, तं जहा—कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए। (श० ९।१५६)

वा०—यद्यपि भावलेश्यासु प्रशस्तास्वेव तिसृष्वपि ज्ञानं लभते तथाऽपि द्रव्यलेश्याः प्रतीत्य षट्स्वपि लेश्यासु लभते सम्यक्त्वश्रुतवत्, यदाह—'सम्मत्तसुयं सव्वासु लब्भइ' त्ति तल्लाभे चासौ षट्स्वपि भवतीत्युच्यत इति। (वृ० प० ४३८)

वा०—इहां वृत्तिकार कह्यु—यद्यपि भाव लेश्या त्रिण प्रशस्त नें विषे हीज अवधिज्ञान लहै, तो पिण द्रव्य लेश्या आश्रयी छहुं लेश्या विषे पिण लाभै, सम्यक्त्व श्रुत नीं परै, यदाह—'सम्मत्तसुयं सव्वासु लब्भइ' इति। वलि ते सम्यक्त्व अनें श्रुत ते ज्ञान ए पाम्ये छते छहुं लेश्या नें विषे हुवै इम कहियै इति वृत्तौ।

'इहां ए भाव सम्यक्त्व अनें ज्ञान पामैं ते वेलां तीन भली लेश्याहीज हुवै अनै सम्यक्त्व ज्ञान पायां पछै छहुं लेश्या हुवै। तिम अवधिज्ञान ऊपजै ते वेला तीन भली लेश्या हीज हुवै। ते माटै इहां छ लेश्या कही ते द्रव्य लेश्या आश्रयी संभवै इति।

जे अवधिज्ञान पायां पछै अप्रशस्त अध्यवसाये वर्तै तेहमें तो अप्रशस्त लेश्या पिण हुवै जे पन्नवणा पद १७ में च्यार ज्ञानी में छ लेश्या कही। तिहां वृत्तिकार मंद अध्यवसाय रूप कृष्ण लेश्या मनपर्यायज्ञानी नें कही। ते भणी माठा अध्यवसाय हुवै ते वेला अशुभ भाव लेश्या कहियै। अनें ए तो केवल सन्मुख छै तें भणी ऊंचो चढै। अवधि पायां पछै तत्काल चढते परिणामे करि केवल पावै, ते भणी असोच्चा नीं परै भला अध्यवसाय कह्या अनै माठा वर्ज्या। तेणे करी माठी भाव लेश्या पिण न हुवै, ते माटै द्रव्य छ लेश्या नें विषै अवधि ऊपजै छै'। (ज० स०)

१८. केतला ज्ञान विषे हुवै जी प्रभु! जिन भाखै त्रिण ज्ञान।
अथवा चिउं ज्ञाने हुवै जी कांइ, हिव तसु विवरो आन॥
१९. त्रिहुं ज्ञाने हुंतो थको जी कांइ, आभिनिबोधिक ज्ञान।
श्रुत ज्ञान नें विषे हुवै जी कांइ, अवधि विषे पहिछान॥

१८. से णं भंते! कतिसु नाणेसु होज्जा?
गोयमा! तिसु वा, चउसु वा होज्जा।
१९. तिसु होमाणे आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा।

वा०—अवधिज्ञान नें आद्य बे ज्ञान मति, श्रुत नो अवधिज्ञानी हुवै तिवारै अवधि ज्ञानी तीन कै विषे हुवै।

वा०—अवधिज्ञानस्याद्यज्ञानद्वयाविनाभूतत्वादधिकृतावधिज्ञानी त्रिषु ज्ञानेषु भवेदिति। (वृ० प० ४३८)

२०. चिउं ज्ञाने हुंतो छतो जी कांइ, आभिनिबोधिक नाण।
श्रुत अवधि ज्ञाने हुवै जी कांइ, मनपज्जव गुणखाण॥

२०. चउसु होमाणे आभिणिबोहियनाण सुयनाण-ओहिनाण-मणपज्जवनाणेसु होज्जा। (श० ९।१५७)

वा०—मति, श्रुत, मनपर्यव ज्ञानी नें अवधि ज्ञान उत्पत्ति थयां छतां ज्ञान च्यार नां भाव थी च्यार ज्ञान कै विषे ए अवधिज्ञानी हुवै।

वा०—मतिश्रुतमनःपर्यायज्ञानिनोऽवधि-ज्ञानोत्पत्तौ ज्ञानचतुष्टयभावाच्चतुर्षु ज्ञानेष्वधिकृतावधिज्ञानी भवेदिति। (वृ० प० ४३८)

*लय: पूज मोटा भांजै तोटा
†लय: वीरमती तरु अंब नै जी कांइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१. ते प्रभु ! स्यूं सजोगी हुवै जी कांइ, अथवा अजोगी जाण ।
एवं जोग उपयोग नैं जी कांइ, वलि संघयण संठाण ।।
२२. ऊंचपणो नैं आउखो जी, ए सगलाई बोल ।
जेम असोच्चा नैं कह्या जी कांइ, तिमहिज कहिवा तोल ।।

२३. ते प्रभु ! स्यूं सवेदे हुवै जी कांइ, अथवा अवेदे होय ?
जिन भाखै सवेदे हुवै जी कांइ, अथवा अवेदे जोय ।।

सोरठा

२४. अक्षीण-वेद नैं जाण, अवधिज्ञान उपज्ये थके ।
सवेदी छतो पिछाण, तेह अवधिज्ञानी हुवै ।।
२५. क्षीण-वेदी रै जाण, अवधिज्ञान उपज्ये थके ।
अवेदी छतो पिछाण, तेह अवधिज्ञानी कह्यो ।।

२६. *जो प्रभु ! ते अवेदी हुवै जी कांइ, तो स्यूं उपशांत-वेद ।
अथवा क्षीण-वेदे हुवै जी कांइ ? हिव जिन भाखै भेद ।।
२७. उपशांतवेदे ते नहिं जी कांइ, क्षीण-वेद में थाय ।
केवल लहिवूं एहनै जी कांइ, तिण सूं उपशांत नांय ।।

२८. जो प्रभु ! ते सवेदी हुवै जी कांइ, तो स्यूं इत्थीवेद ?
पूछा पूरवली परै जी कांइ, जिन कहै सुण तज खेद ।।
२९. इत्थिवेदे ते हुवै जी कांइ, तथा पुंवेदे जोय ।
जन्म नपुंस विषे नहिं जी कांइ, पुरुष-नपुंसक होय ।।
३०. स्यूं सकषाई ते हुवै जी कांइ, कै अकषाई कहाय ?
जिन कहै सकषाइ हुवै जी कांइ, वलि अकषाई थाय ।।

३१. †जे कषाय नैं क्षय किये विण, अवधिज्ञान लहीजियै ।
तेह सकषाई छतो वर, अवधिज्ञान कहीजियै ।।
३२. जे कषाय नैं क्षय किये तसु, अवधिज्ञान लहीजियै ।
तेह अकषाई छतो वर, अवधिज्ञान कहीजियै ।।

३३. †जो प्रभु ! अकषाई हुवै जी कांइ, स्यूं उपशांत-कषाय ।
कै क्षीण-कषाई नैं विषे जी प्रभु ! अवधिज्ञान उपजाय ।।
३४. जिन कहै नहिं उपशांत में जी कांइ, क्षीण-कषाई थाय ।
केवल पामवा योग्य छै जी कांइ, तिण सूं नहि उपशांत कषाय ।।
३५. जो प्रभु ! सकषाई हुवै जी कांइ, कितली कषाय में थाय ?
जिन कहै चिहुं त्रिहुं बे इके जी कांइ, अवधिज्ञान उपजाय ।।

३६. चिहुं कषाय हुंते छते जी कांइ, तो संजलण कषाय ।
क्रोध मान माया विषे जी कांइ, लोभ विषे ए थाय ।।

---

* लय : वीरमती तरु अंब नो जी कांइ

† लय : पूज मोटा भांजै तोटा

२१,२२. से णं भंते ! किं सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ?
एवं जोगो, उवओगो, संघयणं, संठाणं, उच्चत्तं, आउयं च— एयाणि सव्वाणि जहा असोच्चाए तहेव भाणियव्वाणि । (सं० पा०) (श० ९।५८-६३)

२३. से णं भंते ! किं सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा ।

२४. अक्षीणवेदस्यावधिज्ञानोत्पत्तौ सवेदकः सन्नवधिज्ञानी भवेत् । (वृ० प० ४३८)

२५. क्षीणवेदस्य चावधिज्ञानोत्पत्ताववेदकः सन्नयं स्यात् । (वृ० प० ४३८)

२६. जइ अवेदए होज्जा किं उवसंतवेदए होज्जा ? खीण-वेदए होज्जा ?

२७. गोयमा ! नो उवसंतवेदए होज्जा, खीणवेदए होज्जा ।
उपशान्तवेदोऽयमवधिज्ञानी न भवति, प्राप्तव्यकेवल-ज्ञानस्यास्य विवक्षितत्वादिति । (वृ० प० ४३८)

२८. जइ सवेदए होज्जा किं इत्थीवेदए होज्जा ? पुरिस-वेदए होज्जा ? पुरिसनपुंसगवेदए होज्जा ?

२९. गोयमा ! इत्थीवेदए वा होज्जा, पुरिसवेदए वा होज्जा, पुरिसनपुंसगवेदए वा होज्जा । (श० ९।६४)

३०. से णं भंते ! किं सकसाई होज्जा ? अकसाई होज्जा ?
गोयमा ! सकसाई वा होज्जा, अकसाई वा होज्जा ।

३१. यः कषायाक्षये सत्यवधिं लभते स सकषायी सन्नवधि-ज्ञानी भवेत् । (वृ० प० ४३८)

३२. यस्तु कषायक्षयेऽसावकषायीति । (वृ० प० ४३८)

३३. जइ अकसाई होज्जा किं उवसंतकसाई होज्जा ? खीणकसाई होज्जा ?

३४. गोयमा ! नो उवसंतकसाई होज्जा, खीणकसाई होज्जा ।

३५. जइ सकसाई होज्जा से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
गोयमा ! चउसु वा तिसु वा दोसु वा एक्कम्मि वा होज्जा ।

३६. चउसु होमाणे चउसु—संजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७. त्रिहुं विषे हुंते छते जी कांइ, संजलण माने जाण।
मायालोभ विषे हुवै जी कांइ, इम नवमे गुणठाण ।।
३८. दोय विषे हुंते छते जी कांइ, संजलण माया लोह।
एक विषे हुंते छते जी कांइ, संजलण लोभे रोह ।।

३९. अध्यवसाय तसु केतला जी कांइ ? जिन कहै असंख कहाय।
जेम असोच्चा तिह विधै जी कांइ, जाव केवल उपजाय ।।

४०. धर्म केवली भाखियो जी कांइ, आघवेज्ज पन्नवेज्ज।
तेह परूपै छै वलि जो कांइ ? जिन कहै हंत कहेज्ज ।।

४१. प्रव्रज्या लिंग ते दिये जी कांइ, अन्य प्रते मुंडेह ?
जिन कहै हंता लिंग दियै जी कांइ, अन्य शिर लुंच करेह ।।
४२. तास सीस प्रव्रज्या दिये जो कांइ, शिष्य अन्य मुंड करेह ?
जिन कहै हंता लिंग दिये जी कांइ, वलि अन्य मुंडावेह ।।

४३ हे प्रभु ! ते सीझै अछै जी, कांइ जाव करै दुख अंत।
जिन कहै हंता सीझै अछै जी कांइ, जावत अंत करंत ।।

४४. तास सीस सीझै अछै जी कांइ, जाव करै दुख अंत।
जिन कहै हां सीझै अछै जी कांइ, यावत अंत करंत ।।

४५. वलि प्रशिष्य पिण तेहनां जी कांइ, सीझै यावत अंत।
जिन कहै हां सीझै अछै जी कांइ, यावत अंत करंत ।।

४६. ऊर्द्ध अधो तिरि लोक में जी कांइ, जेम असोच्चा तेम।
जाव अढ़ी द्वीप बे दधि जी कांइ, तसु इक देशे एम ।।

४७. एक समय कितला हुवै जी प्रभु ! जिन भाखै वच श्रेष्ट।
जघन्य एक बे त्रिण हुवै जी कांइ, उत्कृष्टा इक सौ अष्ट ।।

४८. तिण अर्थे इम आखियो जी कांइ, सांभल नें दश पास।
केवलज्ञान कोइक लहै जी कांइ, कोयक न लहै तास ।।

४९. सेवं भंते ! नवम इकतीसमें जी कांइ, इकसौ चिमंतरमीं ढाल।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी जी कांइ, 'जय-जश' हरष विशाल ।।

नवमशते एकत्रिंशत्तमोद्देशकार्थ : ।।९।३१।।

३७. तिसु होमाणे तिसु—संजलण-माण-माया-लोभेसु होज्जा।

३८. दोसु होमाणे दोसु— संजलणमाया-लोभेसु होज्जा, एगम्मि होमाणे एगम्मि— संजलणलोभे होज्जा। (श० ९।६५)

३९. तस्स णं भंते ! केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा। (श० ९।६६-६८)
एवं जहा असोच्चाए तहेव जाव (सं० पा०) केवल-वरनाण-दंसणे समुप्पज्जइ। (श० ९।६६-६८)

४०. से णं भंते ! केवलिपण्णत्तं धम्मं आघवेज्ज वा ? पण्णवेज्ज वा ? परूवेज्ज वा ?
हंता आघवेज्ज वा, पण्णवेज्ज वा, परूवेज्ज वा। (श० ९।६९)

४१. से णं भंते ! पव्वावेज्ज वा ? मुंडावेज्ज वा ?
हंता पव्वावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा। (श० ९।७०)

४२. तस्स णं भंते ! सिस्सा वि पव्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा ?
हंता पव्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा। (श० ९ पृ० ४१२, टि० २)

४३. से णं भंते ! सिज्झति बुज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेइ ?
हंता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति। (श० ९।७१)

४४. तस्स णं भंते ! सिस्सा वि सिज्झंति जाव सव्व-दुक्खाणं अंतं करेंति ?
हंता सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति। (श० ९।७२)

४५. तस्स णं भंते ! पसिस्सा वि सिज्झंति जाव सव्व-दुक्खाण अंतं करेंति ?
हंता सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति। (श० ९।७३)

४६. से णं भंते ! किं उड्ढं होज्जा ? जहेव असोच्चाए जाव अड्ढाइज्जदीवसमुद्दतदेक्कदेसभाए होज्जा। (श० ९।७४)

४७. ते णं भंते ! एगसमए णं केवतिया होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं अट्ठसयं।

४८. से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थे-गतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा। (श० ९।७५)

४९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति। (श० ९।७६)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : १७५

सोरठा

१. इकतीसम उद्देश, केवलि प्रमुख नां वचन।
सांभल नैं सुविशेष, केवल नीं उत्पत्ति कही॥
२. हिवै केवली वाण, सांभल नैं जेहनैं थयो।
पूर्ण ज्ञान प्रधान, ते विस्तार कहै अछै॥

१. अनन्तरोद्देशके केवल्यादिवचनं श्रुत्वा केवलज्ञानमुत्पादयेदित्युक्तम् (वृ०प०४३६)
२. इह तु येन केवलिवचनं श्रुत्वा तदुत्पादितं स दर्श्यते (वृ०प०४३६)

दूहा

३. तिण काले नैं तिण समय, वाणिय ग्राम उदार।
एहवै नामै नगर थो, वर्णन तास श्रीकार॥
४. दूतिपलासक चैत्य त्यां, समवसरया वर्द्धमान।
परषद आवी धर्म सुण, पहुंती निज निज स्थान॥
सुखकारी गंगेय नीं वारता॥[ध्रुपदं]
५. *तिण काले तिण समय में, पार्श्वसंतानियो ताय हो। गुणधारी।
गंगेय नामै अणगार ते, आयो वीर पे चलाय हो। गुणधारी॥

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियग्गामे नामं नयरे होत्था—वण्णओ।
४. दूतिपलासए चेइए। सामी समोसढे। परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया। (श० ६।७७)
५. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जे गंगेए नामं अणगारे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ,

सोरठा

६. ए गंगेय अणगार, कृत्रिम नपुंस कहीजियै।
पनर भेद सिद्ध सार, पन्नवण धुर पद अर्थ में॥
७. *वीर प्रभु पै आवी करी, रह्यो नहीं अति दूर नजीक।
वंदण नमण कियां विना, इम बोलै तहतीक॥

७. उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वदासी— (श० ६।७८)

८. हे प्रभु! अंतर-सहित ते, नरकपणैं उपजंत।
अथवा अंतर-रहित ते, नारक उत्पत्ति हुंत?
९. श्री जिन भाखै गंगेया! नेरइया नरक मझार।
अंतर-सहित पिण ऊपजै, ए विरह उत्पत्ति जिवार॥
१०. अंतर-रहित पिण ऊपजै, नेरइयापणैं विचार।
ते उत्पत्ति विरह पड़ै नहीं, तिण वेला अवधार॥
११. हे प्रभु! अंतर-सहित ते, उपजै असुरकुमार।
कै असुर निरंतर ऊपजै? हिव भाखै जगतार॥
१२. अंतर-सहित पिण ऊपजै, असुरकुमार विचार।
अंतर-रहित पिण ऊपजै, इम जाव थणियकुमार॥

८. संतरं भंते! नेरइया उववज्जंति? निरंतरं नेरइया उववज्जंति?
९. गंगेया! संतरं पि नेरइया उववज्जंति,
१०. निरंतरं पि नेरइया उववज्जंति। (श० ६।७६)
११. संतरं भंते! असुरकुमारा उववज्जंति? निरंतरं असुरकुमारा उववज्जंति?
१२. गंगेया! संतरं पि असुरकुमारा उववज्जंति, निरंतरं पि असुरकुमारा उववज्जंति। एवं जाव थणियकुमारा। (श० ६।८०)

१३. अंतर-सहित प्रभु! ऊपजै, पृथिवीकाइया जीव।
अथवा निरंतर ऊपजै? हिव जिन उत्तर कहीव॥
१४. अंतर-सहित नहिं ऊपजै, समय-समय असंख्यात।
ऊपजै छै पुढवी मझै, तिण सूं अंतर-रहित उपपात॥

१३. संतरं भंते! पुढविक्काइया उववज्जंति? निरंतरं पुढविक्काइया उववज्जंति?
१४. गंगेया! नो संतरं पुढविक्काइया उववज्जंति, निरंतरं पुढविक्काइया उववज्जंति।

*लय : गुणधारी सुखकारी हरि सुत वंदियै

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५. एवं जावत वणस्सई, वनस्पति रै मांय।
समय-समय अनंता ऊपजै, तिण सूं अंतर-रहित उपजाय ।।

१५. एवं जाव वणस्सइकाइया।

१६. बेइंद्रि जाव वेमाणिया, कहिवा नारक जेम।
अंतर-सहित पिण ऊपजै, अंतर-रहित पिण तेम ।।

१६. बेइंदिया जाव वेमाणिया एते जहा नेरइया। (श० ९।८१)

सोरठा

१७. जे ऊपनां छै तास, नीकलवो वलि हुवै अछै।
ते माटै सुविमास, नीकलवा नों प्रश्न हिव ।।

१७. उत्पन्नानां च सतामुद्वर्तना भवतीत्यतस्तां निरूपयन्नाह— (वृ०प० ४३६)

१८. *हे प्रभु! अंतर-सहित ते, नीकलै नारक जीव।
अथवा निरंतर नीकलै? हिव जिन उत्तर कहीव ।।

१८. संतरं भंते! नेरइया उव्वट्टंति? निरंतरं नेरइया उव्वट्टंति?

१९. अंतर-सहित पिण नीकलै, नीकलवा नों विरह जद थाय।
अंतर-रहित पिण नीकलै, जद नीकलवा नों विरह नांय ।।

१९. गंगेया! संतरं पि नेरइया उव्वट्टंति, निरंतरं पि नेरइया उव्वट्टंति।

२०. इम जाव थणियकुमार छै, हिवै पृथिवी नी पूछा वदीत।
प्रभु! पृथिवीकाइया नीकलै, अंतर-सहित कै अंतर-रहीत?

२०. एवं जाव थणियकुमारा। (श० ९।८२)
संतरं भंते! पुढविक्काइया उव्वट्टंति?—पुच्छा।

२१. जिन कहै अंतर-सहित नहीं, समय-समय असंख्यात।
नीकलै छै तिण कारणे, निरंतर नीकलवूं आख्यात।

२१. गंगेया! नो संतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति, निरंतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति।

२२. इम जाव वणस्सइकाइया, वनस्पति में जेह।
समय-समय अनंता ही मरै, तिण सुं अंतर-रहित निकलेह ।।

२२. एवं जाव वणस्सइकाइया—नो संतरं, निरंतर उव्वट्टंति। (श० ९।८३)

२३. हे प्रभु! अंतर-सहित ते, बेइंदिया निकलंत।
कै अंतर-रहित बेइंदिया, नीकलवूं तसु हुंत?

२३. संतरं भंते! बेइंदिया उव्वट्टंति? निरंतरं बेइंदिया उव्वट्टंति?

२४. जिन कहै अंतर-सहित पिण, बेइंदिया निकलंत।
अंतर-रहित पिण नीकलै, इम जाव व्यंतर उव्वट्टंत ।।

२४. गंगेया! संतरं पि बेइंदिया उव्वट्टंति, निरंतरं पि बेइंदिया उव्वट्टंति। एवं जाव वाणमंतरा। (श०९।८४)

२५. अंतर-सहित प्रभु! जोतिषि, चवै तिहां थी सोय।
अथवा निरंतर ते चवै? हिव जिन उत्तर जोय ।।

२५. संतरं भंते! जोइसिया चयंति?—पुच्छा।

२६. अंतर-सहित पिण जोतिषि, चवै अछै तहतीक।
अंतर-रहित पिण चवै अछै, एवं वैमानीक ।।

२६. गंगेया! संतरं पि जोइसिया चयंति, निरंतरं पि जोइसिया चयंति। एवं वेमाणिया वि। (श० ९।८५)

२७. नवम बत्तीस नुं देश ए, इक सौ पचितरमीं ढाल।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' हरष विशाल ।।

ढाल : १७६

दूहा

१. पूर्वे नीकलवूं कह्यं, नीकलिया नैं ताय।
अछै प्रवेशण अन्य गति, हिवै प्रवेशण आय ।।

१. उद्वृत्तानां च केषांचिद्गत्यन्तरे प्रवेशनं भवतीत्यतस्तन्निरूपणायाह— (वृ०प० ४३९)

२. प्रभु! प्रवेशण कतिविधे? अन्य गति थकीज जेह।
नीकल अन्य गति नैं विषे, जाय प्रवेशण तेह ।।

२. कतिविहे णं भंते! पवेसणए पण्णत्ते?
'पवेसणए' त्ति गत्यन्तरादुद्वृत्तस्य विजातीयगतौ जीवस्य प्रवेशनं (वृ०प० ४४२)

*लय : गुणधारी सुखकारा हरि सुत वंदियें

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. जिन कहै तेह प्रवेशणं, भाख्यो च्यार प्रकार।
नारक गति में पेसवो, नरक-प्रवेशण धार।।
४. तिर्यंच गति में पेसवो, तिरि-प्रवेशण तेह।
माणुस्स गति में पेसवो, मनुष्य-प्रवेशण जेह।।
५. सुर गति मांहे पेसवो, देव-प्रवेशण ताम।
ऊपजवो छै जेहनों, कह्यो प्रवेशण नाम।।
६. नरक-प्रवेशण हे प्रभु! आख्यो किते प्रकार?
जिन भाखै सुण गंगेया! सप्त प्रकार विचार।।
७. पुढवी रत्नप्रभा प्रथम, नरक-प्रवेशण न्हाल।
यावत पुढवी सातमीं, उपजै तेह विचाल।।

*होजी प्रभु! गंगेय प्रश्न सुरंग, करै उमंगपणें रे लोय।
होजी प्रभु! देव दयाल कृपालज भंग तरंग भणें रे लोय।। (ध्रुपदं)

८. होजी प्रभु! एक नेरइयो ताम, नरक-प्रवेशण करै रे लोय।
होजी प्रभु! करतो छतो स्यूं, रत्नप्रभा में संचरै रे लोय।
९. होजी प्रभु! सक्करप्रभा में तेह, प्रवेशण करै हुवै।
होजी प्रभु! जाव सातमीं मांहि, तिको दुख अनुभवै।।
१०. गंगेया! रत्नप्रभा में हुवै, तथा सक्कर मझै।
गंगेया! अथवा वालु तथा, पंक मांहै सझै।।
११. गंगेया! तथा धूमप्रभ मांहि, तथा दुख तम घनां।
गंगेया! तथा तमतमा भंग, सप्त इक जीव नां।।
१२. होजी प्रभु! दोय नेरइया, नरक विषे प्रवेशन करै।
होजी प्रभु! रत्नप्रभा स्यूं जाव, सातमीं संचरै।।

हिवै दोय जीव नां अट्ठाईस भंगा, तिण में इकसंजोगिया सात भंगा प्रथम कहै छै—

१३. गंगेया! बिहुं रत्न में जाय, तथा बिहुं सक्कर में।
गंगेया! बिहुं वालु में, तथा बिहुं पंके भमे।।
१४. गंगेया! बिहुं धूम में तथा, बिहुं ते तम मही।
गंगेया! तथा तमतमा बिहुं, सप्त इक योग ही।।

हिवै दोय जीवां रा द्विकसंजोगिया इक्कीस भांगा, तिण में प्रथम छह भांगा रत्नप्रभा थी हुवै ते कहै छै—

१५. गंगेया! अथवा ते इक जीव रत्नप्रभा वरै।
गंगेया! एक जीव अवलोय, सक्कर में संचरै।।
१६. गंगेया! तथा जीव इक रत्न, एक बालु हुवै।
गंगेया! तथा जीव इक रत्न, पंक इक अनुभवै।।
१७. गंगेया! तथा जीव इक रत्न, जीव इक धूम ही।
गंगेया! तथा जीव इक रत्न, जीव इक तम लही।।
१८. गंगेया! तथा जीव इक रत्न, जीव इक तमतमा।
गंगेया! रत्नप्रभा थी आख्या, ए षट भंग मां।।

हिवै पांच भांगा सक्करप्रभा थी कहै छै—

*लय: अंबाजी सम्र सोलै सिणगार कै दर्शण दीजियै रे लोय

३. गंगेया! चउव्विहे पवेसणए पण्णत्ते, तं जहा—नेरइय-पवेसणए।
४. तिरिक्खजोणियपवेसणए, मणुस्सपवेसणए
५. देवपवेसणए। (श० ९।८६)
उत्पाद इत्यर्थः (वृ० प० ४४२)
६. नेरइयपवेसणए णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते?
गंगेया! सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—
७. रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणए। (श० ९।८७)
८. एगे भंते! नेरइए नेरइयपवेसणएणं पविसमाणे किं रयणप्पभाए होज्जा,
९. सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा?
१०,११. गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा। (श० ९।८८)
१२. दो भंते! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा?
१३,१४. गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।
१५. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा
१६-१८. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव एगे रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९. गंगेया ! तथा जीव इक सक्कर, एक वालुय लहै ।
गंगेया ! तथा जीव इक सक्कर, इक पंके रहै ।।
२०. गंगेया ! तथा जीव एक सक्कर, इक धूमे वही ।
गंगेया ! तथा जीव इक सक्कर, इक तमा मही ।।
२१. गंगेया ! तथा जीव इक सक्कर, इक तमतमा भणी ।
गंगेया ! सक्करप्रभा थी गिणती, ए पंच भंग तणी ।।

१९-२१. अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।

हिवै च्यार भांगा वालुयप्रभा थी कहै छै—

२२. गंगेया ! तथा जीव इक वालुक, इक पंके कही ।
गंगेया ! तथा जीव इक वालुक, इक जीव धूम ही ।।
२३. गंगेया ! तथा जीव इक वालुक, इक तमा विषे ।
गंगेया ! अथवा वालुक एक, एक तमतमा धके ।।

२२.,२३. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।

हिवै पंकप्रभा थी तीन भांगा कहै छै—

२४. गंगेया ! तथा जीव इक पंक, एक धूमा वहै ।
गंगेया ! तथा एक जीव पंक, एक तमा लहै ।।
२५. गंगेया ! तथा जीव इक पंक, एक तमतमा मझै ।
गंगेया ! ए त्रिण भंगा पेख, पंकप्रभा थी सझै ।।

२४-२७. एवं एक्केका पुढवी छड्डेयव्वा जाव अहवा एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । (श० ९।८९)

हिवै दोय भांगा धूमप्रभा थी कहै छै—

२६. गंगेया ! तथा जीव इक धूम, एक तमा मघा ।
गंगेया ! तथा जीव इक धूम, एक तमतमा अघा ।।

हिवै एक भांगो तमा थी कहै छै—

२७. गंगेया ! तथा जीव इक तमा, एक तमतमा भण्यो ।
गंगेया ! इक ए भंगो नरक छठी थी इम गुण्यो ।।
२८. गंगेया ! षट पंच चउ त्रिण बे इक, द्विकसंजोगिया ।
गंगेया ! रत्न प्रमुख थी अनुक्रम इकवीसूं किया ।।
२९. गंगेया ! इकयोगिक सत्त, द्विकयोगिक इकवीस ही ।
गंगेया ! भंग सर्व अठवीस, दोय जीव लही ।।

२९. तत्रैकैकपृथिव्यां नारकद्वयोत्पत्तिलक्षणैकत्वे सप्त विकल्पाः, पृथिवीद्वये नारकद्वयोत्पत्तिलक्षणद्विकयोगे त्वेकविंशतिरित्येवमष्टाविंशतिः । (वृ०प० ४४२)

सोरठा

३०. तीन जीव नां ताम, प्रश्न गंगेय करै हिवै ।
उत्तर तसु अभिराम, वीर जिनेश्वर वागरै ।।

३१. *होजी प्रभु ! नरक विषे त्रिण जीव, प्रवेश करै तरै ।
होजी प्रभु ! ते स्यूं रत्नप्रभा में जाय, जाव तमतमा वरै ।।

३१. तिण्णि भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?

हिवै भगवन् उत्तर कहै छै—तीन जीव नरक जाय तेहनां इक-संयोगिक भांगा सात, द्विकसंयोगिक बयालीस, त्रिकसंयोगिक पैंतीस—एवं चौरासी भांगा हुवै । ते मध्ये प्रथम इकसंयोगिक सप्त भांगा कहै छै—

३२. गंगेया ! रत्नप्रभा त्रिहुं होय, तथा त्रिहुं सक्करै ।
गंगेया ! तथा त्रिहुं वालुका, तथा त्रिहुं पंक वरै ।।

३२,३३. गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।

* लय : अंबाजी सज सोलै सिणगार कै दर्शण दीजियै रे लोय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३. गंगेया ! अथवा तीनूं धूम, तथा त्रिहुं तम विषे ।
गंगेया ! तथा त्रिहुं तमतमा, सप्त इणविध अखे ॥

हिवै द्विकसंयोगिक भांगा नीं आमना कहै छै—रत्न थी भांगा केता ? इम एक नरक रो नाम लेइ पूछ्यां लारै छह नरक रही ते माटै छह भांगा। शक्कर थी पांच भांगा, लारै पांच रही ते माटै पांच। वालु थी च्यार भांगा, लारै च्यार रही ते माटै। पंक थी तीन भांगा, लारै तीन रही ते माटै। धूम थी दोय भांगा, लारै दोय रही ते माटै, तम थी एक भांगो, लारै एक रही ते माटै।

हिवै तीन जीवां रा द्विकसंयोगिक बंयालीस भांगा कहै छै, तेहनां विकल्प—

३४. गंगेया ! तथा जीव इक, रत्नप्रभा में संचरै ।
गंगेया ! दोय जीव संपेख, सक्करप्रभा वरै ॥
३५. गंगेया ! तथा जीव इक रत्न, दोय वालुक मही ।
गंगेया ! तथा जीव इक रत्न, दोय पंके वही ॥
३६. गंगेया ! तथा जीव इक रत्न, दोय धूमे सही ।
गंगेया ! तथा जीव इक रत्न, दोय तमा लही ॥
३७. गंगेया ! तथा जीव इक रत्न, दोय तमतमा रह्या ।
गंगेया ! रत्न थकी षट भंग, प्रथम विकल्प कह्या ॥
३८. गंगेया ! तथा जीव बे रत्न, एक सक्कर विषे ।
गंगेया ! तथा जीव बे रत्न, एक वालू धके ॥
३९. गंगेया ! तथा जीव बे रत्न, जीव एक पंक ही ।
गंगेया ! तथा जीव बे रत्न, जीव इक धूम ही ॥
४०. गंगेया ! तथा जीव बे रत्न, एक तमा मघा ।
गंगेया ! तथा जीव बे रत्न, एक तमतमा अघा ॥
४१. गंगेया ! ए षट भंगा दूजा, विकल्प नां कह्या ।
गंगेया ! बिहुं विकल्प नां द्वादश, रत्न थकी लह्या ॥
४२. गंगेया ! तथा जीव इक सक्कर, बे वालुय मही ।
गंगेया ! तथा जीव इक सक्कर, बे पंके सही ॥
४३. गंगेया ! तथा जीव इक सक्कर, बे धूमा वसै ।
गंगेया ! तथा जीव इक सक्कर, बे तमा रसै ॥
४४. गंगेया ! तथा जीव इक सक्कर, बे तमतमा लह्या ।
गंगेया ! धुर विकल्प नां सक्कर थी, पंच भंग कह्या ॥
४५. गंगेया ! तथा जीव बे सक्कर, इक वालू मही ।
गंगेया ! तथा जीव बे सक्कर, इक पंके सही ॥
४६. गंगेया ! तथा जीव बे सक्कर, इक धूमा विषे ।
गंगेया ! तथा जीव बे सक्कर, इक तमा धके ॥
४७. गंगेया ! तथा जीव बे सक्कर, इक तमतमा मझै ।
गंगेया ! दूजै विकल्प सक्कर थी, पंच भंग सझै ।
४८. गंगेया ! तथा जीव इक वालुक, बे पंके कह्या ।
गंगेया ! तथा जीव इक वालुक, बे धूमे रह्या ॥
४९. गंगेया ! तथा जीव इक वालुक, बे तमा वलो ।
गंगेया ! तथा जीव इक वालुक, बे तमतमा मिली ॥

३४-३७. अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।

३८-४०. अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा। जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

४२-४४. अहवा एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।

४५-४७. अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

४८-६३. एवं जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया, तहा सव्वपुढवीणं भाणियव्वं जाव अहवा दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५०. गंगेया ! ए धुर विकल्प चिउं भंग, वालुक थी कह्या ।
गंगेया ! विकल्प द्वितीय तणां हिव, आगल इम लह्या ।।
५१. गंगेया ! तथा जीव बे वालुय, इक पंके सही ।
गंगेया ! तथा जीव बे वालुक, इक धूमा मही ।।
५२. गंगेया ! तथा जीव बे वालुक, एक तमा मघा ।
गंगेया ! तथा जीव बे वालुक, इक तमतमा अघा ।।
५३. गंगेया ! विकल्प द्वितीय भंग चिउं वालू थी कह्या ।
गंगेया ! बिहुं विकल्प नां भंग, अठ वालुक थी लह्या ।।
५४. गंगेया ! तथा जीव इक पंक, दोय धूमा मही ।
गंगेया ! तथा जीव इक पंक, दोय तमा लही ।।
५५. गंगेया ! तथा जीव इक पंक, तमतमा बे कह्या ।
गंगेया ! ए धुर विकल्प पंक थकी त्रिहुं भंग लह्या ।।
५६. गंगेया ! तथा जीव बे पंक, इक धूमा विषे ।
गंगेया ! तथा जीव बे पंक, एक तमा धके ।।
५७. गंगेया ! तथा जीव बे पंक, तमतमा इक रहै ।
गंगेया ! विकल्प द्वितीय पंक थी, त्रिहुं भंग इम लहै ।।
५८. गंगेया ! तथा धूम एक दोय, तमा दुख अनुभवै ।
गंगेया ! तथा धूम इक दोय, तमतमा नैं हुवै ।।
५९. गंगेया ! ए धुर विकल्प, धूम थकी बे भंग लहै ।
गंगेया ! दूजो विकल्प हिवै, तास बे भंग कहै ।।
६०. गंगेया ! तथा धूम बे जीव, एक तमा विषे ।
गंगेया ! तथा धूम बे जीव, एक तमतमा धके ।।
६१. गंगेया ! दूजै विकल्प धूम थकी, बे भंग कह्या ।
गंगेया ! बिहुं विकल्प चिहुं भंग, धूम थी इम लह्या ।।
६२. गंगेया ! तथा जीव इक तमा, दोय तमतमा कही ।
गंगेया ! तमा थकी ए धुर विकल्प, इक भंग सही ।।
६३. गंगेया ! तथा जीव बे तमा, एक तमतमा वली ।
गंगेया ! दूजै विकल्प इक भंग, तमा थी मिली ।।
६४. गंगेया ! रत्नप्रभा थी द्वादश, बिहुं विकल्प करी ।
गंगेया ! सक्कर थी दश, अठ वालुका धरी ।।
६५. गंगेया ! पंक थकी षट, धूम थकी चिहुं जाणियै ।
गंगेया ! तमा थकी बे बिहुं विकल्प करि आणियै ।।
६६. गंगेया ! बिहुं विकल्प नां भंग, बयांली भाखिया ।
गंगेया ! इकबीस-इकबीस इक-इक, विकल्प दाखिया ।।
६७. गंगेया ! तीन जीव नां द्विकसंयोगिक कीजियै ।
गंगेया ! तसु बे विकल्प भंग बयांली लीजियै ।।

६४. द्विकसंयोगे तु तासामेको द्वावित्यनेन नारकोत्पाद-विकल्पेन रत्नप्रभया सह शेषाभिः क्रमेण चारिताभि-र्लब्धाः षड्, द्वावेक इत्यनेनापि नारकोत्पादविकल्पेन षडेव, तदेते द्वादश, एवं शर्कराप्रभया पञ्च पञ्चेति दश एवं वालुकाप्रभयाऽष्टौ (वृ० प० ४४२)

६५. पङ्कप्रभया षट् धूमप्रभया चत्वारः तमःप्रभया द्वाविति । (वृ० प० ४४२)

६७. द्विकयोगे द्विचत्वारिंशत् । (वृ० प० ४४२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीन जीवां रा इक्कसंजोगिया सात

	र	स	वा	पं	धू	त	तम
१	३	०	०	०	०	०	०
२	०	३	०	०	०	०	०
३	०	०	३	०	०	०	०
४	०	०	०	३	०	०	०
५	०	०	०	०	३	०	०
६	०	०	०	०	०	३	०
७	०	०	०	०	०	०	३

हिवै तीन जीवां रा द्विकसंजोगिया विकल्प दो, भांगा ४२

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
१	१	१	२	०	०	०	०	०
२	२	१	०	२	०	०	०	०
३	३	१	०	०	२	०	०	०
४	४	१	०	०	०	२	०	०
५	५	१	०	०	०	०	२	०
६	६	१	०	०	०	०	०	२

हिवै दूजै विकल्प करि रत्न थी छह

७	१	२	१	०	०	०	०	०
८	२	२	०	१	०	०	०	०
९	३	२	०	०	१	०	०	०
१०	४	२	०	०	०	१	०	०
११	५	२	०	०	०	०	१	०
१२	६	२	०	०	०	०	०	१

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
हिवं सक्कर थी पांच भांगा, प्रथम विकल्प कहै छै								
		र	स	वा	पं	धू	त	तम
१३	१	०	१	२	०	०	०	०
१४	२	०	१	०	२	०	०	०
१५	३	०	१	०	०	२	०	०
१६	४	०	१	०	०	०	२	०
१७	५	०	१	०	०	०	०	२
हिवं सक्कर थी पांच भांगा, दूजे विकल्प कहै छै								
		र	स	वा	पं	धू	त	तम
१८	१	०	२	१	०	०	०	०
१९	२	०	२	०	१	०	०	०
२०	३	०	२	०	०	१	०	०
२१	४	०	२	०	०	०	१	०
२२	५	०	२	०	०	०	०	१
हिवं प्रथम विकल्प वालु थी च्यार भांगा कहै छै								
२३	१	०	०	१	२	०	०	०
२४	२	०	०	१	०	२	०	०
२५	३	०	०	१	०	०	२	०
२६	४	०	०	१	०	०	०	२
हिवं दूजे विकल्प वालु थी च्यार भांगा कहै छै								
२७	१	०	०	२	१	०	०	०
२८	२	०	०	२	०	१	०	०
२९	३	०	०	२	०	०	१	०
३०	४	०	०	२	०	०	०	१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै प्रथम विकल्प पंक थी तीन भांगा कहै छै								
३१	१	०	०	०	१	२	०	०
३२	२	०	०	०	१	०	२	०
३३	३	०	०	०	१	०	०	२
हिवै दूजै विकल्प पंक थी तीन भांगा								
		र	स	वा	पं	धू	त	तम
३४	१	०	०	०	२	१	०	०
३५	२	०	०	०	२	०	१	०
३६	३	०	०	०	२	०	०	१
हिवै प्रथम विकल्प धूम थी दो भांगा								
३७	१	०	०	०	०	१	२	०
३८	२	०	०	०	०	१	०	२
हिवै दूजै विकल्प धूम थी दो भांगा								
३९	१	०	०	०	०	२	१	०
४०	२	०	०	०	०	२	०	१
हिवै प्रथम विकल्प तम थी एक भांगो कहै छै								
४१	१	०	०	०	०	०	१	२
हिवै दूजै विकल्प तम थी एक भांगो कहै छै								
४२	१	०	०	०	०	०	२	१

ए तीन जीवां रा द्विकसंजोगिया दोय विकल्प करि रत्न थी १२, सक्कर थी १०, वालुका थी ८, पंक थी ६, धूम थी ४, तम थी २ एवं ४२ भांगा कह्या। हिवै तीन जीवां रा त्रिकसंजोगिया—

हिवै तीन जीवां रा त्रिकसंजोगिया ३५ भांगा कहै छै

६८. हो जी प्रभु ! तीन जीव नां त्रिक-संजोगिक हिव कहै।
हो जी प्रभु ! विकल्प तेहनों एक, भंग पैंतीस लहै।।

६८. त्रिकयोगे तु तासां पञ्चत्रिंशद्विकल्पाः।

(वृ० प० ४४२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै रत्न प्रभा थी १५, सक्कर प्रभा थी १०, वालु थी ६, पंक थी ३, धूम थी २ एवं ३५। तिणमें रत्न सक्कर थी पांच भांगा कहै छै

६९. गंगेया ! तथा रत्न में एक, एक सक्कर लह्यं ।
गंगेया ! एक वालुका पेख, प्रथम भंगो कह्यं ।।

६९ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा।

७०. गंगेया ! तथा रत्न में एक, एक सक्कर मही।
गंगेया ! एक पंक में देख, भंग दूजो सही ।।

७०. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा।

७१. गंगेया ! तथा रत्न में एक, एक सक्कर विषे।
गंगेया ! एक धूम संपेख, भंग तीजो अखे ।।

७२. गंगेया ! तथा रत्न में एक, एक सक्कर मझै।
गंगेया ! एक तमा सुविशेख, भंग चउथो सझै ।।

७३. गंगेया ! तथा रत्न में एक, एक सक्कर लहै।
गंगेया ! एक तमतमा देख, भंग पंचम कहै ।।

७१-७३ जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

हिवै रत्न वालुय थी च्यार भांगा कहै छै

७४. गंगेया ! तथा रत्न में एक, एक वालुय मिली।
गंगेया ! एक पंक में पेख, भंग छट्ठो वली ।।

७४. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा

७५. गंगेया ! तथा रत्न में एक, एक वालुय लह्यो।
गंगेया ! एक धूम में देख, भंग सप्तम कह्यो ।।

७५. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होजा

७६. गंगेया ! तथा रत्न में एक, एक वालुय रसै।
गंगेया ! एक तमा संपेख, भंग अष्टम लसै ।।

७७. गंगेया ! तथा रत्न में एक, एक वालुय भयो।
गंगेया ! एक तमतमा पेख, भंग नवमो कह्यो ।।

७६-७७. एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

हिवै रत्न पंक थी तीन भांगा कहै छै

७८. गंगेया ! तथा रत्न में एक, एक पंके गयो।
गंगेया ! एक धूम सुविशेख, भंग दशमो कह्यो ।।

७८. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा।

७९. गंगेया ! तथा रत्न में एक, एक पंके वही।
गंगेया ! एक तमा सुविशेख, भंग ग्यारम सही ।।

८०. गंगेया ! तथा रत्न में एक, एक पंके मिली।
गंगेया ! एक तमतमा देख, भंग बारम वली ।।

७९-८०. जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

हिवै रत्न धूम थी दोय भांगा कहै छै

८१. गंगेया ! तथा रत्न में एक, एक धूमा मही।
गंगेया ! एक तमा संपेख, भंग तेरम सही ।।

८१. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा

८२. गंगेया ! तथा रत्न में एक, एक धूमा विषे।
गंगेया ! एक तमतमा देख, भंग चवदम पखे ।।

८२. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

हिवै रत्न तम थी एक भांगो कहै छै

८३. गंगेया ! तथा रत्न में एक, एक तमा गिण्यूं।
गंगेया ! एक तमतमा पेख, भंग पनरम भण्यूं ।।

८३. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

हिवै सक्कर सूं दश भांगा तिण में प्रथम सक्कर वालुय थी च्यार भांगा कहै छै—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८४. गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक वालुय मही।
गंगेया ! एक पंक में पेख, भंग सोलम सही।।
८५. गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक वालुय विषे।
गंगेया ! एक धूम में देख, भंग सतरम अखे।।
८६. गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक वालुय रसे।
गंगेया ! एक तमा सुविशेख, भंग अष्टादशे।।
८७. गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक वालुय भमें।
गंगेया ! एक तमतमा देख, भंग उगणीस में।।

८४. अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा।

८५. अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा।

८६,८७. जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

हिवै सक्कर पंक थी तीन भांगा कहै छै

८८. गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक पंके रह्या।
गंगेया ! एक धूम सुविशेख, भंग वीसम कह्या।।
८९. गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक वलि पंक में।
गंगेया ! एक तमा संपेख, भंग इकवीसमें।।
९०. गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक वलि पंक में।
गंगेया ! एक तमतमा पेख, भंग बावीस में।।

८८. अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा।

८९,९०. जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

हिवै सक्कर धूम थी दो भांगा कहै छै

९१. गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक वलि धूम में।
गंगेया ! एक तमा सुविशेख, भंग तेवीस में।।
९२. गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक वलि धूम में।
गंगेया ! एक तमतमा पेख, भंग चउवीस में।।

९१. अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा

९२. अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

हिवै सक्कर तम थी एक भांगो कहै छै

९३. गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक तमा भमे।
गंगेया ! एक तमतमा पेख, भंग पणवीस में।।
९४. गंगेया ! तथा वालु में एक, एक वलि पंक में।
गंगेया ! एक धूम में पेख, भंग छवीसमें।।
९५. गंगेया ! तथा वालुय में एक, एक वलि पंक में।
गंगेया ! एक तमा सुविशेख, सतावीस अंक में।।
९६. गंगेया ! तथा वालुका एक, एक वलि पंक में।
गंगेया ! एक तमतमा देख, अठावीस अंक में।।

९३. अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

९४. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा

९५. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा

९६. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

हिवै वालुय धूम थी दो भांगा कहै छै—

९७. गंगेया ! तथा वालुका एक, एक वलि धूम में।
गंगेया ! एक तमा दुख देख, भंग गुणतीस में।।
९८. गंगेया ! तथा वालुका एक, एक वलि धूम में।
गंगेया ! एक तमतमा पेख, भंग ए तीसमें।।

९७. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा

९८. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

हिवै वालु तम थी एक भांगो कहै छै—

९९. गंगेया ! तथा वालुका एक, एक तमा भमें।
गंगेया ! एक तमतमा पेख, भंग इकतीसमें।।

९९. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

हिवै पंक थी तीन भांगा तिणमें प्रथम पंक थी दो भांगा कहै छै—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१००. गंगेया ! तथा पंक में एक, एक वलि धूम में।
गंगेया ! एक तमा सुविशेख, भंग बतीसमें ॥
१०१. गंगेया ! तथा पंक में एक, एक वलि धूम में।
गंगेया ! एक तमतमा देख, भंग तैंतीसमें ॥

हिवै पंक तमा थी एक भांगो कहै छै---

१०२. गंगेया ! तथा पंक में एक, एक छट्ठी तमा।
गंगेया ! एक तमतमा पेख, भंग चउतीसमा ॥

हिवै धूम थी एक भांगो कहै छै—

१०३. गंगेया ! एक धूम में पेख, एक तमा भमे।
गंगेया ! एक तमतमा देख, भंग पैंतीसमें ॥
१०४. गंगेया ! तीन जीव नां त्रिक-संजोगिक ए कह्या।
गंगेया ! विकल्प तेहनों एक, भंग पैंत्रिस लह्या ॥

३५ भांगा कहै छै। तिणमें रत्नप्रभा थी १५, सक्कर थी १०, वालुका थी ६, पंक थी ३, धूम थी १—एवं ३५।

हिवै रत्न सक्कर थी ५ भांगा कहै छै								
		र	स	वा	पं	धू	त	तम
१	१	१	१	१	०	०	०	०
२	२	१	१	०	१	०	०	०
३	३	१	१	०	०	१	०	०
४	४	१	१	०	०	०	१	०
५	५	१	१	०	०	०	०	१
रत्न वालु थी ४ भांगा कहै छै								
६	१	१	०	१	१	०	०	०
७	२	१	०	१	०	१	०	०
८	३	१	०	१	०	०	१	०
९	४	१	०	१	०	०	०	१
हिवै रत्न पंक थी तीन भांगा कहै छै								
१०	१	१	०	०	१	१	०	०
११	२	१	०	०	१	०	१	०
१२	३	१	०	०	१	०	०	१

१००. अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा

१०१ अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

१०२ अहवा एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

१०३. अहवा एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। (श० ९।९०)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै रत्न धूम थी दोय भांगा कहै छै

१३	१	१	०	०	०	१	१	०
१४	२	१	०	०	०	१	०	१

हिवै रत्न तम थी एक भांगो कहै छै

१५	१	१	०	०	०	०	१	१

ए रत्न प्रभा थी पनरै भांगा कह्या।

हिवै सक्कर वालु थी च्यार भांगा कहै छै

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
१६	१	०	१	१	१	०	०	०
१७	२	०	१	१	०	१	०	०
१८	३	०	१	१	०	०	१	०
१९	४	०	१	१	०	०	०	१

हिवै सक्कर पंक थी ३ भांगा कहै छै

२०	१	०	१	०	१	१	०	०
२१	२	०	१	०	१	०	१	०
२२	३	०	१	०	१	०	०	१

हिवै सक्कर धूम थी २ भांगा कहै छै

२३	१	०	१	०	०	१	१	०
२४	२	०	१	०	०	१	०	१

हिवै सक्कर तम थी १ भांगो कहै छै

२५	१	०	१	०	०	०	१	१

ए सक्कर थी १० भांगा कह्या।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै वालु पंक थी ३ भांगा कहै छै								
		र	म	वा	पं	धू	त	तम
२६	१	०	०	१	१	१	०	०
२७	२	०	०	१	१	०	१	०
२८	३	०	०	१	१	०	०	१
हिवै वालु धूम थी २ भांगा कहै छै								
२९	१	०	०	१	०	१	१	०
३०	२	०	०	१	०	१	०	१
हिवै वालु तम थी १ भांगो कहै छै								
३१	१	०	०	१	०	०	१	१
एवं ६ भांगा वालुका थी कह्या।								
हिवै पंक धूम थी २ भांगा कहै छै								
३२	१	०	०	०	१	१	१	०
३३	२	०	०	०	१	१	०	१
हिवै पंक तम थी १ भांगो कहै छै								
३४	१	०	०	०	१	०	१	१
एवं पंक थी तीन भांगा कह्या।								
हिवै धूम तम थी १ भांगो कहै छै								
३५	१	०	०	०	०	१	१	१

एतले तीन जीव नां इकसंजोगिया ७ भांगा, द्विकसंजोगिया ४२ भांगा, त्रिकसंजोगिया ३५ भांगा—एवं सर्व ८४ भांगा।

१०५. गंगेया ! नवमें शत बतीसम देशज, अर्थ ही।
गंगेया ! इकसौ छिहंतरमी ढाल, विशेष ही ।।

१०६. गणपति ! भिक्खु भारीमाल, नृपतिइंदु सिरै।
गणपति ! 'जय-जश' हरख आनंद, सुगुण संपति वरै ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा०—हिवै त्रिकसंयोगिक में एक नरक रो नाम लेइ पूछै तेहनीं आमना कहै छै—लारै नरक रहै तिणमे एक छेहलो आंक घटायनें बाकी रहै ते आंक मांडी मिलाय लेणां। जेतला आंक हुवै तेतला भांगा कैहणा। तेहनो उदाहरण कोइ पूछै—रत्न थी त्रिकसंयोगिया भांगा केता? तेहनो उत्तर—रत्न थी पूछ्यो, लारै छह नरक रही। तेहमें एक छेहलो छह को आंक घटायां लारै पांच रह्या। ते एका सूं अनुक्रमे पांच तांइ मांडणा १।२।३।४।५। हिवै एहनें गिणणा—एक नें दोय—तीन, तीन नें तीन—छह, छह अनें च्यार—दश अनें पांच—पनरै, इम रत्न थी पनरै भांगा हुवै। सक्कर थी दश हुवै, ते किम? लारै रही पांच, ते मांहिलो पांचो घटावणो १।२।३।४। एहनें गिण्यां दश हुवै ते माटै सक्कर थी दश हुवै। वालु थी छह ते किम? लारै नरक रही च्यार, ते चोको घटावणो १।२।३। एहनै गिण्यां छह हुवै। पंक थी तीन ते किम? लारै नरक रही तीन, ते तीयो घटावणो १।२। एक नें दोय—तीन, ते माटै तीन हुवै। धूम थी एक भांगो, लारै दोय रही, ते बीयो घटायां लारै एको रहै, ते माटै एक भांगो। एवं रत्न थी १५, सक्कर थी १०, वालु थी ६, पंक थी ३, धूम थी १—एवं त्रिकसंयोगिका भांगा हुवै।

त्रिकसंयोगिया में दोय नरक रो नाम लेइ पूछ्यां, लारै नरक रहै जितरा भांगा कैहणा। तेहनों उदाहरण—रत्न सक्कर थी त्रिकसंयोगिक किता भांगा? उत्तर—५ भांगा, लारै पांच नरक रही ते माटै। रत्न वालु थी त्रिकसंयोगिक किता भांगा? उत्तर—४ भांगा, लारै च्यार नरक रही ते माटै। रत्न पंक थी त्रिकसंयोगिक किता भांगा? उत्तर—तीन भांगा, लारै ३ रही ते माटै। रत्न धूम थी दोय, लारै बे रही ते माटै। रत्न तम थी १ भांगो लारै १ रही ते माटै।

एवं रत्न थी १५। इम सक्कर थी दश। सक्कर वालु थी ४, लारै ४ नरक रही ते माटै। सक्कर पंक थी ३, लारै तीन रही ते माटै। सक्कर धूम थी २, लारै दोय रही ते माटै। सक्कर तम थी १, लारै एक रही ते माटै—इम सक्कर थी १०।

इम वालु थी ६। वालु पंक थी ३, लारै तीन रही ते माटै। वालु धूम थी २, लारै दोय रही ते माटै। वालु तम थी १, लारै १ रही ते माटै, इम वालु थी ६ भांगा।

पंक थी भांगा ३। पंक धूम थी २, लारै बे रही ते माटै। पंक तम थी १, लारै १ रही ते माटै। इम त्रिकसंयोगिक में दोय नरक रो नाम लेई पूछै तेहनीं आमना कही।

ढाल : १७७

दूहा

१. च्यार नेरइया हे प्रभु! नरकप्रवेशन न्हाल।
रत्नप्रभा में स्यूं हुवै, जाव तमतमा भाल?
२. जिन भाखै सुण गंगेया! चिउं रत्न में जाय।
अथवा च्यारूं सक्कर में, तथा वालु चिउं पाय॥
३. अथवा च्यारूं पंक में, तथा धूम चिउं धार।
तथा तमा चिउं ऊपजै, तथा तमतमा च्यार॥
४. च्यार जीव नां भंग इम, इक संजोगिक सात।
विकल्प तेहनों एक है, कह्यो पूर्व अवदात॥

१. चत्तारि भंते! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा?—पुच्छा।

२,३. गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

४. प्रथिवीनामेकत्वे सप्त विकल्पाः (वृ०प० ४४२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च्यार जीव नां इकसंजोगिया भांगा ७ कह्या ।							
	र	स	वा	पं	धू	त	तम
१	४	०	०	०	०	०	०
२	०	४	०	०	०	०	०
३	०	०	४	०	०	०	०
४	०	०	०	४	०	०	०
५	०	०	०	०	४	०	०
६	०	०	०	०	०	४	०
७	०	०	०	०	०	०	४

५. च्यार जीव नां हिव कहूं, द्विकसंजोगिक न्हाल।
त्रिहुं विकल्प करिनें तसु, भंगा त्रेसठ भाल ।।

हिवै च्यार जीव नां द्विकसंजोगिक नां विकल्प तीन, भांगा ६३ कहै छ—रत्न थी १८, सक्कर थी १५, वालु थी १२, पंक थी ९, धूम थी ६, तम थी ३ भांगा, त्रिहुं विकल्प करि इम ६३ भांगा हुवै ।

प्रथम रत्नप्रभा थी एक विकल्प नां षट भांगा हुवै । ते तीन विकल्प करि १८ भांगा कहै छै—

द्विकसंयोगे तु तासामेकस्त्रय इत्यनेन नारकोत्पादविकल्पेन रत्नप्रभया सह शेषाभिः क्रमेण चारिताभिर्लब्धाः षट्, द्वौ द्वावित्यनेनापि षट्, त्रय एक इत्यनेनापि षडेव, तदेवमेतेऽष्टादश, शर्कराप्रभया तु तथैव त्रिषु पूर्वोक्तनारकोत्पादविकल्पेषु पञ्च पञ्चेति पञ्चदश, एवं वालुकाप्रभया चत्वारश्चत्वार इति द्वादश, पंकप्रभया त्रयस्त्रय इति नव, धूमप्रभया द्वौ द्वाविति षट्, तमःप्रभयैकैक इति त्रयः, तदेवमेते द्विकसंयोगे त्रिषष्टिः । (वृ०प० ४४२)

*सुगुण सुखदाई रे,
सुगुण सुखदाई रे, गंगेय तणां ए प्रश्न प्रवर वरदाई रे । [ध्रुपदं]

६. तथा जीव इक रत्न प्रभा में, त्रिण सक्कर रै मांही रे ।
अथवा एक रत्न में उपजै, तीन वालुका पाई रे ।

६. अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए होज्जा ।
अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा

७. अथवा एकज रत्नप्रभा में, तीन पंक रै मांही ।
तथा जीव इक रत्नप्रभा में, तीन धूम दुखदाई ।।
८. अथवा एकज रत्नप्रभा में, तीन तमा कहिवाई ।
तथा जीव इक रत्नप्रभा में, तीन तमतमा मांही ।।

७,८. एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा ।

९. धुर विकल्प करि रत्नप्रभा थी, ए षट भंगा कहियै ।
दूजा विकल्प करि षट भंगा, हिव आगल इम लहियै ।।
१०. तथा जीव बे रत्नप्रभा में, दोय सक्कर रै मांही ।
अथवा दोय रत्न रै मांहे, दोय वालुका पाई ।।
११. अथवा दोय रत्न रै मांहे, दोय पंक दुखदाई ।
तथा जीव बे रत्नप्रभा में, दोय धूम कहिवाई ।।
१२. अथवा दोय रत्न रै मांहे, दोय तमा रै मांही ।
अथवा दोय रत्न रै मांहे, दोय तमतमा पाई ।।

१०-१२. अहवा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा ।

*लय : गुणी गुण गावो रे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. अथवा तीन रत्न रै मांहे, एक सक्कर में थाई।
तथा जीव त्रिण रत्नप्रभा में, एक वालुका मांही ।।
१४. अथवा तीन रत्न रै मांहे, एक पंक कहिवाई।
तथा जीव त्रिण रत्नप्रभा में, एक धूम दुखदाई।।
१५. अथवा तीन रत्न रै मांहे, एक तमा पिण पाई।
तथा जीव त्रिण रत्नप्रभा में, एक तमतमा मांही ।।
१६. रत्नप्रभा थी त्रिहुं विकल्प करि, भंग अठारै थाई।
सकर पंच भंग त्रिहुं विकल्प करि, भंग पनर कहिवाई ।।
१७. अथवा एक सक्कर रै मांहे, तीन वालुका मांही।
तथा जीव इक सक्कर मांहे, तीन पंक कहिवाई ।।
१८. इम जिम रत्न संघात ऊपरली पृथ्वी जे कहिवाई।
सक्कर थकी पिण तिम ऊपरली पृथ्वी साथे थाई ।।
१९. सक्कर थी पंच त्रिहुं विकल्प करि, पनरै भांगा पाई।
वालुय थी त्रिहुं त्रिहुं विकल्प करि, द्वादश भांगा थाई।
२०. तीन पंक थी त्रिहुं विकल्प करि, नव भांगा उच्चराई।
धूम थकी बे त्रिहुं विकल्प करि, षट भांगा जिन न्याई ।।
२१. एक तमा थी त्रिहुं विकल्प करि, भांगा तीन दिखाई।
इम ए द्विकसंजोगिक तेसठ, भणवा बुद्धि वरदाई ।।
२२. जावत अथवा तीन तमा में, एक सातमीं पाई।
ए तेसठमों भांगो श्री जिन कह्यो पाठ रै मांही ।।

च्यार जीव नां द्विकसंजोगिया ६३ भांगा कहै छै

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
१	१	१	३	०	०	०	०	०
२	२	१	०	३	०	०	०	०
३	३	१	०	०	३	०	०	०
४	४	१	०	०	०	३	०	०
५	५	१	०	०	०	०	३	०
६	६	१	०	०	०	०	०	३

ए रत्न थी ६ भांगा प्रथम विकल्प करि कह्या।

१३-१५. अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

१७-२२ अहवा एगे सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जहेव रयणप्पभाए उवरिमाहिं समं चारियं तहा सक्करप्पभाए वि उवरिमाहिं समं चारेयव्वं, एवं एक्केक्काए समं चारेयव्वं जाव अहवा तिण्णि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवैं दूजै विकल्प करि ६ भांगा कहै छैं—

७	१	२	२	०	०	०	०	०
८	२	२	०	२	०	०	०	०
९	३	२	०	०	२	०	०	०
१०	४	२	०	०	०	२	०	०
११	५	२	०	०	०	०	२	०
१२	६	२	०	०	०	०	०	२

हिवैं तीजे विकल्पे रत्न थी ६ भांगा कहै छैं—

१३	१	३	१	०	०	०	०	०
१४	२	३	०	१	०	०	०	०
१५	३	३	०	०	१	०	०	०
१६	४	३	०	०	०	१	०	०
१७	५	३	०	०	०	०	१	०
१८	६	३	०	०	०	०	०	१

एवं रत्न थी तीन विकल्पे १८ भांगा कह्या।

५ भांगा प्रथम विकल्पे	१. १ सक्कर ३ वालुय २. १ सक्कर ३ पंक ३. १ सक्कर ३ धूम ४. १ सक्कर ३ तम ५. १ सक्कर ३ तमतमा
५ भांगा द्वितीय विकल्पे	१. २ सक्कर २ वालु २. २ सक्कर २ पंक ३. २ सक्कर २ धूम ४. २ सक्कर २ तम ५. २ सक्कर २ तमतमा
५ भांगा तृतीय विकल्पे	१. ३ सक्कर १ वालु २. ३ सक्कर १ पंक ३. ३ सक्कर १ धूम ४. ३ सक्कर १ तम ५. ३ सक्कर १ तमतमा।
	एवं सक्कर थी ३ विकल्पे १५ भांगा कह्या।

४ भांगा प्रथम विकल्पे	१. १ वालु ३ पंक २. १ वालु ३ धूम ३. १ वालु ३ तम ४. १ वालु ३ तमतमा
४ भांगा दूजै विकल्पे	१. २ वालु २ पंक २. २ वालु २ धूम ३. २ वालु २ तम ४. २ वालु २ तमतमा
४ भांगा तीजैं विकल्पे	१. ३ वालु १ पंक २. ३ वालु १ धूम ३. ३ वालु १ तम ४. ३ वालु १ तमतमा
	एवं वालु थी ३ विकल्पे १२ भांगा कह्या।
३ भांगा प्रथम विकल्पे	१. १ पंक ३ धूम २. १ पंक ३ तम ३. १ पंक ३ तमतमा
३ भांगा दूजै विकल्पे	१. २ पंक २ धूम २. २ पंक २ तम ३. २ पंक २ तमतमा।
३ भांगा तीजैं विकल्पे	१. ३ पंक १ धूम २. ३ पंक १ तम ३. ३ पंक १ तमतमा।
	एवं पंक थी ३ विकल्पे ९ भांगा कह्या।
२ भांगा प्रथम विकल्पे	१. १ धूम ३ तम २. १ धूम ३ तमतमा।
२ भांगा द्वितीय विकल्पे	१. २ धूम २ तम २. २ धूम २ तमतमा।
२ भांगा तीजैं विकल्पे	१. ३ धूम १ तम २. ३ धूम १ तमतमा।
	एवं धूम थी ३ विकल्पे ६ भांगा कह्या।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१ भांगो प्रथम विकल्पे	१. १ तम ३ तमतमा
१ भांगो दूजै विकल्पे	१. २ तम २ तमतमा
१ भांगो तीजै विकल्पे	१. ३ तम १ तमतमा
	एवं तम थी ३ विकल्पे ३ भांगा।
	एवं ४ जीव नां द्विकसंजोगिया विकल्प ३, भांगा त्रेसठ।

वा०—हिवै च्यार जीवां रा तीनसंजोगिया भांगा कहै छै—तेहनां विकल्प तीन। तीनसंजोगिया मूल भांगा ३५ तीन विकल्प माटै, त्रिगुणां कीधां १०५ भांगा हुवै। एक विकल्प करि रत्नप्रभा थी १५ हुवै, तीन विकल्प माटै त्रिगुणा कीधां ४५ हुवै। रत्नप्रभा थी १५ इम करवा। रत्न सक्कर थी ५, तीन विकल्प माटै त्रिगुणा कीधां १५ हुवै, रत्न वालु थी ४, तीन विकल्प माटै त्रिगुणा कीधां १२ भांगा हुवै, रत्न पंक थी ३, तीन विकल्प माटै त्रिगुणा कीधां ६ हुवै। रत्न धूम थी २, तीन विकल्प माटै त्रिगुणा कीधां ६ भांगा हुवै, रत्न तम थी १ भांगो, तीन विकल्प माटै त्रिगुणा कीधां तीन भांगा हुवै। एवं रत्न थी सर्व भांगा ४५ हुवै, तिणमें प्रथम रत्न सक्कर थी पांच भांगा, तेहनां तीन विकल्प करि १५ भांगा हुवै ते कहै छै—

वा०—तथा पृथिवीनां त्रिकयोगे एक एको द्वौ चेत्येवं नारकोत्पादविकल्पे रत्नप्रभाशर्कराप्रभाभ्यां सहान्याभिः क्रमेण चारिताभिर्लब्धाः पञ्च, एको द्वावेकश्चेत्येवं नारकोत्पादविकल्पान्तरेऽपि पञ्च, द्वावेक एकश्चेत्येवमपि नारकोत्पादविकल्पान्तरे पञ्चैवेति पञ्चदश, एवं रत्नप्रभावालुकाप्रभाभ्यां सहोत्तराभिः क्रमेण चारिताभिर्लब्धा द्वादश, एवं रत्नप्रभापंकप्रभाभ्यां नव, रत्नप्रभाधूमप्रभाभ्यां षट्, रत्नप्रभातमःप्रभाभ्यां त्रयः। (वृ०प० ४४२)

२३. अथवा एक रत्न इक सक्कर, दोय वालुका मांही।
अथवा एक रत्न इक सक्कर, दोय पंक तिण पाई।।

२३. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो पंकप्पभाए होज्जा।

२४. अथवा एक रत्न इक सक्कर, दोय धूम कहिवाई।
अथवा एक रत्न इक सक्कर, दोय तमा रै मांही।।

२५. अथवा एक रत्न इक सक्कर, दोय तमतमा थाई।
रत्न सक्कर थी धुर विकल्प करि, ए पंच भंग कहाई।।

२४,२५ एवं जाव एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।

हिवै रत्न सक्कर थी पांच भांगा दूजे विकल्पे कहै छै—

२६. अथवा एक रत्न दोय सक्कर, एक वालुका मांही।
अथवा एक रत्न दोय सक्कर, एक पंक तिण पाई।।

२७. अथवा एक रत्न दोय सक्कर, एक धूम कहिवाई।
अथवा एक रत्न दोय सक्कर, एक तमा रै मांही।।

२८. अथवा एक रत्न दोय सक्कर, एक तमतमा मांही।
रत्न सक्कर थी ए पंच भंगा, द्वितीय विकल्पे थाई।।

२६-२८. अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

हिवै रत्न सक्कर थी पांच भांगा तृतीय विकल्पे कहै छै—

२९. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक वालुका मांही।
अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक पंक तिण पाई।।

२९-३१. अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३०. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक धूम कहिवाई।
अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक तमा दुखदाई।।
३१. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक तमतमा मांही।
रत्न सक्कर थी तृतीय विकल्प, ए पंच भंगा थाई।।

हिवै रत्न वालुका थी च्यार भांगा हुवै, ते तीन विकल्प करिकै १२ भांगा हुवै। ते प्रथम विकल्प करि च्यार भांगा कहै छै —

३२. अथवा एक रत्न इक वालुय, दोय पंक तिण पाई।
अथवा एक रत्न इक वालुय, दोय धूम रै मांही।।
३३. अथवा एक रत्न इक वालुय, दोय तमा दुखदाई।
अथवा एक रत्न इक वालुय, दोय तमतमा मांही।।

हिवै रत्न वालुका थी दूजै विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—

३४. अथवा एक रत्न दो वालुय, एक पंक तिण पाई।
अथवा एक रत्न दो वालुय, एक धूम रै मांही।।
३५. अथवा एक रत्न दो वालुय, एक तमा दुखदाई।
अथवा एक रत्न दो वालुय, एक तमतमा मांही।।

हिवै रत्न वालुय थी तीजै विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—

३६. अथवा दोय रत्न इक वालुय, एक पंक तिण पाई।
अथवा दोय रत्न इक वालुय, एक धूम रै मांही।।
३७. अथवा दोय रत्न इक वालुय, एक तमा दुखदाई।
अथवा दोय रत्न इक वालुय, एक तमतमा मांही।।

हिवै रत्न पंक थी तीन भांगा हुवै, ते तीन विकल्प करि ९ भांगा कहै छै—

३८. अथवा एक रत्न इक पंके, दोय धूम दुखदाई।
अथवा एक रत्न इक पंके, दोय तमा उपजाई।।
३९. अथवा एक रत्न इक पंके, दोय तमतमा मांही।
रत्न पंक थी धुर विकल्प करि, ए त्रिण भंगा थाई।।
४०. अथवा एक रत्न दो पंके, एक धूमका मांही।
अथवा एक रत्न दो पंके, एक तमा उपजाई।।
४१. अथवा एक रत्न दो पंके, एक तमतमा मांही।
रत्न पंक थी द्वितीय विकल्प, ए त्रिण भंगा थाई।।
४२. अथवा दोय रत्न इक पंके, एक धूमका मांही।
अथवा दोय रत्न इक पंके, एक तमा उपजाई।
४३. अथवा दोय रत्न इक पंके, एक तमतमा मांही।
रत्न पंक थी तृतीय विकल्प, ए त्रिण भंगा थाई।।

हिवै रत्न धूम थी बे भांगा हुवै, ते तीन विकल्प करिकै ६ भांगा कहै छै। तिहां रत्न धूम थी प्रथम विकल्प करिकै बे भांगा हुवै ते प्रथम कहै छै—

४४. अथवा एक रत्न इक धूमा, दोय तमा उपजाई।
अथवा एक रत्न इक धूमा, दोय तमतमा मांही।।

हिवै रत्न धूम थी दूजा विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

४५. अथवा एक रत्न बे धूमा, एक तमा तिण पाई।
अथवा एक रत्न बे धूमा, एक तमतमा मांही।।

एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

३२,३३. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो पंकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।

३४-५९. एवं एएणं गमएणं जहा तिण्हं तियासंजोगो तहा भाणियव्वो जाव अहवा दो धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवैं रत्न धूम थी तीजैं विकल्प करि बे भांगा कहै छैं—

४६. अथवा दोय रत्न इक धूमा, एक तमा तिण पाई।
अथवा दोय रत्न इक धूमा, एक तमतमा मांही ।।

हिवैं रत्न तमा थी एक भांगो हुवैं ते तीन विकल्प करि तीन भांगा कहै छैं—

४७. अथवा एक रत्न इक तमा, दोय तमतमा मांही।
रत्न तमा थी धुर विकल्प करि, इम इक भंगो थाई ।।
४८ अथवा एक रत्न दो तमा, एक तमतमा मांही।
रत्न तमा थी इम इक भंगो, द्वितीय विकल्प थाई।
४९. अथवा दोय रत्न इक तमा, एक तमतमा मांही।
रत्न तमा थी इम इक भंगो, तृतीय विकल्प थाई ।।
५०. रत्न सक्कर थी पंच कह्या भंग, रत्न वालु थी च्यारो।
रत्न पंक थी त्रिण भंग आख्या, वारू करि विस्तारो ।।
५१. रत्न धूम थी बे भंग आख्या, रत्न तमा थी एको।
रत्न थकी इक-इक विकल्प नां, पनर-पनर भंग पेखो ।।
५२. च्यार जीव नां त्रिकसंयोगिक, विकल्प तेहनां तीनो।
त्रिगुणा कीधे भंग रत्न थी, पैंतालीस प्रवीनो ।।

इम सक्कर थी इक-इक विकल्प नां दश-दश भांगा हुवै, तेहनीं आमना कहै छैं—

५३. इम सक्कर थी दश भांगा ह्वै, सक्कर वालु थी च्यारो।
सक्कर पंक थी तीन हुवै भंग, सक्कर धूम बे सारो ।।
५४. सक्कर तमा थी इक भांगो ह्वै, सक्कर थकी दश एहो।
इक-इक विकल्प नां ए करिवा, दश-दश भांगा तेहो ।।
५५. च्यार जीव नां त्रिक संजोगिक, त्रिण विकल्प रै न्यायो।
त्रिगुणा कीधां सक्कर थी ए भांगा तीस कहायो ।।

हिवैं वालुका थी इक-इक विकल्प नां षट-षट भांगा हुवैं, तेहनीं आमना कहै छैं—

५६. हिवै वालुका थी षट भंगा, वालु पंक थी तीनो।
वालु धूम थकी बे भंगा, वालु तमा इक चीनो ।।
५७. इक-इक विकल्प नां ए षट-षट, वालू थकी विचारो।
त्रिण विकल्प करि त्रिगुणा कीधां, भांगा हुवै अठारो।

हिवै पंक थी इक-इक विकल्प करि तीन-तीन भांगा हुवैं, तेहनीं आमना कहै छैं—

५८. पंक धूम थी बे भांगा ह्वै, पंक तमा थी एको।
इक-इक विकल्पे त्रिण-त्रिण भांगा, पंक थकी नव पेखो ।।

हिवै धूम थी एक-एक विकल्प करि एक-एक भांगी हुवै तेहनीं आमना कहै छैं—

५९. धूम तमा तमतमा भंग इक, त्रिण विकल्प करि चंगा।
इक-इक भांगो एहनो ह्वै छै, धूम थकी त्रिण भंगा ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६०. रत्नप्रभा थी भंग पैंताली, सक्करप्रभा थी तीसो।
वालु अठारै पंक थकी त्रिण, धूम थकी इक दीसो।।
६१. च्यार जीव नां त्रिकसंजोगिक, त्रिहुं विकल्प करि तेहो।
हुवै एक सौ नैं पंच भंगा, विधि सेती गिण लेहो।।

६०,६१. चतुष्प्रवेशे त्रिकयोगे—
४५ रत्नप्रभा
३० शर्कराप्रभा
१८ वालुकाप्रभा
९ पंकप्रभा[1]
३ धूमप्रभा[2] (वृ० प० ४४२)

च्यार जीव रा त्रिक संजोगिया नां विकल्प तीन, भांगा १०५। रत्न थी ४५। ते रत्न सक्कर थी १५ भांगा ते प्रथम विकल्प करि रत्न सक्कर थी ५ भांगा कहै छ —

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
१	१	१	१	२	०	०	०	०
२	२	१	१	०	२	०	०	०
३	३	१	१	०	०	२	०	०
४	४	१	१	०	०	०	२	०
५	५	१	१	०	०	०	०	२
हिवै दूजै विकल्पे रत्न सक्कर थी ५ भांगा कहै छै—								
६	१	१	२	१	०	०	०	०
७	२	१	२	०	१	०	०	०
८	३	१	२	०	०	१	०	०
९	४	१	२	०	०	०	१	०
१०	५	१	२	०	०	०	०	१
हिवै तीजे विकल्प करि रत्न सक्कर थी ५ भांगा कहै छै—								
११	१	२	१	१	०	०	०	०
१२	२	२	१	०	१	०	०	०
१३	३	२	१	०	०	१	०	०
१४	४	२	१	०	०	०	१	०
१५	५	२	१	०	०	०	०	१

१,२. जोड़ की गाथा ६० में पंकप्रभा से तीन भंगों का उल्लेख है और धूमप्रभा से एक भंग का। इस गणना से चार जीवों के त्रिक संयोगिक १०५ भंगों की संगति नहीं बैठती। पर इससे आगे ६१वीं गाथा में 'त्रिहुं विकल्प करि तेहो' लिखा गया है। यह संकेत उक्त दोनों—पंकप्रभा और धूमप्रभा के लिए दिया गया है। इसके अनुसार पंकप्रभा से एक-एक विकल्प के तीन-तीन भंग करने से तीन विकल्प से नौ भंग हो जाते हैं। इसी प्रकार धूमप्रभा से एक विकल्प का एक भंग करने से तीन विकल्प के तीन भंग हो जाते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ए तीन विकल्प करि रत्न सक्कर थी १५ भांगा कह्या। हिवै रत्न वालु थी ४ भांगा प्रथम विकल्पे कहै छै -

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
१६	१	१	०	१	२	०	०	०
१७	२	१	०	१	०	२	०	०
१८	३	१	०	१	०	०	२	०
१९	४	१	०	१	०	०	०	२

हिवै रत्न बालु थी ४ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै

२०	१	१	०	२	१	०	०	०
२१	२	१	०	२	०	१	०	०
२२	३	१	०	२	०	०	१	०
२३	४	१	०	२	०	०	०	१

हिवै रत्न वालु था तीजे विकल्पे ४भांगा कहै छै -

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
२४	१	२	०	१	१	०	०	०
२५	२	२	०	१	०	१	०	०
२६	३	२	०	१	०	०	१	०
२७	४	२	०	१	०	०	०	१

ए रत्न वालु थी १२ भांगा कह्या।

हिवै रत्न पंक थी ३ भांगा प्रथम विकल्पे कहै छै -

२८	१	१	०	०	१	२	०	०
२९	२	१	०	०	१	०	२	०
३०	३	१	०	०	१	०	०	२

हिवै रत्न पंक थी ३ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै -

३१	१	१	०	०	२	१	०	०
३२	२	१	०	०	२	०	१	०
३३	३	१	०	०	२	०	०	१

हिवै रत्न पंक थी ३ भांगा तीजे विकल्प करि कहै छै—

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
३४	१	२	०	०	१	१	०	०
३५	२	२	०	०	१	०	१	०
३६	३	२	०	०	१	०	०	१

ए रत्न पंक थी ९ भांगा कह्या

हिवै रत्न धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै —

३७	१	१	०	०	०	१	२	०
३८	२	१	०	०	०	१	०	२

हिवै रत्न धूम थी २ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै —

		र	स	वा	पं	धू	तम	त
३९	१	१	०	०	०	२	१	०
४०	२	१	०	०	०	२	०	१

हिवै रत्न धूम थी २ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै —

४१	१	२	०	०	०	१	१	०
४२	२	२	०	०	०	१	०	१

ए रत्न धूम थी ६ भांगा कह्या।

हिवै रत्न तम थी एक भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै --

४३	१	१	०	०	०	०	१	२

हिवै रत्न तम थी एक भांगो दूजै विकल्प करि कहै छै—

४४	१	१	०	०	०	०	२	१

हिवै रत्न तम थी एक भांगो तीजे बिकल्प करि कहै छै—

४५	१	२	०	०	०	०	१	१

ए रत्न तम थी तीन भांगा कह्या

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै सक्कर प्रभा थी ३० भांगा तीनूं विकल्प नां हुवै, ते कहै छै—

सक्कर वालु थी १२ ते प्रथम विकल्प करि सक्कर वालु थी ४ भांगा कहै छै—

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
४६	१	०	१	१	२	०	०	०
४७	२	०	१	१	०	२	०	०
४८	३	०	१	१	०	०	२	०
४९	४	०	१	१	०	०	०	२

हिवै सक्कर वालु थी ४ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै—

५०	१	०	१	२	१	०	०	०
५१	२	०	१	२	०	१	०	०
५२	३	०	१	२	०	०	१	०
५३	४	०	१	२	०	०	०	१

हिवै सक्कर वालु थी ४ भांगा तीजे विकल्प करि कहै छै—

५४	१	०	२	१	१	०	०	०
५५	२	०	२	१	०	१	०	०
५६	३	०	२	१	०	०	१	०
५७	४	०	२	१	०	०	०	१

ए तीन विकल्प करि सक्कर वालु थी १२ भांगा कह्या,
हिवै सक्कर पंक थी ३ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

५८	१	०	१	०	१	२	०	०
५९	२	०	१	०	१	०	२	०
६०	३	०	१	०	१	०	०	२

हिवै सक्कर पंक थी ३ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै—

६१	१	०	१	०	२	१	०	०
६२	२	०	१	०	२	०	१	०
६३	३	०	१	०	२	०	०	१

हिवै सक्कर पंक थी ३ भांगा ताजै विकल्प करि कहै छै—

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
६४	१	०	२	०	१	१	०	०
६५	२	०	२	०	१	०	१	०
६६	३	०	२	०	१	०	०	१

ए सक्कर पंक थी ९ भांगा कह्या।

हिवै सक्कर धूम थी दो भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

६७	१	०	१	०	०	१	२	०
६८	२	०	१	०	०	१	०	२

हिवै सक्कर धूम थी दो भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै—

६९	१	०	१	०	०	२	१	०
७०	२	०	१	०	०	२	०	१

हिवै सक्कर धूम थी दो भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै—

७१	१	०	२	०	०	१	१	०
७२	२	०	२	०	०	१	०	१

ए सक्कर धूम थी छह भांगा कह्या।

हिवै सक्कर तम थी एक भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—

७३	१	०	१	०	०	०	१	२

हिवै सक्कर तम थी एक भांगो दूजै विकल्प करि कहै छै—

७४	१	०	१	०	०	०	२	१

हिवै सक्कर तम थी एक भांगो तीजे विकल्प करि कहै छै—

७५	१	०	२	०	०	०	१	१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८ भांगा तीनूं विकल्प नां हुवै ते कहै छै—

हिवै वालु पंक थी तीन भांगा, ते प्रथम विकल्प करि कहै छै—

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
७६	१	०	०	१	१	२	०	०
७७	२	०	०	१	१	०	२	०
७८	३	०	०	१	१	०	०	२

हिवै वालु पंक थी तीन भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै —

७९	१	०	०	१	२	१	०	०
८०	२	०	०	१	२	०	१	०
८१	३	०	०	१	२	०	०	१

हिवै वालु पंक थी ३ भांगा तीजै विकल्पे कहै छै —

८२	१	०	०	२	१	१	०	०
८३	२	०	०	२	१	०	१	०
८४	३	०	०	२	१	०	०	१

हिवै वालु धूम थी २ भांगा ते प्रथम विकल्प करि कहै छै—

८५	१	०	०	१	०	१	२	०
८६	२	०	०	१	०	१	०	२

हिवै वालु धूम थी दोय भांगा ते दूजै विकल्प करि कहै छै—

८७	१	०	०	१	०	२	१	०
८८	२	०	०	१	०	२	०	१

हिवै वालु धूम थी दोय भांगा तीजे विकल्प करि कहै छै —

८९	१	०	०	२	०	१	१	०
९०	२	०	०	२	०	१	०	१

हिवै वालु तम थी एक भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै —

९१	१	०	०	१	०	०	१	२

हिवै वालु तम थी एक भांगो दूजै विकल्प करि कहै छै —

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
९२	१	०	०	१	०	०	२	१

हिवै वालु तम थी एक भांगो तीजै विकल्प करि कहै छै —

९३	१	०	०	२	०	०	१	१

ए वालु तम थी ३ भांगा कह्या। एवं वालु पंक थी ९, वालु धूम थी ६, वालु तम थी ३, एवं सर्व वालु थी १८ भांगा कह्या। हिवै पंकप्रभा थी ९ भांगा तीनूं विकल्प नां हुवै ते कहै छे —

हिवै पंक धूम थी दोय भांगा ते प्रथम विकल्प करि कहै छै —

९४	१	०	०	०	१	१	२	०
९५	२	०	०	०	१	१	०	२

हिवै पंक धूम थी दोय भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै —

९६	१	०	०	०	१	२	१	०
९७	२	०	०	०	१	२	०	१

हिवै पंक धूम थी दोय भांगा तीजे विकल्प करि कहै छै —

९८	१	०	०	०	२	१	१	०
९९	२	०	०	०	२	१	०	१

हिवै पंक तमा थी एक भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै —

१००	१	०	०	०	१	०	१	२

हिवै पंक तमा थी एक भांगो दूजै विकल्प करि कहै छै —

१०१	१	०	०	०	१	०	२	१

हिवै पंक तमा थी १ भांगो तीजे विकल्प करि कहै छै —

१०२	१	०	०	०	२	०	१	१

ए पंक तमा थी ३ भांगा कह्या। एवं पंक धूम थी ६, पंक तम थी ३, एवं सर्व पंक थकी ९ भांगा कह्या। हिवै धूमप्रभा थी एक भांगो हुवै, ते त्रिण विकल्प करि तीन भांगा कहै छै—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै धूम तम थी एक भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै —								
		र	स	वा	पं	धू	त	तम
१०३	१	०	०	०	०	१	१	२
हिवै धूम तम थी एक भांगो दूजे विकल्प करि कहै छै								
१०४	१	०	०	०	०	१	२	१
हिवै धूम तम थी एक भांगो तीजै विकल्प करि कहै छै								
१०५	१	०	०	०	०	२	१	१

ए धूम तम थी त्रिण विकल्प करि तीन भांगा कह्या। एवं रत्न थी ४५, सक्कर थी ३०, वालु थी १८, पंक थी ९, धूम थी ३ एवं सर्व १०५ च्यार जीवां रा त्रिकसंजोगिया भांगा हुवै।

वा०—हिवै च्यार जीव नां चउक्कसंजोगिया तेहनों विकल्प एक, भांगा ३५ हुवै, ते कहै छै—रत्न थकी २०, सक्कर थकी १०, वालु थकी ४, पंक थकी १—एवं ३५ भांगा। हिवै रत्न थकी २० भांगा हुवै, तिणरो विवरो—रत्न सक्कर थकी १०, रत्न वालु थकी ६, रत्न पंक थकी ३, रत्न धूम थकी १—एवं रत्न थकी २० भांगा। तिण में रत्न सक्कर थकी १० हुवै, तिणरो विवरो–रत्न सक्कर वालु थकी ४, रत्न सक्कर पंक थकी ३, रत्न सक्कर धूम थकी २, रत्न सक्कर तम थकी १—एवं १० रत्न सक्कर थकी हुवै। अनै रत्न वालु थकी ६ भांगा हुवै, तिणरो विवरो –रत्न वालु पंक थकी ३, रत्न वालु धूम थकी २, रत्न वालु तम थकी १ - एवं रत्न वालु थकी ६ भांगा हुवै। हिवै रत्न पंक थकी ३ भांगा हुवै, तिणरो विवरो—रत्न धूम थकी २, रत्न तम थकी १-एवं रत्न पंक थकी ३ भांगा हुवै। हिवै रत्न धूम थकी १ भांगो हुवै इम रत्न थकी २० भांगा थाय। तिण में रत्न सक्कर थकी १० हुवै, तिणरो विवरो कहै छै—रत्न सक्कर थकी १० भांगा, ते किसा? रत्न सक्कर वालु थकी च्यार भांगा हुवै, ते गाथा करी प्रथम कहै छै—

वा०—चतुष्कसंयोगे तु पञ्चत्रिंशदिति। (वृ०प० ४४२)

वदै जिनवानी रे,

[वदै जिनवानी रे, गंगेय तणां ए प्रश्न परम पहिछानी रे।
वदै जिनवानी रे, जिन उत्तर आपै सरस सुधारस जानी रे॥]

६२. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक बालुका जानी।
इक जीव पंकप्रभा में उपजै, भांगो प्रथम पिछानी॥

६३. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालुका ठानी।
इक जीव धूमप्रभा में उपजै, द्वितीय भंग इम आनी॥

६४. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालुका मानी।
एक तमा रै मांही उपजै, तृतीय भंग विधानी॥

६५. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालुका कानी।
एक तमतमा मांही उपजै, तूर्य भंग आख्यानी॥

हिवै रत्न सक्कर पंक थी तीन भांगा कहै छै—

६२. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा,

६३. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा,

६४. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए होज्जा।

६५. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६६. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक पंक पहिछानी।
इक जीव धूमप्रभा में उपजै, पंचम भंग प्रमानी॥

६६. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा,

६७. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक पंक प्राप्तानी।
एक तमा रै मांही उपजै, षष्टम भंग वखानी॥

६७. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा,

६८. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक पंक अघखानी।
एक तमतमा मांही उपजै, भंग सप्तमो जानी॥

६८. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,

हिवै रत्न सक्कर धूम थी दो भांगा कहै छै --

६९. अथवा एक रत्न इक सक्कर, इक जीव धूमप्रभा नो।
एक तमा रै मांही उपजै, अष्टम भंग आख्यानी॥

६९. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा,

७०. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक धूम कहिवानी।
एक तमतमा मांही उपजै, नवमों भंग विधानी॥

७०. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,

हिवै रत्न सक्कर तम थी १ भांगो कहै छै --

७१. अथवा एक रत्न इक सक्कर, इक जीव तमा मवानी।
एक तमतमा मांही उपजै, दशम भंग दाख्यानी॥

७१. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,

ए रत्न सक्कर थी १० भांगा कह्या।
हिवै रत्न वालु थी छह भांगा, ते रत्न वालु पंक थी तीन भांगा प्रथम कहै छै --

७२. अथवा एक रत्न इक वालु, एक पंक में जानी।
इक जीव धूमप्रभा में उपजै, ग्यारम भंग पिछानी॥

७२. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा,

७३. अथवा एक रत्न इक वालु, एक पंक दुखदानी।
एक तमा छट्ठी में उपजै, द्वादशमों भंग ठानी॥

७३. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा,

७४. अथवा एक रत्न इक वालु, एक पंक में जानी।
एक जीव तमतमा उपजै, भंग तेरमों ठानी॥

७४. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,

हिवै रत्न वालु धूम थी दोय भांगा कहै छै --

७५. अथवा एक रत्न इक वालु, इक जीव धूमप्रभा नीं।
एक तमा छट्ठी में उपजै, भंग चवदमों जानी॥

७५. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा,

७६. अथवा एक रत्न इक वालु, एक धूम में जानी।
एक तमतमा मांही उपजै, भंग पनरमों आनी॥

७६. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,

हिवै रत्न वालु तमा थकी एक भांगो कहै छै--

७७. अथवा एक रत्न इक वालु, एक तमा दुखखानी।
एक तमतमा मांही उपजै, भंग सोलमों जानी॥

७७. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,

हिवै रत्न पंक थी तीन भांगा, ते पहिलां रत्न पंक धूम थी दोय भांगा कहै छै --

७८. अथवा एक रत्न इक पंके, एक धूम अघखानी।
एक तमा रै मांही उपजै, भंग सतरमों जानी॥

७८. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा,

७९. अथवा एक रत्न इक पंके, एक धूम अघखानी।
एक तमतमा मांही उपजै, भंग अठारम आनी॥

७९. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,

हिवै रत्न पंक तम थी एक भांगो कहै छै--

८०. अथवा एक रत्न इक पंके, एक तमा उपजानी।
एक तमतमा मांही उपजै, भंग गुनीसम जानी॥

८०. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै रत्न धूम थी एक भांगो कहै छै—

८१. अथवा एक रत्न इक धूमा, एक तमा अघखानी।
एक सातमी मांही उपजै, भंग वीसमो जानी।।

एवं रत्न थी २० भांगा कह्या। हिवै सक्कर थी १० भांगा, तिणरो विवरो—सक्कर वालु थकी ६, सक्कर पंक थकी ३, सक्कर धूम थकी १,— एवं १० भांगा सक्कर थी हुवै। तिणमें सक्कर वालु थकी ६ तिणरो विवरो—सक्कर वालु पंक थकी ३, सक्कर वालु धूम थकी २, सक्कर वालु तम थकी १—एवं ६ भांगा सक्कर वालु थकी हुवै। अनै सक्कर पंक थकी ३ भांगा हुवै, तिणरो विवरो—सक्कर पंक धूम थकी २, सक्कर पंक तम थकी १—एवं सक्कर पंक थकी ३ भांगा हुवै। अनै सक्कर धूम थकी १ भांगो हुवै। इम सक्कर थकी १० भांगा थाय। तिहां सक्कर वालु थकी ६ भांगा, ते किसा? सक्कर वालु पंक थकी ३ भांगा ते प्रथम गाथा करी कहै छै—

८२. अथवा इक सक्कर इक वालु, एक पंक में जानी।
इक जीव धूमप्रभा में उपजै, इकवीसम भंग आनी।।
८३. अथवा एक सक्कर इक वालु, एक पंक में जानी।
एक तमा रै मांहि ऊपजै, बावीसम भंग आनी।।
८४. अथवा एक सक्कर इक वालु, एक पंक में जानी।
एक तमतमा मांहि ऊपजै, तेवीसम भंग ठानी।।

हिवै सक्कर वालु धूम थकी दोय भांगा कहै छै—

८५. अथवा एक सक्कर इक वालु, एक धूम दुखखानी।
एक तमा रै मांहि ऊपजै, चउवीसम भंग जानी।।
८६. अथवा एक सक्कर इक वालु, एक धूम अघखानी।
एक तमतमा मांहि ऊपजै, पणवीसम भंग जानी।।

हिवै सक्कर वालु तम थी एक भांगो कहै छै—

८७. अथवा एक सक्कर इक वालु, एक तमा अघखानी।
एक तमतमा मांहि ऊपजै, छव्वीसम भंग जानी।।

हिवै सक्कर पंक थी तीन भांगा, तिणमें सक्कर पंक धूम थी दोय भांगा कहै छै—

८८. अथवा एक सक्कर इक पंके, एक धूम में जानी।
एक तमा रै मांहि ऊपजै, सप्तवीसमों ठानी।।
८९. अथवा एक सक्कर इक पंके, एक धूम में जानी।
एक तमतमा मांहि ऊपजै, अष्टवीसमों ठानी।।

हिवै सक्कर पंक तम थकी एक भांगो कहै छै—

९०. अथवा एक सक्कर इक पंके, एक तमा में जानी।
एक तमतमा मांहि ऊपजै, गुणतीसम भंग ठानी।।

हिवै सक्कर धूम थी एक भांगो कहै छै—

९१. अथवा एक सक्कर इक धूमा, एक तमा में जानी।
एक तमतमा मांहि ऊपजै, भंग तीसमो ठानी।।

ए सक्कर थी १० भांगा कह्या। हिवै वालु थी ४ भांगा कहै छै, तिणरो विवरो—वालु पंक थी ३, वालु धूम थी १—एवं वालु थी ४। वालु पंक थी ३

८१. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

८२. अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा।

८३-९१. एवं जहा रयणप्पभाए उवरिमाओ पुढवीओ चारियाओ तहा सक्करप्पभाए वि उवरिमाओ चारियव्वाओ जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते किसा ? वालु पंक धूम थी २, वालु पंक तम थी १ एवं वालु पंक थी ३।
तिणमें वालु पंक धूम थी २ भांगा प्रथम कहै छै—

९२. अथवा एक वालु इक पंके, एक धूमका जानी।
एक तमा रै मांहि ऊपजै, इकतीसम भंग ठानी।।

९३. अथवा एक वालु इक पंके, एक धूमका जानी।
एक तमतमा मांहि ऊपजै, बत्तीसम भंग ठानी।।

हिवै वालु पंक तम थी एक भांगो कहै छै—

९४. अथवा एक वालु इक पंके, एक तमा में जानी।
एक तमतमा मांहि ऊपजै, तेतीसम भंग ठानी।।

हिवै वालु धूम तम थी एक भांगो कहै छै—

९५. अथवा इक वालु इक धूमा, एक तमा में जानी।
एक तमतमा मांहि ऊपजै, चउतीसम भंग ठानी।।

हिवै पंक थी एक भांगो कहै छै—

९६. अथवा इक पंके इक धूमा, एक तमा में जानी।
एक तमतमा मांहि ऊपजै, पणतीसम भंग ठानी।।

एवं च्यार जीवां रा चउक्कसंजोगिया तेहनों विकल्प १, भांगा ३५। रत्न थी २०। ते बीस भांगा में रत्न न छूटै, प्रथम रत्न आवै। सक्कर थी १०। ते दश भांगा में सक्कर न छूटै, प्रथम सक्कर आवै। वालु थी ४। ते च्यार भांगा में वालु न छूटै, प्रथम वालु आवै। अनै पंक थी एक—एवं ३५ भांगा जाणवा।

च्यार जीवां रा चउक्कसंजोगिया भांगा ३५। तेहनों प्रथम विकल्प रत्न थी २०, ते किसा ?
हिवै प्रथम रत्न सक्कर वालु थकी ४ भांगा कहै छै—

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
१	१	१	१	१	१	०	०	०
२	२	१	१	१	०	१	०	०
३	३	१	१	१	०	०	१	०
४	४	१	१	१	०	०	०	१

ए रत्न सक्कर वालु थी ४ कह्या।
हिवं रत्न सक्कर पंक थी ३ भांगा कहै छै—

५	१	१	१	०	१	१	०	०
६	२	१	१	०	१	०	१	०
७	३	१	१	०	१	०	०	१

९२. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा

९३. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

९४. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

९५. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

९६. अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। (श० ९।९१)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवैं रत्न सक्कर धूम थी २ भांगा कहै छै —

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
८	१	१	१	०	०	१	१	०
९	२	१	१	०	०	१	०	१

हिवैं रत्न सक्कर तम थी १ भांगो कहै छै—

१०	१	१	१	०	०	०	१	१

ए रत्न सक्कर थी १० भांगा कह्या।
हिवै रत्न वालु थी ६ भांगा ते रत्न वालु पंक थी ३ भांगा प्रथम कहै छै—

११	१	१	०	१	१	१	०	०
१२	२	१	०	१	१	०	१	०
१३	३	१	०	१	१	०	०	१

हिवैं रत्न वालु धूम थी २ भांगा कहै छै—

१४	१	१	०	१	०	१	१	०
१५	२	१	०	१	०	१	०	१

हिवैं रत्न वालु तम थकी एक भांगो कहै छै—

१६	१	१	०	१	०	०	१	१

ए रत्न वालु थी ६ भांगा कह्या।
हिवै रत्न पंक थी ३ भांगा ते पहिला रत्न पंक धूम थी २ भांगा कहै छै —

१७	१	१	०	०	१	१	१	०
१८	२	१	०	०	१	१	०	१

हिवैं रत्न पंक तम थी १ भांगो कहै छै —

१९	१	१	०	०	१	०	१	१

हिवैं रत्न धूम थी एक भांगो कहै छै —

२०	१	१	०	०	०	१	१	१

एवं रत्न थी २० भांगा कह्या।
हिवैं सक्कर थकी १० भांगा थाय, तिहां सक्कर वालु पंक थकी ३ भांगा, ते प्रथम कहै छै —

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
२१	१	०	१	१	१	१	०	०
२२	२	०	१	१	१	०	१	०
२३	३	०	१	१	१	०	०	१

हिवैं सक्कर वालु धूम थी २ भांगा कहै छै —

२४	१	०	१	१	०	१	१	०
२५	२	०	१	१	०	१	०	१

हिवैं सक्कर वालु तम थी १ भांगो कहै छै —

२६	१	०	१	१	०	०	१	१

हिवैं सक्कर पंक थी ३ भांगा, तिणमें सक्कर पंक धूम थी दोय भांगा कहै छै —

२७	१	०	१	०	१	१	१	०
२८	२	०	१	०	१	१	०	१

हिवैं सक्कर पंक तम थी एक भांगो कहै छै —

२९	१	०	१	०	१	०	१	१

हिवैं सक्कर धूम थी १ भांगो कहै छै —

३०	१	०	१	०	०	१	१	१

ए सक्कर थी १० भांगा कह्या।
हिवैं वालु थी ४ भांगा कहै छै। तिणमें वालु पंक धूम थी २ भांगा प्रथम कहै छै —

३१	१	०	०	१	१	१	१	०
३२	२	०	०	१	१	१	०	१

ए वालु पंक धूम थी २ भांगा कह्या।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवें वालु पंक तम थी एक भांगो कहै छै —

३३	१	०	०	१	१	०	१	१

ए वालु पंक तम थी १ भांगो कह्यो। एवं वालु पंक थी ३ भांगा थया।

हिवें वालु धूम तम थी एक भांगो कहै छै —

३४	१	०	०	१	०	१	१	१

ए वालु धूम तम थी एक भांगो कह्यो। एवं वालु थी ४ भांगा थया। हिवें पंक थी १ भांगो कहै छै —

३५	१	०	०	०	१	१	१	१

ए पंक थी एक भांगो कह्यो। एवं ४ जीवां रा चउक्कसंजोगिया रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालु थी ४, पंक थी १, एवं सर्व ३५। एतलें च्यार जीव रा इकसंजोगिया ७, द्विकसंजोगिया ६३, त्रिकसंजोगिया १०५, चउक्कसंजोगिया ३५ सर्व २१० भांगा जाणवा। वलि विशेष चउक्कसंजोगिया नीं आमना कहै छै —

गीतक-छंद

९७. वीस रत्न थी सक्कर थी दश, च्यार वालू थी सही।
पंक थी इक चउक्कयोगिक, भंग ए पणतीस ही।।
९८. वीस रत्न थी तेह इहविध, सक्कर थी दश जाणियै।
वालु थी षट पंक थी त्रिण, धूम थी इक आणियै।।
९९. रत्न सक्कर थकी दश इम, बे सहित वालू थी चिहुं।
रत्न सक्कर पंक थी त्रिण, भंग भणवा इह विधउ।।
१००. रत्न सक्कर धूम थी बे, रत्न सक्कर तम थकी।
एक भांगो हुवै इम दश, रत्न सक्कर थी नकी।।
१०१. रत्न वालू थकी षट इम, रत्न वालू पंक थी।
तीन भांगा कीजियै सुध, अक्ष न्याय अवंक थी।।
१०२. रत्न वालू धूम थी बे, रत्न वालू तम हुंती।
एक भांगो हुवै इम षट, रत्न वालू नरक थी।।
१०३. रत्न पंक थी तीन भंग इम, रत्न पंक नैं धूम थी।
दोय भांगा हुवै नैं इक, रत्न पंक नैं तम हुंती।।
१०४. रत्न पंक थी तीन आख्या, हिवैं रत्न नैं धूम थी।
एक भांगो हुवै इम ए, बीस भांगा रत्न थी।।
१०५. सक्कर थी दश हुवै इहविध, षट सक्कर वालू हुंती।
पंक थी त्रिण धूम थी बे, एक तमा नरक थी।।
१०६. वालु थी भंग च्यार ते इम, वालू पंक थकी त्रिहुं।
एक वालू धूम थी ए, भंग वालू थी चिहुं।।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

१०७. वालु पंक थी तीन ते इम, वालु पंक नें धूम थी।
दोय भांगा हुवै नें इक, वालु पंक नें तम हुंती ।।
१०८. ए तीन भांगा वालु पंक थी, एक वालू धूम थी।
ए च्यार भांगा बालु थी ह्वै, न्याय अक्ष संचरण थी ।।
१०९. पंक थी इक भंग होवै, पवर ए पणतीस ही।
चउक्कसंजोगिया भांगा, कीजियै बुद्धि प्रवर थी ।।
११०. तीन नरक नों नाम लेई, भंग जो पूछीजियै।
एहथी भंग केतला तसु ? जाब इहविध दीजियै ।।
१११. नरक बाकी रहै जेती, तेता भंग कहीजियै।
एह थी भंग एतला ह्वै, एम उत्तर दीजियै ।।
११२. रत्न सक्कर वालु स्यूं मिल, त्रिहुं थी भंग केतला ?
एम पूछयां तास उत्तर, दीजियै इहविध भला ।।
११३. पंक धूम तम सातमीं ए, नरक चिहुं बाकी रही।
ते भणी जे रत्न सक्कर, वालु थी चिहुं ह्वै सही ।।
११४. रत्न सक्कर पंक थी भंग, केतला होवै सही ?
तीन भांगा एहथी ह्वै, नरक बाकी त्रिण रही ।।
११५. रत्न सक्कर धूम थी भंग, केतला होवे सही ?
दोय भांगा एहथी ह्वै, नरक बाकी बे रही ।।
११६. रत्न वालू तम थकी भंग, केतला होवै सही ?
एक भांगो एहथी ह्वै, नरक बाकी इक रही ।।
११७. सक्कर वालू पंक सेती, तीन भांगा ह्वै सही।
सक्कर वालू धूम थी बे, नरक बाकी बे रही ।।
११८. वालु पंक नें धूम सेती, भंग केता ह्वै सही ?
दोय भांगा एहथी ह्वै, नरक बाकी बे रही ।।
११९. वालु पंक नें तमा सेती, भंग केता ह्वै सही ?
एक भांगो एहथी ह्वै, नरक बाकी इक रही ।।
१२०. वालु धूम नें तमा सेती, भंग केता ह्वै सही ?
एक भांगो एहथी ह्वै, नरक बाकी इक रही ।।
१२१. पंक धूम नें तमा सेती, एक भांगो ह्वै सही।
नरक बाकी इक रही छै, पणतीसमों ए भंग ही ।।
१२२. इम नरक त्रिण तणो नाम ले, पूछियां भंग जेहथी।
नरक बाकी रहै जितरी, भंग तेता तेह थी ।।

कोई पूछै--रत्न, सक्कर, वालू सेंमिल थी कितरा भांगा हुवै ? तेहनों उत्तर—पंक, धूम, तम, तमतमा --ए ४ नरक बाकी रही, ते भणी रत्न सक्कर वालु सेंमिल थी ४ भांगा हुवै। कोई पूछै सक्कर वालु पंक थी किता भांगा हुवै ? उत्तर— एहथी तीन हुवै, धूम, तम, सातमीं—ए ३ बाकी रही ते माटै। कोई पूछै --वालू पंक धूम थी किता हुवै ? उत्तर—दो भांगा हुवै, तमा अनें सातमीं—ए बे बाकी रही ते माटै। कोई पूछै वालु पंक नें तम थी किता भांगा हुवै ? उत्तर---एक भांगो हुवै, एक सातमीं रही ते माटै। कोई पूछै --वालु धूम तम थी किता भांगा हुवै ? उत्तर-- एक भांगो हुवै, एक सातमीं बाकी रही ते माटै। इम तीन नरक भेली कर पूछ्यां ए आमना जाणवी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवैं दोय नरक भेली कर नें पूछैं ते कहै छै— इम चउक्कसंजोगिया में तो तीन नरक रो नाम लेई पूछ्यां लारै नरक रहै जिता भांगा कैहणा।

१२३. दोय नरक नों नाम लेई, भंग जो पूछीजियै।
एहथी भंग केतला ह्वै? जाब तसु इम दीजियै॥
१२४. नरक बाकी रहै जेती, छठी नरक लगै सही।
जेह नरक थी भंग जितरा, हुवै ते गिणवा वही॥
१२५. तेह भंगा एकठा करि, गिणी संख्या कीजियै।
बे नरक थी तेतला भंग, एम उत्तर दीजियै॥
१२६. रत्न सक्कर बेहुं मेल्यां, भंग होवै केतला?
एम पूछ्यां तास उत्तर, दीजियै इहविध भला॥
१२७. वालु थी चिउं पंक थी त्रिण, धूम बे इक तम थकी।
हुवै ए दश भंग तिणसूं, रत्न सक्कर थी दश नकी॥
१२८. रत्न वालू बेहुं मिलियां, भंग कितरा एहथी?
सातमीं विण नरक तीनज, रही बाकी तेहथी॥
१२९. पंक थी त्रिण धूम थी बे, एक तम थी आणियै॥
ते भणी ए रत्न वालू थकी षट भंग जाणियै॥
१३०. सक्कर नें पंक बेहुं मिलियां, भंग कितरा एहथी?
सातमीं विण नरक दोयज, रही बाकी तेहथी॥
१३१. धूम थी बे एक तम थी, तीन भंग ह्वै तेहथी।
ते भणी ए सहु सक्कर पंक थकीज त्रिण भंग एहथी।
१३२. वालु पंक थी भंग कितरा? तीन भांगा ह्वै सही।
धूम थी बे तम थकी इक, एम तीन लहै सही॥
१३३. वालु धूम थी भंग कितरा? एक तम बाकी रहै।
तेहनों भंग एक तिणसूं, वालु धूम थी इक लहै॥
१३४. इम नरक बे मेल पूछ्यां, सप्तमीं विण जे रहै।
तेहनां भंग गिणी जेता, बिहुं नरक थकी लहै॥
१३५. चउसंजोगिक भंग पैंतीस, आमना ए तेह तणी।
इहां आखी चतुर साखी, निपुण बुद्धिवंत नर भणी॥

कोई पूछै ४ संजोगिया भांगा में रत्न सक्कर थी किता भांगा हुवै? तेहनों उत्तर—१० हुवै। तेहनों न्याय कहै छै—रत्न सक्कर वालु थी ४, रत्न सक्कर पंक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी २, रत्न सक्कर तम थी १—एवं दश भांगा इम ह्वै छै, ते माटै रत्न सक्कर थी १० हुवै। इहां एक सातमीं नरक थी भांगा न हुवै ते माटै छेहली सातमीं नरक न लेखवणी।

कोई पूछै रत्न वालु थी किता भांगा हुवै? उत्तर—रत्न वालु सहित पंक थी ३, धूम थी २, तम थी १—एवं ६ भांगा रत्न वालु थी हुवै। इहां पिण सातमी न गिणी।

कोई पूछै रत्न पंक थी किता भांगा हुवै? उत्तर—रत्न पंक सहित धूम थी २, तम थी १ – एवं तीन भांगा हुवै।

कोई पूछै—वालु पंक थी किता भांगा हुवै? उत्तर—रत्न वालु सहित धूम थी बे भांगा हुवै छै, अनै तम थी १ भांगो हुवै छै, ते माटै वालु पंक थी ३ भांगा हुवै।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोई पूछै वालु धूम थी किता भांगा हुवै ? उत्तर—वालु धूम सहित तम थी १ भांगो हुवै छै, ते माटै वालु तम थी १ भांगा हुवै ।

चउक्कसंजोगिया एक नरक रो नाम लेई पूछ्यां तेहनी आमना कहै छै रत्न थी भांगा किता ? उत्तर—लारैं नरक रही ६ । तिणमें प्रथम एक आंक वर्जी शेष पांच आंक मांडना—२।३।४।५।६ । एहनै अनुक्रम गिणणा दोय नें तीन पांच, पांच नें च्यार नव, नव नें पांच चवदै, चवदै नै छह बीस, इम रत्न थी चउक्क-संयोगिक बीस भांगा हुवैं ।

सक्कर थी भांगा किता ? उत्तर—लारै नरक रही ५ । तिणमें छेहलो एक आंक वर्जी नें शेष च्यार आंक मांडणा १।२।३।४। एहनें अनुक्रम गिणणा—एक नैं दोय तीन, तीन नें तीन—छः, छ नें च्यार दश इम सक्कर थकी चउक्क-संजोगिया १० भांगा हुवै ।

वालु थी भांगा किता ? उत्तर—लारै नरक रही जेतला भांगा । एतलैं च्यार नरक रही ते माटै च्यार भांगा । अनै पंक थी एक भांगो, एवं चउक्कसंयोगिया ३५ भांगा ।

चउक्कसंयोगिक भांगा दोय नरक रो नाम लेई पूछ्यां जेतली नरक बाकी रहै तिणमें एक छेहलो आंक घटाय बाकी मांडी गिणणा, जेतली संख्या हुवैं तेतला भांगा गिणणा । एहनों उदाहरण रत्न सक्कर थी केतला भांगा ? उत्तर लारैं नरक रही पांच तिणमें एक छेहलो आंक पांचो घटाय देणो । बाकी च्यार आंक अनुक्रम मांडणा १।२।३।४ हिवैं एहनी संख्या गिणणी—एक नें दोय तीन, तीन नें तीन छ, छ नें च्यार दश, इम रत्न सक्कर थी दश भांगा ।

रत्न वालु थी केतला भांगा ? उत्तर—लारैं नरक रही च्यार । तिणमें एक छेहलो आंक चोको घटाय देणो । बाकी तीन आंक अनुक्रम मांडी गिणणा—१।२।३। हिवैं एहनीं संख्या गिणणी—एक नैं दोय—तीन, तीन नें तीन—छह, इम रत्न वालु थी छह भांगा ।

रत्न पंक थी केतला भांगा हुवैं ? उत्तर—लारै नरक रही तीन । तिणमें एक छेहलो आंक तीयो घटाय देणों । बाकी दोय आंक अनुक्रम मांडी गिणणा—१।२। हिवैं तेहनीं संख्या गिणणी एक नैं दोय तीन । इम रत्न पंक थी तीन भांगा ।

इम रत्न धूम थी एक भांगो हुवैं ।

सक्कर वालु थी केतला भांगा हुवैं ? उत्तर—लारैं नरक रही ४ । तिणमें एक छेहलो आंक चोको घटाय देणो । बाकी तीन आंक अनुक्रम मांडी गिणणा १।२।३ । हिवैं एहनीं संख्या गिणणी एक नें दोय तीन, तीन नै तीन—छह, इम सक्कर वालु थी ६ भांगा ।

सक्कर पंक थी केता भांगा हुवै ? उत्तर—लारै नरक रही तीन, तिणमें एक तीयो घटाय देणो । बाकी दोय आंक अनुक्रम मांडी गिणणा—१।२। हिवैं एहनीं संख्या गिणणी एक नें दोय तीन, इम सक्कर पंक थी ३ भांगा ।

इम सक्कर धूम थी भांगो एक हुवैं ।

वालु थी भांगा ४ । ते वालु पंक थी तीन पूर्ववत गिणवा, वालु धूम थी एक एवं ३४, पंक धूम थी एक, एवं ३५ ।

तीन नरक रो नाम लेइ पूछ्यां लारै जेतली नरक रहै तेतला भांगा कहिवा ।

१३६. *नव बत्तीस देश ढाल ए, इकसौ सितंतरमीं ।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' सुख गण धरमी ।।

*** लय : गुणी गुण गावो रे**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : १७८

दूहा

१. पंच नेरइया हे प्रभु ! नरक-प्रवेशन काल ।
रत्नप्रभा में स्यूं हुवै जाव सप्तमी न्हाल ?
२. जिन भाखै सुण गंगेया ! रत्नप्रभा उत्पात ।
जावत अथवा सप्तमी, इक-संयोगिक सात ॥

१. पंच भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ? पुच्छा ।

२. गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।

पांच जीवां रा इकसंजोगिया भांगा सात —

	र	स	वा	पं	धू	त	तम
१	५	०	०	०	०	०	०
२	०	५	०	०	०	०	०
३	०	०	५	०	०	०	०
४	०	०	०	५	०	०	०
५	०	०	०	०	५	०	०
६	०	०	०	०	०	५	०
७	०	०	०	०	०	०	५

हिवै पांच जीव नां द्विकसंजोगिया, तेहनां विकल्प ४, भांगा चउरासी । तिणमें प्रथम रत्न थी ६ भांगा ४ विकल्प करि २४ भांगा कहै छै—

३. तथा एक ह्वै रत्न में, सक्करप्रभा में च्यार ।
जाव तथा इक रत्न में, चिहुं तमतमा मझार ॥

४. तथा दोय ह्वै रत्न में, तीन सक्कर रै मांहि ।
इम जावत बे रत्न में, तीन सप्तमी मांहि ॥

५. तथा तीन ह्वै रत्न में, दोय सक्कर उपजंत ।
इम जावत त्रिण रत्न में, तीन तमतमा हुंत ॥
६. तथा रत्न में जीव चिहुं, सक्करप्रभा में एक ।
जाव तथा चिहुं रत्न में, एक सप्तमी पेख ॥

हिवै सक्कर थी ५ भांगा ४ विकल्प करि २० भांगा कहै छै

७. अथवा इक सक्कर मझे, वालुप्रभा में च्यार ।
जाव तथा इक सक्कर में, चिहुं तमतमा मझार ॥
८. अथवा बे सक्कर मझे, वालुप्रभा में तीन ।
जाव तथा बे सक्करे, तीन तमतमा लीन ॥

३. अहवा एगे रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा ।

४. अहवा दो रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा ।

५. अहवा तिण्णि रयणप्पभाए दोण्णि सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहेसत्तमाए होज्जा ।

६. अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।

७-१०. अहवा एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा । एवं जहा रयणप्पभाए समं उवरिमपुढवीओ चारियाओ तहा सक्करप्पभाए वि समं चारेयव्वाओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. अथवा त्रिण सक्कर मझे, वालुप्रभा में दोय।
जाव तथा त्रिण सक्करे, दोय तमतमा होय ।।
१०. तथा जीव चिहुं सक्करे, वालुप्रभा में एक।
जाव तथा चिहुं सक्करे, एक तमतमा पेख ।।

हिवै वालु थी ४ भांगा ४ विकल्प करि १६ भांगा कहै छै—

११. तथा जीव इक वालुका, च्यार पंक में जाय।
जाव तथा इक वालुका, च्यार तमतमा पाय ।।
१२. तथा जीव बे वालुका, तीन पंक में जाण।
जाव तथा बे वालुका, तीन तमतमा आण ।।
१३. तथा जीव त्रिण वालुका, दोय पंक उपजंत।
जाव तथा त्रिण वालुका, दोय सप्तमी हुंत ।।
१४. तथा जीव चिहुं वालुका, एक पंक में होय।
जाव तथा चिहुं वालुका, एक तमतमा जोय ।।

हिवै पंक थी ३ भांगा ४ विकल्प करि १२ भांगा कहै छै—

१५. तथा जीव इक पंक में, च्यार धूम रै मांय।
जाव तथा इक पंक में, च्यार तमतमा पाय।
१६. तथा जीव बे पंक में, तीन धूम उपजंत।
जाव तथा बे पंक में, तीन तमतमा हुंत ।।
१७. तथा जीव त्रिण पंक में, दोय धूम में देख।
जाव तथा त्रिण पंक में, दोय तमतमा पेख ।।
१८. तथा जीव चिहुं पंक में, एक धूम रै मांय।
जाव तथा चिहुं पंक में, एक तमतमा पाय ।।

हिवै धूम थी २ भांगा ४ विकल्प करि ८ भांगा कहै छै—

१९. तथा जीव इक धूम में, च्यार तमा पहिछाण।
तथा जीव इक धूम में, च्यार तमतमा जाण।
२०. तथा जीव बे धूम में, तीन तमा में ताम।
तथा जीव बे धूम में, तीन तमतमा पाम ।।
२१. तथा जीव त्रिण धूम में, दोय तमा में होय।
तथा जीव त्रिण धूम में, दोय तमतमा जोय।
२२. तथा जीव चिहुं धूम में, एक तमा रै मांय।
तथा जीव चिहुं धूम में, एक तमतमा पाय ।।

हिवै तम थी १ भांगो ४ विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—

२३. तथा जीव इक तम छठी, च्यार तमतमा देख।
तथा जीव बे तम छठी, तीन तमतमा पेख।
२४. तथा जीव त्रिण तम छठी, दोय तमतमा जंत।
तथा जीव चिहुं तम छठी, एक तमतमा हुंत ।।
२५. पंच जीव द्विकयोगिका, विकल्प तेहनां च्यार।
भांगा चउरासी भला, भणवा करि विस्तार ।।

जाव अहवा चत्तारि सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

११-२४. एवं एक्केक्काए समं चारेयव्वाओ जाव अहवा चत्तारि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

२५. द्विकसंयोगे तु चतुरशीतिः (वृ०प० ४४४)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पांच जीव नां द्विकसंजोगिया तेहनां विकल्प ४. भांगा ८४ तेहनों यंत्र। हिवै रत्न थी ६ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
१	१	१	४	०	०	०	०	०
२	२	१	०	४	०	०	०	०
३	३	१	०	०	४	०	०	०
४	४	१	०	०	०	४	०	०
५	५	१	०	०	०	०	४	०
६	६	१	०	०	०	०	०	४

हिवै रत्न थी ६ भांगा दूजे विकल्प करि कहै छै -

७	१	२	३	०	०	०	०	०
८	२	२	०	३	०	०	०	०
९	३	२	०	०	३	०	०	०
१०	४	२	०	०	०	३	०	०
११	५	२	०	०	०	०	३	०
१२	६	२	०	०	०	०	०	३

हिवै रत्न थी ६ भांगा तीजे विकल्प करि कहै छै -

१३	१	३	२	०	०	०	०	०
१४	२	३	०	२	०	०	०	०
१५	३	३	०	०	२	०	०	०
१६	४	३	०	०	०	२	०	०
१७	५	३	०	०	०	०	२	०
१८	६	३	०	०	०	०	०	२

हिवै रत्न थी ६ भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै—

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
१९	१	४	१	०	०	०	०	०
२०	२	४	०	१	०	०	०	०
२१	३	४	०	०	१	०	०	०
२२	४	४	०	०	०	१	०	०
२३	५	४	०	०	०	०	१	०
२४	६	४	०	०	०	०	०	१

ए रत्न थी ४ विकल्प करि २४ भांगा कह्या।

हिवै सक्कर थी ५ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै -

२५	१	०	१	४	०	०	०	०
२६	२	०	१	०	४	०	०	०
२७	३	०	१	०	०	४	०	०
२८	४	०	१	०	०	०	४	०
२९	५	०	१	०	०	०	०	४

हिवै सक्कर थी ५ भांगा दूजे विकल्प करि कहै छै -

३०	१	०	२	३	०	०	०	०
३१	२	०	२	०	३	०	०	०
३२	३	०	२	०	०	३	०	०
३३	४	०	२	०	०	०	३	०
३४	५	०	२	०	०	०	०	३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवैं सक्कर थी ५भांगा तीजैं विकल्प करि कहै छै —

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
३५	१	०	३	२	०	०	०	०
३६	२	०	३	०	२	०	०	०
३७	३	०	३	०	०	२	०	०
३८	४	०	३	०	०	०	२	०
३९	५	०	३	०	०	०	०	२

हिवैं सक्कर थी ५ भांगा चउथैं विकल्प करि कहै छै —

४०	१	०	४	१	०	०	०	०
४१	२	०	४	०	१	०	०	०
४२	३	०	४	०	०	१	०	०
४३	४	०	४	०	०	०	१	०
४४	५	०	४	०	०	०	०	१

ए सक्कर थी ४ विकल्प करि २० भांगा कह्या ।

हिवैं वालु थी ४ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

४५	१	०	०	१	४	०	०	०
४६	२	०	०	१	०	४	०	०
४७	३	०	०	१	०	०	४	०
४८	४	०	०	१	०	०	०	४

हिवैं वालु थी ४ भांगा दूजैं विकल्प करि कहै छै —

४९	१	०	०	२	३	०	०	०
५०	२	०	०	२	०	३	०	०
५१	३	०	०	२	०	०	३	०
५२	४	०	०	२	०	०	०	३

हिवैं वालु थी ४ भांगा तीजैं विकल्प करि कहै छै—

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
५३	१	०	०	३	२	०	०	०
५४	२	०	०	३	०	२	०	०
५५	३	०	०	३	०	०	२	०
५६	४	०	०	३	०	०	०	२

हिवैं वालु थी ४ भांगा चउथैं विकल्प करि कहै छै —

५७	१	०	०	४	१	०	०	०
५८	२	०	०	४	०	१	०	०
५९	३	०	०	४	०	०	१	०
६०	४	०	०	४	०	०	०	०

ए वालु थी ४ विकल्प करि १६ भांगा कह्या ।

हिवैं पंक थी ३ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै —

६१	१	०	०	०	१	४	०	०
६२	२	०	०	०	१	०	४	०
६३	३	०	०	०	१	०	०	४

हिवैं पंक थी ३ भांगा दूजैं विकल्प करि कहै छै —

६४	१	०	०	०	२	३	०	०
६५	२	०	०	०	२	०	३	०
६६	३	०	०	०	२	०	०	३

हिवैं पंक थी ३ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै—

६७	१	०	०	०	३	२	०	०
६८	२	०	०	०	३	०	२	०
६९	३	०	०	०	३	०	०	२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै पंक थी ३ भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै —

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
७०	१	०	०	०	४	१	०	०
७१	२	०	०	०	४	०	१	०
७२	३	०	०	०	४	०	०	१

ए पंक थी ४ विकल्प करि १२ भांगा कह्या।

हिवै धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै —

७३	१	०	०	०	०	१	४	०
७४	२	०	०	०	०	१	०	४

हिवै धूम थी २ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै

७५	१	०	०	०	०	२	३	०
७६	२	०	०	०	०	२	०	३

हिवै धूम थी २ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै

७७	१	०	०	०	०	३	२	०
७८	२	०	०	०	०	३	०	२

हिवै धूम थी २ भांगा चौथे विकल्प करि कहै छै —

७९	१	०	०	०	०	४	१	०
८०	२	०	०	०	०	४	०	१

ए धूम थी ४ विकल्प करि ८ भांगा कह्या।

हिवै तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—

८१	१	०	०	०	०	०	१	४

हिवै तम थी १ भांगो दूजै विकल्प करि कहै छै —

८२	१	०	०	०	०	०	२	३

हिवै तम थी १ भांगो तीजै विकल्प करि कहै छै—

८३	१	०	०	०	०	०	३	२

हिवै तम थी १ भांगो चउथे विकल्प करि कहै छै —

८४	१	०	०	०	०	०	४	१

ए तम थी ४ विकल्प करि ४ भांगा कह्या।
एवं पांच जीव नां द्विकसंजोगिया रत्न थी २४, सक्कर थी २० वालु थी १६, पंक थी १२, धूम थी ८, तम थी ४, एवं सर्व ८४ भांगा थया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६. पंच जीव नां हिव कहूं, त्रिकसंयोगिक तेह।
षट विकल्प करि भंग तसुं, बे सौ दश गिण लेह ॥

पंच जीव नां त्रिकसंजोगिया ६ विकल्प करि २१० भांगा कहै छै—

*२७. पनर भांगा रत्न सेती, सक्कर थी दश जणियै।
वालु थी षट, पंक थी त्रिण, धूम थी इक आणियै॥
२८. एह जे पैंतीस भांगा, षट विकल्प करि षटगुणां।
दोयसौ दश भंग होवै, पंच जे जीवां तणां॥

२७,२८ त्रिकयोगे तु सप्तानां पदानां पञ्चत्रिंशद्विकल्पाः, पञ्चानां च त्रित्वेन स्थापने षड् विकल्पास्तद्यथा.... तदेवं पञ्चत्रिंशतः षड्भिर्गुणने दशोत्तरं भङ्गकशतद्वयं भवति। (वृ०प० ४४४)

वा०—रत्न थी पनरै, तिके रत्न सक्कर थी ५, रत्न वालु थी ४, रत्न पंक थी ३, रत्न धूम थी २, रत्न तम थी १, एवं १५ भांगा ६ विकल्प करि जूजुआ कहै छै—प्रथम रत्न सक्कर थी ५ भांगा ६ विकल्प करि ३० भांगा कहै छै—

प्रथम विकल्प करि ५ भांगा—

†श्री जिन भाखै सुण गंगेया! (ध्रुपदं)

२९. अथवा एक रत्न इक सक्कर, तीन वालु में होय जी।
अथवा एक रत्न इक सक्कर, तीन पंक अवलोय जी॥
३०. अथवा एक रत्न इक सक्कर, तीन धूम रै मांय।
अथवा एक रत्न इक सक्कर, तीन तमा में जाय॥
३१. अथवा एक रत्न इक सक्कर, तीन सप्तमी होय।
धुर विकल्प करि रत्न सक्कर सूं, पंच भांगा ए जोय॥

२९-३१. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा।

दूजै विकल्प करि ५ भांगा—

३२. अथवा एक रत्न दोय सक्कर, दोय वालु रै मांय।
अथवा एक रत्न दोय सक्कर, दोय पंक दुख पाय॥
३३. अथवा एक रत्न दोय सक्कर, दोय धूमका जाय।
अथवा एक रत्न दोय सक्कर, दोय तमा रै मांय॥
३४. अथवा एक रत्न दोय सक्कर, दोय तमतमा मांय।
द्वितीय विकल्प रत्न सक्कर थी, पंच भांगा इम थाय॥

३२-३४. अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।

तीजै विकल्प करि ५ भांगा—

३५. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, दोय वालुका हुंत।
अथवा दोय रत्न इक सक्कर, दोय पंक उपजंत॥
३६. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, दोय धूम दुखदाय।
अथवा दोय रत्न इक सक्कर, दोय तमा रै मांय॥
३७. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, दोय सप्तमी होय।
तृतीय विकल्प रत्न सक्कर थी, पंच भंगा इम होय॥

३५-३७. अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।

चउथ विकल्प करि ५ भांगा—

३८. अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, एक वालुका जाण।
अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, एक पंक पहिछाण॥
३९. अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, एक धूमका मांय।
अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, एक तमा दुख पाय॥

३८-४०. अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

*लय : पूज मोटा भांजै तोटा
†लय: श्री पूज्य भीखणजी रो समरण कीजै

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४०. अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, एक तमतमा देख।
चोथो विकल्प रत्न सक्कर सूं, पंच भंगा इम लेख ।।

पांचवें विकल्प करि ५ भांगा —

४१. अथवा दोय रत्न दो सक्कर, एक वालुका जंत।
अथवा दोय रत्न बे सक्कर, एक पंक में हुंत ।।

४२. अथवा दोय रत्न दो सक्कर, एक धूम अवलोय।
अथवा दोय रत्न बे सक्कर, जीव एक तम जोय ।।

४३. अथवा दोय रत्न दो सक्कर, एक तमतमा आय।
पंचम विकल्प रत्न सक्कर थी, भंग पंच इम थाय ।।

छठै विकल्प करि ५ भांगा—

४४. अथवा तीन रत्न इक सक्कर, एक वालु आख्यात।
अथवा तीन रत्न एक सक्कर, एक पंक दुख पात ।।

४५. अथवा तीन रत्न एक सक्कर, एक धूम में जान।
अथवा तीन रत्न एक सक्कर, एक तमा अघखान ।।

४६. अथवा तीन रत्न एक सक्कर, एक तमतमा गेह।
छठै विकल्प रत्न सक्कर थी, भंग पंच इम लेह ।।

हिवै रत्न वालु थकी च्यार भांगा हुवै, ते छह विकल्प करि २४ भांगा हुवै।

प्रथम विकल्प करि ४ भांगा —

४७. अथवा एक रत्न एक वालुक, तीन पंक पहिछाण।
जाव तथा एक रत्न वालु इक, तीन तमतमा जान ।।

दूजै विकल्प करि ४ भांगा—

४८. अथवा एक रत्न बे वालुक, दोय पंक में देख।
जाव तथा एक रत्न वालु बे, दोय तमतमा पेख ।।

तीजै विकल्प करि भांगा—

४९. अथवा दोय रत्न इक वालु, दोय पंक दुख पाय।
जाव तथा बे रत्न वालु इक, दोय तमतमा मांय ।।

चउथै विकल्प करि ४ भांगा —

५०. अथवा एक रत्न त्रिण वालुक, एक पंक रै मांय।
जाव तथा इक रत्न वालु त्रिण, एक सप्तमी पाय ।।

पांचवें विकल्प करि ४ भांगा—

५१. अथवा दोय रत्न दोय वालुक, एक पंक अवलोय ।।
जाव तथा बे रत्न वालु बे, एक सप्तमी होय ।।

छठै विकल्प करि ४ भांगा—

५२. अथवा तीन रत्न एक वालुक, एक पंक दुखखान।
जाव तथा त्रिण रत्न वालु इक, एक तमतमा जान ।।

हिवै रत्न पंक थी त्रिण भांगा हुवै, ते छह विकल्प करि १८ भांगा कहै छै।

४१-४३. अहवा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहेसत्तमाए।

४४-४६. अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

४७-११५. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए तिण्णि पंकप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं जहा चउण्हं तियासंजोगो भणितो तहा पंचण्ह वि तियासंजोगो भाणियव्वो, नवरं—तथा एगो संचारिज्जइ, इह दोण्णि, सेसं तं चेव जाव अहवा तिण्णि धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम विकल्प करि ३ भांगा—

५३. अथवा एक रत्न इक पंके, तीन धूमका हुंत।
जाव तथा इक रत्न पंक इक, तीन तमतमा जंत॥

दूजै विकल्प करि ३ भांगा—

५४. अथवा एक रत्न बे पंके, दोय धूमका देख।
जाव तथा इक रत्न पंक बे, दोय सप्तमी लेख॥

तीजै विकल्प करि ३ भांगा—

५५. अथवा दोय रत्न इक पंके, दोय धूमका स्थान।
जाव तथा बे रत्न पंक इक, दोय सप्तमी जान॥

चौथै विकल्प करि ३ भांगा—

५६. अथवा एक रत्न त्रिण पंके, एक धूमका हुंत।
जाव तथा इक रत्न पंक त्रिण, एक सप्तमी जंत॥

पांचवें विकल्प करि ३ भांगा—

५७. अथवा दोय रत्न दोय पंके, एक धूमका मांय।
जाव तथा बे रत्न पंक बे, एक तमतमा जाय॥

छठै विकल्प करि ३ भांगा—

५८. अथवा तीन रत्न इक पंके, एक धूमका होय।
जाव तथा त्रिण रत्न पंक इक, एक सप्तमी सोय॥

हिवै रत्न धूम थी दोय भांगा ६ विकल्प करि १२ भांगा कहै छै—

प्रथम विकल्प करि २ भांगा—

५९. अथवा एक रत्न इक धूमा, तीन तमा उपजंत।
अथवा एक रत्न इक धूमा, तीन तमतमा हुंत॥

दूजै विकल्प करि २ भांगा—

६०. अथवा एक रत्न बे धूमा, दोय तमा रै मांय।
अथवा एक रत्न बे धूमा, दोय तमतमा जाय॥

तीजै विकल्प करि २ भांगा—

६१. अथवा दोय रत्न इक धूमा, दोय तमा दुख पाय।
अथवा दोय रत्न एक धूमा, दोय तमतमा मांय॥

चउथै विकल्प करि २ भांगा—

६२. अथवा एक रत्न त्रिण धूमा, एक तमा दुखखान।
अथवा एक रत्न त्रिण धूमा, एक तमतमा जान॥

पांचवें विकल्प करि ३ भांगा—

६३. अथवा दोय रत्न दोय धूमा, एक तमा आख्यात।
अथवा दोय रत्न दोय धूमा, एक तमतमा जात॥

छठै विकल्प करि २ भांगा—

६४. अथवा तीन रत्न इक धूमा, एक तमा अघस्थान।
अथवा तीन रत्न इक धूमा, एक सप्तमी जान॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै रत्न तमा थी एक भांगो ६ विकल्प करि ६ भांगा कहै छ—

६५. अथवा एक रत्न इक तमा, तीन सप्तमी जंत।
अथवा एक रत्न दो तमा, दोय तमतमा हुंत।।

६६. अथवा दोय रत्न इक तमा, दोय तमतमा जाय।
अथवा एक रत्न त्रिण तमा, एक सप्तमी मांय।।

६७. अथवा दोय रत्न दोय तमा, एक सप्तमी होय।
अथवा तीन रत्न इक तमा, एक तमतमा जोय।।

एवं रत्न थी १५ भांगा, ते ६ विकल्प करि ९० भांगा कह्या।

हिवै सक्कर थी १० भांगा हुवै। ते सक्कर वालु थी ४, सक्कर पंक थी ३, सक्कर धूम थी २, सक्कर तम थी १—एवं १० भांगा ६ विकल्प करि ६० भांगा हुवै।

ते प्रथम सक्कर वालु थी ४ भांगा ६ विकल्प करि २४ भांगा कहै छै—

प्रथम विकल्प करि ४ भांगा—

६८. अथवा एक सक्कर इक वालुक, तीन पंक दुखराश।
जाव तथा इक सक्कर वालु इक, तीन तमतमा तास।।

दूजै विकल्प करि ४ भांगा—

६९. अथवा एक सक्कर बे वालुक, दोय पंक दुखधाम।
जाव तथा इक सक्कर वालु बे, दोय तमतमा पाम।।

तीजै विकल्प करि ४ भांगा—

७०. अथवा दोय सक्कर इक वालुक, दोय पंक रै मांय।
जाव तथा बे सक्कर वालु इक, दोय तमतमा जाय।।

चउथै विकल्प करि ४ भांगा—

७१. अथवा एक सक्कर त्रिण वालुक, एक पंक अवलोय।
जाव तथा इक सक्कर वालु त्रिण, एक पंक में होय।।

पांचवै विकल्प करि ४ भांगा—

७२. अथवा बे सक्कर बे वालुक, एक पंक पहिछाण।
जाव तथा बे सक्कर वालु बे, एक सप्तमी स्थान।।

छठै विकल्प करि ४ भांगा—

७३. अथवा तीन सक्कर इक वालुक, इक पंक उपजंत।
जाव तथा त्रिण सक्कर वालु एक, एक तमतमा हुंत।।

हिवै सक्कर पंक थी तीन भांगा ६ विकल्प करि १८ भांगा।

प्रथम विकल्प करि ३ भांगा—

७४. अथवा एक सक्कर एक पंके, तीन धूम रै मांय।
जाव तथा इक सक्कर पंक इक, तीन सप्तमी जाय।।

दूजै विकल्प करि ३ भांगा—

७५. अथवा एक सक्कर दो पंके, दोय धूम में देख।
जाव तथा इक सक्कर पंक बे, दोय तमतमा लेख।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीजै विकल्प करि ३ भांगा—

७६. अथवा दो सक्कर इक पंके, दोय धूम उपजंत।
जाव तथा दो सक्कर पंक इक, दोय सप्तमी हुंत॥

चउथै विकल्प करि ३ भांगा—

७७. अथवा एक सक्कर त्रिण पंके, एक धूम अवलोय।
जाव तथा इक सक्कर पंक त्रिण, एक सप्तमी होय॥

पांचवें विकल्प करि ३ भांगा—

७८. अथवा बे सक्कर दो पंके, एक धूम अघस्थान।
जाव तथा बे सक्कर पंक बे, एक तमतमा जान॥

छठै विकल्प करि ३ भांगा—

७९. अथवा त्रिण सक्कर इक पंके, एक धूम अवदात।
जाव तथा त्रिण सक्कर पंक इक, एक सप्तमी थात॥

हिवैं सक्कर धूम थी २ भांगा छह विकल्प करि १२ भांगा कह्या।

प्रथम विकल्प करि २ भांगा—

८०. अथवा एक सक्कर एक धूमा, त्रिण तमा रै मांय।
अथवा एक सक्कर इक धूमा, तीन सप्तमी जाय॥

दूजै विकल्प करि २ भांगा—

८१. अथवा इक सक्कर बे धूमा, दोय तमा दुखराश।
अथवा इक सक्कर दोय धूमा, दोय सप्तमी तास।

तीजै विकल्प करि २ भांगा—

८२. अथवा दो सक्कर इक धूमा, दोय तमा दुखदाय॥
अथवा बे सक्कर इक धूमा, दोय सप्तमी जाय॥

चउथै विकल्प करि २ भांगा—

८३. अथवा इक सक्कर त्रिण धूमा एक तमा अघपूर।
अथवा एक सक्कर त्रिण धूमा, एक तमतमा भूर॥

पांचवें विकल्प करि २ भांगा—

८४. अथवा बे सक्कर दो धूमा, एक तमा उपजंत।
अथवा दोय सक्कर दो धूमा, एक तमतमा हुंत॥

छठै विकल्प करि २ भांगा—

८५. अथवा त्रिण सक्कर इक धूमा, एक तमा में होय।
अथवा त्रिण सक्कर इक धूमा, एक तमतमा जोय॥

हिवैं सक्कर तम थी १ भांगो ६ विकल्प करि कहै छै—

८६. अथवा एक सक्कर इक तमा, तीन तमतमा मांय।
अथवा इक सक्कर दोय तमा, दोय तमतमा जाय॥
८७. अथवा बे सक्कर इक तमा, दोय तमतमा जंत।
अथवा इक सक्कर त्रिण तमा, एक तमतमा हुंत॥
८८. अथवा बे सक्कर दोय तमा, एक सप्तमी होय।
अथवा तीन सक्कर इक तमा, एक तमतमा जोय॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं सक्कर थी १० भांगा, ते ६ विकल्प करि ६० भांगा कह्या।

हिवं वालु थी ६ भांगा हुवै ते वालु पंक थी ३, वालु धूम थी २, वालु तम थी १ — ते ६ विकल्प करि ३६ भांगा, तेहमें प्रथम वालू पंक थी ३ भांगा ६ विकल्प करि कहै छै —

प्रथम विकल्प करि ३ भांगा —

८६. अथवा एक वालु इक पंके, तीन धूम रै मांय।
जाव तथा इक वालु पंक इक, तीन सप्तमी जाय।।

दूजै विकल्प करि ३ भांगा —

९०. अथवा एक वालु बे पंके, दोय धूम उपजंत।।
जाव तथा इक वालु पंक बे, दोय तमतमा हुंत।।

तीजै विकल्प करि ३ भांगा —

९१. अथवा बे वालुक इक पंके, दोय धूम में होय।
जाव तथा बे वालु पंक इक, दोय सप्तमी जोय।।

चउथै विकल्प करि ३ भांगा —

९२. अथवा इक वालु त्रिण पंके, एक धूमका स्थान।
जाव तथा इक वालु पंक त्रिण, एक तमतमा जान।।

पांचवैं विकल्प करि ३ भांगा —

९३. अथवा बे वालू बे पंके, एक धूम में देख।
जाव तथा बे वालु पंक बे, एक सप्तमी लेख।।

छठै विकल्प करि ३ भांगा —

९४. अथवा त्रिण वालू इक पंके, एक धूम आख्यात।
जाव तथा त्रिण वालु पंक इक, एक तमतमा पात।।

हिवं वालू धूम थी २ भांगा, ते ६ विकल्प कर १२ भांगा कहै छै —

प्रथम विकल्प करि २ भांगा —

९५. अथवा इक वालू इक धूमा, तीन तमा रै मांय।
अथवा इक वालु इक धूमा, तीन सप्तमी जाय।।

दूजै विकल्प करि २ भांगा —

९६. अथवा इक वालु बे धूमा, दोय तमा दुखदाय।
अथवा इक वालु बे धूमा, दोय तमतमा पाय।

तीजै विकल्प करि २ भांगा —

९७. अथवा बे वालु इक धूमा, दोय तमा दुखगेह।
अथवा बे वालु इक धूमा, दोय तमतमा लेह।।

चउथै विकल्प करि २ भांगा —

९८. अथवा इक वालु त्रिण धूमा, एक तमा अवलोय।
अथवा इक वालु त्रिण धूमा, एक तमतमा जोय।।

पांचवैं विकल्प करि २ भांगा —

९९. अथवा बे वालु बे धूमा, एक तमा अघपूर।
अथवा बे वालु बे धूमा, एक तमतमा भूर।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छठै विकल्प करि २ भांगा—

१००. अथवा त्रिण वालु इक धूमा, एक तमा अघरास।
अथवा त्रिण वालु इक धूमा, एक तमतमा वास।

हिवै वालु तम थी १ भांगो ते ५ विकल्प करि कहै छै—

१०१. अथवा इक वालु इक तमा, तीन तमतमा पाय।
अथवा इक वालु बे तमा, दोय तमतमा जाय।

१०२. अथवा बे वालु इक तमा, दोय तमतमा होय।
अथवा इक वालु त्रिण तमा, एक तमतमा जोय।

एवं वालु थी ६ भांगा, ते ६ विकल्प करि ३६ भांगा कह्या।

१०३. अथवा बे वालु बे तमा, एक सप्तमी मांय।
अथवा त्रिण वालु इक तमा, एक तमतमा जाय।।

हिवै पंक थी तीन भांगा। ते पंक धूम थी २, अनै पंक तम थी १ -एवं तीन। पंक थी ६ विकल्प करि अठारै भांगा हुवै। प्रथम पंक धूम थी २ भांगा, ते ६ विकल्प करि कहै छै—

प्रथम विकल्प करि २ भांगा—

१०४. अथवा एक पंक एक धूमा, तीन तमा कहिवाय।
अथवा एक पंक इक धूमा, तीन तमतमा मांय।।

दूजै विकल्प करि २ भांगा—

१०५. अथवा एक पंक बे धूमा, दोय तमा दुखस्थान।
अथवा एक पंक बे धूमा, दोय तमतमा जान।।

तीजै विकल्प करि २ भांगा—

१०६. अथवा दोय पंक इक धूमा, दोय तमा अघराश।
अथवा दोय पंक इक धूमा, दोय तमतमा वास।

चउथै विकल्प करि २ भांगा—

१०७. अथवा एक पंक त्रिण धूमा, एक तमा अवलोय।
अथवा एक पंक त्रिण धूमा, एक तमतमा होय।।

पांचवें विकल्प करि २ भांगा—

१०८. अथवा दोय पंक बे धूमा, एक तमा दुखराश।
अथवा दोय पंक बे धूमा, एक तमतमा तास।।

छठै विकल्प करि २ भांगा—

१०९. अथवा त्रिण पंके इक धूमा, एक तमा में जंत।
अथवा त्रिण पंके इक धूमा, एक तमतमा हुंत।।

हिवै पंक तम थी एक भांगो ६ विकल्प करि कहै छै—

११०. अथवा एक पंक एक तमा, त्रिण तमतमा मांय।
अथवा एक पंक दोय तमा, दोय तमतमा पाय।।

१११. अथवा दोय पंक इक तमा, दोय तमतमा होय।
अथवा एक पंक त्रिण तमा, एक तमतमा जोय।।

११२. अथवा दोय पंक दोय तमा, एक तमतमा जंत।
अथवा त्रिण पंके इक तमा, एक तमतमा हुंत।।

एवं पंक थी ३ भांगा, ते ६ विकल्प करि १८ भांगा कह्या।

हिवै धूम थी एक भांगो हुवै, ते ६ विकल्प करि कहै छै—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११३. अथवा एक धूम एक तमा, तीन तमतमा तेह।
अथवा एक धूम दोय तमा, दोय तमतमा लेह ॥
११४. अथवा दोय धूम एक तमा, दोय तमतमा देख।
अथवा एक धूम त्रिण तमा, एक तमतमा लेख ॥
११५. अथवा दोय धूम दोय तमा, एक तमतमा मांय।
अथवा त्रिण धूम एक तमा, एक तमतमा पाय ॥

एवं पंच जीव रा त्रिकसंजोगिया रत्न थी ९०, सक्कर थी ६० वालुका थी ३६, पंक थी १८, धूम थी ६, एवं सर्व २१० भांगा कह्या।

११६. पनर रत्न थी सक्कर थी दश, षट वालु थी जगीस।
पंक थकी त्रिण धूम थकी इक, एवं भंग पणतीस ॥
११७. पंच जीव नां त्रिकसंजोगिक, षट विकल्प करि एह।
दोयसौ नें दश भांगा दाख्या, निपुण विचारी लेह ॥

हिवै पांच जीव नां त्रिकसंयोगिया विकल्प

छप्पय

११८. एक एक नें तीन, प्रथम विकल्प पहिचानो।
एक दोय नें दोय, द्वितीय विकल्प दिल आनो।
दोय एक नें दोय, तृतीय विकल्प तहतीको।
एक तीन नें एक, तुर्य विकल्प ए नीको।
फुन दोय दोय नें एक, इम पंचम एह प्रयोगिका।
त्रिण एक एक षष्टम कह्यूं, पंच जीव त्रिकयोगिका ॥

पांच जीव रा त्रिकसंजोगिया तेहनां विकल्प छह भांगा दोय सौ दश।

रत्न थी १५, सक्कर थी १०, वालु थी ६, पंक थी ३, धूम थी १, एवं ३५ ते छह विकल्प कर दोय सौ दस भांगा हुवै।

एक-एक विकल्प नां रत्न थी १५ ते किसा ? रत्न सक्कर थी ५, रत्न वालु थी ४, रत्न पंक थी ३, रत्न धूम थी २ रत्न तम थी १ एवं १५, छह विकल्प कर ९०।
हिवै रत्न सक्कर थी पांच भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै--

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
१	१	१	१	३	०	०	०	०
२	२	१	१	०	३	०	०	०
३	३	१	१	०	०	३	०	०
४	४	१	१	०	०	०	३	०
५	५	१	१	०	०	०	०	३

११८. पञ्चानां च त्रित्वेन स्थापने षड् विकल्पास्तद्यथा—एक एकस्त्रयश्च, एको द्वौ द्वौ च, द्वावेको द्वौ च, एकस्त्रय एकश्च, द्वौ द्वावेकश्च, त्रय एक एकश्चेति। (वृ० प० ४४४)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै रत्न सक्कर थी ५ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै—

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
६	१	१	२	२	०	०	०	०
७	२	१	२	०	२	०	०	०
८	३	१	२	०	०	२	०	०
९	४	१	२	०	०	०	२	०
१०	५	१	२	०	०	०	०	२

हिवै रत्न सक्कर थी ५ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै —

११	१	२	१	२	०	०	०	०
१२	२	२	१	०	२	०	०	०
१३	३	२	१	०	०	२	०	०
१४	४	२	१	०	०	०	२	०
१५	५	२	१	०	०	०	०	२

हिवै रत्न सक्कर थी पांच भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै —

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
१६	१	१	३	१	०	०	०	०
१७	२	१	३	०	१	०	०	०
१८	३	१	३	०	०	१	०	०
१९	४	१	३	०	०	०	१	०
२०	५	१	३	०	०	०	०	१

हिवै रत्न सक्कर थी ५ भांगा पंचमें विकल्प करि कहै छै —

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
२१	१	२	२	१	०	०	०	०
२२	२	२	२	०	१	०	०	०
२३	३	२	२	०	०	१	०	०
२४	४	२	२	०	०	०	१	०
२५	५	२	२	०	०	०	०	१

हिवै रत्न सक्कर थी ५ भांगा छठै विकल्प करि कहै छै

२६	१	३	१	१	०	०	०	०
२७	२	३	१	०	१	०	०	०
२८	३	३	१	०	०	१	०	०
२९	४	३	१	०	०	०	१	०
३०	५	३	१	०	०	०	०	१

ए रत्न सक्कर थी ५ भांगा ६ विकल्प करि ३० भांगा कह्या।

हिवै रत्न वालु थी ४ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै -

३१	१	१ रत्न, १ वालुक, ३ पंक
३२	२	१ रत्न, १ वालुक, ३ धूम
३३	३	१ रत्न, १ वालुक, ३ तम
३४	४	१ रत्न, १ वालुक, ३ तमतमा

हिवै रत्न वालु थी ४ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै —

३५	१	१ रत्न, २ वालुक, २ पंक
३६	२	१ रत्न, २ वालुक, २ धूम
३७	३	१ रत्न, २ वालुक, २ तम
३८	४	१ रत्न, २ वालुक, २ तमतमा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै रत्न वालु थी ४ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै —

३९	१	२ रत्न, १ वालुक, २ पंक
४०	२	२ रत्न, १ वालुक, २ धूम
४१	३	२ रत्न, १ वालुक, २ तम
४२	४	२ रत्न, १ वालुक, २ तमतमा

हिवै रत्न वालु थी ४ भांगा चौथे विकल्प करि कहै छै —

४३	१	१ रत्न, ३ वालुक, १ पंक
४४	२	१ रत्न, ३ वालुक, १ धूम
४५	३	१ रत्न, ३ वालुक, १ तम
४६	४	१ रत्न, ३ वालुक १ तमतमा

हिवै रत्न वालु थी ४ भांगा पंचमे विकल्प कर कहै छै—

४७	१	२ रत्न, २ वालुक, १ पंक
४८	२	२ रत्न, २ वालुक, १ धूम
४९	३	२ रत्न, २ वालुक, १ तम
५०	४	२ रत्न, २ वालुक १ तमतमा

हिवै रत्न वालु थी ४ भांगा छठे विकल्प करि कहै छै—

५१	१	३ रत्न, १ वालुक, १ पंक
५२	२	३ रत्न, १ वालुक, १ धूम
५३	३	३ रत्न, १ वालुक, १ तम
५४	४	३ रत्न, १ वालुक, १ तमतमा

ए रत्न वालु थी ४ भांगा ६ विकल्प करि २४ भांगा कह्या। हिवै रत्न पंक थी तीन भांगा, ते छ विकल्प करि १८ भांगा हुवै। तिहां रत्न पंक थी ३ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै —

५५	१	१ रत्न, १ पंक, ३ धूम
५६	२	१ रत्न, १ पंक, ३ तम
५७	३	१ रत्न, १ पंक, ३ तमतमा

हिवै रत्न पंक थी ३ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै —

५८	१	१ रत्न, २ पंक, २ धूम
५९	२	१ रत्न २ पंक, २ तम
६०	३	१ रत्न, २ पंक, २ तमतमा

हिवै रत्न पंक थी ३ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै —

६१	१	२ रत्न, १ पंक, २ धूम
६२	२	२ रत्न, १ पंक, २ तम
६३	३	२ रत्न, १ पंक, २ तमतमा

हिवै रत्न पंक थी ३ भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै —

६४	१	१ रत्न, ३ पंक, १ धूम
६५	२	१ रत्न, ३ पंक, १ तम
६६	३	१ रत्न, ३ पंक, १तमतमा

हिवै रत्न पंक थी ३ भांगा पंचमें विकल्प करि कहै छै —

६७	१	२ रत्न, २ पंक, १ धूम
६८	२	२ रत्न, २ पंक, १ तम
६९	३	२ रत्न, २ पंक, १ तमतमा

हिवै रत्न पंक थी ३ भांगा छठे विकल्प कर कहै छै —

७०	१	३ रत्न, १ पंक, १ धूम
७१	२	३ रत्न, १ पंक, १ तम
७२	३	३ रत्न, १ पंक, १ तमतमा

ए रत्न पंक थी ३ भांगा ६ विकल्प करि १८ भांगा कह्या।

हिवै रत्न धूम थी २ भांगा ते छह विकल्प करि १२ भांगा हुवै। तिहां रत्न धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै -

७३	१	१ रत्न, १ धूम, ३ तम
७४	२	१ रत्न, १ धूम, ३ तमतमा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै धूम रत्न थी २ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै —

७५	१	१ रत्न, २ धूम, २ तम
७६	२	१ रत्न, २ धूम, २ तमतमा

हिवै रत्न धूम थी २ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै —

७७	१	२ रत्न, १ धूम, २ तम
७८	२	२ रत्न, १ धूम, २ तमतमा

हिवै रत्न धूम थी २ भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै —

७९	१	१ रत्न, ३ धूम, १ तम
८०	२	१ रत्न, ३ धूम, १ तमतमा

हिवै रत्न धूम थी २ भांगा पंचमें विकल्प करि कहै छै —

८१	१	२ रत्न, २ धूम, १ तम
८२	२	२ रत्न, २ धूम १ तमतमा

हिवै रत्न धूम थी २ भांगा छठै विकल्प करि कहै छै —

८३	१	३ रत्न, १ धूम, १ तम
८४	२	३ रत्न, १ धूम, १ तमतमा

ए रत्न धूम थी २ भांगा ६ विकल्प कर १२ भांगा कह्या

हिवै रत्न तम थी १ भांगो ते ६ विकल्प करि ६ भांगा हुवै तिहां रत्न तम थी १ भांगो प्रथम विकल्पे —

८५	१	१ रत्न, १ तम, ३ तमतमा

हिवै रत्न तम थी १ भांगो दूजै विकल्प करि कहै छै—

८६	१	१ रत्न २ तम, २ तमतमा

हिवै रत्न तम थी १ भांगो तीजै विकल्प करि कहै छै —

८७	१	२ रत्न, १ तम, २ तमतमा

हिवै रत्न तम थी १ भांगो चउथे विकल्प करि कहै छै —

८८	१	१ रत्न, ३ तम, १ तमतमा

हिवै रत्न तम थी १ भांगो पंचमे विकल्प करि कहै छै —

८९	१	२ रत्न, २ तम, १ तमतमा

हिवै रत्न तम थी १ भांगो छठै विकल्प करि कहै छै —

९०	१	३ रत्न, १ तम, १ तमतमा

एवं रत्न थी १५ भांगा, एक-एक विकल्प नां हुवै ते माटै ६ विकल्प करि रत्न थी ९० भांगा थया।

हिवै सक्कर थी एक-एक विकल्प नां १०-१० भांगा ते सक्कर वालु थी ४, सक्कर पंक थी ३, सक्कर धूम थी २, सक्कर तम थी १, एवं १० ते छ विकल्प करि ६० भांगा हुवै। तिहां सक्कर वालु थी ४ भांगा प्रथम विकल्प करकै कहै छै —

९१	१	१ सक्कर, १ वालुक, ३ पंक
९२	२	१ सक्कर, १ वालुक, ३ धूम
९३	३	१ सक्कर, १ वालुक, ३ तम
९४	४	१ सक्कर, १ वालुक, ३ तमतमा

हिवै सक्कर वालु थी ४ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै —

९५	१	१ सक्कर, २ वालुक, २ पंक
९६	२	१ सक्कर, २ वालुक, २ धूम
९७	३	१ सक्कर, २ वालुक, २ तम
९८	४	१ सक्कर, २ वालुक, २ तमतमा

हिवै सक्कर वालु थी ४ भांगा तीजे विकल्प करि कहै छै —

९९	१	२ सक्कर, १ वालुक, २ पंक
१००	२	२ सक्कर, १ वालुक, २ धूम
१०१	३	२ सक्कर, १ वालुक, २ तम
१०२	४	२ सक्कर, १ वालुक, २ तमतमा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवैं सक्कर वालु थी च्यार भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै —		
१०३	१	१ सक्कर, ३ वालुक, १ पंक
१०४	२	१ सक्कर, ३ वालुक, १ धूम
१०५	३	१ सक्कर, ३ वालुक, १ तम
१०६	४	१ सक्कर, ३ वालुक, १ तमतमा
हिवैं सक्कर वालु थी ४ भांगा पंचमैं विकल्प करि कहै छै—		
१०७	१	२ सक्कर, २ वालुक, १ पंक
१०८	२	२ सक्कर, २ वालुक, १ धूम
१०९	३	२ सक्कर, २ वालुक, १ तम
११०	४	२ सक्कर, २ वालुक, १ तमतमा
हिवैं सक्कर वालु थी ४ भांगा छठै विकल्प करि कहै छै		
१११	१	३ सक्कर, १ वालुक, १ पंक
११२	२	३ सक्कर, १ वालुक, १ धूम
११३	३	३ सक्कर, १ वालुक, १ तम
११४	४	३ सक्कर, १ वालुक, १ तमतमा

ए सक्कर वालु थी ४ भांगा ६ विकल्प करि २४ भांगा कह्या।

हिवैं सक्कर पंक थी ३ भांगा ते ६ विकल्प करि १८ भांगा हुवै। तिहां सक्कर पंक थी ३ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै -

११५	१	१ सक्कर, १ पंक, ३ धूम
११६	२	१ सक्कर, १ पंक, ३ तम
११७	३	१ सक्कर, १ पंक, ३ तमतमा
हिवैं सक्कर पंक थी ३ भांगा दूजैं विकल्प करि कहै छै -		
११८	१	१ सक्कर, २ पंक, २ धूम
११९	१	१ सक्कर, २ पंक, २ तम
१२०	३	१ सक्कर, २ पंक, २ तमतमा
हिवैं सक्कर पंक थी ३ भांगा तीजैं विकल्प करि कहै छै --		
१२१	१	२ सक्कर, १ पंक, २ धूम
१२२	२	२ सक्कर, १ पंक, २ तम
१२३	३	२ सक्कर, १ पंक, २ तमतमा
हिवैं सक्कर पंक थी ३ भांगा चोथे विकल्प करि कहै छै —		
१२४	१	१ सक्कर, ३ पंक, १ धूम
१२५	२	१ सक्कर, ३ पंक, १ तम
१२६	३	१ सक्कर, ३ पंक, १ तमतमा
हिवैं सक्कर पंक थी ३ भांगा पंचमें विकल्प करि कहै छै -		
१२७	१	२ सक्कर, २ पंक, १ धूम
१२८	२	२ सक्कर, २ पंक, १ तम
१२९	३	२ सक्कर, २ पंक, १ तमतमा
हिवैं सक्कर पंक थी ३ भांगा छठे विकल्प करि कहै छै -		
१३०	१	३ सक्कर, १ पंक, १ धूम
१३१	२	३ सक्कर, १ पंक, १ तम
१३२	३	३ सक्कर, १ पंक, १ तमतमा

ए सक्कर पंक थी ३ भांगा ६ विकल्प करि १८ भांगा कह्या। हिवै सक्कर धूम थी २ भांगा, ते छह विकल्प करि १२ भांगा हुवै। तिहां सक्कर धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै —

१३३	१	१ सक्कर, १ धूम, ३ तम
१३४	२	१ सक्कर, १ धूम, ३ तमतमा
हिवैं सक्कर धूम थी २ भांगा दूजैं विकल्प करि कहै छै -		
१३५	१	१ सक्कर, २ धूम, २ तम
१३६	२	१ सक्कर, २ धूम, २ तमतमा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवैं सक्कर धूम थी २ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै —

१३७	१	२ सक्कर, १ धूम, २ तम
१३८	२	२ सक्कर, १ धूम, २ तमतमा

हिवैं सक्कर धूम थी २ भांगा चोथे विकल्प करि कहै छै —

१३९	१	१ सक्कर, ३ धूम, १ तम
१४०	२	१ सक्कर, ३ धूम, १ तमतमा

हिवैं सक्कर धूम थी २ भांगा पंचमें विकल्प करि कहै छै —

१४१	१	२ सक्कर, २ धूम १ तम
१४२	१	२ सक्कर, २ धूम, १ तमतमा

हिवैं सक्कर धूम थी २ भांगा छठे विकल्प करि कहै छै

१४३	१	३ सक्कर, १ धूम, १ तम
१४४	२	३ सक्कर, १ धूम, १ तमतमा

ए सक्कर धूम थी २ भांगा ६ विकल्प कर १२ भांगा कह्या ।

हिवैं सक्कर तम थी १ भांगो ६ विकल्प करि ६ भांगा हुवैं तिहां सक्कर तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै —

१४५	१	१ सक्कर, १ तम, ३ तमतमा

हिवैं सक्कर तम थी १ भांगो दूजै विकल्प करि कहै छै

१४६	१	१ सक्कर, २ तम, २ तमतमा

हिवैं सक्कर तम थी १ भांगो तीजै विकल्प करि कहै छै —

१४७	१	२ सक्कर, १ तम, २ तमतमा

हिवैं सक्कर तम थी १ भांगो चोथे विकल्प करि कहै छै —

१४८	१	१ सक्कर, ३ तम, १ तमतमा

हिवैं सक्कर तम थी १ भांगो पंचमें विकल्प करि कहै छै —

१४९	१	२ सक्कर, २ तम, १ तमतमा

हिवैं सक्कर तम थी १ भांगो छठै विकल्प करि कहै छै —

१५०	१	३ सक्कर, १ तम, १ तमतमा

ए सक्कर थी १० भांगा एक-एक विकल्प नां हुवैं, ते माटै ६ विकल्प करि सक्कर थी ६० भांगा थया ।

हिवैं वालु थी इक-इक विकल्प नां छह-छह भांगा हुवैं ते वालु पंक थी ३, वालु धूम थी २, वालु तम थी १, एवं वालु थी ६ ते छ विकल्प करि ३६ भांगा हुवैं । तिहां वालु पंक थी ३ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै —

१५१	१	१ वालुक, १ पंक, ३ धूम
१५२	२	१ वालुक, १ पंक, ३ तम
१५३	३	१ वालुक, १ पंक, ३ तमतमा

हिवैं वालु पंक थी ३ भांगा दूजे विकल्प करि कहै छै —

१५४	१	१ वालुक, २ पंक, २ धूम
१५५	२	१ वालुक, २ पंक, २ तम
१५६	३	१ वालुक, २ पंक, २ तमतमा

हिवैं वालु पंक थी ३ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै —

१५७	१	२ वालुक, १ पंक, २ धूम
१५८	२	२ वालुक, १ पंक, २ तम
१५९	३	२ वालुक, १ पंक, २ तमतमा

हिवैं वालु पंक थी ३ भांगा चौथे विकल्प करि कहै छै —

१६०	१	१ वालुक, ३ पंक, १ धूम
१६१	२	१ वालुक, ३ पंक, १ तम
१६२	३	१ वालुक, ३ पंक, १ तमतमा

हिवैं वालु पंक थी ३ भांगा पंचमें विकल्प करि कहै छै —

१६३	१	२ वालुक, २ पंक, १ धूम
१६४	२	२ वालुक, २ पंक, १ तम
१६५	३	२ वालुक, २ पंक, १ तमतमा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवैं वालु पंक थी ३ भांगा छठैं विकल्प करि कहै छै—

१६६	१	३ वालुक, १ पंक, १ धूम
१६७	२	३ वालुक, १ पंक, १ तम
१६८	३	३ वालुक, १ पंक, १ तमतमा

ए वालु पंक थी तीन भांगा ६ विकल्प करि १८ भांगा कह्या।

हिवैं वालु धूम थी २ भांगा, ते ६ विकल्प करि १२ भांगा हुवैं। तिहां वालु धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

१६९	१	१ वालुक, १ धूम, ३ तम
१७०	२	१ वालुक, १ धूम, ३ तमतमा

हिवैं वालु धूम थी २ भांगा दूजैं विकल्प करि कहै छै—

१७१	१	१ वालुक, २ धूम, २ तम
१७२	२	१ वालुक, २ धूम, २ तमतमा

हिवैं वालु धूम थी २ भांगा तीजैं विकल्प करि कहै छै—

१७३	१	२ वालुक, १ धूम, २ तम
१७४	२	२ वालुक, १ धूम, २ तमतमा

हिवैं वालु धूम थी २ भांगा चोथे विकल्प करि कहै छै—

१७५	१	१ वालुक, ३ धूम, १ तम
१७६	२	१ वालुक, ३ धूम, १ तमतमा

हिवैं वालु धूम थी २ भांगा पंचमैं विकल्प करि कहै छै—

१७७	१	२ वालुक, २ धूम, १ तम
१७८	२	२ वालुक, २ धूम, १ तमतमा

हिवैं वालु धूम थी २ भांगा छठैं विकल्प करि कहै छै—

१७९	१	३ वालुक, १ धूम, १ तम
१८०	२	३ वालुक, १ धूम, १ तमतमा

ए वालु धूम थी २ भांगा ६ विकल्प करि १२ भांगा कह्या।

हिवैं वालु तम थी १ भांगो, ते ६ विकल्प करि ६ भांगा हुवैं। तिहां प्रथम विकल्प करि कहै छैं

१८१	१	१ वालुक, १ तम, ३ तमतमा

हिवैं वालु तम थी १ भांगो दूजैं विकल्प करि कहै छै

१८२	१	१ वालुक, २ तम, २ तमतमा

हिवैं वालु तम थी १ भांगो तीजै विकल्प करि कहै छै—

१८३	१	२ वालुक, १ तम, २ तमतमा

हिवैं वालु तम थी १ भांगो चोथे विकल्प करि कहै छै—

१८४	१	१ वालुक, ३ तम, १ तमतमा

हिवैं वालु तम थी १ भांगो पंचमें विकल्प करि कहै छैं—

१८५	१	२ वालुक, २ तम, १ तमतमा

हिवैं वालुक, तम थी १ भांगो छठैं विकल्प करि कहै छैं—

१८६	१	३ वालुक, १ तम, १ तमतमा

एवं वालु थी ६ भांगा, ते ६ विकल्प करि ३६ भांगा थया।

हिवै पंक थी ३ भांगा, एक-एक विकल्प करि हुवे, ते पंक धूम थी २, पंक तम थी १ एवं पंक थी ३, छ विकल्प करि १८ भांगा हुवैं। तिहां पंक धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छैं—

१८७	१	१ पंक, १ धूम ३ तम
१८८	२	१ पंक, १ धूम, ३ तमतमा

हिवैं पंक धूम थी २ भांगा दूजे विकल्प करि कहै छै—

१८९	१	१ पंक, २ धूम, २ तम
१९०	२	१ पंक, २ धूम, २ तमतमा

हिवैं पंक धूम थी २ भांगा तीजे विकल्प करि कहै छैं—

१९१	१	२ पंक, १ धूम, २ तम
१९२	२	२ पंक, १ धूम, २ तमतमा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवैं पंक धूम थी २ भांगा चौथे विकल्प करि कहै छै —		
१९३	१	१ पंक, ३ धूम, १ तम
१९४	२	१ पंक, ३ धूम, १ तमतमा
हिवैं पंक धूम थी २ भांगा पंचमे विकल्प करि कहै छै —		
१९५	१	२ पंक, २ धूम, १ तम
१९६	२	२ पंक, २ धूम, १ तमतमा
हिवैं पंक धूम थी २ भांगा छठै विकल्प करि कहै छै —		
१९७	१	३ पंक, १ धूम, १ तम
१९८	२	३ पंक, १ धूम, १ तमतमा
ए पंक थी २ भांगा ६ विकल्प करि १२ भांगा कह्या।		
हिवैं पंक तम थी १ भांगो ते ६ विकल्प करि ६ भांगा हुवैं। तिहां पंक तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै —		
१९९	१	१ पंक, १ तम, ३ तमतमा
हिवैं पंक तम थी १ भांगो, ते दूजै विकल्प करि कहै छै —		
२००	१	१ पंक, २ तम, २ तमतमा
हिवैं पंक तम थी १ भांगो तीजै विकल्प करि कहै छै —		
२०१	१	२ पंक, १ तम, २ तमतमा
हिवैं पंक तम थी १ भांगो चोथे विकल्प करि कहै छै —		
२०२	१	१ पंक, ३ तम, १ तमतमा
हिवैं पंक तम थी १ भांगो पंचमें विकल्प करि कहै छै —		
२०३	१	२ पंक, २ तम, १तमतमा
हिवैं पंक तम थी १ भांगो छठै विकल्प करि कहै छै —		
२०४	१	३ पंक, १ तम,१ तमतमा
एवं पंक थी ३ भांगा छ विकल्प करि १८ भांगा थया।		

हिवैं धूम थी १ भांगो छ विकल्प करि कहै छै —		
२०५	१	१ धूम, १ तम, ३ तमतमा
२०६	२	१ धूम, २ तम, २ तमतमा
२०७	३	२ धूम, १ तम, २ तमतमा
२०८	४	१ धूम, ३ तम, १ तमतमा
२०९	५	२ धूम, २ तम, १ तमतमा
२१०	६	३ धूम, १ तम, १ तमतमा
ए धूम थी १ भांगो ६ विकल्प करि ६ भांगा कह्या।		
एवं पांच जीव नां त्रिकसंयोगिया नां विकल्प ६, एक-एक विकल्प नां भांगा पैंतीस-पैंतीस। रत्न थी १५, सक्कर थी १०, वालुक थी ६, पंक थी ३, धूम थी १ — एवं ३५, ते ६ विकल्प करि २१० भांगा कह्या। ते छहुं विकल्प नां रत्न थी ९०, सक्कर थी ६०, वालुक थी ३६, पंक थी १८, धूम थी ६ — एवं सर्व २१० भांगा।		

११९ नवमें शतक इकतीसम देशज, इकसौ अठंतरमीं ढाल।
भिक्षु भारिमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' संपति माल।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : १७६

दूहा

१. पंच जीव नां हिव कहूं, चौक संयोगिक चंग।
चिहु विकल्प करि तेहनां, इकसौ चालीस भंग।।

१. चतुष्कसंयोगे तु सप्तानां पञ्चत्रिंशद्विकल्पाः, पञ्चानां चतुराशितया स्थापने चत्वारो विकल्पास्तद्यथा—तदेवं पञ्चत्रिंशतश्चतुर्भिर्गुणने चत्वारिंशदधिकं शतं भवतीति। (वृ०प० ४४४)

वा०—हिवै पांच जीव नां चउकसंजोगिक, तेहनां विकल्प ४, भांगा १४०। एक-एक विकल्प नां पैंतीस-पैंतीस भांगा हुवै, ते भाटै च्यार विकल्प नां १४० हुवै। एक विकल्प नां रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालुक थी ४, पंक थी १—एवं पैंतीस भांगा हुवै। रत्न थी २० ते किसा ? रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालुक थी ६, रत्न पंक थी ३, रत्न धूम थी १—एवं रत्न थी एक-एक विकल्प नां २० भांगा हुवै। रत्न सक्कर थी १० ते किसा ? रत्न सक्कर वालुक थी ४, रत्न सक्कर पंक ३, रत्न सक्कर धूम थकी २, रत्न सक्कर तम थकी १—एवं एक-एक विकल्प नां १० भांगा हुवै। तिहां रत्न सक्कर वालु थकी ४ भांगा प्रथम विकल्प कर कहै छै—

*श्री जिन भाखै सुण गंगेया ! [ध्रुपदं]

२. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालु अवलोय जी।
पंक विषे बे जीव ऊपजै, ए धुर भांगो होय जी।
३. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालुक उपजंत।
धूमप्रभा में दोय ऊपजै, दूजो भांगो हुंत।।
४. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालुका मांय।
छट्ठी नरक बे जीव ऊपजै, तृतीय भंग कहाय।।
५. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालुक पहिछाण।
नरक सातमीं दोय ऊपजै, चोथो भांगो जाण।।

२. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो पंकप्पभाए होज्जा
३-५. एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।

हिवै रत्न सक्कर वालु थकी दूजै विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—

६. अथवा एक रत्न इक सक्कर, तीजी नरके दोय।
पंक विषे इक जीव ऊपजै, पंचम भंगो होय।।
७. अथवा एक रत्न इक सक्कर, तीजी नरके दोय।
धूमप्रभा में एक ऊपजै, छट्ठो भांगो सोय।।
८. अथवा एक रत्न इक सक्कर, वालुप्रभा में दोय।
छट्ठी नरके एक उपजतां, सप्तम भांगो सोय।
९. अथवा एक रत्न इक सक्कर, वालुप्रभा में दोय।
नरक सप्तमी इक उपजतां, अष्टम भंग अवलोय।।

६. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा
७-९. एवं जाव अहेसत्तमाए।

हिवै रत्न सक्कर वालुक थकी तीजै विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—

१०. अथवा एक रत्न बे सक्कर, वालुक मांहे एक।
एक पंक नैं विषे ऊपजै, नवमो भंगो देख।
११. अथवा एक रत्न बे सक्कर, वालुक मांहे एक।
धूमप्रभा में एक ऊपजै, दशमों भंग विशेख।।

१०. अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा
११-१३. एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

---

*लय : साधु म जाणो इण चलगत सूं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. अथवा एक रत्न बे सक्कर, वालुक मांहे एक।
नरक छट्ठी में एक ऊपजै, भंग ग्यारमों लेख॥
१३. अथवा एक रत्न बे सक्कर, वालुक मांहे एक।
एक सप्तमीं नरक ऊपजै, द्वादशमो भंग देख॥

हिवै रत्न सक्कर वालुक थकी चोथै विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—

१४. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, इक वालुक अवलोय।
पंकप्रभा में एक ऊपजै, तेरसमों भंग होय॥
१५. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक वालुक अवलोय।
धूमप्रभा में एक ऊपजै, चवदशमों भंग जोय॥
१६. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक वालुक अवलोय।
छठी नरक में एक ऊपजै, भंग पनरमों सोय॥
१७. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक वालु अवलोय।
एक सातमीं नरक ऊपजै, भंग सोलमों होय॥

हिवै रत्न सक्कर पंक थकी तीन भांगा, ते च्यार विकल्प करि बारै भांगा। तिहां प्रथम विकल्प करि ३ भांगा कहै छै—

१८. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक पंक बे धूम।
अथवा एक रत्न इक सक्कर, इक पंक बे तम ब्रूम॥
१९. अथवा एक रत्न इक सक्कर, इक पंक सप्तमी दोय।
रत्न सक्कर नैं पंक थकी त्रिण, पहिले विकल्प होय॥

हिवै रत्न सक्कर पंक थकी दूजै विकल्प करि ३ भांगा कहै छै—

२०. अथवा एक रत्न इक सक्कर, दोय पंक इक धूम।
अथवा एक रत्न इक सक्कर, बे पंक इक तम ब्रूम।
२१. अथवा एक रत्न इक सक्कर, बे पंक सप्तमी एक।
रत्न सक्कर नैं पंक थकी त्रिण, बीजै विकल्प देख॥

हिवै रत्न सक्कर पंक थकी तीजै विकल्प करि ३ भांगा कहै छै—

२२. अथवा एक रत्न बे सक्कर, एक पंक इक धूम।
अथवा एक रत्न बे सक्कर, इक पंक इक तम ब्रूम।
२३. अथवा एक रत्न बे सक्कर, इक पंक सप्तमी एक।
रत्न सक्कर नैं पंक थकी त्रिण, तीजै विकल्प लेख॥

हिवै रत्न सक्कर पंक थकी चौथे विकल्प करि ३ भांगा कहै छै—

२४. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक पंक इक धूम।
अथवा दोय रत्न इक सक्कर, इक पंक इक तम ब्रूम॥
२५. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, इक पंक सप्तमी एक।
रत्न सक्कर नैं पंक थकी त्रिण, चोथे विकल्प पेख॥

ए रत्न सक्कर पंक थकी ३ भांगा हुवै। ते च्यार विकल्प करि १२ भांगा कह्या। हिवै रत्न सक्कर नैं धूम थकी दोय भांगा च्यार विकल्प करि ८ भांगा कहै छै—

प्रथम विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

२६. अथवा एक रत्न इक सक्कर, इक धूम बे तम होय।
अथवा एक रत्न इक सक्कर, इक धूम सप्तमी दोय॥

१४. अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा

१५-१७. जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

१८. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए दो धूमप्पभाए होज्जा

१९-१०५. एवं जहा चउण्हं चउक्कसंजोगो भणिओ तहा पंचण्ह वि चउक्कसंजोगो भाणियव्वो नवरं—अब्भहियं एगो संचारेयव्वो, एवं जाव अहवा दो पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूजै विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

२७. अथवा एक रत्न इक सक्कर, बे धूम इक तम पेख।
अथवा एक रत्न इक सक्कर, बे धूम सप्तमी एक ॥

तीजै विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

२८. अथवा एक रत्न बे सक्कर, इक धूम इक तम देख।
अथवा एक रत्न बे सक्कर, इक धूम सप्तमी एक ॥

चौथे विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

२९. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, इक धूम इक तम पेख।
अथवा दोय रत्न इक सक्कर, इक धूम सप्तमी एक ॥

ए रत्न सक्कर धूम नां दोय भांगा, च्यार विकल्प करि ८ भांगा कह्या।
हिवै रत्न सक्कर तम थकी एक भांगो ४ विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—

३०. अथवा एक रत्न इक सक्कर, इक तम सप्तमी दोय।
रत्न सक्कर नैं तमा थकी ए, पहिलै विकल्प जोय।
३१. अथवा एक रत्न इक सक्कर, बे तम सप्तमी एक।
रत्न सक्कर नैं तमा थकी ए, दूजै विकल्प देख ॥
३२. अथवा एक रत्न बे सक्कर, इक तम सप्तमी एक ॥
रत्न सक्कर नैं तमा थकी ए, तीजै विकल्प लेख ॥
३३. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, इक तम सप्तमी एक।
रत्न सक्कर नैं तमा थकी ए, चौथै विकल्प पेख ॥

ए रत्न सक्कर तम थकी १ भांगो च्यार विकल्प करि ४ भांगा कह्या।
एवं रत्न सक्कर थकी १० भांगा च्यार विकल्प करि ४० भांगा कह्या।

वा०—हिवै रत्न वालु थकी छ भांगा हुवै, ते किसा ? रत्न वालु पंक थकी ३, रत्न वालू धूम थकी २, रत्न वालू तम थकी १ एवं—रत्न वालू थकी ६, ते ४ विकल्प करि चउवीस भांगा हुवै। तिहां रत्न वालु पंक थकी ३ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

३४. अथवा एक रत्न इक वालुक, एक पंक बे धूम।
अथवा एक रत्न इक वालुक, एक पंक बे तम ब्रूम ॥
४५. अथवा एक रत्न इक वालुक, इक पंक सप्तमी दोय।
रत्न वालुका पंक थकी त्रिण, धुर विकल्प ए होय ॥

दूजै विकल्प करि ३ भांगा कहै छै—

३६. अथवा एक रत्न इक वालुक, दोय पंक इक धूम।
अथवा एक रत्न इक वालुक, बे पंक इक तम ब्रूम ॥
३७. अथवा एक रत्न इक वालुक, बे पंक सप्तमी एक।
रत्न वालुक नैं पंक थकी त्रिण, दूजै विकल्प देख ॥

तीजै विकल्प करि ३ भांगा कहै छै—

३८. अथवा एक रत्न बे वालुक, एक पंक इक धूम।
अथवा एक रत्न बे बालुक, इक पंक इक तम ब्रूम ॥
३९. अथवा एक रत्न बे वालुक, इक पंक सप्तमी एक।
रत्न वालुक नैं पंक थकी त्रिण, तीजै विकल्प लेख ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोथे विकल्प करि ३ भांगा कहै छै—

४०. अथवा दोय रत्न इक वालुक, एक पंक एक धूम।
अथवा दोय रत्न इक वालुक, इक पंक इक तम धूम ।।
४१. अथवा दोय रत्न इक वालुक, इक पंक सप्तमी एक।
रत्न वालुक नें पंक थकी त्रिण, चोथै विकल्प लेख ।।

हिवै रत्न वालुक नें धूम थकी २ भांगा ४ विकल्प करि आठ भांगा कहै छै। प्रथम विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

४२. अथवा एक रत्न इक वालुक, इक धूम बे तम होय।
अथवा एक रत्न इक वालुक, इक धूम सप्तमी दोय ।।

दूजै विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

४३. अथवा एक रत्न इक वालुक, बे धूम इक तम पेख।
अथवा एक रत्न इक वालुक, बे धूम सप्तमी एक।

तीजै विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

४४. अथवा एक रत्न बे वालुक,इक धूम इक तम पेख।
अथवा एक रत्न बे वालुक, इक धूम सप्तमी एक ।।

चोथे विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

४५. अथवा दोय रत्न इक वालुक, इक धूम इक तम पेख।
अथवा दोय रत्न इक वालुक, इक धूम सप्तमी एक ।।

ए रत्न वालुक धूम थकी २ भांगा ४ विकल्प करि आठ भांगा कह्या।
हिवै रत्न वालुक तमा थकी १ भांगो हुवै, ते ४ विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—

४६. अथवा एक रत्न इक वालुक, इक तम सप्तमी दोय।
रत्न वालुक नें तमा थकी ए, पहिलै विकल्प होय।
४७. अथवा एक रत्न इक वालुक, बे तम सप्तमी एक।
रत्न वालुका तमा थकी ए, दूजै विकल्प पेख ।।
४८. अथवा एक रत्न बे वालुक, इक तम सप्तमी एक।
रत्न वालुका तमा थकी ए, तीजै विकल्प लेख ।।
४९. अथवा दोय रत्न इक वालुक, इक तम सप्तमी एक।
रत्न वालुका तमा थकी ए, चोथै विकल्प देख ।।

ए रत्न वालुक तम थकी एक भांगो हुवै ते च्यार विकल्प करि ४ भांगा कह्या। एवं रत्न वालुक थकी छ भांगा हुवै, ते ४ विकल्प करि २४ भांगा कह्या।

वा०—हिवै रत्न पंक थकी तीन भांगा हुवै ते किसा ? रत्न पंक धूम थकी २ भांगा, रत्न पंक तम थकी १ भांगो, एवं रत्न पंक थकी ३ भांगा हुवै। ते च्यार विकल्प करि १२ भांगा कहै छै। तिणमें प्रथम रत्न पंक धूम थकी २ भांगा च्यार विकल्प करि हुवै, ते कहै छै—

५०. अथवा एक रत्न इक पंके, इक धूम बे तम होय।
अथवा एक रत्न इक पंके, इक धूम सप्तमी दोय ।।

दूजै विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

५१. अथवा एक रत्न इक पंके, बे धूम इक तम पेख।
अथवा एक रत्न इक पंके, बे धूम सप्तमी एक ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीजै विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

५२. अथवा एक रत्न बे पंके, इक धूम इक तम पेख।
अथवा एक रत्न बे पंके, इक धूम सप्तमी एक।।

चोथे विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

५३. अथवा दोय रत्न इक पंके, इक धूम इक तम पेख।
अथवा दोय रत्न इक पंके, इक धूम सप्तमी एक।।

ए रत्न पंक नें धूम थकी बे भांगा ४ विकल्प करि ८ भांगा कह्या।

हिवै रत्न पंक तम थकी एक भांगो, ४ विकल्प करि च्यार भांगा कहै छै—

५४. अथवा एक रत्न इक पंके, इक तम सप्तमी दोय।
रत्न पंक नें तमा थकी ए, पहिलै विकल्प होय।।

५५. अथवा एक रत्न इक पंके, बे तम सप्तमी एक।
रत्न पंक नें तमा थकी ए, दूजै विकल्प देख।।

५६. अथवा एक रत्न बे पंके, इक तम सप्तमी एक।
रत्न पंक नें तमा थकी ए, तीजै विकल्प पेख।।

५७. अथवा दोय रत्न इक पंके, इक तम सप्तमी एक।
रत्न पंक नें तमा थकी ए, चोथै विकल्प लेख।।

ए रत्न पंक तम थकी एक भांगो ४ विकल्प करि कह्यो। एवं रत्न पंक थकी तीन भांगा ४ विकल्प करि १२ भांगा कह्या।

हिवै रत्न धूम थी १ भांगो ४ विकल्प करि कहै छै—

५८. अथवा एक रत्न इक धूमा, इक तम सप्तमी दोय।
रत्न धूम थकी एक भांगो, पहिलै विकल्प होय।।

५९. अथवा एक रत्न इक धूमा, बे तम सप्तमी एक।
रत्न धूम थी ए इक भांगो, दूजै विकल्प देख।।

६०. अथवा एक रत्न बे धूमा, इक तम सप्तमी एक।
रत्न धूम थी ए इक भांगो, तीजै विकल्प पेख।।

६१. अथवा दोय रत्न इक धूमा, इक तम सप्तमी एक।
रत्न धूम थी ए इक भांगो, चोथै विकल्प लेख।।

ए रत्न धूम थी १ भांगो च्यार विकल्प करि ४ भांगा कह्या। एवं रत्न थी २० भांगा च्यार विकल्प करि ८० भांगा थया।

हिवै सक्कर थी १० भांगा एक-एक विकल्प नां हुवै ते किसा ? सक्कर वालु थी ६, सक्कर पंक थी ३, सक्कर धूम थी १ एवं १० भांगा सक्कर थी हुवै। सक्कर वालु थी ६ ते किसा ? सक्कर वालु पंक थी ३, सक्कर वालु धूम थी २ सक्कर वालु तम थी १, एवं ६ भांगा सक्कर वालु थी एक-एक विकल्प नां हुवै। तिहां सक्कर वालु पंक थी तीन भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

६२. अथवा एक सक्कर इक वालुक, एक पंक बे धूम।
अथवा इक सक्कर इक वालुक, इक पंक बे तम भूम।।

६३. अथवा एक सक्कर इक वालुक, इक पंक सप्तमी दोय।
सक्कर वालुक नें पंक थकी त्रिण, धुर विकल्प करि होय।।

६४. अथवा इक सक्कर इक वालुक, दोय पंक इक धूम।
अथवा इक सक्कर इक वालुक बे पंक इक तम भूम।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६५. अथवा इक सक्कर इक वालुक, बे पंक सप्तमी एक।
सक्कर वालुका पंक थकी त्रिण, दूजै विकल्प देख॥
६६. अथवा इक सक्कर बे वालुक, एक पंक इक धूम।
अथवा इक सक्कर बे वालुक, इक पंक इक तम ध्रूम।
६७. अथवा इक सक्कर बे वालुक, इक पंक सप्तमी एक।
सक्कर वालुक नें पंक थकी त्रिण, तीजै विकल्प पेख॥
६८. अथवा बे सक्कर इक वालुक, एक पंक इक धूम।
अथवा बे सक्कर इक वालुक, इक पंक इक तम ध्रूम॥
६९. अथवा बे सक्कर इक वालुक, इक पंक सप्तमी एक।
सक्कर वालुका पंक थकी त्रिण, चोथै विकल्प लेख॥

ए सक्कर वालुक पंक थी ३ भांगा ४ विकल्प करि १२ भांगा कह्या।
हिवै सक्कर वालुक धूम थी २ भांगा ४ विकल्प करि आठ भांगा हुवै, ते कहै छै—

७०. अथवा इक सक्कर इक वालुक, इक धूम बे तम होय।
अथवा इक सक्कर इक वालुक, इक तम सप्तमी दोय॥

दूजै विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

७१. अथवा इक सक्कर इक वालुक, बे धूम इक तम पेख।
अथवा इक सक्कर इक वालुक, बे तम सप्तमी एक॥

तीजै विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

७२. अथवा इक सक्कर बे वालुक, इक धूम इक तम पेख।
अथवा इक सक्कर बे वालुक, इक तम सप्तमी एक॥

चोथे विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

७३. अथवा बे सक्कर इक वालुक, इक धूम इक तम लेख।
अथवा बे सक्कर इक वालुक, इक धूम सप्तमीं एक॥

ए सक्कर वालु धूम थकी २ भांगा ४ विकल्प करि ८ भांगा कह्या।
हिवै सक्कर वालु तम थी १ भांगो ४ विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—

७४. अथवा इक सक्कर इक वालुक, इक तम सप्तमी दोय।
सक्कर वालुक नें तमा थकी ए, पहिलै विकल्प होय॥
७५. अथवा इक सक्कर इक वालुक, बे तम सप्तमी एक।
सक्कर वालुका तमा थकी ए, दूजै विकल्प देख॥
७६. अथवा इक सक्कर बे वालुक, इक तम सप्तमी एक।
सक्कर वालुका तमा थकी ए, तीजै विकल्प लेख॥
७७. अथवा बे सक्कर इक वालुक, इक तम सप्तमो एक।
सक्कर वालुका तमा थकी ए, चोथै विकल्प पेख॥

हिवै सक्कर पंक थकी तीन भांगा एक-एक विकल्प नां हुवै, ते किसा? सक्कर पंक धूम थकी २, सक्कर पंक तम थकी १, एवं ३। सक्कर पंक थकी ४ विकल्प नां १२ भांगा हुवै, ते कहै छै—

७८. अथवा इक सक्कर इक पंके, इक धूम बे तम होय॥
अथवा इक सक्कर इक पंके, इक धूम सप्तमी दोय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७९. अथवा इक सक्कर इक पंके, बे धूम इक तम पेख।
अथवा इक सक्कर इक पंके, बे धूम सप्तमी एक ॥
८०. अथवा इक सक्कर बे पंके, इक धूम इक तम पेख।
अथवा इक सक्कर बे पंके, इक धूम सप्तमी एक ॥
८१. अथवा बे सक्कर इक पंके, इक धूम इक तम पेख।
अथवा बे सक्कर इक पंके, इक तम सप्तमी एक ॥

हिवै सक्कर पंक तम थकी १ भांगो ४ विकल्प करि कहै छै—

८२. अथवा इक सक्कर इक पंके, इक तम सप्तमी दोय।
सक्कर पंक नें तमा थकी ए, पहिलै विकल्प होय ॥
८३. अथवा इक सक्कर इक पंके, बे तम सप्तमी एक ॥
सक्कर पंक नें तमा थकी ए, दूजै विकल्प देख ॥
८४. अथवा इक सक्कर बे पंके, इक तम सप्तमीं एक।
सक्कर पंक नें तमा थकी ए, तीजै विकल्प पेख ॥
८५. अथवा बे सक्कर इक पंके, इक तम सप्तमी एक।
सक्कर पंक नें तमा थकी ए, चोथै विकल्प लेख ॥

हिवै सक्कर धूम तम थकी चिउं विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—

८६. अथवा इक सक्कर इक धूमा, इक तम सप्तमी दोय।
सक्कर धूम थकी ए भांगो, पहिलै विकल्प होय ॥
८७. अथवा इक सक्कर इक धूमा, बे तम सप्तमी एक।
सक्कर धूम थकी ए भांगो, दूजै विकल्प देख।
८८. अथवा इक सक्कर बे धूमा, इक तम सप्तमी एक ॥
सक्कर धूम ए भांगो, तीजै विकल्प पेख ॥
८९. अथवा बे सक्कर इक धूमा, इक तम सप्तमी एक।
सक्कर धूम थकी ए भांगो, चोथै विकल्प लेख ॥

हिवैं वालु थकी एक-एक विकल्प नां च्यार-च्यार भांगा हुवै, ते किसा ? वालु पंक थकी ३, वालु धूम थकी १, एवं वालु थकी ४ भांगा। वालु पंक थकी ३, ते किसा ? वालु पंक धूम थकी २, वालु पंक तम थकी १, एवं वालु पंक थकी ३ भांगा। तिहां प्रथम वालु पंक धूम थकी २ भांगा ४ विकल्प करि आठ भांगा कहै छ—

९०. अथवा इक वालुक इक पंके, इक धूम बे तम होय।
अथवा इक वालुक इक पंके, इक धूम सप्तमी दोय ॥
९१. अथवा इक वालु इक पंके, बे धूम इक तम पेख ॥
अथवा इक वालु इक पंके, बे धूम सप्तमीं एक ॥
९२. अथवा इक वालुक बे पंके, इक धूम इक तम पेख।
अथवा इक वालुक बे पंके, इक तम सप्तमीं एक ॥
९३. अथवा बे वालुक इक पंके, इक धूम इक तम देख।
अथवा बे वालुक इक पंके, इक तम सप्तमीं एक ॥

हिवै वालु पंक नै तमा थकी एक भांगो ४ विकल्प करि कहै छै—

९४. अथवा इक वालुक इक पंके, इक तम सप्तमीं दोय।
वालु पंक नें तमा थकी ए, पहिलै विकल्प होय ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९५. अथवा इक वालुक इक पंके, बे तम सप्तमी एक ।।
वालुक पंक नैं तमा थकी ए, दूजै विकल्प देख।
९६. अथवा इक वालुक बे पंके, इक तम सप्तमीं एक ।
वालुक पंक नैं तमा थकी ए, तीजै विकल्प देख ।।
९७. अथवा बे वालुक इक पंके, इक तम सप्तमीं एक।
वालु पंक नै तमा थकी ए, चोथै विकल्प लेख ।।

हिवै वालुक धूम थकी एक भांगो ४ विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—

९८. अथवा इक वालुक इक धूमा, इक तम सप्तमी दोय।
वालु धूम थकी ए भांगो, पहिलै विकल्प होय ।।
९९. अथवा इक वालु इक धूमा, बे तम सप्तमी एक ।
वालुक धूम थकी ए भांगो, दूजै विकल्प देख ।।
१००. अथवा इक वालुक बे धूमा, इक तम सप्तमी एक।
वालुक धूम थकी ए भांगो, तीजै विकल्प पेख ।।
१०१. अथवा बे वालुक इक धूमा, इक तम सप्तमी एक।
वालु धूम थकी ए भांगो, चोथै विकल्प लेख ।।

हिवै पंक थी एक भांगो ४ विकल्प करि कहै छै—

१०२. अथवा इक पंके इक धूमा, इक तम सप्तमीं दोय।
पंक नरक थी ए इक भांगो, पहिलै विकल्प होय ।।
१०३. अथवा इक पंके इक धूमा, बे तम सप्तमीं एक ।।
पंक नरक थी ए इक भांगो, दूजै विकल्प देख ।।
१०४. अथवा इक पंके बे धूमा, इक तम सप्तमीं एक ।।
पंक नरक थी ए इक भांगो, तीजै विकल्प लेख ।।
१०५. अथवा बे पंके इक धूमा, इक तम सप्तमीं एक।
पंक नरक थी ए इक भांगो, चोथै विकल्प पेख ।।

एवं पंक थकी एक भांगो ४ विकल्प करि ४ भांगा कह्या। एवं रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालुक थी ४, पंक थी १, एवं ३५ एक विकल्प नां हुवै, ते च्यार विकल्प नां १४० पांच जीव नां च्यार संजोगिया भांगा थया ।

दूहा

१०६. एक एक फुन एक बे, ए धुर विकल्प जोय।
एक एक वलि दोय इक, दूजै विकल्प होय ।।
१०७. एक दोय नें एक इक, विकल्प तृतीय विशेख ।।
दोय एक फुन एक एक, विकल्प तुर्य[1] संपेख ।।
१०८. *नवम शतक नो देश बतीसम, सौ गुणग्रासीमीं ढाल।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' मंगलमाल ।।

---

*लय: साधु म जाणो इण चल गत सूं

१. पांच जीवां रा चउकसंजोगिया ४ विकल्प:—

१, १, १, २ प्रथम विकल्प ।
१, १, २, १ द्वितीय विकल्प ।
१, २, १, १ तृतीय विकल्प ।
२, १, १, १ तुर्य विकल्प ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंच जीव नां चउकसंयोगिक नां विकल्प च्यार। एक-एक विकल्प नां पैंतीस-पैंतीस भांगा हुवै। च्यारूं विकल्प नां १४०। तिहां रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालुक थी ४, पंक थी १, एवं पैंतीस एक-एक विकल्प नां हुवै। रत्न थी २०, ते किसा? रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालु थी ६, रत्न पंक थी ३, रत्न धूम थी १, एवं रत्न थी २०। रत्न सक्कर थी दश, ते किसा? रत्न सक्कर वालु थी ४, रत्न सक्कर पंक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी २, रत्न सक्कर तम थी १, एवं रत्न सक्कर थी १० एक एक विकल्प नां हुवै। तिहां रत्न सक्कर वालु थी ४ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

१	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पंक
२	२	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ धूम
३	३	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ तम
४	४	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ सातमी

हिवै रत्न सक्कर वालुक थी ४ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै—

५	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पंक
६	२	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ धूम
७	३	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ तम
८	४	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ सातमीं

हिवै रत्न सक्कर वालुक थी ४ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै—

६	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक
१०	२	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ धूम
१०	३	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ तम
१२	४	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ सातमीं

हिवै रत्न सक्कर वालुक थी ४ भांगा चौथे विकल्प करि कहै छै—

१३	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक
१४	२	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ धूम
१५	३	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ तम
१६	४	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ सातमीं

ए रत्न सक्कर वालु थी ४ विकल्प करि १६ भांगा कह्या। हिवै रत्न सक्कर पंक थी ४ विकल्प करि ३ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

१७	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, २ धूम
१८	२	१ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, २ तम
१९	३	१ रत्न, १ सक्कर, १ पंक २ सातमीं

हिवै रत्न सक्कर पंक थी दूजै विकल्प करि ३ भांगा कहै छै—

२०	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ पंक, १ धूम
२१	२	१ रत्न, १ सक्कर, २ पंक, १ तम
२२	३	१ रत्न, १ सक्कर, २ पंक १ सातमीं

हिवै रत्न सक्कर पंक थी ३ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै—

२३	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ धूम
२४	२	१ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ तम
२५	३	१ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ सातमीं

हिवै रत्न सक्कर पंक थी ३ भांगा चौथे विकल्प करि कहै छै—

२६	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ धूम
२७	२	२ रत्न, १ सक्कर, १पंक, १ तम
२८	३	२ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ सातमीं

ए रत्न सक्कर पंक थी ३ भांगा ४ विकल्प करि १२ भांगा कह्या।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवैं रत्न सक्कर धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

२६	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, २ तम
३०	२	१ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, २ सातमीं

हिवैं रत्न सक्कर धूम थी २ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै —

३१	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ धूम, १ तम
३२	२	१ रत्न, १ सक्कर, २ धूम, १ सातमीं

हिवैं रत्न सक्कर धूम थी २ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै—

३३	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ धूम, १ तम
३४	२	१ रत्न, २ सक्कर, १ धूम, १ सातमीं

हिवैं रत्न सक्कर धूम थी २ भांगा चोथै विकल्प करि कहै छै—

३५	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, १ तम
३६	२	२ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, १ सातमीं

ए रत्न सक्कर धूम थी ४ विकल्प करि ८ भांगा कह्या।
हिवैं रत्न सक्कर तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै —

३७	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ तम, २ सातमीं

हिवैं रत्न सक्कर तम थी १ भांगो दूजै विकल्प करि कहै छै —

३८	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ तम, १ सातमीं

हिवैं रत्न सक्कर तम थी १ भांगो तीजै विकल्प करि कहै छै —

३९	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ तम, १ सातमीं

हिवैं रत्न सक्कर तम थी १ भांगो चोथै विकल्प करि कहै छै —

४०	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ तम, १ सातमीं

ए रत्न सक्कर तम थी १ भांगो च्यार विकल्प करि ४ भांगा कह्या। एवं रत्न सक्कर थी १० भांगा ४ विकल्प करि ४० भांगा थया।

हिवैं रत्न वालु थी ६ भांगा, ते किसा ? रत्न वालु पंक थी ३, रत्न वालु धूम थी २, रत्न वालु तम थी १. एवं ६।
हिवैं रत्न वालुक पंक थी ३ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

४१	१	१ रत्न, १ वालुक, १ पंक, २ धूम
४२	२	१ रत्न, १ वालुक, १ पंक, २ तम
४३	३	१ रत्न १ वालुक, १ पंक, २ सातमीं

हिवैं रत्न वालुक पंक थी ३ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै—

४४	१	१ रत्न, १ वालुक २ पंक, १ धूम
४५	२	१ रत्न, १ वालुक, २ पंक, १ तम
४६	३	१ रत्न, १ वालुक, २ पंक, १ सातमीं

हिवैं रत्न वालुक पंक थी ३ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै —

४७	१	१ रत्न, २ वालुक, १ पंक, १ धूम
४८	२	१ रत्न, २ वालुक, १ पंक, १ तम
४९	३	१ रत्न, २ वालुक, १ पंक, १ सातमीं

हिवैं रत्न वालुक पंक थी ३ भांगा चोथै विकल्प करि कहै छै

५०	१	२ रत्न, १ वालुक, १ पंक, १ धूम
५१	२	२ रत्न, १ वालुक, १ पंक, १ तम
५२	३	२ रत्न, १ वालुक, १ पंक, १ सातमीं

ए रत्न वालुक पंक थी ४विकल्प करि १२ भांगा कह्या।
हिवैं रत्न वालुक धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

५३	१	१ रत्न, १ वालुक, १ धूम, २ तम
५४	२	१ रत्न, १ वालुक, १ धूम, २ सातमीं

हिवैं रत्न वालुक धूम थी २ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै —

५५	१	१ रत्न, १ वालुक, २ धूम, १ तम
५६	२	१ रत्न, १ वालुक, २ धूम, १ सातमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै रत्न वालुक धूम थी २ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै—

५७	१	१ रत्न, २ वालुक, १ धूम, १ तम
५८	२	१ रत्न, २ वालुक, १ धूम, १ सातमीं

हिवै रत्न वालुक धूम थी २ भांगा चोथे विकल्प करि कहै छै —

५९	१	२ रत्न, १ वालुक, १ धूम १ तम
६०	२	२ रत्न, १ वालुक, १ धूम, १ सातमीं

ए रत्न वालुक धूम थी ४ त्रिकल्प करि ८ भांगा कह्या।

हिवै रत्न वालुक तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—

६१	१	१ रत्न, १ वालुक, १तम, २ सातमीं

हिवै रत्न वालु तम थी १ भांगो दूजै विकल्प करि कहै छै—

६२	१	१ रत्न, १ वालुक, २ तम, १ सातमीं

हिवै रत्न वालुक तम थी १ भांगो तीजै विकल्प करि कहै छै —

६३	१	१ रत्न, २ वालुक, १ तम, १ सातमीं

हिवै रत्न वालुक तम थी १ भांगो चोथे विकल्प करि कहै छै

६४	१	२ रत्न, १ वालुक, १ तम, १ सातमीं

ए रत्न वालुक तम थी १ भांगो ४ त्रिकल्प करि ४ भांगा कह्या। एवं रत्न वालुक थकी ६ भांगा ४ विकल्प करिकै २४ भांगा कह्या।

हिवै रत्न पंक थी ३ भांगा, ते किसा ? रत्न पंक धूम थी २, रत्न पंक तम थी १। तिहां रत्न पंक धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

६५	१	१ रत्न, १ पंक, १ धूम, २ तम
६६	२	१ रत्न, १ पंक, १ धूम, २ तमतमा

रत्न पंक धूम थी २ भांगा द्वितीय विकल्प करि कहै छै —

६७	१	१ रत्न, १ पंक, २ धूम, १ तम
६८	२	१ रत्न, १ पंक, २ धूम, १ तमतमा

रत्न पंक धूम थी २ भांगा तृतीय विकल्प करि कहै छै —

६९	१	१ रत्न, २ पंक, १ धूम, १ तम
७०	२	१ रत्न, २ पंक, १ धूम, १ तमतमा

रत्न पंक धूम थी २ भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै —

७१	१	२ रत्न, १ पंक, १ धूम, १ तम
७२	२	२ रत्न, १ पंक, १ धूम, १ तमतमा

हिवै रत्न पंक तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै —

७३	१	१ रत्न, १ पंक, १ तम, २ तमतमा

हिवै रत्न पंक तम थी १ भांगो दूजै विकल्प करि कहै छै -

७४	१	१ रत्न, १ पंक, २ तम, १ तमतमा

हिवै रत्न पंक तम थी १ भांगो तीजै विकल्प करि कहै छै—

७५	१	१ रत्न २ पंक, १तम, २ तमतमा

हिवै रत्न पंक तम थी १ भांगो चउथे विकल्प करि कहै छै

७६	१	२ रत्न, १ पंक, १ तम, १ तमतमा

ए रत्न पंक थी ३ भांगा ४ विकल्प करि १२ भांगा कह्या।

हिवै रत्न धूम तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै -

७७	१	१ रत्न, १ धूम, १ तम, २ तमतमा

हिवै रत्न धूम तम थी १ भांगो दूजै विकल्प करि कहै छै—

७८	१	१ रत्न, १ धूम, २ तम, १ तमतमा

हिवै रत्न धूम तम थी १ भांगो तीजै विकल्प करि कहै छै

७९	१	१ रत्न, २ धूम, १ तम, १ तमतमा

हिवै रत्न धूम तम थी १ भांगो चउथे विकल्प करि कहै छै -

८०	१	२ रत्न, १ धूम, १ तम, १ तमतमा

ए रत्न धूम तम थी १ भांगो ४ विकल्प करि कह्यो।
एवं रत्न थी २० भांगा च्यार विकल्प करि ८० भांगा कह्या।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै सक्कर थी १० एक-एक विकल्प करि हुवै, ते सक्कर वालुक थी ६, सक्कर पंक थी ३, सक्कर धूम थी १, एवं १० । हिवै सक्कर वालुक थी ६, ते किसा ? सक्कर वालु पंक थी ३, सक्कर वालु धूम थी २, सक्कर वालु तम थी १ एवं सक्कर वालु थी ६ । ते च्यार विकल्प करि २४ भांगा हुवै । हिवै सक्कर वालु पंक थी ३ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

८१	१	१ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ धूम
८२	२	१ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ तम
८३	३	१ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ तमतमा

हिवै सक्कर वालु पंक थी ३ भांगा दूजे विकल्प करि कहै छै—

८४	१	१ सक्कर, १ वालु, २ पंक, १ धूम
८५	२	१ सक्कर, १ वालु, २ पंक, १ तम
८६	३	१ सक्कर, १ वालु, २ पंक, १ तमतमा

हिवै सक्कर वालु पंक थी ३ भांगा तीजे विकल्प करि कहै छै—

८७	१	१ सक्कर, २ वालु, १ पंक, १ धूम
८८	२	१ सक्कर, २ वालु, १ पंक, १ तम
८९	३	१ सक्कर, २ वालु, १ पंक, १ तमतमा

हिवै सक्कर वालु पंक थी ३ भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै

९०	१	२ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम
९१	२	२ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ तम
९२	३	२ सक्कर, १ धूम, १ पंक, १ तमतमा

हिवै सक्कर वालु धूम थी २ भांगा प्रथक विकल्प करि कहै छै—

९३	१	१ सक्कर, १ वालु, १ धूम, २ तम
९४	२	१ सक्कर, १ वालु, १ धूम, २ तमतमा

हिवै सक्कर वालु धूम थी २ भांगा द्वितीय विकल्प करि कहै छै

९५	१	१ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम
९६	२	१ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तमतमा

हिवै सक्कर वालु धूम थी २ भांगा तृतीय विकल्प करि कहै छै

९७	१	१ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ तम
९८	२	१ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ तमतमा

हिवै सक्कर वालु धूम थी २ भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै

९९	१	२ सक्कर, १ वालु, १ धूम, १ तम
१००	२	२ सक्कर, १ वालु, १ धूम, १ तमतमा

ए सक्कर वालु धूम थी २ भांगा च्यार विकल्प करि ८ भांगा कह्या ।

हिवै सक्कर धूम तम थी १ भांगो ते ४ विकल्प करि ४ भांगा कहै छै । हिवै सक्कर धूम तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—

१०१	१	१ सक्कर, १ धूम, १ तम, २ तमतमा

हिवै सक्कर धूम तम थी १ भांगो द्वितीय विकल्प करि कहै छै—

१०२	१	१ सक्कर, १ धूम, २ तम, १ तमतमा

हिवै सक्कर धूम तम थी १ भांगो तृतीय विकल्प करि कहै छै

१०३	१	१ सक्कर, २ धूम, १ तम, १ तमतमा

हिवै सक्कर धूम तम थी १ भांगो चउथे विकल्प करि कहै छै—

१०४	१	२ सक्कर, १ धूम, १ तम, १ तमतमा

ए सक्कर वालुक थी ६ भांगा ४ विकल्प करि २४ भांगा कह्या । सक्कर पंक थी ३ भांगा एक एक विकल्प करि हुवै, ते किसा? सक्कर पंक धूम थी २, सक्कर पंक तम थी १, तिहां सक्कर पंक धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

१०५	१	१ सक्कर, १ पंक, १ धूम, २ तम
१०६	२	१ सक्कर, १ पंक, १ धूम, २ तमतमा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै सक्कर पंक धूम थी २ भांगा दुजै विकल्प करि कहै छै

१०७	१	१ सक्कर, १ पंक, २ धूम, १ तम
१०८	२	१ सक्कर, १ पंक, २ धूम, १ तमतमा

हिवै सक्कर पंक धूम थी २ भांगा तृतीय विकल्प करि कहै छै –

१०९	१	१ सक्कर, २ पंक, १ धूम, १ तम
११०	२	१ सक्कर, २ पंक, १ धूम, १ तमतमा

हिवै सक्कर पंक धूम थी २ भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै -

१११	१	२ सक्कर, १ पंक, १ धूम, १ तम
११२	२	२ सक्कर, १ पंक, १ धूम, १ तमतमा

हिवै सक्कर पंक तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै –

११३	१	१ सक्कर, १ पंक, १ तम, २ तमतमा

हिवै सक्कर पंक तम थी १ भांगो द्वितीय विकल्प करि कहै छै —

११४	१	१ सक्कर, १ पंक, २ तम, १ तमतमा

हिवै सक्कर पंक तम थी १ भांगो तृतीय विकल्प करि कहै छै —

११५	१	१ सक्कर, २ पंक, १ तम, १ तमतमा

हिवै सक्कर पंक तम थी १ भांगो चउथे विकल्प करि कहै छै -

११६	१	२ सक्कर, १ पंक, १ तम, १ तमतमा

एवं सक्कर पंक थी ३ भांगा ४ विकल्प करि १२ भांगा कह्या।
हिवै सक्कर धूम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै —

११७	१	१ सक्कर, १ धूम, १ तम, २ तमतमा

हिवै सक्कर धूम थी १ भांगो द्वितीय विकल्प करि कहै छै —

११८	१	१ सक्कर, १ धूम, २ तम, १ तमतमा

हिवै सक्कर धूम थी १ भांगो तृतीय विकल्प करि कहै छै -

११९	१	१ सक्कर, २ धूम, १ तम, १ तमतमा

हिवै सक्कर धूम थी १ भांगो चउथे विकल्प करि कहै छै –

१२०	१	२ सक्कर, १ धूम, १ तम, १ तमतमा

एवं सक्कर थी १० भांगा ४ विकल्प करि ४० भांगा कह्या।

हिवै वालु थी ४ भांगा एक-एक विकल्प करि हुवै, ते वालु पंक थी ३, वालु धूम थी १। हिवै वालु पंक थी ३, ते किसा? वालु पंक धूम थी २, वालु पंक तम थी १, एवं वालु पंक थी ३ एक-एक विकल्प करि हुवै। तिहां वालु पंक धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

१२१	१	१ वालु, १ पंक, १ धूम, २ तम
१२२	२	१ वालु, १ पंक, १ धूम, २ तमतमा

हिवै वालु पंक धूम थी २ भांगा द्वितीय विकल्प करि कहै छै

१२३	१	१ वालु, १ पंक, २ धूम, १ तम
१२४	२	१ वालु, १ पंक, २ धूम, १ तमतमा

हिवै वालु पंक धूम थी २ भांगा तृतीय विकल्प करि कहै छै

१२५	१	१ वालु, २ पंक, १ धूम, १ तम
१२६	२	१ वालु, २ पंक, १ धूम, १ तमतमा

हिवै वालु पंक धूम थी २ भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै

१२७	१	२ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम
१२८	२	२ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तमतमा

हिवै वालु पंक तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै

१२९	१	१ वालु, १ पंक, १ तम, २ तमतमा

हिवै वालु पंक तम थी १ भांगो द्वितीय विकल्प करि कहै छै -

१३०	१	१ वालु, १ पंक, २ तम, १ तमतमा

हिवै वालु पंक तम थी १ भांगो तृतीय विकल्प करि कहै छै –

१३१	१	१ वालु, २ पंक, १ तम, १ तमतमा

हिवै वालु पंक तम थी १ भांगो चउथे विकल्प करि कहै छै—

१३२	१	२ वालु, १ पंक, १ तम, १ तमतमा

ए वालु पंक थी ३ भांगा ४ विकल्प करि १२ भांगा कह्या।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै वालु धूम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै —		
१३३	१	१ वालु, १ धूम, १ तम, २ तमतमा
हिवै वालु धूम थी १ भांगो द्वितीय विकल्प करि कहै छै —		
१३४	१	१ वालु, १ धूम, २ तम, १ तमतमा
हिवै वालु धूम थी १ भांगो तृतीय विकल्प करि कहै छै —		
१३५	१	१ वालु, २ धूम, १ तम, १ तमतमा
हिवै वालु धूम थी १ भांगो चउथे विकल्प करि कहै छै —		
१३६	१	२ वालु, १ धूम, १ तम, १ तमतना
ए वालु धूम थी १ भांगो ४ विकल्प करि ४ भांगा कह्या । एवं वालु थी ४ भांगा ४ विकल्प करि १६ भांगा कह्या ।		
हिवै पंक थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै —		
१३७	१	१ पंक, १ धूम १ तम, २ तमतमा
हिवै पंक थी १ भांगो द्वितीय विकल्प करि कहै छै —		
१३८	१	१ पंक, १ धूम, २ तम, १ तमतमा
हिवै पंक थी १ भांगो तृतीय विकल्प करि कहै छै —		
१३९	१	१ पंक, २ धूम, १ तम, १ तमतमा
हिवै पंक थी एक भांगो चउथे विकल्प करि कहै छै —		
१४०	१	२ पंक, १ धूम, १ तम, १ तमतमा
ए पंक थी १ भांगो ४ विकल्प करि ४ भांगा कह्या ।		
एवं रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालुक थी ४, पंक थी १, ए पैंतीस भांगा एक विकल्प नां हुवै, ते पांच जीव नां चौक-संजोगिया ४ विकल्प करि १४० भांगा कह्या । ए पांच जीव नां इकसंजोगिया ७, द्विकसंजोगिया ८४, त्रिकसंजोगिया २१०, चौकसंजोगिया १४० । एवं सर्व ४४१ भांगा कह्या । हिवै पांचसंजोगिया इकवीस भांगा आगल कहिसै ।		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा

१. पांच जीव नां हिव कहूं, पंचसंयोगिक भंग।
एकवीस इक विकल्पे, आखूं आण उमंग ॥

१. पञ्चकयोगे त्वेकविंशतिरिति। (वृ०प० ४४४)

२. *पनर भांगा रत्न सेती, पंच सक्कर थी भणो।
वालुक थी इक पंचयोगिक, भंग इकवीसै गिणो ॥

वा०—प्रथम रत्न थी १५, ते किसा? रत्न सक्कर थकी १०, रत्न वालु थकी ४, रत्न पंक थकी १—एवं १५। हिवै रत्न सक्कर थी १०, ते किसा ? रत्न सक्कर वालुक थकी ६, रत्न सक्कर पंक थकी ३, रत्न सक्कर धूम थकी १ एवं रत्न सक्कर थी १०। ते दशां मांहै रत्न सक्कर वालु थकी ६ किसा ? रत्न सक्कर वालुक पंक थी ३, रत्न सक्कर वालुक धूम थी २, रत्न सक्कर वालु तम थी १-एवं रत्न सक्कर वालुक थी ६ भांगा हुवै, ते कहै छै—

†वीर कहै गंगेया ! सुणे। (ध्रुपदं)

३. तथा एक रत्न इक सक्करे, एक वालु इक पंक। गंगेया !
इक जीव धूमप्रभा विषे, ए धुर भंग अवंक। गंगेया !

३. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा,

४. अथवा एक रत्न इक सक्करे, एक वालु इक पंक।
एक तमा में ऊपजै, ए भंग द्वितीय निसंक ॥

४. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा।

५. तथा एक रत्न इक सक्करे, एक वालु इक पंक।
इक जीव नारकि सप्तमी, ए भंग तृतीय कथंक ॥

५. अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भांगा कहै छै—

६. तथा एक रत्न इक सक्करे, एक वालुक इक धूम।
एक तमा में ऊपजै, भंग चतुर्थो ब्रूम ॥

६. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा।

७. तथा एक रत्न इक सक्करे, एक वालु इक धूम।
इक जीव नारकि सप्तमी, ए भंग पंचम ब्रूम ॥

७. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

हिवै रत्न सक्कर वालुक तम थी एक भांगो कहै छै—

८. तथा एक रत्न इक सक्करे, एक वालु तम एक।
एक तमतमा नें विषे, षष्टम भंग संपेख ॥

८. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,

ए रत्न सक्कर वालुक थी ६ भांगा कह्या।
हिवै रत्न सक्कर पंक थी ३ भांगा कहै छै—

९. तथा एक रत्न इक सक्करे, एक पंक इक धूम।
एक तमा में ऊपजै, ए भंग सप्तम ब्रूम ॥

९. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा

१०. तथा एक रत्न इक सक्करे, एक पंक इक धूम।
इक जीव नारकि सप्तमी, ए भंग अष्टम ब्रूम ॥

१०. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

११. तथा एक रत्न इक सक्करे, एक पंक तम एक।
इक जीव नारकि सप्तमी, ए भंग नवम विशेख ॥

११. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

* लय : पूज मोटा भांजै तोटा

† लय : शिवपुर नगर सुहामणो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै रत्न सक्कर धूम थी १ भांगो कहै छै—

१२. तथा एक रत्न इक सक्करे, एक धूम तम एक।
इक जीव नारकि सप्तमी, ए भंग दशम उवेख॥

१२. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

ए रत्न सक्कर धूम थी १ भांगो कह्यो। एवं रत्न सक्कर थी १० भांगा थया।

हिवै रत्न वालुक थी च्यार भांगा कहै छै—ते किसा ? रत्न वालुय पंक थी ३, रत्न वालुय धूम थी १। तिण में रत्न वालुय पंक थी ३, ते किसा ? रत्न वालुय पंक धूम थी २ अनैं रत्न वालुय पंक तम थी १—एवं रत्न वालुय पंक थी ३। तिहां रत्न वालुय पंक धूम थी २ भांगा, ते कहै छै—

१३. तथा एक रत्न एक वालुका, एक पंक उपजंत।
इक धूम एक तमा विषे, भंग इग्यारमों तंत॥

१३. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा

१४. तथा एक रत्न इक वालुका, एक पंक उपजेह।
एक धूम इक सप्तमीं, द्वादशमो भंग एह॥

१४. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

ए रत्न वालुय पंक धूम थी २ भांगा कह्या।

हिवै रत्न वालु पंक तम थी १ भांगो कहै छै—

१५. तथा एक रत्न इक वालुका, एक पंक अवलोय।
एक तमा इक सप्तमीं, तेरसमो भंग जोय॥

१५. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

ए रत्न वालुय पंक थी ३ भांगा कह्या।

हिवै रत्न वालुय धूम थी १ भांगो कहै छै—

१६. तथा एक रत्न इक वालुका, एक धूम आख्यात।
एक तमा इक सप्तमीं, चउदशमो भंग थात॥

१६. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

ए रत्न वालुय थी ४ भांगा कह्या।

हिवै रत्न पंक थी १ भांगो कहै छै—

१७. तथा एक रत्न इक पंक में, एक धूम रै मांय।
एक तमा इक सप्तमी, भंग पनरमो पाय॥

१७. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा

ए रत्न थी १५ भांगा कह्या।

हिवै सक्कर थी ५ भांगा कहै छै, तिणमें रत्न पांचूं मेंइं टालणी अनें एकेक नरक पश्चानुपूर्वी करकै टालणी—

१८. तथा एक सक्कर इक वालुका, एक पंक पहिछाण।
एक धूम नैं इक तमा, सोलसमो भंग जाण॥

१८. अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा,

ए सोलमें भांगे सातमीं टली।

१९. तथा एक सक्कर इक वालुका, एक पंक अवलोय।
एक धूम इक सप्तमी, सतरसमो भंग जोय॥

१९. अहवा एगे सक्करप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

ए सतरमें भांगे छठी नरक टली।

२०. तथा एक सक्कर इक वालुका, एक पंक आख्यात।
एक तमा इक सप्तमीं, भंग अठारम थात॥

२० अहवा एगे सक्करप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

इहां अठारमें भांगे पंचमी नरक टली।

२१. तथा एक सक्कर इक वालुका, एक धूम उपजंत।
एक तमा इक सप्तमी, उगणीसम भंग तंत॥

२१. अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ए उगणीसमें भांगे चउथी नरक टली।

२२. तथा एक सक्कर इक पंक में, एक धूम रै मांय।
एक तमा इक सप्तमीं, वीसमों भंग कहाय।।

ए वीसमें भांगे तीजी नरक टली। ए सक्कर थी ५ भांगा कह्या।
हिवै वालु थी १ भांगो कहै छै—

२३. तथा एक वालुक इक पंक में, एक धूम एक तम।
एक सप्तमी ऊपजै, ए भंग इकवीसम।।

२४. पंचसंयोगिक ए कह्या, इकवीस भंग विचार।
विकल्प एक अछै तसु, ए वच यंत्र[1] मझार।।

२५. *पनर रत्न थी पंच सक्कर थी, वालुक थी इक देखियै।
पंच योगिक भंग ए, इकवीस ही इम लेखियै।।

२६. पनर रत्न थी तेह इहविध, दश रत्न सक्कर थकी।
रत्न वालू थी चिहुं अरु, रत्न पंक थी इक नकी।।

२७. रत्न सक्कर थकी दश इम, षट रत्न सक्कर वालु हुंती।
रत्न सक्कर पंक थी त्रिण, इक रत्न सक्कर धूम थी।।

२८. रत्न सक्कर वालु थी षट, तेह इहविध कीजियै।
रत्न सक्कर वालु पंक थी, भंग तीन भणीजियै।।

२९. रत्न सक्कर वालु धूम थी, दोय भांगा आणियै।
रत्न सक्कर वालु तम थी, भंग एक बखाणियै।।

३०. रत्न सक्कर वालु थी षट, प्रथम इहविध लीजियै।
एम नारकि आगली पिण, पूर्व उक्तज कीजियै।।

३१. पंच जीव नां इकसंयोगिक, सप्त भांगा जाणियै।
द्विकसंयोगिक च्यार विकल्प, चोरासी भंग आणियै।।

३२. त्रिकसंयोगिक षट विकल्पे, दोयसौ दश भंग कह्या।
चउ संयोगिक च्यार विकल्प, इक सौ चाली भंग लह्या।।

३३. पंच संयोगिक एक विकल्प, भंग इकवीसे भण्या।
च्यार सौनैं बासठ रुगला, भंग संख्या करि गिण्या।।

३४. †शत नवम बतीसम देश ए, एक सौ असीमी ढाल। सयाणां!
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' मंगल माल।। सयाणां!
(जय-जय ज्ञान जिनेंद्र नों।)

२२. अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

२३. अहवा एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा। (श० ९।९२)

३३. सर्वमीलने च चत्वारि शतानि द्विषष्ट्यधिकानि भवन्तीति। (वृ० प० ४४४)

१. यह धर्मसी यंत्र की सूचना है।
*लय : पूज मोटा भांजै तोटा
†लय : शिवपुर नगर सुहामणो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंच जीव नां पंचसंयोगिक तेहनों विकल्प १, भांगा इकवीस। तिहां रत्न थी १५, सक्कर थी ५, वालुक थी १—एवं २१। रत्न थी १५, ते किसा ? रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालु थी ४, रत्न पंक थी १—एवं रत्न थी १५। ते पनरां में रत्न सक्कर थी १०, ते किसा ? रत्न सक्कर वालुक थी ६, रत्न सक्कर पंक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी १—एवं रत्न सक्कर थी १०। ते दशां में रत्न सक्कर वालुक थी ६, ते किसा ? रत्न सक्कर वालुक पंक थी ३, रत्न सक्कर वालुक धूम थी २, रत्न सक्कर वालुक तम थी १—एवं रत्न सक्कर वालुक थी ६। ते छ भांगा में प्रथम रत्न सक्कर वालुक पंक थी ३ भांगा कहै छै—

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
१	१	१	१	१	१	१	०	०
२	२	१	१	१	१	०	१	०
३	३	१	१	१	१	०	०	१

ए रत्न सक्कर वालुक पंक थी ३ भांगा कह्या।
हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भांगा कहै छै—

४	१	१	१	१	०	१	१	०
५	२	१	१	१	०	१	०	१

हिवै रत्न सक्कर वालुक तम थी १ भांगो कहै छै—

६	१	१	१	१	०	०	१	१

ए रत्न सक्कर वालुक थी ६ भांगा कह्या।
हिवै रत्न सक्कर पंक थी ३ भांगा, ते किसा ? रत्न सक्कर पंक धूम थी २, रत्न सक्कर पंक तम थी १। तिहां रत्न सक्कर पंक धूम थी २ भांगा कहै छै—

७	१	१	१	०	१	१	१	०
८	२	१	१	०	१	१	०	१

हिवै रत्न सक्कर पंक तम थी १ भांगो कहै छै—

९	१	१	१	०	१	०	१	१

ए रत्न सक्कर पंक थी ३ भांगा कह्या।
हिवै रत्न सक्कर धूम थी १ भांगो कहै छै—

१०	१	१	१	०	०	१	१	१

ए रत्न सक्कर थी १० भांगा कह्या।

हिवै रत्न वालु थी ४ भांगा, ते किसा? रत्न वालुक पंक थी ३, रत्न वालुक धूम थी १, तिणमें रत्न वालुक पंक थी ३, ते किसा ? रत्न वालु पंक धूम थी २, रत्न वालुक पंक तम थी १, तिहां रत्न वालुक पंक धूम थी २ भांगा कहै छै—

		र	स	वा	पं	धू	त	तम
११	१	१	०	१	१	१	१	०
१२	२	१	०	१	१	१	०	१

हिवै रत्न वालुक पंक तम थी १ भांगो कहै छै—

१३	१	१	०	१	१	०	१	१

ए रत्न वालुक पंक थी ३ भांगा कह्या।

हिवै रत्न वालुक धूम थी १ भांगो कहै छै—

१४	१	१	०	१	०	१	१	१

ए रत्न वालुक थी ४ भांगा कह्या।

हिवै रत्न पंक थी १ भांगो कहै छै—

१५	१	१	०	०	१	१	१	१

एवं रत्न थी १५ भांगा कह्या।

हिवै सक्कर थी ५ भांगा कहै छै—

१६	१	०	१	१	१	१	१	०
१७	२	०	१	१	१	१	०	१
१८	३	०	१	१	१	०	१	१
१९	४	०	१	१	०	१	१	१
२०	५	०	१	०	१	१	१	१

ए सक्कर थी ५ भांगा कह्या।

हिवै वालुक थी १ भांगो कहै छै—

२१	१	०	०	१	१	१	१	१

ए पंच जीव नां पंचसंजोगिया रत्न थी १५, सक्कर थी ५, वालुक थी १—एवं २१ भांगा जाणवा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : १८१

दूहा

१. हे भदंत ! षट नेरइया, नरक-प्रवेशण काल।
रत्नप्रभा में स्यूं हुवै, प्रश्न पूर्ववत न्हाल ।।
२. जिन कहै गंगेया ! सुणे, छहूं रत्न उपजंत।
अथवा षट सक्कर मझे, तथा वालुक षट हुंत ।।
३. अथवा पंक विषेज षट, अथवा षट ह्वै धूम।
अथवा षट तम वलि तथा, षट तमतमाज ब्रूम ।।
४. इकसंयोगिक आखिया, भांगा ए इम सात।
इक विकल्प करि ओलखो, वारू विध अवदात ।।

	र	स	वा	पं	धू	त	तम
१	६	०	०	०	०	०	०
२	०	६	०	०	०	०	०
३	०	०	६	०	०	०	०
४	०	०	०	६	०	०	०
५	०	०	०	०	६	०	०
६	०	०	०	०	०	६	०
७	०	०	०	०	०	०	६

हिवै ६ जीव नां द्विकसंयोगिक तेहनां विकल्प ५ भांगा १०५ कहै छै—

५. द्विकयोगिक षट जीव नां, विकल्प पंच विशेष।
भांगा एक सौ पंच है, कहियै तेह अशेष ।।
*वीर कहै गंगेया ! सुणे। (ध्रुपदं)
६. अथवा इक ह्वै रत्न में, पंच सक्कर में पेखो रे।
अथवा इक ह्वै रत्न में, पंच वालुका देखो रे ।।
७. अथवा इक ह्वै रत्न में, पंच पंक रै मांही।
अथवा इक ह्वै रत्न में, पंच धूम कहिवाई ।।
८. अथवा इक ह्वै रत्न में, पच तमा पहिछाणी।
अथवा इक ह्वै रत्न में, पंच तमतमा जाणी ।।
ए रत्न थी प्रथम विकल्प करि ६ भांगा कह्या।

दूजै विकल्प करि ६ भांगा कहै छै —

९. तथा दोय ह्वै रत्न में, चिउ सक्कर अवलोयो।
जाव तथा दोय रत्न में, च्यार सप्तमी होयो ।।

१. छब्भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा।

२,३. गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

४. इहैकत्वे सप्त (वृ०प०४४५)

५. द्विकयोगे तु षण्णां द्वित्वे पञ्च विकल्पाः स्तद्यथा— १५।२४।३३।४२।५१। तैश्च सप्तपद-द्विकसंयोगएकविंशतेर्गुणनात् पञ्चोत्तरं भङ्गकशतं भवति। (वृ० प० ४४५)

६. अहवा एगे रयणप्पभाए पंच सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए पंच वालुयप्पभाए होज्जा

७,८. जाव अहवा एगे रयणप्पभाए पंच अहेसत्तमाए होज्जा।

९. अहवा दो रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा।

*लय : बात म काढो वरत नी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीजै विकल्प करि ६ भांगा कहै छै—

१०. तथा तीन ह्वै रत्न में, त्रिण सक्कर में चीनो।
जाव तथा त्रिण रत्न में, हुवै सप्तमी तीनो॥

चउथे विकल्प करि ६ भांगा कहै छै—

११. तथा च्यार ह्वै रत्न में, बे सक्कर अधखानो।
जाव तथा चिउ रत्न में, दोय तमतमा जानो॥

पंचमें विकल्प करि ६ भांगा कहै छै—

१२. तथा पांच ह्वै रत्न में, इक सक्कर दुखदायो।
जाव तथा पंच रत्न में, एक सप्तमी मांह्यो॥

ए रत्न थी ६ भांगा पांच विकल्प करि ३० भांगा कह्या।
हिवै सक्कर थी ५ भांगा ५ विकल्प करि २५ भांगा कहै छै—

१३. अथवा एक सक्कर ह्वै, पंच वालुका पेखो।
जाव तथा इक सक्करे, पंच तमतमा लेखो॥

१४. तथा दोय ह्वै सक्करे, च्यार वालुका मांही।
जाव तथा बे सक्करे, च्यार सप्तमी थाई॥

१५. तथा तीन ह्वै सक्करे, तीन वालुका होयो।
जाव तथा तीन सक्करे, तीन सप्तमी जोयो॥

१६. तथा च्यार ह्वै सक्करे, दोय वालुका जाणो।
जाव तथा चिउ सक्करे, दोय सप्तमी आणो॥

१७. तथा पांच ह्वै सक्करे, इक वालुक आख्यातो।
जाव तथा पंच सक्करे, एक तमतमा पातो॥

हिवै वालुक थकी ४ भांगा ५ विकल्प करि कहै छै—

१८. तथा एक ह्वै वालुका, पंच पंक में पेखो।
जाव तथा इक वालुका, पंच सप्तमी लेखो॥

१९. तथा दोय ह्वै वालुका, च्यार पंक रै मांह्यो।
जाव तथा बे वालुका, च्यार सप्तमी जायो॥

२०. तथा तीन ह्वै वालुका, तीन पंक दुखत्रासो।
तथा जाव तीन वालुका, तीन सप्तमी वासो॥

२१. तथा च्यार ह्वै वालुका, दोय पंक पहिछाणी।
जाव तथा च्यार वालुका, दोय सप्तमी जाणी॥

२२. तथा पांच ह्वै वालुका, एक पंक अवलोयो।
जाव तथा पंच वालुका, एक सप्तमी होयो॥

ए वालुक थकी ४ भांगा पांच विकल्प कर २० भांगा कह्या।
हिवै पंक थकी ३ भांगा पांच विकल्प करि कहै छै—

२३. तथा एक ह्वै पंक में, पंच धूम अघखानी।
जाव तथा इक पंक में, पंच सप्तमी जानी॥

२४. तथा दोय ह्वै पंक में, च्यार धूम पहिछानी।
जाव तथा बे पंक में, च्यार तमतमा जानी॥

२५. तथा तीन ह्वै पंक में, तीन धूम में तेहो।
जाव तथा त्रिण पंक में, तीन सप्तमी जेहो॥

१०-३५. अहवा तिण्णि रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए। एवं एएणं कमेणं जहा पचण्हं दुयासंजोगो तहा छण्ह वि भाणियव्वो, नवरं—एक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो जाव अहवा पंच तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६. तथा च्यार ह्वै पंक में, दोय धूम में देखो।
जाव तथा चिउं पंक में, दोय तमतमा पेखो॥
२७. तथा पंच ह्वै पंक में, एक धूम आख्यातो।
जाव तथा पंच पंक में, एक सप्तमी पातो।
ए पंक थकी ३ भांगा ५ विकल्प करि १५ भांगा कह्या।
हिवै धूम थी २ भांगा ५ विकल्प करि कहै छै—
२८. तथा एक ह्वै धूम में, पंच तमा दुखपूरो।
तथा एक ह्वै धूम में, पंच सप्तमी भूरो॥
२९. तथा दोय ह्वै धूम में, च्यार तमा रै मांह्यो।
तथा दोय ह्वै धूम में, च्यार सप्तमी जायो॥
३०. तथा तीन ह्वै धूम में, तीन तमा उपजंतो।
तथा तीन ह्वै धूम में, तीन सप्तमी हुंतो॥
३१. तथा च्यार ह्वै धूम में, दोय तमा में देखो।
तथा च्यार ह्वै धूम में, दोय सप्तमी पेखो॥
३२. तथा पंच ह्वै धूम में, एक तमा अवलोयो।
तथा पंच ह्वै धूम में, एक सप्तमी होयो॥
ए धूम थी २ भांगा ५ विकल्प करि १० भांगा कह्या।
हिवै तमा थी १ भांगो ५ विकल्प करि कहै छै—
३३. अथवा इक ह्वै तम मझै, पंच तमतमा पेखो।
अथवा दोय छठी विषे, च्यार सप्तमी लेखो॥
३४. तथा तीन छट्ठी विषे, तीन सप्तमी मांह्यो।
अथवा च्यार हुवै तमा, दोय तमतमा पायो॥
३५. अथवा पंच हुवै तमा, एक सप्तमी होयो।
ए विकल्प है पंचमो, तमा थकी अवलोयो॥

ए तमा थकी १ भांगो ५ विकल्प करि ५ भांगा कह्या। रत्न थी ६, सक्कर थी ५, बालु थी ४, पंक थी ३, धूम थी २, तम थी १—एवं २१ भांगा एक-एक विकल्प करि हुवै। ६ जीव नां ५ विकल्प करि द्विकसंजोगिया १०५ भांगा। हिवै एहनों यंत्र।

१।५, २।४, ३।३, ४।२, ५।१ छ जीव नां द्विकसंजोगिया ए ५ विकल्प।

छ जीव नां द्विकसंयोगिक नां विकल्प ५ भांगा १०५। तिहां रत्न थी ६ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

१	१	१ रत्न, ५ सक्कर,
२	२	१ रत्न, ५ वालुक
३	३	१ रत्न, ५ पंक
४	४	१ रत्न, ५ धूम
५	५	१ रत्न, ५ तम
६	६	१ रत्न, ५ सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै रत्न थी ६ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै—

७	१	२ रत्न, ४ सक्कर
८	२	२ रत्न, ४ वालुक
९	३	२ रत्न, ४ पंक
१०	४	२ रत्न, ४ धूम
११	५	२ रत्न, ४ तम
१२	६	२ रत्न, ४ सप्तमीं

हिवै रत्न थी ६ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै —

१३	१	३ रत्न, ३ सक्कर
१४	२	३ रत्न, ३ वालुक
१५	३	३ रत्न, ३ पंक
१६	४	३ रत्न, ३ धूम
१७	५	३ रत्न, ३ तम
१८	६	३ रत्न, ३ सप्तमी

हिवै रत्न थी ६ भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै—

१९	१	४ रत्न, २ सक्कर
२०	२	४ रत्न, २ वालुक
२१	३	४ रत्न, २ पंक
२२	४	४ रत्न, २ धूम
२३	५	४ रत्न, २ तम
२४	६	४ रत्न, २ सप्तमीं

हिवै रत्न थी ६ भांगा पंचमें विकल्प करि कहै छै —

२५	१	५ रत्न, १ सक्कर
२६	२	५ रत्न, १ वालुक
२७	३	५ रत्न, १ पंक
२८	४	५ रत्न, १ धूम
२९	५	५ रत्न, १ तम
३०	६	५ रत्न, १ सप्तमीं

एवं रत्न थी ६, पंच विकल्प करि ३० भांगा कह्या।

हिवै सक्कर थी ५ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै —

३१	१	१ सक्कर, ५ वालु
३२	२	१ सक्कर, ५ पंक
३३	३	१ सक्कर, ५ धूम
३४	४	१ सक्कर, ५ तम,
३५	५	१ सक्कर, ५ सप्तमीं

सक्कर थी ५ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै —

३६	१	२ सक्कर, ४ वालु,
३७	२	२ सक्कर, ४ पंक
३८	३	२ सक्कर, ४ धूम
३९	४	२ सक्कर, ४ तम
४०	५	२ सक्कर, ४ सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै सक्कर थी ५ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै—

४१	१	३ सक्कर, ३ वालुक
४२	२	३ सक्कर, ३ पंक
४३	३	३ सक्कर, ३ धूम
४४	४	३ सक्कर, ३ तम
४५	५	३ सक्कर, ३ सप्तमीं

हिवै सक्कर थी ५ भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै -

४६	१	४ सक्कर, २ वालु
४७	२	४ सक्कर, २ पंक
४८	३	४ सक्कर, २ धूम
४९	४	४ सक्कर, २ तम
५०	५	४ सक्कर, २ सप्तमीं

हिवै सक्कर थी ५ भांगा पंचमें विकल्प करि कहै छै--

५१	१	५ सक्कर, १ वालु
५२	२	५ सक्कर, १ पंक
५३	३	५ सक्कर, १ धूम
५४	४	५ सक्कर, १ तम
५५	५	५ सक्कर, १ सप्तमीं

एवं सक्कर थी ५ विकल्प करि २५ भांगा कह्या।

हिवै वालुक थी ४ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै --

५६	१	१ वालुक, ५ पंक
५७	२	१ वालुक, ५ धूम
५८	३	१ वालुक, ५ तम
५९	४	१ वालुक, ५ सप्तमीं

हिवै वालु थी ४ भांगो दूजै विकल्प करि कहै छै—

६०	१	२ वालुक, ४ पंक
६१	२	२ वालुक, ४ धूम
६२	३	२ वालुक, ४ तम
६३	४	२ वालुक, ४ सप्तमीं

हिवै वालु थी ४ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै—

६४	१	३ वालुक, ३ पंक
६५	२	३ वालुक, ३ धूम
६६	३	३ वालुक, ३ तम
६७	४	३ वालुक, ३ सप्तमीं

हिवै वालु थी ४ भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै --

६८	१	४ वालुक, २ पंक
६९	२	४ वालुक, २ धूम
७०	३	४ वालुक, २ तम
७१	४	४ वालुक, २ सप्तमीं

हिवै वालु थी ४ भांगा पंचमे विकल्प करि कहै छै --

७२	१	५ वालुक, १ पंक
७३	२	५ वालुक, १ धूम
७४	३	५ वालुक, १ तम
७५	४	५ वालुक, १ सप्तमीं

एवं वालुक थी ४ भांगा पंच विकल्प करि २० भांगा कह्या।

हिवै पंक थी ३ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै --

७६	१	१ पंक, ५ धूम
७७	२	१ पंक, ५ तम
७८	३	१ पंक, ५ सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै पंक थी ३ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै –

७९	१	२ पंक, ४ धूम
८०	२	२ पंक, ४ तम
८१	३	२ पंक, ४ सप्तमी

हिवै पंक थी ३ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै –

८२	१	३ पंक, ३ धूम
८३	२	३ पंक, ३ तम
८४	३	३ पंक, ३ सप्तमी

हिवै पंक थी ३ भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै –

८५	१	४ पंक, २ धूम
८६	२	४ पंक, २ तम
८७	३	४ पंक, २ सप्तमी

हिवै पंक थी ३ भांगा पंचमें विकल्प करि कहै छै—

८८	१	५ पंक, १ धूम
८९	२	५ पंक, १ तम
९०	३	५ पंक, १ सप्तमी

एवं पंक थी ३ विकल्प करि १५ भांगा कह्या।

हिवै धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै –

९१	१	१ धूम, ५ तम
९२	२	१ धूम, ५ सप्तमीं

हिवै धूम थी २ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै—

९३	१	२ धूम, ४ तम
९४	२	२ धूम, ४ सप्तमीं

हिवै धूम थी २ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै –

९५	१	३ धूम, ३ तम
९६	२	३ धूम, ३ सप्तमी

हिवै धूम थी २ भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै –

९७	१	४ धूम, २ तम
९८	२	४ धूम, २ सप्तमी

हिवै धूम थी २ भांगा पंचमें विकल्प करि कहै छै –

९९	१	५ धूम, १ तम
१००	२	५ धूम, १ सप्तमी

एवं धूम थी २ भांगा पंच विकल्प करि १० भांगा कह्या।

हिवै तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै –

१०१	१	१ तम, ५ सप्तमी

हिवै तम थी १ भांगो दूजै विकल्प करि कहै छै—

१०२	१	२ तम, ४ सप्तमी

हिवै तम थी १ भांगो तीजै विकल्प करि कहै छै—

१०३	१	३ तम, ३ सप्तमी

हिवै तम थी १ भांगो चउथे विकल्प करि कहै छै—

१०४	१	४ तम, २ सप्तमी

हिवै तम थी १ भांगो पंचमें विकल्प करि कहै छै –

१०५	१	५ तम, १ सप्तमी

एवं ६ जीव नां द्विकसंजोगीया भांगा २१ पंच विकल्प करि १०५ भांगा कह्या।

३३. *नवम बत्तीसम देश ए, ढाल इकसौ इक्यासी।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' परम हुलासी॥

* लय : बात म काढो वरत नी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : १८२

दूहा

१. षट नारकि नां हिव कहूं, त्रिकसंजोगिक तास।
भांगा साढा तीन सौ, दश विकल्प करि जास ॥
२. रत्न थकी पनरै हुवै, सक्कर थी दश होय।
षट वालू थी पंक त्रिण, धूम थकी इक सोय ॥
३. ए पेंतीसे भंग ते, दश विकल्प करि देख।
होवै साढा तीन सौ, कहियै छै सुविशेख ॥

हिवै १५ रत्न थी, ते किसा ? रत्न सक्कर थकी ५, रत्न वालुक थकी ४, रत्न पंक थकी ३, रत्न धूम थकी २, रत्न तम थकी १ - एवं १५ भांगा रत्न थी, ते दस विकल्प करि हुवै —

*श्री जिन भाखै सुण गंगेया ! (ध्रुपदं)

४. एक रत्न नैं एक सक्कर ह्वै, च्यार वालुका होय।
अथवा एक रत्न इक सक्कर, च्यार पंक अवलोय ॥

५. अथवा एक रत्न इक सक्कर, च्यार धूम रै मांय।
अथवा एक रत्न इक सक्कर, च्यार तमा दुख पाय ॥
६. अथवा एक रत्न इक सक्कर, च्यार सप्तमीं होय।
रत्न सक्कर थी ए पंच भंगा, धुर विकल्प करि सोय ॥
७. अथवा एक रत्न बे सक्कर, तीन वालुका होय।
अथवा एक रत्न बे सक्कर, तीन पंक अवलोय ॥
८. अथवा एक रत्न बे सक्कर, तीन धूम रै मांय।
अथवा एक रत्न बे सक्कर, तीन तमा कहिवाय ॥
९. अथवा एक रत्न बे सक्कर, तीन सप्तमी होय।
रत्न सक्कर थी ए पंच भंगा, द्वितीय विकल्प जोय ॥
१०. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, तीन वालुका होय।
अथवा दोय रत्न इक सक्कर, तीन पंक अवलोय ॥
११. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, तीन धूम रै मांय।
अथवा दोय रत्न इक सक्कर, तीन तमा दुख पाय ॥
१२. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, तीन सप्तमी होय।
रत्न सक्कर थी ए पंच भंगा, तृतीय विकल्प सोय ॥
१३. अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, दोय वालुका होय।
अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, दोय पंक अवलोय ॥
१४. अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, दोय धूम रै मांय।
अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, दोय तमा दुख पाय ॥
१५. अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, दोय सप्तमी होय।
रत्न सक्कर थी ए पंच भंगा, चउथै विकल्प जोय ॥

१. त्रिकयोगे तु षण्णां त्रित्वे दश विकल्पाः एतैश्च पञ्चत्रिंशतः सप्तपदत्रिकसंयोगानां गुणनात् त्रीणि शतानि पञ्चाशदधिकानि भवन्ति। (वृ०प० ४४५)

४. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि पंकप्पभाए होज्जा।
५,६. एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा।

७-१४८. अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं जहा पंचण्हं तियासंजोगो भणिओ तहा छण्ह वि भाणियव्वो, नवरं—एक्को अहिओ उच्चारेयव्वो, सेसं तं चेव।

* लय : सीता आवै रे धर राग

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. अथवा दोय रत्न बे सक्कर, दोय वालुका होय।
अथवा दोय रत्न बे सक्कर, दोय पंक अवलोय ।।
१७. अथवा दोय रत्न बे सक्कर, दोय धूम रै मांय।
अथवा दोय रत्न बे सक्कर, दोय तमा दुख पाय ।।
१८. अथवा दोय रत्न बे सक्कर, दोय सप्तमी होय।
रत्न सक्कर थी ए पंच भंगा, पंचम विकल्प जोय ।।
१९. अथवा तीन रत्न इक सक्कर, दोय वालुका होय।
अथवा तीन रत्न इक सक्कर, दोय पंक अवलोय ।।
२०. अथवा तीन रत्न इक सक्कर, दोय धूम रै मांय।
अथवा तीन रत्न इक सक्कर, दोय तमा दुख पाय ।।
२१. अथवा तीन रत्न इक सक्कर, दोय सप्तमी होय।
रत्न सक्कर थी ए पंच भंगा, षष्टम विकल्प जोय ।।
२२. अथवा एक रत्न चिउं सक्कर, एक वालुका होय।
अथवा एक रत्न चिउं सक्कर, एक पंक अवलोय ।।
२३. अथवा एक रत्न चिउं सक्कर, एक धूम रै मांय।
अथवा एक रत्न चिउं सक्कर, एक तमा दुख पाय ।।
२४. अथवा एक रत्न चिउं सक्कर, एक सप्तमी होय।
रत्न सक्कर थी ए पंच भंगा, सप्तम विकल्प जोय ।।
२५. अथवा दोय रत्न त्रिण सक्कर, एक वालुका होय।
अथवा दोय रत्न त्रिण सक्कर, एक पंक अवलोय ।।
२६. अथवा दोय रत्न त्रिण सक्कर, एक धूम रै मांय।
अथवा दोय रत्न त्रिण सक्कर, एक तमा दुख पाय ।।
२७. अथवा दोय रत्न त्रिण सक्कर, एक सप्तमी होय।
रत्न सक्कर थी ए पंच भंगा, अष्टम विकल्प जोय ।।
२८. अथवा तीन रत्न बे सक्कर, एक वालुका होय।
अथवा तीन रत्न बे सक्कर, एक पंक अवलोय ।।
२९. अथना तीन रत्न बे सक्कर, एक धूम रै मांय।
अथवा तीन रत्न बे सक्कर, एक तमा कहिवाय ।।
३०. अथवा तीन रत्न बे सक्कर, एक सप्तमी होय।
रत्न सक्कर थी ए पंच भंगा, नवमें विकल्प जोय ।।
३१. अथवा च्यार रत्न इक सक्कर, एक वालुका जान।
अथवा च्यार रत्न इक सक्कर, एक पंक अघखान ।।
३२. अथवा च्यार रत्न इक सक्कर, एक धूम रै मांय।
अथवा च्यार रत्न इक सक्कर, एक तमा कहिवाय ।।
३३. अथवा च्यार रत्न इक सक्कर, एक सप्तमी मांय।
रत्न सक्कर थी ए पंच भंगा, दशमें विकल्प थाय ।।

ए रत्न सक्कर थी ५ भांगा १० विकल्प करि ५० भांगा कह्या।
हिवै रत्न वालुक थी ४ भांगा दश विकल्प करि ४० भांगा कहै छै—
हिवै प्रथम विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—

३४. अथवा एक रत्न इक वालुक, च्यार पंक उपजंत।
जाव तथा इक रत्न वालु इक, च्यार तमतमा हुंत ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै द्वितीय विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—

३५. अथवा एक रत्न बे वालुक, तीन पंक उपजंत।
जाव तथा इक रत्न बालु बे, तीन तमतमा हुंत ॥

हिवै तृतीय विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—

३६. अथवा दोय रत्न इक वालुक, तीन पंक अघखान।
जाव तथा बे रत्न वालु इक, तीन तमतमा जान ॥

हिवै चतुर्थ विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—

३७. अथवा एक रत्न त्रिण वालुक, दोय पंक दुख पूर।
जाव तथा इक रत्न वालु त्रिण, दोय तमतमा भूर ॥

हिवै पंचम विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—

३८. अथवा दोय रत्न वालु बे, दोय पंक पहिछान।
जाव तथा बे रत्न वालु बे, दोय तमतमा जान ॥

हिवै षष्टम विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—

३९. अथवा तीन रत्न इक वालुक, दोय पंक दुख रास।
जाव तथा त्रिण रत्न वालु इक, दोय तमतमा तास ॥

हिवै सप्तम विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—

४०. अथवा एक रत्न चिउं वालुक, एक पंक अवलोय।
जाव तथा इक रत्न वालु चिउं, एक तमतमा होय ॥

हिवै अष्टम विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—

४१. अथवा दोय रत्न त्रिण वालु, एक पंक दुख धाम।
जाव तथा बे रत्न वालु त्रिण, एक तमतमा पाम ॥

हिवै नवम विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—

४२. अथवा तीन रत्न बे वालुक, एक पंक कहिवाय।
जाव तथा त्रिण रत्न वालुक बे, एक सप्तमी जाय ॥

हिवै दशम विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—

४३. अथवा च्यार रत्न इक वालुक, एक पंक में पेख।
जाव तथा चिउं रत्न वालु इक एक सप्तमी लेख ॥

ए रत्न वालुक थी ४ भांगा दश विकल्प करि ४० भांगा कह्या।
हिवै रत्न पंक थी ३ भांगा दश विकल्प करि ३० भांगा।

हिवै प्रथम विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

४४. अथवा एक रत्न इक पंके, च्यार धूम उपजंत।
जाव तथा इक रत्न पंक इक, च्यार तमतमा हुंत ॥

हिवै द्वितीय विकल्प करि ३ भांगा कहै छै—

४५. अथवा एक रत्न बे पंके, तीन धूम रै मांय।
जाव तथा इक रत्न पंक बे, तीन तमतमा पाय ॥

हिवै तृतीय विकल्प करि ३ भांगा कहै छै—

४६. अथवा दोय रत्न इक पंके, तीन धूम अवखान।
जाव तथा दोय रत्न पंक इक, तीन तमतमा जान ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै चतुर्थ विकल्प करि ३ भांगा कहै छै—

४७. अथवा एक रत्न त्रिण पंके, दोय धूम दुखपूर।
जाव तथा इक रत्न पंक त्रिण, दोय तमतमा भूर।।

हिवै पंचम विकल्प करि ३ भांगा कहै छै—

४८. अथवा दोय रत्न बे पंके, दोय धूम पहिछान।
जाव तथा बे रत्न पंक बे, दोय तमतमा जान।।

हिवै षष्टम विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

४९. अथवा तीन रत्न इक पंके, दोय धूम दुखरास।
जाव तथा त्रिण रत्न पंक इक, दोय तमतमा तास।।

हिवै सप्तम विकल्प करि ३ भांगा कहै छै—

५०. अथवा एक रत्न चिउं पंके, एक धूम अवलोय।
जाव तथा इक रत्न पंक चिउं, एक तमतमा होय।।

हिवै अष्टम विकल्प करि ३ भांगा कहै छै—

५१. अथवा दोय रत्न त्रिण पंके, एक धूम दुखधाम।
जाव तथा बे रत्न पंक त्रिण, एक तमतमा पाम।।

हिवै नवम विकल्प करि ३ भांगा कहै छै—

५२. अथवा तीन रत्न बे पंके, एक धूम कहिवाय।
जाव तथा त्रिण रत्न पंक बे, एक सप्तमी जाय।।

हिवै दशम विकल्प करि ३ भांगा कहै छै—

५३. अथवा च्यार रत्न इक पंके, एक धूम में पेख।
जाव तथा चिउं रत्न पंक इक, एक सप्तमी लेख।।

ए रत्न पंक थी ३ भांगा दश विकल्प करि ३० भांगा कह्या।
हिवै रत्न धूम थी २ भांगा दश विकल्प करि २० भांगा।
प्रथम विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

५४. अथवा एक रत्न इक धूमा, च्यार तमा उपजंत।
अथवा एक रत्न इक धूमा, च्यार तमतमा हुंत।।

हिवै द्वितीय विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

५५. अथवा एक रत्न बे धूमा, तीन तमा रै मांय।
अथवा एक रत्न बे धूमा, तीन तमतमा जाय।।

हिवै तृतीय विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

५६. अथवा दोय रत्न इक धूमा, तीन तमा अघखान।
अथवा दोय रत्न इक धूमा, तीन तमतमा जान।।

हिवै चतुर्थ विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

५७. अथवा एक रत्न त्रिण धूमा, दोय तमा दुखपूर।
अथवा एक रत्न त्रिण धूमा, तीन तमतमा भूर।।

हिवै पंचम विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

५८. अथवा दोय रत्न बे धूमा, दोय तमा पहिछान।
अथवा दोय रत्न बे धूमा, दोय तमतमा जान।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै षष्टम विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

५९. अथवा तीन रत्न इक धूमा, दोय तमा दुखरास।
अथवा तीन रत्न इक धूमा, दोय तमतमा तास॥

हिवै सप्तम विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

६०. अथवा एक रत्न चिउं धूमा, एक तमा अवलोय।
अथवा एक रत्न चिउं धूमा, एक तमतमा होय॥

हिवै अष्टम विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

६१. अथवा दोय रत्न त्रिण धूमा, एक तमा दुखधाम।
अथवा दोय रत्न त्रिण धूमा, एक तमतमा पाम॥

हिवै नवम विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

६२. अथवा तीन रत्न बे धूमा, एक तमा कहिवाय।
अथवा तीन रत्न बे धूमा, एक सप्तमी जाय॥

हिवै दशम विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

६३. अथवा च्यार रत्न इक धूमा, एक तमा में पेख।
अथवा च्यार रत्न इक धूमा, एक सप्तमी लेख॥

ए रत्न धूम थी २ भांगा दश विकल्प करि २० भांगा कह्या।

हिवै रत्न तम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भांगा कहै छै—

६४. अथवा एक रत्न इक तमा, च्यार तमतमा: जंत।
अथवा एक रत्न बे तमा, तीन तमतमा हुंत॥

६५. अथवा दोय रत्न इक तमा, तीन तमतमा मांय।
अथवा एक रत्न त्रिण तमा, दोय तमतमा जाय॥

६६. अथवा दोय रत्न बे तमा, दोय तमतमा जोय।
अथवा तीन रत्न इक तमा, दोय तमतमा होय॥

६७. अथवा एक रत्न चिउं तमा, एक तमतमा पेख।
अथवा दोय रत्न त्रिण तमा, एक सप्तमी लेख॥

६८. अथवा तीन रत्न बे तमा, एक तमातमा मांय।
अथवा च्यार रत्न इक तमा, एक सप्तमी जाय॥

ए रत्न तम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भांगा कह्या। ए रत्न थी १५ भांगा दश विकल्प करि १५० भांगा कह्या।

हिवै सक्कर थी दश, ते किसा? सक्कर वालुक थी ४, सक्कर पंक थी ३, सक्कर धूम थी २, सक्कर तम थी १—एवं दश भांगा हुवै, ते दश विकल्प करि १०० भांगा हुवै ते कहै छै—

६९. अथवा इक सक्कर इक वालुक, च्यार पंक उपजंत।
जावत इक सक्कर इक वालुक, चिउं सप्तमी हुंत॥

हिवै द्वितीय विकल्पे ४ भांगा कहै छै—

७०. अथवा इक सक्कर बे वालुक, तीन पंक में चीन।
जावत इक सक्कर बे वालुक, अधो सप्तमी तीन॥

हिवै तृतीय विकल्पे ४ भांगा कहै छै—

७१. अथवा बे सक्कर इक वालुक, तीन पंक में लीन।
जावत बे सक्कर इक वालुक, अधो सप्तमी तीन॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै चतुर्थ विकल्पे ४ भांगा कहै छै—

७२. अथवा इक सक्कर त्रिण वालुक, दोय पंक अवलोय।
जावत इक सक्कर त्रिण वालुक, अधो सप्तमी दोय॥

हिवै पंचम विकल्पे ४ भांगा कहै छै—

७३. अथवा बे सक्कर बे वालुक, दोय पंक अवलोय।
जावत बे सक्कर बे वालुक, अधो सप्तमी दोय॥

हिवै षष्टम विकल्पे ४ भांगा कहै छै—

७४. अथवा त्रिण सक्कर इक वालुक, दोय पंक में होय।
जावत त्रिण सक्कर इक वालुक, अधो सप्तमी दोय॥

हिवै सप्तम विकल्पे ४ भांगा कहै छै—

७५. अथवा इक सक्कर चिउं वालुक, एक पंक में पेख।
जावत इक सक्कर चिउं वालुक, अधो सप्तमी एक॥

हिवै अष्टम विकल्पे ४ भांगा कहै छै—

७६. अथवा बे सक्कर त्रिण वालुक, एक पंक में पेख।
जावत इक सक्कर चिउं वालुक, अधो सप्तमी एक॥

हिवै नवम विकल्पे ४ भांगा कहै छै—

७७. अथवा त्रिण सक्कर बे वालुक, एक पंक में पेख।
जावत त्रिण सक्कर बे वालुक, अधो सप्तमी एक॥

हिवै दशम विकल्पे ४ भांगा कहै छै—

७८. अथवा चिउं सक्कर इक वालुक, एक पंक में पेख।
जावत चिउं सक्कर इक वालुक, अधो सप्तमी एक॥

ए सक्कर वालुक थी ४ भांगा दश विकल्प करि ४० भांगा कह्या।

हिवै सक्कर पंक थी ३ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

७९. अथवा इक सक्कर इक पंके, च्यार धूम उपजंत।
जावत इक सक्कर इक पंके, चिउं सप्तमी हुंत॥
८०. अथवा इक सक्कर बे पंके, तीन धूम रै मांय।
जावत इक सक्कर बे पंके, त्रिण सप्तमी जाय॥
८१. अथवा बे सक्कर इक पंके, तीन धूम अघखान।
जावत बे सक्कर इक पंके, तीन सप्तमी जान॥
८२. अथवा इक सक्कर त्रिण पंके, दोय धूम दुखरास।
जावत इक सक्कर त्रिण पंके, दोय सप्तमी तास॥
८३. अथवा बे सक्कर बे पंके, दोय धूम दुखधाम।
जावत बे सक्कर बे पंके, दोय सप्तमी पाम॥
८४. अथवा त्रिण सक्कर इक पंके, दोय धूम में पेख।
जावत त्रिण सक्कर इक पंके, दोय सप्तमी देख॥
८५. अथवा इक सक्कर चिउं पंके, एक धूम अवलोय।
जावत इक सक्कर चिउं पंके, एक सप्तमी होय॥
८६. अथवा बे सक्कर त्रिण पंके, एक धूम दुख पाय।
जावत बे सक्कर त्रिण पंके, एक सप्तमी जाय॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८७. अथवा त्रिण सक्कर बे पंके, एक धूम कहिवाय।
जावत त्रिण सक्कर बे पंके, एक सप्तमी पाय।।
८८. अथवा चिउं सक्कर इक पंके, एक धूम पहिछान।
जावत चिउं सक्कर इक पंके, एक सप्तमी जान।।

ए सक्कर पंक थी ३ भांगा दश विकल्प करि ३० भांगा कह्या।
हिवै सक्कर धूम थी २ भांगा दश विकल्प करि २० भांगा कहै छै—

८९. अथवा इक सक्कर इक धूमा, च्यार तमा उपजंत।
अथवा इक सक्कर इक धूमा, च्यार तमतमा हुंत।।
९०. अथवा इक सक्कर बे धूमा, तीन तमा रै मांय।
अथवा इक सक्कर बे धूमा, तीन तमतमा जाय।।
९१. अथवा बे सक्कर इक धूमा, तीन तमा अखखान।
अथवा बे सक्कर इक धूमा, तीन तमतमा जान।।
९२. अथवा इक सक्कर त्रिण धूमा, दोय तमा दुखपूर।
अथवा इक सक्कर त्रिण धूमा, दोय तमतमा भूर।।
९३. अथवा बे सक्कर बे धूमा, दोय तमा पहिछान।
अथवा बे सक्कर बे धूमा, दोय तमतमा जान।।
९४. अथवा त्रिण सक्कर इक धूमा, दोय तमा दुखरास।
अथवा त्रिण सक्कर इक धूमा, दोय तमतमा तास।।
९५. अथवा इक सक्कर चिउं धूमा, एक तमा अवलोय।
अथवा इक सक्कर चिउं धूमा, एक तमतमा होय।।
९६. अथवा बे सक्कर त्रिण धूमा, एक तमा दुखधाम।
अथवा बे सक्कर त्रिण धूमा, एक तमतमा पाम।।
९७. अथवा त्रिण सक्कर बे धूमा, एक तमा कहिवाय।
अथवा त्रिण सक्कर बे धूमा, एक सप्तमी जाय।।
९८. अथवा चिउं सक्कर इक धूमा, एक तमा रै मांय।
अथवा चिउं सक्कर इक धूमा, एक सप्तमी थाय।।

ए सक्कर धूम थी २ भांगा दश विकल्प करि २० भांगा कह्या।
हिवै सक्कर तम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भांगा कहै छै—

९९. अथवा इक सक्कर इक तमा, च्यार तमतमा जंत।
अथवा इक सक्कर बे तमा, तीन तमतमा हुंत।।
१००. अथवा बे सक्कर इक तमा, तीन तमतमा मांय।
अथवा इक सक्कर त्रिण तमा, दोय तमतमा ताय।।
१०१. अथवा ब सक्कर बे तमा, दोय तमतमा मांय।
अथवा त्रिण सक्कर एक तमा, दोय तमतमा जाय।।
१०२. अथवा इक सक्कर चिउं तमा, एक तमतमा देख।
अथवा बे सक्कर त्रिण तमा, एक तमतमा पेख।
१०३. अथवा त्रिण सक्कर बे तमा, एक तमतमा होय।
अथवा चिउं सक्कर इक तमा, एक तमतमा जोय।।

ए सक्कर तम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भांगा कह्या। एवं सक्कर थी १० भांगा दश विकल्प करि १०० भांगा कह्या।

हिवै वालुक थी ६ भांगा, ते किसा ? वालु पंक थी ३, वालु धूम थी २,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वालु तम थी १—एवं वालु थी ६, ते दश विकल्प करि ६० भांगा हुवै, तिहां वालु पंक थी ३ भांगा दश विकल्प करि कहै छै—

१०४. अथवा इक वालुक इक पंके, च्यार धूम उपजंत।
जावत इक वालू पंके इक, च्यार तमतमा हुंत॥
१०५. अथवा इक वालू बे पंके, तीन धूम रै मांय।
जावत इक वालू पंके बे, तीन तमतमा पाय॥
१०६. अथवा बे वालुक इक पंके, तीन धूम अघखान।
जावत बे वालू पंके इक, तीन तमतमा जान॥
१०७. अथवा इक वालुक त्रिण पंके, दोय धूम दुखपूर।
जावत इक वालू पंके त्रिण, दोय तमतमा भूर॥
१०८. अथवा बे वालुक बे पंके, दोय धूम पहिछान।
जावत बे वालू पंके बे, दोय तमतमा जान॥
१०९. अथवा त्रिण वालुक इक पंके, दोय धूम दुखरास।
जावत त्रिण वालू पंके इक, दोय तमतमा तास॥
११०. अथवा इक वालुक चिउं पंके, एक धूम अवलोय।
जावत इक वालू पंके चिउं, एक तमतमा होय॥
१११. अथवा बे वालू पंके त्रिण, एक धूम दुखधाम।
जावत बे वालू पंके त्रिण, एक तमतमा पाम॥
११२. अथवा त्रिण वालुक बे पंके, एक धूम कहिवाय।
जावत त्रिण वालू पंके बे, एक सप्तमी जाय॥
११३. अथवा चिउं वालुक इक पंके, एक धूम में पेख।
जावत चिउं वालू पंके इक, एक सप्तमी लेख॥

ए वालु पंक थी ३ भांगा दश विकल्प करि ३० भांगा कह्या।
हिवैं वालुक धूम थी २ भांगा दश विकल्प करि कहै छै—

११४. अथवा इक वालू इक धूमा, च्यार तमा उपजंत।
अथवा इक वालुक इक धूमा, च्यार तमतमा हुंत॥
११५. अथवा इक बालुक बे धूमा, तीन तमा दुख पाय।
अथवा इक वालुक बे धूमा, तीन तमतमा जाय॥
११६. अथवा बे वालुक इक धूमा, तीन तमा अघखान।
अथवा बे वालुक इक धूमा, तीन तमतमा जान॥
११७. अथवा इक वालू त्रिण धूमा, दोय तमा दुखपूर।
अथवा इक वालु त्रिण धूमा, दोय तमतमा भूर॥
११८. अथवा बे वालुक बे धूमा, दोय तमा पहिछान।
अथवा बे वालुक बे धूमा, दोय तमतमा जान॥
११९. अथवा त्रिण वालू इक धूमा, दोय तमा दुखरास।
अथवा त्रिण वालू इक धूमा, दोय तमतमा तास॥
१२०. अथवा इक वालुक चिउं धूमा, एक तमा अवलोय।
अथवा इक वालुक चिउं धूमा, एक तमतमा होय॥
१२१. अथवा बे वालुक त्रिण धूमा, एक तमा दुखधाम।
अथवा बे वालु त्रिण धूमा, एक तमतमा पाम॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२२. अथवा त्रिण वालुक बे धूमा, एक तमा कहिवाय।
अथवा त्रिण वालुक बे धूमा, एक सप्तमी जाय ।।
१२३. अथवा चिउं वालुक इक धूमा, एक तमा में पेख।
अथवा चिउं वालुक इक धूमा, एक सप्तमी लेख ।।

ए वालु धूम थी २ भांगा दश विकल्प करि २० भांगा कह्या।

हिवै वालुक तम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भांगा कहै छै—

१२४. अथवा इक वालुक इक तमा, च्यार तमतमा जंत।
अथवा इक वालू बे तमा, तीन तमतमा हुंत ।।
१२५. अथवा बे वालु इक तमा, तीन तमतमा मांय।
अथवा इक वालू त्रिण तमा, दोय तमतमा पाय ।।
१२६. अथवा बे वालू बे तमा, दोय तमतमा मांय।
अथवा त्रिण वालू इक तमा, दोय तमतमा जाय ।।
१२७. अथवा इक वालू चिउं तमा, एक तमतमा होय।
अथवा बे वालू त्रिण तमा, एक तमतमा जोय।
१२८. अथवा त्रिण वलू बे तमा, एक तमतमा पेख।
अथवा चिहुं वालू इक तमा, एक सप्तमी लेख ।।

ए वालु तम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भांगा कह्या। एवं वालुक थी ६ भांगा दश विकल्प करि ६० भांगा कह्या।

हिवै पंक थी ३ भांगा, ते किसा ? पंक धूम थी २, पंक तम थी १, तिहां पंक धूम थी २ भांगा दश विकल्प करि २० भांगा कहै छै—

१२९. अथवा एक पंक इक धूमा, च्यार तमा उपजंत।
अथवा एक पंक इक धूमा, च्यार तमतमा हुंत ।।
१३०. अथवा एक पंक बे धूमा, तीन तमा दुख पाय।
अथवा एक पंक बे धूमा, तीन तमतमा जाय ।।
१३१. अथवा दोय पंक इक धूमा, तीन तमा अवलोय।
अथवा दोय पंक इक धूमा, तीन तमतमा जोय ।।
१३२. अथवा एक पंक त्रिण धूमा, दोय तमा दुखरास।
अथवा एक पंक त्रिण धूमा, दोय तमतमा तास ।।
१३३. अथवा दोय पंक बे धूमा, दोय तमा दुखधाम।
अथवा दोय पंक बे धूमा, दोय तमतमा पाम ।।
१३४. अथवा त्रिण पंके इक धूमा, दोय तमा दुखरास।
अथवा त्रिण पंके इक धूमा, दोय तमतमा तास ।।
१३५. अथवा एक पंक चिउं धूमा, एक तमा पहिछान।
अथवा एक पंक चिउं धूमा, एक तमतमा जान ।।
१३६. अथवा दोय पंक त्रिण धूमा, एक तमा में पेख।
अथवा दोय पंक त्रिण धूमा, एक तमतमा लेख ।।
१३७. अथवा तीन पंक बे धूमा, एक तमा कहिवाय।
अथवा तीन पंक बे धूमा, एक सप्तमी जाय ।।
१३८. अथवा च्यार पंक इक धूमा, एक तमा अघखान।
अथवा च्यार पंक इक धूमा, एक तमतमा जान ।।

ए पंक धूम थी २ भांगा दश विकल्प करि २० भांगा कह्या।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै पंक तम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भांगा कहै छै—

१३९. अथवा एक पंक इक तमा, च्यार तमतमा जंत।
अथवा एक पंक बे तमा, तीन तमतमा हुंत॥
१४०. अथवा दोय पंक इक तमा, तीन तमतमा मांय।
अथवा एक पंक त्रिण तमा, दोय तमतमा जाय॥
१४१. अथवा दोय पंक बे तमा, दोय तमतमा देख।
अथवा तीन पंक इक तमा, दोय तमतमा पेख॥
१४२. अथवा एक पंक चिउं तमा, एक तमतमा देख।
अथवा दोय पंक त्रिण तमा, एक तमतमा पेख॥
१४३. अथवा तीन पंक बे तमा, एक तमतमा पाय।
अथवा च्यार पंक इक तमा, एक तमतमा जाय॥

ए पंक तम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भांगा कह्या।
ए पंक थी ३ भांगा दश विकल्प करि ३० भांगा कह्या।
हिवै धूम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भांगा कहै छै—

१४४. अथवा एक धूम इक तमा, च्यार तमतमा हुंत।
अथवा एक धूम बे तमा, तीन तमतमा जंत॥
१४५. अथवा दोय धूम इक तमा, तीन तमतमा देख।
अथवा एक धूम त्रिण तमा, दोय तमतमा पेख॥
१४६. अथवा दोय धूम बे तमा, दोय तमतमा जान।
अथवा तीन धूम इक तमा, दोय तमतमा मान॥
१४७. अथवा एक धूम चिउं तमा, एक तमतमा देख।
अथवा दोय धूम त्रिण तमा, एक तमतमा पेख॥
१४८. अथवा तीन धूम इक तमा, दोय तमतमा होय।
अथवा च्यार धूम इक तमा, एक तमतमा होय॥

ए धूम थी दस विकल्प करि १० भांगा कह्या। एवं रत्न थी १५०, सक्कर थी १००, वालुक थी ६०, पंक थी ३०, धूम थी १० सर्व त्रिकसंजोगिया छह जीव नां ३५० भांगा जाणवा।

छह जीव नां त्रिकसंजोगिया रत्न थी १५, सक्कर थी १०, वालुक थी ६, पंक थी ३, धूम थी १—एवं ३५, दश विकल्प करि ३५० भांगा कह्या। तिहां रत्न थी १५ ते किसा? रत्न सक्कर थी ५, रत्न वालुक थी ४, रत्न पंक थी ३, रत्न धूम थी २, रत्न तम थी १—एवं १५ भांगा, दश विकल्प करिकै १५० भांगा रत्न थी हुवै। तिहां रत्न सक्कर थी ५ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

१	१	१ रत्न, १ सक्कर, ४ वालु
२	२	१ रत्न, १ सक्कर, ४ पंक
३	३	१ रत्न, १ सक्कर, ४ धूम
४	४	१ रत्न, १ सक्कर, ४ तम
५	५	१ रत्न, १ सक्कर, ४ सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रत्न सक्कर थी ५ भांगा द्वितीय विकल्प करि कहै छै—

६	१	१ रत्न, २ सक्कर, ३ वालु
७	२	१ रत्न, २ सक्कर, ३ पंक
८	३	१ रत्न, २ सक्कर, ३ धूम
९	४	१ रत्न, २ सक्कर, ३ तम
१०	५	१ रत्न, २ सक्कर, ३ सप्तमीं

रत्न सक्कर थी ५ भांगा तृतीय विकल्प करि कहै छै—

११	१	२ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु
१२	२	२ रत्न, १ सक्कर, ३ पंक
१३	३	२ रत्न, १ सक्कर, ३ धूम
१४	४	२ रत्न, १ सक्कर, ३ तम
१५	५	२ रत्न, १ सक्कर, ३ सप्तमीं

हिवै रत्न सक्कर थी ५ भांगा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—

१६	१	१ रत्न, ३ सक्कर २ वालु
१७	२	१ रत्न, ३ सक्कर, २ पंक
१८	३	१ रत्न, ३ सक्कर, २ धूम
१९	४	१ रत्न, ३ सक्कर, २ तम
२०	५	१ रत्न, ३ सक्कर, २ सप्तमीं

हिवै रत्न सक्कर थी ५ भांगा पंचम विकल्प करि कहै छै—

२१	१	२ रत्न, २ सक्कर, २ वालु
२२	२	२ रत्न, २ सक्कर, २ पंक
२३	३	२ रत्न, २ सक्कर, २ धूम
२४	४	२ रत्न, २ सक्कर, २ तम
२५	५	२ रत्न, २ सक्कर, २ सप्तमीं

हिवै रत्न सक्कर थी ५ भांगा छठं विकल्प करि कहै छै—

२६	१	३ रत्न, १ सक्कर, २ वालु
२७	२	३ रत्न, १ सक्कर, २ पंक
२८	३	३ रत्न, १ सक्कर, २ धूम
२९	४	३ रत्न, १ सक्कर, २ तम
३०	५	३ रत्न, १ सक्कर, २ सप्तमीं

हिवै रत्न सक्कर थी ५ भांगा सप्तम विकल्प करि कहै छै—

३१	१	१ रत्न, ४ सक्कर, १ वालु
३२	२	१ रत्न, ४ सक्कर, १ पंक
३३	३	१ रत्न, ४ सक्कर, १ धूम
३४	४	१ रत्न, ४ सक्कर, १ तम
३५	५	१ रत्न, ४ सक्कर, १ सप्तमीं

हिवै रत्न सक्कर थी ५ भांगा अष्टम विकल्प करि कहै छै—

३६	१	२ रत्न, ३ सक्कर, १ वालु
३७	२	२ रत्न, ३ सक्कर, १ पंक
३८	३	२ रत्न, ३ सक्कर, १ धूम
३९	४	२ रत्न, ३ सक्कर, १ तम
४०	५	२ रत्न, ३ सक्कर, १ सप्तमीं

हिवै रत्न सक्कर थी ५ भांगा नवम विकल्प करि कहै छै—

४१	१	३ रत्न, २ सक्कर, १ वालु
४२	२	३ रत्न, २ सक्कर, १ पंक
४३	३	३ रत्न, २ सक्कर, १ धूम
४४	४	३ रत्न, २ सक्कर, १ तम
४५	५	३ रत्न, २ सक्कर, १ सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै रत्न सक्कर थी ५ भांगा दशम विकल्प करि कहै छै—

४६	१	४ रत्न, १ सक्कर, १ वालु
४७	२	४ रत्न, १ सक्कर, १ पंक
४८	३	४ रत्न, १ सक्कर, १ धूम
४९	४	४ रत्न, १ सक्कर, १ तम
५०	५	४ रत्न, १ सक्कर, १ सप्तमीं

रत्न सक्कर थी ५ भांगा ते दश विकल्प करि ५० भांगा कह्या।

हिवै रत्न वालुक थी ४ भांगा, ते दश विकल्प करि ४० भांगा कहै छै। इहां रत्न वालुक थी ४ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

५१	१	१ रत्न, १ वालु, ४ पंक
५२	२	१ रत्न, १ वालु, ४ धूम
५३	३	१ रत्न, १ वालु, ४ तम
५४	४	१ रत्न, १ वालु, ४ सप्तमीं

हिवै रत्न वालुक थी ४ भांगा द्वितीय विकल्प करि कहै छै—

५५	१	१ रत्न, २ वालु, ३ पंक
५६	२	१ रत्न, २ वालु, ३ धूम
५७	३	१ रत्न, २ वालु, ३ तम
५८	४	१ रत्न, २ वालु, ३ सप्तमीं

हिवै रत्न वालुक थी ४ भांगा तृतीय विकल्प करि कहै छै —

५९	१	२ रत्न, १ वालु, ३ पंक
६०	२	२ रत्न, १ वालु, ३ धूम
६१	३	२ रत्न, १ वालु, ३ तम
६२	४	२ रत्न, १ वालु, ३ सप्तमीं

हिवै रत्न वालुक थी ४ भांगा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—

६३	१	१ रत्न, ३ वालु, २ पंक
६४	२	१ रत्न, ३ वालु, २ धूम
६५	३	१ रत्न, ३ वालु, २ तम
६६	४	१ रत्न, ३ वालु, २ सप्तमीं

हिवै रत्न वालुक थी ४ भांगा पंचम विकल्प करि कहै छै—

६७	१	२ रत्न, २ वालु, २ पंक
६८	२	२ रत्न, २ वालु, २ धूम
६९	३	२ रत्न, २ वालु, २ तम
७०	४	२ रत्न, २ वालु, २ सप्तमीं

हिवै रत्न वालुक थी ४ भांगा षष्ठ विकल्प करि कहै छै—

७१	१	३ रत्न, १ वालु, २ पंक
७२	२	३ रत्न, १ वालु, २ धूम
७३	३	३ रत्न, १ वालु, २ तम
७४	४	३ रत्न, १ वालु, २ सप्तमीं

हिवै रत्न वालुक थी ४ भांगा सप्तम विकल्प करि कहै छै—

७५	१	१ रत्न, ४ वालु, १ पंक
७६	२	१ रत्न, ४ वालु, १ धूम
७७	३	१ रत्न, ४ वालु, १ तम
७८	४	१ रत्न, ४ वालु, १ सातमीं

हिवै रत्न वालुक थी ४ भांगा अष्टम विकल्प करि कहै छै—

७९	१	२ रत्न, ३ वालु, १ पंक
८०	२	२ रत्न, ३ वालु, १ धूम
८१	३	२ रत्न, ३ वालु, १ तम
८२	४	२ रत्न, ३ वालु, १ सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै रत्न वालुक थी ४ भांगा नवम विकल्प करि कहै छै—

८३	१	३ रत्न, २ वालु, १ पंक
८४	२	३ रत्न, २ वालु, १ धूम
८५	३	३ रत्न, २ वालु, १ तम
८६	४	३ रत्न, २ वालु, १ सप्तमीं

हिवै रत्न वालुक थी ४ भांगा दशम विकल्प करि कहै छै—

८७	१	४ रत्न, १ वालु, १ पंक
८८	२	४ रत्न, १ वालु, १ धूम
८९	३	४ रत्न, १ वालु, १ तम
९०	४	४ रत्न, १ वालु, १ सप्तमीं

ए रत्न वालुक थी ४ भांगा, ते दश विकल्प करि ४० भांगा कह्या।

रत्न पंक थी ३ भांगा दश विकल्प करि ३० भांगा। हिवै रत्न पंक थी ३ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

९१	१	१ रत्न, १ पंक, ४ धूम
९२	२	१ रत्न, १ पंक, ४ तम
९३	३	१ रत्न, १ पंक, ४ सप्तमीं

हिवै रत्न पंक थी ३ भांगा द्वितीय विकल्प करि कहै छै—

९४	१	१ रत्न, २ पंक, ३ धूम
९५	२	१ रत्न, २ पंक, ३ तम
९६	३	१ रत्न, २ पंक, ३ सप्तमीं

हिवै रत्न पंक थी ३ भांगा तृतीय विकल्प करि कहै छै—

९७	१	२ रत्न, १ पंक, ३ धूम
९८	२	२ रत्न, १ पंक, ३ तम
९९	३	२ रत्न, १ पंक, ३ सप्तमीं

हिवै रत्न पंक थी ३ भांगा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—

१००	१	१ रत्न, ३ पंक, २ धूम
१०१	२	१ रत्न, ३ पंक, २ तम
१०२	३	१ रत्न, ३ पंक, २ सप्तमीं

हिवै रत्न पंक थी ३ भांगा पंचम विकल्प करि कहै छै—

१०३	१	२ रत्न, २ पंक, २ धूम
१०४	२	२ रत्न, २ पंक, २ तम
१०५	३	२ रत्न, २ पंक, २ सप्तमीं

हिवै रत्न पंक थी ३ भांगा षष्ठ विकल्प करि कहै छै—

१०६	१	३ रत्न, १ पंक, २ धूम
१०७	२	३ रत्न, १ पंक, २ तम
१०८	३	३ रत्न, १ पंक, २ सप्तमीं

हिवै रत्न पंक थी ३ भांगा सप्तम विकल्प करि कहै छै—

१०९	१	१ रत्न, ४ पंक, १ धूम
११०	२	१ रत्न, ४ पंक, १ तम
१११	३	१ रत्न, ४ पंक, १ सप्तमीं

हिवै रत्न पंक थी ३ भांगा अष्टम विकल्प करि कहै छै—

११२	१	२ रत्न, ३ पंक, १ धूम
११३	२	२ रत्न, ३ पंक, १ तम
११४	३	२ रत्न, ३ पंक, १ सप्तमीं

हिवै रत्न पंक थी ३ भांगा नवम विकल्प करि कहै छै—

११५	१	३ रत्न, २ पंक, १ धूम
११६	२	३ रत्न, २ पंक, १ तम
११७	३	३ रत्न, २ पंक, १ सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै रत्न पंक थी ३ भांगा दशम विकल्प करि कहै छै —

११८	१	४ रत्न, १ पंक, १ धूम
११९	२	४ रत्न, १ पंक, १ तम
१२०	३	४ रत्न, १ पंक, १ सप्तमीं

ए रत्न पंक थी ३ भांगा दश विकल्प करि ३० भांगा कह्या। हिवै रत्न धूम थी दश विकल्प करि २० भांगा कह्यां। ते प्रथम विकल्प करि २ भांगा कहै छै—

१२१	१	१ रत्न, १ धूम, ४ तम
१२२	२	१ रत्न, १ धूम, ४ सप्तमीं

हिवै रत्न धूम थी २ भांगा द्वितीय विकल्प करि कहै छै—

१२३	१	१ रत्न, २ धूम, ३ तम
१२४	२	१ रत्न, २ धूम, ३ सप्तमीं

हिवै रत्न धूम थी २ भांगा तृतीय विकल्प करि कहै छै —

१२५	१	२ रत्न, १ धूम, ३ तम
१२६	२	२ रत्न, १ धूम, ३ सप्तमीं

हिवै रत्न धूम थी २ भांगा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै

१२७	१	१ रत्न, ३ धूम, २ तम
१२८	२	१ रत्न, ३ धूम, २ सप्तमीं

हिवै रत्न धूम थी २ भांगा पंचम विकल्प करि कहै छै —

१२९	१	२ रत्न, २ धूम, २ तम
१३०	२	२ रत्न, २ धूम, २ सप्तमीं

हिवै रत्न धूम थी २ भांगा षष्ठ विकल्प करि कहै छै —

१३१	१	३ रत्न, १ धूम, २ तम
१३२	२	३ रत्न, १ धूम, २ सप्तमीं

हिवै रत्न धूम थी २ भांगा सप्तम विकल्प करि कहै छै —

१३३	१	१ रत्न, ४ धूम, १ तम
१३४	२	१ रत्न, ४ धूम, १ सप्तमीं

हिवै रत्न धूम थी २ भांगा अष्टम विकल्प करि कहै छै —

१३५	१	२ रत्न, ३ धूम, १ तम
१३६	२	२ रत्न, ३ धूम, १ सप्तमीं

हिवै रत्न धूम थी २ भांगा नवम विकल्प करि कहै छै —

१३७	१	३ रत्न, २ धूम, १ तम
१३८	२	३ रत्न, २ धूम, १ सप्तमीं

हिवै रत्न धूम थी २ भांगा दशम विकल्प करि कहै छै —

१३९	१	४ रत्न, १ धूम, १ तम
१४०	२	४ रत्न, १ धूम, १ सप्तमीं

ए रत्न धूम थी २ भांगा १० विकल्प करि २० भांगा कह्या। हिवै रत्न तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै —

१४१	१	१ रत्न, १ तम, ४ सप्तमीं

रत्न तम थी १ भांगो द्वितीय विकल्प करि कहै छै —

१४२	१	१ रत्न, २ तम, ३ सप्तमीं

हिवै रत्न तम थी १ भांगो तृतीय विकल्प करि कहै छै —

१४३	१	२ रत्न, १ तम, ३ सप्तमीं

हिवै रत्न तम थी १ भांगो चतुर्थ विकल्प करि कहै छै —

१४४	१	१ रत्न, ३ तम, २ सप्तमीं

हिवै रत्न तम थी १ भांगो पंचम विकल्प करि कहै छै —

१४५	१	२ रत्न, २ तम, २ सप्तमीं

हिवै रत्न तम थी १ भांगो षष्ठ विकल्प करि कहै छै —

१४६	१	३ रत्न, १ तम, २ सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै रत्न तम थी १ भांगो सप्तम विकल्प करि कहै छै —

१४७	१	१ रत्न, ४ तम, १ सप्तमीं

हिवै रत्न तम थी १ भांगो अष्टम विकल्प करि कहै छै —

१४८	१	२ रत्न, ३ तम, १ सप्तमीं

हिवै रत्न तम थी १ भांगो नवम विकल्प करि कहै छै —

१४९	१	३ रत्न, २ तम, १ सप्तमीं

हिवै रत्न तम थी १ भांगो दशम विकल्प करि कहै छै —

१५०	१	४ रत्न, १ तम, १ सप्तमीं

ए रत्न थी १५ भांगा दश विकल्प करि १५० भांगा कह्या। हिवै सक्कर थी १० भांगा एक-एक विकल्प नां हुवै ते दश किसा ? सक्कर वालु थकी ४, सक्कर पंक थकी ३, सक्कर धूम थकी २, सक्कर तम थी १ —एवं १० भांगा, दश विकल्प करि १०० भांगा। तिहां सक्कर वालु थी ४ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै —

१५१	१	१ सक्कर, १ वालु, ४ पंक
१५२	२	१ सक्कर, १ वालु, ४ धूम
१५३	३	१ सक्कर, १ वालु, ४ तम
१५४	४	१ सक्कर, १ वालु, ४ सप्तमीं

हिवै सक्कर वालु थी ४ भांगा द्वितीय विकल्प करि कहै छै

१५५	१	१ सक्कर, २ वालु, ३ पंक
१५६	२	१ सक्कर, २ वालु, ३ धूम
१५७	३	१ सक्कर, २ वालु, ३ तम
१५८	४	१ सक्कर, २ वालु, ३ सप्तमीं

हिवै सक्कर वालु थी ४ भांगा तृतीय विकल्प करि कहै छै—

१५९	१	२ सक्कर, १ वालु, ३ पंक
१६०	२	२ सक्कर, १ वालु, ३ धूम
१६१	३	२ सक्कर, १ वालु, ३ तम
१६२	४	२ सक्कर, १ वालु, ३ सप्तमीं

हिवै सक्कर वालु थी ४ भांगा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै —

१६३	१	१ सक्कर, ३ वालु, २ पंक
१६४	२	१ सक्कर, ३ वालु, २ धूम
१६५	३	१ सक्कर, ३ वालु, २ तम
१६६	४	१ सक्कर, ३ वालु, २ सप्तमीं

हिवै सक्कर वालु थी ४ भांगा पंचम विकल्प करि कहै छै

१६७	१	२ सक्कर, २ वालु, २ पंक
१६८	२	२ सक्कर, २ वालु, २ धूम
१६९	३	२ सक्कर, २ वालु, २ तम
१७०	४	२ सक्कर, २ वालु, २ सप्तमीं

हिवै सक्कर वालु थी ४ भांगा षष्ठ विकल्प करि कहै छै

१७१	१	३ सक्कर, १ वालु, २ पंक
१७२	२	३ सक्कर, १ वालु, २ धूम
१७३	३	३ सक्कर, १ वालु, २ तम
१७४	४	३ सक्कर, १ वालु, २ सप्तमी

हिवै सक्कर वालु थी ४ भांगा सप्तम विकल्प करि कहै छै

१७५	१	१ सक्कर, ४ वालु १ पंक
१७६	२	१ सक्कर, ४ वालु १ धूम
१७७	३	१ सक्कर, ४ वालु १ तम
१७८	४	१ सक्कर, ४ वालु १ सप्तमी

हिवै सक्कर वालु थी ४ भांगा अष्टम विकल्प करि कहै छै

१७९	१	२ सक्कर, ३ वालु, १ पंक
१८०	२	२ सक्कर, ३ वालु, १ धूम
१८१	३	२ सक्कर, ३ वालु, १ तम
१८२	४	२ सक्कर, ३ वालु, १ सप्तमी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै सक्कर वालु थी ४ भांगा नवम विकल्प करि कहै छै—

१८३	१	३ सक्कर, २ वालु, १ पंक
१८४	२	३ सक्कर, २ वालु, १ धूम
१८५	३	३ सक्कर, २ वालु, १ तम
१८६	४	३ सक्कर, २ वालु, १ सप्तमीं

हिवै सक्कर वालु थी ४ भांगा दशम विकल्प करि कहै छै—

१८७	१	४ सक्कर, १ वालु, १ पंक
१८८	२	४ सक्कर, १ वालु, १ धूम
१८९	३	४ सक्कर, १ वालु, १ तम
१९०	४	४ सक्कर, १ वालु, १ सप्तमीं

हिवै सक्कर पंक थी प्रथम विकल्प करि ३ भांगा कहै छै—

१९१	१	१ सक्कर, १ पंक, ४ धूम
१९२	२	१ सक्कर, १ पंक, ४ तम
१९३	३	१ सक्कर, १ पंक, ४ सप्तमीं

हिवै सक्कर पंक थी ३ भांगा द्वितीय विकल्प करि कहै छै—

१९४	१	१ सक्कर, २ पंक, ३ धूम
१९५	२	१ सक्कर, २ पंक, ३ तम
१९६	३	१ सक्कर, २ पंक, ३ सप्तमीं

हिवै सक्कर पंक थी ३ भांगा तृतीय विकल्प करि कहै छै—

१९७	१	२ सक्कर, १ पंक, ३ धूम
१९८	२	२ सक्कर, १ पंक, ३ तम
१९९	३	२ सक्कर, १ पंक, ३ सप्तमी

हिवै सक्कर पंक थी ३ भांगा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—

२००	१	१ सक्कर, ३ पंक, २ धूम
२०१	२	१ सक्कर, ३ पंक, २ तम
२०२	३	१ सक्कर, ३ पंक, २ सप्तमी

हिवै सक्कर पंक थी ३ भांगा पंचम विकल्प करि कहै छै—

२०३	१	२ सक्कर, २ पंक, २ धूम
२०४	२	२ सक्कर, २ पंक, २ तम
२०५	३	२ सक्कर, २ पंक, २ सप्तमीं

हिवै सक्कर पंक थी ३ भांगा छठे विकल्प करि कहै छै—

२०६	१	३ सक्कर, १ पंक, २ धूम
२०७	२	३ सक्कर, १ पंक, २ तम
२०८	३	३ सक्कर, १ पंक, २ सप्तमीं

हिवै सक्कर पंक थी ३ भांगा सप्तम विकल्प करि कहै छै—

२०९	१	१ सक्कर, ४ पंक, १ धूम
२१०	२	१ सक्कर, ४ पंक, १ तम
२११	३	१ सक्कर, ४ पंक, १ सप्तमीं

हिवै सक्कर पंक थी ३ भांगा अष्टम विकल्प करि कहै छै—

२१२	१	२ सक्कर, ३ पंक, १ धूम
२१३	२	२ सक्कर, ३ पंक, १ तम
२१४	३	२ सक्कर, ३ पंक, १ सप्तमीं

हिवै सक्कर पंक थी ३ भांगा नवम विकल्प करि कहै छै—

२१५	१	३ सक्कर, २ पंक, १ धूम
२१६	२	३ सक्कर, २ पंक, १ तम
२१७	३	३ सक्कर, २ पंक, १ सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै सक्कर पंक थी ३ भांगा दशम विकल्प करि कहै छै –

२१८	१	४ सक्कर, १ पंक, १ धूम
२१९	२	४ सक्कर, १ पंक, १ तम
२२०	३	४ सक्कर, १ पंक, १ सप्तमीं

ए सक्कर पंक थी ३ भांगा दश विकल्प करि ३० भांगा कह्या।

हिवै सक्कर धूम थी २ भांगा दश विकल्प करि २० भांगा हुवै। तेहमें २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

२२१	१	१ सक्कर, १ धूम, ४ तम
२२२	२	१ सक्कर, १ धूम, ४ सप्तमीं

हिवै सक्कर धूम थी २ भांगा द्वितीय विकल्प करि कहै छै—

२२३	१	१ सक्कर, २ धूम, ३ तम
२२४	२	१ सक्कर, २ धूम, ३ सप्तमीं

हिवै सक्कर धूम थी २ भांगा तृतीय विकल्प करि कहै छै—

२२५	१	२ सक्कर, १ धूम, ३ तम
२२६	२	२ सक्कर, १ धूम, ३ सप्तमी

हिवै सक्कर धूम थी २ भांगा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—

२२७	१	१ सक्कर ३ धूम, २ तम
२२८	२	१ सक्कर, ३ धूम, २ सप्तमीं

हिवै सक्कर धूम थी २ भांगा पंचम विकल्प करि कहै छै –

२२९	१	२ सक्कर, २ धूम, २ तम
२३०	२	२ सक्कर, २ धूम, २ सप्तमीं

हिवै सक्कर धूम थी २ भांगा षष्ठ विकल्प करि कहै छै—

२३१	१	३ सक्कर, १ धूम, २ तम
२३२	२	३ सक्कर, १ धूम, २ सप्तमीं

हिवै सक्कर धूम थी २ भांगा सप्तम विकल्प करि कहै छै –

२३३	१	१ सक्कर, ४ धूम, १ तम
२३४	२	१ सक्कर, ४ धूम, १ सप्तमीं

हिवै सक्कर धूम थी २ भांगा अष्टम विकल्प करि कहै छै –

२३५	१	२ सक्कर, ३ धूम, १ तम
२३६	२	२ सक्कर, ३ धूम, १ सप्तमी

नवम विकल्पे

२३७	१	३ सक्कर, २ धूम, १ तम
२३८	२	३ सक्कर, २ धूम, १ सातमीं

दशम विकल्पे

२३९	१	४ सक्कर, १ धूम, १ तम
२४०	२	४ सक्कर, १ धूम, १ सप्तमीं

ए सक्कर धूम थी २ भांगा दश विकल्प करि २० भांगा कह्या।

हिवै सक्कर तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै –

२४१	१	१ सक्कर, १ तम, ४ सप्तमीं

द्वितीय विकल्पे

२४२	१	१ सक्कर, २ तम, ३ सप्तमीं

तृतीय विकल्पे

२४३	१	२ सक्कर, १ तम, ३ सप्तमीं

चतुर्थ विकल्पे

२४४	१	१ सक्कर, ३ तम, २ सप्तमीं

पंचम विकल्पे

२४५	१	२ सक्कर, २ तम, २ सप्तमीं

षष्ठ विकल्पे

२४६	१	३ सक्कर, १ तम, २ सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सप्तम विकल्पे		
२४७	१	१ सक्कर, ४ तम, १ सप्तमीं
अष्टम विकल्पे		
२४८	१	२ सक्कर, ३ तम, १ सप्तमीं
नवम विकल्पे		
२४९	१	३ सक्कर, २ तम, १ सप्तमीं
दशम विकल्पे		
२५०	१	४ सक्कर, १ तम, १ सप्तमीं

ए सक्कर थी १० भांगा १० विकल्प करि १०० भांगा कह्या।
हिवै वालु पंक थी ३ भांगा १० विकल्प करि ३० भांगा। ते प्रथम विकल्प करि कहै छै—

२५१	१	१ वालु, १ पंक, ४ धूम
२५२	२	१ वालु, १ पंक, ४ तम
२५३	३	१ वालु, १ पंक, ४ सप्तमीं
द्वितीय विकल्पे		
२५४	१	१ वालु, २ पंक, ३ धूम
२५५	२	१ वालु, २ पंक, ३ तम
२५६	३	१ वालु, २ पंक, ३ सप्तमीं
तृतीय विकल्पे		
२५७	१	२ वालु, १ पंक, ३ धूम
२५८	२	२ वालु, १ पंक, ३ तम
२५९	३	२ वालु, १ पंक, ३ सप्तमी
चतुर्थ विकल्पे		
२६०	१	१ वालु, ३ पंक, २ धूम
२६१	२	१ वालु, ३ पंक, २ तम
२६२	३	१ वालु, ३ पंक, २ सप्तमीं
पंचम विकल्पे		
२६३	१	२ वालु, २ पंक, २ धूम
२६४	२	२ वालु, २ पंक, २ तम
२६५	३	२ वालु, २ पंक, २ सप्तमीं
षष्ठ विकल्पे		
२६६	१	३ वालु, १ पंक, २ धूम
२६७	२	३ वालु, १ पंक, २ तम
२६८	३	३ वालु, १ पंक, २ सप्तमीं
सप्तम विकल्पे		
२६९	१	१ वालु, ४ पंक, १ धूम
२७०	२	१ वालु, ४ पंक, १ तम
२७१	३	१ वालु, ४ पंक, १ सप्तमी
अष्टम विकल्पे		
२७२	१	२ वालु, ३ पंक, १ धूम
२७३	२	२ वालु, ३ पंक, १ तम
२७४	३	२ वालु, ३ पंक, १ सप्तमीं
नवम विकल्पे		
२७५	१	३ वालु, २ पंक, १ धूम
२७६	२	३ वालु, २ पंक, १ तम
२७७	३	३ वालु, २ पंक, १ सप्तमी
दशम विकल्पे		
२७८	१	४ वालु, १ पंक, १ धूम
२७९	२	४ वालु, १ पक, १ तम
२८०	३	४ वालु, १ पंक, १ सप्तमी

ए वालु पंक थी ३ भांगा १० विकल्प करि ३० भांगा कह्या।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै वालु धूम थी २ भांगा दश विकल्प करि २० भांगा ते प्रथम विकल्प करि कहै छै—		
२८१	१	१ वालु, १ धूम, ४ तम
२८२	२	१ वालु, १ धूम, ४ सप्तमी
द्वितीय विकल्पे		
२८३	१	१ वालु, २ धूम, ३ तम
२८४	२	१ वालु, २ धूम, ३ सप्तमी
तृतीय विकल्पे		
२८५	१	२ वालु, १ धूम, ३ तम
२८६	२	२ वालु, १ धूम, ३ सप्तमी
चतुर्थ विकल्पे		
२८७	१	१ वालु, ३ धूम, २ तम
२८८	२	१ वालु, ३ धूम, २ सप्तमी
पंचम विकल्पे		
२८९	१	२ वालु, २ धूम, २ तम
२९०	२	२ वालु, २ धूम, २ सप्तमीं
षष्ठ विकल्पे		
२९१	१	३ वालु, १ धूम, २ तम
२९२	२	३ वालु, १ धूम, २ सप्तमीं
सप्तम विकल्पे		
२९३	१	१ वालु, ४ धूम, १ तम
२९४	२	१ वालु, ४ धूम, १ सप्तमी
अष्टम विकल्पे		
२९५	१	२ वालु, ३ धूम, १ तम
२९६	२	२ वालु, ३ धूम, १ सप्तमीं
नवम विकल्पे		
२९७	१	३ वालु, २ धूम, १ तम
२९८	२	३ वालु, २ धूम, १ सप्तमीं
दशम विकल्पे		
२९९	१	४ वालु, १ धूम, १ तम
३००	२	४ वालु, १ धूम, १ सप्तमीं
ए वालु धूम थी २ भांगा दश विकल्प करि २० भांगा कह्या। हिवै वालु तम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भांगा, ते प्रथम विकल्प करि कहै छै—		
३०१	१	१ वालु, १ तम, ४ सप्तमीं
द्वितीय विकल्पे		
३०२	१	१ वालु, २ तम, ३ सप्तमी
तृतीय विकल्पे		
३०३	१	२ वालु, १ तम, ३ सप्तमी
चतुर्थ विकल्पे		
३०४	१	१ वालु, ३ तम, २ सप्तमीं
पंचम विकल्पे		
३०५	१	२ वालु, २ तम, २ सप्तमीं
षष्ठ विकल्पे		
३०६	१	३ वालु, १ तम, २ सप्तमीं
सप्तम विकल्पे		
३०७	१	१ वालु, ४ तम, १ सप्तमीं
अष्टम विकल्पे		
३०८	१	२ वालु, ३ तम, १ सप्तमी
नवम विकल्पे		
३०९	१	३ वालु, २ तम, १ सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दशम विकल्पे

३१०	१	४ वालु, १ तम, १ सप्तमीं

ए वालु थी ६ भांगा दश विकल्प करि ६० भांगा कह्या।

हिवै पंक थी ३ भांगा ते किसा ? पंक धूम थी २, पंक तम थी १ एवं पंक थी ३, दश विकल्प करि ३० भांगा कह्या। तिहां पंक धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

३११	१	१ पंक, १ धूम, ४ तम
३१२	२	१ पंक, १ धूम, ४ सप्तमीं

हिवै पंक धूम थी २ भांगा द्वितीय विकल्पे

३१३	१	१ पंक, २ धूम, ३ तम
३१४	२	१ पंक, २ धूम, ३ सप्तमीं

हिवै पंक धूम थी २ भांगा तृतीय विकल्पे

३१५	१	२ पंक, १ धूम, ३ तम
३१६	२	२ पंक, १ धूम, ३ सप्तमीं

चतुर्थ विकल्पे

३१७	१	१ पंक, ३ धूम, २ तम
३१८	२	१ पंक, ३ धूम, २ सप्तमीं

पंचम विकल्पे

३१९	१	२ पंक, २ धूम, २ तम
३२०	२	२ पंक, २ धूम, २ सप्तमीं

षष्ठ विकल्पे

३२१	१	३ पंक, १ धूम, २ तम
३२२	२	३ पंक, १ धूम, २ सप्तमीं

सप्तम विकल्पे

३२३	१	१ पंक, ४ धूम, १ तम
३२४	२	१ पंक, ४ धूम, १ सप्तमीं

अष्टम विकल्पे

३२५	१	२ पंक, ३ धूम, १ तम
३२६	२	२ पंक, ३ धूम, १ सप्तमीं

नवम विकल्पे

३२७	१	३ पंक, २ धूम, १ तम
३२८	२	३ पंक, २ धूम, १ सप्तमीं

दशम विकल्पे

३२९	१	४ पंक, १ धूम, १ तम
३३०	२	४ पंक, १ धूम, १ सप्तमीं

ए पंक धूम थी २ भांगा दश विकल्प करि २० भांगा कह्या।

हिवै पंक तम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भांगा। ते प्रथम विकल्प करि कहै छै—

३३१	१	१ पंक, १ तम, ४ सप्तमीं

हिवै पंक तम थी १ भांगो द्वितीय विकल्पे

३३२	१	१ पंक, २ तम, ३ सप्तमीं

हिवै पंक तम थी १ भांगो तृतीय विकल्पे

३३३	१	२ पंक, १ तम, ३ सप्तमीं

हिवै पंक तम थी १ भांगो चतुर्थ विकल्पे

३३४	१	१ पंक, ३ तम, २ सप्तमीं

हिवै पंक तम थी १ भांगो पंचम विकल्पे

३३५	१	२ पंक, २ तम, २ सप्तमीं

हिवै पंक तम थी १ भांगो षष्ठ विकल्पे

३३६	१	३ पंक, १ तम, २ सप्तमीं

हिवै पंक तम थी १ भांगो सप्तम विकल्पे

३३७	१	१ पंक, ४ तम, १ सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै पंक तम थी १ भांगो अष्टम विकल्पे

३३८	१	२ पंक, ३ तम, १ सप्तमीं

हिवै पंक तम थी १ भांगो नवम विकल्पे

३३९	१	३ पंक, २ तम, १ सप्तमीं

हिवै पंक तम थी १ भांगो दशम विकल्पे

३४०	१	४ पंक, १ तम, १ सप्तमीं

ए पंक तम थी १ भांगो १० विकल्प करि १० भांगा कह्या। एवं पंक थी ३ भांगा दश विकल्प करि ३० भांगा कह्या।

हिवै धूम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भांगा। तिहां प्रथम विकल्पे

३४१	१	१ धूम, १ तम, ४ सप्तमी

द्वितीय विकल्पे

३४२	१	१ धूम, २ तम, ३ सप्तमीं

तृतीय विकल्पे

३४३	१	२ धूम, १ तम, ३ सप्तमीं

चतुर्थ विकल्पे

३४४	१	१ धूम, ३ तम, २ सप्तमीं

पंचम विकल्पे

३४५	१	२ धूम, २ तम, २ सप्तमीं

षष्ठ विकल्पे —

३४६	१	३ धूम, १ तम, २ सप्तमीं

सप्तम विकल्पे

३४७	१	१ धूम, ४ तम, १ सप्तमीं

अष्टम विकल्पे

३४८	१	२ धूम, ३ तम, १ सप्तमीं

नवम विकल्पे

३४९	१	३ धूम, २ तम, १ सप्तमीं

दशम विकल्पे —

३५०	१	४ धूम, १ तम, १ सप्तमीं

ए धूम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भांगा कह्या। एवं रत्न थी १५, सक्कर थी १०, वालुक थी ६, पंक थी ३, धूम थी १—एवं ३५ भांगा, ते एक-एक विकल्प करि हुवै। दश विकल्प करि त्रिकसंजोगिया भांगा ३५० जाणवा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छप्पय

१४९. एक एक नै च्यार, प्रथम विकल्प ए जानो।
एक दोय नैं तीन, द्वितीय विकल्प पहिछानो।
दोय एक नैं तीन, तृतीय विकल्प ए कहियै।
एक तीन नैं दोय, तुर्य विकल्प ए लहियै।
फुन दोय-दोय नैं दोय गण, ए पंचम विकल्प कह्यं।
वलि तीन एक नैं दोय इम, ए छठुं विकल्प लह्यं॥
१५०. एक च्यार नैं एक, सखर विकल्प ए सप्तम।
दोय तीन नै एक, आख्यूं ए विकल्प अष्टम।
तीन दोय नैं एक, नवम विकल्प निरखीजै।
च्यार एक नैं एक, दशम विकल्प दिल लीजै।
षट जीव तणां त्रिकयोगिका, विकल्प इहविध दाखिया।
भांगाज तीन सय तसुं भला, अधिक पचासही आखिया॥
१५१. *ए षट जीव तणां त्रिकयोगिक, सार्द्ध तीन सय शुद्ध।
दश विकल्प करि भांगा दाख्या, वर्णन तसु अविरुद्ध॥
१५२. नवम शतक बतीसम देशे, सौ बयांसीमीं ढाल।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' हरष विशाल॥

ढाल : १८३

दूहा

१. हिवै कहूं षट जीव नां, चउकसंयोगिक चंग।
दश विकल्प करि दाखिया, सार्द्ध तीन सय भंग॥

वा—छ जीव नां चउकसंयोगिक तेहनां विकल्प तो दश, भांगा साढा तीन-सौ। एक-एक विकल्प नां भांगा पैंतीस-पैंतीस हुवै, ते माटै दश विकल्प नां ३५० हुवै। एक-एक विकल्प नां—रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालु थी ४, पंक थी १—एवं ३५। रत्न थी २० ते किसा? रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालुक थी ६, रत्न पंक थी ३, रत्न धूम थी १—एवं २०। रत्न थी एक-एक विकल्प नां हुवै। रत्न सक्कर थी १० ते किसा? रत्न सक्कर वालुक थकी ४, रत्न सक्कर पंक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी २; रत्न सक्कर तम थकी १—एवं १० एक-एक विकल्प नां हुवै। ते कहै छै—

२. †तथा रत्न इक सक्कर एक, इक वालुक त्रिहुं पंक विशेख।
तथा रत्न इक सक्कर एक, इक वालुक त्रिहुं धूम संपेख॥

३. तथा रत्न इक सक्कर एक, इक वालुक नैं त्रिहुं तम पेख।
तथा रत्न इक सक्कर एक, इक वालुक त्रिहुं सप्तमीं देख॥

१. चतुष्कसंयोगे तु षण्णां चतूराशितया स्थापने दश विकल्पास्तद्यथा—पञ्चत्रिंशतश्च सप्तपदचतुष्कसंयोगानां दशभिर्गुणनात्त्रीणि शतानि पञ्चाशदधिकानि भवन्ति। (वृ० प० ४४५)

***लय : सीता आवै रे घर राग**
†लय : इण पुर कम्बल कोइ न लेसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. तथा रत्न इक सक्कर एक, बे वालुक बे पंक विशेख।
तथा रत्न इक सक्कर एक, बे वालुक बे धूमा लेख ।।
५. तथा रत्न इक सक्कर एक, बे वालुक बे तमा उवेख।
तथा रत्न इक सक्कर एक, बे वालुक बे सप्तमी शेख ।।
६. तथा रत्न इक सक्कर दोय, एक वालुक बे पंके होय।
तथा रत्न इक सक्कर दोय, इक वालुक बे धूमा जोय ।।
७. तथा रत्न इक सक्कर दोय, इक वालुक बे तम अवलोय।
तथा रत्न इक सक्कर दोय, इक वालुक बे सप्तमी सोय ।।
८. तथा रत्न बे सक्कर एक, इक वालुक बे पंक विशेख।
तथा रत्न बे सक्कर एक, इक वालुक बे धूमा लेख ।।
९. तथा रत्न बे सक्कर एक, एक वालुका बे तम पेख।
तथा रत्न बे सक्कर एक, एक वालुका बे सप्तमी शेख ।।
१०. तथा रत्न इक सक्कर एक, त्रिण वालुक इक पंक विशेख।
तथा रत्न इक सक्कर एक, त्रिण वालु इक धूमा देख ।।
११. तथा रत्न इक सक्कर एक, तीन वालुका इक तम लेख।
तथा रत्न इक सक्कर एक, त्रिण वालुक इक सप्तमी शेख ।।
१२. तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय वालुक इक पंके होय।
तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय वालुक इक धूमा जोय ।।
१३. तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय वालुक इक तम अवलोय।
तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय वालुक इक तमतमा जोय ।।
१४. हिवै रत्न बे सक्कर एक, बे वालुक इक पंक विशेख।
तथा रत्न बे सक्कर एक, बे वालुक इक धूमा लेख ।।
१५. तथा रत्न बे सक्कर एक, बे वालुक इक तमा उवेख।
तथा रत्न बे सक्कर एक, बे वालुक इक सप्तमी देख ।।
१६. तथा रत्न इक सक्कर तीन, इक वालुक इक पंक दुचीन।
तथा रत्न इक सक्कर तीन, इक वालुक इक धूमा लीन ।।
१७. तथा रत्न इक सक्कर तीन, इक वालुक इक तमा दुचीन।
तथा रत्न इक सक्कर तीन, इक वालुक इक सप्तमी लीन ।।
१८. तथा रत्न बे सक्कर दोय, इक वालुक इक पंके जोय।
तथा रत्न बे सक्कर दोय, इक वालुक इक धूमा होय ।।
१९. तथा रत्न बे सक्कर दोय, एक वालुका इक तम जोय।
तथा रत्न बे सक्कर दोय, इक वालुक इक सप्तमी होय ।।
२०. तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक वालुका इक पंक देख।
तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, इक वालुक इक धूम उवेख ।।
२१. तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, इक वालुक इक तमा विशेख।
तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक वालुक इक सप्तमी देख ।।

हिवै रत्न सक्कर पंक थी ३ भांगा दश विकल्प करि ३० भांगा कहै छै—

२२. तथा रत्न इक सक्कर एक, एक पंक त्रिहुं धूम विशेख।
तथा रत्न इक सक्कर एक, एक पंक त्रिहुं तमा उवेख ।।
२३. तथा रत्न इक सक्कर एक, एक पंक त्रिहुं सप्तमी शेख।
रत्न सक्कर नें पंक थी चीन, धुर विकल्प करि ए भंग तीन।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. तथा रत्न इक सक्कर एक, दोय पंक बिहुं धूमा देख।
तथा रत्न इक सक्कर एक, दोय पंक दो तमा विशेख ॥
२५. तथा रत्न इक सक्कर एक, दोय पंक दोय सप्तमीं शेख।
रत्न सक्कर नैं पंक थी चीन, द्वितीय विकल्प करि भांगा तीन ॥
२६. तथा रत्न इक सक्कर दोय, एक पंक बे धूमा होय।
तथा रत्न इक सक्कर दोय, एक पंक बे तमा जोय ॥
२७. तथा रत्न इक सक्कर दोय, एक पंक बे सप्तमीं सोय।
रत्न सक्कर नैं पंक थी चीन, तृतीय विकल्प करि भांगा तीन ॥
२८. तथा रत्न बे सक्कर एक, एक पंक बे धूम विशेख।
तथा रत्न बे सक्कर एक, एक पंक बे तमा विशेख ॥
२९. तथा रत्न बे सक्कर एक, एक पंक बे सप्तमी शेख।
रत्न सक्कर नैं पंक थी चीन, चउथै विकल्प करि भंगा तीन ॥
३०. तथा रत्न इक सक्कर एक, तीन पंक इक धूमा देख।
तथा रत्न इक सक्कर एक, तीन पंक इक तमा पेख ॥
३१. तथा रत्न इक सक्कर एक, तीन पंक इक सप्तमीं शेख।
रत्न सक्कर नैं पंक थी चीन, पंचम विकल्प भंगा तीन ॥
३२. तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय पंक इक धूमा होय।
तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय पंक इक तम अवलोय ॥
३३. तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय पंक इक सप्तमीं जोय।
रत्न सक्कर नैं पंक थी चीन, छठै विकल्प करि भंगा तीन ॥
३४. तथा रत्न बे सक्कर एक, दोय पंक इक धूमा देख।
तथा रत्न बे सक्कर एक, दोय पंक इक तमा लेख ॥
३५. तथा रत्न बे सक्कर एक, दोय पंक इक सप्तमीं शेख।
रत्न सक्कर नैं पंक थी चीन, सप्तम विकल्प भंगा तीन ॥
३६. तथा रत्न इक सक्कर तीन, एक पंक इक धूमा चीन।
तथा रत्न इक सक्कर तीन, एक पंक इक तमा लीन ॥
३७. तथा रत्न इक सक्कर तीन, एक पंक इक सप्तमीं लीन।
रत्न सक्कर नैं पंक थी चीन, अष्टम विकल्प भंगा तीन ॥
३८. तथा रत्न बे सक्कर दोय, एक पंक इक धूमा जोय।
तथा रत्न बे सक्कर दोय, एक पंक इक तम अवलोय ॥
३९. तथा रत्न बे सक्कर दोय, एक पंक इक तमतमा जोय।
रत्न सक्कर नैं पंक थी चीन, नवम विकल्पे भंगा तीन ॥
४०. तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक पंक इक धूमा देख।
तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक पंक इक तमा विशेख ॥
४१. तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक पंक इक सप्तमी शेख।
रत्न सक्कर नैं पंक थी चीन, दशम विकल्पे भंगा तीन ॥

हिवै रत्न सक्कर धूम थी २ भांगा दश विकल्प करि २० भांगा कहै छै —

४२. तथा रत्न इक सक्कर एक, एक धूम त्रिहुं तमा विशेख।
तथा रत्न इक सक्कर एक, एक धूम त्रिहुं सप्तमीं लेख ॥
४३. तथा रत्न इक सक्कर एक, दोय धूम बे तमा देख।
तथा रत्न इक सक्कर एक, बे धूमा बे सप्तमीं पेख ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४४. तथा रत्न इक सक्कर दोय, एक धूम बे तमा होय।
तथा रत्न इक सक्कर दोय, एक धूम बे सप्तमीं जोय।।
४५. तथा रत्न बे सक्कर एक, एक धूम बे तमा विशेख।
तथा रत्न बे सक्कर एक, एक धूम बे सप्तमीं शेख।।
४६. तथा रत्न इक सक्कर एक, तीन धूम इक तमा उवेख।
तथा रत्न इक सक्कर एक, तीन धूम इक सप्तमी शेख।।
४७. तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय धूम इक तमा जोय।
तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय धूम इक सप्तमी होय।।
४८. तथा रत्न बे सक्कर एक, दोय धूम इक तमा शेख।
तथा रत्न बे सक्कर एक, दोय धूम इक सप्तमीं पेख।।
४९. तथा रत्न इक सक्कर तीन, इक धूम इक तमा चीन।
तथा रत्न इक सक्कर तीन, एक धूम इक सप्तमीं लीन।।
५०. तथा रत्न बे सक्कर दोय, एक धूम इक तम अवलोय।
तथा रत्न बे सक्कर दोय, एक धूम इक सप्तमीं जोय।।
५१. तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक धूम इक तमा उवेख।
तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक धूम इक सप्तमीं लेख।।

हिवै रत्न सक्कर तम थी १ भांगो दश विकल्प करि दश भांगा कहै छै—

५२. तथा रत्न इक सक्कर एक, एक तमा त्रिण सप्तमीं शेख।
तथा रत्न इक सक्कर एक, दोय तमा बे सप्तमीं लेख।।
५३. तथा रत्न इक सक्कर दोय, एक तमा बे सप्तमीं सोय।
तथा रत्न बे सक्कर एक, एक तमा बे सप्तमीं पेख।।
५४. तथा रत्न इक सक्कर एक, तीन तमा इक सप्तमीं पेख।
तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय तमा इक सप्तमीं होय।।
५५. तथा रत्न बे सक्कर एक, दोय तमा इक सप्तमीं देख।
तथा रत्न इक सक्कर तीन, एक तमा इक सप्तमीं लीन।।
५६. तथा रत्न बे सक्कर दोय, एक तमा इक सप्तमीं जोय।
तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक तमा इक सप्तमीं लेख।।

हिवै रत्न वालुक थी एकेक विकल्प नां ६ भांगा, ते किमा ? रत्न वालुक पंक थी ३, रत्न वालुक धूम थी २, रत्न वालुक तम थी १—एवं ६ भांगा, दश विकल्प करि ६० भांगा। तिहां रत्न वालुक पंक थी ३ भांगा दश विकल्प करि ३० भांगा कहै छै—

५७. तथा रत्न इक वालुक एक, एक पंक त्रिहुं धूम विशेख।
तथा रत्न इक वालुक एक, एक पंक त्रिहुं तमा देख।।
५८. तथा रत्न इक वालुक एक, एक पंक त्रिहुं सप्तमीं देख।
रत्न वालुक नैं पंक थी चीन, धुर विकल्प करि ए भंग तीन।।
५९. तथा रत्न इक वालुक एक, दोय पंक बे धूम उवेख।
तथा रत्न इक वालुक एक, दोय पंक बे तमा विशेख।।
६०. तथा रत्न इक वालुक एक, दोय पंक बे सप्तमीं देख।
रत्न वालुक नैं पंक थी चीन, द्वितीय विकल्प करि भंगा तीन।।
६१. तथा रत्न इक वालुक दोय, एक पंक बे धूमा होय।
तथा रत्न इक वालुक दोय, एक पंक बे तमा जोय।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६२. तथा रत्न इक वालुक दोय, एक पंक बे सप्तमीं होय ।
रत्न वालुक नैं पंक थी चीन, तृतीय विकल्प करि भंगा तीन ।।
६३. तथा रत्न बे वालुक एक, एक पंक बिहुं धूम उवेख ।
तथा रत्न बे वालुक एक, एक पंक बिहुं तमा विशेख ।।
६४. तथा रत्न बे वालुक एक, एक पंक बिहुं सप्तमीं पेख ।
रत्न वालुक नैं पंक थी चीन, चउथे विकल्पे भंगा तीन ।।
६५. तथा रत्न इक वालुक एक, तीन पंक इक धूम उवेख ।
तथा रत्न इक वालुक एक, तीन पंक इक तमा विशेख ।।
६६. तथा रत्न इक वालुक एक, तीन पंक इक सप्तमीं देख ।
रत्न वालुक नैं पंक थी चीन, पंचमे विकल्प भंगा तीन ।।
६७. तथा रत्न इक वालुक दोय, दोय पंक इक धूमा जोय ।
तथा रत्न इक वालुक दोय, दोय पंक इक तम अवलोय ।।
६८. तथा रत्न इक वालुक दोय, दोय पंक इक सप्तमीं जोय ।
रत्न वालुक नैं पंक थी चीन, छठै विकल्प भंगा तीन ।।
६९. तथा रत्न बे वालुक एक, दोय पंक इक धूमा देख ।
तथा रत्न बे वालुक एक, दोय पंक इक तमा उवेख ।।
७०. तथा रत्न बे वालुक एक, दोय पंक इक सप्तमीं देख ।
रत्न वालुक नैं पंक थी चीन, सप्तम विकल्प भंगा तीन ।।
७१. तथा रत्न इक वालुक तीन, एक पंक इक धूम मलीन ।
तथा रत्न इक वालुक तीन, एक पंक इक तमा दुचीन ।।
७२. तथा रत्न इक वालुक तीन, एक पंक इक सप्तमीं लीन ।
रत्न वालुक नैं पंक थी चीन, अष्टम विकल्प भंगा तीन ।।
७३. तथा रत्न बे वालुक दोय, एक पंक इक धूमा जोय ।
तथा रत्न बे वालुक दोय, एक पंक इक तमा होय ।।
७४. तथा रत्न बे वालुक दोय, एक पंक इक सप्तमीं होय ।
रत्न वालुक नैं पंक थी चीन, नवमे विकल्प भंगा तीन ।।
७५. तथा रत्न त्रिण वालुक एक, एक पंक इक धूम उवेख ।
तथा रत्न त्रिण वालुक एक, एक पंक इक तमा विशेख ।।
७६. तथा रत्न त्रिण वालुक एक, एक पंक इक सप्तमीं शेख ।
रत्न वालुक नैं पंक थी चीन, दशमे विकल्प भंगा तीन ।।

हिवै रत्न वालुक धूम थी २ भांगा दश विकल्प करि २० भांगा कहै छै—

७७. तथा रत्न इक वालुक एक, एक धूम त्रिहुं तमा उवेख ।
तथा रत्न इक वालुक एक, एक धूमा त्रिहुं सप्तमीं लेख ।।
७८. तथा रत्न इक वालुक एक, बे धूमा बे तमा विशेख ।
तथा रत्न इक वालुक एक, बे धूमा बे सप्तमीं शेख ।
७९. तथा रत्न इक वालुक दोय, एक धूम बे तम अवलोय ।
तथा रत्न इक वालुक दोय, एक धूम बे सप्तमीं जोय ।।
८०. तथा रत्न बे वालुक एक, एक धूम बे तमा उवेख ।
तथा रत्न बे वालुक एक, एक धूम बे सप्तमी शेख ।।
८१. तथा रत्न इक वालुक एक, तीन धूम एक तम उवेख ।
तथा रत्न इक वालुक एक, तीन धूम एक सप्तमी शेख ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८२. तथा रत्न इक वालुक दोय, दोय धूम एक तम अवलोय।
तथा रत्न इक वालुक दोय, दोय धूम इक सप्तमीं होय ।।
८३. तथा रत्न बे वालुक एक, दोय धूम इक तम उवेख।
तथा रत्न बे वालुक एक, दोय धूम इक सप्तमी शेख ।।
८४. तथा रत्न इक वालुक तीन, एक धूम इक तम दुचीन।
तथा रत्न इक वालुक तीन, एक धूम इक सप्तमीं लीन ।।
८५. तथा रत्न बे वालुक दोय, एक धूम इक तमा होय।
तथा रत्न बे वालुक दोय, एक धूम इक सप्तमीं जोय ।।
८६. तथा रत्न त्रिण वालुक एक, एक धूम इक तमा विशेख।
तथा रत्न त्रिण वालुक एक, एक धूम इक सप्तमी शेख ।।

हिवै रत्न वालुक तम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भांगा कहै छै—

८७. तथा रत्न इक वालुक एक, एक तमा त्रिहुं सप्तमीं लेख।
रत्न वालुक नें तम थी देख, धुर विकल्प करि भंगो एक ।।
८८. तथा रत्न इक वालुक एक, दोय तमा बिहुं सप्तमीं पेख।
रत्न वालुक नैं तम थी देख, द्वितीय विकल्प करि भंगो एक ।।
८९. तथा रत्न इक वालुक दोय, एक तम बे सप्तमीं होय।
रत्न वालुक नैं तम थी देख, तृतीय विकल्प करि भंगो एक ।।
९०. तथा रत्न बे वालुक एक, एक तमा बिहुं सप्तमीं लेख।
रत्न वालुक नैं तम थी देख, चउथे विकल्प भंगो एक ।।
९१. तथा रत्न इक वालुक एक, तीन तमा इक सप्तमीं शेख।
रत्न वालुक नैं तम थी जोय, पंचमे विकल्प इक भंग होय ।।
९२. तथा रत्न इक वालुक दोय, दोय तमा इक सप्तमीं होय।
रत्न वालुक नैं तम थी जोय, छठे विकल्प इक भंग होय ।।
९३. तथा रत्न बे वालुक एक, दोय तमा इक सप्तमीं लेख।
रत्न वालुक नैं तम थी जोय, सप्तम विकल्प इक भंग होय ।।
९४. तथा रत्न इक वालुक तीन, एक तमा इक सप्तमीं चीन।
रत्न वालुक नैं तम थी जोय, अष्टम विकल्प इक भंग होय ।।
९५. तथा रत्न बे वालुक दोय, एक तमा इक सप्तमीं होय।
रत्न वालुक नैं तम थी चंग, नवमे विकल्प ए इक भंग ।।
९६. तथा रत्न त्रिण वालुक एक, एक तमा इक सप्तमी शेख।
रत्न वालुक तम थकी गिणेह, दशमे विकल्प इक भंग एह ।।

हिवै रत्न पंक थी एक एक विकल्प करि ३ भांगा, ते किसा ? रत्न पंक धूम थी २, रत्न पंक तम थी १ एवं ३ भांगा। दश विकल्प करि ३० भांगा। तिहां रत्न पंक धूम थी २ भांगा, दश विकल्प करि २० भांगा कहै छै—

९७. तथा रत्न इक पंके एक, एक धूम त्रिण तमा विशेख।
तथा रत्न इक पंके एक, एक धूम त्रिहुं सप्तमीं देख ।।
९८. तथा रत्न इक पंके एक, दोय धूम बे तमा उवेख।
तथा रत्न इक पंके एक, दोय धूम बे सप्तमीं शेख ।।
९९. तथा रत्न इक पंके दोय, एक धूम बे तमा होय।
तथा रत्न इक पंके दोय, एक धूम बे सप्तमी जोय ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१००. तथा रत्न बे पंके एक, एक धूम बे तमा विशेख।
तथा रत्न बे पंके एक, एक धूम बे सप्तमीं शेख ॥
१०१ तथा रत्न इक पंके एक, तीन धूम इक तमा उवेख।
तथा रत्न इक पंके एक, तीन धूम इक सप्तमीं शेख ॥
१०२. तथा रत्न इक पंके दोय, दोय धूम इक तमा जोय।
तथा रत्न इक पंके दोय, दोय धूम इक सप्तमीं जोय ॥
१०३. तथा रत्न बे पंके एक, दोय धूम इक तमा उवेख।
तथा रत्न बे पंके एक, दोय धूम इक सप्तमीं शेख ॥
१०४. तथा रत्न इक पंके तीन, एक धूम इक तम मलीन।
तथा रत्न इक पंके तीन, एक धूम इक सप्तमीं लीन ॥
१०५. तथा रत्न बे पंके दोय, एक धूम एक तमा जोय।
तथा रत्न बे पंके दोय, एक धूम इक सप्तमीं होय ॥
१०६. तथा रत्न त्रिण पंके एक, एक धूम इक तमा पेख।
तथा रत्न त्रिण पंके एक, एक धूम इक सप्तमीं शेख ॥

हिवै रत्न पंक तम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भांगा कहै छै—

१०७. तथा रत्न इक पंके एक, एक तम त्रिण सप्तमीं शेख।
तथा रत्न इक पंके एक, दोय तमा बे सप्तमीं लेख ॥
१०८. तथा रत्न इक पंके दोय, एक तमा बे सप्तमीं सोय।
तथा रत्न बे पंके एक, एक तमा बे सप्तमीं शेख ॥
१०९. तथा रत्न इक पंके एक, तीन तमा इक सप्तमीं लेख।
तथा रत्न इक पंके दोय, दोय तमा इक सप्तमीं सोय ॥
११०. तथा रत्न बे पंके एक, दोय तमा इक सप्तमीं लेख।
तथा रत्न इक पंके तीन, एक तमा इक सप्तमीं लीन।
१११. तथा रत्न बे पंके दोय, एक तमा इक सप्तमीं जोय।
तथा रत्न त्रिण पंके एक, एक तमा एक सप्तमीं शेख ॥

हिवै रत्न धूम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भांगा कहै छै—

११२. तथा रत्न इक धूमा एक, एक तमा त्रिण सप्तमीं देख।
तथा रत्न इक धूमा एक, दोय तमा बे सप्तमीं शेख ॥
११३. तथा रत्न इक धूमा दोय, एक तमा बे सप्तमीं होय।
तथा रत्न बे धूमा एक, एक तमा बे सप्तमीं पेख ॥
११४. तथा रत्न इक धूमा एक, तीन तमा इक सप्तमीं शेख।
तथा रत्न इक धूमा दोय, दोय तमा इक सप्तमीं सोय ॥
११५. तथा रत्न बे धूमा एक, दोय तमा इक सप्तमीं लेख।
तथा रत्न इक धूमा तीन, एक तमा एक सप्तमीं चीन ॥
११६. तथा रत्न बे धूमा दोय, एक तमा इक सप्तमीं होय।
तथा रत्न त्रिण धूमा एक, एक तमा एक सप्तमीं शेख ॥

हिवै सक्कर थी १० भांगा, ते किसा? सक्कर वालुक थी ६, सक्कर पंक थी ३, सक्कर धूम थी १ एवं सक्कर थी १० एकेक विकल्प करि हुवै। तिहां सक्कर वालुक थी ६, ते किसा? सक्कर वालुक पंक थी ३, सक्कर वालुक धूम थी २, सक्कर वालुक तम थी १, तिहां सक्कर वालु पंक थी ३ भांगा दश विकल्प करि ३० भांगा कहै छै—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११७. तथा सक्कर इक वालुक एक, एक पंक त्रिण धूम विशेख।
तथा सक्कर इक वालुक एक, एक पंक त्रिण तमा उवेख।।
११८. तथा सक्कर इक वालुक एक, एक पंक त्रिण सप्तमीं लेख।
सक्कर वालुक पंक थी चीन, धुर विकल्प करि ए भंग तीन।।
११६. तथा सक्कर इक वालुक एक, दोय पंक बे धूमा लेख।
तथा सक्कर इक वालुक एक, दोय पंक बे तमा विशेख।।
१२०. तथा सक्कर इक वालुक एक, दोय पंक बे सप्तमी शेख।
सक्कर वालुक पंक थी चीन, द्वितीय विकल्प करि ए भंग तीन।।
१२१. तथा सक्कर इक वालुक दोय, एक पंक बे धूमा जोय।
तथा सक्कर इक वालुक दोय, एक पंक बे तमा होय।।
१२२. तथा सक्कर इक वालुक दोय, एक पंक बे सप्तमी जोय।
सक्कर वालुक पंक थी चीन, तृतीय विकल्प करि भंगा तीन।।
१२३. तथा सक्कर बे वालुक एक, एक पंक बिहुं धूम विशेख।
तथा सक्कर बे वालुक एक, एक पंक बिहुं तमा उवेख।।
१२४. तथा सक्कर बे वालुक एक, एक पंक बिहुं सप्तमी शेख।
सक्कर वालुक पंक थी चीन, चउथे विकल्प भंगा तीन।।
१२५. तथा सक्कर इक वालुक एक, तीन पंक इक धूमा देख।
तथा सक्कर इक वालुक एक, तीन पंक इक तमा विशेख।।
१२६. तथा सक्कर इक वालुक एक, तीन पंक इक सप्तमीं पेख।
सक्कर वालुक पंक थी चीन, पंचमे विकल्प भंगा तीन।।
१२७. तथा सक्कर इक वालुक दोय, दोय पंक इक धूमा जोय।
तथा सक्कर इक वालुक दोय, दोय पंक इक तमा होय।।
१२८. तथा सक्कर इक वालुक दोय, दोय पंक इक सप्तमीं जोय।
सक्कर वालुक पंक थी चीन, षष्ठम विकल्प भंगा तीन।।
१२६. तथा सक्कर बे वालुक एक, दोय पंक इक धूमा देख।
तथा सक्कर बे वालुक एक, दोय पंक इक तमा लेख।।
१३०. तथा सक्कर बे वालुक एक, दोय पंक इक सप्तमीं शेख।
सक्कर वालुक पंक थी चीन, सप्तम विकल्प भंगा तीन।।
१३१. तथा सक्कर इक वालुक तीन, एक पंक इक धूमा लीन।
तथा सक्कर इक वालुक तीन, एक पंक इक तमा दुचीन।।
१३२. तथा सक्कर इक वालुक तीन, एक पंक इक सप्तमीं लीन।
सक्कर वालुक पंक थी चीन, अष्टम विकल्प भंगा तीन।।
१३३. तथा सक्कर बे वालुक दोय, एक पंक इक धूमा जोय।
तथा सक्कर बे वालुक दोय, एक पंक इक तमा जोय।।
१३४. तथा सक्कर बे वालुक दोय, एक पंक इक सप्तमीं जोय।
सक्कर वालुक पंक थी चीन, नवमे विकल्प भंगा तीन।
१३५. तथा सक्कर त्रिण वालुक एक, एक पंक इक धूमा लेख।
तथा सक्कर त्रिण वालुक एक, एक पंक इक तमा देख।।
१३६. तथा सक्कर त्रिण वालुक एक, एक पंक इक सप्तमीं शेख।
सक्कर वालुक पंक थी चीन, दशमे विकल्प भंगा तीन।।

ए सक्कर वालुक पंक थी ३ भांगा, दश विकल्प करि ३० भांगा कह्या।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै सक्कर वालुक धूम थी २ भांगा दश विकल्प करि २० भांगा कहै छै—

१३७. तथा सक्कर इक वालुक एक, एक धूम त्रिहुं तमा विशेख ।
तथा सक्कर इक वालुक एक, एक धूम त्रिहुं सप्तमीं शेख ।।

१३८. तथा सक्कर इक वालुक एक, दोय धूम बे तमा विशेख ।
तथा सक्कर इक वालुक एक, दोय धूम बे सप्तमीं शेख ।।

१३९. तथा सक्कर इक वालुक दोय, एक धूम बे तम अवलोय ।
तथा सक्कर इक वालुक दोय, एक धूम बे सप्तमीं सोय ।।

१४०. तथा सक्कर बे वालुक एक, एक धूम बे तम उवेख ।
तथा सक्कर बे वालुक एक, इक धूम बे सप्तमीं शेख ।।

१४१. तथा सक्कर इक वालुक एक, तीन धूम इक तमा देख ।
तथा सक्कर इक वालुक एक, तीन धूम इक सप्तमीं शेख ।।

१४२. तथा सक्कर इक वालुक दोय, दोय धूम इक तम अवलोय ।
तथा सक्कर इक वालुक दोय, दोय धूम इक सप्तमीं होय ।।

१४३. तथा सक्कर बे वालुक एक, दोय धूम इक तम संपेख ।
तथा सक्कर बे वालुक एक, दोय धूम इक सप्तमीं देख ।।

१४४. तथा सक्कर इक वालुक तीन, एक धूम इक तम मलीन ।
तथा सक्कर इक वालुक तीन, एक धूम इक सप्तमीं चीन ।।

१४५. तथा सक्कर बे वालुक दोय, एक धूम इक तम अवलोय ।
तथा सक्कर बे वालुक दोय, एक धूम इक सप्तमीं होय ।।

१४६. तथा सक्कर त्रिण वालुक एक, एक धूम इक तमा उवेख ।
तथा सक्कर त्रिण वालुक एक, एक धूम इक सप्तमीं शेख ।।

ए सक्कर वालुक धूम थी २ भांगा, दश विकल्प करि २० भांगा कह्या ।
हिवै सक्कर वालुक तम थी १ भांगो, दश विकल्प करि १० भांगा कहै छै—

१४७. तथा सक्कर इक वालुक एक, एक तमा त्रिहुं सप्तमीं लेख ।
तथा सक्कर इक वालुक एक, दोय तमा बे सप्तमीं शेख ।।

१४८. तथा सक्कर इक वालुक दोय, एक तमा बे सप्तमीं जोय ।
तथा सक्कर बे वालुक एक, एक तमा बे सप्तमीं पेख ।।

१४९. तथा सक्कर इक वालुक एक, तीन तमा इक सप्तमीं लेख ।
तथा सक्कर इक वालुक दोय, दोय तमा इक सप्तमीं होय ।।

१५०. तथा सक्कर बे वालुक एक, दोय तमा इक सप्तमीं पेख ।
तथा सक्कर इक वालुक तीन, एकतमा इक सप्तमीं चीन ।।

१५१. तथा सक्कर त्रिण वालुक दोय, एक तमा इक सप्तमीं सोय ।
तथा सक्कर त्रिण वालुक एक, एक तमा इक सप्तमीं शेख ।।

ए सक्कर वालुक तम थी १ भांगो, दश विकल्प करि १० भांगा कह्या । एवं सक्कर थी १० भांगा, दश विकल्प करि १०० भांगा कह्या ।

हिवै वालुक थी ४ भांगा, दश विकल्प करि ४० भांगा । वालुक थी ४, ते किसा ? वालुक पंक थी ३, वालुक धूम थी १ । वालुक पंक थी ३, ते किसा ? वालुक पंक धूम थी २ वालुक पंक तम थी १— एवं वालुक पंक थी ३ भांगा । तिहां वालुक पंक धूम थी २ भांगा दश विकल्प करि कहै छै --

१५२. तथा वालुक इक पंके एक, एक धूम त्रिण तमा उवेख ।
तथा वालुक इक पंके एक, एक धूम त्रिण सप्तमीं शेख ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५३. तथा वालुक इक पंके एक, दोय धूम बे तमा विशेख।
तथा वालुक इक पंके एक, दोय धूम बे सप्तमीं लेख।।
१५४. तथा वालुक इक पंके दोय, एक धूम बे तमा जोय।
तथा वालुक इक पंके दोय, एक धूम बे सप्तमीं होय।।
१५५. तथा वालुक बे पंके एक, एक धूम बे तमा पेख।
तथा वालुक बे पंके एक, एक धूम बे सप्तमीं शेख।।
१५६. तथा वालुक इक पंके एक, तीन धूम इक तमा उवेख।
तथा वालुक इक पंके एक, तीन धूम इक सप्तमीं लेख।।
१५७. तथा वालुक इक पंके दोय, दोय धूम इक तमा जोय।
तथा वालुक इक पंके दोय, दोय धूम इक सप्तमीं होय।।
१५८. तथा वालुक बे पंके एक, दोय धूम इक तमा उवेख।
तथा वालुक बे पंके एक, दोय धूम इक सप्तमीं शेख।।
१५९. तथा वालुक इक पंके तीन, एक धूम इक तमा दुचीन।
तथा वालुक इक पंके तीन, एक धूम इक सप्तमीं लीन।।
१६०. तथा वालुक बे पंके दोय, एक धूम इक तमा होय।
तथा वालुक बे पंके दोय, एक धूम इक सप्तमीं जोय।।
१६१. तथा वालुक त्रिण पंके एक, एक धूम इक तमा विशेख।
तथा वालुक त्रिण पंके एक एक धूम इक सप्तमीं शेख।।

ए वालुक पंक धूम थी २ भांगा, दश विकल्प करि २० भांगा कह्या।

हिवै वालुक पंक तम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भांगा कहै छै--

१६२. तथा वालुक इक पंके एक, एक तमा त्रिण सप्तमीं शेख।
तथा वालुक इक पंके एक, दोय तमा बे सप्तमीं शेख।।
१६३. तथा वालुक इक पंके दोय, इक तमा बे सप्तमीं होय।
तथा वालुक बे पंके एक, एक तमा बे सप्तमीं शेख।।
१६४. तथा वालुक इक पंके एक, तीन तमा इक सप्तमीं पेख।
तथा वालुक इक पंके दोय, दोय तमा इक सप्तमीं जोय।
१६५. तथा वालुक बे पंके एक, दोय तमा इक सप्तमीं पेख।
तथा वालुक इक पंके तीन, एक तमा इक सप्तमीं लीन।।
१६६. तथा वालुक बे पंके दोय, एक तमा इक सप्तमीं होय।
तथा वालुक त्रिण पंके एक, एक तमा इक सप्तमीं शेख।।

ए वालुक पंक तम थी १ भांगो, दश विकल्प करि १० भांगा कह्या। ए वालु पंक थी ३ भांगा, दश विकल्प करि ३० भांगा कह्या।

हिवै वालुक धूम थी १ भांगो, दश विकल्प करि १० भांगा कहै छै—

१६७. तथा वालुक इक धूमा एक, एक तमा त्रिण सप्तमीं देख।
तथा वालुक इक धूमा एक, दोय तमा बे सप्तमीं शेख।।
१६८. तथा वालुक इक धूमा दोय, एक तमा बे सप्तमीं होय।
तथा वालुक बे धूमा एक, एक तमा बे सप्तमीं पेख।।
१६९. तथा वालुक इक धूमा एक, तीन तमा इक सप्तमीं शेख।
तथा वालुक इक धूमा दोय, दोय तमा इक सप्तमीं होय।।
१७०. तथा वालुक बे धूमा एक, दोय तमा इक सप्तमीं पेख।
तथा वालुक इक धूमा तीन, एक तमा इक सप्तमीं लीन।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७१. तथा वालुक बे धूमा दोय, एक तमा इक सप्तमीं सोय।
तथा वालुक त्रिण धूमा एक, एक तमा इक सप्तमीं लेख ॥

ए वालुक धूम थी १ भांगो, १० विकल्प करि १० भांगा कह्या। एवं वालुक थी ४ भांगा दश विकल्प करि ४० भांगा कह्या।

हिवै पंक थी १ भांगो, दश विकल्प करि १० भांगा कहै छै—

१७२. तथा पंक इक धूमा एक, एक तमा त्रिण सप्तमीं शेख।
तथा पंक इक धूमा एक, दोय तमा बे सप्तमीं लेख ॥

१७३. तथा पंक इक धूमा दोय, एक तमा बे सप्तमीं सोय।
तथा पंक बे धूमा एक, एक तमा बे सप्तमीं देख ॥

१७४. तथा पंक इक धूमा एक, तीन तमा इक सप्तमीं शेख।
तथा पंक इक धूमा दोय, दोय तमा इक सप्तमीं सोय ॥

१७५. तथा पंक बे धूमा एक, दोय तमा इक सप्तमीं लेख।
तथा पंक इक धूमा तीन, एक तमा इक सप्तमीं लीन ॥

१७६. तथा पंक बे धूमा दोय, एक तमा इक सप्तमीं सोय।
तथा पंक त्रिण धूमा एक, एक तमा इक सप्तमी शेख ॥

ए पंक थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भांगा कह्या। एवं एकेक विकल्प करि रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालुक थी ४, पंक थी १ ए ३५ भांगा, ते दश विकल्प करि रत्न थी २०० भांगा। सक्कर थी १०० भांगा। वालुक थी ४० भांगा। पंक थी १० भांगा। एवं सर्व ३५० चउकसंजोगिया भांगा जाणवा। हिवै एहनों यंत्र कहै छै—

वा०—छह जीव नां चउकसंयोगिक, तेहनां विकल्प तो दश, भांगा साढा तीन सौ। एक-एक विकल्प नां भांगा पैंतीस पैंतीस हुवै ते माटै दश विकल्प नां ३५० भांगा हुवै। एक-एक विकल्प नां रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालुक थी ४, पंक थी १—एवं ३५। रत्न थी २० ते किसा? रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालुक थी ६, रत्न पंक थी ३, रत्न धूम थी १—एवं २० रत्न थी एक एक विकल्प नां हुवै। रत्न सक्कर थी १० ते किसा? रत्न सक्कर वालुक थी ४, रत्न सक्कर पंक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी २, रत्न सक्कर तम थकी १—एवं १० एक-एक विकल्प नां हुवै। तिहां रत्न सक्कर वालुक थकी ४ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

१	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक ३ पंक
२	२	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, ३ धूम
३	३	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, ३ तम
४	४	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, ३ सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै द्वितीय विकल्पे ४ भांगा

५	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, २ पंक
६	२	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, २ धूम
७	३	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, २ तम
८	४	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, २ सप्तमीं

हिवै तृतीय विकल्पे ४ भांगा

९	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक २ पंक
१०	२	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, २ धूम
११	३	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, २ तम
१२	४	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, २ सप्तमीं

हिवै चतुर्थ विकल्पे ४ भांगा

१३	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पंक
१४	२	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ धूम
१५	३	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ तम
१६	४	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ सप्तमीं

हिवै पंचम विकल्पे ४ भांगा

१७	१	१ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, १ पंक
१८	२	१ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम
१९	३	१ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, १ तम
२०	४	१ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, १ सप्तमीं

हिवै षष्ठ विकल्पे ४ भांगा

२१	१	१ रत्न, २ सक्कर, २ वालु, १ पंक
२२	२	१ रत्न, २ सक्कर, २ वालु, १ धूम
२३	३	१ रत्न, २ सक्कर, २ वालु, १ तम
२४	४	१ रत्न, २ सक्कर, २ वालु, १ सप्तमीं

हिवै सप्तम विकल्पे ४ भांगा

२५	१	२ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ पंक
२६	२	२ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ धूम
२७	३	२ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ तम
२८	४	२ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ सप्तमीं

हिवै अष्टम विकल्पे ४ भांगा

२९	१	१ रत्न, ३ सक्कर, १ वालु, १ पंक
३०	२	१ रत्न, ३ सक्कर, १ वालु, १ धूम
३१	३	१ रत्न, ३ सक्कर, १ वालु, १ तम
३२	४	१ रत्न, ३ सक्कर, १ वालु, १ सप्तमीं

हिवै नवम विकल्पे ४ भांगा

३३	१	२ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ पंक
३४	२	२ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ धूम
३५	३	२ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ तम
३६	४	२ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ सप्तमीं

हिवै दशम विकल्पे ४ भांगा

३७	१	३ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक
३८	२	३ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ धूम
३९	३	३ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ तम
४०	४	३ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ सप्तमीं

ए रत्न सक्कर वालुक थी ४ भांगा दश विकल्प करि ४० भांगा कह्या।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवैं रत्न सक्कर थी ३ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—		
४१	१	१ रत्न, १ सक्कर १ पंक, ३ धूम
४२	२	१ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, ३ तम
४३	३	१ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, ३ सप्तमीं
हिवैं द्वितीय विकल्पे		
४४	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ पंक, २ धूम
४५	२	१ रत्न, १ सक्कर, २ पंक, २ तम
४६	३	१ रत्न, १ सक्कर, २ पंक, २ सप्तमीं
हिवैं तृतीय विकल्पे		
४७	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, २ धूम
४८	२	१ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, २ तम
४९	३	१ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, २ सप्तमीं
हिवैं चतुर्थ विकल्पे		
५०	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, २ धूम
५१	२	२ रत्न, १ सक्कर, १ पंक,२ तम
५२	३	२ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, २ सप्तमीं
हिवैं पंचम विकल्पे ३ भांगा		
५३	१	१ रत्न, १ सक्कर, ३ पंक, १ धूम
५४	२	१ रत्न, १ सक्कर, ३ पंक, १ तम
५५	३	१ रत्न, १ सक्कर, ३ पंक, १ सप्तमीं
हिवैं षष्ठ विकल्पे ३ भांगा		
५६	१	१ रत्न, २ सक्कर, २ पंक, १धूम
५७	२	१ रत्न, २ सक्कर, २ पंक, १ तम
५८	३	१ रत्न, २ सक्कर, २ पंक, १ सप्तमीं

हिवैं सप्तम विकल्पे ३ भांगा		
५९	१	२ रत्न, १ सक्कर, २ पंक, १ धूम
६०	२	२ रत्न, १ सक्कर, २ पंक १ तम
६१	३	२ रत्न, १ सक्कर, २ पंक, १ सप्तमीं
हिवैं अष्टम विकल्पे ३ भांगा		
६२	१	१ रत्न, ३ सक्कर, १ पंक, १ धूम
६३	२	१ रत्न, ३ सक्कर, १ पंक, १ तम
६४	३	१ रत्न, ३ सक्कर, १ पंक, १ सप्तमीं
हिवैं नवम विकल्पे ३ भांगा		
६५	१	२ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ धूम
६६	२	२ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ तम
६७	३	२ रत्न, २ सक्कर, १ पंक १ सप्तमीं
हिवैं दशम विकल्पे ३ भांगा		
६८	१	३ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ धूम
६९	२	३ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ तम
७०	३	३ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ सप्तमीं
हिवैं रत्न सक्कर धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—		
७१	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३ तम
७२	२	१ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३सप्तमीं
हिवैं द्वितीय विकल्पे २ भांगा		
७३	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ धूम, २ तम
७४	२	१ रत्न, १ सक्कर, २ धूम, २ सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै तृतीय विकल्पे २ भांगा		
७५	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ धूम, २ तम
७६	२	१ रत्न, २ सक्कर, १ धूम, २ सप्तमीं
हिवै चतुर्थ विकल्पे २ भांगा		
७७	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ धूम २ तम
७८	२	२ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, २ सातमीं
हिवै पंचम विकल्पे २ भांगा		
७९	१	१ रत्न, १ सक्कर, ३ धूम, १ तम
८०	२	१ रत्न, १ सक्कर, ३ धूम, १ सप्तमीं
हिवै षष्ठ विकल्पे २ भांगा		
८१	१	१ रत्न, २ सक्कर, २ धूम, १ तम
८२	२	१ रत्न, २ सक्कर, २ धूम, १ सप्तमीं
हिवै सप्तम विकल्पे २ भांगा		
८३	१	२ रत्न, १ सक्कर, २ धूम, १ तम
८४	२	२ रत्न, १ सक्कर, २ धूम, १ सप्तमीं
हिवै अष्टम विकल्पे २ भांगा		
८५	१	१ रत्न, ३ सक्कर, १ धूम, १ तम
८६	२	१ रत्न, ३ सक्कर, १ धूम, १ सप्तमीं
हिवै नवम विकल्पे २ भांगा		
८७	१	२ रत्न, २ सक्कर, १ धूम, १ तम
८८	२	२ रत्न, २ सक्कर, १ धूम, १ सप्तमीं
हिवै दशम विकल्पे २ भांगा		
८९	१	३ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, १ तम
९०	२	३ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, १ सप्तमीं

हिवै रत्न सक्कर तम थी १ भांगो प्रथम विकल्पे		
९१	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ तम, ३ सप्तमी
हिवै द्वितीय विकल्पे १ भांगो		
९२	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ तम, २ सप्तमीं
हिवै तृतीय विकल्पे १ भांगो		
९३	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ तम, २ सप्तमीं
हिवै चतुर्थ विकल्पे १ भांगो		
९४	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ तम, २ सप्तमीं
हिवै पंचम विकल्पे एक भांगो		
९५	१	१ रत्न, १ सक्कर, ३ तम, १ सप्तमीं
हिवै षष्ठ विकल्पे एक भांगो		
९६	१	१ रत्न, २ सक्कर, २ तम, १ सप्तमीं
हिवै सप्तम विकल्पे १ भांगो		
९७	१	२ रत्न, १ सक्कर, २ तम, १ सप्तमीं
हिवै अष्टम विकल्पे एक भांगो		
९८	१	१ रत्न, ३ सक्कर, १ तम, १ सप्तमीं
हिवै नवम विकल्पे १ भांगो		
९९	१	२ रत्न, २ सक्कर, १ तम, १ सप्तमीं
हिवै दशम विकल्पे एक भांगो		
१००	१	३ रत्न, १ सक्कर, १ तम, १ सप्तमीं
एवं रत्न सक्कर थी १० भांगा, दश विकल्प करि १०० भांगा कह्या।		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै रत्न वालुक थी ६। एकेक विकल्प करि ६ भांगा ते किसा ? रत्न वालुक पंक थी ३, रत्न वालुक धूम थी २, रत्न वालुक तम थी १—एवं ६। रत्न वालुक पंक थी ३ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

१०१	१	१ रत्न, १ वालुक, १ पंक, ३ धूम
१०२	२	१ रत्न, १ वालुक, १ पंक, ३ तम
१०३	३	१ रत्न, १ वालुक, १ पंक, ३ सप्तमी

हिवै द्वितीय विकल्पे तीन भांगा

१०४	१	१ रत्न, १ वालुक, २ पंक, २ धूम
१०५	२	१ रत्न, १ वालुक, २ पंक, २ तम
१०६	३	१ रत्न, १ वालुक, २ पंक, २ सप्तमीं

हिवै तृतीय विकल्पे ३ भांगा

१०७	१	१ रत्न, २ वालु, १ पंक, २ धूम
१०८	२	१ रत्न, २ वालु, १ पंक, २ तम
१०९	३	१ रत्न, २ वालु, १ पंक, २ सप्तमीं

हिवै चतुर्थ विकल्पे ३ भांगा

११०	१	२ रत्न, १ वालु, १ पंक, २ धूम
१११	२	२ रत्न, १ वालु, १ पंक, २ तम
११२	३	२ रत्न, १ वालु, १ पंक, २ सप्तमीं

हिवै पंचम विकल्पे ३ भांगा

११३	१	१ रत्न, १ वालु, ३ पंक, १ धूम
११४	२	१ रत्न, १ वालु, ३ पंक, १ तम
११५	३	१ रत्न, १ वालु, ३ पंक, १ सप्तमीं

हिवै षष्ठ विकल्पे ३ भांगा

११६	१	१ रत्न, २ वालु, २ पंक, १ धूम
११७	२	१ रत्न, २ वालु, २ पंक, १ तम
११८	३	१ रत्न, २ वालु, २ पंक, १ सप्तमीं

हिवै सप्तम विकल्पे ३ भांगा

११९	१	२ रत्न, १ वालु, २ पंक, १ धूम
१२०	२	२ रत्न, १ वालु, २ पंक, १ तम
१२१	३	२ रत्न, १ वालु, २ पंक, १ सप्तमीं

हिवै अष्टम विकल्पे तीन भांगा

१२२	१	१ रत्न, ३ वालु, १ पंक, १ धूम
१२३	२	१ रत्न, ३ वालु, १ पंक, १ तम
१२४	३	१ रत्न, ३ वालु, १ पंक, १ सप्तमीं

हिवै नवम विकल्पे ३ भांगा

१२५	१	२ रत्न, २ वालु, १ पंक, १ धूम
१२६	२	२ रत्न, २ वालु, १ पंक, १ तम
१२७	३	२ रत्न, २ वालु, १ पंक, १ सप्तमीं

हिवै दशम विकल्पे ३ भांगा

१२८	१	३ रत्न, १ वालु, १ पंक, १ धूम
१२९	२	३ रत्न, १ वालु, १ पंक, १ तम
१३०	३	३ रत्न, १ वालु, १ पंक, १ सप्तमीं

हिवै रत्न वालुक धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै —

१३१	१	१ रत्न, १ वालु, १ धूम, ३ तम
१३२	२	१ रत्न, १ वालु, १ धूम, ३ सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै द्वितीय विकल्पे २ भांगा		
१३३	१	१ रत्न, १ वालु, २ धूम, २ तम
१३४	२	१ रत्न, १ वालु, २ धूम, २ सप्तमीं
हिवै तृतीय विकल्पे २ भांगा		
१३५	१	१ रत्न, २ वालु, १ धूम, २ तम
१३६	२	१ रत्न, २ वालु, १ धूम, २ सप्तमीं
हिवै चतुर्थ विकल्पे २ भांगा		
१३७	१	२ रत्न, १ वालु, १ धूम, २ तम
१३८	२	२ रत्न, १ वालु, १ धूम, २ सप्तमीं
हिवै पंचम विकल्पे २ भांगा		
१३९	१	१ रत्न, १ वालु, ३ धूम, १ तम
१४०	२	१ रत्न, १ वालु, ३ धूम, १ सप्तमीं
हिवै षष्ठ विकल्पे २ भांगा		
१४१	१	१ रत्न, २ वालु, २ धूम, १ तम
१४२	२	१ रत्न, २ वालु, २ धूम, १ सप्तमीं
हिवै सप्तम विकल्पे २ भांगा		
१४३	१	२ रत्न, १ वालु, २ धूम, १ तम
१४४	२	२ रत्न, १ वालु, २ धूम, १ सप्तमी
हिवै अष्टम विकल्पे २ भांगा		
१४५	१	१ रत्न, ३ वालु, १ धूम, १ तम
१४६	२	१ रत्न, ३ वालु, १ धूम, १ सप्तमीं
हिवै नवम विकल्पे २ भांगा		
१४७	१	२ रत्न, २ वालु, १ धूम, १ तम
१४८	२	२ रत्न, २ वालु, १ धूम १ सप्तमीं

हिवै दशम विकल्पे २ भांगा		
१४९	१	३ रत्न, १ वालु, १ धूम, १ तम
१५०	२	३ रत्न, १ वालु, १ धूम, १ सप्तमीं
हिवै रत्न वालुक तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—		
१५१	१	१ रत्न, १ वालु, १ तम, ३ सप्तमीं
द्वितीय विकल्पे १ भांगो		
१५२	१	१ रत्न, १ वालु, २ तम, २ सप्तमीं
तृतीय विकल्पे १ भांगो		
१५३	१	१ रत्न, २ वालु, १ तम, २ सप्तमीं
चतुर्थ विकल्पे १ भांगो		
१५४	१	२ रत्न, १ वालु, १ तम, २ सप्तमीं
पंचम विकल्पे १ भांगो		
१५५	१	१ रत्न, १ वालु, ३ तम, १ सप्तमीं
हिवै षष्ठ विकल्पे १ भांगो		
१५६	१	१ रत्न, २ वालु, २ तम, १ सप्तमीं
हिवै सप्तम विकल्पे १ भांगो		
१५७	१	२ रत्न, १ वालु, २ तम, १ सप्तमीं
हिवै अष्टम विकल्पे १ भांगो		
१५८	१	१ रत्न, ३ वालु, १ तम, १ सप्तमीं
हिवै नवम विकल्पे १ भांगो		
१५९	१	२ रत्न, २ वालु, १ तम, १ सप्तमीं
हिवै दशम विकल्पे १ भांगो		
१६०	१	३ रत्न, १ वालु, १ तम, १ सप्तमीं
ए रत्न वालुक थी ६ भांगा दश विकल्प करि ६० भांगा कह्या।		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै रत्न पंक थी एकेक विकल्प करि ३ भांगा, ते किसा ? रत्न पंक धूम थी २, रत्न पंक तम थी १-एवं ३। तिहां रत्न पंक धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

१६१	१	१ रत्न, १ पंक, १ धूम, ३ तम
१६२	२	१ रत्न, १ पंक, १ धूम, ३ सप्तमीं

हिवै द्वितीय विकल्प

१६३	१	१ रत्न, १ पंक, २ धूम, २ तम
१६४	२	१ रत्न, १ पंक, २ धूम, २ सप्तमी

हिवै तृतीय विकल्प

१६५	१	१ रत्न, २ पंक, १ धूम, २ तम
१६६	२	१ रत्न, २ पंक, १ धूम, २ सप्तमीं

हिवै चतुर्थ विकल्प

१६७	१	२ रत्न, १ पंक, १ धूम, २ तम
१६८	२	२ रत्न, १ पंक, १ धूम, २ सप्तमीं

हिवै पंचम विकल्प

१६९	१	१ रत्न, १ पंक, ३ धूम, १ तम
१७०	२	१ रत्न, १ पंक, ३ धूम, १ सप्तमीं

हिवै षष्ठ विकल्प

१७१	१	१ रत्न, २ पंक, २ धूम, १ तम
१७२	२	१ रत्न, २ पंक, २ धूम, १ सप्तमीं

हिवै सप्तम विकल्प

१७३	१	२ रत्न, १ पंक, २ धूम, १ तम
१७४	२	२ रत्न, १ पंक, २ धूम, १ सप्तमीं

हिवै अष्टम विकल्प

१७५	१	१ रत्न, ३ पंक, १ धूम, १ तम
१७६	२	१ रत्न, ३ पंक, १ धूम, १ सप्तमी

हिवै नवम विकल्प

१७७	१	२ रत्न, २ पंक, १ धूम, १ तम
१७८	३	२ रत्न, २ पंक, १ धूम, १ सप्तमीं

हिवै दशम विकल्प

१७९	१	३ रत्न, १ पंक, १ धूम, १ तम
१८०	२	३ रत्न, १ पंक, १ धूम, १ सप्तमी

हिवै रत्न पंक तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—

१८१	१	१ रत्न, १ पंक, १ तम, ३ सप्तमीं

हिवै द्वितीय विकल्प

१८२	१	१ रत्न, १ पंक, २ तम, २ सप्तमीं

हिवै तृतीय विकल्प

१८३	१	१ रत्न, २ पंक, १ तम, २ सप्तमीं

हिवै चतुर्थ विकल्प

१८४	१	२ रत्न, १ पंक, १ तम, २ सप्तमी

हिवै पंचम विकल्प

१८५	१	१ रत्न, १ पंक, ३ तम, १ सप्तमीं

हिवै षष्ठ विकल्प

१८६	१	१ रत्न, २ पंक, २ तम, १ सप्तमीं

हिवै सप्तम विकल्प

१८७	१	२ रत्न, १ पंक, २ तम, १ सप्तमीं

हिवै अष्टम विकल्प

१८८	१	१ रत्न, ३ पंक, १ तम, १ सप्तमीं

हिवै नवम विकल्प

१८९	१	२ रत्न, २ पंक, १ तम, १ सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै दशम विकल्पे

१९०	१	३ रत्न, १ पंक, १ तम, १ सप्तमीं

ए रत्न पंक तम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भांगा कह्या।

हिवै रत्न धूम तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प

१९१	१	१ रत्न, १ धूम, १ तम, ३ सप्तमीं

हिवै द्वितीय विकल्पे

१९२	१	१ रत्न, १ धूम, २ तम, २ सप्तमीं

हिवै तृतीय विकल्पे

१९३	१	१ रत्न, २ धूम, १ तम, २ सप्तमीं

हिवै चतुर्थ विकल्पे

१९४	१	२ रत्न, १ धूम, १ तम, २ सप्तमीं

हिवै पंचम विकल्पे

१९५	१	१ रत्न, १ धूम, ३ तम, १ सप्तमीं

हिवै षष्ठ विकल्पे

१९६	१	१ रत्न, २ धूम, २ तम, १ सप्तमीं

हिवै सप्तम विकल्पे

१९७	१	२ रत्न, १ धूम, २ तम, १ सप्तमीं

हिवै अष्टम विकल्पे

१९८	१	१ रत्न, ३ धूम, १ तम, १ सप्तमीं

हिवै नवम विकल्पे

१९९	१	२ रत्न, २ धूम, १ तम, १ सप्तमीं

हिवै दशम विकल्पे

२००	१	३ रत्न, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं

ए रत्न थी २० भांगा दश विकल्प करि २०० भांगा कह्या।

हिवै सक्कर थी एकेक विकल्प करि १० ते किसा ? सक्कर वालुक थी ६, सक्कर पंक थी ३, सक्कर धूम थी १-एवं १०। सक्कर वालुक थी ६ ते किसा ? सक्कर वालुक पंक थी ३, सक्कर वालुक धूम थी २, सक्कर वालुक तम थी १-एवं ६। तिहां सक्कर वालुक पंक थी ३ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै —

२०१	१	१ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ३ धूम
२०२	२	१ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ३ तम
२०३	३	१ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ३ सप्तमीं

हिवै द्वितीय विकल्प

२०४	१	१ सक्कर, १ वालु, २ पंक, २ धूम
२०५	२	१ सक्कर, १ वालु, २ पंक, २ तम
२०६	३	१ सक्कर, १ वालु, २ पंक, २ सप्तमीं

हिवै तृतीय विकल्प

२०७	१	१ सक्कर, २ वालु, १ पंक, २ धूम
२०८	२	१ सक्कर, २ वालु, १ पंक, २ तम
२०९	३	१ सक्कर, २ वालु, १ पंक, २ सप्तमीं

हिवै चतुर्थ विकल्प

२१०	१	२ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ धूम
२११	२	२ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ तम
२१२	३	२ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ सप्तमीं

हिवै पंचम विकल्पे

२१३	१	१ सक्कर, १ वालु, ३ पंक, १ धूम
२१४	२	१ सक्कर, १ वालु, ३ पंक, १ तम
२१५	३	१ सक्कर, १ वालु, ३ पंक, १ सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै षष्ठ विकल्पे

२१६	१	१ सक्कर, २ वालु, २ पंक, १ धूम
२१७	२	१ सक्कर, २ वालु, २ पंक, १ तम
२१८	३	१ सक्कर, २ वालु, २ पंक, १ सप्तमीं

हिवै सप्तम विकल्पे

२१९	१	२ सक्कर, १ वालु, २ पंक, १ धूम
२२०	२	२ सक्कर, १ वालु, २ पंक, १ तम
२२१	३	२ सक्कर, १ वालु, २ पंक, १ सप्तमीं

हिवै अष्टम विकल्पे

२२२	१	१ सक्कर, ३ वालु, १ पंक, १ धूम
२२३	२	१ सक्कर, ३ वालु, १ पंक, १ तम
२२४	३	१ सक्कर, ३ वालु, १ पंक, १ सप्तमीं

हिवै नवम विकल्पे

२२५	१	२ सक्कर, २ वालु, १ पंक, १ धूम
२२६	२	२ सक्कर, २ वालु, १ पंक, १ तम
२२७	३	२ सक्कर, २ वालु, १ पंक, १ सप्तमीं

हिवै दशम विकल्पे

२२८	१	३ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम
२२९	२	३ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ तम
२३०	३	३ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ सप्तमीं

हिवै सक्कर वालुक धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै —

२३१	१	१ सक्कर, १ वालु, १ धूम, ३ तम
२३२	२	१ सक्कर, १ वालु, १ धूम, ३ सप्तमीं

हिवै द्वितीय विकल्पे

२३३	१	१ सक्कर, १ वालु, २ धूम, २ तम
२३४	२	१ सक्कर, १ वालु, २ धूम, २ सप्तमीं

हिवै तृतीय विकल्पे

२३५	१	१ सक्कर, २ वालु, १ धूम, २ तम
२३६	२	१ सक्कर, २ वालु, १ धूम, २ सप्तमी

हिवै चतुर्थ विकल्पे

२३७	१	२ सक्कर, १ वालु, १ धूम, २ तम
२३८	२	२ सक्कर, १ वालु, १ धूम, २ सप्तमीं

हिवै पंचम विकल्पे

२३९	१	१ सक्कर, १ वालु, ३ धूम, १ तम
२४०	२	१ सक्कर, १ वालु, ३ धूम, १ सप्तमीं

हिवै षष्ठ विकल्पे

२४१	१	१ सक्कर, २ वालु, २ धूम, १ तम
२४२	२	१ सक्कर, २ वालु, २ धूम, १ सप्तमीं

हिवै सप्तम विकल्पे

२४३	१	२ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम
२४४	२	२ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ सप्तमीं

हिवै अष्टम विकल्पे

२४५	१	१ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम
२४६	२	१ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ सप्तमीं

हिवै नवम विकल्पे

२४७	१	२ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ तम
२४८	२	२ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै दशम विकल्पे

२४९	१	३ सक्कर, १ वालु, १ धूम, १ तम
२५०	२	३ सक्कर, १ वालु, १ धूम, १ सप्तमीं

हिवै सक्कर वालुक तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—

२५१	१	१ सक्कर, १ वालु, १ तम, ३ सप्तमीं

हिवै द्वितीय विकल्पे

२५२	१	१ सक्कर, १ वालु, २ तम, २ सप्तमीं

हिवै तृतीय विकल्पे

२५३	१	१ सक्कर, २ वालु, १ तम, २ सप्तमीं

हिवै चतुर्थ विकल्पे

२५४	१	२ सक्कर, १ वालु, १ तम, २ सप्तमीं

हिवै पंचम विकल्पे

२५५	१	१ सक्कर, १ वालु, ३ तम, १ सप्तमीं

हिवै षष्ठ विकल्पे

२५६	१	१ सक्कर, २ वालु, २ तम, १ सप्तमीं

हिवै सप्तम विकल्पे

२५७	१	२ सक्कर, १ वालु, २ तम, १ सप्तमीं

हिवै अष्टम विकल्पे

२५८	१	१ सक्कर, ३ वालु, १ तम, १ सप्तमीं

हिवै नवम विकल्पे

२५९	१	२ सक्कर, २ वालु, १ तम, १ सप्तमीं

हिवै दशम विकल्पे

२६०	१	३ सक्कर, १ वालु, १ तम, १ सप्तमीं

ए सक्कर वालुक थी ६ भांगा दश विकल्प करि ६० भांगा कह्या ।

हिवै सक्कर पंक थी ३ भांगा ते किसा ? सक्कर पंक धूम थी २, सक्कर पंक तम थी १ । तिहां सक्कर पंक धूम थी २ भांगा, ते प्रथम विकल्प करि कहै छै—

२६१	१	१ सक्कर, १ पंक, १ धूम, ३ तम
२६२	२	१ सक्कर, १ पंक, १ धूम, ३ सप्तमीं

हिवै सक्कर पंक धूम थी २ भांगा द्वितीय विकल्पे

२६३	१	१ सक्कर, १ पंक, २ धूम, २ तम
२६४	२	१ सक्कर, १ पंक, २ धूम, २ सप्तमीं

हिवै तृतीय विकल्प करि

२६५	१	१ सक्कर, २ पंक, १ धूम, २ तम
२६६	२	१ सक्कर, २ पंक, १ धूम, २ सप्तमीं

हिवै चतुर्थ विकल्प करि

२६७	१	२ सक्कर, १ पंक, १ धूम, २ तम
२६८	२	२ सक्कर, १ पंक, १ धूम, २ सप्तमीं

हिवै पंचम विकल्प करि

२६९	१	१ सक्कर, १ पंक, ३ धूम, १ तम
२७०	२	१ सक्कर, १ पंक, ३ धूम, १ सप्तमीं

हिवै षष्ठ विकल्प करि

२७१	१	१ सक्कर, २ पंक, २ धूम, १ तम
२७२	२	१ सक्कर, २ पंक, २ धूम, १ सप्तमीं

हिवै सप्तम विकल्प करि

२७३	१	२ सक्कर, १ पंक, २ धूम, १ तम
२७४	२	२ सक्कर, १ पंक, २ धूम, १ सप्तमीं

हिवै अष्टम विकल्प करि

२७५	१	१ सक्कर, ३ पंक, १ धूम, १ तम
२७६	२	१ सक्कर, ३ पंक, १ धूम, १ सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै नवम विकल्प करि		
२७७	१	२ सक्कर, २ पंक, १ धूम, १ तम
२७८	२	२ सक्कर, २ पंक, १ धूम, १ सप्तमीं
हिवै दशम विकल्प करि		
२७९	१	३ सक्कर, १ पंक, १ धूम, १ तम
२८०	२	३ सक्कर, १ पंक, १ धूम, १ सप्तमीं
हिवै सक्कर पंक तम थी १ भांगो प्रथम विकल्पे		
२८१	१	१ सक्कर, १ पंक, १ तम, ३ सप्तमीं
हिवै द्वितीय विकल्प		
२८२	१	१ सक्कर, १ पंक, २ तम, २ सप्तमीं
हिवै तृतीय विकल्प		
२८३	१	१ सक्कर, २ पंक, १ तम, २ सप्तमीं
हिवै चतुर्थ विकल्प		
२८४	१	२ सक्कर, १ पंक, १ तम, २ सप्तमीं
हिवै पंचम विकल्प		
२८५	१	१ सक्कर, १ पंक, ३ तम, १ सप्तमीं
हिवै षष्ठ विकल्प		
२८६	१	१ सक्कर, २ पंक, २ तम, १ सप्तमीं
हिवै सप्तम विकल्प		
२८७	१	२ सक्कर, १ पंक, २ तम, १ सप्तमीं
हिवै अष्ठम विकल्प		
२८८	१	१ सक्कर, ३ पंक, १ तम, १ सप्तमीं
हिवै नवम विकल्प		
२८९	१	२ सक्कर, २ पंक, १ तम, १ सप्तमीं

हिवै दशम विकल्प		
२९०	१	३ सक्कर, १ पंक, १ तम, १ सप्तमीं

ए सक्कर पंक थी ३ भांगा दश विकल्प करि ३० भांगा कह्या। हिवै सक्कर धूम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै

२९१	१	१ सक्कर, १ धूम, १ तम, ३ सप्तमीं
हिवै द्वितीय विकल्पे १ भांगो		
२९२	१	१ सक्कर, १ धूम, २ तम, २ सप्तमीं
हिवै तृतीय विकल्पे १ भांगो		
२९३	१	१ सक्कर, २ धूम, १ तम, २ सप्तमीं
हिवै चतुर्थ विकल्पे १ भांगो		
२९४	१	२ सक्कर, १ धूम, १ तम, २ सप्तमीं
हिवै पंचम विकल्पे १ भांगो		
२९५	१	१ सक्कर, १ धूम, ३ तम, १ सप्तमीं
हिवै षष्ठ विकल्पे १ भांगो		
२९६	१	१ सक्कर, २ धूम, २ तम, १ सप्तमीं
हिवै सप्तम विकल्पे १ भांगो		
२९७	१	२ सक्कर, १ धूम, २ तम, १ सप्तमीं
हिवै अष्टम विकल्पे १ भांगो		
२९८	१	१ सक्कर, ३ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
हिवै नवम विकल्पे १ भांगो		
२९९	१	२ सक्कर, २ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
हिवै दशम विकल्पे १ भांगो		
३००	१	३ सक्कर, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं

ए सक्कर धूम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भांगा कह्या। एवं सक्कर थी १० भांगा दश विकल्प करि १०० भांगा कह्या।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै वालुक थकी एक-एक विकल्प करि च्यार-च्यार भांगा ते किसा ? वालुक पंक थी ३, वालुक धूम थी—१ एवं वालुक थी ४। वालुक पंक थी ३, ते किसा ? वालुक पंक धूम थी २ वालुक पंक तम थी १। तिहां वालुक पंक धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

३०१	१	१ वालुक, १ पंक, १ धूम, ३ तम
३०२	२	१ वालुक, १ पंक, १ धूम, ३ सप्तमीं
हिवै द्वितीय विकल्पे		
३०३	१	१ वालु, १ पंक, २ धूम, २ तम
३०४	२	१ वालु, १ पंक, २ धूम, २ सप्तमीं
हिवै तृतीय विकल्पे		
३०५	१	१ वालु, २ पंक, १ धूम, २ तम
३०६	२	१ वालु, २ पंक, १ धूम, २ सप्तमीं
हिवै चतुर्थ विकल्पे		
३०७	१	२ वालु, १ पंक, १ धूम, २ तम
३०८	२	२ वालु, १ पंक, १ धूम, २ सप्तमीं
हिवै पंचम विकल्पे		
३०९	१	१ वालु, १ पंक, ३ धूम, १ तम
३१०	२	१ वालु, १ पंक, ३ धूम, १ सप्तमीं
हिवै षष्ठ विकल्पे		
३११	१	१ वालु, २ पंक, २ धूम, १ तम
३१२	२	१ वालु, २ पंक, २ धूम, १ सप्तमीं
हिवै सप्तम विकल्पे		
३१३	१	२ वालु, १ पंक, २ धूम, १ तम
३१४	२	२ वालु, १ पंक, २ धूम, १ सप्तमीं
हिवै अष्टम विकल्पे		
३१५	१	१ वालु, ३ पंक, १ धूम, १ तम
३१६	२	१ वालु, ३ पंक, १ धूम, १ सप्तमीं
हिवै नवम विकल्पे		
३१७	१	२ वालु, २ पंक, १ धूम, १ तम
३१८	२	२ वालु, २ पंक, १ धूम, १ सप्तमीं
हिवै दशम विकल्पे		
३१९	१	३ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम
३२०	२	३ वालु, १ पंक, १ धूम, १ सप्तमीं
हिवै पंक तम थी १ भांगो प्रथम विकल्पे		
३२१	१	१ वालु, १ पंक, १ तम, ३ सप्तमीं
हिवै द्वितीय विकल्पे		
३२२	१	१ वालु, १ पंक, २ तम, २ सप्तमीं
हिवै तृतीय विकल्पे		
३२३	१	१ वालु, २ पंक, १ तम, २ सप्तमीं
हिवै चतुर्थ विकल्पे		
३२४	१	२ वालु, १ पंक, १ तम, २ सप्तमीं
हिवै पंचम विकल्पे		
३२५	१	१ वालु, १ पंक, ३ तम, १ सप्तमीं
हिवै षष्ठ विकल्पे		
३२६	१	१ वालु, २ पंक, २ तम, १ सप्तमीं
हिवै सप्तम विकल्पे		
३२७	१	२ वालु, १ पंक, २ तम, १ सप्तमीं
हिवै अष्टम विकल्पे		
३२८	१	१ वालु, ३ पंक, १ तम, १ सप्तमी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै नवम विकल्पे

३२९	१	२ वालु, २ पंक, १ तम, १ सप्तमीं

हिवै दशम विकल्पे

३३०	१	३ वालु, १ पंक, १ तम, १ सप्तमीं

एवं वालु पंक थी ३ भांगा दश विकल्प करि ३० भांगा कह्या।
हिवै वालू धूम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—

३३१	१	१ वालु, १ धूम, १ तम, ३ सप्तमीं

हिवै द्वितीय विकल्पे

३३२	१	१ वालु, १ धूम, २ तम, २ सप्तमीं

हिवै तृतीय विकल्पे

३३३	१	१ वालु, २ धूम, १ तम, २ सप्तमीं

हिवै चतुर्थ विकल्पे

३३४	१	२ वालु, १ धूम, १ तम, २ सप्तमीं

हिवै पंचम विकल्पे

३३५	१	१ वालु, १ धूम, ३ तम, १ सप्तमीं

हिवै षष्ठ विकल्पे

३३६	१	१ वालु, २ धूम, २ तम, १ सप्तमीं

हिवै सप्तम विकल्पे

३३७	१	२ वालु, १ धूम, २ तम, १ सप्तमीं

हिवै अष्टम विकल्पे

३३८	१	१ वालु, ३ धूम, १ तम, १ सप्तमीं

हिवै नवम विकल्पे

३३९	१	२ वालु, २ धूम, १ तम, १ सप्तमीं

हिवै दशम विकल्पे

३४०	१	३ वालु, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं

ए वालु थी ४ भांगा दश विकल्प करि ४० भांगा कह्या।

हिवै पंक थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—

३४१	१	१ पंक, १ धूम, १ तम, ३ सप्तमीं

हिवै द्वितीय विकल्पे

३४२	१	१ पंक, १ धूम, २ तम, २ सप्तमीं

हिवै तृतीय विकल्पे

३४३	१	१ पंक, २ धूम, १ तम, २ सप्तमीं

हिवै चतुर्थ विकल्पे

३४४	१	२ पंक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमीं

हिवै पंचम विकल्पे

३४५	१	१ पंक, १ धूम, ३ तम, १ सप्तमीं

हिवै षष्ठ विकल्पे

३४६	१	१ पंक, २ धूम, २ तम, १ सप्तमीं

हिवै सप्तम विकल्पे

३४७	१	२ पंक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमीं

हिवै अष्टम विकल्पे

३४८	१	१ पंक, ३ धूम, १ तम, १ सप्तमीं

हिवै नवम विकल्पे

३४९	१	२ पंक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी

हिवै दशम विकल्पे

३५०	१	३ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं

ए पंक थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भांगा कह्या। एवं रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालु थी ४, पंक थी १— ए पैंतीस भांगा एकेक विकल्प नां हुवै। दश विकल्प नां ३५० भांगा थया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७७. *ए षट जीव तणां सुविचार, चउक्कसंयोगिक भांगा सार।
दश विकल्प करिनें पहिछाण, तीनसौ नैं पचास प्रमाण ।।
१७८. नवम शतक नों बतीसम देश, इकसौ तयांसीमीं ढाल विशेष।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय पसाय, 'जय-जश' संपति हरष सवाय ।।

१७७. चउक्कसंजोगो वि तहेव।[1]

ढाल : १८४

दूहा

१. हिवै कहूं षट जीव नां, पंच संयोगिक संच।
विकल्प पंच करी भला, भंग एक सय पंच ।।
२. एक एक विकल्प करि, इकवीस-इकवीस जाण।
भांगा भणवा इहविधे, वरविध करी पिछाण ।।

१,२. पञ्चकसंयोगे तु षण्णां पञ्चधाकरणे पञ्च विकल्पास्तद्यथा..........सप्तानां च पदानां पञ्चकसंयोगे एकविंशतिर्विकल्पाः, तेषां च पञ्चभिर्गुणने पञ्चोत्तरं शतमिति। (वृ० प० ४४५)

वा०—एकेक विकल्प करि रत्न थी १५, सक्कर थी ५, वालुक थी १—एवं २१। रत्न थी १५ तेहनों विवरो—रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालुक थी ४, रत्न पंक थी १—एवं १५। ते पनरै नैं विषे रत्न सक्कर थी १०, ते किसा? रत्न सक्कर वालुक थी ६, रत्न सक्कर पंक थकी ३, रत्न सक्कर धूम थी १—एवं रत्न सक्कर थी १०। ते दशां मांहे रत्न सक्कर वालुक थकी ६, ते किसा? रत्न सक्कर वालुक पंक थी ३, रत्न सक्कर वालुक धूम थी २, रत्न सक्कर वालुक तम थी १—एवं रत्न सक्कर वालुक थी ६ भांगा हुवै। तिहां रत्न सक्कर वालुक पंक थी ३ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

३. †अथवा एक रत्न मझै, एक सक्कर रै मांय।
इक वालुक इक पंक में, दोय धूम कहिवाय ।।
४. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर में ताय।
एक वालुक इक पंक में, दोय तमा में जाय ।।
५. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजंत।
इक वालुक इक पंक में, दोय सप्तमीं हुंत ।।

हिवै रत्न सक्कर वालुक पंक थी ३ भांगा द्वितीय विकल्प करि कहै छै—

६. अथवा एक रत्न मझै, एक सक्कर रै मांय।
इक वालुक बे पंक में, एक धूम कहिवाय ।।
७. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर रै मांय।
इक वालुक बे पंक में, एक तमा में जाय ।।
८. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजंत।
इक वालुक बे पंक में, एक सप्तमीं हुंत ।।

हिवै रत्न सक्कर वालुक पंक थी ३ भांगा तृतीय विकल्प करि कहै छै—

९. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर रै मांय।
बे वालुक इक पंक में, एक धूम कहिवाय ।।

---

* लय : इण पुर कंबल कोय न लेसी
† लय : प्रभवो मन मांहि चितवै

१. ढाल १८३ में सात नरक के चतुः संयोगिक ३५० भंगों का उल्लेख है। उनमें सक्कर-पंक और सक्कर धूम के ४० भंग गाथाओं में छूटे हुए हैं। सक्कर-वालू से बनने वाले १० विकल्पों के ६० भंग १५१ तक की गाथाओं में आ गए। उसके बाद वार्तिका में सक्कर के १० भंगों के १० विकल्पों से होने वाले १०० भंगों की सूचना दी गई है पर वे भंग गाथाओं में नहीं दिए। आगे यन्त्र में पूरे भंग (२६१ से ३००) दिए हुए हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजंत।
बे वालुक इक पंक में, एक तमा में जंत ।।
११. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजंत।
बे वालुक इक पंक में, एक सप्तमीं हुंत ।।

हिवै रत्न सक्कर वालुक पंक थी ३ भांगा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—

१२. अथवा एक रत्न मझै, दोय सक्कर रै मांय।
इक वालुक इक पंक में, एक धूम में जाय ।।
१३. अथवा एक रत्न मझै, बे सक्कर में पाय।
इक वालुक इक पंक में, एक तमा कहिवाय ।।
१४. अथवा एक रत्न मझै, बे सक्कर उपजंत।
इक वालुक इक पंक में, एक सप्तमीं हुंत ।।

हिवै रत्न सक्कर वालुक पंक थी ३ भांगा पंचम विकल्प करि कहै छै—

१५. अथवा दोय रत्न मझै, एक सक्कर रै मांय।
इक वालुक इक पंक में, एक धूम कहिवाय ।।
१६. अथवा दोय रत्न मझै, एक सक्कर में पाय।
इक वालुक इक पंक में, एक तमा में जाय ।।
१७. अथवा दोय रत्न मझै, एक सक्कर उपजंत।
इक वालुक इक पंक में, एक सप्तमीं हुंत ।।

हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भांगा पंच विकल्प करि १० भांगा, तिहां प्रथम विकल्प करि कहै छै—

१८. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर अवलोय।
इक वालुक इक धूम में, दोय तमा में जोय ।।
१९. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजंत।
इक वालुक इक धूम में, दोय सप्तमीं हुंत ।।

हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भांगा द्वितीय विकल्प करि कहै छै—

२०. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर रै मांय।
इक वालुक बे धूम में, एक तमा में जाय ।।
२१. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर रै मांय।
इक वालुक बे धूम में, एक सप्तमीं थाय ।।

हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भांगा तृतीय विकल्प करि कहै छै—

२२. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर दुखधाम।
बे वालुक इक धूम में, एक तमा में पाम ।।
२३. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर पहिछान।
बे वालुक इक धूम में, एक सप्तमीं जान ।।

हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भांगा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—

२४. अथवा एक रत्न मझै, बे सक्कर दुखरास।
इक वालुक इक धूम में, एक तमा अभित्रास ।।
२५. अथवा एक रत्न मझै, बे सक्कर दुखपूर।
इक वालुक इक धूम में, एक सप्तमीं भूर ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भांगा पंचम विकल्प करि कहै छै—

२६. अथवा दोय रत्न मझै, इक सक्कर रै मांय।
इक वालुक इक धूम में, एक तमा दुख पाय ।।
२७ अथवा दोय रत्न मझै, इक सक्कर अघखान।
इक वालुक इक धूम में, एक सप्तमीं जान ।।

ए रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भांगा ५ विकल्प करि १० भांगा कह्या।
हिवै रत्न सक्कर वालुक तम थी १ भांगो पांच विकल्प करि कहै छै—

२८. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजंत।
इक वालुक इक तम विषे, दोय सप्तमीं हुंत ।।

हिवै रत्न सक्कर वालुक तम थी १ भांगो द्वितीय विकल्प करि कहै छै—

२९. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर रै मांय।
इक वालुक बे तमा विषे, एक सप्तमीं जाय ।।

हिवै रत्न सक्कर वालुक तम थी १ भांगो तृतीय विकल्प करि कहै छै—

३०. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर दुख पाय।
बे वालुक इक तम विषे, एक सप्तमीं कहाय ।।

हिवै रत्न सक्कर वालुक तम थी १ भांगो चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—

३१. अथवा एक रत्न मझें, बे सक्कर अवलोय।
इक वालुक इक तम विषे, एक सप्तमीं होय ।।

हिवै रत्न सक्कर वालुक तम थी १ भांगो पंचम विकल्प करि कहै छै—

३२. अथवा दोय रत्न मझै, इक सक्कर पहिछान।
इक वालुक इक तम विषे, एक सप्तमीं जान ।।

ए रत्न सक्कर वालुक थी ६ भांगा पांच विकल्प करि ३० भांगा कह्या।
हिवै रत्न सक्कर पंक थी ३ भांगा, ते किसा ? सक्कर रत्न पंक धूम थी २, पंक तम थी १। तिहां रत्न सक्कर पंक धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

३३. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर रै मांय।
एक पंक इक धूम में, दोय तमा कहिवाय ।।
३४. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजंत।
एक पंक इक धूम में, दोय सप्तमीं हुंत ।।

हिवै रत्न सक्कर पंक धूम थी २ भांगा द्वितीय विकल्प करि कहै छै—

३५. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर अवलोय।
एक पंक बे धूम में, एक तमा में जोय ।।
३६. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर पहिछान।
एक पंक बे धूम में, एक सप्तमी जान ।।

हिवै रत्न सक्कर पंक धूम थी २ भांगा तृतीय विकल्प करि कहै छै—

३७. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर दुखरास।
दोय पंक इक धूम में, एक तमा अभित्रास ।।
३८. अथवा एक रत्न मझै, एक सक्कर अघखान।
दोय पंक इक धूम में, एक सप्तमी जान ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै रत्न सक्कर पंक धूम थी २ भांगा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—

३९. अथवा एक रत्न मझै, बे सक्कर पहिछान।
एक पंक इक धूम में, एक तमा दुखखान॥

४०. अथवा एक रत्न मझै, बे सक्कर रै मांय।
एक पंक इक धूम में, एक सप्तमी पाय॥

हिवै रत्न सक्कर पंक धूम थी २ भांगा पंचम विकल्प करि कहै छै—

४१. अथवा दोय रत्न मझै, इक सक्कर अवलोय।
एक पंक इक धूम में, एक तमा दुख होय॥

४२. अथवा दोय रत्न मझै, इक सक्कर आख्यात।
एक पंक इक धूम में, एक सप्तमीं जात॥

हिवै रत्न सक्कर पंक तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—

४३. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर अवलोय।
एक पंक इक तम विषे, दोय सप्तमीं होय॥

हिवै रत्न सक्कर पंक तम थी १ भांगो द्वितीय विकल्प करि कहै छै—

४४. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजंत।
एक पंक बे तम विषे, एक सप्तमीं हुंत॥

हिवै रत्न सक्कर पंक तम थी १ भांगो तृतीय विकल्प करि कहै छै—

४५. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर में देख।
दोय पंक इक तम विषे, एक सप्तमीं पेख॥

हिवै रत्न सक्कर पंक तम थी १ भांगो चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—

४६. अथवा एक रत्न मझै, बे सक्कर पहिछान।
एक पंक इक तम विषे, एक सप्तमीं जान॥

हिवै रत्न सक्कर पंक तम थी १ भांगो पंचम विकल्प करि कहै छै—

४७. अथवा दोय रत्न मझै, इक सक्कर अवलोय।
एक पंक इक तम विषे, एक सप्तमीं होय॥

ए रत्न सक्कर पंक थी ३ भांगा पंच विकल्प करि १५ भांगा कह्या।
हिवै रत्न सक्कर धूम तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—

४८. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर में पेख।
एक धूम एक तम विषे, दोय सप्तमीं लेख॥

हिवै रत्न सक्कर धूम तम थी १ भांगो द्वितीय विकल्प करि कहै छै—

४९. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर सोय।
एक धूम बे तम विषे, एक सप्तमीं होय॥

हिवै रत्न सक्कर धूम तम थी १ भांगो तृतीय विकल्प करि कहै छै—

५०. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर अघखान।
दोय धूम इक तम विषे, एक सप्तमीं जान॥

हिवै रत्न सक्कर धूम तम थी १ भांगो चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—

५१. अथवा एक रत्न मझै, बे सक्कर दुखपूर।
एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमीं भूर॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै रत्न सक्कर धूम तम थी १ भांगो पंचम विकल्प करि कहै छै—

५२. अथवा दोय रत्न मझै, इक सक्कर दुखरास।
एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमीं तास।।

ए रत्न सक्कर थी १० भांगा पंच विकल्प करि ५० भांगा कह्या।

हिवै रत्न वालुक थी ४ भांगा एकेक विकल्प करि तेहनों विवरो—रत्न वालुक पंक थी ३, रत्न वालुक धूम थी १। रत्न वालुक पंक थी ३, ते किसा? रत्न वालुक पंक धूम थी २, रत्न वालुक पंक तम थी १—एवं ३। तिहां रत्न वालुक पंक धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

५३. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका मांय।
एक पंक इक धूम में, दोय तमा कहिवाय।।

५४. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका मांय।
एक पंक इक धूम में, दोय सप्तमीं पाय।।

हिवै रत्न वालुक पंक धूम थी २ भांगा द्वितीय विकल्प करि कहै छै—

५५. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका होय।
एक पंक दोय धूम में, एक तमा अवलोय।।

५६. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका होय।
एक पंक बे धूम में, एक सप्तमीं जोय।।

हिवै रत्न वालुक पंक धूम थी २ भांगा तृतीय विकल्प करि कहै छै—

५७. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका मांय।
दोय पंक इक धूम में, एक तमा कहिवाय।

५८. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका देख।
दोय पंक इक धूम में, एक सप्तमीं शेष।।

हिवै रत्न वालुक पंक धूम थी २ भांगा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—

५९. अथवा एक रत्न मझै, दोय वालुका मांय।
एक पंक इक धूम में, एक तमा दुखदाय।।

६०. अथवा एक रत्न मझै, दोय वालुका पाय।
एक पंक इक धूम में, एक सप्तमीं जाय।।

हिवै रत्न वालुक पंक धूम थी २ भांगा पंचम विकल्प करि कहै छै—

६१. अथवा दोय रत्न मझै, एक वालुका सोय।
एक पंक इक धूम में, एक तमा अवलोय।।

६२. अथवा दोय रत्न मझै, एक वालुका होय।
एक पंक इक धूम में, एक सप्तमीं जोय।।

हिवै रत्न वालुक पंक तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—

६३. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका सोय।
एक पंक इक तम विषे, दोय सप्तमीं होय।।

हिवै रत्न वालुक पंक तम थी १ भांगो द्वितीय विकल्प करि कहै छै—

६४. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका मांय।
एक पंक बे तम विषे, एक सप्तमीं जाय।।

हिवै रत्न वालुक पंक तम थी १ भांगो तृतीय विकल्प करि कहै छै—

६५. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका देख।
दोय पंक इक तम विषे, एक सप्तमीं शेष।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै रत्न वालुक पंक तम थी १ भांगो चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—

६६. अथवा एक रत्न मझै, दोय वालुका पेख।
एक पंक इक तम विषे, एक सप्तमीं लेख ॥

हिवै रत्न वालुक पंक तम थी १ भांगो पंचम विकल्प करि कहै छै—

६७. अथवा दोय रत्न मझै, एक वालुका मांय।
एक पंक इक तम विषे, एक सप्तमीं जाय ॥

ए रत्न वालुक पंक थी ३ भांगा पांच विकल्प करि १५ भांगा कह्या।

हिवै रत्न वालुक धूम तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—

६८. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका चीन।
एक धूम इक तम विषे, दोय सप्तमीं लीन ॥

हिवै रत्न वालुक धूम तम थी १ भांगो द्वितीय विकल्प करि कहै छै—

६९. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका पेख।
एक धूम बे तम विषे, एक सप्तमीं देख ॥

हिवै रत्न वालुक धूम तम थी १ भांगो तृतीय विकल्प करि कहै छै—

७०. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका सोय।
दोय धूम इक तम विषे, एक सप्तमी होय ॥

हिवै रत्न वालुक धूम तम थी १ भांगो चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—

७१. अथवा एक रत्न मझै, दोय वालुका देख।
एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमीं शेष ॥

हिवै रत्न वालुक धूम तम थी १ भांगो पंचम विकल्प करि कहै छै—

७२. अथवा दोय रत्न मझै, एक वालुका सोय।
एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमीं होय ॥

ए वालुक थी ४ भांगा पांच विकल्प करि २० भांगा कह्या।

हिवै रत्न पंक धूम तम थी १ भांगो पांच विकल्प करि ५ भांगा हुवै, ते प्रथम विकल्प करि कहै छै—

७३. अथवा एक रत्न मझै, एक पंक अवलोय।
एक धूम इक तम विषे, दोय सप्तमीं होय ॥

हिवै रत्न पंक धूम तम थी १ भांगो द्वितीय विकल्प करि कहै छै—

७४. अथवा एक रत्न मझै, एक पंक अवलोय।
एक धूम बे तम विषे, एक सप्तमीं होय ॥

हिवै रत्न पंक धूम तम थी १ भांगो तृतीय विकल्प करि कहै छै—

७५. अथवा एक रत्न मझै, एक पंक उपजंत।
दोय धूम इक तम विषे, एक सप्तमीं हुंत ॥

हिवै रत्न पंक धूम तम थी १भांगो चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—

७६. अथवा एक रत्न मझै, दोय पंक दुखरास।
एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमीं वास ॥

हिवै रत्न पंक धूम तम थी १ भांगो पंचम विकल्प करि कहै छै—

७७. अथवा दोय रत्न मझै, एक पंक दुखपूर।
एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमीं भूर ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ए रत्न धूम थी १५ भांगा पंच विकल्प करि ७५ भांगा कह्या।

हिवै सक्कर थी ५ भांगा ५ विकल्प करि २५ हुवै। तिहां सक्कर थी प्रथम भांगो पांच विकल्प करि कहै छै, तिणमें सातमी नरक टली।

७८. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक अवलोय।
एक पंक इक धूम में, दोय तमा में होय।।
७९. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक उपजंत।
एक पंक बे धूम में, एक तमा में हुंत।।
८०. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक दुखरास।
दोय पंक इक धूम में, एक तमा अतित्रास।।
८१. अथवा एक सक्कर मझै, दोय वालुका देख।
एक पंक इक धूम में, एक तमा दुख पेख।।
८२. अथवा दोय सक्कर मझै, इक वालुक दुखदाय।
एक पंक इक धूम में, एक तमा में जाय।।

हिवै सक्कर थी द्वितीय भांगो ५ विकल्प करि कहै छै, तिणमें छठी नरक टली।

८३. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक उपजंत।
एक पंक इक धूम में, दोय सप्तमीं हुंत।।
८४. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक अवलोय।
एक पंक बे धूम में, एक सप्तमीं सोय।।
८५. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक दुखदाय।
दोय पंक इक धूम में, एक सप्तमीं जाय।।
८६. अथवा एक सक्कर मझै, दोय वालुका देख।
एक पंक इक धूम में, एक सप्तमीं शेख।।
८७. अथवा दोय सक्कर मझै, एक वालुका मांय।
एक पंक इक धूम में, एक सप्तमीं जाय।।

हिवै सक्कर थी तृतीय भांगो ५ विकल्प करि कहै छै, तिणमें पंचमी नरक टली।

८८. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक उपजंत।
एक पंक इक तम विषे, दोय सप्तमीं हुंत।।
८९. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक अवलोय।
एक पंक बे तम विषे, एक सप्तमीं होय।।
९०. अथवा एक सक्कर मझै, एक वालुका पेख।
दोय पंक इक तम विषे, एक सप्तमीं शेख।।
९१. अथवा एक सक्कर मझै, दोय वालुका देख।
एक पंक इक तम विषे, एक सप्तमीं पेख।।
९२. अथवा दोय सक्कर मझै, इक वालुक कहिवाय।
एक पंक एक तम विषे, एक सप्तमीं जाय।।

हिवै सक्कर थी चतुर्थ भांगो ५ विकल्प करि कहै छै, तिणमें चउथी नरक टली।

९३. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक अवलोय।
एक धूम इक तम विषे, दोय सप्तमीं सोय।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९४. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक उपजंत ।
एक धूम बे तम विषे, एक सप्तमीं हुंत ।।
९५. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक दुखरास ।
दोय धूम इक तम विषे, एक सप्तमीं तास ।।
९६. अथवा एक सक्कर मझै, दोय वालुका देख ।
एक धूम एक तम विषे, एक सप्तमीं लेख ।।
९७. अथवा दोय सक्कर मझै, इक वालुक दुखधाम ।
एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमीं पाम ।।

हिवै सक्कर थी पंचमो भांगो ५ विकल्प करि कहै छै, तिणमें तीजी नरक टली ।

९८. अथवा एक सक्कर मझै, एक पंक कहिवाय ।
एक धूम इक तम विषे, दोय सप्तमीं जाय ।।
९९. अथवा एक सक्कर मझै, एक पंक उत्पन्न ।
एक धूम बे तम विषे, एक सप्तमीं जन्न ।।
१००. अथवा एक सक्कर मझै, एक पंक अवलोय ।
दोय धूम इक तम विषे, एक सप्तमीं जोय ।।
१०१. अथवा एक सक्कर मझै, दोय पंक रै मांय ।
एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमीं जाय ।।
१०२. अथवा दोय सक्कर मझै, एक पंक उपजंत ।
एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमीं हुंत ।।

ए सक्कर थी ५ भांगा पांच विकल्प करि २५ भांगा कह्या ।

हिवै वालुक थी १ भांगो ५ विकल्प करि ५ भांगा कहै छै—

१०३. अथवा एक वालुक मझै, एक पंक अवलोय ।
एक धूम इक तम विषे, दोय सप्तमीं जोय ।।
१०४. अथवा एक वालुक मझै, एक पंक उपजंत ।
एक धूम बे तम विषे, एक सप्तमीं हुंत ।।
१०५. अथवा एक वालुक मझै, एक पंक पहिछान ।
दोय धूम इक तम विषे, एक सप्तमीं जान ।।
१०६. अथवा एक वालुक मझै, दोय पंक दुखरास ।
एक धूम एक तम विषे, एक सप्तमीं वास ।।
१०७. अथवा बे वालुक मझै, एक पंक दुखखान ।
एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमीं जान ।।

१०७. अहवा दो वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।

१०८. *पनर रत्न थी पंच सक्कर थी, इक वालुक थी जाणियै ।
इकवीस विकल्प एक करि ए, पंचयोगिक आणियै ।।
१०९. जीव षट नां पंच विकल्प पंचयोगिक नां कह्या ।
एक सौ नै पंच भंगा, पूर्व रीत करी थया ।।

एकेक विकल्प करि रत्न थी १५, सक्कर थी ५, वालुक थी १—एवं २१ । रत्न थी १५ हुवै, तेहनों विवरो—रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालुक थी ४, रत्न पंक थी १—एवं १५ । ते पनरै नैं विषे रत्न सक्कर थी १०, ते किसा ? रत्न सक्कर वालुक थी ६, रत्न सक्कर पंक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी १—एवं रत्न

* लय : पूज मोटा भांजै तोटा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सक्कर थी १० । ते दशां मांहे रत्न सक्कर वालुक थकी ६, ते किसा ? रत्न सक्कर वालुक पंक थी ३, रत्न सक्कर वालुक धूम थी २, रत्न सक्कर वालुक तम थी १—एवं रत्न सक्कर वालुक थी ६ भांगा हुवै । तिहां रत्न सक्कर वालुक पंक थी ३ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

१	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ धूम
२	२	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ तम
३	३	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ सप्तमीं
हिवै रत्न सक्कर वालुक पंक थी ३ भांगा द्वितीय विकल्पे		
४	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पंक, १ धूम
५	२	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पंक, १ तम
६	३	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पंक, १ सप्तमीं
हिवै रत्न सक्कर वालुक पंक थी ३ भांगा तृतीय विकल्पे		
७	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पंक, १ धूम
८	२	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पंक, १ तम
९	३	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पंक, १ सप्तमीं
हिवै रत्न सक्कर वालु पंक थी ३ भांगा चतुर्थ विकल्पे		
१०	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ धूम
११	२	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ तम
१२	३	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमीं
हिवै रत्न सक्कर वालु पंक थी ३ भांगा पंचम विकल्पे		
१३	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ धूम
१४	२	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ तम
१५	३	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमीं
हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्पे		
१६	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ धूम, २ तम
१७	२	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ धूम, २ सप्तमीं

हिवै रत्न सक्कर वालु धूम थी २ भांगा द्वितीय विकल्पे		
१८	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम
१९	२	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ सप्तमीं
हिवै रत्न सक्कर वालु धूम थी २ भांगा तृतीय विकल्पे		
२०	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ तम
२१	२	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ सप्तमीं
हिवै रत्न सक्कर वालु धूम थी २ भांगा चतुर्थ विकल्पे		
२२	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ धूम, १ तम
२३	२	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ धूम, १ सप्तमीं
हिवै रत्न सक्कर वालु धूम थी २ भांगा पंचम विकल्पे		
२४	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ धूम, १ तम
२५	२	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ धूम, १ सप्तमीं
हिवै रत्न सक्कर वालुक तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—		
२६	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ तम, २ सप्तमीं
हिवै रत्न सक्कर वालु तम थी १ भांगो द्वितीय विकल्पे		
२७	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ तम, १ सप्तमीं
हिवै रत्न सक्कर वालु तम थी १ भांगो तीजे विकल्पे		
२८	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ तम, १ सप्तमीं
हिवै रत्न सक्कर वालु तम थी १ भांगो चतुर्थ विकल्पे		
२९	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ तम, १ सप्तमीं
हिवै रत्न सक्कर वालु तम थी १ भांगो पंचम विकल्पे		
३०	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ तम, १ सप्तमीं
ए रत्न वालुक थी ६ भांगा पंच विकल्प करि ३० भांगा कह्या ।		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै रत्न सक्कर पंक थी ३ भांगा ते किसा ? रत्न सक्कर पंक धूम थी २, रत्न सक्कर पंक तम थी १ तिहां रत्न सक्कर पंक धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

३१	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ धूम, २ तम
३२	२	१ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ धूम, २ सप्तमीं

हिवै रत्न सक्कर पंक धूम थी २ भांगा दूजे विकल्पे

३३	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, २ धूम १ तम
३४	२	१ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, २ धूम, १ सातमीं

हिवै रत्न सक्कर पंक धूम थी २ भांगा तीजे विकल्पे

३५	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ पंक, १ धूम, १ तम
३६	२	१ रत्न, १ सक्कर, २ पक, १ धूम, १ सप्तमीं

हिवै रत्न सक्कर पंक धूम थी २ भांगा चतुर्थ विकल्पे

३७	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ धूम, १ तम
३८	२	१ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ धूम, १ सप्तमीं

हिवै रत्न सक्कर पंक धूम थी २ भांगा पंचम विकल्पे

३९	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ धूम, १ तम
४०	२	२ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ धूम, १ सप्तमीं

हिवै रत्न सक्कर पंक तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—

४१	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ तम, २ सप्तमीं

हिवै रत्न सक्कर पंक तम थी १ भांगो द्वितीय विकल्पे

४२	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, २ तम, १ सप्तमीं

हिवै रत्न सक्कर पंक तम थी १ भांगो तृतीय विकल्पे

४३	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ पंक, १ तम, १ सप्तमीं

हिवै रत्न सक्कर पंक तम थी १ भांगो चतुर्थ विकल्पे

४४	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ तम, १ सप्तमीं

हिवै रत्न सक्कर पंक तम थी १ भांगो पंचम विकल्पे

४५	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ तम, १ सप्तमीं

ए रत्न सक्कर पंक थी ३ भांगा, ५ विकल्प करि १५ भांगा कह्या।

हिवै रत्न सक्कर धूम थी एक भांगो पंच विकल्प करि ५ भांगा कहै छै—

४६	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, १ तम, २ सप्तमीं

रत्न सक्कर धूम थी १ भांगो द्वितीय विकल्पे

४७	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, २ तम, १ सप्तमीं

रत्न सक्कर धूम थी १ भांगो तृतीय विकल्पे

४८	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ धूम, १ तम, १ सप्तमीं

रत्न सक्कर धूम थी १ भांगो चतुर्थ विकल्पे

४९	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं

रत्न सक्कर धूम थी १ भांगो पंचम विकल्पे

५०	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं

ए रत्न सक्कर धूम थी १ भांगो पंच विकल्प करि कह्यो। एवं रत्न सक्कर थी १० भांगा, पंच विकल्प करि ५० भांगा कह्या।

हिवै रत्न वालुक थी ४ भांगा एकेक विकल्प करि हुवै ते किसा ? रत्न वालु पंक थी ३, रत्न वालु धूम थी १, तिहां रत्न वालुक पंक थी ३ ते किसा ? रत्न वालुक पंक धूम थी २, रत्न बालुक पंक तम थी १ एवं ३। तिहां रत्न वालुक पंक धूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

५१	१	१ रत्न, १ वालु, १ पंक, १ धूम, २ तम
५२	२	१ रत्न, १ वालु, १ पंक, १ धूम, २ सप्तमी

हिवै रत्न वालुक पंक धूम थी २ भांगा द्वितीय विकल्पे

५३	१	१ रत्न, १ वालु, १ पंक, २ धूम, १ तम
५४	२	१ रत्न, १ वालु, १ पंक, २ धूम, १ सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै रत्न वालु पंक धूम थी २ भांगा तृतीय विकल्पे		
५५	१	१ रत्न, १ वालु, २ पंक, १ धूम, १ तम
५६	२	१ रत्न, १ वालु, २ पंक, १ धूम, १ सप्तमीं
हिवै रत्न वालु पंक धूम थी २ भांगा चतुर्थ विकल्पे		
५७	१	१ रत्न, २ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम
५८	२	१ रत्न, २ वालु, १ पंक, १ धूम, १ सप्तमीं
हिवै रत्न वालुक पंक धूम थी २ भांगा पंचम विकल्पे		
५९	१	२ रत्न, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम
६०	२	२ रत्न, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १ सप्तमी
हिवै रत्न वालु पंक तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—		
६१	१	१ रत्न, १ वालु, १ पंक, १ तम, २ सप्तमीं
हिवै रत्न वालु पंक तम थी १ भांगो द्वितीय विकल्पे		
६२	१	१ रत्न, १ वालु, १ पंक, २ तम, १ सप्तमीं
हिवै रत्न वालु पंक तम थी १ भांगो तृतीय विकल्पे		
६३	१	१ रत्न, १ वालु, २ पंक, १ तम, १ सप्तमीं
हिवै रत्न वालु पंक तम थी १ भांगो चतुर्थ विकल्पे		
६४	१	१ रत्न, २ वालु, १ पंक, १ तम, १ सप्तमीं
हिवै रत्न वालु पंक तम थी १ भांगो पंचम विकल्पे		
६५	१	२ रत्न, १ वालु, १ पंक, १ तम, १ सप्तमीं
ए रत्न वालुक पंक थी ३ भांगा कह्या।		
हिवै रत्न वालुक धूम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—		
६६	१	१ रत्न, १ वालु, १ धूम, १ तम, २ सप्तमीं
हिवै रत्न वालुक धूम थी १ भांगो द्वितीय विकल्पे		
६७	१	१ रत्न, १ वालु, १ धूम, २ तम, १ सप्तमीं
हिवै रत्न वालु धूम थी १ भांगो तृतीय विकल्पे		
६८	१	१ रत्न, १ वालु, २ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
हिवै रत्न वालु धूम थी १ भांगो चतुर्थ विकल्पे		
६९	१	१ रत्न, २ वालु, १ धूम, १ तम,१ सप्तमीं
हिवै रत्न वालु धूम थी १ भांगो पंचम विकल्पे		
७०	१	२ रत्न, १ वालु, १ धूम, १ तम,१ सप्तमीं
ए रत्न वालुक पंक थी ४ भांगा पंच विकल्प करि २० भांगा कह्या।		
हिवै रत्न पंक धूम तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—		
७१	१	१ रत्न, १ पंक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमीं
हिवै रत्न पंक धूम तम थी १ भांगो द्वितीय विकल्पे		
७२	१	१ रत्न, १ पंक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमीं
हिवै रत्न पंक धूम तम थी १ भांगो तृतीय विकल्पे		
७३	१	१ रत्न १ पंक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
हिवै रत्न पंक धूम तम थी १ भांगो चतुर्थ विकल्पे		
७४	१	१ रत्न, २ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
हिवै रत्न पंक धूम तम थी १ भांगो पंचम विकल्पे		
७५	१	२ रत्न, १ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
ए रत्न थी १५ भांगा पंच विकल्प करि ७५ भांगा कह्या।		
हिवै सक्कर थी पंच भांगा एकेक विकल्प करि हुवै, ते पांच विकल्प करि २५ हुवै। तिहां सक्कर थी प्रथम भांगो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमें सातमीं नरक टली।		
७६	१	१ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, २ तम
७७	२	१ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ धूम, १ तम
७८	३	१ सक्कर, १ वालु, २ पंक, १ धूम, १ तम
७९	४	१ सक्कर, २ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम
८०	५	२ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै सक्कर थी द्वितीय भांगो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमें छठी नरक टली।

८१	१	१ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, २ सप्तमीं
८२	२	१ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ धूम, १ सप्तमीं
८३	३	१ सक्कर, १ वालु, २ पंक, १ धूम, १ सप्तमीं
८४	४	१ सक्कर, २ वालु, १ पंक, १ धूम, १ सप्तमीं
८५	५	२ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १ सप्तमीं

हिवै सक्कर थी तृतीय भांगो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमें पंचमी नरक टली।

८६	१	१ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ तम, २ सप्तमीं
८७	२	१ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ तम, १ सप्तमीं
८८	३	१ सक्कर, १ वालु, २ पंक, १ तम, १ सप्तमीं
८९	४	१ सक्कर, २ वालु, १ पंक, १ तम, १ सप्तमीं
९०	५	२ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ तम, १ सप्तमीं

हिवै सक्कर थी चतुर्थ भांगो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमें चोथी नरक टली।

९१	१	१ सक्कर, १ वालु, १ धूम, १ तम, २ सप्तमीं
९२	२	१ सक्कर, १ वालु, १ धूम, २ तम, १ सप्तमीं
९३	३	१ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
९४	४	१ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
९५	५	२ सक्कर, १ वालु, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं

हिवै सक्कर थी पंचमो भांगो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमें तीजी नरक टली।

९६	१	१ सक्कर, १ पंक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमीं
९७	२	१ सक्कर, १ पंक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमीं
९८	३	१ सक्कर, १ पंक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
९९	४	१ सक्कर, २ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
१००	५	२ सक्कर, १ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं

ए सक्कर थी प्रथम भांगो पंच विकल्प करि कह्यो। इम द्वितीय जाव पंचमो भांगो पंच विकल्प करि २५ भांगा थया। तथा अन्य प्रकार करिकै पिण २५ भांगा हुवै ते कहै छै — ते सक्कर थी ५ भांगा प्रथम विकल्प करि कहिवा, पछै ते ५ भांगा द्वितीय विकल्प करि कहिवा, पछै ते ५ भांगा तृतीय विकल्प करि कहिवा, पछै ते ५ भांगा चतुर्थ विकल्प करि कहिवा, पछै ते ५ भांगा पंचम विकल्प करि कहिवा, इण प्रकार करिकै पिण तेहिज २५ भांगा हुवै, एवं सक्कर थी ५ भांगा पांच विकल्प करि २५ कह्या। हिवै वालुक थी १ भंगो ५ विकल्प करि ५ भांगा कहै छै —

१०१	१	१ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमीं

हिवै वालु थी १ भंगो द्वितीय विकल्पे

१०२	१	१ वालु, १ पंक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमीं

हिवै वालु थी १ भांगो तृतीय विकल्पे

१०३	१	१ वालु, १ पंक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमीं

हिवै वालु थी १ भांगो चतुर्थ विकल्पे

१०४	१	१ वालु, २ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं

हिवै वालु थी १ भांगो पंचम विकल्पे

१०५	१	२ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं

ए वालुक थी १ भांगो ५ विकल्प करि ५ भांगा कह्या।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं छ जीव नां पचसंयोगिक एक-एक विकल्प करि रत्न थी १५, सक्कर थी ५, वालुक थी १, इम २१ भांगा, ते पंच विकल्प करि १०५ भांगा कह्या। रत्न थी ७५, सक्कर थी २५, वालु थी ५, ए सर्व १०५ भांगा जाणवा।

११०. *नवम बतीसम देश ए, सौ चौरासीमीं ढाल।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' मंगलमाल।।

ढाल : १८५

दूहा

१. हिवै कहूं छह जीव नां, इक विकल्प करि एह।
षट-संयोगिक सप्त भंग, सुणज्यो तज संदेह।।

†जिन भाखै सुण गंगेय ! षट-योगिक भंग भणेह।। [ध्रुपदं]

२. अथवा इक रत्न उवेख, इक सक्कर वालुक एक।
इक पंक एक धूम जोय, एक तमा विषे अवलोय।।

३. अथवा इक रत्न उवेख, इक सक्कर वालुक एक।
इक पंक धूम इक जाण, इक सप्तमीं नरक पिछाण।।

४. अथवा इक रत्न विशेष, इक सक्कर वालुक एक।
एक पंक तमा इक कहियै, इक नारकि सप्तमीं लहियै।।

५. अथवा इक रत्न संपेख, इक सक्कर वालुक एक।
इक धूमा तमा इक तास, इक नारकि सप्तमीं वास।।

६. अथवा इक रत्न में देख, इक सक्कर पंके एक।
इक धूम तमा इक जीव, इक सप्तमीं नरक कहीव।।

७. अथवा इक रत्न उवेख, इक वालुक पंके एक।
इक धूमा तमा इक पाय, इक नरक सप्तमीं जाय।।

८. अथवा इक सक्कर लेख, इक वालुक पंके एक।
इक धूम तमा इक जाण, इक नारक सप्तमीं आण।।

९. षट जीव तणां ए जाण, षट-योगिक नां पहिछाण।
इक विकल्प नें भंग सात, जिन आखै ए अवदात।।

१. षट्कसंयोगे तु सप्तैव। (वृ० प० ४४५)

२. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा।

३. अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

४. अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

५. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

६. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

७. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

८. अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा। (भ० ९/९३)

---

*लय : प्रभवो मन मांहि चिन्तवै

†लय : रे चिन्तातुर सुन्दर वाली

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छ जीव नां छ संजोगिया नां विकल्प तो १ भांगा ७	
१	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तमा
२	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १ सप्तमीं
३	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ तम, १ सप्तमीं
४	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
५	१ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
६	१ रत्न, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
७	१ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं

१०. षट जीव तणां आख्यात, इक-संयोगिक भंग सात।
द्विक-योगिक विकल्प पंच, भंग एकसौ पंच सुसंच॥

११. त्रिक-योगिक विकल्प दश, साढा तीन सौ भांगा अवस्स।
दश विकल्प चउक्क-संयोगी, साढा तीन सौ भंग प्रयोगी॥

१२. पंच-योगिक विकल्प पंच, भंग एक सौ पंच सुसंच।
षट-योगिक विकल्प एक, तसुं सप्त भंग सुविशेष॥

१३. षट जीव तणां भंग जाण, नवसौ चउवीस प्रमाण।
इकयोगिक आदि ए आख्या, सर्व संख्या करीनैं भाख्या॥

१४. नवम देश बतीसम न्हाल, एकसौ पच्यासोमीं ढाल।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय, 'जय' संपति हरष सवाय॥

१३. ते च सर्वमीलने नव शतानि चतुर्विंशत्युत्तराणि भवन्तीति। (वृ० प० ४४५)

ढाल : १८६

दूहा

१. सप्त जीव नां हे प्रभु! नरक प्रवेशन काल।
तास प्रश्न पूछै छतै, दाखै ताम दयाल॥

२. रत्न सप्त यावत हुवै, तथा सप्तमीं सात।
इक-योगिक इक विकल्पे, भांगा सात विख्यात॥

* त्रिभुवन नाथ वीर प्रभु भाखै, सांभल तूं गंगेया! [ध्रुपदं]

३. सप्त जीव नां इकसंयोगिक, भांगा सप्त विचारी।
इक विकल्प करिनैं तसु आख्या, पूर्व रीत प्रकारी॥

१. सत्त भंते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा? — पुच्छा।

२. गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

३. इहैकत्वे सप्त। (वृ० प० ४४५)

* लय : प्रभाती

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. सप्त जीव नां द्विक-संजोगिक, षट विकल्प करि तासं।
भंग एक सौ षटवीस भणीजै, पूर्व रीत प्रकासं ।।

४. द्विकयोगे तु सप्तानां द्वित्वे षड् विकल्पास्तद्यथा— षड्भिश्च सप्तपदद्विकसंयोगएकविंशतेर्गुणनात् षड्-विंशत्युत्तरं भङ्गकशतं भवति । (वृ० प० ४४५)

५. इक-षट बे-पंच त्रिण-चिउं तीजो, च्यार-तीन पंच-दोय ।
षट-इक द्विकयोगिक विकल्प छ, सप्त जीव नां होय ।।

स्थापना

१६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१ ।
सप्त जीव नां द्विक संजोगिक रा ए ६ विकल्प जाणवा ।

६. सप्त जीव नां त्रिकसंजोगिक, विकल्प पनर जगीसं ।
भंग पंच सौ नें पणवीसं, इक विकल्प पेंतीसं ।।

६. त्रिकयोगे तु सप्तानां त्रित्वे पञ्चदश विकल्पास्तद्यथा एतैश्च पञ्चत्रिंशतः सप्तपदत्रिकसंयोगानां गुणनात् पञ्च शतानि पञ्चविंशत्यधिकानि भवन्तीति । (वृ० प० ४४५,४४६)

छप्पय

७. एक एक नें पंच, एक बे च्यार अखीजै।
दोय एक नें च्यार, एक त्रिहुं वलि त्रिहुं लीजै।
दोय दोय नें तीन, तीन इक तीन कहीजै।
एक च्यार नें दोय, दोय त्रिहुं दोय लहीजै।
त्रिहुं दोय दोय, चिहुं एक बे, इक पंच इक, बे च्यार इक ।
त्रिण तीन एक, चिउं दोय इक, पंच इक इक त्रिकयोगिक ।।

स्थापना

११५, १२४, २१४, १३३, २२३, ३१३, १४२, २३२, ३२२, ४१२, १५१, २४१, ३३१, ४२१, ५११ ।

८. सप्त जीव नां चउकसंयोगिक, विकल्प वीस जगीसं ।
अखिल सात सय भंगा आख्या, इक विकल्प पणतीसं ।।

८. चतुष्कयोगे तु सप्तानां चतूराशितया स्थापने एक एक एकश्चत्वार श्चेत्यादयो विंशतिर्विकल्पाः··· विंशत्या च पञ्चत्रिंशतः सप्तपदचतुष्कसयोगानां गुणनात् सप्त शतानि विकल्पानां भवन्ति (वृ० प० ४४६)

स्थापना

१११४, ११२३, १२१३, २११३, ११३२, १२२२, २१२२, १३१२, २२१२, ३११२, ११४१, १२३१, २१३१, १३२१, २२२१, ३१२१, १४११, २३११, ३२११, ४१११ ।

९. सप्त जीव नां पंचसंयोगिक, विकल्प पनर जगीसं ।
भंगा तास तीन सय पनरै, इक विकल्प इकवीसं ।।

९. पञ्चकसंयोगे तु सप्तानां पञ्चतया स्थापने एक एक एक एकस्त्रयश्चेत्यादयः पञ्चदश विकल्पाः एतैश्च सप्तपदपञ्चकसंयोगएकविंशतेर्गुणनात् त्रीणि शतानि पञ्चदशोत्तराणि भवन्ति । (वृ० प० ४४६)

स्थापना

११११३, १११२२, ११२१२, १२११२, २१११२, १११३१, ११२२१, १२१२१, २११२१, ११३११, १२२११, २१२११, १३१११, २२१११, ३११११ ।

१०. सप्त जीव नां षटसंयोगिक, षट विकल्प करि ख्यातं ।
बयांलीस भांगा तसु कहिवा, इक विकल्प नां सातं ।।

१०. षट्कसंयोगे तु सप्तानां षोढाकरणे पञ्चैकका द्वौ चेत्यादयः षड् विकल्पाः । सप्तानां च पदानां षट्कसंयोगे सप्त विकल्पाः, तेषां च षड्भिर्गुणने द्विचत्वारिंशद्विकल्पा भवन्ति । (वृ० प० ४४६)

स्थापना

१११११२, ११११२१, १११२११, ११२१११, १२११११, २११११११ ।

११. सप्त जीव नां सप्तसंजोगिक, विकल्प तेहनों एकं ।
भांगो एक कह्यो छै तेहनों, वारू रीत विशेखं ।।

११. सप्तकसंयोगे त्वेक एवेति । (वृ० प० ४४६)

१२. सप्त जीव नां भांगा ए सहु, सतरे सौ नें सोलं ।
अनुक्रम संख्या करिनैं गिणवा, जिन वच अधिक अमोलं ।।

१२. सर्वमीलने च सप्तदश शतानि षोडशोत्तराणि भवन्ति । (वृ० प० ४४६)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरठा

१३. नारकि अष्ट भदंत ! नरक प्रवेसण रत्न में।
जाव सप्तमीं हुंत ? जिन भाखै गंगेय ! सुण ।।
१४. अष्ट रत्न उपजंत, जाव तथा अठ सप्तमीं।
इकसंयोगिक, हुंत, इक विकल्प करि सप्त भंग ।।

१५. *अष्ट जीव नां द्विकसंयोगिक, विकल्प सप्त जगीसं।
भंग एकसौ नें सैंताली, इक विकल्प इकवीसं ।।

स्थापना

१७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ ।

१६. अष्ट जीव नां त्रिकसंयोगिक, विकल्प तसु इकवीसं।
भांगा तास सप्त सय पैंत्रिस, इक विकल्प पणतीसं ।।

स्थापना

११६, १२५, २१५, १३४, २२४, ३१४, १४३, २३३, ३२३, ४१३, १५२, २४२, ३३२, ४२२, ५१२, १६१, २५१, ३४१, ४३१, ५२१, ६११ ।

[१७. अष्ट जीव नां चउक्कसंजोगिक, पैंत्रिस विकल्प दीसं।
भंग बार सय पंचवोस फुन, इक विकल्प पणतीसं ।।

स्थापना

१११५, ११२४, १२१४, २११४, ११३३, १२२३, २१२३, १३१३, २२१३, ३११३, ११४२, १२३२, २१३२, १३२२, २२२२, ३१२२, १४१२, २३१२, ३२१२, ४११२, ११५१, १२४१, २१४१, १३३१, २२३१, ३१३१, १४२१, २३२१, ३२२१, ४१२१, १५११, २४११, ३३११, ४२११, ५१११ ।

१८. अष्ट जीव नां पंचसंयोगिक, विकल्प तसु पणतीसं।
भांगा तास सातसौ पैंत्रिस, इक विकल्प इकवीसं ।।

स्थापना

१११४, १११२३, ११२१३, १२११३, २१११३, १११३२, ११२२२, १२१२२, २११२२, ११३१२, १२२१२, २१२१२, १३११२. २२११२, ३१११२, १११४१, ११२३१, १२१३१, २११३१, ११३२१, १२२२१, २१२२१, १३१२१, २२१२१, ३११२१, ११४११, १२३११, २१३११, १३२११, २२२११, ३१२११, १४१११, २३१११, ३२१११, ४११११ ।

१९. अष्ट जीव नां षटसंयोगिक, विकल्प इकवोस ख्यातं।
भंग एक सौ नैं सैंतालीस, इक विकल्प भंग सातं ।।

स्थापना

१११११३, १११११२२, १११२१२, ११२११२, १२१११२, २११११२, ११११३१, १११२२१, ११२१२१, १२११२१, २१११२१, १११३११, ११२२-११, १२१२११, २११२११, ११३१११, १२२१११, २१२१११, १३११११, २२११११, ३११११११ ।

---

* लय : प्रभाती

१३.१४ अट्ठ भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा ।
गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।
इहैकत्वे सप्त विकल्पाः (वृ० प० ४४६)

१५. द्विकसंयोगे त्वष्टानां द्वित्वे एकः सप्तेत्यादयः सप्त विकल्पाः प्रतीता एव, तैश्च सप्तपदद्विकसंयोगैक-विंशतेर्गुणनाच्छतं सप्तचत्वारिंशदधिकानां भवतीति । (वृ० प० ४४६)

१६. त्रिकसंयोगे त्वष्टानां त्रित्वे एक एकः षड् इत्यादय एकविंशतिविकल्पाः, तैश्च सप्तपदत्रिकसंयोगे पञ्च-त्रिंशतो गुणने सप्त शतानि पञ्चत्रिंशदधिकानि भवन्ति । (वृ० प० ४४६)

१७. चतुष्कसंयोगे त्वष्टानां चतुर्द्धात्वे एक एक एकः पञ्चे-त्यादयः पञ्चत्रिंशद्विकल्पाः, तैश्च सप्तपदचतुष्क-संयोगानां पञ्चत्रिंशतो गुणने द्वादश शतानि पञ्च-विंशत्युत्तराणि भङ्गकानां भवन्तीति (वृ० प० ४४६)

१८. पञ्चकसंयोगे त्वष्टानां पञ्चत्वे एक एक एक एक एकश्चत्वारश्चेत्यादयः पञ्चत्रिंशद्विकल्पाः, तैश्च सप्तपदपञ्चकसंयोगैकविंशतेर्गुणने सप्त शतानि पञ्चत्रिंशदधिकानि भवन्तीति, (वृ० प० ४४६)

१९. षट्संयोगे त्वष्टानां षोढात्वे पञ्चैककास्त्रयश्चेत्यादयः एकविंशतिविकल्पाः, तैश्च सप्तपदषट्कसंयोगानां सप्तकस्य गुणने सप्तचत्वारिंशदधिकं भङ्गकशतं भवतीति (वृ० प० ४४६)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०. अष्ट जीव नां सप्तसंयोगिक, विकल्प सप्त विख्यातं।
भांगा पिण तसु सप्त भणीजै, कहियै तसु अवदातं ॥

हिवै अष्ट जीव नां सप्त संजोगिक नां विकल्प सात भांगा सात कहै छै—	
१	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमीं
२	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमीं
३	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
४	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
५	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
६	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
७	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
ए अष्ट जीव नां सप्तसंजोगिक जाणवा।	

२१. अष्ट जीव नां ए सहु भांगा, तीन सहस्र नें तीनं।
इकसंयोगिक आदि देई नें, सप्त संयोग सुचीनं ॥

सोरठा

२२. नारकि नव भगवंत! नरक प्रवेसण रत्न में।
जाव सप्तमीं हुंत? जिन भाखै गंगेय! सुण ॥
२३. नव रत्ने उपजंत, जाव तथा नव सप्तमीं।
इकसंयोगिक हुंत, इक विकल्प करि सप्त भंग ॥

२४. *नव जीवां नां द्विकसंयोगिक, विकल्प अष्ट जगीसं।
भंगा तास एकसौ अड़सठ, इक विकल्प इकवीसं ॥

स्थापना

१८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१।

२५. नव जीवां नां त्रिकसंयोगिक, विकल्प तसुं अठवीसं।
भांगा नवसै असी अधिक है, इक विकल्प पणतीसं ॥

स्थापना

११७, १२६, २१६, १३५, २२५, ३१५, १४४, २३४, ३२४, ४१४, १५३, २४३, ३३३, ४२३, ५१३, १६२, २५२ ,३४२, ४३२, ५२२, ६१२, १७१, २६१, ३५१, ४४१, ५३१, ६२१, ७११।

२६. नव जीव नां चउकसंयोगिक, विकल्प छप्पन दीसं।
उगणीसौ नें साठ भंग है, इक विकल्प पणतीसं ॥

* लय : प्रभाती

२०. सप्तसंयोगे पुनरष्टानां सप्तधात्वे सप्त विकल्पाः प्रतीता एव, तैश्चैकैकस्य सप्तकसंयोगस्य गुणने सप्तैव विकल्पाः (वृ० प० ४४६)

२१. एवं च मीलने त्रीणि सहस्राणि त्र्युत्तराणि भवन्तीति। (वृ० प० ४४६)

२२,२३. नव भंते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा?—पुच्छा। गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।
इहाप्येकत्वे सप्तैव, (वृ० प० ४४७)

२४. द्विकसंयोगे तु नवानां द्वित्वेऽष्टौ विकल्पाः प्रतीता एव, तैश्चैकविंशतेः सप्तपदद्विकसंयोगानां गुणनेऽष्टषष्ट्यधिकं भङ्गकशतं भवतीति। (वृ० प० ४४७)

२५ त्रिकसंयोगे तु नवानां द्वावेककौ तृतीयश्च सप्तकः इत्येवमादयोऽष्टाविंशतिर्विकल्पाः, तैश्च सप्तपदत्रिकसंयोगपञ्चत्रिंशतो गुणने नव शतान्यशीत्युत्तराणि भङ्गकानां भवन्तीति। (वृ० प० ४४७)

२६. चतुष्कयोगे तु नवानां चतुर्द्धात्वे त्रय एककाः षट् चेत्यादयः षट्पञ्चाशद्विकल्पाः, तैश्च सप्तपदचतुष्कसयोगपञ्चत्रिंशतो गुणने सहस्रं नव शतानि षष्टिश्च भङ्गकानां भवन्तीति। (वृ० प० ४४७)

स्थापना

१११६[१], ११२५[२], १२१५[३], २११५[४], ११३४[५], १२२४[६], २१२४[७], १३१४[८], २२१४[९], ३११४[१०], ११४३[११], १२३३[१२], २१३३[१३], १३२३[१४], २२२३[१५], ३१२३[१६], १४१३[१७], २३१३[१८], ३२१३[१९], ४११३[२०], ११५२[२१], १२४२[२२], २१४२[२३], १३३२[२४], २२३२[२५], ३१३२[२६], १४२२[२७], २३२२[२८], ३२२२[२९], ४१२२[३०], १५१२[३१], २४१२[३२], ३३१२[३३], ४२१२[३४], ५११२[३५], ११६१[३६], १२५१[३७], २१५१[३८], १३४१[३९], २२४१[४०], ३१४१[४१], १४३१[४२], २३३१[४३], ३२३१[४४], ४१३१[४५], १५२१[४६], २४२१[४७], ३३२१[४८], ४२२१[४९], ५१२१[५०], १६११[५१], २५११[५२], ३४११[५३], ४३११[५४], ५२११[५५], ६१११[५६] ।

ए पूर्वे कह्या ते नव जीवां नां चउक्कसंजोगिया ५६ विकल्प इम करिवा ।

२७. नव जीव नां पंचसंयोगिक, सित्तर विकल्प दीसं ।
चवदै सौ नैं सित्तर भांगा, इक विकल्प इकवीसं ।।

२७. पञ्चकसंयोगे तु नवानां पञ्चधात्वे चत्वारः एकका: पञ्चकश्चेत्यादयः सप्ततिर्विकल्पाः, तैश्च सप्तपद-पञ्चकसंयोगएकविंशतेर्गुणने सहस्रं चत्वारि शतानि सप्ततिश्च भङ्गकानां भवन्तीति (वृ० प० ४४७)

स्थापना

११११५[१], १११२४[२], ११२१४[३], १२११४[४], २१११४[५], १११३३[६], ११२२३[७], १२१२३[८], २११२३[९], ११३१३[१०], १२२१३[११]; २१२१३[१२], १३११३[१३], २२११३[१४], ३१११३[१५], १११४२[१६], ११२३२[१७], १२१३२[१८], २११३२[१९], ११३२२[२०], १२२२२[२१], २१२२२[२२], १३१२२[२३], २२१२२[२४], ३११२२[२५], ११४१२[२६], १२३१२[२७], २१३१२[२८], १३२१२[२९], २२२१२[३०], ३१२१२[३१], १४११२[३२], २३११२[३३], ३२११२[३४], ४१११२[३५], १११५१[३६], ११२४१[३७], १२१४१[३८], २११४१[३९], ११३३१[४०], १२२३१[४१], २१२३१[४२], १३१३१[४३], २२१३१[४४], ३११३१[४५], ११४२१[४६], १२३२१[४७], २१३२१[४८], १३२२१[४९], २२२२१[५०], ३१२२१[५१], १४१२१[५२], २३१२१[५३], ३२१२१[५४], ४११२१[५५], ११५११[५६], १२४११[५७], २१४११[५८], १३३११[५९], २२३११[६०], ३१३११[६१], १४२११[६२], २३२११[६३], ३२२११[६४], ४१२११[६५], १५१११[६६], २४१११[६७], ३३१११[६८], ४२१११[६९], ५११११[७०] ।

ए पूर्वे कह्या ते नव जीवां नां पंचसंयोगिक ७० विकल्प इम करिवा ।

२८. नव जीवां नां षटसंयोगिक, छप्पन विकल्प ख्यातं ।
प्रवर तीन सय बाणूं भांगा, इक विकल्प करि सातं ।।

२८. षट्कसंयोगे तु नवानां षोढात्वे पञ्चैककाश्चतुष्क-कश्चेत्यादयः षट्पञ्चाशद्विकल्पा भवन्ति, तैश्च सप्तपदषट्कसंयोगसप्तकस्य गुणने शतत्रयं द्विनवत्य-धिकं भङ्गकानां भवन्तीति । (वृ० प० ४४७)

स्थापना

१११११४[१], ११११२३[२], १११२१३[३], ११२११३[४], १२१११३[५], २११११३[६], ११११३२[७], १११२२२[८] ११२१२२[९], १२११२२[१०], २१११२२[११], १११३१२[१२], ११२२१२[१३], १२१२१२[१४], २११२१२,[१५] ११३११२[१६], १२२११२[१७], २१२११२[१८], १३१११२[१९], २२१११२[२०], ३११११२[२१], ११११४१[२२], १११२३१[२३], ११२१३१[२४], १२११३१[२५], २१११३१[२६], १११३२१[२७], ११२२२१[२८], १२१२२१[२९], २११२२१[३०], ११३१२१[३१], १२२१२१[३२], २१२१२१[३३], १३११२१[३४], २२११२१[३५], ३१११२१[३६], १११४११[३७], ११२३११[३८], १२१३११[३९], २११३११[४०], ११३२११[४१], १२२२११[४२], २१२२११[४३], १३१२११[४४], २२१२११[४५], ३११२११[४६], ११४१११[४७], १२३१११[४८], २१३१११[४९], १३२१११[५०], २२१११२[५१], ३१२१११[५२], १४११११[५३], २३११११[५४], ३२११११[५५], ४१११११[५६] ।

ए पूर्वे कह्या ते नव जीवां रा षटसंयोगिक ५६ विकल्प इम करिवा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९. नव जीवां नां सप्तसंयोगिक, विकल्प तसु अठवीसं ।
भांगा पिण अठवीस भणेवा, ते जूजुआ कहीसं ।।

ए नव जीव नां सप्तसंयोगिक विकल्प २८ भांगा २८

१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, ३ सप्तमीं
२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, २ तम, २ सप्तमीं
३. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ धूम, १ तम, २ सप्तमीं
४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पंक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमीं
५. १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमीं
६. १ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमीं
७. २ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमीं
८. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, ३ तम, १ सप्तमीं
९. १ रत्न, १ सक्कर; १ वालु, १ पंक, २ धूम, २ तम, १ सप्तमीं
१०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पंक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमीं
११. १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ पंक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमीं
१२. १ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमीं
१३. २ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमीं
१४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ३ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
१५. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पंक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
१६. १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ पंक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
१७. १ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी
१८. २ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
१९. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ३ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
२०. १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, २ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
२१. १ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, २ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
२२. २ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
२३. १ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
२४. १ रत्न, २ सक्कर, २ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
२५. २ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
२६. १ रत्न, ३ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
२७. २ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं
२८. ३ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमीं

२९. सप्तपदसंयोगे पुनर्नवानां सप्तत्वे एकका:-षट् त्रिकश्चेत्यादयोऽष्टाविंशतिर्विकल्पा भवन्तीति, तैश्चैकस्य सप्तकसंयोगस्य गुणनेऽष्टाविंशतिरेव भङ्गका: । (वृ० प० ४४७)

३०. नव जीवां नां ए सहु भांगा, पंच सहस्र नें पंच ।
इकसंयोगिक आदि देइ नैं, सप्त-संयोगिक संच ।।

३०. एषां च सर्वेषां मीलने पञ्च सहस्राणि पञ्चोत्तराणि विकल्पानां भवन्तीति । (वृ० प० ४४७)

३१. दश जीवां नां इकसंयोगिक, इक विकल्प भंग सातं ।
द्विकसंयोगिक नव विकल्प, भंग सौ नव्यासी ख्यातं ।।

३१. इहाप्येकत्वे सप्तैव, द्विकसंयोगे तु दशानां द्विधात्वे एको नव चेत्येवमादयो नव विकल्पा: तैश्चैकविंशते: सप्तपदद्विकसंयोगानां गुणने एकोननवत्यधिकं भङ्गकशतं भवतीति । (वृ० प० ४४७)

३२. दश जीवां नां त्रिकसंयोगिक, विकल्प है षट तीसं ।
बारै सौ नें साठ भंग है, इक विकल्प पणतीसं ।।

३२. त्रिकयोगे तु दशानां त्रिधात्वे एक एकोऽष्टौ चेत्येवमादय: षट्त्रिंशद्विकल्पा:, तैश्च सप्तपदत्रिकसंयोगपञ्चत्रिंशतो गुणने द्वादश शतानि षष्ट्यधिकानि भङ्गकानां भवन्तीति । (वृ० प० ४४७)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३. दश जीवां नां चउकसंयोगिक, चउरासी विकल्प दीसं।
गुणतीसौ नैं चालीस भांगा, इक विकल्प पणतीसं।।

३४. दश जीवां नां पंचसंयोगिक, विकल्प इकसौ छवीसं।
भंग छबीसौ अधिक छयाली, इक विकल्प इकबीसं।।

३५. दश जीवां नां षटसंयोगिक, विकल्प इकसौ छबीसं।
भंग आठ सौ नैं बयासी, इक विकल्प सत दीसं।।

३६. दश जीवां नां सप्तसंयोगिक, विकल्प चउरासी दीसं।
भांगा पिण चउरासी तेहनां, निपुण विचार कहीसं।।

३७. च्यार रत्न इक सक्कर, जाव इक सप्तमीं होय।
चरम भंग विकल्प ए भणवो, सप्त संयोगिक सोय।।

३८. दश जीवां नां ए सहु भांगा, अष्ट सहस्र नैं आठं।
इकसंयोगिक आदि देइ नैं, सप्त संयोग सुवाटं।।

३९. नवम शतक नो देश बतीसम, सौ छयांसीमीं ढालं।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' हरष विशालं।।

३३. चतुष्कसंयोगे तु दशानां चतुर्धात्वे एककत्रयं सप्तकश्चेत्येवमादयश्चतुरशीतिर्विकल्पाः, तैश्च सप्तपदचतुष्कसंयोगपञ्चत्रिंशतो गुणने एकोनत्रिंशच्छतानि चत्वारिंशदधिकानि भङ्गकानां भवन्तीति। (वृ० प० ४४७)

३४. पञ्चकसंयोगे तु दशानां पञ्चधात्वे चत्वार एककाः षट्कश्चेत्यादयः षड्विंशत्युत्तरशतसङ्ख्या विकल्पा भवन्ति तैश्च सप्तपदपञ्चकसंयोगैकविंशतेर्गुणने षड्विंशतिः शतानि षट्चत्वारिंशदधिकानि भङ्गकानां भवन्तीति। (वृ० प० ४४७)

३५. षट्कसंयोगे तु दशानां षोढात्वे पञ्चैककाः पञ्चकश्चेत्यादयः षड्विंशत्युत्तरशतसंख्या विकल्पा भवन्ति, तैश्च सप्तपदषट्कसंयोगसप्तकस्य गुणनेऽष्टौ शतानि द्व्यशीत्यधिकानि भङ्गकानां भवन्तीति।
(वृ० प० ४४७)

३६. सप्तकसंयोगे तु दशानां सप्तधात्वे षडेककाश्चतुष्कश्चेत्येवमादयश्चतुरशीतिर्विकल्पाः, तैश्चैकस्य सप्तकसंयोगस्य गुणने चतुरशीतिरेव भङ्गकानां भवन्ति। (वृ० प० ४४७)

३७. अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा। (श० ९/९७)

३८. सर्वेषां चैषां मीलनेऽष्टसहस्राणि अष्टोत्तराणि विकल्पानां भवन्तीति। (वृ० प० ४४७)

ढाल : १८७

दूहा

१. इकसंयोगिक आदि दे, सप्त-संयोगिक सार।
तसु विकल्प नीं आमना, हिव कहियै सुविचार।।
२. एक दोय त्रिण आदि दे, जीव अनेक सुजोय।
इक संयोगिक तेहनों, विकल्प एकज होय।।
३. द्विकयोगिक बे जीव नां, विकल्प कहियै एक।
द्विकयोगिक त्रिण जीव नां, विकल्प दोय विशेख।।
४. इम यावत सौ जीव नां, द्विकयोगिक पहिछान।
विकल्प निन्याणूं कह्या, इम आगल पिण जाण।।

एक जीव आदि देइ संख असंख जीव रो एकसंयोगियो विकल्प एक सगलैइ।

हिवै द्विकसंजोगिया री आमना लिखियै छै—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोय जीव रो द्विकसंजोगियो १ विकल्प, तीन जीव रा द्विकसंजोगिया २ विकल्प, इम यावत सौ जीवां रा द्विकसंजोगिया ९९ विकल्प, जेतला जीव लेणां तिण सूं एक ऊणो विकल्प।

हिवै त्रिकसंजोगिया नां विकल्प नीं आमना—

५. त्रिकयोगिक त्रिण जीव नों, विकल्प एक सुचीन।
त्रिकयोगिक चिउं जीव नां, कहियै विकल्प तीन।।

६. त्रिकयोगिक जंतू जिता, तेहथी दोय घटाय।
शेष अंक लिखनैं गिण्यां, तेता विकल्प थाय।।

वा० –जेतला जीव लेवै तिण मांहि थी दोय काढियै, पाछै रहे ते एक सूं गिणियै। तिवारै जेतला हुवै जितरा विकल्प जाणवा। कोइ एक इम पूछै—जे दश जीवां रा त्रिकसंजोगिया केतला विकल्प? तिवारै इम कहियै—जे दश मांहि थी २ काढियै तिवारै पछै ८ रहै, ते इम लिखणा—१,२,३,४,५,६,७,८ हिवै ए आंकां नैं इम गिणणा ते विध कहै छै—एक नैं दोय—तीन, तीन नैं तीन—छ, छ नैं च्यार—दश, दश नैं पांच—पनरै, पनरै नैं छ—इकवीस, इकवीस नैं सात—अठावीस, अठावीस नैं आठ—छतीस—इम दश जीवां रा ३६ विकल्प हुवै। वलि कोइ पूछै—बीस जीवां रा विकल्प किता? तेहनों उत्तर—बीस मांहि थी २ काढियै, पाछै अठारै रहै। ते एक सूं लेइनैं अठारै तांइ गिणियां १७१ हुवै, एतला बीस जीवां रा विकल्प जाणवा। आगल पिण इमहिज करिवा।

हिवै चउकसंजोगिया विकल्प नीं आमना—

७. चउयोगिक चिउं जीव नों, विकल्प इक अवधार।
चउयोगिक पंच जीव नां, कहियै विकल्प च्यार।।

८. चउयोगिक षट जीव नां, दश विकल्प सुकहीस।
चउयोगिक सत्त जीव नां, कहियै विकल्प बीस।।

९. चउयोगिक जंतू जिता, तेहथी तीन घटाय।
पाछै रहै तेहनों धड़ो, दीधां जितरा थाय।।

१०. षट जंतू नां केतला, विकल्प हुवै सुलेख?
षट थी त्रिण काढ्यो छते, लिखो अंक त्रिण पेख।।

११. एको बीओ नैं तीओ, प्रथम ओल ए अंक।
द्वितीय ओल धुर अंक इक, लिख तसु धड़ो निसंक।।

१२. धुर इक अंक लिख्यो अछै, तसु जोड़े वलि ताय।
एक अनैं बे त्रिण हुवै, तीओ अंक लिखाय।।

१३. तीन अनैं वलि त्रिण मिल्यां, गिणियां षट कहिवाय।
तीआ अंक पासे वली, षट नों अंक लिखाय।।

१४. दूजी ओली नों धड़ो, दीधां दश ह्वै सोय।
विकल्प दश षट जीव नां, इम आगल पिण होय।।

वा—जेतला जीव लेणां त्यां मांहि थी ३ काढियै, पछै तेहनोइज धड़ो देणो जे कोइक इम पूछै—दश जीवां रा चउकसंजोगिया केतला विकल्प? जब इम कहीजै—१० मांहि थी ३ काढियै, पाछै सात रहै ते एक सूं लेइ नैं इम लिखणां—१,२,३,४,५,६,७। हिवै ए ओली नैं इम गिणवी—एक नैं दोय—३, तीन नैं तीन—६, छ नैं च्यार—१०, दश नैं पांच—१५, पनरै नैं छ—२१, इकवीस नैं सात—२८, ए दूजी ओल पहिली ओल हेठै इम लिखणी—१,३,६,१०,१५,२१,२८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै बीजी ओल नें गिण्यां जेतला हुवै तेतला विकल्प जाणवा, ते इम गिणवा—एक नें तीन—४, च्यार नें छ—१०, दश नै दश—२०, बीस नें पनरै—३५, पेंतीस नें इकबीस—५६, छप्पन नें अठावीस—८४। इम दश जीव नां चउक्कसंयोगिया चउरासी विकल्प थया। इम सौ ताइं गिण लीजें। घड़ो जिताइज विकल्प जाणवा।

तथा वलि अन्य प्रकार करिकै चउकसंजोगिया नां विकल्प नीं आमना—

हिवै छ जीवां रा चउकसंजोगिया विकल्प कितरा ? उत्तर—छ मांहि थी एक जीव घटायां पांच जीवां रा चउकसंजोगिया ४ विकल्प अनें पांच जीवां रा त्रिकसंजोगिया ६ विकल्प। दोनूं भेला गिण्या विकल्प हुवै इतरा विकल्प छ जीवां रा चउक्कसंजोगिक ह्वै। सात जीवां रा चउक्कसंजोगिया विकल्प किता ? उत्तर—छ जीवां रा चउक्कसंजोगिया अनें छ जीवां रा त्रिकसंयोगिया दोनूं भेला गिण्यां जितरा विकल्प हुवै तितरा सात जीवां रा चउकसंजोगिक ह्वै।

१५. पंच संयोगिक नां हिवै, विकल्प तणो विचार॥
ऊपर वारी तेहनीं, कहियै छै अधिकार॥
१६. सप्त जीव पंचयोगिका, कितरा विकल्प तास ?
विकल्प तेहनां पनर है, सुणियै आण हुलास॥
१७. चउयोगिक षट जीव नां, पंचयोगिक षट जीव।
ए बिहुं नां दश पंच इता, सत्त जीव नां पीव॥
१८. इम आगल जंतू जिता, तेहथी एक घटाय।
विकल्प चउ पंच योगिका, मेल्या जिता कहाय॥

वा०—नव जीवां रा पांचसंजोगिया रा विकल्प किता ? उत्तर—सित्तर विकल्प हुवै। ते किम ? आठ जीव चउक्कसंयोगिक नां ३५ विकल्प हुवै, अनें आठ जीव पंच संजोगिक नां पिण ३५ विकल्प हुवै, ए दोनूं मिलायां सित्तर हुवै। एतलाज सित्तर विकल्प नव जीव नां पंचसंजोगिया नां हुवै। इम आगल पिण जाणवा।

१९. षट-संजोगिक नां हिवै, विकल्प तणो विचार।
ऊपर वारी तेहनीं, कहियै छै अधिकार॥
२०. अष्ट जीव षट-योगिका, कितरा विकल्प तास ?
विकल्प तसु इकवीस है, सुणियै आण हुलास॥
२१. सप्त जीव पंचयोगिका, सप्त जीव षट योग।
षट पनरै विकल्प तसु, इम इकवीस प्रयोग॥
२२. इम आगल जंतू जिता, तेहथी एक घटाय।
विकल्प पंच षटयोगिका, मेल्या जिता कहाय॥

वा०—नव जीवां रा षटसंजोगिक विकल्प कितरा ? उत्तर—छप्पन विकल्प हुवै ते किम ? आठ जीव पंचसंजोगिक नां ३५ विकल्प अनें आठ जीव षटसंजोगिक नां २१ विकल्प हुवै, ए दोनूं मिलायां ५६ हुवै। एतलाज छप्पन विकल्प नव जीव नां षट संजोगिक नां हुवै। इम आगल पिण जाणवा। सप्त संयोगिक जेतला विकल्प जेतलाइ भांगा जाणवा।

२३. संख्याता प्रभु ! नेरइया, एकादश थी आद।
नरक-प्रवेसण नीं पृच्छा, उत्तर जिन अहलाद॥

२३. संखेज्जा भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा।
तत्र संख्याता एकादशादयः। (वृ० प० ४४८)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. *रत्नप्रभा में संखेज ए, अथवा सक्कर में ते कहेज ए।
अथवा वालुक मांहे तेह ए, अथवा पंक तमा धूम जेह ए।।

२५. अथवा तमा विषे उपजंत ए, अथवा नरक सप्तमीं हुंत ए।
इक योगिक भांगा सात ए, इक विकल्प करि आख्यात ए।।

हिवै द्विकसंजोगिक नां विकल्प ११ भांगा २३१। एक रत्न संख्याता सक्कर इम ११ विकल्प। एक-एक विकल्प नां इकवीस-इकवीस भांगा हुवै तिवारे २३१ भांगा थाय, ते कहै छै—

२६. तथा एक रत्न अवलोय ए, संख्याता सक्कर सोय ए।
तथा रत्न इक जाण ए, संख्याता वालुक माण ए।।

२७. अथवा रत्न में एक ए, संख्याता पंक संपेख ए।
अथवा रत्न इक जाय ए, संखेज्ज धूम दुख पाय ए।।

२८. अथवा रत्न इक हुंत ए, संखेज्ज तमा उपजंत ए।
अथवा रत्न इक तास ए, संखेज्ज सप्तमीं वास ए।।

२९. अथवा रत्न में दोय ए, संख्याता सक्कर होय ए।
इम जाव तथा रत्न दोय ए, संख्याता सप्तमीं सोय ए।।

३०. अथवा रत्न में तीन ए, संख्याता सक्कर चीन ए।
इम जावत तथा रत्न तीन ए, संखेज्ज सप्तमीं लीन ए।।

३१. अथवा रत्न में च्यार ए, संख्याता सक्कर धार ए।
इम जाव तथा रत्न च्यार ए, संखेज्ज सप्तमीं भार ए।।

३२. अथवा रत्न में पंच ए, संख्याता सक्कर संच ए।
इम जाव तथा रत्न पंच ए, संखेज्ज सप्तमीं विरंच ए।।

३३. अथवा रत्न षट जंत ए, संख्याता सक्कर हुंत ए।
इम जाव तथा रत्न षट ए, संख्याता सप्तमीं वट्ट ए।।

३४. अथवा रत्न में सात ए, संख्याता सक्कर जात ए।
इम जाव तथा रत्न सात ए, संख्याता सप्तमीं ख्यात ए।।

३५. अथवा रत्न में आठ ए, संख्याता सक्कर वाट ए।
इम जाव तथा रत्न आठ ए, संखेज्ज सप्तमीं काट ए।।

३६. अथवा रत्न नव न्हाल ए, संख्याता सक्कर भाल ए।
इम जाव तथा नव रत्न ए, संखेज्ज सप्तमीं प्रपन्न ए।।

३७. अथवा रत्न दश तास ए, संख्याता सक्कर वास ए।
इम जाव तथा दश रत्न ए, संख्याता सप्तमीं पन्न ए।।

३८. अथवा रत्न संख्यात ए, संख्याता सक्कर जात ए।
इम जाव तथा रत्न संख ए, संखेज सप्तमीं वंक ए।।

३९. ए रत्न थकी पहिछाण ए, षट भांगा तेह सुजाण ए।
ग्यारा विकल्प करि सुविचार ए, कह्या छासठ भंगा सार ए।।

४०. इम सक्कर थी भंग पंच ए, ऊपरली पृथ्वी संग संच ए।
ग्यारा विकल्प करिनें तेह ए, भंग पचपन प्रवर भणेह ए।।

*लय : बाई ! मांग-मांग बाई ! मांग ए

२४,२५. गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।
इहाप्येकत्वे सप्तैव (वृ० प० ४४८)

२६-२८. अहवा एगे रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

२९. अहवा दो रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

३०-३७. अहवा तिण्णि रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं एक्केक्को संचारेयव्वो जाव अहवा दस रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा। एवं जाव अहवा दस रयणप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

३८. अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

४०. अहवा एगे सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जहा रयणप्पभा उवरिमपुढवीहिं समं चारिया एवं सक्करप्पभा वि उवरिमपुढवीहिं समं चारेयव्वा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४१. इम वालुक थी भंग च्यार ए, ऊपरली पृथ्वी संग धार ए।
ग्यारा विकल्प करि सुजगीस ए, भंग भणवा चउमालीस ए।।
४२. इम पंक थकी भंग तीन ए, ऊपरली पृथ्वी संग चीन ए।
ग्यारा विकल्प करिनें कहीस ए, तंत भांगा छै तेतीस ए।।
४३. इम धूम थकी भंग दोय ए, ऊपरली पृथ्वी संग सोय ए।
ग्यारा विकल्प करीनें दीस ए, भणिवा भंगा बावीस ए।।
४४. इम तम थकी इक भंग ए, सप्तमीं पृथ्वी संग ए।
ग्यारा विकल्प करि सुविचार ए, ए तो भणिवा भंग इग्यार ए।।
४५. संख्यात जीवां रा एह ए, द्विकसंजोगिक इम लेह ए।
ग्यारा विकल्प करीनें उमंग ए, दोय सौ इकतीस सुभंग ए।।
४६. यावत अथवा एह ए, संख्याता तमा कहेह ए।
संख्याता सप्तमीं जाण ए, ए चरम भंग पहिछाण ए।।

हिवै त्रिकसंजोगिक नां २१ विकल्प एकेक विकल्प नां पेंतीस-पैंतीस भांगा तिवारे २१ विकल्प नां ७३५ भांगा हुवै। तिहां रत्न थी १५, सक्कर थी १०, वालुक थी ६, पंक थी ३, धूम थी १—ए ३५ भांगां २१ विकल्प करि हुवै। तिहां रत्न थी १५ ते किसा? रत्न सक्कर थी ५, रत्न वालु थी ४, रत्न पंक थी ३, रत्न धूम थी २, रत्न तम थी १— एवं १५, इकवीस विकल्प करि हुवै। इमज सक्कर थी १०, वालु थी ६, पंक थी ३, धूम थी १—ए इकवीस-इकवीस विकल्प करिवा।

४७. अथवा रत्न में एक ए, इक सक्कर में संपेख ए।
संखेज वालुका मंग ए, धुर विकल्प ए भंग ए।
४८. अथवा रत्नप्रभा में एक ए, इक सक्कर मांहि उवेख ए।
पंकप्रभा में संख्यात ए, भंग दूजो ए आख्यात ए।।
४९. तथा एक रत्न सक्कर एक ए, संखेज धूम संपेख ए।
तथा एक रत्न सक्कर एक ए, संखेज तमा सुविशेख ए।।
५०. तथा एक रत्न सक्कर एक ए, संखेज सप्तमीं लेख ए।
रत्न सक्कर थी भंग पंच ए, धुर विकल्प करि ए संच ए।।
५१. तथा एक रत्न सक्कर दोय ए, संखेज्ज वालुका सोय ए।
तथा एक रत्न सक्कर दोय ए, संखेज पंक अवलोय ए।।
५२. तथा एक रत्न सक्कर दोय ए, संखेज्ज धूम में होय ए।
तथा एक रत्न सक्कर दोय ए, संखेज तमा में जोय ए।।
५३. तथा एक रत्न सक्कर दोय ए, संखेज्ज सप्तमीं होय ए।
रत्न सक्कर थी भंग पंच ए, दूजे विकल्प करीनें विरंच ए।।
५४. तथा एक रत्न सक्कर तीन ए, संखेज वालुका लीन ए।
तथा एक रत्न सक्कर तीन ए, संखेज्ज पंक में चीन ए।।
५५. तथा एक रत्न सक्कर तीन ए, संखेज धूम में लीन ए।
तथा एक रत्न सक्कर तीन ए, संखेज तमा आधीन ए।।
५६. तथा एक रत्न सक्कर तीन ए, संखेज्ज सप्तमीं दीन ए।
रत्न सक्कर थी भंग पंच ए, तीजे विकल्प करीनें संच ए।।
५७. तथा एक रत्न सक्कर च्यार ए, संखेज वालुका धार ए।
जाव तथा रत्न इक अंक ए, चिउं सक्कर सप्तमीं संख ए।।

४१,४४. एवं एक्केक्का पुढवी उवरिमपुढवीहिं समं चारेयव्वा।

४६. जाव अहवा संखेज्जा तमाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

४७. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा।

४८. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए संखेज्जा पंकप्पभाए होज्जा।

४९,५०. जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

५१-५३. अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

५४-६४. अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एवं एएणं कमेणं एक्केक्को संचारेयव्वो सक्करप्पभाए जाव अहवा एगे रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५८. तथा एक रत्न सक्कर पंच ए, संखेज वालुका संच ए।
जाव तथा रत्न इक अंक ए, पंच सक्कर सप्तमीं संख ए ।।
५६. तथा एक रत्न में लहेज ए, षट सक्कर वालु संखेज ए।
जाव तथा रत्न इक अंक ए, षट सक्कर सप्तमीं संख ए ।।
६०. तथा एक रत्न में कहेज ए, सप्त सक्कर वालु संखेज ए।
जाव तथा रत्न इक अंक ए, सप्त सक्कर सप्तमीं संख ए ।।
६१. तथा एक रत्न में लहेज ए, अठ सक्कर वालु संखेज ए।
जाव तथा रत्न इक अंक ए, अष्ट सक्कर सप्तमीं संख ए ।।
६२. तथा एक रत्न में लहेज ए, नव सक्कर वालु संखेज ए।
जाव तथा रत्न इक अंक ए, नव सक्कर सप्तमीं संख ए ।।
६३. तथा एक रत्न में कहेज ए, दश सक्कर वालु संखेज ए।
जाव तथा रत्न इक अंक ए, दश सक्कर सप्तमीं संख ए ।।
६४. तथा एक रत्न में कहेज ए, संख सक्कर वालु संखेज ए।
जाव तथा रत्न इक अंक ए, संख सक्कर सप्तमीं संख ए ।।
६५. तथा दोय रत्न में लहेज ए, संख सक्कर वालु संखेज ए।
जाव तथा रत्न बे अंक ए, संख सक्कर सप्तमीं संख ए ।।

६५. अहवा दो रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

६६. तथा तीन रत्न में कहेज ए, संख सक्कर वालु संखेज ए।
जाव तथा रत्न त्रिण अंक ए, संख सक्कर सप्तमीं संख ए ।।
६७. तथा च्यार रत्न में लहेज ए, संख सक्कर वालु संखेज ए।
जाव तथा रत्न चिउं अंक ए, संख सक्कर सप्तमीं संख ए ।।
६८. तथा पंच रत्न में कहेज ए, संख सक्कर वालु संखेज ए।
जाव तथा रत्न पंच अंक ए, संख सक्कर सप्तमी संख ए ।।
६९. अथवा षट रत्न कहेज ए, षट सक्कर वालु संखेज ए।
जाव तथा रत्न षट अंक ए, षट सक्कर सप्तमीं संख ए ।।
७०. तथा सप्त रत्न में कहेज ए, सप्त सक्कर वालु संखेज ए।
जाव तथा रत्न सप्त अंक ए, सप्त सक्कर सप्तमीं संख ए ।।
७१. तथा अष्ट रत्न में लहेज ए, अष्ट सक्कर वालु संखेज ए।
जाव तथा रत्न अष्ट अंक ए, अष्ट सक्कर सप्तमीं संख ए ।।
७२. अथवा नव रत्न लहेज ए, नव सक्कर वालु संखेज ए।
जाव तथा रत्न नव अंक ए, नव सक्कर सप्तमीं संख ए ।।
७३. अथवा दश रत्न लहेज ए, दश सक्कर वालु संखेज ए।
जाव तथा रत्न दश अंक ए, दश सक्कर सप्तमी संख ए ।।
७४. अथवा संख रत्न कहेज ए, संख सक्कर वालु संखेज ए।
जाव तथा रत्न संख अंक ए, संख सक्कर सप्तमीं संख ए ।।
७५. रत्न सक्कर थी भंग पंच ए, विकल्प इकवीस विरंच ए।
कह्या एकसौ नैं पंच भंग ए, हिवै रत्न वालुक थी प्रसंग ए ।।

६६-७४. अहवा तिण्णि रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं एक्केक्को रयणप्पभाए संचारेयव्वो जाव अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

७६. तथा एक रत्न में कहेज ए, इक वालुक पंक संखेज ए।
जाव तथा रत्न इक अंक ए, इक वालुक सप्तमीं संख ए ।।

७६. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए संखेज्जा पंकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७७. अथवा इक रत्न लभेज्ज ए, दोय वालुका पंक संखेज्ज ए।
जाव तथा रत्न इक अंक ए, दोय वालुका सप्तमीं संख ए ।।
७८. इम इहविध अनुक्रमेण ए, रत्न वालु थी चिउं भंग श्रेण ए ।।
इकवोस विकल्प करि जोय ए, तसु भंग चउरासी होय ए ।।
७९. रत्न पंक थकी भंग तीन ए, इकवीस विकल्प करि चीन ए।
त्रेसठ भांगा जाण ए, तिके पूर्व रीत पिछाण ए ।।
८०. रत्न धूम थकी भंग दोय ए, इकवीस विकल्प करि जोय ए।
भांगा बयालीस तास ए, विध पूर्व रीत प्रकाश ए ।।
८१. रत्न तमा थकी भंग एक ए, इकवीस विकल्प करि पेख ए।
भणवा भांगा इकवीस ए, विध पूर्व उक्त जगीस ए ।।
८२. भांगा पनर रत्न थी एह ए, विकल्प इकवीस करेह ए।
हुवै तीन सौ नैं इकवीस ए, हिवै सक्कर थकी कहीस ए ।।
८३. इम सक्कर थी दश देख ए, विकल्प इकवीस सुलेख ए।
हुवै दोय सौ नैं दश भंग ए, भणवा पूर्व रीत सुचंग ए ।।
८४. भंग वालुका थी षट तेह ए, विकल्प इकवीस भणेह ए।
भांगा ह्वै एक सौ नैं छवीस ए, ते पिण पूर्व रीत जगीस ए ।।
८५. पंक थकी भंग तीन ए, विकल्प इकवीस आधीन ए।
त्रेसठ भांगा तास ए, वारु बुद्धि विमल सुविमास ए ।।
८६. धूम थकी भंग एक ए, विकल्प इकवीस सुलेख ए।
इकवीस भांगा अवलोय ए, विधि पूर्व उक्तज होय ए ।।
८७. इम त्रिकसंजोगिक भंग ए, सातसौ नैं पैंतीस सुचंग ए।
इम नारकि भ्रमण करेय ए, जिन भाखै सुण गंगेय ! ए ।।
८८. देश नवम बतीसम न्हाल ए, एकसौ नैं सत्यासीमीं ढाल ए।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय ए, सुख 'जय-जश' हरष सवाय ए ।।

७७. अहवा एगे रयणप्पभाए दो वालुयप्पभाए संखेज्जा पंकप्पभाए होज्जा, एवं एएणं कमेणं तिआसंजोगो,

ढाल : १८८

हिवै संख्याता जीवां रा चउकसंयोगिक तेहनां विकल्प ३१ भांगा १०८५ तिणरो विवरो—चउकसंजोगिक ३५ भांगा एकेक विकल्प करि हुवै। रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालुक थी ४, पंक थी १—एवं ३५। रत्न थी २० ते किसा ? रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालु थी ६, रत्न पंक थी ३, रत्न धूम थी १—एवं २०। रत्न सक्कर थी १० ते किसा ? रत्न सक्कर वालु थी ४, रत्न सक्कर पंक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी २, रत्न सक्कर तम थी १—एवं १०। इम आगल पिण जिम संभवै तिम करिवा तिहां प्रथम रत्न सक्कर वालु थी ४ भांगा इकतीस विकल्प करि १२४ भांगा कहै छै—

दूहा

१. जीव संखेज तणां हिवै, चउकसंयोगी कहीस।
पिच्यासी इक सहस्र भंग, विकल्प तसु इकतीस ।।

१. चतुष्कसंयोगेषु पुनराद्याभिश्चतसृभिः प्रथमश्चतुष्कसंयोगः''''तत एते सर्वेऽप्येकत्र चतुष्कयोगे एकत्रिंशत्,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

* श्री जिन भाखै सुण गंगेया ! (ध्रुपदं)

२. तथा रत्न इक सक्कर में इक, एक वालु पंक माहि संख्यात ।
तथा रत्न इक सक्कर में इक, एक वालु धूम संख्याता जात ।।
३. तथा रत्न इक सक्कर में इक, एक वालु तम संख भणेज ।
तथा रत्न इक सक्कर में इक, एक वालु सप्तमीं में संखेज ।।
४. तथा रत्न इक सक्कर में इक, बे वालुक पंक मांहि संख्यात ।
जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, बे वालुक संख सप्तमीं जात ।।
५. तथा रत्न इक सक्कर में इक, त्रिण वालु पंक मांहि संखेय ।
जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, त्रिण वालु संखेज सप्तमीं लेय ।।
६. तथा रत्न इक सक्कर में इक, चिउं वालु पंक संखेज कहेय ।
जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, चिउं वालु सप्तमीं संखेज लेय ।।
७. तथा रत्न इक सक्कर में इक, पंच वालु पंक संखेज लेय ।
जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, पंच वालु सप्तमीं में संखेय ।।
८. तथा रत्न इक सक्कर में इक, षट वालु पंक संख्यात पीड़ात ।
जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, षट वालु सप्तमीं मांहि संख्यात ।।
९. तथा रत्न इक सक्कर में इक, सप्त वालु पंक संखेज लेय ।
जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, सप्त वालु सप्तमीं में संखेय ।।
१०. तथा रत्न इक सक्कर में इक, अष्ट वालुक पंक संखेज वेय ।
जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, अष्ट वालु सप्तमीं में संखेय ।।
११. तथा रत्न इक सक्कर में इक, नव वालु पंक संखेज वदेह ।
जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, नव वालु संखेज सप्तमीं लेह ।।
१२. तथा रत्न इक सक्कर में इक, दश वालु पंक संखेज वदेह ।
जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, दश वालु संखेज सप्तमी लेह ।।
१३. तथा रत्न इक सक्कर में इक, संखेज वालु संखेज पंकेय ।
जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, संखेज वालु सप्तमीं संखेय ।।
१४. तथा रत्न इक सक्कर में बे, संखेज वालु संखेज पंकेय ।
जाव तथा इक रत्न सक्कर बे, संखेज वालु सप्तमीं संखेय ।।
१५. तथा रत्न इक सक्कर में त्रिण, संखेज वालु संखेज पंकेय ।
जाव तथा इक रत्न सक्कर त्रिण, संखेज वालु सप्तमीं संखेय ।।
१६. तथा रत्न इक सक्कर में चिउं, संखेज वालु संखेज पंकेय ।
जाव तथा इक रत्न सक्कर चिउं, संखेज वालु सप्तमीं संखेय ।।
१७. तथा रत्न इक सक्कर में पंच, संखेज वालु संखेज पंकेय ।
जाव तथा इक रत्न सक्कर पंच, संखेज वालु सप्तमीं संखेय ।।
१८. तथा रत्न इक सक्कर में षट, संखेज वालु संखेज पंकेय ।
जाव तथा इक रत्न सक्कर षट, संखेज वालु सप्तमीं संखेय ।।
१९. तथा रत्न इक सक्कर में सप्त, संखेज वालु संखेज पंकेय ।
तथा रत्न इक सक्कर में सप्त, संखेज वालु सप्तमीं संखेय ।।
२०. तथा रत्न इक सक्कर में अष्ट, संखेज वालु संखेज पंकेय ।
तथा रत्न इक सक्कर में अष्ट, संखेज वालु सप्तमीं में संखेय ।।

*लय : घोड़ी री

अनया च सप्तपदचतुष्कसंयोगानां पंचत्रिंशतो गुणने सहस्रं पंचाशीत्यधिकं भवति । (वृ० प० ४४६)

२१. तथा रत्न इक सक्कर में नव, संखेज वालु संखेज पंकेय।
जाव तथा इक रत्न सक्कर नव, संखेज वालु सप्तमीं संखेय॥
२२. तथा रत्न इक सक्कर में दश, संखेज वालु संखेज पंकेय।
जाव तथा रत्न इक सक्कर में दश, संखेज वालु सप्तमीं संखेय॥
२३. तथा रत्न इक सक्कर संख्याता, संखेज वालु संखेज पंकेय।
जाव तथा इक रत्न सक्कर संख, संखेज वालु सप्तमीं संखेय॥
२४. तथा रत्न बे सक्कर संख्याता, संखेज वालु पंक संख लेय।
जाव तथा रत्न बे संख सक्कर, संखेज वालु सप्तमीं संखेय॥
२५. तथा रत्न त्रिण सक्कर संख्याता, संखेज वालु पंक संख लेय।
जाव तथा रत्न त्रिण संख सक्कर, संखेज वालु सप्तमीं संखेय॥
२६. तथा रत्न चिउं सक्कर संख्याता, संखेज वालु पंक संख लेय।
जाव तथा रत्न चिहुं संख सक्कर, संखेज वालु सप्तमीं संखेय॥
२७. तथा रत्न पंच सक्कर संख्याता, संखेज वालु पंक संख लेय।
जाव तथा रत्न पंच संख सक्कर, संखेज वालु सप्तमीं संखेय॥
२८. तथा रत्न षट सक्कर संख्याता, संखेज वालु पंक संख लेय।
जाव तथा रत्न षट संख सक्कर, संखेज वालु सप्तमीं संखेय॥
२९. तथा रत्न सप्त सक्कर संख्याता, संखेज वालु पंक संख लेय।
जाव तथा रत्न सप्त संख सक्कर, संखेज वालु सप्तमीं संखेय॥
३०. तथा रत्न अष्ट सक्कर संख्याता, संखेज वालु पंक संख लेय।
जाव तथा रत्न अठ संख सक्कर, संखेज वालु सप्तमीं संखेय॥
३१. तथा रत्न नव सक्कर संख्याता, संखेज वालु पंक संख लेय।
जाव तथा रत्न नव संख सक्कर, संखेज वालु सप्तमीं संखेय॥
३२. तथा रत्न दश सक्कर संख्याता, संखेज वालु पंक संख लेय।
जाव तथा रत्न दश संख सक्कर, संखेज वालु सप्तमीं संखेय॥
३३. तथा रत्न संख सक्कर संख्याता, संखेज वालु पंक संख लेय।
जाव तथा रत्न संख सक्कर, संखेज वालु सप्तमीं संखेय॥
३४. ए रत्न सक्कर वालु थी चिउं भांगा,
इकतीस विकल्प इक सौ चोवीस।
रत्न सक्कर पंक थी त्रिण भांगा, इकतीस विकल्प त्राणूं जगीस॥
३५. रत्न सक्कर धूम थी दोय भांगा, इकतीस विकल्प बासठ दीस।
रत्न सक्कर तम थी इक भंगो, इकतीस विकल्प भंग इकतीस॥
३६. ए रत्न सक्कर थी दश भांगा, ते तीनसौ दश विकल्प इकतीस।
इमज रत्न वालु थी षट भांगा, एकसौ नें बयासी सुजगीस॥
३७. इमहिज रत्न पंक थी त्रि भंग, इकतीस विकल्प त्राणुं दीस।
रत्न धूम थी एक भांगो, ते इकतीस विकल्प भंग इकतीस॥
३८. रत्न थकी ए वीस भंगा इम, इकतीस विकल्प छसौ बीस।
सक्कर थी दश भांगा इमहिज, तीनसौ नें दश इमज कहीस॥
३९. वालु थी चिउं भंग इकतीस विकल्प, भांगा हुवै एक सौ चोवीस।
पंक थकी इक भांगो हुवे, ते इकतीस विकल्प भंग इकतीस॥
४०. संखेज जीवां रा चउकसंजोगिक,
भांगा हुवै एक सहस्र पच्चासी।
पैंतीस भांगा मूल छै त्यां नैं, इकतीस गुणा कियां इता थासी॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४१. नवम शतक नों बतीसम देशज, एकसौ नें अठयासीमीं ढाल।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' संपति हरष विशाल ।।

ढाल : १८९

हिवै संख्यात जीवां रा पंचसंयोगिक नां विकल्प ४१, भांगा ८६१ तिणरो विवरो—पंच संयोगिक २१ भांगा एक-एक विकल्प करि हुवै। रत्न थकी १५, सक्कर थी ५ वालुक थी १, एवं २१। तिहां रत्न थी १५ तेहनों विवरो—रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालु थी ४, रत्न पंक थी १ एवं १५। तिहा रत्न सक्कर थी १० ते किसा ? रत्न सक्कर वालु थी ६, रत्न सक्कर पंक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी १ एवं १०। तिहां रत्न सक्कर वालुक थी ६ ते किसा ? रत्न सक्कर वालु पंक थी ३, रत्न सक्कर वालु धूम थी २, रत्न सक्कर वालु तम थी १—एवं ६। तिहां प्रथम रत्न सक्कर वालु पंक थी ३ भांगा ४१ विकल्प करि १२३ भांगा कहै छै—

दूहा

१. जीव संखेज तणां हिवै, पंच-संयोगि कहीस।
अठ सय इकसठ भंग तसु, विकल्प इकतालीस ।।

२. *अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,
पंक इक धूम संख्यात जातं ।।
जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,
पंक इक सप्तमीं में संख्यातं।
विकल्प प्रथम जिनराज इम वागरै ।।

३. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,
पंके बे धूम संख्यात जातं।
जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,
पंक बे सप्तमीं में संख्यातं।
विकल्प द्वितीय जिनराज इम वागरै ।।

४. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,
पंक त्रिण धूम संख्यात जातं।
जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,
पंक त्रिण सप्तमीं में संख्यातं।
विकल्प तृतीय जिनराज इम वागरै ।।

५. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,
पंक चिउं धूम संख्यात जातं।
जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,
पंक चिउं सप्तमीं में संख्यातं।
विकल्प तुर्य जिनराज इम वागरै ।।

---

*लय : कड़खा री

१. पञ्चकसंयोगेषु त्वाद्याभिः पञ्चभिः प्रथमः पञ्चकयोगः, ...तत एते सर्वेऽप्येकत्र पञ्चकयोगे एकचत्वारिंशत्, अस्याश्च प्रत्येकं सप्तपदपञ्चकसंयोगानामेकविंशतेर्लाभादष्टशतानि एकषष्ट्यधिकानि भवन्ति।
(वृ प० ४४६)

६. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,
पंक पंच धूम संख्यात जातं।
जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालुक इक,
पंक पांच सप्तमीं में संख्यातं।
पंचम विकल्प श्री जिनराज कहै॥

७. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,
पंक षट धूम संख्यात जातं।
जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,
पंक षट सप्तमीं में संख्यातं।
षष्टम विकल्प श्री जिनराज कहै॥

८. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,
पंक सप्त धूम संख्यात जातं।
जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,
पंक सप्त सप्तमीं में संख्यातं।
सप्तम विकल्प श्री जिनराज कहै॥

९. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,
पंक अष्ट धूम संख्यात जातं।
जाव तथा इक रत्न सक्कर इक वालु इक,
पंक अष्ट सप्तमीं में संख्यातं।
विकल्प अष्टम श्री जिनराज कहै॥

१०. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,
पंक नव धूम संख्यात जातं।
जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,
पंक नव सप्तमीं में संख्यातं।
नवम विकल्प जिनराज इम वागरै॥

११. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,
पंक दश धूम संख्यात जातं।
जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,
पंक दश सप्तमीं में संख्यातं।
दशम विकल्प जिनराज इम वागरै॥

१२. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं।
जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं।
एकादशम विकल्प जिनराज वागरै॥

१३. अथवा इक रत्न इक सक्कर बे वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं।
जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु बे,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं।
द्वादशम विकल्प जिनराज वागरै॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. अथवा इक रत्न इक सक्कर त्रिण वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु त्रिण,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं ।
त्रयोदशम विकल्प जिनराज वागरै ।।

१५. अथवा इक रत्न इक सक्कर चिउं वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु चिउं,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं ।
चउदशम विकल्प जिनराज वागरै ।।

१६. अथवा इक रत्न इक सक्कर पंच वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु पंच,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं ।
पनरम विकल्प श्री जिनराज कहै ।।

१७. अथवा इक रत्न इक सक्कर षट वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु षट,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं ।
सोलसम विकल्प श्री जिनराज कहै ।।

१८. अथवा इक रत्न इक सक्कर सप्त वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु सत्त,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं ।
सतरमों विकल्प श्री जिनराज कहै ।।

१९. अथवा इक रत्न इक सक्कर अठ वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु अठ,
संख पंक सप्तमीं में संख्यात ।
अठारमों विकल्प श्री जिनराज कहै ।।

२०. अथवा इक रत्न इक सक्कर नव वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु नव,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं ।
उगणीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ।।

२१. अथवा इक रत्न इक सक्कर दश वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु दश,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं ।
बीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२. अथवा इक रत्न इक सक्कर संख वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु संख,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं ।
इकवीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ॥

२३. अथवा इक रत्न बे सक्कर संख वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न इक सक्कर बे वालु संख,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं ।
बावीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ॥

२४. अथवा इक रत्न त्रिण सक्कर संख वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न इक सक्कर त्रिण वालु संख,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं ।
तेवीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ॥

२५. अथवा इक रत्न चिउ सक्कर संख वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न इक सक्कर चिउ वालु संख,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं ।
चउवीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ॥

२६. अथवा इक रत्न पंच सक्कर संख वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न इक सक्कर पंच वालु संख,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं ॥
पणवीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ॥

२७. अथवा इक रत्न षट सक्कर संख वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न इक सक्कर षट वालु संख,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं ।
षटवीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ॥

२८. अथवा इक रत्न सप्त सक्कर संख वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न इक सक्कर सप्त वालु संख,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं ।
सप्तवीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ॥

२९. अथवा इक रत्न अठ सक्कर संख वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न इक सक्कर अठ वालु संख,
पंक संख सप्तमीं में संख्यातं ।
अष्टवीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३०. अथवा इक रत्न नव सक्कर संख वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न इक सक्कर नव वालु संख,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं ।
गुणतीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ।।

३१. अथवा इक रत्न दश सक्कर संख वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न इक सक्कर दश वालु संख,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं ।
तीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ।।

३२. अथवा इक रत्न संख सक्कर संख वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न इक सक्कर संख वालु संख,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं ।
इकतीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ।।

३३. अथवा बे रत्न संख सक्कर संख वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न बे सक्कर संख वालु संख,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं ।
बतीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ।।

३४. अथवा त्रिण रत्न संख सक्कर संख वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न त्रिण संख सक्कर वालु संख,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं ।
तेतीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ।।

३५. अथवा चिउ रत्न संख सक्कर संख वालुका,
संक पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न चिउ संख सक्कर वालु संख,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं ।
चउतीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ।।

३६. अथवा पंच रत्न संख सक्कर संख वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न पंच संख सक्कर वालु संख,
पंक संख सप्तमीं में संख्यातं ।
पैंतीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ।।

३७. अथवा षट रत्न संख सक्कर संख वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं ।
जाव तथा रत्न षट संख सक्कर वालु संख,
पंक संख सप्तमीं में संख्यातं ।
छतीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३८. अथवा सत्त रत्न संख सक्कर संख वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं।
जाव तथा रत्न सत्त संख सक्कर वालु संख,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं।
सैंतीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ॥

३९. अथवा अठ रत्न संख सक्कर संख वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं।
जाव तथा रत्न अठ संख सक्कर वालु संख,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं।
अड़तीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै ॥

४०. अथवा नव रत्न संख सक्कर संख वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं।
जाव तथा रत्न नव संख सक्कर वालु संख,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं।
गुणचालीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ॥

४१. अथवा दश रत्न संख सक्कर संख वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं।
जाव तथा रत्न दश संख सक्कर वालु संख,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं।
चालीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ॥

४२. अथवा संख रत्न संख सक्कर संख वालुका,
संख पंक धूम संख्यात जातं।
जाव तथा रत्न संख संख सक्कर वालु संख,
संख पंक सप्तमीं में संख्यातं।
इकतालीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ॥

४३. *इम रत्न सक्कर वालु धूम थी, भंग दोय भणीजियै।
विकल्प एक चालीस करिकै, बयांसी गिण लीजियै ॥
४४. इम रत्न सक्कर वालु तम थी, एक भंग अहीजही।
विकल्प इकतालीस करिकै, भंग इकतालीस ही ॥
४५. इम रत्न सक्कर पंक धूम थी, दो भांगा दाखीजियै।
विकल्प इकतालीस करिकै, बयांसी भंग कीजियै ॥
४६. रत्न सक्कर पंक तम थी, एक भंग हुवै वही।
विकल्प इकतालीस करिकै, भंग इकतालीस ही ॥
४७. इम रत्न सक्कर धूम तम थी, एकईज भांगो लहै।
विकल्प इकतालीस करिकै, भंग इकतालीस है ॥
४८. रत्न वालु पंक धूम थी, दोय भंग दाखीजियै।
विकल्प इकतालीस करिकै, बयांसी भंग कीजियै ॥
४९. रत्न वालु पंक तम थी, एक भंग हुवै वही।
विकल्प इकतालीस करिकै, भंग इकतालीस ही ॥

*लय : [illegible]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५०. रत्न वालु धूम तम थी, एक भंग हुवै सही।
विकल्प एक चालीस करिकै, भंग इकतालीस ही ।।

५१. इम रत्न पंक नें धूम तम थी, एक भंग हुवै वही।
विकल्प इकतालीस करिकै, भंग इकतालीस ही ।।

५२. सक्कर थी इम पांच-पांच भांगा, पूर्व रीत भणीजियै।
विकल्प इकतालीस करिकै, बे सय पंच गिणीजियै ।।

५३. वालुका थी एक भंग इम, इकतालीस विकल्प करी।
भंग इकतालीस होवै, प्रवर बुद्धी अनुसरी ।।

ए रत्न थी ६१५, सक्कर थी २०५, वालुका थी ४१—एवं सर्व ८६१ भांगा हुवै।

५४. *जीव संखेज नां पंचसंयोगिका,
विकल्प एकचालीस जेहनां।
आठसौ इकसठ भंग इम आखिया,
मूल इकवीस भांगा छै तेहनां ।।

५५. नवम शतदेश बतीसम ए कह्यं, एक सौ नें नव्यासीमीं ढालं।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसाद थी,
'जय-जश' हरष संपति विशालं ।।

ढाल : १६०

दूहा

१. संख जीव षट-योगिका, विकल्प एकावन्न।
भंग तीन सय ऊपरै, सत्तावन प्रपन्न ।।

२. मूल सप्त भंग तेहनें, सत्तावन गुणे गेह।
हुवै तीन सौ भंग इम, सत्तावन अधिकेह ।।

३. पूर्ववत विकल्प प्रवर, एकावन्न उदार।
कहूं जूजुआ तेहथी, भणिवा भांगा सार ।।

संखेज्ज जीवां रा षट-संजोगिक ५१ विकल्प जूजुआ देखाड़ै छै—

१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, संख्यात तम
२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ धूम, संख्यात तम
३. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ३ धूम, संख्यात तम
४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ४ धूम, संख्यात तम
५. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ५ धूम, संख्यात तम
६. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ६ धूम, संख्यात तम
७. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ७ धूम, संख्यात तम
८. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ८ धूम, संख्यात तम

*लय : कड़खा री

१. षट्कसंयोगेषु तु पूर्वोक्तक्रमेणैकत्र षट्कसंयोगे एकपञ्चाशद्विकल्पा भवन्ति, अस्याश्च प्रत्येकं सप्तपदषट्कयोगे सप्तकलाभावत्रीणि शतानि सप्तपञ्चाशदधिकानि भवन्ति। (वृ० प० ४४६)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. १ रत्न, १ सक्कर; १ वालु, १ पंक, ९ धूम, संख्यात तम
१०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १० धूम, संख्यात तम
११. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
१२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
१३. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ३ पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
१४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ४ पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
१५. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ५ पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
१६. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ६ पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
१७. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ७ पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
१८. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु ८ पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
१९. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ९ पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
२०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
२१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
२२. १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
२३. १ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
२४. १ रत्न, १ सक्कर, ४ वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
२५. १ रत्न, १ सक्कर, ५ वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
२६. १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
२७. १ रत्न, १ सक्कर, ७ वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
२८. १ रत्न, १ सक्कर, ८ वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
२९. १ रत्न, १ सक्कर, ९ वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
३०. १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
३१. १ रत्न, १ सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
३२. १ रत्न, २ सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
३३. १ रत्न, ३ सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
३४. १ रत्न, ४ सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
३५. १ रत्न, ५ सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
३६. १ रत्न, ६ सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
३७. १ रत्न, ७ सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
३८. १ रत्न, ८ सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
३९. १ रत्न, ९ सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
४०. १ रत्न, १० सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
४१. १ रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
४२. २ रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
४३. ३ रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
४४. ४ रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
४५. ५ रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
४६. ६ रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
४७. ७ रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
४८. ८ रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
४९. ९ रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम
५०. १० रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५१. संख्यात रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम संख्यात, तम

संखेज जीव नां षट-संजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भांगा कह्या, तिणमें सप्तमी नरक टली।

इमहिज संखेज जीव नां षट-संजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भांगा में छठी नरक टालणी।

इम संखेज जीव नां षट-संजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भांगा तिणमें पांचमी नरक टालणी।

इम संखेज जीव नां षट-संजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भांगा तिणमें चउथी नरक टालणी।

इमहिज संखेज जीव नां षट-संयोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भांगां में तीजी नरक टालणी।

इमहिज संखेज जीव नां षट-संजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भांगां में दूजी नरक टालणी।

इमहिज संखेज जीव नां षट-संजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भांगां में प्रथम नरक टालणी।

एवं संखेज जीव नां षट-संयोगिक ५१ विकल्प करि ३५७ भांगा हुवै।

हिवै सप्त संयोगिक कहै छै—

४. संख जीव सप्तयोगिका, इगसठ विकल्प एम।
भांगा पिण इगसठ तसुं, कहूं जूजुआ जेम।।

संखेज जीव नां सप्त-संयोगिक ६१ विकल्प, भांगा पिण ६१, ते कहै छै—

१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, संख्यात सप्तमीं
२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, २ तम, संख्यात सप्तमीं
३. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, ३ तम, संख्यात सप्तमीं
४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, ४ तम, संख्यात सप्तमीं
५. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, ५ तम, संख्यात सप्तमीं
६. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, ६ तम, संख्यात सप्तमीं
७. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, ७ तम, संख्यात सप्तमीं
८. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक १ धूम, ८ तम, संख्यात सप्तमीं
९. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु १ पंक, १ धूम, ९ तम, संख्यात सप्तमीं
१०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १० तम, संख्यात सप्तमीं
११. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
१२. १ रत्न, १सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
१३. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ३ धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
१४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ४ धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
१५. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ५ धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
१६. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ६ धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
१७. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ७ धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
१८. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ८ धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
१९. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ९ धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
२०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १० धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
२१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
२२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं

४. सप्तकसंयोगे तु पूर्वोक्तभावनयैकषष्टिर्विकल्पा भवन्ति, सर्वेषां चषां मीलने त्रयस्त्रिंशच्छतानि सप्तत्रिंशदधिकानि भवन्ति। (वृ० प० ४४९)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ३ पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
२४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ४ पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमी
२५. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु ५ पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
२६. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ६ पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, सख्यात सप्तमीं
२७. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ७ पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
२८. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ८ पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
२९. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ९ पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
३०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
३१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
३२. १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
३३. १ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
३४. १ रत्न, १ सक्कर, ४ वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
३५. १ रत्न, १ सक्कर, ५ वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
३६. १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
३७. १ रत्न, १ सक्कर, ७ वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
३८. १ रत्न, १ सक्कर, ८ वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
३९. १ रत्न, १ सक्कर, ९ वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
४०. १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
४१. १ रत्न, १ सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
४२. १ रत्न, २ सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
४३. १ रत्न, ३ सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
४४. १ रत्न, ४ सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
४५. १ रत्न, ५ सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
४६. १ रत्न, ६ सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं
४७. १ रत्न, ७ सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४८. १ रत्न, ८ सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम,
संख्यात सप्तमी

४९. १ रत्न, ९ सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम,
संख्यात सप्तमी

५०. १ रत्न, १० सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम,
संख्यात सप्तमीं

५१. १ रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम,
संख्यात सप्तमी

५२. २ रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम,
संख्यात सप्तमीं

५३. ३ रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम,
संख्यात सप्तमीं

५४. ४ रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम,
संख्यात सप्तमीं

५५. ५ रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम,
संख्यात सप्तमीं

५६. ६ रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम,
संख्यात सप्तमीं

५७. ७ रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम,
संख्यात सप्तमीं

५८. ८ रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम,
संख्यात सप्तमीं

५९. ९ रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम,
संख्यात सप्तमीं

६०. १० रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात तम,
संख्यात सप्तमीं

६१. संख्यात रत्न, संख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पंक, संख्यात धूम, संख्यात
तम, संख्यात सप्तमीं

हिवै संख्यात जीवां रा भांगां रो धड़ो कहै छै—

१. इक संयोगिक ७ ।
२. द्विक संयोगिक २३१ ।
३. त्रिक संयोगिक ७३५ ।
४. चउक्क संयोगिक १०८५ ।
५. पंच संयोगिक ८६१ ।
६. षट संयोगिक ३५७ ।
७. सप्त संयोगिक ६१ ।

ए सर्व ३३३७ ।

संख्यात जीव नरक में जाय तेहनां इकयोगिक भांगा ७ विकल्प १ ते लिखियै छै—

१. संख्याता रत्नप्रभा में ऊपजै ।
२. अथवा सक्कर में ऊपजै ।
३. जाव अथवा तमतमा में ऊपजै ।

संख्याता जीव नरक में जाय तेहनां द्विकसंजोगिया विकल्प ११ ते लिखियै छै —

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. १ रत्न, संख[1] सक्कर ए प्रथम विकल्प ।

२. २ रत्न, संख सक्कर ए द्वितीय विकल्प । इम रत्न में अनुक्रमे दश तांइ एक-एक वधारतां दसमों विकल्प—

१०. १० रत्न, संख सक्कर ए दशमों विकल्प ।

११. संख रत्न, संख सक्कर ए इग्यारमों विकल्प । ए द्विकसंजोगिया संख्याता जीवां रा ११ विकल्प अनैं एक-एक विकल्प नां इकवीस-इकवीस भांगा हुवैं ते माटै इग्यारै नें २१ गुणां कीधे छते २३१ भांगा हुवैं ।

संख्याता जीव नरक में जाय तेहनां त्रिकसंजोगिया विकल्प २१ ते लिखियै छै —

१. १ रत्न, १ सक्कर, संख वालुक ए प्रथम विकल्प ।

२. १ रत्न, २ सक्कर, संख वालुक ए द्वितीय विकल्प । इम सक्कर में अनुक्रमे दश तांइ एक-एक वधारतां दसमों विकल्प—

१०. १ रत्न, १० सक्कर, संख वालुक ए दशमों विकल्प ।

११. १ रत्न, संख सक्कर, संख वालुक, ए इग्यारमों विकल्प ।

१२. २ रत्न, संख सक्कर, संख वालुक ए बारमों विकल्प । इम रत्न में दश तांइ अनुक्रमे एक-एक वधारतां बीसमों विकल्प—

२०. १० रत्न, संख सक्कर, संख वालु ए बीसमों विकल्प ।

२१. संख रत्न, संख सक्कर, संख वालुक ए इकवीसमों विकल्प । ए त्रिकसंजोगिया संख्यात जीवां रा २१ विकल्प, अनैं एक-एक विकल्प नां पैंतीस-पैंतीस भांगा हुवैं ते माटै इकवीस नें ३५ गुणां कीधे छते ७३५ भांगा हुवैं ।

संख्याता जीव नरक में जाय, तेहनां चौकसंजोगिया विकल्प ३१ एहनीं आमना लिखियैं छै—

१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, संख पंक ए प्रथम विकल्प ।

२. १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, संख पंक ए द्वितीय विकल्प । इम वालुक में अनुक्रमे दश तांइ एक-एक वधारतां दसमों विकल्प—

१०. १ रत्न, १ सक्कर, १० वालुक, संख पंक, ए दशमों विकल्प ।

११. १ रत्न, १ सक्कर, संख वालुक संख पंक ए ११ मों विकल्प ।

१२. १ रत्न, २ सक्कर, संख वालुक, संख पंक ए १२ मो विकल्प । इम सक्कर में दश तांइ अनुक्रमे एक-एक वधारतां बीसमों विकल्प—

२०. १ रत्न, १० सक्कर, संख वालुक, संख पंक ए बीसमो विकल्प ।

२१. १ रत्न, संख सक्कर, संख वालुक, संख पंक ए २१ मों विकल्प ।

२२. २ रत्न, संख सक्कर, संख वालु, संख पंक ए २२ मों विकल्प । इम रत्न में अनुक्रमे दश तांइ एक-एक वधारता तीसमों विकल्प—

३०. १० रत्न, संख सक्कर, संख वालुक, संख पंक ए तीसमों विकल्प ।

३१. संख रत्न, संख सक्कर, संख वालु, संख पंक ए ३१ मों विकल्प । चउक-संजोगिया संख्याता जीवां रा ३१ विकल्प अनैं एक-एक विकल्प नां पैंतीस-पैंतीस भांगा हुवैं ते माटै ३१ में ३५ गुणां कीधे छते १०८५ भांगा हुवैं ।

संख्याता जीव नरक में जाय तेहनां पंचसंजोगिया विकल्प ४१ तेहनीं आमना लिखियै छै—

१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, संख धूम, ए प्रथम विकल्प ।

२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पंक, संख धूम, ए द्वितीय विकल्प । इम पंक में

---

१. संख्यात के स्थान पर संख शब्द का प्रयोग हुआ है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुक्रमे दश तांइ एक-एक वधारतां दसमों विकल्प—

१०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पंक, संख धूम ए दशमों विकल्प ।

११. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, संख पंक, संख धूम ए ११ मों विकल्प ।

१२. १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, संख पंक, संख धूम ए १२ मों विकल्प, इम वालुक में अनुक्रमें दश तांइ एक-एक वधारतां बीसमों विकल्प —

२०. १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, संख पंक, संख धूम, ए २० मों विकल्प ।

२१. १ रत्न, १ सक्कर, संख वालु, संख पंक, संख धूम, ए २१ मों विकल्प ।

२२. १ रत्न, २ सक्कर, संख वालु, संख पंक, संख धूम, ए २२ मों विकल्प । इम सक्कर में अनुक्रमे दश तांइ एक-एक वधारतां तीसमों विकल्प—

३०. १ रत्न, १० सक्कर, संख वालु, संख पंक, संख धूम ए ३० मों विकल्प ।

३१. १ रत्न, संख सक्कर, संख वालु, संख पंक, संख धूम ए ३१ मों विकल्प ।

३२. २ रत्न, संख सक्कर, संख वालु, संख पंक, संख धूम ए ३२ मों विकल्प ।

इम रत्न में अनुक्रमें दश तांइ एक-एक वधारतां चालीसमों विकल्प—

४०. १० रत्न, संख सक्कर, संख वालु, संख, पंक, संख धूम ए चालीसमों विकल्प ।

४१. संख रत्न, संख सक्कर, संख वालु, संख पंक, संख धूम ए ४१ मों विकल्प ।

ए संख्यात जीवां रा पांचसंजोगिया ४१ विकल्प, अनैं एक-एक विकल्प नां इक्कीस-इक्कीस भांगा हुवै, ते माटै इकतालीस नैं २१ गुणां कीधे छते ८६१ भांगा हुवै ।

संख्याता जीव नरक में जाय तेहनां षट संजोगिया विकल्प ५१, तेहनीं आमना लिखियै छै —

१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, संख्यात तम, ए प्रथम विकल्प ।

२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ धूम, संख्यात तम ए द्वितीय विकल्प ।

इम धूम में अनुक्रमे दश तांइ एक-एक वधारतां दसमों विकल्प—

१०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १० धूम, संख्यात तम ए १० मों विकल्प ।

११. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, संख धूम, संख तम ए ११ मों विकल्प ।

१२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पंक, संख धूम, संख तम ए १२ मों विकल्प ।

इम पंक में अनुक्रमे दश तांइ एक-एक वधारतां बीसमों विकल्प—

२०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पंक, संख धूम, संख तम, ए २० मों विकल्प ।

२१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, संख पंक, संख धूम, संख तम ए २१ मों विकल्प ।

२२. १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, संख पंक, संख धूम, संख तम, ए २२ मों विकल्प ।

इम वालुक में अनुक्रमे दश तांइ एक-एक वधारतां तीसमों विकल्प—

३०. १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, संख पंक, संख धूम, संख तम ए ३० मों विकल्प ।

३१. १ रत्न, १ सक्कर, संख वालु, संख पंक, संख धूम, संख तम, ए ३१ मों विकल्प ।

३२. १ रत्न, २ सक्कर, संख वालु, संख पंक, संख धूम, संख तम, ए ३२ मों विकल्प ।

इम सक्कर में अनुक्रमें दश तांइ एक-एक वधारतां चालीसमों विकल्प—

४०. १ रत्न, १० सक्कर, संख वालु, संख पंक, संख धूम, संख तम ए ४० मों विकल्प ।

४१. १ रत्न, संख सक्कर, संख वालु, संख पंक, संख धूम, संख तम ए ४१ मों विकल्प ।

४२. २ रत्न, संख सक्कर, संख वालु, संख पंक, संख धूम, संख तम ए ४२ मों विकल्प । इम रत्न में अनुक्रमे दश तांइ एक-एक वधारतां पचासमों विकल्प—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५०. १० रत्न, संख सक्कर, संख वालु, संख पंक, संख धूम, संख तम ए ५० मों विकल्प ।

५१. संख रत्न, संख सक्कर, संख वालु, संख पंक, संख धूम, संख तम ए ५१ मों विकल्प ।

ए संख्यात जीवां रा छसंजोगिया ५१ विकल्प, अनैं एक-एक विकल्प नां सात-सात भांगा हुवैं, ते माटैं ५१ नैं सात गुणां कीधे छते ३५७ भांगा हुवैं ।

संख्याता जीव नरक में जाय तेहनां सातसंजोगिया विकल्प ६१ तेहनीं आमना लिखियैं छै—

१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, संख सप्तमीं, ए प्रथम विकल्प ।

२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, २ तम, संख सप्तमीं, ए द्वितीय विकल्प । इम तम में अनुक्रमे दश तांइ एक-एक वधारतां दसमों विकल्प—

१०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १० तम, संख सप्तमीं ए १० मों विकल्प ।

११. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, संख तम, संख सप्तमीं, ए ११ मों विकल्प ।

१२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ धूम, संख तम, संख सप्तमीं, ए १२ मों विकल्प । इम धूम में अनुक्रमे दश तांइ एक-एक वधारतां वीसमों विकल्प—

२०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १० धूम, संख तम, संख सप्तमीं ए २० मों विकल्प ।

२१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, संख धूम, संख तम, संख सप्तमीं, ए २१ मों विकल्प ।

२२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पंक, संख धूम, संख तम, संख सप्तमीं, ए २२ मों विकल्प ।

इम पंक में अनुक्रमे दश तांइ एक-एक वधारतां तीसमों विकल्प—

३०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पंक, संख धूम, संख तम, संख सप्तमीं, ए ३० मों विकल्प ।

३१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, संख पंक, संख धूम, संख तम, संख सप्तमीं ए ३१ मों विकल्प ।

३२. १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, संख पंक, संख धूम, संख तम, संख सप्तमीं ए ३२ मों विकल्प । इम वालुक में अनुक्रमे दश तांइ एक-एक वधारतां चालीसमों विकल्प—

४०. १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, संख पंक, संख धूम, संख तम, संख सप्तमीं ए ४० मो विकल्प ।

४१. १ रत्न, १ सक्कर, संख वालु, संख पंक, संख धूम, संख तम, संख सप्तमीं ए ४१ मों विकल्प ।

४२. १ रत्न, २ सक्कर, संख वालु, संख पंक, संख धूम, संख तम, संख सप्तमीं, ए ४२ मों विकल्प । इम सक्कर में अनुक्रमे दश तांइ एक-एक वधारतां पचासमों विकल्प—

५०. १ रत्न, १० सक्कर, संख वालु, संख पंक, संख धूम, संख तम, संख सप्तमीं, ए ५० मों विकल्प ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५१. १ रत्न, संख सक्कर, संख वालु, संख पंक, संख धूम, संख तम, संख सप्तमीं ए ५१ मों विकल्प।

५२. २ रत्न, संख सक्कर, संख वालु, संख पंक, संख धूम, संख तम, संख सप्तमीं ए ५२ मों विकल्प। इम रत्न में अनुक्रमे दश तांइ एक-एक वधारतां साठमों विकल्प—

६०. १० रत्न, संख सक्कर, संख वालु, संख पंक, संख धूम, संख तम, संख सप्तमीं ए ६० मों विकल्प।

६१. संख रत्न, संख सक्कर, संख वालु, संख पंक, संख धूम, संख तम, संख सप्तमीं ए ६१ मों विकल्प।

ए संख्यात जीवां रा सात संयोगिया ६१ विकल्प अनें एक-एक विकल्प नों एक २ भांगो हुवै ते माटै भांगा पिण ६१ जाणवा।

*जिन कहै गंगेया! सुणे॥ (ध्रुपदं)

५. हे प्रभु! असंख्याता नेरइया, नरक-प्रवेशन प्रश्न निहाल कै।
जिन कहै रत्नप्रभा विषे, जावत अथवा सप्तमीं भाल कै॥

६. अथवा एक रत्न विषे, सक्कर मांहे असंखिज्ज होय कै।
इह विधि द्विकसंजोगिया, यावत सप्तसंजोगिक जोय कै॥

७. जिम कह्यो संख्याता जीव नों, असंख्याता नों कहिवो तेम कै।
णवरं पद असंख्यात नों, द्वादश नों कहिवो धर प्रेम कै॥

८. द्विकसंजोगिक नां इहां, द्वादश विकल्प करिनें कहीस कै।
बे सय बावन भंग हुवै, इक विकल्प भांगा इकवीस कै॥

हिवै असंखेज जीवां रा द्विकसंजोगिक नां १२ विकल्प कहै छै—

१. १ रत्न, असंख्यात सक्कर
२. २ रत्न, असंख्यात सक्कर
३. ३ रत्न, असंख्यात सक्कर
४. ४ रत्न, असंख्यात सक्कर
५. ५ रत्न, असंख्यात सक्कर
६. ६ रत्न, असंख्यात सक्कर
७. ७ रत्न, असंख्यात सक्कर
८. ८ रत्न, असंख्यात सक्कर
९. ९ रत्न, असंख्यात सक्कर
१०. १० रत्न, असंख्यात सक्कर
११. संख रत्न, असंख्यात सक्कर
१२. असंख्यात रत्न, असंख्यात सक्कर

एवं १२ विकल्प कह्या। एक-एक विकल्प करि इकवीस-इकवीस भांगा कीधे छते २५२ भांगा हुवै।

५. असंखेज्जा भंते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा?—पुच्छा।
गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

६. अहवा एगे रयणप्पभाए असंखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एवं दुयासंजोगो जाव सत्तगसंजोगो य।

७. जहा संखेज्जाणं भणिओ तहा असंखेज्जाण वि भाणियव्वो, नवरं – असंखेज्जओ अब्भहिओ भाणियव्वो।
(श० ९।९९)

नवरमिहासंख्यातपदं द्वादशमधीयते
(वृ० प० ४४९)

८. द्विकसंयोगादौ तु विकल्पप्रमाणवृद्धिर्भवति, सा चैवं— द्विकसंयोगे द्वे शते द्विपञ्चाशदधिके २५२,
(वृ० प० ४४९)

---

*लय : हूं बलिहारी हो जादवां

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

हिवै त्रिकसंजोगिया भांगा कहै छै—

९. त्रिकसंजोगिक नां इहां, तेवीस विकल्प करि सुजगीस कै।
भंग अष्ट सय पंच है, इक विकल्प भांगां पैंतीस कै॥

९. त्रिकसंयोगेऽष्टौ शतानि पञ्चोत्तराणि ८०५,
(वृ० प० ४४६)

असंख्यात जीवां रा त्रिकसंजोगिक विकल्प २३ जुदा-जुदा कहै छै—

१. १ रत्न, १ सक्कर, असंख वालु
२. १ रत्न, २ सक्कर, असंख वालु
३. १ रत्न, ३ सक्कर, असंख वालु
४. १ रत्न, ४ सक्कर, असंख वालु
५. १ रत्न, ५ सक्कर, असंख वालु
६. १ रत्न, ६ सक्कर, असंख वालु
७. १ रत्न, ७ सक्कर, असंख वालु
८. १ रत्न, ८ सक्कर, असंख वालु
९. १ रत्न, ९ सक्कर, असंख वालु
१०. १ रत्न, १० सक्कर, असंख वालु
११. १ रत्न, संख सक्कर, असंख वालु
१२. १ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालुका
१३. २ रत्न, असंख सक्कर, असख वालुका
१४. ३ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालुका,
१५. ४ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालुका
१६. ५ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालुका
१७. ६ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालुका
१८. ७ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालुका
१९. ८ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालुका
२०. ९ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालुका
२१. १० रत्न, असंख सक्कर, असंख वालुका
२२. संख रत्न, असंख सक्कर, असंख वालुका
२३. असंख रत्न, असंख सक्कर, असंख वालुका

एवं २३ विकल्प कह्या। एक-एक विकल्प करि पैंतीस-पैंतीस भांगा कीधे छते ८०५ भांगा हुवै।

हिवै असंख जीवां रा चउक संयोगिक

१०. चउकसंजोगिक नां इहां, चउतीस विकल्प करि सुजगीस कै।
भंग ग्यारेसौ नेऊ हुवै, इक-इक विकल्प करि पैंतीस कै॥

१०. चतुष्कसंयोगे त्वेकादशशतानि नवत्यधिकानि ११९०
(वृ० प० ४४६)

हिवै असंख्यात जीवां रा चउक्कसंयोगिक विकल्प ३४ जुदा-जुदा कहै छै—

१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, असंख पंक
२. १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, असंख पंक.
३. १ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, असंख पंक
४. १ रत्न, १ सक्कर, ४ वालु, असंख पंक
५. १ रत्न, १ सक्कर, ५ वालु, असंख पंक
६. १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, असंख पंक
७. १ रत्न, १ सक्कर, ७ वालु, असंख पंक
८. १ रत्न, १ सक्कर, ८ वालु, असंख पंक
९. १ रत्न, १ सक्कर, ९ वालु, असंख पंक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, असंख पंक
११. १ रत्न, १ सक्कर, संख वालु, असंख पंक
१२. १ रत्न, १ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक
१३ १ रत्न, २ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक,
१४. १ रत्न, ३ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक
१५. १ रत्न, ४ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक
१६. १ रत्न, ५ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक
१७. १ रत्न, ६ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक
१८. १ रत्न, ७ सक्कर, असंख वालु असंख पंक
१९. १ रत्न, ८ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक
२०. १ रत्न, ९ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक
२१. १ रत्न, १० सक्कर, असंख वालु, असंख पंक
२२. १ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु असंख पंक
२३. १ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक
२४. २ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक
२५. ३ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक
२६. ४ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक
२७. ५ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक
२८. ६ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक
२९. ७ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक
३०. ८ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक
३१. ९ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक
३१. १० रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक
३३. संख रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक
३४. असंख रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक

एवं ३४ विकल्प कह्या। एक-एक विकल्प करि पैंतीस-पैंतीस भांगा कीधे छते ११९० भांगा हुवै—

हिवै असंख जीवां रा पंच संयोगिक—

११. पंचसंयोगिक नां इहां पैंतालीस विकल्प करि दीस कै।
नव सय पैंतालीस भंग है, इक-इक विकल्प भंग इकवीस कै॥

११. पञ्चकसंयोगे पुनर्नव शतानि पञ्चचत्वारिंशदधिकानि ९४५, (वृ० प० ४४९)

असंख्यात जीवां रा पंच संयोगिक विकल्प ४५ जुदा-जुदा कहै छै—

१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, असंख धूम
२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पंक, असंख धूम
३. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ३ पंक, असंख धूम
४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ४ पंक, असंख धूम
५. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ५ पंक, असंख धूम
६. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ६ पंक, असंख धूम
७. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ७ पंक, असंख धूम
८. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ८ पंक, असंख धूम
९. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ९ पक, असंख धूम
१०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पंक, असंख धूम
११. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, संख पंक, असंख धूम
१२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, असंख पंक, असंख धूम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, असंख पंक, असंख धूम
१४. १ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, असंख पंक, असंख धूम
१५. १ रत्न, १ सक्कर, ४ वालु, असंख पंक, असंख धूम
१६. १ रत्न, १ सक्कर, ५ वालु, असंख पंक, असंख धूम
१७. १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, असंख पंक, असंख धूम
१८. १ रत्न, १ सक्कर, ७ वालु, असंख पंक, असंख धूम
१९. १ रत्न, १ सक्कर, ८ वालु, असंख पंक, असंख धूम
२०. १ रत्न, १ सक्कर, ९ वालु, असंख पंक, असंख धूम
२१. १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, असंख पंक, असंख धूम
२२. १ रत्न, १ सक्कर, संख वालु, असंख पंक, असंख धूम
२३. १ रत्न, १ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
२४. १ रत्न, २ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
२५. १ रत्न, ३ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
२६. १ रत्न, ४ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
२७. १ रत्न, ५ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
२८. १ रत्न, ६ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
२९. १ रत्न, ७ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
३०. १ रत्न, ८ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
३१. १ रत्न, ९ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
३२. १ रत्न, १० सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
३३. १ रत्न, संख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
३४. १ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
३५. २ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
३६. ३ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
३७. ४ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
३८. ५ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
३९. ६ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
४०. ७ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
४१. ८ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
४२. ९ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
४३. १० रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
४४. संख रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम
४५. असंख रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम

एवं ४५ विकल्प कह्या। एक-एक विकल्प करि इकवीस-इकवीस भांगा कीधे छते ९४५ भांगा हुवै।

हिवै असंख जीवां रा षट संयोगिक—

१२. षट संयोगिक नां इहां, छपन्न विकल्प करि अवदात कै।
तीनसौ बाणूं भांगा हुवै, इक-इक विकल्प करि सात-सात कै।।

१२. षट्कसंयोगे तु त्रीणि शतानि द्विनवत्यधिकानि ३९२,
(वृ० प० ४४९)

असंख्यात जीवां रा षट संजोगिक विकल्प ५६ जुदा-जुदा कहै छै—
१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, असंख तम
२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ धूम, असंख तम
३. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ३ धूम, असंख तम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ४ धूम, असंख तम
५. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ५ धूम, असंख तम
६. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ६ धूम, असंख तम
७. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ७ धूम, असंख तम
८. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ८ धूम, असंख तम
९. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ९ धूम, असंख तम
१०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १० धूम, असंख तम
११. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, संख धूम, असंख तम
१२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, असंख धूम, असंख तम
१३. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पंक, असंख धूम, असंख तम
१४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ३ पंक, असंख धूम, असंख तम
१५. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ४ पंक, असंख धूम, असंख तम
१६. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ५ पंक, असंख धूम, असंख तम
१७. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ६ पंक, असंख धूम, असंख तम
१८. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ७ पंक, असंख धूम, असंख तम
१९ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ८ पंक, असंख धूम, असंख तम
२०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ९ पंक, असंख धूम, असंख तम
२१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पंक, असंख धूम, असंख तम
२२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, संख पंक, असंख धूम, असंख तम
२३. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
२४. १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
२५. १ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
२६. १ रत्न, १ सक्कर, ४ वालु, असंख पंक, असंख धूम, असख तम
२७. १ रत्न, १ सक्कर, ५ वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
२८. १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
२९. १ रत्न, १ सक्कर, ७ वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
३०. १ रत्न, १ सक्कर, ८ वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
३१. १ रत्न, १ सक्कर, ९ वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
३२. १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
३३. १ रत्न, १ सक्कर, संख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
३४. १ रत्न, १ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
३५. १रत्न, २ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
३६. १ रत्न, ३ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
३७. १ रत्न, ४ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
३८. १ रत्न, ५ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
३९. १ रत्न, ६ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
४०. १ रत्न, ७ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
४१. १ रत्न, ८ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
४२. १ रत्न, ९ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
४३. १ रत्न, १० सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
४४. १ रत्न, संख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
४५. १ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
४६. २ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४७. ३ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
४८. ४ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
४९. ५ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
५०. ६ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
५१. ७ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
५२. ८ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
५३. ९ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
५४. १० रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
५५. संख रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम
५६. असंख रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम

एवं ५६ विकल्प कह्या । एक-एक विकल्प करि सात-सात भांगा कीधे छते ३९२ भांगा हुवै ।

हिवै असंख जीवां रा सप्त संयोगिक कहै छै—

१३. सप्तसंयोगिक नां इहां, सतसठ विकल्प करि अवदात कै ।
भांगा पिण सतसठ तसु, विकल्प जितरा भंग कहात कै ॥

१३. सप्तकसंयोगे पुनः सप्तषष्टिः, (वृ० प० ४४९)

हिवै असंख्यात जीवां रा सप्त संयोगिक विकल्प ६७, भांगा पिण ६७ ते कहै छै—

१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, असंख सप्तमीं
२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, २ तम, असंख सप्तमीं
३. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, ३ तम, असंख सप्तमीं
४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, ४ तम, असंख सप्तमीं
५. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम ५ तम, असंख सप्तमीं
६. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, ६ तम, असंख सप्तमीं
७. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, ७ तम, असंख सप्तमीं
८. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, ८ तम, असंख सप्तमीं
९. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, ९ तम, असंख सप्तमी
१०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, १० तम, असंख सप्तमी
११. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, संख तम, असंख सप्तमीं
१२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
१३. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
१४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ३ धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
१५. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ४ धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
१६. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ५ धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
१७. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ६ धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
१८. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ७ धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
१९. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ८ धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
२०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, ९ धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
२१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १० धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
२२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, संख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
२३. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
२४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
२५. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ३ पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ४ पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
२७. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ५ पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
२८. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ६ पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
२९. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु ७ पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमी
३०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ८ पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
३१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ९ पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
३२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
३३. १ रत्न, १सक्कर, १ वालु, संख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
३४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
३५. १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
३६. १ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
३७. १ रत्न, १ सक्कर, ४ वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
३८. १ रत्न, १ सक्कर, ५ वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
३९. १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
४०. १ रत्न, १ सक्कर, ७ वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
४१. १ रत्न, १ सक्कर, ८ वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
४२. १ रत्न, १ सक्कर, ९ वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
४३. १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
४४. १ रत्न, १ सक्कर, संख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
४५. १ रत्न, १ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
४६. १ रत्न, २ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
४७. १ रत्न, ३ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
४८. १ रत्न, ४ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
४९. १ रत्न, ५ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
५०. १ रत्न ६ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
५१. १ रत्न, ७ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
५२. १ रत्न, ८ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
५३. १ रत्न, ९ सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
५४. १ रत्न, १० सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं
५५. १ रत्न, संख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

५६. १ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं

५७. २ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं

५८. ३ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असख तम, असंख सप्तमीं

५९. ४ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं

६०. ५ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं

६१. ६ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं

६२. ७ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं

६३. ८ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असख पक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं

६४. ९ रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं

६५. १० रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं

६६. संख रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं

६७. असख रत्न, असंख सक्कर, असंख वालु, असंख पंक, असंख धूम, असंख तम, असंख सप्तमीं

एवं असंख्याता जीवां रा सप्त संजोगिक विकल्प ६७ भांगा ६७ कह्या।

दूहा

१४. हिवै प्रकारांतर वली, नरक-प्रवेसन न्हाल।
प्रश्न करै गंगेय मुनि, आखै वीर दयाल॥

१५. *उत्कर्ष हे प्रभु! नेरइया, उत्कृष्ट पद करिनैं उपजेहू कै।
तास प्रश्न पूछे छतें, श्री जिन भाखै सुण गंगेय कै॥

१६. सर्व प्रथम हुवै रत्न में, इक संजोगे इक भंग एहू कै।
जे उत्कृष्ट पदे करी, ते सहु रत्नप्रभा उपजेहू कै॥

सोरठा

१७. रत्ने आवणहार, जीव बहु छै ते भणी।
अथवा रत्न मझार, नारकि पिण बहुला अछै॥

१८. इकसंयोगिक एक, भांगो इहविध आखियो।
द्विकसंजोगिक पेख, षट भंगा कहियै हिवै॥

हिवै द्विक संयोगिक ६ भांगा कहै छै—

१९. तथा रत्न वलि सक्कर में, अथवा रत्न वालु में होय कै।
तथा रत्न वलि पंक में, अथवा रत्न धूम वलि जोय कै॥

*लय : हूं बलिहारी हो जादवां!

१४. अथ प्रकारान्तरेण नारकप्रवेशनकमेवाह—
(वृ० प० ४४९)

१५,१६. उक्कोसेणं भंते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा?—पुच्छा।
गंगेया! सव्वे वि ताव रयणप्पभाए होज्जा,
'उक्कोसेण' मित्यादि, ……
उत्कृष्टपदिनस्ते सर्वेऽपि रत्नप्रभायां भवेयुः
(वृ० प० ४५०)

१७. तद्गामिनां तत्स्थानानां च बहुत्वात्,
(वृ० प० ४५१)

१८. इह प्रक्रमे द्विकयोगे षड् भङ्गकाः (वृ० प० ४५१)

१९,२०. अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य होज्जा,
अहवा रयणप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा
जाव अहवा रयणप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०. तथा रत्न वलि तम विषे,[5] तथा रत्न सप्तमीं मांहि कै[6]।
उत्कृष्ट पद द्विकयोगिका, ए षट भांगा दाख्या ताहि कै ।।

वा०—हिवै उत्कृष्ट पदे नरक में उपजै तेहनां त्रिकसंयोगिक १५ भांगा कहै छै—रत्न सक्कर थी ५, रत्न वालु थी ४, रत्न पंक थी ३, रत्न धूम थी २ रत्न तम थी १—एवं १५ भांगा रत्न थकीज हुवै। उत्कृष्ट पदे नरक में ऊपजै तेह नरक नैं विषे ऊपजै तिवारे रत्नप्रभा में तो ऊपजेईज, और नरक में कोइ में ऊपजै कोइ में नही पिण ऊपजै, ते भणी रत्नप्रभा सूं ईज १५ हुवै। तिहां प्रथम रत्न सक्कर सूं ५ भांगा कहै छै—

वा०—त्रिकयोगे पञ्चदश (वृ० प० ४५१)

२१. तथा रत्न सक्कर वालु विषे[1], अथवा रत्न सक्कर पंक होय कै[2]।
अथवा रत्न सक्कर धूम में[3], अथवा रत्न सक्कर तम जोय कै[4] ।।
२२. तथा रत्न सक्कर नैं सप्तमीं[5], रत्न सक्कर थी ए भंग पंच कै।
हिवै रत्न अनैं वालुक थकी, कहियै चिउं भांगा नों संच कै ।।

२१,२२. अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा, एवं जाव अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा,

२३. अथवा रत्न वालु पंक में, अथवा रत्न वालु धूम मांय कै।
अथवा रत्न वालु तम विषे, अथवा रत्न वालु सप्तमीं पाय कै ।।

२३. अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा,

२४. अथवा रत्न पंक धूम में, अथवा रत्न पंक तम चीन कै।
अथवा रत्न पंक सप्तमीं, रत्न पंक थी ए भंग तीन कै ।।
२५. अथवा रत्न धूम तम विषे, तथा रत्न धूम नैं सप्तमीं होय कै।
रत्न नैं धूमप्रभा थकी, एह कह्या छै भांगा दोय कै ।।
२६. अथवा रत्न तम सप्तमीं, ए रत्न थकी भंग पनरै जाण कै।
उत्कृष्ट नरके ऊपजै, निश्चै रत्न में उपजै आण कै ।।

२४-२६. अहवा रयणप्पभाए पंकप्पभाए धूमाए होज्जा, एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा तिण्हं तियासंजोगो भणिओ तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयणप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा।

वा०—हिवै उत्कृष्ट पदे नरक में उपजै तेहनां चउक्क संयोगिक २० भांगा कहै छै—तिके २० भांगा रत्न सूं ईज हुवै, रत्न में तो अवश्य उपजैइज। तिणमें रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालुक थी ६, रत्न पंक थकी ३, रत्न धूम थी १—एवं २०। तिहां रत्न सक्कर थी १० ते किसा? रत्न सक्कर वालुक थी ४, रत्न सक्कर पंक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी २, रत्न सक्कर तम थी १—एवं रत्न सक्कर थी १०, ते कहै छै—

वा०—चतुष्कसंयोगे विंशतिः (वृ० प० ४५१)

२७. तथा रत्न सक्कर वालु पंक में,
तथा रत्न सक्कर वालु धूमे जंत कै।
तथा रत्न सक्कर वालु तम विषे,
तथा रत्न सक्कर वालु सप्तमीं हुंत कै ।।

२७. अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा,

२८. तथा रत्न सक्कर पंक धूम में,
तथा रत्न सक्कर पंक तम लीन कै।
तथा रत्न सक्कर पंक सप्तमीं,
ए रत्न सक्कर नैं पंक थी तीन कै ।।
२९. तथा रत्न सक्कर धूम तम विषे,
तथा रत्न सक्कर धूम सप्तमी होय कै।
रत्न सक्कर नैं धूम थी, आख्या छै ए भंगा दोय कै ।।
३०. तथा रत्न सक्कर तम सप्तमीं, ए रत्न सक्कर थी दश भंग देख कै।
हिवै रत्न अनैं वालुक थकी, भांगा षट कहियै सुविशेख कै ।।

२८-३६. अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा चउण्हं चउक्कगसंजोगो भणितो तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयणप्पभाए धूमप्पभाए तमाए अहेसत्तमाए य होज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा०—हिवै रत्न बालु थी षट भांगा ते किसा ? रत्न वालु पंक थी ३, रत्न वालु धूम थी २, रत्न वालु तम थी १ । तिहां प्रथम रत्न वालुक पंक थी ३ भांगा कहै छै—

३१. तथा रत्न वालु पंक धूम में,
तथा रत्न वालु पंक तम में चीन कै ।
तथा रत्न वालु पंक सप्तमीं, ए रत्न वालुक नैं पंक थी तीन कै ।।
३२. तथा रत्न वालु धूम तम विषे,
तथा रत्न वालु धूम सप्तमीं होय कै ।
रत्न वालुक नें धूम थी, भांगा एह कह्या छै दोय कै ।।
३३. तथा रत्न वालुक तम सप्तमीं, रत्न वालुक थी षट भंग एह कै ।
रत्न अनैं वलि पंक थी, तीन भांगा कहियै छै जेह कै ।।

वा०—हिवैं रत्न पंक थी ३ भांगा ते किसा ? रत्न पंक धूम थी २, रत्न पंक तम थी— १ एवं ३ ।

३४. तथा रत्न पंक धूम तम विषे,
तथा रत्न पंक धूम सप्तमीं होय कै ।
रत्न पंक नैं धूम थी, भांगा एह कह्या छै दोय कै ।।
३५. तथा रत्न पंक तम सप्तमीं, रत्न पंक थी त्रिण भंग एह कै ।
रत्न धूम थी भंग इक, सांभलज्यो हिव कहियै जेह कै ।।
३६. तथा रत्न धूम तम सप्तमीं, रत्नप्रभा थी ए भंग वीस कै ।
दाख्या चउक्कसंयोगिका, उत्कृष्ट नरक प्रवेशन दीस कै ।।

वा०—हिवै उत्कृष्ट पदे नरक में ऊाजै तेहनां पंचसंयोगिक १५ भांगा रत्न थी हुवै, ते कहै छै —रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालुक थी ४, रत्न पंक थी १—एवं १५ । तिहां रत्न सक्कर थी १० ते किसा ? रत्न सक्कर वालु थी ६, रत्न सक्कर पंक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी १—एवं १० । तिहां रत्न सक्कर वालु थी ६ ते किसा ? रत्न सक्कर वालु पंक थी ३, रत्न सक्कर वालु धूम थी २, रत्न सक्कर वालु तम थी १—एवं ६ । तिहां रत्न सक्कर वालु पंक थी ३ भांगा प्रथम कहै छै—

वा०—पन्चकसंयोगे पन्चदश (वृ० प० ४५१)

३७. *तथा रत्न सक्कर वालु पंके, धूम मांहि पहिछाणियै[1] ।
तथा रत्न सक्कर वालु पंके, तमा छठी जाणियै[2] ।।

३८. तथा रत्न सक्कर वालु पंके, सप्तमींज लहीजियै[3] ।
रत्न सक्कर वालु पंक थी, भंग त्रिण इम कीजियै ।।
३९. तथा रत्न सक्कर वालु धूमा, तमा थी सुविलेखियै[1] ।
तथा रत्न सक्कर वालु धूमा, सप्तमीं थी लेखियै[2] ।।
४०. तथा रत्न सक्कर वालुका तम, सप्तमीं नारक लही ।
रत्न सक्कर वालुका थी, एह षट भंगा सही ।।

वा०—हिवै रत्न सक्कर पंक थी ३ भांगा ते किसा ? रत्न सक्कर पंक धूम थी २ अनें रत्न सक्कर पंक तम थी १—एवं ३ ।

४१. तथा रत्न सक्कर पंक धूमा, तम विषे अवधारियै ।
तथा रत्न सक्कर पंक धूमा, सप्तमीं सुविचारियै ।।

३७. अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव पंकप्पभाए तमाए य होज्जा,
३८. अहवा रयणप्पभाए जाव पंकप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा,
३९-४७. अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए य होज्जा, एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा पंचण्हं पंचगसंजोगो तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयणप्पभाए पंकप्पभाए जाव अहेसत्तमाए य होज्जा,

* लय : पूज मोटा भांजै तोटा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४२. तथा रत्न सक्कर पंक नैं तम, सप्तमीं में आखिये।
रत्न सक्कर पंक थी ए तीन भांगा दाखिये।
४३. तथा रत्न सक्कर धूम नैं तम, सप्तमीं नारकि मझै।
रत्न सक्कर थकी ए दश भंग एम विचारजै।।

वा०—हिवै रत्न वालु थी ४ भांगा ते किसा ? रत्न वालु पंक थी ३, रत्न वालु धूम थी १—एवं ४। तिहां रत्न वालु पंक थी ३, ते किसा ? रत्न वालु पंक धूम थी २, रत्न वालु पंक तम थी १ एवं ३।

४४. तथा रत्न वालु पंक धूमा, तमा पृथ्वी में हुवै।
तथा रत्न वालु पंक धूमा, सप्तमीं में अनुभवै।।
४५. तथा रत्न वालु पंक नैं तम, सप्तमीं में जाणियै।
रत्न वालु पंक थी इम, तीन भांगा आणियै।।
४६. तथा रत्न वालु धूम नैं तम, सप्तमीं पृथ्वी मही।
रत्न वालु थकी भांगा, च्यार ए आख्या सही।।
४७. तथा रत्न पंके धूम तमा, सप्तमीं दुख अनुभवै।
रत्न सूं इज भंग पनर ए, पंच संयोगिक हुवै।।

हिवै उत्कृष्ट पदे नरक में ऊपजै तेहनां षट संयोगिक ६ भांगा कहै छै—

४८. तथा रत्न सक्कर वालुका पंक, धूम नैं तमा मझै।
तथा रत्न सक्कर वालुका पंक, धूम नैं सप्तमीं सझै।।

४९. तथा रत्न सक्कर वालुका पंक, तम सप्तमीं अनुभवै।
तथा रत्न सक्कर वालुका नैं, धूम तम सप्तमीं हुवै।।

५०. तथा रत्न सक्कर पंक धूम तम, सप्तमीं में ऊपजै।
तथा रत्न वालु पंक धूम तम, सप्तमीं माहै लजै।।

षड्योगे षट (वृ० प० ४५१)

४८. अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव धूमप्पभाए तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव धूमप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा।
४९. अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव पंकप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए अहेसत्तमाए य होज्जा,
५०. अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पंकप्पभाए जाव अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए जाव अहेसत्तमाए य होज्जा,

५१. भंग षट ए रत्न सूं इज, षट-संयोगिक जाणियै।
उत्कृष्ट पद ते भणी सप्तम भंग रत्न विण नाणियै।।

हिवै उत्कृष्ट पदे नरक नैं विषे ऊपजै तेहनों सप्त संयोगिक १ भांगो कहै छै—

५२. तथा रत्न सक्कर वालुका पंक, धूम तम सप्तमीं लहै।
सप्तयोगिक भंग इक ए, वीर जिनवर इम कहै।।
५३. हिव रत्नप्रभादिक विषेइज, नारकी नों जाणियै।
अल्पबहुत्वादिक निरूपण अर्थ प्रश्न वखाणियै।।

५४. *ए प्रभु ! रत्नप्रभा पृथ्वी, नरक प्रवेशन नो कहेश कै।
सक्कर जाव इम सप्तमीं, कुण-कुण अल्प बहु तुल्य विशेष कै।।

५५. जिन कहै गंगेया ! सुणे, सर्व ते थोड़ा प्रवेश करंत कै।
नरक सप्तमीं नेरइया, शेष अपेक्षा तिहां अल्प जंत कै।।

सप्तकयोगे त्वेक इति। (वृ० प० ४५१)

५२. अहवा रयणप्पभाए य सक्करभाए य जाव अहेसत्तमाए य होज्जा। (श० ९।१००)
५३. अथ रत्नप्रभादिष्वेव नारकप्रवेशनकस्याल्पत्वादिनिरूपणायाह— (वृ० प० ४५१)

५४. एयस्स णं भंते ! रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणगस्स सक्करप्पभापुढविनेरइयपवेसणगस्स जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणगस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
५५. गंगेया ! सव्वत्थोवे अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणए, तद्गामिनां शेषापेक्षया स्तोकत्वात्, (वृ० प० ४५१)

---

*हूं बलिहारी हो जादवां !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५६. असंख्यात गुणा छठी विषे, जावणहार तिहां असंखेज कै।
जावत रत्नप्रभा विषे, असंख्यात गुणां प्रतिलोम[1] कहेज कै॥
५७. शत नवम बतीसम देश ए, एकसौ नैं नेउमीं ढाल कै।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी,
'जय-जश' संपति हरष विशाल कै॥

५६. तमापुढविनेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे, एवं पडिलोमगं जाव रयणप्पभापुढवि नेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे। (श० ९।१०१)

ढाल : १९१

दूहा

१. तिर्यंच प्रवेशन हे प्रभु! कितै प्रकार कथिंदि?
जिन कहै पंच प्रकार ह्वै, एगिंदि जाव पंचिंदि॥

१. तिरिक्खजोणियपवेसणए णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते?
गंगेया! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए। (श० ९।१०२)

२. एक जीव तिर्यंच में, करै प्रवेशन ताहि।
स्यूं एकेंद्री में हुवै, जाव पचेंद्री मांहि?

२. एगे भंते! तिरिक्खजोणिए तिरिक्खजोणियपवेसणएणं पविसमाणे किं एगिंदिएसु होज्जा जाव पंचिंदिएसु होज्जा?

३. जिन कहै गंगेया! सुणे, एकेंद्री में होय।
जाव तथा पंचेंद्रि में, ऊपजवो अवलोय॥

३. गंगेया! एगिंदिएसु वा होज्जा जाव पंचिंदिएसु वा होज्जा। (श० ९।१०३)

४. इहां कह्यो एकेंद्रि इक, जीव ऊपजै देख।
ते देवादिक थी हुवै, तेह अपेक्षा एक॥
५. बीजूं एकेंद्रिय विषे, समय-समय अवलोय।
जीव अनंता ऊपजै, सजातिया थी जोय॥
६. सजातीया थी नीकली, सजातीया में सोय।
उपजै तेह तणो इहां, प्रश्न करचो नहिं कोय॥
७. विजातीया थी नीकली, विजातीया में होय।
तेह प्रवेशन छैज तसु, प्रश्न कियो है सोय॥

४-७. तत्र च यद्यप्येकेन्द्रियष्वेकः कदाचिदप्युत्पद्यमानो न लभ्यतेऽनन्तानामेव तत्र प्रतिसमयमुत्पत्तेस्तथाऽपि देवादिभ्य उद्वृत्य यस्तत्रोत्पद्यते तदपेक्षयैकोऽपि लभ्यते, एतदेव च प्रवेशनकमुच्यते यद् विजातीयेभ्य आगत्य विजातीयेषु प्रविशति सजातीयस्तु सजातीयेषु प्रविष्ट एवेति किं तत्र प्रवेशनकमिति, (वृ० प० ४५१)

८. एक जीव नां आखिया, एकेंद्रियादिक जाण।
पंच स्थान तिण कारणे, पंच भंग पहिछाण॥

८. तत्र चैकस्य क्रमेणैकेन्द्रियादिषु पञ्चसु पदेषूत्पादे पञ्च विकल्पाः, (वृ० प० ४५१)

एक जीव तिर्यंच में ऊपजै ते इकसंजोगिया नों विकल्प १ भांगा ५—
१. एक जीव एकेंद्रि में ऊपजै
२. तथा बेंद्रिय में ऊपजै
३. तथा तेंद्रिय में ऊपजै
४. तथा चउरिंद्रिय में ऊपजै
५. तथा पंचेंद्रिय में ऊपजै

---

१. प्रतिलोम कहितां—उलटा करतां छठी थी पांचमी नां असंख्यातगुणां। तेहथी चोथी नां असंख्यातगुणां। तेहथी तीजी नां असंख्यातगुणां। तेहथी बीजी नां असंख्यातगुणां। तेहथी रत्नप्रभा पृथ्वी नां नारक जीव नरक नैं विषे असंख्यातगुणां ऊपजै।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिवै दोय जीव तिर्यंच में ऊपजै ते प्रश्न करै छै—

९. दोय जीव तिर्यंच में, उपजै तेहनों जाण।
प्रश्न करै गंगेय मुनि, भाखै तब जगभाण।।

९. दो भंते ! तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियपवेसण-एणं—पुच्छा।

१०. इकसंयोगिक तेहनों, विकल्प एक विचार।
भांगा तेहनां पंच है, इहविध करिवा सार।

१० द्वयोरप्येकैकस्मिन्नुत्पादे पञ्चैव, (वृ० प० ४५१)

११. बिहुं एकेंद्रिय नैं विषे, तथा बेंद्री मांय।
तथा तेंद्री में बिहुं, जीव ऊपजै आय।।

१२. तथा चउरिंद्री में बिहुं, तथा पंचेंद्री मांय।
इकसंयोगिक इह विधे, पंच भंग कहिवाय।।

११,१२. गंगेया ! एगिंदिएसु वा होज्जा जाव पंचिंदिएसु वा होज्जा।

दो जीव तिर्यंच में ऊपजै ते इकसंजोगिया नों विकल्प १ भांगा ५—

१-५ दो जीव एकेंद्री में ऊपजै जाव पंचेंद्री में ऊपजै।

१३. तथा एक एकेंद्रिय, एक बेंद्रिय होय।
नरक प्रवेशन जेम ए, तिरिक्ख-प्रवेशन जोय।।

१३. अहवा एगे एगिंदिएसु होज्जा एगे बेइंदिएसु होज्जा, एवं जहा नेरइयपवेसणए तहा तिरिक्खजोणियपवेसणए वि भाणियव्वे।

१४. तिहां सात पृथ्वी विषे, इहां पंच है स्थान।
जाव असंख्याता लगै, कहिवो सर्व पिछान।।

१४. परं तत्र सप्तसु पृथ्वीष्वेकादयो नारका उत्पादिताः तिर्यञ्चस्तु तथैव पञ्चसु स्थानेषूत्पादनीयाः,
(वृ० प० ४५१)
जाव असंखेज्जा। (श० ९।१०४)

१५. भंग हुवै नानापणैं, तत्त्व अभियुक्तेन।
पूर्व उक्त न्याये करी, करिवा बुद्धि न्यायेन।।

१५. ततो विकल्पनानात्वं भवति, तच्चाभियुक्तेन पूर्वोक्त-न्यायेन स्वयमवगन्तव्यमिति, (वृ० प० ४५१)

१६. द्विकसंयोगिक एहनां, विकल्प तेहनों एक।
दश भांगा भणिवा तसु, तसु विधि एम संपेख।।

१६. द्विकयोगे तु दश, (वृ० प० ४५१)

*सुण गंगेया रे ! भाखै जिन गुणगेहा।। [ध्रुपदं]

१७. अथवा एक एकेंद्री मांहे, एक बेंद्रिय होय।
अथवा एक एकेंद्री में ऊपजै, एक तेंद्री में जोय।।

१८. अथवा एक एकेंद्रिय मांहे, एक चउरिंद्रिय मांय।
अथवा एक एकेंद्रिय मांहे, एक पंचेंद्रिय थाय।।

१९. अथवा एक बेइंद्री में ऊपजै, एक तेइंद्रि में होय।
अथवा एक बेइंद्री में ऊपजै, एक चउरिंद्रि में जोय।।

२०. अथवा एक बेइंद्री में ऊपजै, एक पंचेंद्रिय थाय।
बे इंद्रिय थी ए त्रिण भंगा, भणवा जिन वच न्याय।।

२१. अथवा एक तेंद्रिय में ऊपजै, एक चउरिंद्री हुंत।
अथवा एक तेंद्रिय में ऊपजै, एक पंचेंद्री जंत।।

२२. अथवा एक चउरिंद्री में ऊपजै, एक पंचेंद्रिय थाय।
द्विकसंयोगिक ए दश भंगा, तत्व युक्ति करि थाय।।

हिवै तीन जीव तिर्यंच में ऊपजै तेहनां इकसंयोगिक भांगा ५—

१-५. तीन जीव एकेंद्री में ऊपजै जाव तथा पंचेंद्री में ऊपजै।

द्विक संजोगिक विकल्प २ भांगा २०, ते दोय विकल्प करि कहै छै—

१. एक जीव एकेंद्री में ऊपजै दोय जीव बेइंद्रिय में ऊपजै

२. दोय जीव एकेंद्री में उपजै एक जीव बेइंद्रिय में ऊपजै

*लय : रूडे चन्द नीहालैं रे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ए बे विकल्प करि पूर्वे १० भांगा कह्या, ते कीधे छते २० भांगा हुवै।

हिवै तीन जीव नां त्रिकसंजोगिक नो विकल्प १ भांगा १०—

१. १ एकेंद्री १ बेंद्रि १ तेंद्रिय में

२. १ एकेंद्री १ बेंद्रि १ चउरिंद्रिय

३. १ एकेंद्री १ बेंद्रि १ पंचेंद्रिय में

४. १ एकेंद्री १ तेंद्रि १ चउरिंद्रि में

५. १ एकेंद्री १ तेंद्रि १ पंचेंद्री में

६. १ एकेंद्री १ चउरिंद्री १ पंचेंद्री में

७. १ बेंद्रि १ तेंद्रि १ चउरिंद्री में

८. १ बेंद्रि १ तेंद्रि १ पंचेंद्री में

९. १ बेंद्रि १ चउरिंद्रिय १ पंचेंद्री में

१०. १ तेंद्रि १ चउरिंद्री १ पंचेंद्री में।

हिवै च्यार जीव तिर्यंच में जाय तेहनां इकसंयोगिक विकल्प १ भांगा ५ पूर्व कह्या तिम करिवा।

चउक्कसंजोगिक नों विकल्प १ भांगा ५, ते कहै छै—

१. १ एकेंद्री, १ बेंद्रि, १ तेंद्रि, १ चउरिंद्रि

२. १ एकेंद्री, १ बेंद्रि, १ तेंद्रि, १ पंचेंद्री

३. १ एकेंद्री, १ बेंद्रि, १ चउरिंद्रि, १ पंचेंद्री

४. १ एकेंद्री, १ तेंद्रि, १ चउरिंद्रि, १ पंचेंद्री

५. १ बेंद्री, १ तेंद्रि, १ चउरिंद्रि, १ पंचेंद्री

हिवै पांच जीव एकेंद्रिय में ऊपजै तेहनां इकसंयोगिक विकल्प १ भांगा ५

द्विकसंयोगिक नां विकल्प ४ भांगा ४०

त्रिकसंयोगिक नां विकल्प ६ भांगा ६०

चउक्कसंयोगिक नां विकल्प ४ भांगा ३०

पंचसंयोगिक नो विकल्प १ भांगो १

इम छ जीव प्रमुख असंख्याता जीव नां पूर्वे कह्या तिण रीते विकल्प करि जेतला भांगा हुवै तेतला भणिवा।

तीन जीव नां द्विक संयोगिक विकल्प २—१२,२१

च्यार जीव नां द्विक संयोगिक विकल्प ३—१३,२२,३१

त्रिक संयोगिक विकल्प ३—११२,१२१,२११

पंच जीव नां द्विक संयोगिक विकल्प ४—१४,२३,३२,४१

त्रिक संयोगिक विकल्प ६—११३,१२२,२१२,१३१,२२१,३११

चउक्क संयोगिक विकल्प ४—१११२,११२१,१२११,२१११

२३. तीन आदि जीवां नां भांगा, जाव असंखिज्ज जीवा।
ते प्रवेशन नो नारकि जिम, नाना भंग कहीवा।।

२४. उत्कृष्ट पदे तिर्यंच में उपजै, तेह प्रश्न हिव कीधूं।
जिन कहै सर्व एकेंद्रि में उपजै, इकयोगिक ए लीधूं।।

२४. उक्कोसा भंते ! तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियपवेसणएणं—पुच्छा।
गंगेया ! सव्वे वि ताव एगिदिएसु होज्जा,
एकेन्द्रियाणामतिबहूनामनुसमयमुत्पादात्
(वृ० प० ४५१)

सोरठा

२५. एकेंद्रिय बहु जाण, समय समय उत्पत्ति थकी।
उत्कृष्ट पदे पहिछाण, सहु एकेंद्री में हुवै।।

*लय : रूड़े चन्द नीहालै रे

२६. *अथवा एकेंद्री में ऊपजै, वलि बेइंद्री में होय।
इम जिम नरक विषे गिणिया, तिम तिर्यंच में पिण जोय।।

२७. एकेंद्रिय नैं अणमूकंते, द्विक त्रिक चउक्क संयोग।
पंच संयोगिक भांगा गिणवा, वारू दे उपयोग।।

सोरठा

२८. द्विकयोगिक चिउं धार, त्रिकसंयोगिक भंग षट।
चउक्कसंयोगिक च्यार, पंचसंयोगिक भंग इक।।

उत्कृष्ट पदे तिर्यंच में ऊपजै तेहनां द्विक, त्रिक, चउक्क, पंचयोगिक कहै छै—द्विकसंयोगिक ४ भांगा कहै छै—

१. अथवा एकेंद्रिय में ऊपजै बेइंद्रिय में ऊपजै
२. अथवा एकेंद्रिय में ऊपजै तेइंद्रिय में ऊपजै
३. अथवा एकेंद्रिय में ऊपजै चउरिंद्रिय में ऊपजै।
४. अथवा एकेंद्रिय में ऊपजै पंचेंद्रिय में ऊपजै।

त्रिकसंयोगिक ६ भांगा कहै छै—

१. अथवा एकेंद्री में बेइंद्रिय में तेइंद्रिय में ऊपजै।
२. अथवा एकेंद्रिय में बेइंद्रिय में चउरिंद्रिय में ऊपजै।
३. अथवा एकेंद्रिय में बेइंद्रिय में पंचेंद्रिय में ऊपजै।
४. अथवा एकेंद्रिय में तेइंद्रिय में चउरिंद्रिय में ऊपजै।
५. अथवा एकेंद्रिय में तेइंद्रिय में पंचेंद्रिय में ऊपजै।
६. अथवा एकेंद्रिय में चउरिंद्रिय में पंचेंद्रिय में ऊपजै।

हिवै चउक्कसंयोगिक ४ भांगा कहै छै—

१. तथा एकेंद्रिय में बेइंद्रिय में तेइंद्रिय में चउरिंद्रिय में।
२. तथा एकेंद्रिय में बेइंद्रिय में तेइंद्रिय में पंचेंद्रिय में।
३. तथा एकेंद्रिय में बेइंद्रिय में चउरिंद्रिय में पंचेंद्रिय में।
४. तथा एकेंद्रिय में तेइंद्रिय में चउरिंद्रिय में पंचेंद्रिय में।

हिवै पंचसंयोगिक १ भांगो कहै छै—

१. तथा एकेंद्रिय में, बेइंद्रिय में, तेइंद्रिय में, चउरिंद्रिय में, पंचेंद्रिय में ऊपजै।

इकसंयोगिक-१
द्विकसंयोगिक-४
त्रिकसंयोगिक-६
चउक्कसंयोगिक-४
पंचसंयोगिक-१
—
एवं—१६

हिवै एकेंद्रियादिक प्रवेशन नों अल्प-बहुत्व-तुल्य-विशेषाधिकपणां नुं प्रवेशन कहै छै—

२९. *हे प्रभु! एकेंद्रिय प्रवेशन, जाव पंचेंद्री तिर्यंच।
तेह प्रवेशन नों कुण कुण थो, जाव विशेष सुसंच?

*लय : रूड़े चन्द नीहालै रे

२६. अहवा एगिंदिएसु वा बेइंदिएसु वा होज्जा। एवं जहा नेरइया चारिया तहा तिरिक्खजोणिया वि चारेयव्वा।

२७. एगिंदिया अमुयंतेसु दुयासंजोगो, तियासंजोगो, चउक्कसंजोगो, पंचसंजोगो उवजुंजिऊण भाणियव्वो······ (श० ९।१०५)

२८. इह प्रक्रमे द्विकसंयोगश्चतुर्द्धा त्रिकसंयोगः षोढा चतुष्कसंयोगश्चतुर्द्धा पञ्चकसंयोगस्त्वेक एवेति। (वृ० प० ४५१)

२९. एयस्स णं भंते! एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणगस्स जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा? बहुया वा? तुल्ला वा? विसेसाहिया वा?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३०. श्री जिन भाखै सर्व थी थोड़ा, पंचेंद्रिय तिर्यंच।
तेह विषेज प्रवेशन उत्पत्ति, तास न्याय इम संच।।

३०. गंगेया! सव्वथोवे पंचिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए,

सोरठा

३१. जीव पंचेंद्रिय जाण, थोड़ा छै ते कारणे।
अल्प कह्या जगभाण, पंचेंद्रिय तिर्यंच ए।।

३१. 'सव्वथोवा पंचिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए' त्ति पञ्चेन्द्रियजीवानां स्तोकत्वादिति,
(वृ० प० ४५१,४५२)

३२. *चउरिंद्रिय तिर्यंच प्रवेशन, विशेष अधिक विचारी।
तिरि पंचेंद्रिय थी चउरिंद्रिय, विशेषाधिक उचारी।।

३२. चउरिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए,

सोरठा

३३. तिरि-पंचेंद्रिय थीज, चउरिंद्रिय विसेसाहिया।
ते माटैज कहीज, प्रवेशन पिण विशेषाधिक।।

३४. *तेइंद्रिय तिर्यंच प्रवेशन, विशेष अधिक कहेस।
बेइंद्रिय विशेषाधिक तेहथी, विशेष एकेंद्री प्रवेश।।

३४. तेइंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए, बेइंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए, एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए। (श० ९।१०६)

३५. मनुष्य प्रवेशन कतिविध हे प्रभु! जिन कहै दोय प्रकार।
संमुर्च्छिम मनुष्य प्रवेशन, गर्भेज मांहै विचार।।

३५. मणुस्सपवेसणए णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते?
गंगेया! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा - संमुच्छिममणुस्सपवेसणए, गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणए य।
(श० ९।१०७)

३६. एक मनुष्य विषे हे प्रभुजी! मनुष्य प्रवेशन करतो।
संमुर्च्छिम सूं मनुष्य विषे ह्वै, कै गर्भेज संचरतो?

३६. एगे भंते! मणुस्से मणुस्सपवेसणएणं पविसमाणे किं संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा? गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा?

३७. जिन कहै संमुर्च्छिम मनुष्य विषे ह्वै, तथा गर्भेज में होय।
इक संयोगिक ए बे भांगा, एक जीव नां जोय।।

३७. गंगेया! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा। (श० ९।१०८)

हिवै दोय जीव मनुष्य में ऊपजै तेहनों प्रश्न

३८. दोय मनुष्य प्रवेशन पुच्छा, जिन कहै सुण गंगेय।
बेहुं संमुर्च्छिम तथा गर्भेज में, इक योगिक भंग बेय।।

३८. दो भंते! मणुस्सा—पुच्छा।
गंगेया! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा।

३९. अथवा एक संमुर्च्छिम मनुष्ये, इक गर्भेज में होय।
इम अनुक्रम जिम नरक प्रवेशन, तेम मनुष्य पिण जोय।।

३९. अहवा एगे संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा एगे गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा, एवं एएणं कमेणं जहा नेरइयपवेसणए तहा मणुस्सपवेसणए वि भाणियव्वे,

४०. यावत दशही प्रवेशन भांगा, पूर्वली पर भणवा।
जीव थकी इक-इक ऊणा जे विकल्प करि भंग थुणवा।।

४०. जाव दस। (श० ९।१०९)

मनुष्य में ऊपजै तेहनां द्विकसंजोगिक नां विकल्प और भांगा—दोय जीव मनुष्य में ऊपजै तेहनो विकल्प एक, भांगो एक कहै छै—

१. १ संमुर्च्छिम मनुष्य में, १ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै।

तीन जीव मनुष्य में ऊपजै तेहनां विकल्प २, भांगा २

१. १ संमुर्च्छिम मनुष्य में, २ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै।
२. २ संमुर्च्छिम मनुष्य में, १ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै।

च्यार जीव मनुष्य में ऊपजै तेहनां विकल्प ३, भांगा ३

१. १ संमुर्च्छिम मनुष्य में, ३ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै।
२. २ संमुर्च्छिम मनुष्य में, २ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै।

*लय : रूड़े चन्द नीहालै रे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. ३ संमुच्छिम मनुष्य में, १ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।

पांच जीव मनुष्य में ऊपजै तेहनां विकल्प ४, भांगा ४

१. १ समुच्छिम मनुष्य में, ४ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
२. २ संमुच्छिम मनुष्य में, ३ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
३. ३ संमुच्छिम मनुष्य में, २ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
४. ४ संमुच्छिम मनुष्य में, १ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।

छ जीव मनुष्य में ऊपजै तेहनां विकल्प ५, भांगा ५

१. १ संमुच्छिम मनुष्य में, ५ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
२. २ संमुच्छिम मनुष्य में, ४ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
३. ३ संमुच्छिम मनुष्य में, ३ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
४. ४ संमुच्छिम मनुष्य में, २ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
५. ५ संमुच्छिम मनुष्य में, १ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।

सात जीव मनुष्य में ऊपजै तेहनां विकल्प ६, भांगा ६

१. १ संमुच्छिम मनुष्य में, ६ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
२. २ संमुच्छिम मनुष्य में, ५ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
३. ३ संमुच्छिम मनुष्य में, ४ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
४. ४ संमुच्छिम मनुष्य में ३ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
५. ५ संमुच्छिम मनुष्य में २ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
६. ६ समुच्छिम मनुष्य में १ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।

अष्ट जीव मनुष्य में ऊपजै तेहनां विकल्प ७, भांगा ७

१ १ संमुच्छिम मनुष्य में, ७ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
२. २ संमुच्छिम मनुष्य में, ६ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
३. ३ संमुच्छिम मनुष्य में, ५ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
४. ४ संमुच्छिम मनुष्य में ४ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
५. ५ संमुच्छिम मनुष्य में, ३ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
६. ६ संमुच्छिम मनुष्य में, २ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
७. ७ संमुच्छिम मनुष्य में, १ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।

नव जीव मनुष्य में ऊपजै तेहनां विकल्प ८, भांगा ८

१. १ संमुच्छिम मनुष्य में, ८ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
२. २ संमुच्छिम मनुष्य में ७ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
३. ३ संमुच्छिम मनुष्य में ६ गर्भेज मनुष्य में उपजै ।
४. ४ संमुच्छिम मनुष्य में ५ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
५. ५ संमुच्छिम मनुष्य में, ४ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
६. ६ संमुच्छिम मनुष्य में, ३ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
७. ७ संमुच्छिम मनुष्य में, २ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
८. ८ संमुच्छिम मनुष्य में, १ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।

दश जीव मनुष्य में ऊपजै तेहनां विकल्प ९, भांगा ९

१. १ संमुच्छिम मनुष्य में, ९ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
२. २ संमुच्छिम मनुष्य में, ८ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
३. ३ संमुच्छिम मनुष्य में, ७ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
४. ४ संमुच्छिम मनुष्य में, ६ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
५. ५ संमुच्छिम मनुष्य में, ५ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. ६ संमुच्छिम मनुष्य में, ४ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
७. ७ संमुच्छिम मनुष्य में, ३ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
८. ८ संमुच्छिम मनुष्य में, २ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
९. ९ संमुच्छिम मनुष्य में, १ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।

हिवै संख्यात जीव मनुष्य में ऊपजै तेहनां ११ विकल्प करि ११ भांगा कहै छै—

४१. संखेज मनुष्य प्रवेशन पूछा, जिन कहै सुण गंगेय !
संमुच्छिम अथवा गर्भज में, इक योगिक भंग बेय ।।

४१. संखेज्जा भंते ! मणुस्सा--पुच्छा ।
गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा ।

हिवै संख्यात जीवां रा द्विकसंजोगिक १ भांगो हुवै ते ११ विकल्प करि ११ भांगा कहै है—

४२. अथवा एक संमुच्छिम मनुष्ये, संख्याता गर्भेज ।
अथवा दोय संमुच्छिम मनुष्ये, गर्भिज में संखेज ।।

४२. अहवा एगे संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा, अहवा दो संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा,

४३. अथवा तीन संमुच्छिम मनुष्ये, संख्याता गर्भेज ।
अथवा च्यार संमुच्छिम मनुष्ये, गर्भेज में संखेज ।।
४४. अथवा पांच संमुच्छिम मनुष्ये, संख्याता गर्भेज ।
अथवा षट संमुच्छिम मनुष्य ह्वै, गर्भिज में संखेज ।।
४५. अथवा सप्त संमुच्छिम मनुष्ये, संख्याता गर्भेज ।
अथवा अष्ट संमुच्छिम मनुष्ये, गर्भेज में संखेज ।।
४६. अथवा नव संमुच्छिम मनुष्य ह्वै, संख्याता गर्भेज ।
अथवा दश संमुच्छिम मनुष्ये, गर्भेज में संखेज ।।
४७. तथा संखेज संमुच्छिम मनुष्ये, गर्भेज में संखेज ।।
इम इग्यारै विकल्प करिनैं, भंग इग्यार भणेज ।।

४३-४७. एवं एक्केक्कं उस्सारितेसु जाव अहवा संखेज्जा संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा । (श० ९।११०)

वा०—इहां संख्यात जीव मनुष्य में ऊपजै तेहनां नारकी नी परै इग्यारै विकल्प कह्या । अनैं असंख्यात पद नैं विषे पूर्वे नारकी नैं विषे बारै विकल्प कह्या । अनैं इहां मनुष्य नैं विषे असंख्याता ऊपजै तेहनां वलि इग्यारे ईज विकल्प हुवै । जे भणी जो संमुच्छिम मनुष्य नैं गर्भेज मनुष्य ए बिहुं नैं विषे असंख्याता ऊपजै, जदि बारमों विकल्प हुवै ते इम नहीं जे संमुच्छिम मनुष्य नैं विषे असंख्याता ऊपजै, पिण इहां गर्भेज मनुष्य तो स्वरूप थकी पिण असंख्याता नथी तो तेहनैं विषे असंख्याता ऊपजै पिण नथी ते भणी असंख्यात पद नैं विषे इग्यारै विकल्प देखाड़वा नैं अर्थं कहै छै—

'संखेज्जे' त्यादि, इह द्विकयोगे पूर्ववदेकादश विकल्पाः असंख्यातपदे तु पूर्वं द्वादश विकल्पा उक्ता इह पुनरेकादशैव, यतो यदि संमूच्छिमेषु गर्भजेषु चासंख्यातत्वं स्यात्तदा द्वादशोऽपि विकल्पो भवेत्, न चैवं, इह गर्भजमनुष्याणां स्वरूपतोऽप्यसंख्यातानामभावेन तत्प्रवेशनकेऽसंख्याताऽसम्भवाद्, अतोऽसंख्यातपदेऽपि विकल्पैकादशकदर्शनायाह—
(वृ० प० ४५३)

४८. हे प्रभु ! जीव असंख मनुष्य में, उपजै तेहनी पृच्छा ।
जिन कहै सर्व संमुच्छिम मनुष्ये, ए इकयोगिक इच्छा ।।

४८. असंखेज्जा भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गंगेया ! सव्वे वि ताव संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा ।

हिवै द्विकसंयोगिक ११ विकल्प करि ११ भांगा कहै छै—

४९. अथवा असंख संमुच्छिम मनुष्ये, इक गर्भेज मनु होय ।
अथवा असंख संमुच्छिम मनुष्ये, गर्भेज मनु में दोय ।।

४९. अहवा असंखेज्जा संमुच्छिममणुस्सेसु एगे गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा, अहवा असंखेज्जा संमुच्छिममणुस्सेसु दो गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा,

५०. एवं जाव असंख संमुच्छिम, मनुष्य विषे अवधार ।
गर्भेज मनुष्य विषे संख्याता, ए विकल्प भंग ग्यार ।।

५०. एवं जाव असंखेज्जा संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा । (श० ९।१११)

असंख्याता जीव मनुष्य में ऊपजै तेहनां विकल्प ११, भांगा ११
१. असंख्याता संमुच्छिम मनुष्य में, १ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
२. असंख्याता संमुच्छिम मनुष्य में, २ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. असंख्याता संमुच्छिम मनुष्य में, ३ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
४. असंख्याता संमुच्छिम मनुष्य में, ४ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
५. असंख्याता संमुच्छिम मनुष्य में, ५ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
६. असंख्याता संमुच्छिम मनुष्य में, ६ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
७. असंख्याता संमुच्छिम मनुष्य में, ७ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
८. असंख्याता संमुच्छिम मनुष्य में, ८ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
९. असंख्याता संमुच्छिम मनुष्य में, ९ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
१०. असंख्याता संमुच्छिम मनुष्य में, १० गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
११. असंख्याता संमुच्छिम मनुष्य में, संख्याता गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।

हिवै उत्कृष्ट पदे मनुष्य में ऊपजै ते कहै छै—

५१. मनुष्य विषे उत्कृष्ट पदे प्रभु ! ऊपजै तेहनों पृच्छा ।
जिन कहै सर्व संमुर्च्छिम मनुष्ये, ए इक योगिक इच्छा ।।

वा० —संमुर्च्छिम मनुष्य असंख्याता हुवै प्रवेशन पिण असंख्याता नों हुवै ते भणी मनुष्य प्रवेशन उत्कृष्ट पदे ते संमुर्च्छिम मनुष्य नै विषे सर्व पिण हुवै ।

हिवै द्विकसंयोगिक १ भांगो कहै छै—

५२. अथवा संमुर्च्छिम मनुष्य विषे ह्वै, गर्भेज में पिण होय ।
द्विकसंयोगिक ए इक भंगो, श्री जिन वचने जोय ।।

५३. प्रभु ! संमुर्च्छिम मनुष्य प्रवेशन, गर्भेज मनुष्य प्रवेशन ।
कुण-कुण जोव विशेषाधिक छै, हिवै उत्तर दे श्री जिन ।।

५४. सर्व थकी थोड़ा गंगेया ! गर्भेज मनुष्य प्रवेशन ।
संमुर्च्छिम मनुष्य प्रवेशन, असंखेज गुणां प्रापन्न ।।

५५. नवम शतक नों देश बतीसम, ढाल सौ एकाणूं विमासी ।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' आनंद थासी ।।

५१. उक्कोसा भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गंगेया ! सव्वे वि ताव संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा ।

वा०—संमूर्च्छिमानामसंख्यातानां भावेन प्रविशतामप्य-संख्यातानां सम्भवस्ततश्च मनुष्यप्रवेशनकं प्रत्युत्कृष्ट-पदिनस्तेषु सर्वेऽपि भवंति । (वृ० प० ४५३)

५२. अहवा संमुच्छिममणुस्सेसु य गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु य होज्जा । (श० ९।११२)

५३. एयस्स णं भंते ! संमुच्छिममणुस्सपवेसणगस्स गब्भ-वक्कंतियमणुस्सपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?

५४. गंगेया ! सव्वत्थोवे गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणए संमुच्छिममणुस्सपवेसणए असंखेज्जगुणे ।
(श० ९।११३)

ढाल : १९२

दूहा

१. देव प्रवेशन हे प्रभु ! आख्यो किते प्रकार ?
जिन कहै गंगेया ! सुणे, चिउविध कह्यो उदार ।।

२. प्रथम भवनवासी कह्यो, देव प्रवेशन देख ।
यावत वैमानीक तुर्य, अमर-प्रवेशन पेख ।।

३. हे भदंत ! इक जीव ते, देव प्रवेश करंत ।
स्यूं ह्वै भवनपति विषे, जाव वैमानिक हुंत ?

४. जिन कहै भवनपति विषे, अथवा व्यंतर धार ।
जोतिषि वैमानिक तथा, इकसंयोगिक च्यार ।।

१. देवपवेसणए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गंगेया ! चउव्विहे पण्णत्ते,

२. तं जहा भवणवासिदेवपवेसणए जाव वेमाणियदेव-पवेसणए । (श० ९।११४)

३. एगे भंते ! देवे देवपवेसणएणं पविसमाणे किं भवण-वासीसु होज्जा ? वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएसु होज्जा ?

४. गंगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा, वाणमंतर-जोइ-सिय-वेमाणिएसु वा होज्जा । (श० ९।११५)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*प्रश्न करै गंगेय जी ।। [ध्रुपदं]

५. जीव दोय भगवंत जी ! देव प्रवेशन करता जी कांइ ।
स्यूं हुवै भवनपति विषे, जाव वैमानिक वरता जी कांइ ?

६. जिन कहै भवनपति विहुं, अथवा व्यंतर मझारो जी कांइ ।
जोतिषी वैमानिक तथा, इक संयोगिक च्यारो जी कांइ ।
[जिन कहै गंगेया ! सुणे]

७. अथवा एक भवनपति, इक व्यंतर में होयो ।
तिरिक्ख प्रवेशन जिम कह्यो, तिम सुर भणवा जोयो ।।

८. जाव असंख्याता लगै, हिवै उत्कृष्ट पद पृच्छा ।
जिन कहै जोतिषि ह्वै सहु, ए इकयोगिक इच्छा ।।

वा० —जोतिषी नैं विषे जाणहार घणां ते माटै उत्कृष्ट पद नां धणी देव प्रवेशनवंत सगलाई हुवै ।

९. अथवा जोतिषी नैं विषे, भवनपति में होयो ।
अथवा जोतिषी नैं विषै, वाणव्यंतर में जोयो ।।

१०. अथवा जोतीषी नैं विषे, वैमानिक में जोयो ।
द्विकसंजोगिक आखिया, ए त्रिहुं भांगा ताह्यो ।।

११. अथवा जोतिषी नैं विषे, भवनपति में होयो ।
वाणव्यंतर में ह्वै वलि, ए धुर भांगो जोयो ।।

१२. अथवा जोतिषी नैं विषे, भवनपति रै मांह्यो ।
वैमानिक में ह्वै वलि, द्वितीय भंग कहिवायो ।।

१३. अथवा जोतिषी नैं विषे, वाणमंतर रै मांह्यो ।
वैमानिक में ह्वै वली, तृतीय भंग ए पायो ।।

१४. अथवा जोतिषी नैं विषे, भवनपति में पेखो ।
व्यंतर वैमानिक विषे, चउक्कसंयोगिक एको ।।

१५. भवनपति व्यंतर प्रभु ! जोतिषी देव प्रवेशो ।
वलि प्रवेश वैमानिके, कुण-कुण जाव विशेषो ?

१६. जिन कहै थोड़ा सर्व थी, वैमानिक सुप्रवेशो ।
भवनपति में प्रवेश ते, असंखेजगुण एसो ।।

१७. वाणमंतर में प्रवेशनं, असंख्यातगुण जाणी ।
जोतिषी देव प्रवेशनं, संख्यात-गुणां[1] पहिछाणी ।।

---

*लय : कुशल देश सुहामणो

१. भगवती की जोड़ ढाल १९२ गाथा १७ में व्यन्तर एवं ज्योतिषि देवों में जीव के प्रवेश का वर्णन करते हुए लिखा गया है—

वाणमंतर में प्रवेशनं, असंख्यात गुण जाणी ।
ज्योतिषी देव प्रवेशनं, असंख्यात गुणा पहिछाणी ।।

यहां जोड़ की मूल प्रति तथा उसकी प्रतिलिपि वाली प्रतियों में 'असंख्यात गुणा' लिखा हुआ है । किन्तु अंगसुत्ताणि भाग २, जो आगम-सम्पादन की श्रृंखला

५. दो भंते ! देवा देवपवेसणएणं—पुच्छा ।

६. गंगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएसु वा होज्जा ।

७. अहवा एगे भवणवासीसु एगे वाणमंतरेसु होज्जा, एवं जहा तिरिक्खजोणियपवेसणए तहा देवपवेसणए वि भाणियव्वे ।

८. जाव असंखेज्ज त्ति । (श० ९।११६)
उक्कोसा भंते ! —पुच्छा ।
गंगेया ! सव्वे वि ताव जोइसिएसु होज्जा,

वा० —ज्योतिष्कगामिनो बहव इति तेषूत्कृष्टपदिनो देवप्रवेशनकवन्तः सर्वेऽपि भवन्तीति (वृ० प० ४५३)

९. अहवा जोइसिय-भवणवासीसु य होज्जा, अहवा जोइसिय वाणमंतरेसु य होज्जा,

१०. अहवा जोइसिय-वेमाणिएसु य होज्जा,

११. अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वाणमंतरेसु य होज्जा,

१२. अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वेमाणिएसु य होज्जा,

१३. अहवा जोइसिएसु य वाणमंतरेसु य वेमाणिएसु य होज्जा,

१४. अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वाणमंतरेसु य वेमाणिएसु य होज्जा । (श० ९।११७)

१५. एयस्स णं भंते ! भवणवासिदेवपवेसणगस्स, वाणमंतरदेवपवेसणगस्स, जोइसियदेवपवेसणगस्स, वेमाणियदेवपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो जाव (सं० पा०) विसेसाहिया वा ?

१६. गंगेया ! सव्वत्थोवे वेमाणियदेवपवेसणए, भवणवासिदेवपवेसणए असंखेज्जगुणे,

१७. वाणमंतरदेवपवेसणए असंखेज्जगुणे, जोइसियदेवपवेसणए संखेज्जगुणे । (श० ९।११८)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरठा

१८. वैमानिक में जान, जावणहारा अल्प छै।
तथा अल्प ते स्थान, ते कारण थोड़ा कह्या ॥
हिवै च्यार गति में प्रवेशन नों अल्पबहुत्व कहै छै—

१८. 'सव्वथोवे वेमाणियदेवप्पवेसणए' त्ति तद्गामिनां तत्स्थानानां चाल्पत्वादिति। (वृ० प० ४५३)

दूहा

१९. ए प्रभु! नरक-प्रवेशनं, तिर्यंच मनुष्य प्रवेशो।
देव-प्रवेशन नें विषे, कुण-कुण जाव विशेषो?

२०. जिन कहै थोड़ा सर्व थी, मनुष्य-प्रवेशनवंतो।
मनुष्य क्षेत्र में इज हुवै, ते भणी अल्प कहंतो ॥

२१. तेहथी नरक-प्रवेशनं, असंखेजगुण आख्या।
नरक गमन करै तिके, नर ते असंखगुणा भाख्या ॥

२२. तेहथी देव-प्रवेशनं, असंखेजगुण जाणी।
तिरि-प्रवेशन तेह थी, असंखगुणां पहिछाणी ॥

१९. एयस्स णं भंते! नेरइयपवेसणगस्स तिरिक्खजोणिय-पवेसणस्स मणुस्सपवेसणगस्स देवपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो जाव (सं० पा०) विसेसाहिया वा?

२०. गंगेया! सव्वत्थोवे मणुस्सपवेसणए,
मनुष्यक्षेत्र एव तस्य भावात्, तस्य च स्तोकत्वात्, (वृ० प० ४५३)

२१. नेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे,
तद्गामिनामसङ्ख्यातगुणत्वात्, (वृ० प० ४५३)

२२. देवपवेसणए असंखेज्जगुणे तिरिक्खजोणियपवेसणए असंखेज्जगुणे। (श० ९।११९)

सोरठा

२३. तिर्यंच गति रै मांय, नरक मनुष्य सुर थी हुवै।
असंखगुणो इण न्याय, विजातिया नुं प्रवेशनं ॥

दूहा

२४. पूर्व प्रवेशन आखियो, ते तो छै उत्पाद।
वलि उद्वर्त्तन रूप है, तसु संबंध इम लाध ॥

२५. नरकादिक नां ते बिहुं, उत्पत उद्वर्त्तन।
अंतर-सहित रहितपणैं, कीजै तेहिज प्रश्न ॥

२४,२५. अनन्तरं प्रवेशनकमुक्तं तत्पुनरुत्पादोद्वर्त्तनारूप-मिति नारकादीनामुत्पादमुद्वर्त्तनां च सान्तरनिरन्तरतया निरूपयन्नाह— (वृ० प० ४५३)

*२६. नारक हे भगवंत जी! उपजै अंतर-सहीतो।
के नारक नां नेरइया, उपजै अंतर-रहीतो?

२७. असुर अंतर-सहित ऊपजै, उपजै अंतर-रहीतो।
जाव वैमानिक ऊपजै, अंतर-रहित-सहीतो?

२६. संतरं भंते! नेरइया उववज्जंति निरंतरं नेरइया उववज्जंति

२७. संतरं असुरकुमारा उववज्जंति निरंतरं असुरकुमारा उववज्जंति जाव संतरं वेमाणिया उववज्जंति निरंतरं वेमाणिया उववज्जंति?

***लय : कुशल देश सुहामणो**

में सम्पादित होकर 'जैन विश्व भारती' द्वारा प्रकाशित हुआ है, के शतक ९ सूत्र ११८ में 'संखेज्जगुणा' पाठ है। मूल पाठ के इस अन्तर ने एक सन्देह खड़ा कर दिया। उसके निराकरण हेतु भगवती सूत्र की प्रतियों का निरीक्षण किया। प्राचीन प्रतियों में 'संखेज्जगुणा' पाठ मिला। तब हमने 'हेमभगवती' को देखा। यह भगवती सूत्र की वह प्रति है जिसके आधार पर जयाचार्य ने 'जोड़' की रचना की थी, जो जयाचार्य के विद्यागुरु मुनि हेमराजजी के लिए स्वयं जयाचार्य (मुनि अवस्था) एवं मुनि सतीदासजी द्वारा लिखित है।

'हेम भगवती' के मूल पाठ में 'असंखेज्जगुणा' पाठ लिखकर 'अकार' को दो रेखाओं द्वारा चिह्नित किया गया है, पर उसके अर्थ में असंख्यातगुणा ही लिखा हुआ है। इससे यह सिद्ध होता है कि संखेज्जगुणा' की बात समझ में आ गई थी, किन्तु अर्थ लिखते समय वह विस्मृत हो गई। जोड़ की रचना करते समय अर्थ की बात ही ध्यान में रहने से असंख्यातगुणा हो गया। जोड़ के सम्पादन काल में अंगसुत्ताणि तथा हेमभगवती को आधार मानकर यहां संख्यातगुणा किया गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२८. नारकि संतरे नीकलै, नीकलै अंतर-रहीतो।
यावत व्यंतर नीकलै, अंतर-रहित-सहीतो ?

२९. जोतिषि नैं वैमानिया, अंतर-सहित चवंतो।
तथा निरंतर ते चवै ? ए प्रश्न समूह पूछंतो ॥

३०. जिन कहै नारकि ऊपजै, अंतर-सहित-रहीतो।
इमहिज भवनपति दशूं, उपजै तेह वदीतो ॥

३१. सांतर पृथ्वी न ऊपजै, उपजै अंतर-रहीतो।
एवं जावत वणस्सई, शेष नरक जिम कहीतो ॥

३२. अंतर-सहित पिण नेरइया, नोकले छै किणवारो।
अंतर-रहित पिण नीकलै, इम जाव थणियकुमारो ॥

३३. सांतर पृथ्वी न नीकलै, नीकलै अंतर-रहितो।
एवं जाव वनस्पति, शेष नरक जिम कहितो ॥

३४. णवरं जोतिषि विमाणिया, चयंति इहविध कहितो।
यावत वैमानिक चवै, अंतर-सहित रु रहितो ॥

सोरठा

३५. हिव नारकादि प्रपन्न, अन्य प्रकार करी तसु।
उत्पत्ति उद्वर्त्तन, कहियै छै ते सांभलो ॥

३६. *प्रभु ! छता नेरइया ऊपजै, अछता ऊपजै तेहो ?
जिन कहै छताज ऊपजै, अछता नहीं उपजेहो ॥

वा—छता ते विद्यमान द्रव्यार्थपणें करी, पिण सर्वथा अछतो कांइ न ऊपजै अछतापणां थकीज खरशृंग नी परै। जे माटै विद्यमानपणों तो तेहनों जीव द्रव्य नीं अपेक्षा करी अथवा नारक पर्याय नीं अपेक्षा करी। तिण प्रकार करिकै हीज भावी नारक पर्याय नीं अपेक्षाए द्रव्य थीं नेरइया छता नेरइएपणें ऊपजै अथवा नरक नां आउखा नां उदय थकी भाव नेरइया हीज नेरइयापणें करी ऊपजै।

भाव नेरइया किणनैं कहियै ? उत्तर—जे नरक नों आउखो भोगवै ते भाव नेरइया कहियै। अन्तराल गति नैं विषे वर्त्तमान इत्यर्थः।

अथवा सतो कहितां विभक्ति नां परिणाम थी छता नैं विषे ते पूर्वे ऊपना नैं विषे अनेरा ऊपजै पिण अछता नैं विषे न ऊपजै लोक नैं शाश्वतपणें करी सदाकाल हीज सद्भाव थी।

३७. एवं जाव विमाणिया, छता ऊपजै सोयो।
पिण अछता वैमाणिक तणो, ऊपजवूं नहि होयो ॥

३८. प्रभु ! छता नेरइया नीकले, कै अछता निकलै त्यांही ?
जिन कहै छताज नीकलै, अछता नीकलै नांहो ॥

*लय : कुशल देश सुहामणो

२८. संतरं नेरइया उव्वट्टंति निरंतरं नेरइया उव्वट्टंति जाव संतरं वाणमंतरा उव्वट्टंति निरंतरं वाणमंतरा उव्वट्टंति ?

२९. संतरं जोइसिया चयंति निरंतरं जोइसिया चयंति संतर वेमाणिया चयंति निरंतरं वेमाणिया चयंति ?

३०. गंगेया ! संतरं पि नेरइया उववज्जंति निरंतरं पि नेरइया उववज्जंति जाव संतरं पि थणियकुमारा उववज्जंति निरंतर पि थणियकुमारा उववज्जंति,

३१. नो संतरं पुढविक्काइया उववज्जंति निरंतरं पुढविक्काइया उववज्जंति, एवं जाव वणस्सइकाइया सेसा जहा नेरइया जाव संतरं पि वेमाणिया उववज्जंति निरंतरं पि वेमाणिया उववज्जंति।

३२. संतरं पि नेरइया उव्वट्टंति निरंतरं पि नेरइया उव्वट्टंति, एवं जाव थणियकुमारा।

३३. नो संतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति निरंतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति, एवं जाव वणस्सइकाइया। सेसा जहा नेरइया,

३४. नवरं— जोइसिय-वेमाणिया चयंति अभिलावो जाव संतरं पि वेमाणिया चयंति निरंतरं पि वेमाणिया चयंति। (श० ९/१२०)

३५. अथ नारकादीनामेव प्रकारान्तरेणोत्पादोद्वर्त्तने निरूपयन्नाह — (वृ० प० ४५५)

३६. सतो भंते ! नेरइया उववज्जंति ? असतो नेरइया उववज्जंति ? गंगेया ! सतो नेरइया उववज्जंति, नो असतो नेरइया उववज्जंति।

वा० —'सन्तः' विद्यमाना द्रव्यार्थतया, नहि सर्वथैवासत् किञ्चिदुत्पद्यते, असत्वादेव खरविषाणवत्, सत्वं च तेषां जीवद्रव्यापेक्षया नारकपर्यायापेक्षया वा, तथाहि—भाविनारकपर्यायापेक्षया द्रव्यतो नारकाः सन्तो नारका उत्पद्यन्ते, नारकायुष्कोदयाद्वा भावनारका नारकत्वेनोत्पद्यन्त इति। (वृ० प० ४५५)

अथवा 'सओ' त्ति विभक्तिपरिणामात् सत्सु प्रागुत्पन्नेष्वन्ये समुत्पद्यन्ते नासत्सु, लोकस्य शाश्वतत्वेन नारकादीनां सर्वदैव सद्भावादिति। (वृ० प० ४५५)

३७. एवं जाव वेमाणिया।

३८. सतो भंते ! नेरइया उव्वट्टंति ? असतो नेरइया उव्वट्टंति ? गंगेया ! सओ नेरइया उव्वट्टंति, नो असतो नेरइया उव्वट्टंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३९. एवं जाव विमाणिया, णवरं विशेष लहिवूं।
जोतिषी वैमानिक विषे, चयंति पाठज कहिवूं ॥

४०. प्रभु ! छता नेरइया उपजै, कै अछता उपजंतो।
छता असुर जे ऊपजै, जाव वैमानिक हुंतो ?

४१. छता नेरइया नीकलै, कै अछता नीकलंतो।
छता असुर जे नीकलै, जाव वैमानिक चयंतो ?

४२. जिन कहै गंगेया! सुणे, छता नारक उपजंतो।
पिण अछता नहिं ऊपजै, इम जाव वैमानिक हुंतो ॥

४३ छता नेरइया नीकलै, अछता नीकलै नांहीं।
जाव छता वैमानिक चवै, अछता न चवै क्यांहीं ॥

सोरठा

४४. नरक प्रमुख सुविशेष, उत्पादन उद्वर्त्तन।
सांतर आदि प्रवेश, पूर्व निरूपण ते कियो ॥
४५. वलि निरूपणा तास, करिवा नों कारण किसुं।
तसु उत्तर इम भास, वृत्ति विषे इम आखियो ॥
४६. पूर्व नारक आदि, जुदो-जुदो उत्पाद नों।
दाख्यो सांतरत्वादि, तिमहिज उद्वर्त्तन तणुं ॥
४७. इहां वलि नारक आद, सर्व जीव भेदां तणों।
उद्वर्त्तन उत्पाद, आख्यो है समुदाय थी ॥

४८. *किण अर्थे प्रभु ! इम कह्यो, छता नारक उपजंतो।
पिण अछता नहिं ऊपजै, जाव वैमानिक चयंतो ?

४९. जिन कहै गंगेया ! सुणे, पुरिसादाणीय पासो।
पुरिस विषे आदानीय, अरहा अर्हन जासो।
५०. सास्वतो लोक कह्यो जिणे, आदि अंत करि रहितो।
जिम पंचम शत नैं विषे, नवम उदेशे कहितो ॥
५१. यावत जे अवलोकियै, लोक तिको इज लवियै।
तिण अर्थे गंगेय ! कह्यं, छता वैमानिक चवियै ॥

सोरठा

५२. पार्श्व अर्हन तेह, शाश्वत लोकज आखियो।
ते शाश्वत भावेह, छता नारका ऊपजै ॥
५३. अथवा छता कहेह, पूर्व ऊपनां तेह विषे।
अन्य नारक ऊपजेह, इमहिज निकलै चवन कह्यं ॥

---

३९. एवं जाव वेमाणिया, नवरं—जोइसिय-वेमाणिएसु चयंति भाणियव्वं।
(अंगसुत्ताणि भा.२ पृ० ४२८)

४०. सतो भंते ! नेरइया उववज्जंति, असतो नेरइया उववज्जंति, सतो असुरकुमारा उववज्जंति जाव सतो वेमाणिया उववज्जंति, असतो वेमाणिया उववज्जंति ?

४१. सतो नेरइया उव्वट्टंति, असतो नेरइया उव्वट्टंति, सतो असुरकुमारा उव्वट्टंति जाव सतो वेमाणिया चयंति, असतो वेमाणिया चयंति ?

४२. गंगेया ! सतो नेरइया उववज्जंति, नो असतो नेरइया उववज्जंति, जाव सतो वेमाणिया उववज्जंति, नो असतो वेमाणिया उववज्जंति,

४३. सतो नेरइया उव्वट्टंति, नो असतो नेरइया उव्वट्टंति जाव सतो वेमाणिया चयंति, नो असतो वेमाणिया चयंति। (श० ९।१२१)

४४,४५. अथ नारकादीनामुत्पादादेः सान्तरादित्वं प्रवेशनकात्पूर्वं निरूपितमेवेति किं पुनस्तन्निरूप्यते ? इति, अत्रोच्यते, (वृ० प० ४५५)

४६. पूर्वं नारकादीनां प्रत्येकमुत्पादस्य सान्तरत्वादि निरूपितं, ततश्च तथैवोद्वर्त्तनायाः, (वृ० प० ४५५)

४७. इह तु पुनर्नारकादिसर्वजीवभेदानां समुदायतः समुदितयोरेव चोत्पादोद्वर्त्तयोस्तन्निरूप्यत इति।.
(वृ० प० ४५५)

४८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सतो नेरइया उववज्जंति, नो असतो नेरइया उववज्जंति जाव सतो वेमाणिया चयंति, नो असतो वेमाणिया चयंति ?

४९. से नूणं भे गंगेया ! पासेणं अरहा पुरिसादाणीएणं

५०,५१. सासए लोए बुइए अणादीए अणवदग्गे जहा पंचमसए (सू० २५५) जाव (सं० पा०) जे लोक्कइ से लोए। से तेणट्ठेणं गंगेया ! एवं वुच्चइ—जाव सतो वेमाणिया चयंति, नो असतो वेमाणिया चयंति।
(श० ९।१२२)

५२,५३ यतः पार्श्वेनार्हता शाश्वतो लोक उक्तोऽतो लोकस्य शाश्वतत्वात्सन्त एव सत्स्वेव वा नारकादय उत्पद्यन्ते च्यवन्ते चेति साध्वेवोच्यत इति। (वृ० प० ४५५)

---

*लय : कुशल देश सुहामणो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५४. पार्श्व तणो जे नाम, महावीर देवे कह्यं।
स्व मत पुष्टज पाम, वृत्ति विषे इम आखियो ।।

५४. 'से णूणं भंते ! गंगेया' इत्यादि, अनेन च तत्सिद्धान्तेनैव स्वमतं पोषितं, (वृ० प० ४५५)

५५. *शत नवम बतीसम देश ए, ढाल इकसौ बाणुंमीं विमासी ।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' आनंद थासी ।।

ढाल : १९३

दूहा

१. हिवै गंगेय भगवंत नीं ज्ञान संपदा जेह।
चिंतवतोज थको सही, विकल्प करत वदेह ।।

१. अथ गाङ्गेयो भगवतोऽतिशायिनीं ज्ञानसम्पदं सम्भावयन् विकल्पयन्नाह— (वृ० प० ४५५)

†प्रभु नीं ज्ञान संपदा केरी ।

२. स्वयं आपणपै इज प्रभूजी, चिह्न विना ए जाणो ।
अथवा चिह्न थकी ए वस्तु, जाणों आप प्रमाणो ।।
कीमत करतो छतो गंगेयो प्रश्न पूछै छै फेरी ।। (ध्रुपदं)

२. सयं भंते ! एतेवं जाणह, उदाहु असयं,
'सयं भंते!' इत्यादि, स्वयमात्मना लिङ्गानपेक्षमित्यर्थः 'एवं' ति वक्ष्यमाणप्रकारं वस्तु 'असयं' ति अस्वयं परतो लिङ्गतः इत्यर्थः, (वृ० प० ४५५)

३. अणसुणियो आगम विण ए इम, जाणो आप प्रभूजी !
तथा अन्य वच सांभल जाणो, आगम श्रुत करि बूझी ।।

३. असोच्चा एतेवं जाणह उदाहु सोच्चा—
'असोच्च' त्ति अश्रुत्वाऽऽगमानपेक्षम् 'एतेवं' ति एतदेवमित्यर्थः, 'सोच्च' त्ति पुरुषान्तरवचनं श्रुत्वाऽऽगमत इत्यर्थः (वृ० प० ४५५)

४. जिन भाखै सांभल गंगेया ! निज ज्ञाने करि जाणूं ।
चिह्न विना ए सर्व पिछाणूं, चिह्न थकी नहिं माणूं ।।

४. गंगेया ! सयं एतेवं जाणामि, नो असयं,

५. अणसुणिया आगम श्रुत विण हूं, इम जाणूं गंगेया !
अन्य पुरुष नां मुख थी सांभल, आगम थकी न ज्ञेया ।।

५. असोच्चा एतेवं जाणामि, नो सोच्चा—

६. छता नेरइया उपजै पिण ए, अछता उपजै नांहीं ।
जाव वैमानिक छता चवै छै, अछता न चवै क्यांहीं ।।

६. सतो नेरइया उववज्जंति, नो असतो नेरइया उववज्जंति जाव सतो वेमाणिया चयंति, नो असतो वेमाणिया चयंति । (श० ९।१२३)

७. हे भदंत ! किण अर्थे ए, इम भाखो आप प्रभूजी !
जाव वैमानिक अछता न चवै ? इम गंगेये बूझी ।।

७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तं चेव जाव (सं० पा०) नो असतो वेमाणिया चयंति ?

८. जिन कहै हे गंगेय ! केवली, पूरव दिशे प्रमाणैं ।
मान-सहित[1] पिण वस्तु जाणैं, मान-रहित[2] पिण जाणैं ।।

८. गंगेया ! केवली णं पुरत्थिमे णं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ ।

९. दक्षिण दिशि में पिण इम जाणैं, जिम कह्यं शब्द उद्देशे ।
पंचम शत नों तुर्य भलायो, वारू रीत विशेषे ।।

९. दाहिणे णं एवं जहा सद्दुद्देसए (५।६४-६७)

१०. जाव निरावरण ज्ञान केवलि नों, तिण अर्थे इम कहियै ।
निमहिज जाव वैमानिक अछता, चवै नहीं इम लहियै ।।

१०. जाव (सं० पा०) निव्वुडे नाणे केवलिस्स । से तेणट्ठेणं गंगेया ! एवं वुच्चइ—सयं एतेवं जाणामि, नो असयं, असोच्चा एतेवं जाणामि, नो सोच्चा—तं चेव जाव नो असतो वेमाणिया चयंति ।
(श० ९।१२४)

---

*लय : कुशल देश सुहामणो ।

†लय : कहो नी किम करि आवूंजी

१. परिमाणवत् गर्भज मनुष्य जीव द्रव्यादिक संख्याता ।

२. वनस्पति पृथिव्यादिक जीव अनंता वा असंख्याता ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. हे भगवंत ! नारकी नरके, पोतेइज उपजै छै।
कै पोतै नहिं उपजै, पर नां वश थी नरक पड़ै छै ?
१२. जिन भाखैं पोतै इज नारकि, नरक विषे उपजै छै।
पिण पर नां वश थकी नारकी, नरके नांहि पड़ै छै ।।
१३. किण अर्थे भगवंत ! इम भाख्यो, जिन कहै सुण गंगेया !
निज कृत कर्म उदय करि जंतु, स्वयं नरक उपजेया ।।
वा०—जिम कोई कहै छै ए जीवात्मा नै सुख-दुख उपजै ते ईश्वर नों प्रेरचो स्वर्ग में जाय छै तथा नरक में जाय छै। पिण पोता नें वश जातो नथी, परवश जाय छै। तेहनो मत खंडन कीधो, एतलै ईश्वर सुख-दुख नों कर्त्ता नथी।
१४. कर्मगुरू ते महत कर्म करि, कर्मभार करि जाणी।
कर्मगुरूसंभारपणैं करि, अति प्रकर्ष पिछाणी ।।
१५. ए तीनूंई पुन्य कर्म नीं, अपेक्षाय पिण वदियै।
तिण कारण आगल इम अखियै, अशुभ कर्म नें उदियै ।।
१६. उदय प्रदेश थकी पिण ह्वै ते, तिण कारण इम कहियै।
अशुभ कर्म नां विपाक करिकै, बंध्यो अनुभव लहियै ।।
१७. ते तो मंद थकी पिण ह्वै छै, तिण कारण इम कहै छै।
अशुभ कर्म फल विपाक करिकै, स्वयं नरक उपजै छै ।।
१८. तिण अर्थे ? करिनैं गंगेया ! इम आख्यो अवलोई।
पोतै नारकी नरक उपजै, परवश पड़ै न कोई ।।
१९. हे प्रभु ! पोतै असुर ऊपजै, कै परवश उपजै त्यांही।
जिन कहै असुर ऊपजै पोतै, परवश उपजै नांही ।।
२०. ते किण अर्थे ! तब जिन भाखै, कर्म उदै करि जाणी।
कर्म-विगम ते अशुभ कर्म नीं, विगम-स्थिति पहिछाणी ।।
२१. कर्म-विसोहि ते रस आश्री, कर्म-विशुद्धी जेहनां ।।
कर्म प्रदेश अपेक्षा ए वच, तथा अर्थ इम एहनां ।।
२२. शुभ कर्म उदय वलि, शुभ कर्म विपाक करीनें लहियै।
पुन्य कर्म फल विपाक करिकै, स्वयं असुर ऊपजियै ।।
२३. तिण अर्थे करि असुरपणैं, पोतैज उपजै ज्यांही।
एवं यावत थणियकुमारा, परवश उपजै नांही ।।
२४. हे प्रभु ! पुढवी उपजै पोतै, कै परवश उपजै छै ?
जिन कहै पृथ्वी उपजै पोतै, परवश नांहि पड़ै छै ।।

११. सयं भंते ! नेरइया नेरइएसु उववज्जंति ? असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति ?
१२. गंगेया ! सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति। (श० ९।१२५)
१३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—······ गंगेया !
कम्मोदएणं,
वा०—यथा कैश्चिदुच्यते—
'अज्ञो जन्तुरनीशोऽयमात्मनः सुखदुःखयोः।
ईश्वरप्रेरितो गच्छेत्स्वर्गं वा श्वभ्रमेव वा।
(वृ० प० ४५५)
१४. कम्मगुरुयत्ताए, कम्मभारियत्ताए, कम्मगुरुसंभारियत्ताए,
अतिप्रकर्षावस्थयेत्यर्थः, (वृ० प० ४५६)
१५. एतच्च त्रयं शुभकर्म्मापेक्षयाऽपि स्यादत आह—'असुभाण' मित्यादि, (वृ० प० ४५६)
असुभाण कम्माणं उदएणं
१६. उदयः प्रदेशतोऽपि स्यादत आह—
असुभाणं कम्माणं विवागेणं,
'विवागेणं' ति विपाको यथाबद्धरसानुभूतिः,
(वृ० प० ४५६)
१७. स च मन्दोऽपि स्यादत आह— (वृ० प० ४५६)
असुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति,
१८. से तेणट्ठेणं गंगेया ! एवं वुच्चइ—सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति। (श० ९।१२६)
१९. सयं भंते ! असुरकुमारा—पुच्छा।
गंगेया ! सयं असुरकुमारा असुरकुमारेसु उववज्जंति, नो असयं असुरकुमारा असुरकुमारेसु उववज्जंति।
(श० ९।१२७)
२०. से केणट्ठेणं तं चेव जाव उववज्जंति ?
गंगेया ! कम्मोदएणं, कम्मविगतीए,
'कम्मविगईए' त्ति कर्म्मणामशुभानां विगत्या—विगमेन स्थितिमाश्रित्य (वृ० प० ४५६)
२१. कम्मविसोहीए, कम्मविसुद्धीए,
'कम्मविसोहीए' त्ति रसमाश्रित्य 'कम्मविसुद्धीए' त्ति प्रदेशापेक्षया, (वृ० प० ४५६)
२२. सुभाणं कम्माणं उदएणं, सुभाणं कम्माणं विवागेणं सुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं असुरकुमारा असुरकुमारत्ताए उववज्जंति,
२३. से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति। एवं जाव थणियकुमारा। (श० ९।१२८)
२४. सयं भंते ! पुढविक्काइया—पुच्छा।
गंगेया! सयं पुढविक्काइया पुढविक्काइएसु उववज्जंति नो असयं पुढविक्काइएसु उववज्जंति। (श० ९।१२९)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५. किण अर्थे ? तब श्री जिन भाखै, कर्म उदय करि धारं।
कर्मगुरू फुन कर्मभार करि, कर्मगुरूसंभारं ।।

२६. शुभ अशुभ जे कर्म उदय करि, शुभाशुभ जे जाणं।
कर्म तणां जे विपाक करिनैं, अनुभावे पहिछाणं ।।

सोरठा

२७. शुभ जे वर्ण गंधादि, जाति एकेंद्रियादिक अशुभ।
नाम प्रकृति ए वादि, तेह तणें उदये करी ।।

२८. *शुभाशुभ जे कर्म तणां फल, विपाक करिकै ज्यांही।
पुढवीपणें ऊपजै पोतै, परवश उपजै नांही ।।

२९. तिण अर्थे करि जाव ऊपजै, जाव मनुष्या एमो।
व्यंतर जोतिषि विमानिया ते, असुरकुमारा जेमो ।।

३०. तिण अर्थे गंगेय ! कह्यो इम, सुर वैमानिक ज्यांही।
यावत पोतै ईज ऊपजै, परवश उपजै नांही ।।

३१. ते वस्तु कहि तेह समय नैं, आदि देइ गंगेय !
महावीर भगवंत श्रमण नैं, प्रत्यक्ष ही जाणेय ।।

३२. सर्व वस्तु नां जाणणहारा, सर्वज्ञ वीर पिछाणै।
सर्व वस्तु नां देखणहारा, इम प्रत्यक्षज जाणै।

३३. गंगेयो अणगार तिवारे, वीर प्रभू प्रति जेही।
तीन वार दक्षिण पासा थी, प्रदक्षिणा करेई ।।

३४. वंदै स्तुति करै वचन थी, नमस्कार शिर नामी।
इम कहै आप समीपै वांछूं, हे प्रभु ! अंतरजामी ।।

३५. च्यार महाव्रत रूप धर्म थी, पंच महाव्रत धर्मो।
कालासवेसी पुत्र कह्यो जिम, तिमहिज भणवो मर्मो ।।

३६. यावत सर्व दुख प्रक्षीण करीनैं मोक्ष सिधाया।
सेवं भंते ! सेवं भंते ! गोतम वीर बधाया ।।

३७. नवम शतक बतीसमुद्देशक, इकसौ त्राणूमीं ढालं।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' गणि गुणमालं ।।

३८. ए गंगेय तणां भांगा में, भूल चूक कोइ आयो।
तो मिच्छामिदुक्कडं म्हारै, पंडित शुद्ध करायो ।।

नवमशते द्वात्रिंशत्तमोद्देशकार्थः ।।९।३२।।

१. *पाछलै उद्देश आख्यो, गंगेयो गुण-आगलो।
वीर सेवा थकी सीधो, कीधो आतम नों भलो ।।

२. बीजो कोई कर्मवश, विपरीतपणुं पिण पावियै।
जिम जमाली त्रयस्त्रिंशत उद्देशक देखावियै ।।

*लय : पूज मोटा भांजै तोटा

२५. से केणट्ठेणं जाव उववज्जंति ?
गंगेया ! कम्मोदएणं, कम्मगुरुयत्ताए, कम्मभारियत्ताए, कम्मगुरुसंभारियत्ताए,

२६. सुभासुभाणं कम्माणं उदएणं, सुभासुभाणं कम्माणं विवागेणं,

२७ 'सुभासुभाणं' ति शुभानां शुभवर्णगन्धादीनाम् अशुभानां तेषामेकेन्द्रियजात्यादीनां च।
(वृ० प० ४५६)

२८. सुभासुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं पुढविक्काइया पुढविक्काइएसु उववज्जंति, नो असयं पुढविक्काइया पुढविक्काइएसु उववज्जंति।

२९. से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति। (श० ९।१३०)
एवं जाव मणुस्सा। (श० ९।१३१)
वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा।

३०. से तेणट्ठेणं गंगेया ! एवं वुच्चइ—सयं वेमाणिया वेमाणिएसु उववज्जंति, नो असयं वेमाणिया वेमाणिएसु उववज्जंति। (श० ९।१३२)

३१,३२. तप्पभितिं च णं से गंगेये अणगारे समणं भगवं महावीरं पच्चभिजाणइ सव्वण्णुं सव्वदरिसिं।
'तप्पभिइ च' त्ति यस्मिन् समयेऽनन्तरोक्तं वस्तु भगवता प्रतिपादितं ज्ञानस्य तत्तथा, (वृ० प० ४५६)

३३. तए णं से गंगेये अणगारे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ,

३४. वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—
इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतियं

३५. चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं एवं जहा कालासवेसियपुत्तो (श० १।४३१-४३३) तहेव भाणियव्वं

३६. जाव (सं० पा०) सव्वदुक्खप्पहीणे।
(श० ९।१३३-१३५)
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति। (श० ९।१३६)

३७. नवमशते द्वात्रिंशत्तमोद्देशकः (वृ० प० ४५६)

१,२. गांगेयो भगवदुपासनातः सिद्धः अन्यस्तु कर्मवशाद्विपर्ययमप्यवाप्नोति यथा जमालिरित्येतद्दर्शनाय त्रयस्त्रिंशत्तमोद्देशकः, (वृ० प० ४५६)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : १६४

दूहा

१. तिण काले नैं तिण समय, वर माहणकुंड ग्राम।
नामें नगर हुंतो भलो, अति वर्णन अभिराम।।
२. चैत्य प्रवर बहु साल वन, धातु चित्र् चयनेह।
वर्णन करिवूं तेहनुं, अधिक अनोपम एह।।
३. ते माहणकुंड ग्राम जे, नगर विषेज प्रसिद्ध।
ऋषभदत्त नामें वसै, ब्राह्मण ऋद्ध समृद्ध ।।
४. दित्त तेजस्वी तेजवत, दर्पवान वा दित्त।
वित्ते प्रसिद्ध जाव ते, अपरिभूत कथित्त।।
५. ऋग यजू नैं साम फुन, वेद अथर्वण मान।
जिम खंधक जावत अन्य, बहु ब्राह्मण नय जान।।
६. श्रमणोपासक जाणिया, जीवाजीव-स्वरूप।
पुन्य पाप नां अर्थ फुन, लाधा अधिक अनूप।।
७. यावत मुनि प्रतिलाभतो, आतम भावित आप।।
विचरै छै ते ऋषभदत्त, ब्राह्मण जिन वच थाप।।
८. तसु देवानंदा ब्राह्मणी, हुंती अधिक अनूप।
कोमल कर पग जाव तसु, प्रियदर्शण अतिरूप।।
९. ते पिण श्रमणोपासिका, जीवाजीव पिछाण।
पुन्य पाप फल ओलखी, यावत विचरै जाण।।

*जी कांइ देव जिनेन्द्र समवसर्या।
जी कांइ जगतारक जिनराज ।। (ध्रुपदं)

१०. तिण काले नैं तिण समे जी कांइ, समवसर्या महावीर।
परिषद पर्युपासन करी जी कांइ, तिरवा भवदधि तीर ।।
११. ऋषभदत्त तिण अवसरे जी कांइ, स्वाम पधार्या जान।
हरष संतोष पायो घणो जी कांइ, जाव हृदय विकसान ।।
१२. जिहां देवानंदा ब्राह्मणी जी कांइ, आयो तिहां चलाय।
देवानंदा ब्राह्मणी प्रतै जी कांइ, बोलै इहविध वाय ।।
१३. इम निश्चै देवानुप्रिया जी कांइ, श्रमण तपस्वी सार।
भगवंत श्री महावीर जी कांइ, धर्म आदि करणहार ।।
१४. यावत प्रभु सर्वज्ञ छै जी कांइ, सर्व वस्तु नां सोय।
देखणहार दयाल है जी कांइ, सर्वदर्शी इम होय ।।
१५ धर्म-चक्र आकाश में जी कांइ, तिण करि यावत ताम।
सुखे-सुखे विचरतां छतां जी कांइ, वीर प्रभू गुणधाम ।।

---

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं माहणकुंडग्गामे नयरे होत्था—वण्णओ।

२. बहुसालए चेइए—वण्णओ।

३. तत्थ णं माहणकुंडग्गामे नयरे उसभदत्ते नामं माहणे परिवसइ— अड्ढे
'अड्ढे' त्ति समृद्धः (वृ० प० ४५६)

४. दित्ते वित्ते जाव बहुजणस्स अपरिभूए
'दित्ते' त्ति दीप्तः— तेजस्वी दृप्तो वा—दर्प्पवान्
'वित्ते' त्ति प्रसिद्धः, (वृ० प० ४५६)

५. रिव्वेद-जजुव्वेद-सामवेद-अथव्वणवेद जहा खंदओ जाव अण्णेसु (सं० पा०) य बहूसु बंभण्णएसु नयेसु सुपरिनिट्ठिए

६. समणोवासए अभिगयजीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे

७. जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

८. तस्स णं उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदा नामं माहणी होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव पियदंसणा सुरूवा

९. समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ। (श० ९।१३७)

१०. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे। परिसा पज्जुवासइ। (श० ९।१३८)

११. तए णं से उसभदत्ते माहणे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ जाव (सं० पा०) हियए

१२. जेणेव देवाणंदा माहणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता, देवाणंदं माहणिं एवं वयासी—

१३. एवं खलु देवाणुप्पिए! समणे भगवं महावीरे आदिगरे

१४. जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी

१५. आगासगएणं चक्केणं जाव सुहंसुहेणं विहरमाणे

---

*लय : म्हांरी सासूजी रै पांच पुत्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. बहुसाल चैत्य विषे प्रभू जी कांइ, यथाप्रतिरूप तंत।
अवग्रह आज्ञा ले करी जी कांइ, यावत जिन विचरंत ।।
१७. महाफल निश्चै ते भणी जी कांइ, देवानुप्रिय ! सोय।
तथारूप अरिहंत भगवंत नुं जी कांइ, नाम गोत्र सुणवा नुं होय ।।
१८. तो वलि स्यूं कहिवो अछै जी कांइ, अरिहंत साहमुं जाय।
फल वंदणा करिवा तणो जी कांइ, नमस्कार नुं सवाय ।।
१९. प्रश्न वलि पूछण तणुं जी कांइ, सेव करण नुं सार।
ते फल नों कहिवो किसुं जी कांइ, नहिं संदेह लिगार ।।
२०. इक पिण आर्य धर्म नुं जी कांइ, सुवचन श्री जिन पास।
सांभलवो तन मन करी जी कांइ, महाफल तास विमास ।।
२१. तो वलि स्यूं कहिवो अछै जी कांइ, विस्तीरण जे अर्थ।
ग्रहिवै करि ते फल तणुं जी कांइ, स्यूं वर्णविये तदर्थ ।।
२२. ते भणी देवानुप्रिया ! जी कांइ, जइये श्री जिन पास।
श्रमण भगवंत महावीर नैं जी कांइ, वंदां स्तवना तास ।।
२३. नमस्कार शिर नामियै जी कांइ, यावत जिन नीं जाण।
सेव करां साचै मनैं जी कांइ, ऊजम अधिको आण ।।
२४. ए सेवा आपां भणी जी कांइ, इहभव परभव हेर।
हित सुख खम नैं अर्थ छै जी कांइ, अनुगम आस्यै केड़ ।।

सोरठा

२५. हिताय हित नैं अर्थ, सुखाय सुख नैं अर्थ फुन।
क्षमज युक्त तदर्थ, शुभानुबंध आनुगामिक ।।

२६. *देवानंदा तिण अवसरे जी कांइ, सुण ऋषभदत्त नीं वाय।
हरष संतोष पायो घणो जी कांइ, जाव हृदय विकसाय ।।

सोरठा

२७. अतिहि हर्ष कथित, हृष्ट तुष्ट नों अर्थ ए।
तथा हृष्ट विस्मित, संतोषवान चित तुष्ट ते ।।
२८. आ ईषत कहिवाय, मुख सौम्यादि भाव करि।
समृद्धि पामी ताय, अति समृद्धि फुन नंदिता ।।

२९. प्रीतिमना कहिवाय, तृप्तिपणों अति मन विषे।
परम भलो मन थाय, पाठ परम सोमणस्सिया ।।

३०. हर्ष वशे करि तास, विकस्यो छै तेहनों हियो।
जाव शब्द में जास, अर्थ विचारी आखियै ।।
३१. *विहुं करतल यावत करी जी कांइ, ऋषभदत्त नों वचन्न।
विनय करीनैं अंगीकरै जी कांइ, तन मन थयो प्रसन्न ।।
३२. शत नवम तेतीसम देश ए जी कांइ, सौ चउराणूमीं ढाल।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी जी कांइ, 'जय-जश' हरष विशाल ।।

---

१६. बहुसालए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।
१७. तं महप्फलं खलु देवाणुप्पिए ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए,
१८,१९ किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ?

२०,२१ एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ?

२२. तं गच्छामो णं देवाणुप्पिए ! समणं भगवं महावीरं वंदामो
२३. नमंसामो जाव (सं० पा०) पज्जुवासामो।

२४. एयं णे इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ। (श०।१३९)

२५. 'हियाए' त्ति हिताय……'खमाए' त्ति क्षमत्वाय संगतत्वायेत्यर्थं; 'आणुगामियत्ताए' आनुगामिकत्वाय शुभानुबन्धायेत्यर्थः (वृ० प० ४५९)
२६. तए णं सा देवाणंदा माहणी उसभदत्तेणं माहणेणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ जाव (सं० पा०) हियया।

२७. हृष्टतुष्टम्—अत्यर्थं तुष्टं हृष्टं वा—विस्मितं तुष्टं—तोषवच्चित्तं यत्र तत्तथा, (वृ० प० ४५९)
२८. आनंदिता – ईषन्मुखसौम्यतादिभावैः समृद्धिमुपगता, ततश्च नन्दिता—समृद्धितरतामुपगता (वृ० प० ४५९)
२९. 'पीइमणा' प्रीतिः—प्रीणनं—आप्यायनं मनसि यस्याः सा प्रीतिमनाः 'परमसोमणस्सिया' परमसौमनस्यं—सुष्ठु सुमनस्कता सञ्जातं यस्याः सा परमसौमनस्यिता (वृ० प० ४५९)
३०. 'हरिसवसविसप्पमाणहियया' हर्षवशेन विसर्पद्—विस्तारयायि हृदयं यस्याः सा तथा (वृ० प० ४५९)
३१. करयल जाव (सं० पा०) कट्टु उसभदत्तस्स माहणस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ। (श० ९।१४०)

---

*लय : म्हारी सासूजी रै पांच पुत्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : १९५

दूहा

१. ऋषभदत्त ब्राह्मण तदा, कोडिंबक नर तेड़।
कहै धार्मिक रथ त्यार करि, वृषभे-जुक्त समेर ।।

२. *करो काज अति क्षिप्र, अहो देवानुप्रिया,
वृषभ विहुं अति चतुर, शीघ्र तसु गमन क्रिया।
गमन क्रिया जी, तिण जुगत लिया, रथ संग विहुं ते जोतरिया,
म्हैं तो जासां-जासां वंदन वीर, अधिक तन मन रलिया ।।

३. अतिहि प्रशस्त पिछाण, जोगवंत रूप भिला।
सम खुर नैं तसु पूंछ, वलि सम शृंग भला।
सम शृंग भलाजी, अतिहि उजला, लक्षण गुणरूप अधिक निमला।
म्हैं तो जासां-जासां वंदन वीर, प्रभू गुण ज्ञाननिला।

४. कंठाभरण कलाप, जंबूनद स्वर्णमयी।
वेगादिक गुण करी, विशिष्ट प्रधान सही।
प्रधान सही जी, अति कीर्ति कही, जन जोवत ही आनंद लही।
म्है तो जासां-जासां वंदन वीर, अधिक तन मन उमही ।।

५. रजत रूप्यमय घंट, भणण भिणकार वणै।
सूत्र-रज्जु ते रासड़ि सूत नीं वृषभ तणै।
वृषभ तणै जी, अति दिप्तपणै, तसु जातिवंत, लौकीक गिणै।
म्है तो जासां-जासां वंदन वीर, हरष आनंद घणै।

६. नाथ नासिका-रज्जु, प्रवर सुवरण मंडितं।
सुवरण तेह प्रधान, तिणे करि अवग्रहितं।
अवग्रहितं, जिन जश कहितं, पेखत जन मन आनंद लहितं।
म्हैं तो जासां-जासां वंदन वीर, परम प्रभु स्यूं प्रीतं ।।

७. नील वर्ण जे उत्पल, कमल करी नीको।
शिर-शेखर अभिराम, वलभ है जग जी[1] को।
जग जी को जी, निरखण पीको, तसु आभरण करि रूपे अधिको।
म्है तो जासां-जासां वंदन वीर, प्रभू त्रिभुवन टीको।।

८. वृषभ प्रधान युवान, लक्षणवंता आणी।
ते रथ जोतर कह्यो, वृषभ वरणन माणी।
वरणन माणी जी, हिव रथ जाणी, आगल वरणन कहियै ठाणी।
म्है तो जासां-जासां वंदन वीर, प्रभू केवल नाणी ।।

९. नानाविध नां न्हाल, प्रवर मणि रत्न तणी।
घंटा अधिक रसाल, जाल चउफेर बणी।
चउफेर बणी जी भिणकार घणी, मन प्रश्न हुवै तसु शब्द सुणी।
म्हैं तो जासां-जासां वंदन वीर, धीर प्रभु तीर्थ धणी ।।

१. तए णं से उसभदत्ते माहणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

२,३. खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! लहुकरणजुत्त-जोइय-समखुरवालिहाण-समलिहियसिंगेहिं,
लघुकरणं—शीघ्रक्रियादक्षत्वं तेन युक्तौ यौगिकौ च—प्रशस्तयोगवन्तौ ·····'वालिहाण' त्ति वालधाने—पुच्छौ (वृ० प० ४५९)

४. जंबूणयामयकलावजुत्त-पतिविसिट्ठेहिं,
जाम्बूनदमयौ—सुवर्णनिर्वृत्तौ यौ कलापौ—कण्ठाभरणविशेषौ ताभ्यां युक्तौ प्रतिविशिष्टकौ च—प्रधानौ जवादिभिर्यौ तौ (वृ० प० ४५९)

५,६. रययामयघंटा-सुत्तरज्जुय-पवरकंचणनत्थपग्गहोग्गहियएहिं,
रजतमय्यौ—रूप्यविकारौ घण्टे ययोस्तौ तथा, सूत्ररज्जुके—कार्पासिक-सूत्रदवरकमय्यौ वरकाञ्चने—प्रवरसुवर्णमण्डितत्वेन प्रधानसुवर्णे ये नस्ते—नासिकारज्जू तयोः प्रग्रहेण—रश्मिनाऽवगृहीतकौ—बद्धौ यौ तौ (वृ० प० ४५९)

७. नीलुप्पलकयामेलएहिं,
नीलोत्पलैः—जलजविशेषैः कृतो—विहितः 'आमेल' त्ति आपीडः—शेखरो ययोस्तौ (वृ० प० ४५९)

८. पवरगोणजुवाणएहिं

९. नाणामणिरयण-घंटियाजालपरिगयं,

---

*लय : धन-धन भिक्षु स्वाम

1. जीव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. प्रशस्त रूड़ा काष्ठ, तणो जूसर जासं।
यौत्र रज्जुका युग ए, अतिही शुभ तासं।
शुभ तासं जी, वर सुख वासं, निरखत ही हरष अधिक आसं।
म्है तो जासां-जासां वंदन वीर, करण जिन पर्युपासं।।

११. कारीगर अति निपुण, भलेज प्रकार करी।
ए सहु विरचित निर्मित, कीधा हरष धरी।
हरष धरी जी, जन जश उचरी, अति परम लक्षण करि सहित वरी।
म्है तो जासां-जासां वंदन वीर, स्वाम संपति सखरी।।

१०,११. सुजायजुग-जोत्तरज्जुयजुग-पसत्थसुविरचियनिमियं, सुजातं—सुजातदारुमयं (वृ० प० ४५९)

१२. एहवो धार्मिक जाण-पवर जोतरि थापो।
शीघ्र करी सझ त्यार, आण मुझ नैं आपो।
मुझ नैं आपो जी, तज संतापो, वर विनय करी तुझ जस व्यापो।
म्है तो जासां-जासां वंदन वीर, मिटै प्रभु थी पापो।।

१२. पवरलक्खणोववेयं-धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एतमाणत्तियं पच्चप्पिणह। (श० ९।१४१)

१३. नवम तेतीसम देश, ढाल इकसौ पच्चाणुं।
भिक्षु भारिमाल ऋषिराय, गणी 'जय-जश' भाणुं।
जय जश भाणुं जी, गण गुण-खाणुं, महावीर तणो शासण जाणूं।
म्हांनै लागै-लागै स्वाम सुभाव, भाव संपत माणुं।।

ढाल : १९६

दूहा

१. कोडुंबिक तिण अवसरे, ऋषभदत्त नीं वाय।
सांभल नैं हरख्यो घणो, जाव हियो विकसाय।।
२. करतल जोड़ी इम कहै, एवं इम हे स्वाम!
तहत वचन ए आपरो, शीघ्र करेसूं काम।।
३. आज्ञा विनय करी वचन, यावत अंगीकार।
कार्य सर्व करी तिणे, सूंपी आज्ञा सार।।
४. ऋषभदत्त ब्राह्मण तदा, स्नान जाव अल्प भार।
मोल करी मुंहगा इसा, आभरण पहिर्या सार।।
५. अलंकृत तनु नैं करी, निज घर थी निकलंत।
बाह्य साल उवट्ठाण ज्यां, जिहां धार्मिक रथ तंत।।
६. तिहां आव्या आवी करी, धार्मिक यान प्रधान।
आरूढ थयो चढ्यो तदा, पेखत ही पुन्यवान।।
७. देवानंदा तिण अवसरे, अंतेउर में न्हाय।
कुलीन स्त्री ते कारणैं, प्रच्छन स्नान कहाय।।

८. देवानंदा नो इहां, वर्णन इम देखाय।
वाचनांतरे ते अछै, सांभलज्यो चित ल्याय।।

१. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा उसभदत्तेणं माहणेणं ए
वुत्ता समाणा हट्ठ जाव (सं० पा०) हियया

२,३. करयल जाव (सं० पा०) एवं सामी! तहत्ताणा
विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता खिप्पामे
लहुकरणजुत्त जाव धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामे
उवट्ठवेत्ता, तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति। (श० ९।१४२

४,५. तए णं से उसभदत्ते माहणे ण्हाए जाव अप्पमहग्घा
भरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ पडिणिक्खमति
पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाल
जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे

६. तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पव
दुरूढे। (श० ९।१४३

७. तए णं सा देवाणंदा माहणी (पा० टि० ६) अंत
अंतेउरंसि ण्हाया। 'अन्तः' मध्येऽन्तःपुरस्य स्नात
अनेन च कुलीनाः स्त्रियः प्रच्छन्नाः स्नान्तीति दर्शित
(वृ० प० ४५९

८. इह च स्थाने वाचनान्तरे देवानन्दावर्णक एवं दृश्यते
(वृ० प० ४५९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*पुण्य प्यारी सुणज्यो देवानंदा अधिकार। (ध्रुपदं)

९. करी स्नान वलिकर्म सार, कीधा कोतक विविध प्रकार।
मसी तिलकादिक सुविचार रे।।

१०. मंगलीक नैं अर्थे प्रसाधि, ग्रहै सरसव नैं द्रोवादि।
टालवाज अशुभ सुपनादि।।

११. वलि अन्य कीधो ते कहियै, वर नेउर चरणे लहियै।
मणी मेखला कटि-तट गहियै।।

१२. हार करिकै रचित हिय छायो, उचित युक्त करि शोभायो।
तसु पेखत नेत्र ठरायो।।

१३. कडै करिकै अधिक कांति होवै, मुद्रिका अंगुलियां सोहै।
जन देखत ही मन मोहै।।

१४. विचित्र मणिमय जाणी, एकावली कांति वखाणी।
तिणसुं देवानंदा दीपाणी।।

१५. कंठ-सूत्र अधिक श्री कारं, वलि उर रह्या आभरण सारं।
रूढिगम्य कह्या वृत्तिकारं।।

१६. ग्रैवेयक प्रसिद्ध कहियै, ए तो आभरण कंठ नां लहियै।
तिणसूं देवानंदा गहगहियै।।

१७. कटिसूत्रेण नाना प्रकार, मणि रत्नां नां भूषण सार।
तिणसूं शोभित अंग उदार।।

१८ चीन अंशुक नाम ए दोय, वस्त्र मध्ये प्रवर ते होय।
तिके पहिर्‌या छै अवलोय।।

१९. दुकूल वृक्ष तणी सुविधान, वल्कल थी नीपनो जान।
तिको दुकूल वस्त्र पहिछान।।

२०. ते पिण वस्त्र घणुं सुखमाल, ऊपर ओढणो तेह विशाल।
मन हरषै नयण निहाल।।

२१. सर्व ऋतु नां नीपना अशेष, सुगंध फूल करी सुविशेष।
तिण सूं वींट्या शिर नां केश।।

२२. वर चंदन चरचित चंगी, निलाट विषेज सुरंगी।
आभरण भूषित अंगी।।

२३. कृष्णागर सुगंध अशेष, धूपे धूपित सुविशेष।
श्री देवी सरिखो वेष[1]।।

२४. काया चलक-चलक चलकंती, प्रभा भलक-भलक भलकंती।
जाणै मुलक-मुलक मुलकंती।।

सोरठा

२५. एह थकी हिव सोय, प्रकृत छै जे वाचना।
कहियै छै अवलोय, एहवुं आख्यो वृत्ति में।।

९,१०. कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता,
तत्र कौतुकानि—मषीतिलकादीनि मङ्गलानि—सिद्धार्थकदूर्वादीनि (वृ० प० ४५९)

११. किंच [किते (ब)]—वरपादपत्तणेउर-मणिमेहला-

१२. हाररचित-उचिय-
उचितैः युक्तैः (वृ० प० ४५९)

१३. कडग-खुड्डाग-
'खुड्डाग' त्ति अङ्गुलीयकैश्च (वृ० प० ४५९)

१४. एकावली-
विचित्रमणिकमय्या (वृ० प० ४५९)

१५,१६. कंठसुत्त-उरत्थगेवेज्ज-
कण्ठसूत्रेण च—उरःस्थेन च रूढिगम्येन (वृ० प० ४५९)

१७. सोणिसुत्तग-नाणामणि-रयणभूसणविराइयंगी,

१८. चीणंसुयवत्थपवरपरिहिया,

१९,२०. दुगुल्लसुकुमालउत्तरिज्जा,
दुकूलो—वृक्षविशेषस्तद्वल्काज्जातं दुकूलं—वस्त्रविशेषस्तत् सुकुमारमुत्तरीयम् उपरिकायाच्छादनं यस्याः सा तथा (वृ० प० ४६०)

२१. सव्वोतुयसुरभिकुसुमवरियसिरया,

२२. वरचंदणवंदिता, वराभरणभूसितंगी,
वरचन्दनं वन्दितं—ललाटे निवेशितं (वृ० प० ४६०)

२३. कालागरुधूवधूविया, सिरिसमाणवेसा
श्रीः—देवता तया समाननेपथ्या, (वृ० प० ४६०)

२५. इतः प्रकृतवाचनाऽनुश्रियते- (वृ० प० ४६०)

***१. राणी भाखैं सुण रे सूड़ा**

१. प्रस्तुत ढाल की गाथा ७ से २३ तक की जोड़ वाचनान्तर के आधार पर की गई है, जो अंगसुत्ताणि पृष्ठ ४३४ टि० ६ से यहां उद्धृत किया हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६. *जाव तोल हलका मोल भारी, एहवा आभरण अधिक उदारी।
अलंकृत तनु सिणगारी ।।
२७. एहवी देवानंदा मन हरणी, अनुपम तनु सोवन वरणी।
कीधी पूर्व भव में करणी ।।
२८. दास्यां कुब्जका साथ घणेरी, बलि चिलात देशज केरी।
जाव शब्द थी एह अनेरी ।।
२९. वामणी ह्रस्व तनु नीं कहियै, वडभी[1] हियो ऊंचो लहियै।
बब्बरी बब्बर देश नीं गहियै ।।
३०. बउसिया देश नीं उपनीं, ऋषिगणिका देश नीं निपनीं।
वासीगणिका देश नीं जन्नी ।।
३१. उपनी योनिका देश केरी, पल्हवित देश नीं पिण चेरी।
देश ल्हासिया तणी घणेरी ।।
३२. देश लउसिया नी प्रकाशी, आरब दमिल सिंहल देश वासी।
पुलिंदि पक्कण नीं गुणरासी ।।
३३. वहिल मुरुड देश नीं जाणी, सब्बर पारसी देश नीं स्याणी।
बहुविध जनपद थी आणी ।।
३४. तेहवा देश तणी अपेक्षायो, अन्य देश विषे पिण थायो।
तिके कीधी एकठी ताह्यो ।।
३५. निज देश विषे ते जाणी, वस्त्र पहिरै जेम पिछाणी ।।
ग्रहण कियो है वेष सयाणी ।।
३६ इंगित चेष्टा नेत्रादि, चिंतित पर चिंतव्यूं साधि।
एतो जाणै धर अहलादि ।।
३७. प्रार्थित परवांछा जाणंद, कुशल डाही विनीत अमंद।
चेटिका चक्रवालज वृंद ।।
३८. वरिसधर ते नपुंसक कीधा, स्थविर प्रयोजने सुप्रसिधा।
जावै अंतेउर में सीधा ।।
३९. कंचुइज पोलिया गहियै, महतरग तणो अर्थ कहियै।
अंतेउर नां कार्य चिंतवियै ।।
४०. एतला नां वृंद थी अमंदा, परवरी थकी देवानंदा।
अंतेउर थी नीकली आनंदा ।।

सोरठा

४१. वली सर्व ए जाण, अन्य वाचना नें विषे।
छै साक्षात पिछाण, एहवुं आख्युं वृत्ति में ।।
४२. *जिहां बाहिरली उवट्ठाण साला, जिहां धार्मिक यान निहाला।
तिहां आवी छै गुणमाला ।।

*लय : राणी भाखे सुण रे सूड़ा
१. जिसका आगे का भाग निकला हुआ हो।

२६. जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा

२८. बहूहिं खुज्जाहिं, चिलातियाहिं जाव

२९. 'वामणियाहिं' ह्रस्वशरीराभिः 'वडहियाहिं' मडह-कोष्ठाभिः 'बब्बरियाहिं (वृ० प० ४६०)

३०. पओसियाहिं[1] ईसिगणियाहिं वासगणियाहिं (वृ० प० ४६०)

३१. जोण्हियाहिं पल्हवियाहिं ल्हासियाहिं (वृ० प० ४६०)

३२. लउसियाहिं आरबीहिं दमिलाहिं सिंहलीहिं पुलिंदीहिं पक्कणीहिं (वृ० प० ४६०)

३३,३४. बहलीहिं मुरुंडीहिं सबरीहिं पारसीहिं णाणादेस-विदेसपरिपिंडियाहिं' नानादेशेभ्यो— बहुविधजनपदेभ्यो विदेशे— तद्देशापेक्षया देशान्तरे परिपिण्डिता याः (वृ० प० ४६०)

३५. सदेसनेवत्थगहियवेसाहिं (वृ० प० ४६०)

३६,३७. 'इंगियचिंतियपत्थियवियाणियाहिं' इङ्गितेन— नयनादिचेष्टया चिन्तितं च परेण प्रार्थितं च— अभिलषितं विजानन्ति यास्तास्तथा ताभिः 'कुसलाहिं विणीयाहिं' युक्ता इति गम्यते 'चेडियाचक्कवाल' (वृ० प० ४६०)

३८-४०. वरिसधर-थेरकंचुइज्ज-महत्तरकवंदपरिक्खित्ता' वर्षधराणां—वर्धितककरणेन नपुंसकीकृतानामन्तः पुरमहल्लकानां 'थेरकंचुइज्ज' त्ति स्थविरकञ्चुकिनां —अन्तःपुरप्रयोजननिवेदकानां प्रतीहाराणां वा महत्तरकाणां च—अन्तःपुरकार्यचिन्तकानां वृन्देन परिक्षिप्ता (वृ० प० ४६०)

४१. इदं च सर्वं वाचनान्तरे साक्षादेवास्ति। (वृ० प० ४६०)

४२. निग्गच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ,

१. अंगसुत्ताणि में वाचनान्तर का पाठ उद्धृत किया है, वहां 'वउसियाहिं' पाठ है। जोड़ इसी पाठ के आधार पर की हुई प्रतीत होती है। पर वृत्ति में इस स्थान पर 'पओसियाहिं' पाठ है। इस सन्दर्भ में समग्र पाठ वृत्ति से लिया गया है। इसलिए यहां भी उसे ही उद्धृत किया जा रहा है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४३. तेह धार्मिक यान प्रधान, आरूढ थई गुणवान।
मन हरष घणो असमान।
४४. शत नवम तेतीसम देश, एक सौ नैं छन्नूमीं एस।
कही ढाल रसाल विशेष॥
४५. भिक्षु भारीमाल ऋषिराय, सुख संपति 'जय-जश' पाय।
गण आनंद हरष सवाय॥

४३. उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा। (श० ६।१४४)

ढाल : १६७

दूहा

१. ऋषभदत्त तिण अवसरे, देवानंदा साथ।
धार्मिक यान प्रधान प्रति, आरूढ थकै विख्यात॥
२. पोता नैं परिवार करि, परवरियो पुन्यवंत।
माहणकुंड जे ग्राम ते, नगर मध्य निकलंत॥
३. चैत्य जिहां बहुसाल छै, तिण ठामें आवंत।
छत्रादिक जिनवर तणां, वर अतिशय देखंत॥
४. धार्मिक यान प्रधान प्रति, तिण ठामे स्थापंत।
धार्मिक यान प्रधान थी, ऋषभदत्त उतरंत॥
५. भगवंत श्री महावीर प्रति, पंचविधे पहिछाण।
अभिगम करि सनमुख गमन, सखर साचवै जाण॥
६. सचित्त द्रव्य पुष्पादि तज, जिम बीजे शतकेह।
पंचमुद्देशा में कह्यो, ते विध इहां कहेह॥
७. जाव त्रिविध पर्युपासना, मन वच काया जाण।
शुद्धपणें सेवा करै, अधिक उलट मन आण॥

१. तए णं से उसभदत्ते माहणे देवाणंदाए माहणीए सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढे समाणे
२. नियगपरियालसंपरिवुडे माहणकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ,
३. जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादीए तित्थकरातिसए पासइ,
४. धम्मियं जाणप्पवरं ठवेइ, ठवेत्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ,
५. समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छति,
६,७. सच्चित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए एवं जहा बितियसए [२।६७] जाव (सं० पा०) तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ। (श० ६।१४५)

*जगतारक वीर जिनंदा, लाल सुगणजी। (ध्रुपदं)

८. देवानंदा तिण अवसर, लाल सुगण जो,
वर धार्मिक रथ थी उत्तर जो॥
९. बहु कुब्ज साथ संचरी, जाव महत्तर वृंद परवरी॥
१०. प्रभु प्रति पंचविध चित्त ल्यावै, अभिगम करि सन्मुख जावै॥
११. द्रव्य सचित्त पुष्पादि पिछाणी, तसु अलगा मूकै जाणी॥
१२. द्रव्य अचित्त वस्त्रादि वारू, ते अणतजवे सुख सारू॥
१३. गात्रलट्ठी ते देही, ते नमी विनय करि तेही॥
१४. चक्षु देखतां मन मोड़ै, अंजलि बेहुं कर जोड़ै॥

८. तए णं सा देवाणंदा माहणी धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता
९. बहूहिं खुज्जाहिं जाव......महत्तरग-वंदपरिक्खित्ता
१०. समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ,
११. सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए
पुष्पताम्बूलादिद्रव्याणां व्युत्सर्जनया त्यागेनेत्यर्थः (वृ० प० ४६०)
१२. अचित्ताणं दव्वाणं अविमोयणयाए
वस्त्रादीनामत्यागेनेत्यर्थः (वृ० प० ४६०)
१३. विणयोणयाए गायलट्ठीए
१४. चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं

*लय : सुखपाल सिंहासण लावज्यो राज

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५. मन चंचल ते स्थिर करते, विध पंच एम अनुसरते ।।
१६. जिहां भगवंत श्री महावीरं, तिहां आवै छै गुणहीरं ।।
१७. प्रभु प्रति त्रिणवार विचक्षण, दक्षिण कर थकी प्रदक्षिण ।।

१८. वंदे वच स्तुति वरती, वलि नमस्कार अति करती ।।
१९. द्विज ऋषभदत्त प्रति जाणी, आगल कर रही सयाणी ।।

सोरठा

२०. ठिया चेव नों ताय, छै शब्दार्थ स्थिता रही ।
वृत्तिकार कहिवाय, ऊभी पिण बैठी नहीं ।।
२१. 'ष्ठागति निवृत्ति धातु, बैसण रो पिण अर्थ ह्वै ।
ऊभी तणो कहातु, कारण को दीसै नहीं ।।
२२. सूत्र उवाई[1] मांय, कोणिक नृप राण्यां सहित ।
श्री जिन वंदन आय, एहवुं आख्यूं छै तिहां ।।
२३. कोणिक कर अगवाण, रमण सुभद्रा प्रमुख जे ।
ठिया पाठ पहिछाण, सेव करै प्रभु पे रही ।।

२४. जिन वाणी सुण ताम, कोणिक ऊठै ऊठ नैं ।
जिन वंदी सिर नाम, आयो जिण दिशि ही गयो ।।
२५. रमण सुभद्रा आदि, ऊठै ऊठी नैं तदा ।
जिन वंदी अह्लादि, नमण करी ते पिण गई ।।
२६. जो बैठी नहिं होय, तो ऊठै ऊठी करी ।
इम किम आख्यो जोय, पाठ देख निर्णय करो ।।
२७. तृतीय उत्तराध्ययण, सुरवर जे सुरलोक में ।
ठिच्चा रही सुवयण, चवी मनुष्य में ऊपजै ।।
२८. इहां पिण धातू तेह, अर्थ हुवै ऊभा तणो ।
तो स्यूं सुर वर जेह, सुरलोके बेसे नहीं ।।
२९. तिण कारण अवलोय, ष्ठा धातू नों अर्थ जे ।
बेसण नों पिण होय, नियम नथी ऊभा तणो ।।' (ज०स०)
३०. परिवार सहित विधि धरती, सुश्रूषा सेवा करती ।।
३१. वले नमस्कार शिर नमती, सन्मुख विनये करि रमती ।
३२. कर जोड़ करै इम सेवा, तसु करण जोग सुध लेवा ।।
३३. तिण अवसर देवानंदा, प्रभु पेखंतां आणंदा ।।
३४. पुत्र स्नेह थकी सुत्र पायो, स्तनमुखे दूध तव आयो ।।

३५. सुत दर्शन करि चित ठरिया, आनंद जल लोचन भरिया ।।

३६. अति हरष-वृद्धि तनु थावै, बिलियां में बांह न मावै ।।

---

१५. मणस्स एगत्तीभावकरणेणं,
१६. जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ,
१७. समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ,
१८. वंदइ नमंसइ,
१९. उसभदत्तं माहणं पुरओ कट्टु

२०. ठिया चेव
'ठिया चेव' त्ति ऊर्द्ध्वस्थानस्थितैव अनुपविष्टेत्यर्थः
(वृ० प० ४६०)

२३. तए णं ताओ सुभद्दप्पमुहाओ देवीओ.......कूणियरायं पुरओ कट्टु ठिइयाओ चेव सपरिवाराओ अभिमुहाओ विणएणं पंजलिकडाओ पज्जुवासंति (ओवाइयं सू० ७०)
२४. तएणं से कूणिए राया भिंभसारपुत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा.......जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए। (ओवाइयं सू० ८०)

२७. तत्थ ठिच्चा जहाठाणं, जक्खा आउक्खए चुया।
उवेंति माणुसं जोणिं, से दसंगेऽभिजायई ।।
(उत्तर० ३/१६)

३०. सपरिवारा सुस्सूसमाणी
३१. नमंसमाणी अभिमुहा विणएणं
३२. पंजलिकडा पज्जुवासइ। (श० ९/१४६)
३३. तए णं सा देवाणंदा माहणी
३४. आगयपण्हया
'आयातप्रस्नवा' पुत्रस्नेहादागतस्तनमुखस्तन्येत्यर्थः
(वृ० प० ४६०)
३५. पप्पुयलोयणा
प्रप्लुतलोचना पुत्रदर्शनात् प्रवर्त्तितानन्दजलेन
(वृ० प० ४६०)
३६. संवरियवलयबाहा
संवृतौ—हर्षातिरेकादतिस्थूरीभवन्तौ निषिद्धौ वलयैः—कटकैः बाहू—भुजौ यस्याः सा (वृ० प० ४६०)

---

१. ओ० सू० ६९,७०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७. कंचुक नां अंचल खुलिया, कस छूट तनु वृद्धि रलिया ।।

३८. घन नीं धारा करि हणिया, तरु कंद पुष्प जिम फलिया ।।

३९. तिम रोमकूप उलसाया, इम आनंद अधिको पाया ।।

४०. दृष्टि प्रति अणमीचंती, प्रभु पेख रही पुन्यवंती ।।

४१. गोतम भगवंत विशेखी, ए सगलो विरतंत देखी ।।

४२. प्रभु वंदी नमण करंता, लाल स्वाम जी,
हे भगवंत ! एम वदंता ।।

४३. हे भगवंत ए किण कारण, देवानंदा गुण धारण ।।

४४. स्तनमुखे दूध तसु आयो, आनंद जल नेत्र भरायो ।।

४५. विलियां में बांह न मावै, कस छूटी कंचुक भावै ।।

४६. रूं कूप तास उलसाया, जिम घन थी पुफ विकसाया ।।

४७. देवानुप्रिय नैं देखी, इणरै जाग्यो स्नेह विशेखी ।।

४८. तुम जोय रही इक धारा, नहिं खंडे निजर लिगारा ।।

४९. निरखंती मूल न धापै, इणरै तन मन प्रेमज व्यापै ? ।।

५०. तब भगवंत श्री महावीरं, लाल गोयमा,
गोतम प्रति वदै सधीरं ।।
(गोतम जी सुणियै कारण, लाल गोयमा !)

५१ इम निश्चै गोतम जाणी, ए देवानंदा स्याणी ।।

५२. ए ब्राह्मणी म्हारी मातं, हूं छूं एहनो अंगजातं ।।

५३. रात्री बयांसी ताह्यो, प्रभु रह्या कूख रै मांह्यो ।।

५४. ए आचारंग में जाणी, इहां समचै बात वखाणी ।।

५५. तिण कारण देवानंदा, आ रोम-रोम हुलसंदा ।।

५६. प्रथम गर्भआधानुं, ते पुत्र स्नेह करि जानुं ।।

५७. तिण कारण पह्नो आयो, जाव रोम-कूप विकसायो ।।

५८. मुझ इक धारा निरखंती, मुझ देख-देख हरषंती ।।

५९. निरखंती निजर न खंडे, पूरव सुत-नेह न छंडे ।।

६०. शत नवम तेतीसम देशो, इकसौ सताणूमीं एसो ।।

६१. भिक्षु भारीमाल ऋषिराया, 'जय-जश' सुख हरष सवाया ।।

---

३७. कंचुयपरिक्खित्तिया
कञ्चुको—वारबाणः परिक्षिप्तो—विस्तारितो हर्षातिरेकस्थूरीभूतशरीरतया यया सा (वृ० प० ४६०)

३८. धाराहयकलंबगं पिव
मेघधाराभ्याहतकदम्बपुष्पमिव (वृ० प० ४६०)

३९. समूसवियरोमकूवा

४०. समणं भगवं महावीरं अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ । (श० ९/१४७)

४१, ४२. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

४३. किं णं भंते ! एसा देवाणंदा माहणी

४४. आगयपण्हया पप्पुयलोयणा

४५. संवरियवलयबाहा कंचुयपरिक्खित्तिया

४६. धाराहयकलंबगं पिव समूसवियरोमकूवा

४७-४९. देवाणुप्पियं अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ ?

५०. गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—

५१. एवं खलु गोयमा ! देवाणंदा

५२. माहणी ममं अम्मगा, अहण्णं देवाणंदाए माहणीए अत्तए ।

५३. ....बासीतिहिं राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं
(आयार चूला १५/५)

५५-५७. तएणं एसा देवाणंदा माहणी तेणं पुव्वपुत्तसिणेहरागेणं आगयपण्हया जाव (सं० पा०) समूसवियरोमकूवा

५८,५९. ममं अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ । (श० ९/१४८)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : १९८

दूहा

१. गोतम प्रति ए वीर जिन, आखी बात उदार।
देवानंदा सांभली, पामी तन मन प्यार।।

*प्रभुजी ! आप छो भय भंजना जी। (ध्रुपद)

२. श्री जिन-वचन सुणी देवानंदा, होजी आतो पामी परम आनंदा।।
३. भाग्यवंत मुझ पुन्य सवाया, होजी एतो वीर म्हारी कूखे आया।।
४. उत्पत्ति मूलगी तो छै म्हारी, होजी लियो क्षत्रियकुल अवतारी।।
५. श्रमण भगवंत म्हारा अंगजातो,
होजी म्है तो कदेय सुणी नहिं बातो।।
६. चरण केवल धर वीर विख्यातो,
होजी हुआ तीन लोक रा नाथो।।
७. च्यार तीर्थ नां नायक स्वामी, होजी एतो मुक्ति जावा रा कामी।।
८. देवाधिदेव तीर्थंकर ज्ञानी, यांसूं बात नहीं कोइ छानी।।
९. जग दीपक जल द्वीपा समान, होजी एतो तिरण तारण भगवान।।
१०. अभयदायक जिनदेव विख्याता, होजी एतो ज्ञान चक्षु नां दाता।।
११. राग-द्वेष अरि जीतणहारा, प्रभु गुण करि ज्ञान भंडारा।।
१२. अतिशय धारक आप जिनंदा, होजी एतो मेटण भव दुख फंदा।।
१३. जगत उद्धारक श्री जिन नीको,
होजी ओतो तीन भवन जश टीको।।
१४. नाथ अनाथां रा आप अमीरा, एतो धर्म चक्री जिन हीरा।।
१५. ऐसा है वीर-प्रभु गुण धारं, होजी म्है तो देख्यो है आज दिदारं।।
१६. ते मुझ कुक्षि विषे अवतरिया, होजी ज्यांनै पेखत लोचन ठरिया।।
१७. इम देवानंदा हरष मन धरती,
होजी आतो श्री जिनदर्शन करती।।

दूहा

१८. एह ढाल कही वारता, सूत्र विषे ते नांय।
परंपराइं करि कही, अनुमाने कर तांय।।

१९. *नवम तेतीसम देश विशालं, होजी आतो इकसौ अठाणूंमी ढालं।।
२०. भिक्षु भारीमाल ऋषिराय पसायो,
होजी ओतो 'जय-जश' आनंद पायो।।

---

*लय : आज अंबाजी रे नोपत बाजै

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : १९९

दूहा

१. तिण अवसर प्रभु वीर जिन, ऋषभदत्त नैं ताय।
देवानंदा नैं वलि, मोटी परषद मांय।।

२. अति मोटी परषद विषे, ऋषि परषदा मांय।
जाव परिषदा पडिगया, धर्म सुणी नैं ताय।।

३. जाव शब्द में अर्थ ए, मुनि-परषदा मांय।।
वाचंयम मुनि नाम है, वचन गुप्त अधिकाय।।

४. यती परषदा नैं विषे, धर्म क्रिया रै मांय।
यत्नवान अतिही तिको, यती अर्थ कहिवाय।।

५. अनेक सय नीं परिषदा, अनेक सय परिमाण।
तास वृंद परिवार जसुं, इत्यादिक पहिछाण।।

*प्रभु मोरा शोभ रह्या मुनिगन में, सुर नर परिषद वृंदन में।।
(ध्रुपदं)

६. ऋषभदत्त ब्राह्मण तिण अवसर, जिन वच सुण हरष्यो मन में।
७. अधिक संतोष पायो हिरदा बिच, ऊठी ऊभा ह्वै तन में।।

८. तीन प्रदक्षिण देई प्रभु नैं, वंदन स्तुति करि प्रणमें।।
९. वीर प्रतै कहै हे प्रभु! इमहिज, सत्य वचन तुझनां जग में।।

१०. जिम खंधक कह्यो तिम यावत, ए तुम्है कहो छो तिमज गमे।।
११. एम कही जई कूण ईशाणे, आभरण माल्य उतार वमे।।

१२. स्वयंमेव लोच पंच मुष्टी करि, वीर पे आय वंदै प्रणमें।।
१३. कर जोड़ी कहै जीव लोक प्रभु! समस्तपणैं ए ज्वलित धमे।।

१४. प्रकर्षे करि ज्वलित जीव ए, जरा मरण करि अधिक भमे।।

१५. जिम खंधक तिम दीक्षा लीधी, ऋषभदत्त मुनि चरण रमे।

१६. जाव सामायक आदि देई नैं, अंग इग्यार भण्यो हिय में।।
१७. जाव बहु चौथ छट्ठ अट्ठम तप, दशम तप करि आतम दमे।।
१८. जाव विचित्र तपे करि आतम, भावित वासित शासन में।।

*लय : हाजरी मैं स्वामीनाथ हमेशा याद करूं

१,२. तए णं समणे भगवं महावीरे उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदाए माहणीए
तीसे य महतिमहालियाए इसिपरिसाए जाव (सं० पा०) परिसा पडिगया (श० ९/१४९)

३. यावत्करणादिदं दृश्यं—
मुणिपरिसाए (वृ० प० ४६०)
तत्र मुनयो—वाचंयमाः वृ० प० ४६०)

४. जइपरिसाए
यतयस्तु—धर्मक्रियासु प्रयतमानाः (वृ० प० ४६०)

५. अणेगसयाए अणेगसयवंदाए अणेगसयवंद परियालाए
अनेकानि शतानि यस्याः सा तथा तस्यै अनेकशत। प्रमाणानि वृन्दानि परिवारो यस्याः सा तथा तस्यै।
(वृ० प० ४६०)

६,७. तए णं से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ,

८,९. समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ,
वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—एवमेयं भंते! तहमेयं भंते!

१०,११. जहा खंदओ जाव (सं० पा०) से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं
दिसिभागं अवक्कमति। अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ,

१२,१३. सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव
उवागच्छई⋯⋯वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं भंते! लोए,

१४. पलित्ते णं भंते! लोए, आलित्त-पलित्ते णं भंते! लोए जराए मरणेण य।

१५. एवं एएणं कमेणं जहा खंदओ तहेव पव्वइओ।
(पा० टि० ७)

१६,१७. जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम-दसम

१८. जाव (सं० पा०) विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९. बहु वर्षां लग चारित्र पाली, मास संलेखण अणसण में ।।
२०. साठ भक्त मुनि अणसण छेदी, अणसण असण-रहित तन में ।।

१९,२०. बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाएसंले हणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ,

२१. जे निर्वाण तणे अर्थे मुनि, नग्नपणो धारयो मन में ।।
२२. यावत ते अर्थ प्रति आराधै, जीव सर्व दुःख क्षय शिव में ।।

२१. जस्सट्ठाए कीरति नग्गभावे
२२. जाव तमट्ठं आराहेइ, आराहेत्ता जाव (सं० पा०) सव्वदुक्खप्पहीणे । (श० ९/१५१)

२३. तिण अवसर ते देवानंदा, धर्म सुणी हरषी मन में ।

२३. तए णं सा देवाणंदा माहणी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा

२४. वीर प्रतै त्रिण वार प्रदक्षिण, यावत हरष धरी नैं नमे ।।
२५. वीर प्रतै कहै हे प्रभु ! इमहिज, सत्य वचन तुजनां जग में ।।

२४-२५. समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवमेयं भंते तहमेयं भंते !

२६. इम जिम ऋषभदत्त तिमहिज ए, जाव धर्म कह्यो आण नमे ।।

२६. एवं जहा उसभदत्तो तहेव जाव धम्ममाइक्खियं । (श० ९/१५२)

२७. देवानंदा नैं प्रभु तिण अवसर, पोतै प्रव्रज्या देइ दमे ।।

२७. तए णं समणे भगवं महावीरे देवाणंदं माहणिं सयमेव पव्वावेइ,

२८. स्वयमेव चंदनबाला नैं प्रभु, शिष्यणीपणैं दै सुभ गन में ।।

२८. सयमेव अज्जचंदणाए अज्जाए सीसिणित्ताए दलयइ । (श० ९।१५३)

२९. तब चंदणा अज्जा देवानंदा प्रति, स्वयमेव प्रव्रज्या दियै तेण समे ।।

२९. तए णं सा अज्जचंदणा अज्जा देवाणंदं माहणिं सयमेव पव्वावेति (पृ० ४३७ टि० ८)

सोरठा

३०. वीर प्रव्रज्या दीध, देवानंदा नैं प्रथम ।
वलि चंदनबाला कीध, तेह प्रव्रज्या नैं विषे ।।
३१. जेह पदार्थ सोय, जाण्या नहिं छै तेहनुं ।
जाणपणादिक जोय, द्वितीय वार इण कारणै ।।

३०,३१ इह च देवानन्दाया भगवता प्रव्राजनकरणेऽपि यदार्यचन्दनया पुनस्तत्करणं तत्तत्रैवानवगतावगम-करणादिना विशेषाधानमित्यवगन्तव्यमिति । (वृ० प० ४६०,४६१)

३२. *स्वयमेव मुंडन लोच करै तसु, स्वयमेव तास सीखावन में ।।
३३. इम जिम ऋषभदत्त तिमहिज ए, चंदना सर्व बतावन में ।।
३४. इम एहवूं उपदेश धर्म नुं, सम्यक् प्रकार पडिवज्जन में ।।
३५. ते चंदणा नीं आज्ञा तिम चालै, जाव संजम करि आतम दमे ।।

३२. सयमेव मुंडावेति सयमेव सेहावेति
३३. एवं जहेव उसभदत्तो तहेव अज्जचंदणाए अज्जाए
३४. इमं एयारूवं धम्मियं उवदेसं सम्मं संपडिवज्जइ,
३५. तमाणाए तह गच्छइ जाव संजमेणं संजमति । (श० ९।१५४)
'तमाणाए' त्ति तदाज्ञया—आर्यचन्दनाज्ञया । (वृ० प० ५६१)

३६. देवानंदा अज्जा तिण अवसर, चंदना पास अहिज्जन में ।।
३७. सामायिकादिक अंग इग्यारै, भणी गुणी नैं परिग्रह खमे ।।

३६,३७. तए णं सा देवाणंदा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अंतियं सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ,

३८. शेष विस्तार सर्व तिम कहिवो, जाव सर्व दुःख क्षीण वमे ।।
३९. नवम तेतीसम देश एकसौ, ढाल ननाणूमीं वर्णन में ।।
४०. भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' हरष सदानंद में ।।

३८. सेसं तं चेव जाव (सं० पा०) सव्वदुक्खप्पहीणा । (श० ९।१५५)

*लय : हाजरी मैं स्वामीनाथ हमेशा करूं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : २००

दूहा

१. ते माहणकुंड ग्राम नगर नैं, पश्चिम दिशि में पेख।
इहां क्षत्रियकुंड ग्राम जे, हुंतो नगर विशेख।।

१. तस्स णं माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स पच्चत्थिमे णं एत्थ णं खत्तियकुंडग्गामे नामं नयरे होत्था—

२. वर्णक उवाई[1] थकी, तेह क्षत्रियकुंड ग्राम।
नगर विषे क्षत्रिय-सुत, वसै जमाली नाम।।

२. वण्णओ। तत्थ णं खत्तियकुंडग्गामे नयरे जमाली नामं खत्तियकुमारे परिवसइ—

३. समृद्ध धनादि परिपूर्ण, तेजवंत ते जोय।।
यावत अपरिभूत छै, पराभवि सकै न कोय।।

३. अड्ढे दित्ते जाव बहुजणस्स अपरिभूते,

४. धन करि बल करि रूप करि, गंज सकै नहिं तास।
इसो जमालीकुमर ते, पुन्यवंत सुप्रकाश।।

*चरित्र जमाली नों तुम्हें सांभलो रे।। (ध्रुपदं)

५. ऊपर प्रसाद वर बैठा थकां रे, अतिहि रभस करि तेह।
आस्फालित मस्तक मृदंग नां रे, फूटवा नीं पर जेह।।

५. उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं
'फुट्टमाणेहिं' ति अतिरभसाऽऽस्फालनात्स्फुटद्भिरिव (वृ० प० ४६२)

६. द्वात्रिंशत प्रकार अभिनय तणां, तेह थकी संबद्ध।
अथवा पात्रे करी इम इक कहै, नाटक में सन्नद्ध।।

६. बत्तीसतिबद्धेहिं णाडएहिं
'बत्तीसतिबद्धेहिं' ति द्वात्रिंशताऽभिनेतव्यप्रकारैः पात्रैरित्येके (वृ० प० ४६२)

७. नानाविध बहु देश नीं ऊपनीं, चितहरणी तनु चंग।
प्रवर प्रधानज तिण तरुणी करी, संप्रयुक्त रस रंग।।

७. वरतरुणीसंपउत्तेहिं

८. जे जमाली नैं पास रह्या छता, नृत्य करण थी जेह।
नाटकिया नाचै वलि जमाली तणां, गुण गावै धर नेह।।

८. उवनच्चिज्जमाणे-उवनच्चिज्जमाणे, उवगिज्जमाणे-उवगिज्जमाणे,
'उवनच्चिज्जमाणे' त्ति उपनृत्यमानः तमुपश्रित्य नर्त्तनात् 'उवगिज्जमाणे' त्ति तद्गुणगानात् (वृ० प० ४६२)

९. वांछित अर्थ प्रतैज पभाड़वै, दिवरावते छते दान।
जे वाजित्र वजावै तेहनां, वांछितार्थ करण थी जान।।

९. उवलालिज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे,
'उवलालिज्जमाणे' त्ति उपलाल्यमान ईप्सितार्थसम्पादनात् (वृ० प० ४६२)

१०. श्रावण भाद्रव पाउस फुन वर्षा, आसोज कार्त्तिक मंत।
मृगशिर पोष शरद ऋतु जाणवी, माह फागुण हेमंत।।

१०. पाउस-वासारत्त-सरद-हेमंत-
'पाउसे' त्यादि, तत्र प्रावृट् श्रावणादिः वर्षारात्रोऽश्वयुजादि शरत् मार्गशीर्षादिः हेमन्तो माघादिः। (वृ० प० ४६२)

११. चैत वैशाख वसंत ऋतु कही, जेठ आषाढ सुलेह।
ग्रीष्म छेहड़े ए छहुं ऋतु भलो, ते काल-विशेष विषेह।।

११. वसंत-गिम्ह-पज्जंते छप्पि उऊ
वसन्तः चैत्रादिः ग्रीष्मो ज्येष्ठादिः……'ऋतून्' कालविशेषान् (वृ० प० ४६२)

१२. जिम जे-जे ए छहुं ऋतु नैं विषे, ते ऋतु नों पहिछाण।
सुख अनुभाव प्रतै अनुभवतो थको, काल गमावतो जाण।।

१२. जहाविभवेणं माणेमाणे, कालं गालेमाणे,
'माणमाणे' त्ति मानयन् तदनुभावमनुभवन् 'गालेमाणे' त्ति 'गालयन्' अतिवाहयन्। (वृ० प० ४६२)

१३. वल्लभ शब्द फरिस रस रूप नैं, वलि शुभ गंध करेह।
पंच-विध मनुष्य तणां काम भोगनैं, भोगवतो विचरेह।।

१३. इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ। (श० ९।१५६)

---

*लय : साधुजी नगरी आया सदा भला रे

[1] ओवाइयं सू० १

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. तत्र क्षत्रियकुंड ग्राम नगर विषे, सिंघाटक त्रिक चउक्क ।
चच्चर यावत बहु जन बोलता, एक-एक नें वक्क ।।
१५. जिम उववाइ-उपंगे[1] आखियो, जावत इम पन्नवेह ।
तेह विषे ए फुन दाख्यो तिको, लेश थकी निसुणेह ।।

१४,१५ तए णं खत्तियकुंडग्गामे नयरे सिंघाडग-तिक-चउक्क-चच्चर-जाव (सं० पा०) बहु जणसद्दे इ वा जाव एवं भासइ

सोरठा

१६. जन-व्यूह जन समुदाय, बोल ते अव्यक्त वर्ण ।
ध्वनि कलकल तेहिज ताय, वचन विभागज लाभते ।।

१६. जणवूहे इ वा जणबोले इ वा जणकलकले इ वा
'जनव्यूहः' जनसमुदायः बोलः—अव्यक्तवर्णो ध्वनिः कलकलः—स एवोपलभ्यमानवचनविभागः
(वृ० प० ४६३)

१७. जन-ऊर्म्मि ए जान, लोक तणुं संबाध जे ।
जन-उत्कलिका मान, अति लघु जे समुदाय ते ।।

१७. जणुम्मी इ वा जणुक्कलिया इ वा
ऊर्म्मिः—सम्बाधः उत्कलिका—लघुतरः समुदायः
(वृ० प० ४६३)

१८. जन-संन्निपातज सोय, अपर-अपर स्थानक थकी ।
बहु जन नुं अवलोय, मिलवूं जे इक स्थानके ।।

१८. जणसण्णिवाए इ वा
संनिपातः—अपरापरस्थानेभ्यो जनानामेकत्र मीलनं
(वृ० प० ४६३)

१९. बहु जण मांहोमांहि, इम आखै सामान्य थी ।
वलि इम भाखै ताहि, प्रगट पर्यायज वचन करि ।।

१९. बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ;
आख्याति - सामान्यतः भाषते – व्यक्तपर्यायवचनतः,
(वृ० प० ४६३)

२०. एहिज अर्थ जु दोय, पर्याय थी अनुक्रम करि ।
कहियै छै अवलोय, चित्त लगाई सांभलो ।।

२०. एतदेवार्थद्वयं पर्यायतः क्रमेणाह— (वृ० प० ४६३)

२१. *इम पन्नवेइ कहितां विशेष थी, जन कहै मांहोमांय ।
एवं परूवेइ तेह प्ररूपणा, करता जन समुदाय ।।

२१. एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ,

२२. इम निश्चै देवानुप्रिया ! श्रमण भगवंत महावीर ।
धर्म नीं आदि तणां करणहार छै, जाव सर्वज्ञ सधीर ।।

२२. एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव सव्वण्णू

२३. भला नें पधारचा हो श्री महावीरजी, जगत उधारण जिहाज ।
पूर्ण ज्ञान दर्शन करि परिवरया, जयवंता जिनराज ।।

२४. देखणहार प्रभु सर्व वस्तु नां, माहणकुंड ग्राम जेह ।
नगर नें बाहिर छै भलुं, बहुसाल चैत्य विषेह ।।

२४. सव्वदरिसी माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स बहिया बहुसालए चेइए

२५. यथाप्रतिरूप जात्र विचरै प्रभु, इहां जात्र शब्द में जान ।
अवग्रह प्रति ग्रही संजम तप करी, आतम भावित मान ।।

२५. अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

२६. ते भणी महाफल देवानुप्रिया ! निश्चै करिनें न्हाल ।
तथारूप अरिहंत तणो वलि, भगवंत नों सुविशाल ।।

२६. तं महप्फलं खलु देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं

२७. जिम उववाई उपंग विषे कह्यु, जाव इक दिशि साहमा जाय ।
सूत्र उवाई में जे आखियो, ते निसुणो चित ल्याय ।

२७. जहा ओववाइए [सूत्र ५२] जाव एगाभिमुहे
'जहा उववाइए' त्ति, तदेव लेशतो दर्श्यते—
(वृ० प० ४६३)

२८. नाम गोत्र जिन नों सुणवे करी, मोटो फल छै तास ।
तो स्युं कहिवो सनमुख गमन नों, इहां जयणा सुविमास ।।
२९. वंदन स्तुति करवा नुं वलि, नमस्कार शिर नाम ।
प्रश्न पूछयां नो वलि कहिवो किसुं, मोटो फल गुण धाम ।।

२८,२९. तं महप्फलं खलु भो देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं
नामगोयस्सवि सवणयाए किमंग पुण अभिगमणवंदण-णमंसणपडिपुच्छणपज्जुवासणयाए (ओवाइयं सू. ५२)

***लय : साधुजी नगरी आया सदा भला रे**

१. ओ० सू० ५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरठा

३०. "इहां महाफल सार, प्रश्न पूछवा नुं कह्यूं।
ते जयणा स्यूं धार, तिम जयणां सूं गमन फल ।।
३१. निरवद्य कारज एह, मन जिन नैं वंदण तणो।
तसु अर्थे पग देह, जयणां थी ते पिण पवर ।।
३२. मन वचन नैं काय, निरवद्य ए त्रिहुं योग नीं।
आज्ञा दे जिनराय, ते काय भली किम प्रवर्तै ।।
३३. मुनि प्रतिलाभण हेत, अथवा दर्शण निमित्त जे।
जयणां सूं पग देत, तथा करादि हलायवै ।।
३४. जयणां सूं अवलोय, ऊभो ह्वै ते बेस नैं।
बैठो ऊभो होय, प्रतिलाभै वंदै मुनि ।।
३५. पिण ते हस्त थकीज, बहिरावै तनु योग थी।
ते शुद्ध जयणां थीज, एहमें श्री जिन आगन्या ।।
३६. गृही नैं न कहै स्वाम, चालो तथा हलाव तूं।
ते किण कारण ताम ? संभोग नहीं छै ते भणी ।।" (ज० स०)

३७. *इक पिण आर्य धार्मिक सुवच नों सांभलवै फल सार।
तो स्यूं कहिवो विपुलज अर्थ नैं, ग्रहवै करि सुविचार ।।
३८. ते माटै हे देवानुप्रिया ! जावां आपां ताम।
श्रमण भदंत वीर प्रभु वंदियै, करां नमस्कार शिर नाम ।।
३९. सतकारां आदर देवां वलि, फुन सनमानां स्वाम।
प्रभु जोग भक्ति करिवै करी, निरवद्य ते अभिराम ।।

३७. एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए

३८. तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीर वंदामो णमंसामो (ओ० सू० ५२)

३९. सक्कारेमो सम्माणेमो (ओ० सू० ५२)
'सक्कारेमो' त्ति सत्कुर्मः आदरं वस्त्राद्यर्चनं वा विदध्मः 'सम्माणेमो' त्ति सन्मानयामः उचित-प्रतिपत्तिभिः (ओ० वृ० प० १०६)

४०. कल्लाणं हेतु किल्याण नां, वलि प्रभुजी मंगलीक।
दुरित विघन उपशम करिवा तणां, हेतू स्वाम सधीक ।।
४१. तीन लोक नां अधिपति ते भणी, देवयं देवाधिदेव।
सुप्रशस्त मन हेतु स्वाम जी, तिण सूं चैत्य कहेव ।।

४०. कल्लाणं मंगलं (ओ० सू० ५२)
कल्याणं—कल्याणहेतुत्वादभ्युदयहेतुं मंगलं—दुरितो-पशमहेतुं (ओ० वृ० प० १०६)

४१. देवयं चेइयं (ओ० सू० ५२)
देवतां—देवं त्रैलोक्याधिपतित्वात्, चैत्यं सुप्रशस्त-मनोहेतुत्वात् (रायपसेणइयं वृ० प० ५२)

सोरठा

४२. शब्द देवयं सोय, वलि चैत्य नों अर्थ जे।
इहां कह्यो अवलोय, रायप्रश्रेणी वृत्ति थी ।।
४३. *विनय करी सेवा प्रभु नीं करां, ए स्वाम वंदना आदि।
आपांरै पर भव जन्मांतरै, फुन इहभव अह्लादि ।।
४४. हियाए हित नैं अर्थे अछै, पत्थ अन्नवत पेख।
सुहाए सुख नैं अर्थे अछै, वंदनादिक सुविशेख ।।
४५ खमाए सर्व वस्तू मेलवा, समर्थ अर्थे सोय।
निस्सेयसाए कहितां जाणवूं, मोक्ष अर्थे अवलोय ।।

४३. पज्जुवासामो एयं णे पेच्चभवे 'इहभवे य' (ओ० सू० ५२)

४४. हियाए सुहाए (ओ० सू० ५२)
'हियाए' त्ति हिताय पथ्यान्नवत् 'सुहाए' त्ति सुखाय शर्मणे (ओ० वृ० प० १०६)

४५. खमाए निस्सेयसाए (ओ० सू० ५२)
'खमाए' त्ति क्षमाए संगतत्वाय 'निस्सेयसाए' त्ति निःश्रेयसाय मोक्षाय (ओ० वृ० प० १०६)

*लय : साधुजी नगरी आया सदा भला रे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरठा

४६. इणहिज भव रै मांय, दालिद्र विघन मूकायवै।
फुन परभव में ताय, कर्म मूकावा नैं अरथ।।

४७. *फुन जे भव नीं परंपरा विषे, हुस्यै सुख नैं अर्थ।
इण हेतु थी प्रभुजी वंदियै, कीजै सेव तदर्थ।।

४८. एम कहीनैं बहु उग्र कुलोत्पना, थापित आदिम देव।
कोटवाल नां वंश विषे थया, ते कुल उग्र कहेव।।

४९ उग्र पुत्र जे तेहनांईज छै, पुत्र पोतादि कुमार।
इमहिज भोग राजन क्षत्रिय कह्या, बहु भट सुभट उदार।।

५०. केइक वंदण निमित्तज नीसर्या, केइक पूजण काज।
इम सत्कार सम्मान नैं, दर्शण नमित्त सुस्हाज।।

५१. इम कोतुहल निमित्तज नीसरचा, इत्यादिक अवधार।
जावत इक दिशि सन्मुख जन वहु, चाल्या धर मन प्यार।।

५२. क्षत्रियकुंड ग्राम नगर तणैं, मध्योमध्य थइ निकलेह।
जिहां माहणकुंड ग्राम नगर छै, जिहां बहुसाल चैत्य विषेह।।

५३. इम जिम उववाइ में आखियो, जाव त्रिविध जोगेह।
पर्युपासना सेवा करता छतां, ढाल दोय सौमीं एह।।

४७. आणुगामियत्ताए भविस्सइ (ओ० सू० ५२)
'आणुगामियत्ताए' त्ति आनुगामिकत्वाय भवपरम्परासु सानुबन्धसुखाय भविष्यतीतिकृत्वा—इति हेतोरित्यर्थः।

४८. इतिकट्टु बहवे उग्गा (ओ० सू० ५२)
'उग्ग' त्ति आदिदेवावस्थापितारक्षवंशजाः

४९. उग्गपुत्ता भोगा राइन्ना....खत्तिया....भडा....जोहा
(ओ० सू० ५२)
'उग्गपुत्त' त्ति त एव कुमारावस्थाः
(ओ० वृ० प० १०९)

५०. अप्पेगइया वंदणवत्तियं एवं पूयणवत्तियं सक्कारवत्तियं (सम्माणवत्तियं) (वृ० प० ४६३)

५१. कोउहलवत्तियं (वृ० प० ४६३)

५२. खत्तियकुण्डग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए,

५३. एवं जहा ओववाइए (सूत्र ५२) जाव तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जुवासंति। (श० ९/१५७)

ढाल : २०१

दूहा

१. ते जमाली नैं तदा, क्षत्रियकुमर नैं ताप।
मोटुं जन-रव जाव ही, अथवा जन-सन्निवाय।।
२. बहु जन रव सुणतां थकां, अथवा बहु जन देख।
आतम आश्रित एहवा, अध्यवसाय विशेख।
३. जावत सम्यक ऊपनां, जाव शब्द में धार।
चिंतित समरण रूप ते, प्रार्थित वांछित सार।।

४. मनोगत मन में रह्युं, बाहिर प्रकास्युं नांय।
संकल्प विचार ऊपनों, ते सुणज्यो चित ल्याय।।

†वन मांहे वीर पधार्या स्वामी, भविजन अन्तरजामी रे।
दरसण कर बहु जन ऊम्हाया, हरष हिये हुलसाया रे।। (ध्रुपदं)

१.२ तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स तं महया-जणसद्दं वा जाव जणसन्निवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्झत्थिए 'अज्झत्थिए' त्ति आध्यात्मिकः —आत्माश्रितः (वृ० प० ४६३)

३. जाव (सं० पा०) समुप्पज्जित्था
यावत्करणादिदं दृश्यं—'चिंतिए' त्ति स्मरणरूपः 'पत्थिए' त्ति प्रार्थितः—लब्धुं प्रार्थितः
(वृ० प० ४६३)

४. 'मणोगए' त्ति अबहिः प्रकाशितः 'संकप्पे' त्ति विकल्पः
(वृ० प० ४६३)

---

*लय : साधुजी नगरी आया सदा भला रे

†लय : लाल हजारी को जामो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. क्षत्रियकुंड ग्राम नगर विषे स्युं, इन्द्र महोच्छव आजो रे।
अथवा खंधक कार्त्तिकेय नुं महोच्छव,
कै हरि बलदेव नों स्हाजो रे ?

६. अथवा नाग देव नुं महोच्छव, कै जक्ष व्यंतर नों जाणी।
अथवा भूत तणो महोच्छव छै, कै कूप महोच्छव माणी ।।
७. अथवा तलाव तणो महोच्छव छै, कै नदी महोच्छव न्हाली।
अथवा आज महोच्छव द्रह नो, कै गिरि महोच्छव सुविशाली ।।
८. अथवा रूंख तणो महोच्छव छै, कै चैत्य महोच्छव चंगो।
अथवा मृतक बालै ते ऊपर, चोतरो थभ प्रसंगो ।।
९. जे भणी ए बहु उग्र वंश नां, ऊपनां वर कुलभूता।
भोगा भोग-वंश में ऊपनां, कै राजन-वंश प्रसूता ।।
१०. ईखाग वंश तणां फुन ऊपनां, ज्ञातपुत्र गुणवंता।
कोरव क्षत्रिय क्षत्रिय नां सुत, सुभट सुभटसुत मंता ।।
११. सेनापति सेना नां नायक, सीखदायक पसत्थारो।
लेच्छकी जाति नां वलि ब्राह्मण, इब्भ गजंतद्रव्य भूमि मभारो ।।

१२. जिम उववाइ मांहि कह्यो छै, सार्थवाह सुखकारो।
प्रमुख सगलाइ स्नान करी फुन, करि वलि कर्म ववहारो ।।
१३. जिम उववाइ उपंगे आख्युं, जावत निकलै ताह्यो।
जन वृंद इक दिशि सन्मुख जायै, स्युं महोच्छव पुर मांह्यो ।।
१४. इम मन मांहि विचारी जमाली, कंचुइज पुरुष बोलायो।
अंतःपुर नीं चिंता नों कारक, ते कंचुइज नें कहै वायो ।।
१५. अहो देवानुप्रिया ! क्षत्रियकुंडज, ग्राम नगर रै मांह्यो।
आज महोच्छव इंद्र तणो स्युं, जाव निकलै जन वृंद ताह्यो ?
१६. तिण अवसर ते पुरुष कंचुइज, जमालो क्षत्रियकुमारो।
इम पूछ्ये छते हरषित हुवो, पायो संतोष जिहवारो ।।
१७. श्रमण भगवंत महावीर तणो जे, आगम आविवूं धारो।
तेह विषे जै ग्रह्यु कीधूं जिण, निश्चय निर्णय सारो ।।
१८. हाथ दोनूंइ जोड़ जमाली नैं, क्षत्रियकुमर प्रतेहो।
जय विजय शब्द करिनैं बधावै, बधावी वचन वदेहो ।।

गीतक-छंद

१९. जय त्वं विजय त्वं एहवै आशीर्वाद वचन कही।
भगवंत नुं आगमन ते, आनंद करि तुझ वृद्धि ही ।।

२०. *अहो देवानुप्रिया ! क्षत्रियकुंडज ग्राम नगर में आजो।
निश्चै नहीं छै इंद्र महोच्छव, जाव निकलै तेहथी समाजो ।।

५. किण्णं अज्ज खत्तियकुंडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा, खंदमहे इ वा, मुगुंदमहे इ वा,
'खंदमहेइ व' त्ति स्कन्दमहः—कार्तिकेयोत्सवः
'मुगुंदमहेइ व' त्ति इह मुकुन्दो वासुदेवो बलदेवो वा
(वृ० प० ४६३)
६. नागमहे इ वा, जक्खमहे इ वा, भूयमहे इ वा, कूवमहे इ वा,
७. तडागमहे इ वा, नईमहे इ वा, दहमहे इ वा, पव्वयमहे इ वा,
८. रुक्खमहे इ वा, चेइयमहे इ वा थूभमहे इ वा,

९. जण्णं एते बहवे उग्गा, भोगा, राइण्णा,

१०. इक्खागा, णाया, कोरव्वा, खत्तिया, खत्तियपुत्ता भडा, भडपुत्ता,
११. जोहा पसत्थारो……लेच्छई……इब्भ……
'पसत्थारो'त्ति—धर्मशास्त्रपाठकाः ………… इभ्याः यद्द्रव्यनिचयान्तरितो महेभो न दृश्यते
(ओ० वृ० प० ११०)
१२. जहा ओववाइए (ओ० सू० ५२) जाव (सं० पा०) सत्थवाहप्पभितयो ण्हाया कयबलिकम्मा
१३,१४. जहा ओववाइए (ओ० सू० ५२) जाव खत्तिय-कुंडग्गामे नयरे मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति ?
—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कंचुइ-पुरिसं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वदासी—
१५, किण्ण देवाणुप्पिया ! अज्ज खत्तियकुंडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति ? (श० ९/१५८)
१६. तए णं से कंचुइ-पुरिसे जमालिणा खत्तियकुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे
१७. समणस्स भगवओ महावीरस्स आगमणगहिय-विणिच्छए।
१८. करयल जाव (सं० पा०) जमालिं खत्तियकुमारं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—

१९. जय त्वं विजयस्व त्वमित्येवमाशीर्वचनेन भगवतः समागमनसूचनेन तमानन्देन वर्द्धयतीत भावः।
(वृ० प० ४६३)
२०. नो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज खत्तियकुंडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति।

---

*लय : लाल हजारी को जामो

१. ओवाइयं सूत्र ५२ के वाचनान्तर में "पायदद्दरेणं……एगदिसिं एगाभिमुहे" पाठ है। देखें ओ० वृ० प० ११३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१. अहो देवानुप्रिया ! इम निश्चै करि, श्रमण भगवंत महावीरो।
निज तीर्थ में आदि नां कर्त्ता, जाव सर्वज्ञ पुरुष सधीरो ।।
२२. सर्व वस्तु नां देखणहारा, माहणकुंड इण नामे।
ग्राम नगर में बाहिर रूड़ो, बहु साल चैत्य सुधामे ।।
२३. यथा योग्य अभिग्रह प्रति गृही नें, जावत विचरै जाणी।
ते भणी ए बहु उग्र वंश नां, भोग-वंश नां माणी ।।
२४. जावत केइयक वंदणा निमित्ते, यावत निकलै ताह्यो।
मोटे मंडाण करीनै बहु जन, वीर समीपे जायो ।।
२५. जमाली क्षत्रिय-सुत तिण अवसर, कंचुइज नर नैं पासो।
एह अर्थ सुण हिये धारी, पायो हरष संतोष विमासो ।।
२६. दोय सौ एकमीं ढाल विषे कह्यु, जमाली मन हरषायो।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, जय-जश' हरष सवायो ।।

२१. एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव सव्वण्णू
२२. सव्वदरिसी माहणकुंडग्गामस्स नयरस्स बहिया बहुसालए चेइए
२३. अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं एते बहवे उग्गा, भोगा।
२४. जाव अप्पेगइया वंदणवत्तियं निग्गच्छंति।
(श० ९/१५९)
२५. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे कंचुइ-पुरिसस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे ।

ढाल : २०२

दूहा

१. कोडुंबिक नर तेड़नैं, बोलै एहवी वाय।
चउघंट हय रथ जोतरी, मुझपै थापो ताय ।।

२. इहविध जमाली कह्यां, कोडुंबिक नर जाण।
यावत रथ त्यारी करी, आज्ञा सूंपी आण ।।

३. तब जमाली क्षत्रिय-सुत, तिहां मज्जन घर सीध।
तिहां आवै आवी करी, स्नान बलि-कर्म कीध ।।
४. जिम उवाइ नें विषे, परिषद वर्णक ख्यात।
कोणिक नीं परिषद कही, तिम कहिवो अवदात ।।

वा०—जिम कोणिक नें उवाइ उपंग नें विषे परिवार-वर्णक कह्यु ते वर्णक, तिम ए जमाली नो पिण। तिहां अनेक जे गणनायक प्रकृतिमहत्तर, दंडनायक ते तंत्रपालिका, राजा ते मंडलीक, ईश्वर ते युवराजा, तलवर ते राज तुष्टमान थइ नें दीधो पट्टबंध तेणे करीनें विभूषित राजस्थानिका, माडंबिक ते छिन्नमंडप नां अधिपती, कोटुंबिक ते केतलायक कुटुंब थी ऊपनां ते सेवक, मंत्री प्रसिद्ध, महामंत्री ते मंत्री नां समूह में प्रधान हस्ती नां दल इति वृद्धा। गणका ते गणित शास्त्र नां जाण, भंडारी इति वृद्धा। दोवारिय ते पोलिया, अमच्च ते राज्य अधिष्ठायका, चेड़ ते पग नें मूल रहै, पीठमद्द ते सभा नें विषे आसन के समीप रहै ते सेवक, नगर ते नगरवासी प्रजा, निगम ते कारणिक काण-मुल्हायदा वाला, सेट्ठि ते श्री देवता नों दीधो सुवर्णपट्ट करि विभूषित मस्तक जेहनों एतलै श्री देवी नों सुवर्ण

१. कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं उवट्ठवेह, जुत्तामेव उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। (श० ९।१६०)
२. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिणा खत्तियकुमारेणं एवं वुत्ता समाणा चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेंति, उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।
(श० ९/१६१)
३. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे
४. जाव ओववाइए (ओ० सू० ६३) परिसावण्णओ तहा भाणियव्वं

वा०—तत्रानेके ये गणनायकाः—प्रकृतिमहत्तराः दण्डनायकाः—तन्त्रपालकाः राजानो—माण्डलिकाः ईश्वरा—युवराजानः तलवराः—परितुष्टनरपतिप्रदत्त-पट्टबन्धविभूषिता राजस्थानीयाः माडम्बिकाः छिन्न-मडम्बाधिपाः कोडुम्बिकाः—कतिपयकुटुम्बप्रभवः अवलगकाः—सेवकाः मन्त्रिणः प्रतीताः महामन्त्रिणो—मन्त्रिमण्डलप्रधानाः हस्तिसाधनोपरिका इति च वृद्धाः। गणकाः—गणितज्ञाः भाण्डागारिका इति च वृद्धाः। दौवारिकाः—प्रतीहाराः अमात्या—राज्याधि-ष्ठायकाः चेटाः—पादमूलिकाः पीठमर्द्दाः—आस्थाने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पट्टबंध मस्तक नें विषे छै जेहनें, सेनापति ते सेना नां नायक, सार्थवाह, दूत, संधिपाल ते राज्य-संधि नां रक्षक, तेणे करि सहित परिवरयो।

आसनासीनसेवकाः वयस्या इत्यर्थः। नगरं—नगरवासि प्रकृतयः निगमाः—कारणिकाः श्रेष्ठिनः—श्रीदेवताऽध्यासितसौवर्णपट्टविभूषितोत्तमाङ्गाः सेनापतयः—सैन्यनायकाः दूताः—अन्येषां राजादेशनिवेदकाः सन्धिपाला—राज्यसन्धिरक्षकाः (वृ० प० ४६३,४६४)

५. जावत ते चंदन करी, लीध्यो गात्र शरीर।
सर्व अलंकारे करी, थई विभूषित हीर।।
६. मंजणघर सूं नीकली, जिहां बाहरली सोय।
उपस्थान-साला अछै, दिवानखानो जोय।।
७. जिहां च्यार घंटा तणों, हय रथ त्यां आवेह।
चउघंट हय रथ ऊपरै, चढै चढी नें तेह।।
८. सकोरंट नामे तरु, तसु फूलां नीं माल।
तिणे करीनें छत्र ते, धरीजते सुविशाल।।
९. मोटा सुभट अनें नफर[1], अति विस्तार सुवृंद।
तिण करिनें वींट्यु थकुं, शोभ रह्यु सुखकंद।।
१०. क्षत्रियकुंड नामे प्रवर, ग्राम नगर नें ताम।
मध्योमध्य थई करी, निकलै निकली आम।।
११. जिहां माहणकुंड प्रवर जे, ग्राम नगर अवलोय।
तिहां चैत्य बहुसाल त्यां, आवै आवी सोय।।

५. जाव चंदणुक्खित्तगायसरीरे सव्वालंकारविभूसिए

६. मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला

७. जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता

८. सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं

९. महयाभडचडकरपहकरवंदपरिक्खित्ते

१०. खत्तियकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता

११. जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे, जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

*प्रभुजी जग प्यारे।
ओ तो त्रिभुवनतिलक सुहायो, जिनजी हद प्यारे।। (ध्रुपदं)

१२. तुरंग ग्रहै ग्रही नें तामो, रथ थापै थापी तिण ठामो।।
१३. रथ उत्तर उतरी तिवारो, छांडै फूल तंबोल हथियारो।।
१४. आदि शब्द थकी अवलोई, तजै चामर छत्रादी जोई।।

१२. तुरए निगिण्हेइ, निगिण्हेत्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता

१३,१४. रहाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता पुप्फतंबोलाउहमादियं
इहादिशब्दाच्छेखरच्छत्रचामरादिपरिग्रहः (वृ० प० ४६४)

१५. बलि पानही पग थी तजंतो, प्रभु भक्ति करै धर खंतो।।
१६. इक पट विचै सीवण नांही, तिण सुं करि उत्तरासंग त्यांही।।
१७. शौच अर्थे उदक फर्शतो, चोखो अशौच द्रव्य टालंतो।।

१५. पाहणाओ य विसज्जेति

१६. एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ

१७. आयंते चोक्खे
'आयंते' त्ति शौचार्थं कृतजलस्पर्शः 'चोक्खे' त्ति आचमनादपनीताशुचिद्रव्यः (वृ० प० ४६४)

१८. एह थकीज अवलोई, ओतो परम शुचिभूत होई।।

१८. परमसुइब्भूए
'परमसुइब्भूए' त्ति अत एवात्यर्थं शुचीभूतः (वृ० प० ४६४)

१९. अंजली कर सुप्रसीध, दोडा नीं पर जिण कीध।।

१९. अंजलिमउलियहत्थे
अञ्जलिना मुकुलमिव कृतौ हस्तौ येन सः (वृ० प० ४६४)

२०. जिहां श्रमण भगवंत महावीरं, तिहां आवै आवी जिन तीरं।।

†करै शुद्ध सेव जिन देव नीं क्षत्रिय-सुत। (ध्रुपदं)

२०. जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

---

१. सेवक

*लय : ज्यांरं शोभे केसरिया साड़ी

†लय : कड़खो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१. श्रमण भगवंत महावीर प्रतै वार त्रिण,
जीमणां पासा थी जाव जाणी ।
त्रिविध-त्रिविध मन वचन काया त्रिहुं जोग नीं,
पर्युपासनाइं करी सेव ठाणी ।।

२१. समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ (श० ९/१६२)

२२. श्रमण भगवंत महावीर तिण अवसरे,
जमाली क्षत्रिय सुतन नैं जाणी ।
मोटी विस्तारवंत ऋषि परिषद आदि नैं,
जावत धर्म-कथा वखाणी ।।

२२. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स खत्तिय-कुमारस्स, तीसे य महतिमहालियाए इसि जाव (सं० पा०) धम्मकहा

२३. *जाव परषद गई निज स्थानं, वारू वीर तणी सुण वानं ।।

२३. जाव परिसा पडिगया । (श० ९/१६३)

२४. जमाली क्षत्रियकुमर तिवारै, वीर वाणी सुणी हियै धारै ।।

२४. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म

२५. बहु हरष संतोषज पायो, जाव हृदय अति विकसायो ।।

२५. हट्ठ जाव (सं० पा०) हियए

२६. ऊठवै करि ऊभो थावै, ओतो ऊभो थई इम भावै ।।

२६. उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता

२७. एतो श्रमण भगवंत महावीरं, त्यांनै तीन वार गुणहीरं ।।

२७. समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो

२८. जाव नमस्कार करि ताह्यो, ओतो बोलै इहविध वायो ।।

२८. जाव (सं० पा०) नमंसित्ता एवं वयासी—

२९. सरधूं छूं हे भगवानं ! निर्ग्रंथ नां प्रवचन जानं ।।

२९. सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं

३०. प्रीत विषय करूं छूं भदंत, निर्ग्रंथ नां प्रवचन तंत ।।

३०. पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं

३१. हूं तो रोचवुं प्रभुजी ! उदारू, एतो निर्ग्रंथ प्रवचन वारू ।।

३१. रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं

३२. उद्यमवंत थयो छूं भदंत ! एतो निर्ग्रंथ प्रवचन तंत ।।

३२. अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं

३३. इमहिज प्रभुजी ! जे उक्त, ज्ञायमान प्रकार संजुक्त ।।

३३. एवमेयं भंते !
'एवमेयं' ति उपलभ्यमानप्रकारवत् (वृ० प० ४६७)

३४. तिमहिज हे भगवंत ! आप्त वच करि जाणियै तंत ।।

३४. तहमेयं भंते !
'तहमेयं' ति आप्तवचनावगतपूर्वाभिमतप्रकारवत् (वृ० प० ४६७)

३५. अवितथ ए अन्यथा न थाई, प्रभु ! किणही काल रै मांही ।।

३५. अवितहमेयं भंते !
'अवितथमेतत्' न कालान्तरेऽपि विगताभिमतप्रकार-मिति । (वृ० प० ४६७)

३६. हे भगवंत ! संदेह रहीतं, एतो आपरा वचन वदीतं ।।

३६. असंदिद्धमेयं भंते !

३७. जावत ते जिम एह, प्रभु तुम्है वदो छो जेह ।।

३७. जाव (सं० पा०) से जहेयं तुब्भे वदह

३८. जे एतलुं विशेष सुधामी, अहो देवानुप्रिया ! अंतरजामी ।।

३८. जं नवरं—देवाणुप्पिया !

३९. कही ढाल दोयसौ दूजी, प्रतिबोध्यो जमाली नैं प्रभूजी ।।

ढाल : २०३

दूहा

१. मात पिता नैं पूछसूं, तठा पछै अवधार ।
देवानुप्रिय आगलै, मुंड थई नैं सार ।।

१. अम्मापियरो आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता

*लय : ज्यांरे शोभे केसरिया साड़ी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. गृहस्थावास अगार थी, अणगारपणां प्रतेह।
अंगीकार करसूं सही, निमल चरण गुणगेह ।।
३. जिम सुख देवानुप्रिया ! मा प्रतिबंध करेह।
जमाली जिन वचन सुण, हरष संतोष लहेह ।।
४. श्रमण भगवंत महावीर नैं, तीन वार धर खंत।
जावत नमण करै करी, चउघंट रथे चढंत ।।
५. श्रमण भगवंत महावीर नां, समीप थी अवलोय।
बहुसाल नामा चैत्य थी, पाछो निकलै सोय ।।
६. सकोरंट पुफमाल करि, जावत छत्र धरेह।
मोटा भट नफरे करी, जावत वींट्यूं जेह ।।
७. जिहां क्षत्रियकुंड जे, ग्राम नगर तिहां आय।
क्षत्रियकुंड ग्राम नगर में, मध्योमध्य थइ ताय ।।
८. जिहां पोता नों घर अछै, जिहां बाहिरली जेह।
उपस्थान-साला तिहां, आवै आवी तेह ।।
९. तुरंग प्रति ग्रहै ग्रही करी, रथ प्रति स्थापै सोय।
रथ थापी फुन रथ थकी, उतरै उतरी जोय ।।
१०. जिहां अभ्यंतर मांहिली, उवस्थान जे साल।
जिहां मात अरु तात त्यां, आवै आवी न्हाल ।।
११. मात पिता नैं जय विजय, वचने करी वधाय।
जय विजय शब्द वधायनैं, बोलै एहवी वाय ।।

*हूं अरज करूं छूं आपसूं ।। (ध्रुपदं)

१२. इम निश्चै करि म्हैं सही, अहो मात पिता सुखदाय। हो माजी !
श्रमण भगवंत महावीर पै म्हैं, धर्म सुण्यो चित ल्याय ।। हो पिताजी !
१३. ते पिण धर्म म्हैं वंछियो, वंछ्यो बलि वारूवार। हो माजी !
अथवा भाव थी पडिवज्यो, ते पडिच्छिय सुविचार ।। हो पिताजी !
१४. अभिरुइय ते धर्म नों स्वादपणां प्रति पाय। हो माजी !
ओपमा वाची ए शब्द छै, सरस धर्म सुखदाय ।। हो पिताजी !
१५. तिण अवसर जमाली तणां, मात पिता हरषाय। रे जाया !
जमाली क्षत्रियकुमर नैं, बोलै एहवी वाय ।। रे जाया !
[धन्य धन्य पुत्र ! धन्य तूं ।]
१६. धन्य लब्धि छै ते भणी, अहो पुत्र ! तूं धन्न। रे जाया !
कृतार्थ पुत्र तूं अछै, कीधूं निज प्रयोजन्न ।। रे जाया !
१७ कीधूं छै पुन्य पुत्र ! तैं, पवित्र धर्म उदार। रे जाया !
अर्थ सहित लक्षण देह नां, तूं कृत-लक्षण सार ।। रे जाया !

२. अगाराओ अणगारियं पव्वयामि ।

३. अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं।
(श० ९।१६४)

४. समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव (सं० पा०) नमंसित्ता तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ .

५. समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ

६. सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भड-चडगरपहकरवंदपरिक्खित्ते

७. जेणेव खत्तियकुंडग्गामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खत्तियकुंडग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं

८. जेणेव सए गेहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

९. तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता

१०. जेणेव अब्भितरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव अम्मा-पियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

११. अम्मापियरो जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—

१२. एवं खलु अम्मताओ ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मे निसंते

१३. से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए
'पडिच्छिए' त्ति पुनः पुनरिष्टः भावतो वा प्रतिपन्नः
(वृ० प० ४६७)

१४. अभिरुइए (श० ९।१६५)
'अभिरुइए' त्ति स्वादुभावमिवोपगतः
(वृ० प० ४६७)

१५. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—

१६. धन्ने सि णं तुमं जाया ! कयत्थे सि णं तुमं जाया !
'कयत्थेऽसि' त्ति 'कृतार्थः' कृतस्वप्रयोजनोऽसि
(वृ० प० ४६७)

१७. कयपुण्णे सि णं तुमं जाया ! कयलक्खणे सि णं तुमं जाया !
'कयलक्खणे' त्ति कृतानि—सार्थकानि लक्षणानि—देहचिह्नानि येन स कृतलक्षणः। (वृ० प० ४६७)

*लय : जी स्वामी म्हांरा राजा नें धर्म सुणावज्यो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८ जे भणी श्रमण भगवंत नैं, महावीर नैं पास। रे जाया !
धर्म सुणी ते पिण धर्म नैं वांछ्यो आण हुलास ।। रे जाया !
१९. पडिच्छिय कहितां तिको, वंछ्यो वारूंवार। रे जाया !
अभिरुइय स्वाद भाव जे, पाम्यो तूं सुखकार ।। रे जाया !
२०. क्षत्रिय सुत जमाली तदा, मात पिता नैं ताय। हो माजी !
द्वितीय वार पिण विधि करी, बोलै एहवी वाय ।। हो पिताजी !
२१. इम निश्चै माता ! पिता ! श्रमण भगवंत वीर पास। हो माजी !
धर्म सुणी दिल धारियो, जाव रोचव्यो हुलास ।। हो पिताजी !

२२. ते माटै माता ! पिता ! चतुर्गतिक संसार। हो माजी !
तेहनां भय थी उद्वेग जे, पाम्यो खेद अपार ।। हो पिताजी !
२३. बीहनों जनम मरणे करी, ते माटै अवधार। हो माजी !
वांछूं छूं हे माता ! पिता !, तुम्ह आज्ञा थयां सार ।। हो पिताजी !
२४ श्रमण भगवंत महावीर पै, मुंड थई घर त्याग। हो माजी !
वर अणगारपणां प्रतै, पडिवजवूं शिव माग ।। हो पिताजी !
२५. जमाली क्षत्रियकुमर नीं, माता ते तिण वार। हो भवियण !
तेह अनिष्ट अवंछका, वचन सुण्या दुखकार ।। हो भवियण !
(विरुओ मोह संसार में।)

२६. अकांत ते मनोहर नहीं, अप्रिय अप्रीतिकार। हो भवियण !
अमनोज्ञ मन में न जाणियै, वच नुं सुंदरपणुं सार ।। हो भवियण !

२७. अमणाम ते मन नैं विषे, नहीं संभरियै वारूंवार। हो भवियण !
एहवा वचन अलखावणा, अति अणगमता अपार ।। हो भवियण !

२८. पूर्वे कदेई सुणी नहीं, एहवी निसुणी वाण। हो भवियण !
हृदय विषे धारी करी, उपनो दुक्ख अचाण ।। हो भवियण !
२९. परिसेवो आविवै करी, रोम-कूप थी तेह। हो भवियण !
झरवा लागा बिंदुवा, क्लीन थई तसु देह ।। हो भवियण !
३०. अतिही शोक करी वलि, प्रकर्षे करि सोय। हो भवियण !
कंपण लागो अंग जसु, तेज वीर्य रहित होय ।। हो भवियण !
३१. दीन विमन जिम मुख जसु, करतल मसली जेह। हो भवियण !
कुमलाणा फूलां तणी, माला जिम थइ तेह ।। हो भवियण !
३२. दीक्षा-वचन सुणी ततखिणे, म्लान दुर्बल थइ देह। हो भवियण !
फुन लावण्य करि शून्य थई,
वलि कांति रहित थइ जेह ।। हो भवियण !
३३. शोभा रहित थई तिको, प्रकर्षे अवलोय। हो भवियण !
शिथिल भूषण थया जेहनां, दुर्बलपणां थी सोय ।। हो भवियण !

३४. भूषण पड़वा लागा वली, बहु कृश थकी जेह। हो भवियण !
नमती भूंइ पड़वा थकी, अन्य प्रदेश विषेह ।। हो भवियण !

१८. जण्णं तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मे निसंते, से वि य ते धम्मे इच्छिए

१९. पडिच्छिए, अभिरुइए। (श० ९।१६६)

२०. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो दोच्चं पि एवं वयासी—

२१. एवं खलु मए अम्मताओ ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते जाव (सं० पा०) अभिरुइए।

२२. तए णं अहं अम्मताओ ! संसारभउव्विग्गे

२३. भीते जम्मण-मरणेणं, तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे

२४. समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। (श० ९।१६७)

२५. तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता तं अणिट्ठं
'अनिट्ठं' ति अवाञ्छिताम् (वृ० प० ४६७)

२६. अकंतं अप्पियं अमणुण्णं
'अकंतं' ति अकमनीयाम् 'अप्पियं' ति अप्रीतिकरीम् 'अमणुन्नं' ति न मनसा ज्ञायते सुन्दरतयेत्यमनोज्ञा ताम्
(वृ० प० ४६७)

२७. अमणामं
'अमणामं' ति न मनसा अम्यते—गम्यते पुनः पुनः संस्मरणेनेत्यमनोज्ञा तां (वृ० प० ४६७)

२८. अस्सुयपुव्वं गिरं सोच्चा निसम्म

२९. सेयागयरोमकूवपगलंतचिलिणगत्ता

३०. सोगभरपवेवियंगमंगी नित्तेया
'नित्तेया' निर्व्वीर्या (वृ० प० ४६७)

३१. दीणविमणवयणा करयलमलिय व्व कमलमाला

३२. तक्खणओलुग्गदुब्बलसरीरलावण्णसुन्ननिच्छाया
तत्क्षणमेव—प्रव्रजामीतिवचनश्रवणक्षण एवं अवरुग्णं—म्लानं दुर्बलं च शरीरं यस्याः सा (वृ० प० ४६७)

३३. गयसिरीया पसिढिलभूसण
प्रशिथिलानि भूषणानि दुर्बलत्वाद्यस्याः सा
(वृ० प० ४६८)

३४,३५. पडंतखुण्णियसंचुण्णियधवलवलय-पब्भट्ठउत्तरिज्जा
पतन्ति—कृशीभूतबाहुत्वाद्विगलन्ति 'खुन्निय' त्ति भूमिपतनात् प्रदेशान्तरेषु नमितानि संचूर्णितानि च—भग्नानि कानिचिद्धवलवलयानि—तथाविधकटकानि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३५. चूर्ण थया भागा वली, धवल निमल वलिया जास। हो भवियण !
व्याकुलपणां थी ओ णो, मस्तक थी पड़चो तास ।। हो भवियण !
३६. मूर्च्छा-वश न्हा ी चेत ा, भारीपणों त न तास। हो भवियण !
सुकमाल केश चोटो तणां, विखरिया छै जास।। हो भवियण !

३७. फरसी ते कुहाड़े करी, छेदै छतै जिवार। हो भवियण !
भूंइ पड़ै चंपक लता, तिम पड़ी राणी तिवार।। हो भवियण !
३८. निवर्त्या महोच्छव यदा, इंद्रलट्ठी पहिछाण। हो भवियण !
विमुक्त-सिंध बंधण जसु, भूंइ पड़ै तिम जाण।। हो भवियण !
३९. मणि भूमितल नैं विषे, धसक ऊतावली धार। हो भवियण !
सर्वांगे करि भूंइ पड़ी, थई अचेत तिवार।। हो भवियण !
४०. ढाल दोयसौ ऊपरै, तीजी आखी ताय। हो भवियण !
मोह वशे माता थई, अयि-अयि मोह बलाय।। हो भवियण !

यस्याः सा तथा, प्रभ्रष्टं व्याकुलत्वादुत्तरीयं वसनविशेषो यस्याः सा (वृ० प० ४६८)

३६. मुच्छावसणट्ठचेतगरुई सुकुमालविकिण्णकेसहत्था
मूर्च्छावशान्नष्टे चेतसि गुर्वी—अलघुशरीरा या सा (वृ० प० ४६८)

३७. परसुणियत्त व्व चंपगलया
परशुच्छिन्नेव चम्पकलता (वृ० प० ४६८)

३८,३९. निव्वत्तमहे व्व इंदलट्ठी, विमुक्कसंधिबंधणा कोट्टिमतलंसि धसत्ति सव्वंगेहिं संनिवडिया। (श० ९।१६८)

ढाल : २०४

दूहा

१. जमाली क्षत्रियकुमर नीं, माता ते तिणवार।
संभ्रमचित व्याकुलपणैं, थई अचेत अपार।।

२. ताम शीघ्र दासी तसु, कंचन वर भृंगार।
तसु मुख थी निर्गत विमल, शीतल जल नीं धार।।
३. तिण जलधाराइं करी, सींचवै करि धार।
निर्वापिता स्वस्थो कृता, गात्र-लट्ठि तनु सार।।
४. उत्क्षेपक वंशादिमय, मुष्टिग्राह्य जस दंड।
तालवृन्त तरु ताल नों, पत्रच्छोड सुमंड।।
५. अथवा कहियै चर्ममय, तालपत्र आकार।
वीजनकं वंशादिमय, तेह तणोंज प्रकार।।
६. इत्यादिक वीजन करी, जनित वाय सुखदाय।
तेह वीजणो जल करी, भींजोवी करै वाय।।
७. बिंदु-सहित वींजणै करी, वींज्या थई सचेत।
अंतेउर परिजन करी, आसासतीज तेथ।।
८. रोवंती आक्रन्द फुन, करतो शब्द विशेख।
धरती शोक मने करी, विलपंती सुत पेख।।

९. जमाली क्षत्रियकुमर, तेह प्रतै अवधार।
मोह वश माता इहविधे, वचन वदै तिहवार।।

१. तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया ससंभमोवत्तियाए
ससम्भ्रमं व्याकुलचित्ततया (वृ० प० ४६८)

२,३. तुरियं कंचणभिंगारमुहविणिग्गय-सीयलजलविमलधारपरिसिच्चमाणनिव्वावियगायलट्ठी
निर्व्वापिता—स्वस्थीकृता (वृ० प० ४६८)

४,६. उक्खेवय-तालियंट-वीयणगजणियवाएणं
उत्क्षेपकोवंशदलादिमयो मुष्टिग्राह्यदण्डमध्यभागः तालवृन्तं—तालाभिधानवृक्षपत्रवृन्तं तत्पत्रच्छोट इत्यर्थः तदाकारं वा चर्म्ममयं वीजनकं तु—वंशादिमयमेवान्त ग्राह्यदण्डं एतैर्जनितो यो वातः स तथा तेन (वृ० प० ४६८)

७. सफुसिएणं अंतेउरपरिजणेणं आसासिया समाणी
'सफुसिएणं' सोदकबिन्दुना (वृ० प० ४६८)

८. रोयमाणी कंदमाणी सोयमाणी विलवमाणी
'कंदमाणी' महाध्वनिकरणात् 'सोयमाणी' मनसा शोचनात् (वृ० प० ४६८)

९. जमालिं खत्तियकुमारं एवं वयासी—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*रे जाया ! इम किम दीजै रे छेह ।। (ध्रुपदं)

१०. एक पुत्र तूं मांहरै रे, वल्लभ इष्ट अपार।
कांत मनोहर तूं सही रे, प्रिय ते प्रीतीकार ।।

१०. तुमं सि णं जाया ! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए

११. मनोज्ञ मनगमतो घणो, मणाम ते मन मांय।
वार-वार हूं संभरूं, अहनिशि में अधिकाय ।।

११. मणुण्णे मणामे

१२. स्थिरता गुण जोगे करी, थेज्जे कहियै जान।
वेसासिए कहितां वली, विश्वास नों तूं स्थान ।।

१२. थेज्जे वेसासिए
'थेज्जे' त्ति स्थैर्यगुणयोगात्स्थैर्यः 'वेसासिए' त्ति विश्वासस्थानं (वृ० प० ४६८)

१३. मान्य हुवै सहज्यां सही, जेणे कीधो कार्य।
संमत कहियै तेहनैं, न करै ते अविचार्य ।।

१३. संमए
'संमए' त्ति संमतस्तत्कृतकार्याणां संमतत्वात्
(वृ० प० ४६८)

१४. बहुमत बहु कारज विषे, पिण मानवा योग्य उमंग।
अथवा तूं मुझ नैं घणो, मानवा योग्य सुचंग ।।

१४. बहुमए
'बहुमए' त्ति बहुमतः—बहुष्वपि कार्येषु बहु वा—अनल्पतयाऽस्तोकतया मतो बहुमतः। (वृ० प० ४६८)

१५. अनुमत ते कारज विषे, कदा हुवै व्याघात।
पछै पिण मानण योग्य छै, अणगमतो नहिं तिलमात ।।

१५. अणुमए
'अणुमए' त्ति कार्य्यव्याघातस्य पश्चादपि मतोऽनुमतः
(वृ० प० ४६८)

१६. भंड करंडक सारिखो, भंड ते आभरण जाण।
तसु भाजन जे डाबडो, तेह करंड समान ।।

१६. भंडकरंडगसमाणे
भाण्डं—आभरणं करण्डकः तद्भाजनं तत्समानस्तस्यादेयत्वात् (वृ० प० ४६८)

१७. रयण कहितां नर-जात में, उत्कृष्टपणां थी रत्न।
अथवा रंजक तूं सही, रयण अर्थ सप्रयत्न ।।

१७. रयणे
'रयणे' त्ति रत्नं मनुष्यजातावुत्कृष्टत्वात् रजनो वा रञ्जक इत्यर्थः (वृ० प० ४६८)

१८. तूं रत्न चिंतामणि सारिखो, जीविऊसविए जाण।
मुझ जीवित छै तुझ थकी, तुझ विण नहिं रहै प्राण ।।

१९. अथवा जीवित नैं विषे जी, ओच्छव सम अधिकाय।
फुन मन समृद्ध कारको, देख्यां हिय हरखाय ।।

१८,१९. रयणब्भूए जीविऊसविए हिययनंदिजणणे हिययनंदिजणणे
'रयणभूए' त्ति चिन्तारत्नादिविकल्पः 'जीविऊसविए' त्ति जीवितमुत्सूते—प्रसूत इति जीवितोत्सवः। जीवितविषये वा उत्सवो—महः स इव यः स जीवितोत्सविकः (वृ० प० ४६८)

२०. ऊंबर फूल लाधै नहीं, तिम सुणवो दुर्लभ सोय।
फुन देखण रो कहिवो किसूं ? अंग आमंत्रणे जोय ।।

२०. उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए, किमंग ! पुण-पासणयाए ?
'उंबरे' त्यादि, उदुम्बरपुष्पं ह्यलभ्यं भवत्यतस्तेनोपमानं···'किमंग पुण' त्ति किं पुनः अंगेत्यामन्त्रणे
(वृ० प० ४६८)

२१. ते माटै निश्चै करी, तुझ विजोग खिण-मात[१]।
नहिं वंछा म्हे नहिं सुणां, हे सुत ! सांभल वात ।।

२१. तं नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुब्भं खणमवि विप्पयोगं।

२२. ते भणी रहो घर नैं विषे, त्यां लग हे सुत ! सार।
म्हें जीवां छां ज्यां लगे, म्है काल गयां पछै धार ।।

२२. तं अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामो तओ पच्छा अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं

२३. वय-परिणत वृद्ध थयां पछै, पुत्र-पोत्रादि वधार।
कुल रूप वंश तंतु तिको, दीर्घपणें विस्तार ।।

२३. परिणयवए वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि
वर्द्धिते—पुत्रपौत्रादिभिर्वृद्धिमुपनीते कुलरूपो वंशो न वेणुरूपः कुलवंशः—सन्तानः स एव तन्तुर्दीर्घत्वसाधर्म्यात् कुलवंशतन्तुः (वृ० प० ४६८)

*लय : खिम्यावंत जोय भगवंत रो रे ज्ञान

१. क्षण भर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. एहिज सहु कारज करी, थइ विषय नीं वांछा-रहीत।
सकल प्रयोजन साधनैं, चरण थकी धर प्रीत।।

२४. निरवयक्खे
'निरवकांक्ष:' निरपेक्षः सन् सकलप्रयोजनानाम्
(वृ० प० ४६८)

२५. श्रमण भगवंत महावीर पे, मुंड थई सुखकार।
अगार गृहस्थावास थी, तूं थाजे अणगार।।

२५. समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता
अगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि। (श० ९।१६६)

२६. बे सौ चौथी ढाल में, मोह तणें वश माय।
सुत घर में राखण भणी, किया अनेक उपाय।।

ढाल : २०५

दूहा

१. तब जमाली खत्रि-सुत, [कहै] मात पिता नें वाय।
तिमहिज ते नहिं अन्यथा, जे मुझ आख्यं ताय।।

१. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं
वयासी—तहा वि णं तं

२. हे मात! पिताजी! जे भणी, थे मुझ इम भाखंत।
तूं छै इक सुत मांहरै, हे जात! इष्ट अरु कंत।।

२. अम्मताओ! जण्णं तुब्भे मम एवं वदह—तुमं सि णं
जाया! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते

३. तिमहिज ते पूर्वे कह्यं, तिम कहिवूं अवदात।
जाव अणगारपणां प्रते, पडिवजै तूं जात!

३. तं चेव जाव पव्वइहिसि

४. इम निश्चै मां! तात जी! ए मनु भव अवतार।
अनेक जन्म जरा मरण, रोग रूप अवधार।।

४. एवं खलु अम्मताओ! माणुस्सए भवे अणेगजाइ-
जरा-मरण-रोग-

५. शारीरिक तापादि फुन, चिंता मन नुं जान।
ए दोनूंई दुख तणुं, भोगविवूं असमान।।

५. सारीरमाणसपकामदुक्खवेयण

६. चौर्य द्यूतादिक नां व्यसन, जेह सैकड़ां जोय।
उपद्रव करि पराभवूं, ए नर भव अवलोय।।

६. वसणसतोवद्दवाभिभूए
व्यसनानां च—चौर्यद्यूतादीनां यानि शतानि
उपद्रवाश्च (वृ० प० ४६९)

७. इण कारण थी अध्रुव ए, नियत काले ताय।
अवश्य उदय जिम रवि तणुं, तिम ध्रुव नर भव नांय।।

७. अधुवे
'अधुवे' त्ति न ध्रुवः—सूर्योदयवन्न प्रतिनियतकालेऽ-
वश्यम्भावी (वृ० प० ४६९)

८. नियत रूप नहिं ए वली, राजा नें पिण जेम।
दालिद्रपणुं हुवै कदा, नर-भव अनियत एम।।

८. अणितिए
'अणितिए' त्ति इतिशब्दो नियतरूपोपदर्शनपरः ततश्च
न विद्यत इति यत्रासावनितिकः—अविद्यमाननियत-
स्वरूप इत्यर्थः ईश्वरादेरपि दारिद्र्यादिभावात्
(वृ० प० ४६९)

९. नर भव वली अशाश्वतो, खिरण-स्वभाव पिछाण।
तेहिज कहियै छै हिवै, उपमाये करि जाण।।

९. असासए
'असासए' त्ति क्षणनश्वरत्वात्, अशाश्वतत्वमेवोपमानै-
र्दर्शयन्नाह— (वृ० प० ४६९)

१०. संध्या नां बादल जिसो, पंच रंग सम पेख।
जल परपोटा सारिखो, मनुष्य आउखो देख।।

१०. संझब्भरागसरिसे जलबुब्बुदसमाणे

११. डाभ अग्र जल बिंदु सम, स्वप्न-दर्शन उपमान।
चंचल बीजल नीं परै, ए तनु अनित्य जान।।

११. कुसग्गजलबिंदुसन्निभे सुविणदंसणोवमे विज्जुलया-
चंचले अणिच्चे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गीतकछंद

१२. सड़वूंज अंगुलि आदि नुं, कुष्टादि रोगे करि कही।
पडवूंज बाहू प्रमुख नुं, खडगादि जोगे करि वही।।
१३. फुन तनु विधंसन क्षय हुवै, एहीज छै जसु धर्म ही।
तेहथी पहिला पछै वा, हुस्यै त्यजिवूं अवश्य ही।।

१२,१३. सडण-पडण-विद्धंसणधम्मे, पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सइ
'सडणपडणविद्धंसणधम्मे' त्ति शटनं—कुष्ठादिनाऽगुल्यादेः पतनं बाह्वादेः खड्गच्छेदादिना विध्वंसनं—क्षयः एत एव धर्मा यस्य स (वृ० प० ४६६)

दूहा

१४. कुण जाणै हे मात ! पितु ! पिता पुत्र नों जोय।
पहिलां मरिवूं केहनुं, पाछै केहनुं होय ?
१५. तिणसूं हूं वांछूं अछूं, अहो मात ! फुन तात।
तुम्ह आज्ञा दीधे छते, दीक्षा ल्यूं प्रभु हाथ।।

१४. से केस णं जाणइ अम्मताओ ! के पुव्विं गमणयाए, के पच्छा गमणयाए ?
१५. तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स जाव (सं० पा०) पव्वइत्तए।
(श० ९।१७०)

१६. तिण अवसर क्षत्रिय-तनय, जमाली नैं वाय।
मात-पिता कहै इहविधे, सांभलज्यो चित ल्याय।।

१६. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—

*मात कहै वच्छ ! सांभले। (ध्रुपदं)

१७. ए तनु हे सुत ! तांहरो, अतिहि विशिष्ट सुरूपो रे।
लक्षण व्यंजन गुण भला, तिण करि सहित अनूपो रे।।
१८. लक्षण श्रीवच्छ प्रमुख जे, व्यंजन मस तिलकादि।
विहुं नां गुण करि सहित छै, ए तुज तनु अहलादि।।

१७. इमं च ते जाया ! सरीरगं पविसिट्ठरूवं लक्खण-वंजण-गुणोववेयं

गीतकछंद

१९. स्थिर अस्थि जेहनीं तेहनों फल, अर्थ लाभ विशेष ही।
फुन मांस उपचित नैं विषे, जे रह्युं सुख संपेख ही।।
२०. त्वच पातली नैं विषे लहियै, भोग लाभ म जाणियै।
विशिष्ट चक्षू तास फल वर, लाभ स्त्री नुं माणियै।।
२१. रमणीक सुंदर गति तणुं, फल यान लाभ लहीजियै।
स्वर शोभनीकज फल तसु, वर आण तास वहीजियै।।
२२. गुण सत्व में सगला रह्या इम, वृत्तिकार वखाणियो।
ते थकी अधिकार सगलो, अत्र म्हैं पिण आणियो।।

१९-२१. लक्षणम्—
'अस्थिष्वर्थः सुखं मांसे, त्वचि भोगाः स्त्रियोऽक्षिषु।
गतौ यानं स्वरे चाज्ञा, सर्वं सत्त्वे प्रतिष्ठितम्
(वृ० प० ४६६)

२३. *उत्तम बल करि सहित छै, उत्तम वीर्य सहीतो।
उत्तम सत्व सहित जे, तूं सुत पवर पुनीतो।।
२४. बल ते शरीर तणुं कह्युं, वीर्य मन नुं आधारो।
सत्व ते चित्त नां अबीखरचा अध्यवसाय उदारो।।
२५. अथवा उत्तम जे विहुं, बल फुन वीर्य उदारो।
तेह विषे सत्व जे सत्ता तिण करि युक्त कुमारो।
२६. विज्ञान बहुत्तर कला करि, तूं छै विचक्षण डाहो।
सोभाग्य सहित गुणे करी तूं, ऊंचो अधिक अथाहो।।
२७. अभिजात कुलीन छै, मोटी क्षमा वरदाई।
अथवा कुलीन छै तेह में, पुजनीक नैं समर्थाई।।

२३. उत्तमबलवीरियसत्तजुत्तं

२४. तत्र बलं—शारीरः प्राणो वीर्यं—मानसोऽवष्टम्भः सत्त्वं—चित्तविशेष एव (वृ० प० ४६६)
२५. अथवा उत्तमयोर्बलवीर्ययोर्यत्सत्त्वं—सत्ता तेन युक्तं (वृ० प० ४६६)
२६. विण्णाणवियक्खणं ससोहग्गगुणसमूसियं

२७. अभिजायमहक्खमं
'अभिजायमहक्खमं' ति अभिजातं—कुलीनं महती क्षमा यत्र तत्तथा···अथवाऽभिजातानां मध्ये महत्—पूज्यं क्षमं—समर्थं च (वृ० प० ४६६)

---

*लय : कुशालांजी मन चिन्तवै

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२८. विविध प्रकार नीं व्याधि ते, रोग कुष्टादिक न्हालो।
तिण करि पुत्र रहीत ही, तुझ तनु महा सुखमालो।।

२८. विविहवाहिरोगरहियं

२९. वलि उपघात नहीं अछै, नहिं पित-वायु विकारो।
उत्तम वर्णादिक तणो, गुण तुझ अधिक उदारो।।
३०. इण कारण थी लष्ट छै, मनहर इंद्रिय पंचो।
आप-आपरा विषय नैं, ग्रहण विषे पटु संचो।।

२९,३०. निरुवहय-उदत्त-लट्ठपंचिंदियपडुं
निरुपहतानि—अविद्यमानवाताद्युपघातानि उदात्तानि —उत्तमवर्णादिगुणानि अत एव लष्टानि—मनोहराणि पञ्चापीन्द्रियाणि पटूनि च—स्वविषयग्रहणदक्षाणि यत्र
(वृ० प० ४६६)

३१. प्रथम वय जोवन भरी, तेह विषे रह्यो पुत्तो।
अपर अनेक उत्तम भला, गुण करि सहित ससुत्तो।।

३१. पढमजोव्वणत्थं अणेगउत्तमगुणेहिं संजुत्तं

३२. ते भणी भोगव प्रथम ही, हे सुत! निज तनु चारू।
तसु रूप सोभाग्य जोवन तणां, गुण वर्णादि उदारू।।

३२. तं अणुहोहि ताव जाया! नियगसरीररूव-सोहग्ग-जोव्वणगुणे,

३३. तिवार पछै ते भोगवी, निज तनु रूप उदारो।
सौभाग्य गुण जोवन तणां, म्है काल किये छते धारो।।

३३. तओ पच्छा अणुभूय नियगसरीररूव-सोहग्ग-जोव्वण-गुणे अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं

३४. वृद्ध थयां वय परिणम्यां, कुल वंश संतान वधारी।
कार्य एह करी वली, विषय नीं वांछा निवारी।।

३४. परिणयवए वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे

३५. श्रमण भगवंत महावीर पे, मुंड थइनैं सारो।
गृहस्थावास तजी करी, तूं थाजै अणगारो।।

३५. समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि। (श० ९।१७१)

३६. जमाली क्षत्रियकुमर तदा, कहै मात पिता नैं वायो।
तुम्है कह्यु तिमहीज छै, हे मात! पिताजो! ताह्यो।।

३६. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ!

३७. जे भणी थे मुझ इम कहो, हे सुत! ए तनु थारो।
तं चेव जावत त्यां लगै, अणगारपणां प्रति धारो।।

३७. जण्णं तुब्भे ममं एवं वदह—इमं च णं ते जाया! सरीरगं तं चेव जाव पव्वइहिसि

३८. इम निश्चै हे माता! पिता! ए नरतनु दुख नो अगारो।
विध-विध व्याधि सैकडां, तेहनों स्थान असारो।।
[पुत्र कहै सुणो मातजी!]

३८. एवं खलु अम्मताओ! माणुस्सगं सरीरं दुक्खाययणं विविहवाहिसयसंनिकेतं
संनिकेतं—स्थानम् (वृ० प० ४६६)

३९. हाड रूप काष्ठे करी, नीपनो ए तनु ताह्यो।
कठिनपणां नां साधर्म्य थो, अस्थि-काष्ठ कहिवायो।।

३९. अट्ठियकट्ठुट्ठियं
'अट्ठियकट्ठुट्ठियं' ति अस्थिकान्येव काष्ठानि काठिन्य-साधर्म्यात्तेभ्यो यदुत्थितं तत्तथा (वृ० प० ४६६)

४०. नाड़ी अनैं नसां तणुं, तिण करि अति ही वींटाणो[1]।
अशुचि अमेध्य करी तनु, प्रत्यक्ष दुष्ट पिछाणो।।

४०. छिराण्हारुजाल-ओणद्धसंपिणद्धं असुइसंकिलिट्ठं
शिरा—नाड्यः 'ण्हारु' त्ति स्नायवस्तासां यज्जालं—समूहस्तेनोपनद्धं संपिनद्धं—अत्यर्थं वेष्टितं यत्तत्तथा 'असुइ-संकिलिट्ठं' ति अशुचिना—अमेध्येन संक्लिष्टं—दुष्टं यत्तत्तथा (वृ० प० ४६६)

४१. असमाप्त पूरा थावै नहीं, सर्व काल रै मांह्यो।
थाप्या जे कार्य शरीर नां, ते हुवै संपूर्ण ताह्यो।।

४१. अणिट्ठविय-सव्वकालसंठप्पयं
अनिष्ठापिता—असमापिता सर्वकालं—सदा संस्था-प्यता—तत्कृत्यकरणं यस्य स तथा (वृ० प० ४६६)

४२. जरा करी जीरण तनु, मृतक कलेवर गंधो।
जर-जर जीरण घर जिको, तेह सरीखो मंदो।।

४२. जराकुणिमजज्जरघरं व
जराकुणपश्च—जीर्णताप्रधानशवो जर्जरगृहं च—जीर्णगेहंसमाहारद्वन्द्वाज्जराकुणपजर्जरगृहं
(वृ० प० ४६६)

१. अंगसुत्ताणि भाग २ श० ९।१७२ में 'ओणद्ध-संपिणद्धं' के बाद 'मट्टियभंडं व दुब्बलं' पाठ है। इस पाठ की जोड़ नहीं है। संभवत: जयाचार्य को प्राप्त आदर्श में यह पाठ नहीं था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४३. सडवूं पडवूं विनाश नूं, धर्म स्वभाव विमासी।
पूर्व अथवा पछै तनु, अवश्य छांडवूं थासी ।।
४४ ते कुण जाणैं हो मात जी ! पहिला मरण किणरो न्हालो।
तिणंहिज जाव दिख्या ग्रहूं, ए दोयसौ पंचमी ढालो ।।

४३. सडण-पडण-विद्धंसणधम्मं, पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वं भविस्सइ ।

४४. से केस णं जाणइ अम्मताओ ! के पुव्विं तं चेव (सं० पा०) पव्वइत्तए (श० ९।१७२)

ढाल : २०६

दूहा

१. जमाली क्षत्रिय-सुत प्रते, मात पिता तिणवार।
वली वचन इहविध वदै, ते सुणज्यो सुविचार ।।

१. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—

*जमाली मान रे जाया ! इम किम दीजै छेह। (ध्रुपदं)

२. प्रत्यक्ष ए ताहरी वली जाया ! बाला रूप रसाल।
मोटा कुल नीं ऊपनीं जाया ! तुझ सरिखी सुखमाल ।।
३. सरीखी छै तनु चामड़ी जाया ! वय सरिखी सुवदीत।
सरीखो लावण्य रूप छै जाया ! जोवन गुण थी सहीत ।।
४. सरीखो कुल पक्ष पितर नो जाया ! तेह थकी सुविचार।
आणी ते परणी सही जाया ! केहवी ते वर नार ।।
५ कला-कुशल डाही घणी जाया ! सर्व काल रे मांय।
लालिता किणहि दुहवी नहीं जाया ! ते सुख जोग्य सुहाय ।।
६. मार्दव मृदु गुण युक्त ही जाया ! निपुण विनय उपचार।
तेह विषे पंडित घणी जाया ! एहवी विचक्षण नार ।।
७. मंजुल कोमल शब्द थी जाया ! ते पिण मित मर्याद।
मधुर ते अर्थ थकी भलु जाया ! बोलिवुं जेहनुं स्वाद ।।

८. हंसवु देखवुं चालवु जाया ! नेत्र-विकार विलास।
रहिवुं विशिष्टपणैं वली जाया ! चतुर सहु में विमास ।।

९. अविकल कहिया ऋद्धी करि जाया ! परिपूर्ण कुल है जास।
शील आचार करी वली जाया ! शोभावंत विमास ।।

१०. विशुद्ध कुल वंश संतान ही जाया ! तंतु वर्द्धन करि तेह।
समर्थ वय जोवन भणी जाया ! सत्ता तास विषेह ।।

वा० --विशुद्ध कुल वंश हीज संतान-तंतु ते विस्तारितंतु, ते वधारवै करी—पुत्र उत्पादन द्वारे करी तेहनीं वृद्धि नैं विषे प्रगल्भ ते समर्थ जे वय जोवन, तेहनों भाव सत्ता विद्यमान छै जेहनैं एहवी स्त्रियां। अथवा 'विसुद्धकुलवंससंताणतंतु-वद्धण-पगब्भुब्भवप्पभाविणीओ' त्ति पाठांतर तिहां वलि विशुद्ध कुल वंश संतान-तंतु वधारण वालो जे प्रगल्भा—प्रकृष्ट गर्भ, तेहनो उद्भव प्रगट होयवो, तेहनैं विषे

२. इमाओ य ते जाया ! विपुलकुलबालियाओ सरिसियाओ (पृ० ४४४-टि० १)

३. सरित्तयाओ सरिव्वयाओ सरिसलावण्णरूव-जोव्वण-गुणोववेयाओ (पृ० ४४४-टि० १)

४. सरिसएहिंतो कुलेहिंतो आणिएल्लियाओ (पृ० ४४४-टि० १)

५. कलाकुसल-सव्वकाललालिय-सुहोचियाओ,

६. मद्दवगुणजुत्त-निउणविणओवयारपंडिय-वियक्खणाओ

७. मंजुलमियमहुरभणिय
मञ्जुलं—कोमलं शब्दतः मितं—परिमितं मधुरं—अकठोरमर्थतो यद्भणितं (वृ० प० ४६९)

८. विहसिय-विप्पेक्खिय-गति-विलास-चिट्ठियविसारदाओ
विलासश्च—नेत्रविकारो विस्थितं च—विशिष्टा स्थितिरिति (वृ० प० ४६९)

९. अविकलकुलसीलसालिणीओ
अविकलकुलाः—ऋद्धिपरिपूर्णकुलाः शीलशालिन्यश्च — शीलशोभिन्यः (वृ० प० ४६९,४७०)

१०. विसुद्धकुलवंससंताणतंतुवद्धण-प्पगब्भुब्भवप्पभाविणीओ

वा०—विशुद्धकुलवंश एव सन्तानतन्तुः—विस्तारितन्तुस्तद् वर्द्धनेन—पुत्रोत्पादनद्वारेण तद्वृद्धौ प्रगल्भः—समर्थं यद्वयो - यौवनं तस्य भावः सत्ता विद्यते यासां तास्तथा···· पाठान्तरं तत्र च विशुद्धकुलवंशसन्तानतन्तुवर्द्धना ये प्रगल्भाः—प्रकृष्टगर्भास्तेषां य उद्भवः—सम्भूतिस्तत्र यः प्रभावः—सामर्थ्यं स यासामस्ति ताः। (वृ० प० ४७०)

*लय : जम्बू ! तू तो मान रे जाया !

जे प्रभाव—समर्थपणों छै जेहनैं तिके विशुद्ध कुलवंशसंतानतंतुवर्द्धनप्रगर्भउद्भव-प्रभाविका।

११. मन अनुकूल गमती घणी जाया ! हृदय स्यूं वांछणहार।
ए आठूंई सुंदरी तुझ गुण करि वल्लभ सार ।।

११. मणाणुकूलहियइच्छियाओ, अट्ठ तुज्झ गुणवल्लहाओ

१२. ए उत्तम छै कामणी जाया ! नित्य जे चित्त नुं प्रेम।
तिण करिनें राती घणी जाया ! सर्वांग सुंदर तेम।।

१२. उत्तमाओ, निच्चं भावाणुरत्तसव्वंगसुंदरीओ

१३. भोगव भोगी भ्रमर ज्यूं जाया ! ज्यां लग सामर्थ्य सुजात।
कामभोग विस्तीर्ण मनुष्य नां जाया ! ए रमणी संघात।।

१३. तं भुंजाहि ताव जाया ! एताहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे

१४. भुक्त भोगी थइ नैं पछै जाया ! विषय-रहित थई चित्त।
अत्यंत क्षीण कोतुहल करी जाया !
म्हां काल गयां लीजे व्रत पवित्त ।।

१४. तओ पच्छा भुत्तभोगी विसय-विगयवोच्छिण्ण-कोउहल्ले अम्हेहिं कालगएहिं जाव (सं० पा०) पव्वइहिसि। (श० ९।१७३)

१५. जमाली क्षत्रियकुंवर तदा, कहै मात-पिता नैं वाय।
तिमहिज ते हो माता पिता माजी ! अन्यथा नहिं छै ताय।
[माजी ! तू तो मान लै जननी ! लेस्यां हे संजम भार ।।]

१५. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ !

१६. जे अम्ह नैं तुम्है इम कहो माजी ! ए तुझ रमण हे जात !
मोटा कुल नीं ऊपनीं, जाव दीक्षा लीजै प्रभु हाथ।।

१६. जण्णं तुब्भे मम एवं वदह—इमाओ ते जाया ! विपुलकुलबालियाओ जाव पव्वइहिसि।

१७. इम निश्चै हे माता ! पिता ! काम भोग मनुष्य नां ताय।
अशुचि अपवित्र छै घणां वलि अशाश्वता स्थिर नांय ।।

१७. एवं खलु अम्मताओ ! माणुस्सगा कामभोगा असुई असासया

सोरठा

१८. इहां काम भोग ग्रहणेह, तेहनां जे आधार थी।
पुरुष अनैं स्त्री जेह, ग्रहिवा ए तसु तनु प्रतै।।

१८. इह कामभोगग्रहणेन तदाधारभूतानि स्त्रीपुरुष-शरीराण्यभिप्रेतानि (वृ० प० ४७०)

१९. *वमन प्रतै आश्रवै झरै माजी ! पित्त प्रतै आश्रवंत।
खेल श्लेष्म प्रतै श्रवै माजी ! शुक्र नैं रुधिर झरंत।
[सुणो मोरी मात जी ! सुणो मोरा तात जी !
मुझनैं अनुमति दीजै आज] ।।

१९. वंतासवा, पित्तासवा, खेलासवा, सुक्कासवा, सोणियासवा (पृ० ४४४ टि० ८)

२०. उच्चार-पासवण खेल थी माजी ! सिंघाण वमन नैं पित्त।
राध शुक्र लोही वलि माजी ! एतला थी उपचित्त ।।

२०. उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वंत-पित्त-पूय-सुक्क-सोणिय समुब्भवा।

२१. अणगमता दुष्ट रूप हीं माजी ! मूत्रे करी कुह्यु उचार।
तिणे करी प्रतिपूर्ण छै माजी ! ए तनु अशुचि-भंडार ।।

२१. अमणुण्णदुरूय-मुत्त-पूइय-पुरीसपुण्णा
अमनोज्ञाश्च ते दूरूपमूत्रेण पूतिकपुरीषेण च पूर्णाश्चेति विग्रहः, इह च दूरूपं— विरूपं पूतिकं च—कुथितं (वृ० प० ४७०)

२२. मृतक जिसो गंध जेहनों माजी ! एहवा उस्सास पिछाण।
अशुभ निःश्वास तिणे करी माजी ! जन-उद्वेगका जाण ।।

२२. मयगंधुस्सास-असुभनिस्सासउव्वेयणगा
मृतस्येव गन्धो यस्य स मृतगन्धिः स चासावुच्छ्वासश्च मृतगन्ध्युच्छ्वासस्तेनाशुभनिःश्वासेन चोद्वेगजनका—उद्वेगकारिणो जनस्य ये ते तथा (वृ० प० ४७०)

२३. ए काम-भोग दुगंछा तणां माजी ! छै उपजावणहार।
लघु स्वभाव हलवा आपणो माजी ! कामभोग नों धार ।।

२३. बीभच्छा, अप्पकालिया, लहुसगा
'बीभच्छ' त्ति जुगुप्सोत्पादकाः 'लहुस्सग' त्ति लघुस्वकाः लघुस्वभावाः (वृ० प० ४७०)

*लय : जम्बू ! तू तो मान रे जाया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. कलिमल जे अशुभ द्रव्य नु माजी ! देह विषे अधिवास।
ते अशुभ नु रहिवु शरीर में माजी ! तिणकर दुख ही विमास।।

२५. यहु जन नैं साधारणा माजी ! स्त्रियादिक नैं अवलोय।
भोगविवु वंछै घणां माजी ! इम बहु जन साधारण जोय।।

२६. क्लेश महामानसी दुख करी माजी ! अति तनु दुख करि ताय।
वश करियै कामभोग नैं माजी ! दुख थी साधितुं थाय।।

२७. अबुध मूर्ख जन सेविया माजी ! सदा मुनि नैं निंदनीक।
अनंत संसार वधारणा माजी ! कामभोग तहतीक।।

२८. फलरूप विपाक कटुक जसु माजी ! बलतो जिम तृण-पूल।
ते अणमूक्यां कर बलै, तिण कामभोग दुख-मूल।।

२९. सिद्धि गति जातां जीव नैं माजी ! विघ्न तणां करणहार।
कुण जाणैं हो माता पिता ! पहिलां पछै मरण केहनुं धार।।

३०. ते माटै हूं वांछूं अछूं, अहो मात-पिताजी ! विशाल।
जावत दीक्षा धारवी, आखी दोय सौ छट्ठी ए ढाल।।

२४. कलमलाहिवासदुक्खा
कलमलस्य—शरीरसत्काशुभद्रव्यविशेषस्याधिवासेन—, अवस्थानेन दुःखा—दुःखरूपा ये ते (वृ० प० ४७०)

२५. बहुजणसाहारणा

२६. परिकिलेसकिच्छदुक्खसज्झा
परिक्लेशेन—महामानसायासेन कृच्छ्रदुःखेन च—गाढशरीरायासेन ये साध्यन्ते—वशीक्रियन्ते ये ते (वृ० प० ४७०)

२७. अबुहजणणिसेविया, सदा साहुगरहणिज्जा अणंत-संसारवद्धणा

२८. कडुगफलविवागा चुडल्लिव अमुच्चमाणदुक्खाणु-बंधिणो
'कडुगफलविवागा'………फलरूपो विपाकः फलविपाकः कटुकः फलविपाको येषां ते तथा 'चुडलिव्व' त्ति प्रदीप्ततृणपूलिकेव (वृ० प० ४७०)

२९. सिद्धिगमणविग्घा। से केस णं जाणइ अम्मताओ ! के पुव्विं गमणयाए ? के पच्छा गमणयाए ?

३०. तं इच्छामि णं अम्मयताओ ! जाव (सं० पा०) पव्वइत्तए। (श० ९।१७४)

ढाल : २०७

दूहा

१. तिण अवसर क्षत्रिय-सुत, जमाली प्रति वाय।
मात पिता इहविध कहै, ते सुणज्यो चित ल्याय।।

*पुत्र ! कह्यो मान हमारो रे, प्राण-वल्लभ तू प्यारो रे। (ध्रुपदं)

२. हे पुत्र ! ए तुझ दादा तणो रे, परदादा नों पेख।
पिता नां परदादा तणो रे, संचियो द्रव्य अशेख।।

३. अति बहु हिरण्य ते अणघड्यु रे, सुवर्ण ते घड्यु सार।
वलि भाजन कांसी तणां, अरु वस्त्र विविध प्रकार।।

४. विपुल कहितां विस्तीर्ण घणु रे, धन ते गवादि कहेज।
कणग ते धान्य भणी कह्यु, जाव संतसार सावतेज।।

सोरठा

५. जावत कहिवा थीज, रत्न कर्केतन आदि जे।
चद्रकांतादि मणीज, मोती शंख प्रसिद्ध छै।।

१. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—

२,३. इमे य ते जाया ! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुबहु हिरण्णे य सुवण्णे य, कंसे य, दूसे य।
आर्यः—पितामहः प्रार्यकः—पितुः पितामहः पितृ-प्रार्यकः—पितुः प्रपितामहस्तेभ्यः सकाशादागतं यत्तत्तथा (वृ० प० ४७०)

४. विउलधण-कणग जाव संतसार-सावएज्जे
'विपुलधणे' ति प्रचुरं गवादि 'कणग' त्ति धान्यं (वृ० प० ४७०)

५,६. रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवालरत्तरयण
यावद् करणादिदं दृश्यं····'रयण' त्ति कर्केतनादीनि 'मणि' त्ति चन्द्रकान्तादाः मौक्तिकानि शङ्खाश्च

*लय : राजनगर भणतां थकां रे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. शिल प्रवाल विद्रुमादि, रक्त-रत्न पद्म राग ते।
इत्यादिक संवादि, ए दीसै जाव शब्द में ।।

७. *संत कहितां विद्यमान छै रे, आप तणें वश जेह।
सार प्रधानज द्रव्य ही रे, तिके छै तुझ घर नें विषेह ।।

८. अलाहि कहितां पर्याप्त है रे, ज्यां लग ए परिमाण।
कुल वंश सात पीढ्यां लगै रे, जे देवै अति घणुं दान ।।

९. पोतै भोगववै करी रे, न्याती-गोती नें जेह।
बांटी नें बहु देतां थकां रे, सात पीढ्यां लगै न खूटेह ।।

१०. ते भणी पहिलां भोगवी रे, हे सुत ! मनुष्य तणाय।
विस्तीर्ण कामभोग नैं रे, वलि ऋद्धि सत्कार समुदाय ।।

११. कल्याणकारी भोगवी रे, तिवार पछै सुविचार।
कुलवंश तंतु वधारनैं रे, जाव संजम लीजै सार ।।

१२. जमाली क्षत्रिय-सुत तदा रे, कहै मात पिता नैं एम।
तिमहिज छै माता पिता कांइ, जे तुम्ह भाख्यो तेम ।।

१३. जे तुम्है मुझ नैं इम कहो, इम वली ताहरै ए जात।
धन दादा परदादा रो संचियो, जाव दीक्षा लीजै प्रभु हाथ ।।

१४. इम निश्चै हे माता पिता ! हिरण्य सुवर्ण जावत द्रव्य।
अग्नि साधारण अग्नि में बलै, चोर साधारण भव्य ।।

१५. राय साधारण नृप लिये रे, मृत्यु साधारण मान।
न्याती गोती साधारण वली रे, एतो हिरण्यादिक पहिछाण।

सोरठा

१६. एहिज द्रव्य प्रतेह, अति परवशपणुं जणायवा।
अन्य पर्याय करेह, कहियै छै ते सांभलो ।।

१७. *अग्नि सामान्य ते अग्नि थी रे, हुवै हिरण्यादिक नु विणास।
जाव पुत्रादि सामान्य छै तिके रे, कुटंब सामान्य विमास ।।

वा०—पूर्वे कह्यो साधारण, इहां सामान्य कह्यो, ते एकार्थ जाणवूं।

१८. अध्रुव अनित्य अशाश्वतो रे, पूर्व तथा पछै जेह।
अवश्य छांडिवूं हुस्यै सही रे, कांइ हिरण्यादिक द्रव्य तेह ।।

१९. ते माटै कुण जाणै वली रे, तं चेव तिमहिज न्हाल।
जाव प्रव्रज्या आदरूं रे, तुझ आज्ञा थी सुविशाल ।।

२०. क्षत्रिय-सुत जमाली तणां रे, मात पिता तिहवार।
जमाली प्रति चलायवा कांइ, समर्थ नहीं जिहवार ।।

२१. विषय शब्दादिक जेहनें रे, अनुलोम ते विषय विषेह।
प्रवृत्ति जनकपणें करि तिके रे, अनुकूल वचन करेह ।।

प्रतीताः 'सिलप्पवाल' त्ति विद्रुमाणि 'रत्तरयण' त्ति पद्मरागास्तान्यादिर्यस्य (वृ० प० ४७०)

७. 'संत' त्ति विद्यमानं स्वायत्तमित्यर्थः 'सार' त्ति प्रधानं (वृ० प० ४७०)

८. अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं
'पकामं दाउ' त्ति अत्यर्थं दीनादिभ्यो दातुम् (वृ० प० ४७०)

९. पकामं भोत्तुं परिभाएउं
भोक्तुं—स्वयं भोगेन 'परिभाएउं' ति परिभाजयितुं दायादादीनां प्रकामदानादिषु यावत् स्वापतेयमलं तावदस्ति (वृ० प० ४७०)

१०. तं अणुहोहि ताव जाया ! विउले माणुस्सए इड्ढि-सक्कारसमुदए,

११. तओ पच्छा अणुहूयकल्लाणे, वड्ढियकुलवंस जाव (सं० पा०) पव्वइहिसि। (श० ९।१७५)

१२. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ !

१३. जण्णं तुब्भे ममं एवं वदह—इमं च ते जाया !
अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए जाव पव्वइहिसि।

१४,१५. एवं खलु अम्मताओ ! हिरण्णे य, सुवण्णे य जाव सावएज्जे अग्गिसाहिए, चोरसाहिए रायसाहिए मच्चुसाहिए, दाइयसाहिए
अग्न्यादेः साधारणमित्यर्थः। (वृ० प० ४७०)

१६. एतदेव द्रव्यस्यातिपारवश्यप्रतिपादनार्थं पर्यायान्तरे-णाह— (वृ० प० ४७०)

१७. अग्गिसामण्णे जाव (सं० पा०) दाइयसामण्णे
'दाइयसाहिए' त्ति दायादाः—पुत्रादयः (वृ० प० ४७०)

१८. अधुवे, अणितिए, असासए, पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सइ

१९. से केस णं जाणइ तं चेव जाव (सं० पा०) पव्वइत्तए। (श० ९।१७६)

२०. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मताओ जाहे नो संचाएंति

२१. विसयाणुलोमाहिं
'विसयाणुलोमाहिं' ति विषयाणां—शब्दादीनामनु-लोमाः—तेषु प्रवृत्तिजनकत्वेनानुकूला विषयानुलोमा-स्ताभिः (वृ० प० ४७०)

---

*लय : राजनगर भणतां थकां रे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२. घणुं सामान्यपणें करि कहिवुं, तिण वचने करि आम।
वलि विशेषपणें करि कहिवुं, तेह वयण करि ताम।।

२३. वचने करि जगाड़वूं रे, जिम रहै संसार मांय।
वलि प्रेम युक्त प्रार्थना करी तिको, वीनती करि अधिकाय।।
२४. वचन सामान्यपणें कही रे, वलि कही वयण विशेख।
संबोधन वचन कही वली, विनती प्रेम युक्त संपेख।।
२५. वचन विषे अनुलोमका रे, कही थाका तिण काल।
विषये प्रतिकूल वच हिवै कहै, आखी दोय सौ सातमीं ढाल।।

२२. बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य
'आघवणाहि य' त्ति आख्यापनाभिः—सामान्यतो भणनैः 'पन्नपणाहि य' त्ति प्रज्ञापनाभिश्च—विशेषकथनैः (वृ० प० ४७०, ४७१)
२३-२५. सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवेत्तए वा पण्णवेत्तए वा
'सन्नवणाहि य' त्ति सञ्ज्ञापनाभिश्च - सम्बोधनाभिः 'विन्नवणाहि य' त्ति विज्ञापनाभिश्च—विज्ञप्तिकाभिः सप्रणयप्रार्थनैः (वृ० प० ४७१)

ढाल : २०८

दूहा

१. विषय तणो परिभोग जे, तास निषेधक ताम।
तेह विषे प्रतिलोमका, वचने करि कहै आम।।

२. संजम थी भय ऊपजै, वलि तसु चलिवुं होय।
इसो शील छै जेहनुं, ते वचने करि सोय।।

३. जे विशेष वचने करि, कहितां वचन विशेख।
मात-पिता इह विध कहै, जमाली प्रति पेख।।

*जाया ! संजम दुक्कर कार। (ध्रुपदं)

४. इम निश्चै करिनैं हे जाया ! निर्ग्रंथ प्रवचन सार।
सत्य अणुत्तर एह थकी अन्य, नहिं अति प्रवर उदार।।
५. केवल ए सम नहि को दूजो, जेम आवश्यक मांहि।
यावत अंत करै सहु दुख नों, मुनि प्रवचन थी ताहि[1]।।

सोरठा

६. जाव शब्द थी देख, पडिपुन्ने ते शिव गति।
पमाड़वा नां पेख, गुणे करी भरियो अछै।।
७. नेयाउए ए न्हाल, नायक प्रापक शिव तणो।
अथवा न्याय विशाल, प्रवचन समय विषे कह्यो।।

८. संसुद्धे अतिहि शुद्ध, समस्तपणें करी तिको।
सल्लगत्तणे बुद्ध, कापणहारज सल्य नों।।

१. ताहे विसयपडिकूलाहिं
विषयाणां प्रतिकूलाः—तत्परिभोगनिषेधकत्वेन प्रतिलोमा यास्ताः (वृ० प० ४७१)
२. संजमभयुव्वेयणकरीहिं
संयमाद्भयं—भीतिं उद्वेजनं च—चलनं कुर्वन्तीत्येवंशीला यास्ताः (वृ० प० ४७१)
३. पण्णवणाहिं पण्णवेमाणा एवं वयासी—

४. एवं खलु जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे

५. केवले जहा आवस्सए (४।९) जाव (सं० पा०) सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति
'केवल' त्ति केवलं—अद्वितीयं (वृ० प० ४७१)

६. पडिपुण्णे
अपवर्गप्रापकगुणैर्भृतं (वृ० प० ४७१)
७. नेयाउए
नायकं मोक्षगमकमित्यर्थः नैयायिकं वा न्यायानपेतत्वात् (वृ० प० ४७१)
८. संसुद्धे सल्लगत्तणे
सामस्त्येन शुद्धं 'सल्लगत्तणे' मायादिशल्यकर्त्तनं (वृ० प० ४७१)

*लय : सीता आवै रे घर राग

१. सं० पा० के अनुसार पांचवीं गाथा में पूरा पाठ आ गया है। उसके बाद पुनः ६ से १५ तक की गाथाओं में पूरे पाठ की जोड़ की गई है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. सिद्धिमग्ग सुविधान, हितार्थ प्राप्ति उपाय जे।
मुत्तिमग्ग महिमान, अहित-विच्युति उपाय जे।।

१०. निज्जाणमग्गे ताय, सिद्ध क्षेत्र तेहनैं विषे।
जावा तणो उपाय, निर्ग्रंथ-प्रवचन जाणवूं।।

११. निव्वाणमग्गे न्हाल, सकल कर्म नां विरह थी।
उपनो सुख सुविशाल, तेह तणोंज उपाय ए।।

१२ अवितह कहितां सोय, कालांतर पिण अनपगत।
तथाविध अवलोय, अभिमत प्रकार एह छै।।

१३. अविसंधि[1] सुवदीत, प्रवाह करी विच्छेद नहीं।
तथा संदेह रहीत, अर्थ अविसंदिद्ध नुं।।

१४. सहु दुख प्रतीक्षण मग्ग, एह प्रवचन विषे जिके।
जीवा रह्या उदग्ग, सिज्झै बुज्झै मुच्चवै।।

१५. हुवै शीतलीभूत, अंत करै सहु दुख तणो।
जाव शब्द में सूत, कह्या आवसग थीज ए।।

१६. *सर्प तणी पर एकांत-निश्चय, दृष्टि—बुद्धि अवलोय।
इण निर्ग्रंथ प्रवचन विषे, चारित्र पालण सोय।।

सोरठा

१७. अहि नी आमिष काज, एकान्ता—एकनिश्चया।
दृष्टि हुवै निर्व्याज, तिम चरण पालण इक दृष्टि—बुद्धि।।

१८. *जेह पाछणा नीं परै, एकांत जे समान-
धारा, जिम क्रिया जसु, जे चरण विषे सुविधान।।

१९. जिम लोह नां जव चाबिवा, तिम निर्ग्रंथ प्रवचन सार।
निरअतिचारपणैं पालिवुं, दुक्कर चरण उदार।।

२०. सार रहित जिम कवल वालु नां, निर्ग्रंथ प्रवचन तेम।
विषय तणां सुख स्वाद रहित छै, चरण धरण सुख खेम।।

२१. महानदी गंगा नैं साहमें, स्रोते दुखे गमन।
तिम संजम मार्ग आचरतां, दुस्तर है प्रवचन।।

२२. महासमुद्र जिम भुजा करीनैं, तिरणो दुक्करकार।
तिम प्रवचन वर चरण पालवुं, दुस्तर अधिक अपार।।

९. सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे
'सिद्धिमग्गे' हितार्थप्राप्त्युपायः 'मुत्तिमग्गे' अहित-विच्युतेरुपायः (वृ० प० ४७१)

१०. निज्जाणमग्गे
सिद्धिक्षेत्रगमनोपायः (वृ० प० ४७१)

११. णिव्वाणमग्गे
सकलकर्मविरहजसुखोपायः (वृ० प० ४७१)

१२. अवितहे
कालान्तरेऽप्यनपगततथाविधाभिमतप्रकारम् (वृ० प० ४७१)

१३. अविसंधि
प्रवाहेणाव्यवच्छिन्नं (वृ० प० ४७१)

१४. सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, एत्थं ठिया जीवा सिज्झंति, बुज्झंति मुच्चंति

१५. परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति

१६. अहीव एगंतदिट्ठीए
अहेरिव एकोऽन्तो—निश्चयो यस्याः सा (एकान्ता सा) दृष्टिः—बुद्धिर्यस्मिन् निर्ग्रन्थप्रवचने चारित्र-पालनं प्रति तदेकान्तदृष्टिकम् (वृ० प० ४७१)

१७. अहिपक्षे आमिषग्रहणैकतानतालक्षणा एकान्ता—एकनिश्चया दृष्टिः—दृग् यस्य स एकान्तदृष्टिकः (वृ० प० ४७१)

१८. खुरो इव एगंतधाराए
एकान्ता—उत्सर्गलक्षणैकविभागाश्रया धारेव धारा—क्रिया यत्र तत्तथा (वृ० प० ४७१)

१९. लोहमया जवा चावेयव्वा
लोहमया यवा इव चर्वयितव्याः, नैर्ग्रन्थं प्रवचनं दुष्करमिति हृदयं (वृ० प० ४७१)

२०. वालुयाकवले इव निस्साए
वालुकाकवल इव निरास्वादं वैषयिकसुखास्वादना-पेक्षया प्रवचनमिति (वृ० प० ४७१)

२१. गंगा वा महानदी पडिसोयं गमणयाए
गंगा वा—गंगेव महानदी प्रतिश्रोतसा गमनं प्रति-श्रोतोगमनं तद्भावस्तत्ता तया, प्रतिश्रोतोगमनेन गंगेव दुस्तरं प्रवचनमिति भावः। (वृ० प० ४७१)

२२. महासमुद्दो वा भुयाहिं दुत्तरो
एवं समुद्रोपमं प्रवचनमपि (वृ० प० ४७१)

---

१. जयाचार्य को प्राप्त आदर्श में अविसंधि और अविसंद्धि—ये दो पाठ में रहे होंगे। अंगसुत्ताणि ६।१७७ में यहां एक ही पाठ है—अविसंधि। इस पाठ में पाठान्तर की भी कोई सूचना नहीं है।

*लय : सीता आवै रे धर राग।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३. खडगादिक नीं तीक्षण धारा, ऊपर गमन दुखेह।
तिम दुक्कर है चरण पालिवुं, संजम धार विशेह ॥

२४. महाशिला रज्जु बांधी नें, कर धरतां दुक्करकार।
तिम प्रवचन गुरुता प्रति धरवूं, चरित्र निरतिचार ॥

२५. असिधार अतिक्रमता दुक्कर, तिम व्रत नेम उदार।
निर्ग्रंथ प्रवचन प्रते पालिवुं, तेहथी दुक्करकार ॥

सोरठा

२६. चारित्त दुक्करकार, किण कारण इहां आखियो ?
वर मुनि नों आचार, देखालै हिव आगलै ॥

२७. *श्रमण निर्ग्रंथ भणी नहिं कल्पै, निश्चै करि हे जात !
मुनि अर्थे असणादिक कीधुं, आधाकर्मी ख्यात ॥
२८. सर्व दर्शणी अर्थ कर्‌युं ते, उद्देशिक कहिवाय।
मुनि-गृहि बिहु नें अर्थ निपायुं, मिश्र कहीजै ताय ॥
२९. आधण में अधिको ऊर्‌यूं जे, मुनि नें अर्थे आ'र।
अज्भोयर ते श्रमण मुनी नें, कल्पै नहीं लिगार ॥

३०. सीत मिली आधाकर्मी नीं, अन्य आ'र रै मांय।
पूतिकर्म कहीजै तेहनें, ए पिण कल्पै नांय ॥
३१. साधु अर्थे मोल लियो जे, कृतगड़ कहियै तास ॥
साधु अर्थे लियो उधारो, पामिच्च कहियै जास ॥
३२. अन्य तणो जे खोसी देवै, अच्छिज कहियै तेह।
अणिसिट्ठ एक तणी इच्छा विण, दियै सीर नों जेह ॥
३३. अभिहड ते साहमो आण्यो, फुन कंतार भत्तेह ॥
अटवी विषे भिक्षाचर अर्थे, निपजायो अन्न जेह ॥

३४. दुर्भिक्षभक्त दुकाल विषे, भिखारचां अर्थे कीध।
गिलाणभक्त फुन रोगी अर्थे, निपजायो सुप्रसीध ॥
३५. वद्दलियाभत्त मेह वर्षतां, जे भिखार्‌यां काज।
असणादिक निपजायो ते पिण, कल्पै नहीं समाज ॥
३६. वली प्राहुणा अर्थ निपायो, घर का जीमैं नांहि।
प्राहुणभक्त कहीजै तेहनें, ते पिण कल्पे नांहि ॥
३७. सेज्जातर फुन राजपिंड फुन, मूल-भोजन वलि जाण।
कंद-भोजन वलि फल नों भोजन, बीज-भोजन पहिछाण ॥

३८. हरित-भोजन वा रव सहु ठामे, भोगविवो अवलोय।
अथवा जे पीवूं नहिं कल्पै, संत मुनी नें सोय ॥
३९. सुख भोगविवा योग्य पुत्र ! तूं, वा सुख उपचय ताय।
पिण दुख नैं भोगविवा योग्यज, निश्चै करिनैं नांय ॥

*लय : सीता आवै रे धर राग

२३. तिक्खं कमियव्वं
यदेतत् प्रवचनं तत्तीक्ष्णं खड्गादि क्रमितव्यं
(वृ० प० ४७१)

२४. गरुयं लंबेयव्वं
'गुरुकं' महाशिलादिकं 'लम्बयितव्यम्' अवलम्बनीय रज्ज्वादिनिबद्धं हस्तादिना धरणीयं प्रवचनं
(वृ० प० ४७१)

२५. असिधारगं वयं चरियव्वं
असेर्धारा यस्मिन् व्रते आक्रमणीयतया तदसिधाराकं 'व्रतं' नियमः 'चरितव्यम्' आसेवितव्यं, यदेतत् प्रवचनानुपालनं तद्बहुदुष्करनित्यर्थः (वृ० प० ४७१)

२६. अथ कस्मादेतस्य दुष्करत्वम् ? (वृ० प० ४७१)

२७. नो खलु कप्पइ जाया ! समणाणं निग्गंथाणं अहाकम्मिए इ वा

२८. उद्देसिए इ वा, मिस्सजाए इ वा

२९. अज्झोयरए इ वा,
स्वार्थं मूलाद्रहणे कृते साध्वाद्यर्थमधिकतरकणक्षेपणमिति (वृ० प० ४७१)

३०. पूइए इ वा

३१. कीते इ वा, पामिच्चे इ वा

३२. अच्छेज्जे इ वा, अणिसट्ठे इ वा

३३. अभिहडे इ वा, कंतारभत्ते इ वा
'कंतारभत्तेइ व' त्ति कान्तारं—अरण्यं तत्र यद्भिक्षुकार्थं संस्क्रियते तत्कान्तारभक्तम् (वृ० प० ४७१)

३४. दुब्भिक्खभत्ते इ वा गिलाणभत्ते इ वा

३५. वद्दलियाभत्ते इ वा

३६. पाहुणगभत्ते इ वा

३७. सेज्जायरपिंडे इ वा, रायपिंडे इ वा, मूलभोयणे इ वा, कंदभोयणे इ वा, फलभोयणे इ वा, बीयभोयणे इ वा

३८. हरियभोयणे इ वा, भोत्तए वा पायए वा

३९. तुमं सि च णं जाया ! सुहसमुचिए नो चेव णं दुहसमुचिए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४०. नहीं समर्थ सी खमवा उष्णज, सहिवा समर्थ नांय।
भूख अनें तिरखा सहिवा नें, समर्थ नहिं तुझ काय॥

४१. चोर तणां उपद्रव सहिवा नें, समर्थ नहीं छ ताय।
श्वापद भुयंग तणां उपद्रव पिण, सहिवा समरथ नांय॥

४२. दंस तणां उपद्रव सहिवा पिण, समर्थ नहीं छै कोय।
माछर नां उपद्रव सहिवा नें, समर्थ नहीं छै सोय॥

४३. वाय पित्त कफ त्रली एकठा, थया तिको सन्निपात।
विविध प्रकार तणां ते रोगज, कुष्ठादिक आख्यात॥

४४. आतंक शीघ्र हणें शूलादिक, तेह परीसह आय।
फुन उपसर्ग उदय आयां तूं, सहिवा समर्थ नांय॥

४५. ते माटै निश्चै करि जाया! क्षण मात्र पिण ताय।
विरह तुम्हारो म्है नहिं वांछां, सांभल सुत! मुझ वाय॥

४६. तिणसूं घर में रहिवै पहिलां, म्है जीवां जिहां लगेह।
म्हां काल गयां पाछै यावत ही, प्रवर प्रव्रज्या लेह॥

४७. ए दोयसौ ऊपर आखी, ढाल अष्टमी मांय।
दुक्कर चारित्र धर्म बतायो, मात पिताइं ताय॥

४०. नालं सीयं, नालं उण्हं, नालं खुहा, नालं पिवासा

४१. नालं चोरा, नालं वाला

४२. नालं दंसा, नालं मसगा

४३,४४. नालं वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सन्निवाइए विविहे रोगायंके परिस्सहोवसग्गे उदिण्णे अहियासेत्तए।
'रोगायंके' त्ति इह रोगाः—कुष्ठादयः आतंका—आशुघातिनः शूलादयः (वृ० प० ४७१)

४५. तं नो खलु जाया! अम्हे इच्छामो तुब्भं खणमवि विप्पयोगं

४६. तं अच्छाहि ताव जाया! जाव ताव अम्हे जीवामो तओ पच्छा अम्हेहिं जाव (सं० पा०) पव्वइहिसि।
(श० ६।१७७)

ढाल : २०६

दूहा

१. तब जमाली क्षत्रिय-सुत, कहै मात पिता नें वाय।
तिमहिज हे माता! पितर! कह्युं अन्यथा नांय॥

२. जे तुम्ह मुझ नें इम कहो, इम निश्चै हे जात।
निर्ग्रंथ प्रवचन सत्य फुन, सर्वोत्कृष्ट सुहात॥

३. केवल शुद्ध इत्यादि जे, तिमहिज जावत तेह।
प्रव्रज्या लेज्यो तुम्है, मुझ काल गयां पाछेह॥

*जमाली नां चरणमहोत्सव जाण।
मात-पिता महिमानिला रे करता कोड किल्याण॥(ध्रुपदं)

४. इम निश्चै माता! पिताजी! निर्ग्रंथ प्रवचन सार।
क्लीव मंद संघयण नां धनी, तास दुक्करकार॥

५. अथिर चित्त छै जेहनों रे, कायर तेह कहाय।
इण कारण थी कापुरुष नें रे, दुक्कर चरण अथाय॥

६. इहलोक नां सुख विषे राता, परलोक नों भय नांहि।
ते उपराठा परलोक थी रे, वले विषय तिसिया ताहि॥

१. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ!

२. जण्णं तुब्भे ममं एवं वदह—एवं खलु जाया! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे

३. केवले तं चेव जाव पव्वइहिसि

४. एवं खलु अम्मताओ! निग्गंथे पावयणे कीवाणं
'कीवाणं' ति मन्दसंहननानां (वृ० प० ४७१)

५. कायराणं कापुरिसाणं
'कायराणं' ति चित्तावष्टम्भवर्जितानाम्।
(वृ० प० ४७१)

६. इहलोगपडिबद्धाणं परलोगपरंमुहाणं विसयतिसियाणं

* लय : कपि रे पिया संदेशो कहै रे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरठा

७. पूर्वे अर्थ आख्यात, अन्वय फुन व्यतिरेक कर।
वलि कहियै अवदात, चित्त लगाई सांभलो॥

८. *दुखे सेववा योग्य छै इम, निर्ग्रंथ प्रवचन ख्यात।
ते पागय—प्राकृत पुरुष नैं, दुक्कर चरण विख्यात॥

९. धीर जे साहसीक छै जे, तेहनैं पिण अवलोय।
ए कार्य करिवं हिज मुझनैं, इम निश्चैवंत नैं सोय॥

१०. तेह विषे पिण जे वली रे, उद्यमवंत नैं ताम।
जे कार्य नां उपाय नैं रे, प्रवर्त्तक नैं आम॥
११. निश्चै कर तसु इह प्रवचने तिको रे, अथवा लोक विषेह।
किंचित पिण दुक्कर नहीं रे, क्रिया करेवी जेह॥
१२. ते भणी हूं वांछू अछूं रे, अहो मात! फुन तात।
आप तणी आज्ञा थयां रे, जाव चरण ग्रहूं जिन हाथ॥

१३. जमाली क्षत्रिय-सुत प्रतै रे, मात पिता तिणवार।
घर मांहै राखण भणी रे, समर्थ नहीं जिवार॥
१४. विषय अनुकुल वचने करि रे, विषय प्रतिकूल चरित्त।
ते चरण पालिवूं कठिन है रे, इम वचन करीनैं कथित्त॥
१५. जे सामान्यज वच करी रे, विशेष वचन करेह।
संबोधन वचन जगाड़वै रे, प्रेम युक्त वचनेह॥
१६. जे सामान्यज वच कहीं रे, जावत वीनवी जोय।
विण इच्छा हीज चरण नीं रे, अनुमत दीधी सोय॥
१७. जमाली क्षत्रिय-सुत तणो रे, जनक तदा तिण ठाय।
कोटुंबिक नर तेड़नैं रे, बोलै एहवी वाय॥
१८. शीघ्र अहो देवानुप्रिया! रे, क्षत्रियकुंड अवधार।
ग्राम नगर छै ते प्रतै रे, अभ्यंतर फुन बार॥
१९. छिड़काव करो उदके करी रे, पूंजो प्रमार्जिका करेह।
लीपो गोबर आदि सूं रे, जिम उववाई विषेह॥

सोरठा

२०. जिम उववाई मांहि, आख्यो छै ते इहविधे।
शृंगाटक त्रिक ताहि, चतुष्क चच्चर चतुर्मुख॥
२१. फुन महापंथ विषेह, छांटो ईषत जल करी।
फुन अति जल छिड़केह, इण कारण थी शुचि करो॥
२२. फुन कचरो काढेह, सेरी सेरी सुध करो।
आपण वीथी जेह, हाट मार्ग तेहनैं विषे॥

७. पूर्वोक्तमेवार्थमन्वयव्यतिरेकाभ्यां पुनराह—
(वृ० प० ४७१)

८. दुरणुचरे पागयजणस्स
'दुरनुचरं' दुःखासेव्यं प्रवचनमिति प्रकृतं
(वृ० प० ४७१)

९. धीरस्स निच्छियस्स
'धीरस्स' त्ति साहसिकस्य तस्यापि 'निश्चितस्य' कर्त्तव्यमेवेदमितिकृतनिश्चयस्य तस्यापि
(वृ० प० ४७१,४७१)

१०. ववसियस्स
'व्यवसितस्य' उपायप्रवृत्तस्य (वृ० प० ४७२)

११. नो खलु एत्थं किंचि वि दुक्करं करणयाए
'एत्थं' ति प्रवचने लोके वा (वृ० प० ४७२)

१२. तं इच्छामि णं अम्मताओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव (सं० पा) पव्वइत्तए। (श० ९।१७८)

१३. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति

१४. विसयाणुलोमाहि य, विसयपडिकूलाहि य

१५,१६. बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवेत्तए वा जाव (सं० पा०) विण्णवेत्तए वा ताहे अकामाइं चेव जमालिस्स खत्तिय-कुमारस्स निक्खमणं अणुमण्णित्था। (श० ९।१७९)

१७. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुं-बियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

१८. खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! खत्तियकुंडग्गामं नयरं सब्भिंतरबाहिरियं

१९. आसिय-सम्मज्जिओवलित्तं जहा ओववाइए (सू० ५५) जाव
आसिक्तमुदकेन संमार्जितं प्रमार्जनिकादिना उपलिप्तं च गोमयादिना यत्तत्तथा। (वृ० प० ४७६)

२०-२२. 'जहा उववाइए' त्ति एवं चैतत्तत्र—'सिंघाडगतियचउक्कचच्चरचउमुहमहापहपहेसु आसित्तसित्त-सुइयसंमट्ठरत्थंतरावणवीहियं' आसिक्तानि—ईष-त्सिक्तानिसिक्तानि च—तदन्यान्यत एव शुचिकानि—पवित्राणि संमृष्टानि कचवरापनयनेन रथ्यान्तराणि—रथ्यामध्यानि आपणवीथयश्च—हट्टमार्गा यत्र तत्तथा
(वृ० प० ४७६)

---
*लय : कपि रे प्रिया संदेशो कहै रे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३. वली मंच पर मंच, तिणै करीनें सहित फुन।
नानाविध रंग संच, तिण करि ऊंची ध्वज वली ।।

२४. चक्र सींहादि जाण, लांछन करी सहीत ते।
ध्वजा पताका माण, तेह करि मंडित वली ।।

२५. इत्यादिक अवलोय, सूत्र उववाइ में कह्यूं।
यावत आज्ञा सोय, पाछी सूंपै नफर तें ।।

२६. *तव जमाली क्षत्रियकुमर नों रे, जनक दूजी वार।
कोटुंविक नर तेडनै रे, वोलै इम अवधार ।।

२७. शीघ्र अहो देवानुप्रिया! रे, जमाली क्षत्रियकुमर नें जाण।
महाअर्थ प्रयोजन प्रतै रे, वलि महामूल्य पिछाण ।।

२८. मोटा माणस जोग्य जे रे, विस्तीरण सुविचार।
दीक्षा महोच्छव सामग्री प्रतै रे, करो सज्ज उदार ।।

२९. कोटुंविक नर तिण अवसरे रे, तिमहिज जावत जाण ।।
सर्व सामग्री सज्ज करी रे, आज्ञा सूंपी आण ।।

३०. जमाली क्षत्रियकुमर नैं रे, मात पिता तिणवार।
प्रवर सिंघासण नैं विषे रे, पूर्व सन्मुख बेसार ।।

३१. पूर्व साहमों बेसार नैं रे, एकसो आठ उदार।
कलशा जे सोवन तणां इम, जिम रायप्रश्रेणि मझार ।।

सोरठा

३२. इकसौ आठ उदार, कलशा जे रूपा तणां।
मणी तणां फुन सार, कलश एक सौ आठ ह्वै ।।

३३. सोवन रूप मझार, कलश एक सौ आठ फुन।
सोवन मणि रा सार, ते पिण इकसौ आठ छै ।।

३४. कलश एक सौ आठ, रूपा नैं फुन मणि तणां।
इकसौ आठ सुघाट, सोवन रूप मणी तणां ।।

३५. *जावत जे माटी तणां रे, कलश एक सौ आठ।
आठसौ नैं चोसठ कह्या रे, कलशा रूडे घाट ।।

३६. सर्व ऋद्धि करिनै तिको रे, समस्त जे छत्राद।
राजचिह्न रूपे करी रे, यावत महारव साद ।।

सोरठा

३७. जाव शब्द में श्रेष्ठ, सहु द्युति आभरणादि नीं।
अथवा उचित यथेष्ट, वस्तु घट नां लक्षण करी ।।

२३,२४. 'मंचाइमंचकलियं णाणाविहरागभूसियभ्झयपडागाइपडागमंडियं' नानाविधरागैरुच्छ्रतैर्ध्वजैः—चक्रसिंहादिलाञ्छनोपेतैः पताकाभिश्च—तदितराभिरतिपताकाभिश्च पताकोपरिवर्त्तिनीभिर्मण्डितं यत्तत्तथा (वृ० प० ४७६)

२५. ......ते वि तहेव पच्चप्पिणंति। (श० ९।१८०)

२६. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेत्ता एवं वयासी—

२७. खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स महत्थं महग्घं
'महत्थं' ति महाप्रयोजनं 'महग्घं' ति महामूल्यं (वृ० प० ४७६)

२८. महरिहं विपुलं निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह।
'महरिहं' ति महार्हं—महापूज्यं महतां वा योग्यं 'निक्खमणाभिसेयं' ति निष्क्रमणाभिषेकसामग्रीम् (वृ० प० ४७६)

२९. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव जाव उवट्ठवेंति। (श० ९।१८१)

३०. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहं निसीयावेंति

३१. निसीयावेत्ता अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं एवं जहा रायप्पसेणइज्जे (सूत्र २७९) जाव (सं० पा०)

३२. अट्ठसएणं रुप्पमयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं मणिमयाणं कलसाणं

३३. अट्ठसएणं सुवण्णरुप्पामयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं सुवण्णमणिमयाणं कलसाणं

३४. अट्ठसएणं रुप्पमणिमयाणं कलसाणं अट्ठसएणं सुवण्णरुप्पमणिमयाणं कलसाणं

३५. अट्ठसएणं भोमेज्जाणं कलसाणं

३६. सव्विड्ढीए जाव (सं० पा०) रवेणं
सर्व्वर्द्ध्या—समस्तछत्रादिराजचिह्नरूपया (वृ० प० ४७६)

३७. सव्वजुतीए
यावत्करणादिदं दृश्यं—'सव्वजुईए' सर्वद्युत्या—आभरणादिसम्बन्धिन्या सर्वयुक्त्या वा उचितेष्टवस्तुघटनालक्षणया (वृ० प० ४७६)

---

१. ओवाइयं सू० ६१,६२.
*लय : कपि रे प्रिया संदेशो कहै रे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३८. सहु बल सेन्य करेह, सर्वज समुदाये करी।
पुरवासी जन जेह, तेह तणैं मिलवै करी।।

३९. सर्व उचित जे जोग, कृत्य करण रूपे करी।।
सर्व विभूति अरोग, सर्व संपदाये करी।।

४०. सर्व विभूषा सार, तेह सर्व शोभा करी।
सहु संभ्रम उदार, प्रमोद कृत उत्सुक करी।।

४१. सर्व पुष्प वर गंध, माल्य अलंकारे करी।
सर्व वाजित्र अमंद, तसु रव मिल महाघोष जे।।

४२. सर्व शब्द अवलोय, अल्प अर्थ में पिण हुवै।
तिण कारण थी जोय, आगल कहियै छै हिवै।।

४३. मोटी ऋद्धि करि सोय, महाद्युति आभरणादि करि।
महाबल करिकै जोय, मोटे समुदाये करी।।

४४. महा वर वाजित्रेह, जमक-समक समकाल करि।
प्रकर्षे करि जेह, वजाड़वै करिनैं वली।।

४५. शंख शब्द सुप्रतीत, पणव पडह जे भांड नों।
पडहग ढोल वदीत, भेरी ते मोटी ढक्का।

४६. ऊंची अल्प विमास, महामुख वींटी चर्म करि।
कही झल्लरी तास, खरमुही ते काहला।।

४७. हुंडुक वाजित्र नाम, मुरज तिको मृदंग महा।
मृदंग मादल ताम, ढक्का विशेष दुंदुभि।।

४८. शंखादिक नों जेह, निर्घोष महा प्रयत्न करि।
उपजायो रव तेह, फुन निनाद ध्वनि मात्र जे।।

४९. शब्द अनैं ध्वनि बेह, एहिज लक्षण जेह रव।
ते ध्वनि शब्द करेह, ए जाव शब्द में जाणवा।।

५०. *मोटे-मोटे दीक्षा तणो रे, करै ताम अभिषेक।
इम अभिषेक करी तदा रे, करतल जाव संपेख।।

५१. जय विजय शब्दे करी रे, बधावै बधावी कहै एम।
कहै जाया! स्यूं दीजियै रे? तुझ प्रार्थना प्रेम।।

सोरठा

५२. अथवा देवां जोय, कहियै ते सामान्य थी।
प्रार्थना अवलोय, विशेष थी कहियै तिको।।

५३. *अथवा किण वस्तु थकी रे, ताहरूं अर्थ प्रयोजन।
दोयसौ नैं नवमीं कही रे, सरस ढाल शोभन।।

*लय : कपि रे प्रिया संदेशो कहै रे

३८. सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं
'सव्वबलेणं' सर्व्वसैन्येन 'सव्वसमुदएणं' पौरादिमीलनेन
(वृ० प० ४७६)

३९. सव्वादरेणं सव्वविभूईए
'सव्वायरेणं' सर्वोचितकृत्यकरणरूपेण 'सव्वविभूईए' सर्वसम्पदा (वृ० प० ४७६)

४०. सव्वविभूसाए सव्वसंभमेण
'सव्वविभूसाए' समस्तशोभया 'सव्वसंभमेणं' प्रमोदकृतौत्सुक्येन। (वृ० प० ४७६)

४१. सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सव्वतुडियसद्दसण्णिणाएणं
सर्व्वतूर्यशब्दानां मीलने यः संगतो निनादो — महाघोषः स तथा तेन (वृ० प० ४७६)

४२. अल्पेष्वपि ऋद्धयादिषु सर्वशब्दप्रवृत्तिर्दृष्टेत्यत आह—
(वृ० प० ४८६)

४३. महया इड्ढीए महया जुईए महया बलेणं महया समुदएणं

४४. महया वरतुडिय-जमगसमग-प्पवाइएणं
यमकसमकं युगपदित्यर्थः (वृ० प० ४७६)

४५. संख-पणव-पडह-भेरि-
पणवो—भाण्डपटहः भेरी—महती ढक्का
(वृ० प० ४७६)

४६. झल्लरि-खरमुहि
झल्लरी—अल्पोच्छ्रया महामुखा चर्म्मावनद्धा खरमुखी—काहला (वृ० प० ४७६)

४७. हुडुक्क-मुरय-मुइंग-दुंदुहि
मुरजो—महामर्द्दलः मृदङ्गो—मर्द्दलः दुन्दुभी—ढक्काविशेष एव (वृ० प० ४७६)

४८.४९. णिग्घोसणाइयरवेणं
ततः शङ्खादीनां निर्घोषो महाप्रयत्नोत्पादितः शब्दो नादितं तु—ध्वनिमात्रं एतद्द्वयलक्षणो यो रवः स तथा तेन (वृ० प० ४७६)

५०. महया-महया निक्खमणाभिसेगेणं अभिसिंचंति, अभिसिंचित्ता करयल जाव (सं० पा०)

५१. जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—भण जाया! किं देमो? किं पयच्छामो?

५२. अथवा दद्मः सामान्यतः प्रयच्छामः प्रकर्षेणेति विशेषः
(वृ० प० ४७६)

५३. किणा व ते अट्ठो? (श० ९।१८२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : २१०

दूहा

१. तत्र जमाली क्षत्रिय-सुत कहै मात पिता नैं एम।
अहो मात ! नैं तात जी ! हूं वछूं धर पेम ।।
२. कुत्रिकापण थी रजोहरण, पात्र अणावो फेर।
काश्यप ते नाई प्रतै, तेड़ावो फुन हेर ।।

३. कु कहितां मांहि त्रिक त्रितय, स्वर्ग मर्त्य पाताल।
तत्संभवि वस्तू अपि, कुत्रिक कहियै न्हाल ।।
४. ते वस्तू सम्पादिका, आपण हाट अखेह।
कही कुत्रिकापण तिका, देवाधिष्ठित एह ।।

वा०—कुत्तियावण दुकान नों धणी ते केहवो हुवै ? ते कहै छै—क्रोध, रहित, गर्व-रहित, राग-द्वेष-माया-लोभ-रहित, जिताश, जितपरीषह, शूर, दाता, अविरति सम्यग्दृष्टि, भगवंत ऊपर राग, पर-उपगारी, राजादिक जेहनें घणुं मानैं ? देवता वैमानिक पूर्व नैं स्नेह करि प्रिय मित्र तथा पितर—दादो, पितादिक तीन भुवन मांहि जे वस्तु ते सर्व दियैं । कुत्तियावण जे नगर मां होय, ते नगर नों राजा सर्व प्रकारे अणाचार वर्जै, न्याय में चाले, तिहां असोक वृक्ष नित्य हुवै । जेहनें घर नैं विषे कुत्रिकापण हाट हुवै, तेहनै देव अधिष्ठायक हुवै । रत्नप्रबोध ग्रन्थ मध्ये एहनूं कह्यूं छै ।

५. जमाली क्षत्रिय-सुत, तास पिता तिहवार।
कोटंविक नर तेहनैं, इम बोलै अवधार ।।
६. अहो देवानुप्रिय ! तुम्हैं, श्री भंडार थकीज।
सोनैया त्रिण लक्ष ते, ग्रहण करी शीघ्रहीज ।।

७. सोनैया बे लक्ष कर, कुत्रिक आपण थीज।
रजोहरण फुन पात्र जे, आणो ए वर चीज ।।
८. सोनैया एक लक्ष दे, काश्यप—नापित जेह।
तेह प्रतै तेडावियै, जनक आज्ञा इम देह ।।

*सुण सुखकारी, दीक्षा महोत्सव जमाली नां भारी। (ध्रुपदं)

९. ए कोडंबिक तिणवारो, ओतो जमाली क्षत्रियकुमारो।
तसु जनक तणो वच ताह्यो, सुण हरष संतोषज पायो ।।
१०. करतल जोड़ी जिवारो, ओतो वचन करै अंगीकारो।
शीघ्र भंडार थी सारो, ओतो त्रिण लक्ष लेई दीनारो ।।
११. तिमहिज यावत देई भावै, इक लक्ष नापित तेड़ावै।
बे लक्ष सुवर्ण करि माणैं, रजोहरण पात्र प्रति आणै ।।

१२. काश्यप नापित तिवारो, जमाली नैं पिता जिह्वारो।
कोडुंबिक नर पास तेड़ायो, ओतो हरष संतोषज पायो ।।

*लय : सुण चिरताली थारा

---

१. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—इच्छामि णं अम्मताओ !

२-४. कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणियं, कासवगं च सद्दावियं (श० ९।१८३)
'कुत्तियावणाओ' त्ति कुत्रिकं—स्वर्गमर्त्यपाताललक्षणं भूत्रयं तत्सम्भवि वस्त्वपि कुत्रिकं तत्सम्पादको य आपणो—हट्टो देवाधिष्ठितत्वेनासौ कुत्रिकापणस्तस्मात् । 'कासवगं' ति नापितं (वृ० प० ४७६)

५. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

६. खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइं गहाय
'सिरिघराओ' त्ति भाण्डागारात् (वृ० प० ४७६)

७. दोहिं सयसहस्सेहिं कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणेह

८. सयसहस्सेणं कासवगं सद्दावेह । (श० ९।१८४)

९. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा

१०. करयल जाव (सं० पा०) पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइं गिण्हंति

११. दोहिं सयसहस्सेहिं कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणेंति, सयसहस्सेणं कासवगं सद्दावेंति । (श० ९/१८५)

१२. तए णं से कासवए जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुंबिय पुरिसेहिं सद्दाविए समाणे हट्ठतुट्ठे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. स्नान बलिकर्म कीधा, जाव तनु श्रृंगार सीधा।
जिहां जनक जमाली नों जाणी, तिहां आवै आवी पहिछाणी ।।
[सुण भव प्राणी, ए तो चरण-महोच्छव जाणी]
१४. करतल जोड़ी तामो, जमाली नां पिता नैं शिर नामो।
जय-विजय वचन सूं बधायो, ओतो बोलै इहविध वायो ।।

१५. अहो देवानुप्रिया जी ! मुझ आज्ञा देवो तुम ताजी।
जे मुझ कार्य करिवूं, तिको हरष धरी आदरिवूं ।।
१६. जमाली क्षत्रियकुमारो, तास जनक तिहवारो।
तेह नापित प्रति एमो, ओतो वचन वदै धर प्रेमो ।।
१७. अहो देवानुप्रिया जी ! जमाली क्षत्रिय-सुत नैं समाजी।
परम यत्न करि पेखी, चिहुं आंगुल वर्जी विशेखी ।।
१८. दीक्षा प्रयोग सुस्थापो, अग्रभूत केश प्रति कापो।
लोच नैं अर्थे विशेषो, चिहुं आंगुल राखो केशो ।।

१९. काश्यप नापित तिवारो, जमाली नैं जनक जिहवारो।
इम वचन कह्यै छतै ताह्यो, ओतो हरष संतोषज पायो ।।
२०. करतल यावत एमो, स्वामी तहत्ति आज्ञा कहि तेमो।
विनय करी सुविचारो, ओतो वचन करै अंगीकारो ।।
२१. सुगंध गंधोदक करिनैं, कर पग पखाले पखाली नैं।
निर्मल अठ पुड वस्त्र करीनैं, मुख बांधै मुख बांधी नैं ।।
२२. जमाली क्षत्रियकुमर नैं, परम यत्न करि चित्त धर नैं।
चिहुं आंगुल वर्जी दीक्षा योग्य, पवर केश कापे सुप्रयोग्य ।।

२३. जमाली क्षत्रियकुमारो, ओतो तास माता तिहवारो।
हंस लक्षण पट शाटक करीनैं, अग्र गहै सुग्रही नैं ।।

सोरठा

२४. उज्जल हंस सरीस, अथवा श्वेतज हंस नां।
चिह्न रूप सुजगीस, हंस लक्षण कहियै तसु ।।
२५. शाटक जे पट रूप, पट-शाटक कहियै तसु।
शटन तणो तद्रूप, कर्त्ता पिण शाटक हुवै ।।
२६. ते व्यवच्छेदन अर्थ, पट नों ग्रहण कियो इहां।
वा शाटक तदर्थ, वस्त्र मात्र ते पृथुल पट ।।

वा०—पडसाडएणं पटरूप शाटक ते पट शाटक। शटन ते वस्त्र, तेहनों करणहार पिण शाटक कहियै। ते व्यवच्छेदन अर्थे पट नों ग्रहण कर्यूं। अथवा शाटक ते वस्त्र मात्र ते पृथुल विस्तारवंत पट कहियै ते भणी पट-शाटक जाणवो।

२७. सुगंध गंधोदके न्हाली, तिके केश पखालै पखाली।
अग्र प्रधान करी पेखो, वर श्रेष्ठ करी सुविशेखो ।।

२८. गंध नैं फुन माल करीनैं, तिके केश अर्चै अर्ची नैं।
शुद्ध वस्त्रे बांधै बांधी नैं, रत्नकरंड प्रक्षेपै प्रक्षेपी नैं ।।

१३. ण्हाए कयबलिकम्मे जाव (सं० पा०) सरीरे जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता

१४. करयल जाव (सं० पा०) जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पियरं जएणं विजएणं वद्धावेइ वद्धावेत्ता एवं वयासी—

१५. संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं मए करणिज्जं ?
(श० ९/१८६)

१६. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तं कासवगं एवं वयासी—

१७. तुमं देवाणुप्पिया ! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेणं जत्तेणं चउरंगुलवज्जे

१८. निक्खमणपाओग्गे अग्गकेसे कप्पेहि।
(श० ९/१८७)

'अग्गकेसे' त्ति अग्रभूताः केशा अग्रकेशास्तान्
(वृ० प० ४७६)

१९. तए णं से कासवगे जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे

२०. करयल जाव (सं० पा०) एवं सामी ! तहत्ताणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ

२१. सुरभिणा गंधोदएणं हत्थपादे पक्खालेइ, पक्खालेत्ता सुद्धाए अट्ठपडलाए पोत्तीए मुहं बंधइ, बंधित्ता

२२. जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेणं जत्तेणं चउरंगुलवज्जे निक्खमणपाओग्गे अग्गकेसे कप्पेइ।
(श० ९।१८८)

२३. तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं अग्गकेसे पडिच्छइ

२४. 'हंसलक्खणेणं' शुक्लेन हंसचिह्नेन वा
(वृ० प० ४७६)

२५,२६. 'पडसाडएणं' ति पटरूपः शाटकः पटशाटकः, शाटको हि शटनकारकोऽप्युच्यत इति तद्व्यवच्छेदार्थं पटग्रहणम्, अथवा शाटको वस्त्रमात्रं स च पृथुलः पटोऽभिधीयत इति पटशाटकः (वृ० प० ४७६)

२७. सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेइ, पक्खालेत्ता अग्गेहिं वरेहिं

'अग्गेहिं' ति 'अग्र्यैः' प्रधानैः (वृ० प० ४७६)

२८. गंधेहिं मल्लेहिं अच्चेति, अच्चेता 'सुद्धे वत्थे' बंधइ, बंधित्ता रयणकरंडगंसि पक्खिवति, पक्खिवित्ता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९. हार मोत्यां रो उदक नीं धारो, सिंदुवार तरु विशेष विचारो।
केइ कहै निर्गुंडी नां फूलो, तिके उज्जल अधिक अतूलो॥

३०. छेदी मोती नीं मालो, जेहवी दीसै तेहवा आंसू न्हालो।
सुत-विरह दुःसह चित डोलै, आंसू मूकती इम बोलै॥

३१. ए जमाली क्षत्रियकुमारो, तेहनां अग्र-केश वस्तु सारो।
वर मदन त्रयोदशी आदि, घणी तिथि विषे सुसंवादि॥

३२. पर्व दीवाली प्रमुख विषेहो, वली बहु उत्सव विषे एहो।
ते प्रिय-जन-संगम समुदायो, कौमुदी प्रमुख कहिवायो॥

३३. यज्ञ नागादि पूजा कहेहो, छण इंद्र महोत्सवादि विषेहो।
ए केश तणुं सुविमासो, मोनैं अपच्छिम दर्शण थासो॥

सोरठा

३४. अपच्छिम इहां अकार, अमंगल टालण नैं अरथ।
पश्चिम छेहलो सार, हुस्यै दर्श केशां तणो॥

३५. दर्श केश नुं एह, जमाली नां शिर तणां।
केश देखवै जेह, दर्शण दीठो सुत तणो॥

३६. वा पश्चिम छेहड़ो नांहि, बार-बार ए केश थी।
जमाली नों ताहि, मुझनैं दर्शण थायसै॥

वा०—नहीं पश्चिम छेहड़ो ते अपश्चिम कहियै। एतलै बार-बार करिकै जमालीकुमार नों दर्शन ए केश देख्ये छते थास्यै, संभारिवा थकी।

३७. एम कहीनैं तेहो, एतो ओसीसामूल विषेहो।
स्थापै केशां नैं जिवारो, आतो मोह वश मात तिवारो॥

३८. जमाली क्षत्रियकुमारो, तसु मात पिता तिहवारो।
दूजी वार उत्तर दिश स्हामो, सिंहासन रचावै अभिरामो॥

सोरठा

३९. उत्तरावक्रमणक होय, उत्तरवो उत्तर दिशि।
जेह थकी अवलोय, त्यां बेसाड़ै सुत भणी॥

४०. *क्षत्रिय-सुत जमाली नैं, रूपा सोना नां कलश करी नैं।
स्नान करावै सुचंगो, स्नान करावी नैं लूहै अंगो॥

४१ पक्षमवंत सुकुमाल, सुरभिगंध प्रधान विशाल।
रक्त वस्त्र रुमाल करी नैं, गात्र प्रतै लूहै लूहीनैं॥

*लय : सुण चिरताली थारा

२९. हार-वारिधार-सिंदुवार
'सिंदुवार' त्ति वृक्षविशेषो निर्गुण्डीति केचित् तत्कुसुमानि सिन्दुवाराणि तानि च शुक्लानीति
(वृ० प० ४७६)

३०. छिण्णमुत्तावलिप्पगासाइं सुयवियोगदूसहाइं अंसूइं विणिम्मुयमाणी विणिम्मुयमाणी एवं वयासी—

३१. एस णं अम्हं जमालिस्स खत्तियकुमारस्स बहूसु तिहीसु य
'एस णं' ति एतत्, अग्रकेशवस्तु⋯'तिहीसु य' त्ति मदनत्रयोदश्यादितिथिषु (वृ० प० ४७६)

३२. पव्वणीसु य उस्सवेसु य
'पव्वणीसु य' त्ति पर्व्वणीषु च कार्तिक्यादिषु 'उस्सवेसु य' त्ति प्रियसङ्गमादिमहेषु
(वृ० प० ४७६)

३३. जण्णेसु य छणेसु य अपच्छिमे दरिसणे भविस्सति
'जन्नेसु य' त्ति नागादिपूजासु 'छणेसु य' त्ति इन्द्रोत्सवादि लक्षणेषु (वृ० प० ४७६)

३४. 'अपच्छिमे' त्ति अकारस्यामंगलपरिहारार्थत्वात् पश्चिमं दर्शनं भविष्यति (वृ० प० ४७७)

३५. एतत् केशदर्शनमपनीतकेशावस्थस्य जमालिकुमारस्य यद्दर्शनं (वृ० प० ४७७)

३६. अथवा न पश्चिमं पौनःपुन्येन जमालिकुमारस्य दर्शनमेतद्दर्शने भविष्यतीत्यर्थः (वृ० प० ४७७)

३७. इति कट्टु ऊसीसगमूले ठवेति। (श० ९/१८९)

३८. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मापियरो दोच्चं पि उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेंति

३९. 'उत्तरावक्कमणं' ति उत्तरस्यां दिश्यपक्रमणं—अवतरणं यस्मात्तद् उत्तरापक्रमणम्—उत्तराभिमुखं
(वृ० प० ४७७)

४०. जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सेया-पीयएहिं कलसेहिं ण्हावेंति ण्हावेत्ता
'सीयापीयएहिं' ति रुप्यमयैः सुवर्णमयैश्चेत्यर्थः
(वृ० प० ४७७)

४१. पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेंति, लूहेत्ता
'पम्हलसुकुमालाए' ति पक्ष्मवत्या सुकुमालया चेत्यर्थः 'गंधकासाइए' त्ति गन्धप्रधानया कषायरक्तया शाटिकयेत्यर्थः (वृ० प० ४७७)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४२. सरस तत्काल नों घस्यो जेह, गोशीर्ष चंदन तेह।
ते प्रधान चंदन करीनें, गात्र प्रतै लीपै लीपी नें ।।
४३. नासिका नै निःस्वासज वाय, तेणे करी उडे कंपाय।
अति ही हलुओ वस्त्र विचारी, ते तो चक्षु नें आनंदकारी ।।

४४. प्रवर वर्ण फर्श सहित न्हालो, हय-लाल थी अधिक सुहालो।
अत्यंत धवल उज्जासं, सुवर्ण खचित बिहुं छेहडा जासं ।।

४५. मोटां योग्य उज्जल हंस सरिखो, अथवा हंस नां रूप सरिखो।
एहवा पट्ट शाटक सुखदाय, पहिरावै पहिरावी ताय ।।
४६. अठारैसरियो हार, पहिरावै अधिक उदार।
वलि नवसरियो अद्धहार, पहिरावै पहिरावी सार ।।

४७. इम जिम सुरियाभ नैं जाणी, अलंकार तिमहिज पिछाणी।
नानाविध रयण संकट उत्कृष्टं, वारु मुकुट पहिरावै सुइष्टं ।।

सोरठा

४८. सुरियाभे सुर सोय, अलंकार पहिर्या तिमज।
इहां कहिवो अवलोय, रायप्रश्रेणी थी कहूं ।।
४९. विचित्र मणी में ताहि, पहिरावै एकावली।
इम मुक्तावलि ताहि, केवल मुक्ताफलमयी ।।

५०. कनकावलि कहिवाय, सुवर्ण-मणिमय शोभती।
रत्नावली सुहाय, माला केवल रत्न नीं ।।

५१ अंगद केयूर दोय, बाहू नां आभरण जे।
तास विशेष सुजोय, जुदा कह्या किण कारणें ।।

५२. नाम कोष रै मांहि, एकार्थ ए आखिया।
इहां जुदा कह्या ताहि, फेर आकार नुं जाणवूं ।।
५३. कटक तिको अवलोय, कलाचिका आभरण जे।
त्रुटित बहिरखा होय, कटिसूत्र कणदोरो वली ।।

५४. हस्तांगुलि दश देख, दीपंती दश मुद्रिका।
सुवर्ण-सांकल पेख, हिय-गेहणो वक्ष-सूत्र ए ।।

५५. वच्छा-सूत्रज एह, पाठांतर कह्यूं वृत्ति में।
संकल ए शुभ रेह, उत्तरासंग जिम पहिरिइं ।।

४२. सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपंति अणुलिंपित्ता
४३. नासानिस्सासवायवोज्झं चक्खुहरं
'नासानीसासे' त्यादि नासानिःश्वासवातवाह्यमति-लघुत्वात्
चक्षुर्हरं—लोचनानन्ददायकत्वात्। (वृ० प० ४७७)
४४. वण्ण-फरिसजुत्तं हयलालापेलवातिरेगं धवलं कणगखचितंतकम्मं
'वन्नफरिसजुत्तं' ति प्रधानवर्णस्पर्शमित्यर्थः हयलालायाः
सकाशात् पेलवं - मृदु अतिरेकेण—अतिशयेन यत्तत् तथा कनकेन खचितं—मण्डितं अन्तयोः—अंचलयोः कर्म—वानलक्षणं यत्तत्तथा। (वृ० प० ४७७)
४५. महरिहं हंसलक्खणपडसाडगं परिहिंति परिहित्ता

४६. हारं पिणद्धेंति पिणद्धेत्ता अद्धहारं पिणद्धेंति, पिणद्धेत्ता
'हारं' ति अष्टादशसरिकं 'पिणद्धंति' पिनह्यतः पितरा-विति शेषः 'अद्धहारं' ति नवसरिकम् (वृ० प० ४७७)
४७. एवं जहा सूरियाभस्स अलंकारो तहेव जाव (सं० पा०) चित्तं रयणसंकडुक्कडं मउडं पिणद्धेंति
रत्नसंकटं च तदुत्कटं च—उत्कृष्टं रत्नसंकटोत्कटं (वृ० प० ४७७)
४८. रायपसेणइयं सूत्र २८५

४९. एगावलिं पिणद्धेंति मुत्तावलिं पिणद्धेंति
तत्रैकावली—विचित्रमणिकमयी मुक्तावली—केवल-मुक्ताफलमयी। (वृ० प० ४७७)
५०. रयणावलिं पिणद्धेंति
कनकावली—सौवर्णमणिकमयी रत्नावली—रत्नमयी (वृ० प० ४७७)
५१. अंगयाइं केयूराइं
अङ्गदं केयूरं च बाह्वाभरणविशेषः (वृ० प० ४७७)
५२. एतयोश्च यद्यपि नामकोशे एकार्थतोक्ता तथाऽपीहाऽऽ-कारविशेषाद् भेदोऽवगन्तव्यः (वृ० प० ४७७)
५३. कडगाइं तुडियाइं कडिसुत्तगं
कटकं—कलाचिकाभरणविशेषः त्रुटिकं—बाहुरक्षिका (वृ० प० ४७७)
५४. दसमुद्दाणंतगं विकच्छसुत्तगं
दशमुद्रिकानन्तकं—हस्ताङ्गुलीमुद्रिकादशकं वक्ष-सूत्रं—हृदयाभरणभूतसुवर्णसंकलकं (वृ० प० ४७७)
५५. 'वेच्छासुत्तं' ति पाठान्तरं तत्र वैकक्षिकासूत्रम्—उत्तरासंगपरिधानीयं संकलकं (वृ० प० ४७७)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५६. मादल नैं आकार, मुखी कहियै मादलो।
फुन कंठमुखी सार, गेहणुं तेह गला तणुं ।।

५७. पालंब जे पहिछान, कहियै छै ए झूंबणो।
कुंडल पहिर्‌या कान, चूड़ामणि शिर सेहरो ।।

५८. वाचनांतरे वान, वर्णक ए आभरण नुं।
सूत्र विषे सुविधान, दीसै छै साक्षात ए ।।

५९. *घणुं वखाण स्यूं कीजै, गंथिम सूत्रे करि माल गूंथीजै।
वेढिम वींटी नैं निपजाई माला, पुष्फ लंबूसकादि विशाला ।।

६०. पुरिम वंश शिलाकादी पोई, हिवै संघातिम अवलोई।
मांहोमांहि नालिका करेह, नालिक गूंथी माला निपावेह ।।

६१. ए चिहुं विध माला करि सोय, कल्प वृक्ष नीं पर अवलोय।
कल्प वृक्ष फूल करि शोभेह, तिम अलंकृत विभूषित करेह ।।

वा०—वाचनांतरे वली ए अधिक दीसै छै—'दद्दरमलयसुगंधि-गंधिएहिं गायाइं भुकुंडेंति' त्ति। एहनों अर्थ—तिहां दद्दर अनैं मलय नामैं बिहुं पर्वत संबंधी तेह थकी ऊपनां चंदनादि द्रव्यजपणैं करी जे सुगंध, तेहनी गंधिका ते वासना, तेणे करी। वली अनेरा आचार्य इम कहै छै—दर्दुर ते वस्त्रे करी बांध्यो कुंडिकादिक भाजन नों मुख, तेणे करी गाल्यो अथवा तेहनैं विषे पचायो जे। मलयगिरि नैं विषे ऊपजवै करि मलयज—श्रीखंड संबंधी सुगंध—गंधिका नीं वासना, तेणे करी गायाइं—गात्र प्रतै भुकुंडेंति अर्थात् उद्धूलै—लेपन करै।

६२, ए दोयसौ दशमीं ढालो, तिण में आखी वात विशालो।
चरण लेवा जमाली थयो त्यारी, जनक करै महोत्सव भारी ।।

५६. मुरविं कंठमुरविं
मुरवी—मुरजाकारमाभरणं कण्ठमुरवी—तदेव कण्ठासन्नतरावस्थानं (वृ० प० ४७७)

५७. पालंबं कुंडलाइं चूडामणिं
प्रालम्बं—झुम्बनकं (वृ० प० ४७७)

५८. वाचनान्तरे त्वयमलंकारवर्णकः साक्षाल्लिखित एव दृश्यत इति (वृ० प० ४७७)

५९,६०. किं बहुणा ? गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघातिमेणं
इह ग्रन्थिमं—ग्रंथननिर्वृत्तं सूत्रग्रथितमालादि वेष्टिमं—वेष्टितनिष्पन्नं पुष्पलम्बूसकादि पूरिमं—येन वंशशलाकामयपञ्जरकादि कूर्चादि वा पूर्यते संघातिमं तु यत्परस्परतो नालसङ्घातनेन सङ्घात्यते (वृ० प० ४७७)

६१. चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगं पिव अलंकियविभूसियं करेंति। (श० ९।१९०)

वा०—वाचनान्तरे पुनरिदमधिकं····दृश्यते, तत्र च दर्दुरमलयाभिधानपर्वतयोः सम्बन्धिनस्तदुद्भूतचन्दनादिद्रव्यजत्वेन ये सुगन्धयो गन्धिका—गन्धावासास्ते तथा, अन्ये त्वाहुः—दर्दुरः—चीवरावनद्धं कुण्डिकादिभाजनमुखं तेन गालितास्तत्र पक्वा वा ये 'मलय' त्ति मलयोद्भवत्वेन मलयजस्य—श्रीखण्डस्य सम्बन्धिनः सुगन्धयो गन्धिका—गन्धास्ते तथा तैर्गात्राणि 'भुकुंडेंति' त्ति उद्धूलयन्ति (वृ० प० ४७७)

ढाल : २११

दूहा

१. जमाली क्षत्रियकुंवर, तास जनक तिहवार।
कोटुंबिक नर तेड़नैं, इम कहै वच अवधार ।।

२. देवानुप्रिय ! शीघ्र ही, अनेक सैकड़ां थंभ।
तेह विषे लीला करी, रही पूतल्यां रंभ ।।

वा०—वाचनांतरे वलि ए इम दीसै छै—अब्भुग्गय-सुकयवइरवेइय-तोरण-वररइयलीलट्ठियसालभंजियागं ति। तिहां अब्भुग्गय—ऊंची सुकय—सम्यक्

१. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी—

२. खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियागं
शालिभञ्जिकाः—पुत्रिकाविशेषाः (वृ० प० ४७७)

वा०—वाचनान्तरे पुनरिदमेवं दृश्यते····तत्र चाभ्युद्गतेउच्छ्रिते सुकृतवज्रवेदिकायाः सम्बन्धिनि तोरणवरे रचिता

* लय : सुण चिरताली थारा

१. अंगसुत्ताणि भाग २ श० ९।१९० के टि० १० में 'विकच्छसुत्तगं' के स्थान पर वृत्ति के दो पाठान्तर उद्धृत किये हैं—वच्छसुत्तं और वेकच्छसुत्तं। जयाचार्य ने इस स्थान पर वच्छासुत्तं पाठ रखा है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकारे कीधी वइरवेइय—वज्र नीं वेदिका संबंधी तोरण वररइय—प्रधान तोरण नें विषे रची लीलट्ठियसालभंजियागं—लीला करी रही पूतल्यां जेहनें विषे तिका।

लीलास्थिता शालभञ्जिका यस्यां सा तथा तां (वृ० प० ४७७)

दूहा

३. जिम रायप्रश्रेणी नें विषे, वर सूर्याभ विमाण।
तेह तणु वर्णक कह्यूं, तेम इहां पिण जाण।।

४. जाव मणि रत्नां तणी, सखर घंटिका जाल।
तेणे करी सहीत छै, प्रवर पालखी न्हाल।।

वा०—विमाण नुं वर्णक तिम पालखी नुं वर्णक ते इम।

३. जहा रायप्पसेणइज्जे (सू० १२४) विमाणवण्णओ

४. जाव मणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं

गीतकछंद

५. ईहामृगा ते वरगडा फुन वृषभ हय नर मगर ही।
पंखी वली वालग्ग अहि वा स्वापदा अर्थ उभय ही।

६. किन्नर सुरा मृग सरभ चमरज गज प्रवर वन नी लता।
ए सर्व चित्रामे सुचित्रित सेविका रचियै रता।।

५,६. ईहामियउसभतुरगनरमगरविहगवालगकिन्नररुरु-सरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्तं ईहामृगा—वृकाः ऋषभाः वृषभाः व्यालकाः—श्वापदा भुजंगा वा किन्नरा—देवविशेषाः रुरवो—मृगविशेषाः (वृ० प० ४७७,४७८)

७. स्तंभ विषे स्थापी वज्र नीं, वर वेदिका करि परिगता।
इह कारणे अभिराम ते, रमणीक देख्यां चितरता।।

७. 'खंभुग्गयवइरवेइयापरिगयाभिरामं' स्तम्भेषु उद्‌गता—निविष्टा या वज्रवेदिका तथा परिगता—परिकरिता अत एवाभिरामा च रम्या या सा (वृ० प० ४७८)

८. विद्याधरां नीं श्रेणि यमलज, युगल द्वय स्त्री पुरुषही।
तिणहीज यंत्रे करीनें ते, युक्त सिवका छै वही।।

८. 'विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्तंपिव' विद्याधरयोर्यद् यमलं—समश्रेणीकं युगलं—द्वयं तेनेव यन्त्रेण—ताम् सञ्चरिष्णुपुरुषप्रतिमाद्वयरूपेण युक्ता या सा तथा (वृ० प० ४७८)

९. अच्चीं हजारां तणी माला, आवली छै जे विषे।
फुन रूप सहस्रगमैज सहित सुदीप्यमानज जन अखै।।

९. 'अच्चीसहस्समालिणीयं' अर्चिःसहस्रमालाः—दीप्तिसहस्राणामावल्यः सन्ति यस्यां सा''रूवगसहस्सकलियं 'भिसमाणं' दीप्यमानां (वृ० प० ४७८)

१०. अत्यर्थ करि फुन दीप्तिमानज तेह छै अति दीपती।
वलि चक्षु लोचन लेस तेहनुं, अर्थ कहियै वृत्ति थी।।

११. चक्षु तिका जसु देखवै करि, श्लिष्यती इव ते हुवै।
देखवा योग्यपणें करी, आनंद अति ही अनुभवै।।

१०,११. 'भिब्भिसमाणां' अत्यर्थं दीप्यमानां 'चक्खु-लोयणलेसं' चक्षुः कर्तृ लोकने—अवलोकने सति लिशतीव—दर्शनीयत्वातिशयात् श्लिष्यतीव यस्यां सा तथा तां (वृ० प० ४७८)

१२. सुखकारियो छै फर्श जेहनुं, रूप शोभा सहीत ही।
घंटावली चलते छते तसु, मधुर मनहर स्वर वही।।

१२. 'सुहफासं सस्सिरीयरूवं' सशोभरूपकां 'घंटावलिच-लियमहुरमणहरसरं' (वृ० प० ४७८)

१३. शुभ कांत देखण योग्य जे, फुन निपुण पुरिसे ओपिता।
देदीप्यमानज मणि रतन नीं, घंटिका वृंद परिखिता।।

१३. सुहं कंतं दरिसणिज्जं निउणोवियमिसिमिसंतमणि-रयणघंटियाजालपरिक्खित्तं (वृ० प० ४७८)

सोरठा

१४. आख्यो ए विस्तार, रायप्रश्रेणि सूत्र थी।
वाचनांतरे सार, दीसै छै साक्षात सहु।।

१४. वाचनान्तरे पुनरयं वर्णकः साक्षाद् दृश्यत एवेति। (वृ० प० ४७८)

दूहा

१५. प्रवर पालखी प्रति पुरुष, सहस्र उपाड़ै जेह।
ते स्थापो स्थापी करी, मुझ आज्ञा सूंपेह।।

१५. पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. कोडंबिक तिण अवसरे, जावत सूंपै आण।
शिविका पूर्व कही तिमज, त्यार करी सुविधान ।।

*चारू जमाली नां चरणमहोत्सव सांभलो। (ध्रुपदं)

१७. हां रे लाला, जमाली क्षत्रिय-सुत तदा, हां रे लाला केशालंकार करेह।
हां रे लाला, केश तेहिज अलंकार छै,
हां रे लाला, केशालंकार कह्यं एह ।।

सोरठा

१८. यद्यपि केशज तास, पहिलां जे काप्या हुंता।
इण हेतू थी जास, सम्यक ए नहिं संभवै ।।

१९. तथापि केइय केश, रह्या हुंता जे तेहनुं।
अलंकार कह्यं एस, प्रथम अर्थ इम वृत्ति में ।।

२०. तथा केश नुं सार, अलंकार पुष्पादि जे।
ते केशालंकार, करी विभूषा तिण करी।।

२१. *वस्त्र नें अलंकारे करी, माला नें अलंकारेह।
आभरण अलंकारे करी, ए चिहुं अलंकार करेह।

२२. चिहुं अलंकार कीधे छते, प्रतिपूर्ण अलंकार।
गेहणा पहिरी सिंहासन थकी, ऊठै ऊठी तिहवार ।।

२३. सिवका प्रतै जे प्रदक्षिणा, करतो छतो मन रंग।
सिवका विषे चढै ते तदा, सिवका चढी नें सुचंग ।।

२४. सखर सिंहासन नें विषे, पूरब साम्हो पेख।
मुख करीनें बेसै तदा, मन मांहै हरष विशेख ।।

२५. जमाली क्षत्रियकुमर नीं, माता करीनें स्नान।
जाव शरीर श्रृंगार नें, वस्त्र गेहणा परिधान ।।

२६. हंस लक्षण पट शाटक ग्रही, सिवका नै प्रति तेह ।।
अनुप्रदक्षिण करती थकी, चढै चढी नै जेह ।।

२७. जमाली क्षत्रियकुमार नें, दक्षिण पासै देख।
प्रवर भद्रासन नें विषे, आय बैठी सुविशेख ।।

२८. जमाली क्षत्रियकुमार नीं, धाय माता तिहवार।
स्नान करी सुविशेख थी, यावत तनु श्रृंगार ।।

२९. रजोहरण पात्रा ग्रही, सिवका प्रति सुविशेख ।।
अनुप्रदक्षिणा करती थकी, चढै चढी संपेख ।।

३०. जमाली क्षत्रियकुमार नें, डावै पासै चित ढाय।
प्रवर भद्रासण नें विषे, बैठी छै धाय माय ।।

३१. जमाली क्षत्रियसुत नें तदा, पूठै इक तरुणी प्रधान।
श्रृंगार रस तणो घर जिसो, मनहर वेष सुजान ।।

३२. गमन प्रमुख विषे चतुर ते, जावत रूप आकार।
योवन वय नें विलास जे, तिण करि सहित उदार ।।

*लय : ऐसी जोगणी री जोगमाया

१६. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति।
(श० ९।१९१)

१७. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे केसालंकारेणं
'केसालंकारेणं' ति केशा एवालङ्कार केशालङ्कारस्तेन
(वृ० प० ४७८)

१८. यद्यपि तस्य तदानीं केशाः कल्पिता इति केशालङ्कारो न सम्यक्
(वृ० प० ४७८)

१९. तथाऽपि कियतामपि सद्भावात्तद्भाव इति
(वृ० प० ४७८)

२०. अथवा केशानामलंकारः पुष्पादि केशालंकारस्तेन
(वृ० प० ४७८)

२१,२२. वत्थालंकारेणं, मल्लालंकारेणं आभरणालंकारेणं—चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकारिए समाणे पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठेत्ता

२३. सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीयं दुरुहइ दुरुहित्ता

२४. सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे।
(श० ९।१९२)

२५. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता ण्हाया कयबलिकम्मा जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा

२६. हंसलक्खणं पडसाडगं गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता

२७. जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासणवरंसि सण्णिसण्णा। (श० ९।१९३)

२८. तए णं जस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मधाती ण्हाया कयबलिकम्मा जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा

२९. रयहरणं पडिग्गहं च गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता

३०. जमालिस्स खत्तियकुमारस्स वामे पासे भद्दासणवरंसि सण्णिसण्णा। (श० ९।१९४)

३१. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा
श्रृंगारस्य—रसविशेषस्यागारमिव (वृ० प० ४७८)

३२. संगयगय जाव (सं० पा०) रूवजोव्वणविलासकलिया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरठा

३३. जाव शब्द में जाण, हसिवा भणिवा में चतुर।
फुन चेष्टित पहिछाण, विलास नेत्र विकार जे।।

३४. भणिवूं मांहोमांय. संलाप कहियै तेहनैं।
उल्लाप जे कहिवाय, वक्रोक्ति वर्णन भणी[1]।।

३५. *आसन स्थान गमन वली कर भ्रू नेत्र विकार।
तिणे करीनें सहीत ही, तेह विलास विचार।।

३६. सुन्दर थण कह्यूं सूत्र में, इण वच करि सुप्रयोग्य।
जघन्य वदन कर चरण ही, लावण्य वंछवा योग्य।।

३७. रूप आकार कहीजियै, तरुणपणो ते योवन्न।
गुण ते मृदु स्वर प्रमुख ही, तिण करि सहित सुजन्न।।

३८. वरफ रूपो नें कुमोदर्ना, मचकुन्द चंद सरीस।
कोरंट तरु नां फूलां तणी, माला सहीत जगीस।।

३९. एहवा धवल जे छत्र नैं, ग्रहण करी लीला सहीत।
शिर ऊपर धरती छती, तिष्ठे ते रमण सुरीत।।

४०. जमाली क्षत्रियकुमार नैं, उभय पासै तिहवार।
तरुणी उभय सुप्रधान ही, शृंगार रस नो आगार।।

४१ जाव यौवन गुण सहीत ही, उभय चामर ग्रहि हाथ।।
तेह चामर छै केहवा, सांभलजो अवदात।।

४२. नाना मणी कनक रत्न में, निर्मल मोटा योग्य।
उज्जल तपाया सोना तणो, विचित्र दंड आरोग्य।।

सोरठा

४३. कनक तपनीय मांय, स्यूं विशेष इहां आखियो।
कनक पीत कहिवाय, रक्त वर्ण तपनीय जे।।

४४. *देदीप्यमानज दीपतो, शंख अनें अंक रत्न।
फूल मचकुन्द तणो वलि, जल नां फुंहारा सुजन्न।।

४५. अमृत नैं मथियां थकां, तेहनां जे फेण नीं राशि।
तेह सरीखा सफेत जे, चामर उभय विमासि।।

४६. एहवा जे चामर ग्रही करी, लीला सहित बिहुं पास।
वीजती वीजती रमणि बिहुं, तिष्ठै छै आण हुलास।।

३३. हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-
इह च विलासो नेत्रविकारः (वृ० प० ४७८)

३४. संलाव-निउण[1] जुत्तोवयारकुसला
संलापो—मिथोभाषा उल्लापस्तु काकुवर्णनं
(वृ० प० ४७८)

३५. स्थानासनगमनानां हस्तभ्रूनेत्रकर्म्मणां चैव
उत्पद्यते विशेषो यः श्लिष्टोऽसौ विलासः स्यात्।
(वृ० प० ४७८)

३६. सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-
लावण्यं चेह स्पृहणीयता (वृ० प० ४७८)

३७. रूपं—आकृतिःयौवनं—तारुण्यं गुणा मृदुस्वरत्वादयः
(वृ० प० ४७८)

३८. हिम[2]-रयय-कुमुद-कुंदेंदुप्पगासं सकोरेंटमल्लदामं
सकोरेण्टकानि—कोरण्टपुष्पगुच्छयुक्तानि माल्यदा-
मानि—पुष्पमाला यत्र तत्तथा (वृ० प० ४७८)

३९. धवलं आयवत्तं गहाय सलीलं 'ओधरेमाणी-ओधरेमाणी
चिट्ठति। (श० ९।१९५)

४०,४१ तए णं तस्स जमालिस्स (खत्तियकुमारस्स?)
उभओ पासिं दुवे वरतरुणीओ सिंगारागार जाव
(सं० पा०) कलियाओ

४२. नाणामणि-कणग - रयण-विमलमहरिहतवणिज्जुज्जल-
विचित्तदंडाओ

४३. अथात्र कनकतपनीययोः को विशेषः? उच्यते, कनकं
पीतं तपनीयं रक्तमिति (वृ० प० ४७८)

४४. चिल्लियाओ, संखंक-कुंद-दगरय-
'चिल्लियाओ' त्ति दीप्यमाने....इह चांको रत्नविशेषः
(वृ० प० ४७८)

४५,४६. अमय-महिय-फेणपुंजसण्णिकासाओ धवलाओ
चामराओ गहाय सलीलं वीयमाणीओ-वीयमाणीओ
चिट्ठंति। (श० ९।१९६)

---

*लय : ऐसी जोगणी री जोगमाया

१. गाथा ३३ एवं ३४ के प्रतिपाद्य से सम्बन्धित दो पद्य सूक्त के रूप में प्राप्त होते हैं—
हावो मुखविकारः स्याद् भावस्चित्तसमुद्भवः।
विलासो नेत्रजो ज्ञेयो, विभ्रमो भ्रूसमुद्भवः।।
अनुलापो मुहुर्भाषा प्रलापोऽनर्थकं वचः।
काक्वा वर्णनमुल्लापः संलापो भाषणं मिथः।।

१. वृत्ति में इस स्थान पर संलावुल्लावनिउण पाठ है।
२. इस गाथा में हिम शब्द से पाठ शुरू होता है। अंगसुत्ताणि में इसमें पहले 'सरदब्भ' शब्द और है। यह शब्द कई आदर्शों में नहीं है। जयाचार्य को उपलब्ध आदर्श में भी यह नहीं रहा होगा, इसलिए इसकी जोड़ नहीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४७. जमाली क्षत्रियकुमार नैं, ईशाण कूण तिवार।
एक तरुणी सुप्रधान ते, शृंगार रस नों आगार ।।
४८. जाव योवन गुण सहीत ही, श्वेत रूपा नों उदार।
निर्मल जल करिनैं भरियो, मत्त गज महा मुखाकार।।
४९. तेह समान भंगार ते, पाणी नों भारो पिछाण।
तेह कलश प्रति ग्रही करी, तिष्ठै ए रमण ईशाण।।
५०. जमाली क्षत्रियकुमार नैं, अग्नि कूणे तिहवार।
एक तरुणी सुप्रधान ते, शृंगार रस नों आगार ।।
५१. जाव जोवन गुण सहीत ही, विचित्र कनक नों दंड।
ताल वृंत वींजणा प्रतै, ग्रही नैं तिष्ठै सुमंड ।।
५२. जमाली क्षत्रियकुमार नों, जनक सेवग नैं बोलाय।
इम कहै अहो देवानुप्रिया ! शीघ्र कार्य करो जाय ।।

५३. सरीखा पुरुष सरीखी त्वचा, सरीखी वय सुसंगीत।
सरीखो लावण्य आकार छै, रूप गुणे करि सहीत ।।
५४. एक सरीखा दीसै एहवा, आभरण वस्त्र उदार।
तिणरो गृहीत परिकर जिणे, तरुण कोडुंबिक धार।।

५५. एहवा वर संहस पुरुष तेड़वियै, कोडंबिक तिहवार।
जावत वचन अंगीकरी, शीघ्र सरीखा नर धार।।

५६. जाव तेड़ावै सहस्र पुरुष नैं, कोडंबिक तिहवार।
जमाली जनक नां कोडिंबिके, तेड़ायां हरष अपार।।
५७. वलि संतोष पाम्या घणां,
स्नान करी शुद्ध थाय।
कीधा वलिकर्म वलि कोतुक किया,
तिलक मषी प्रमुख ताय ।।
५८. मंगल कीधा विघ्न मिटायवा, प्रायश्चित्त सुप्रयोग।
एक सरीखा गेहणा वस्त्र नैं, ग्रह्या परिकर निर्योग।।
५९. जमाली क्षत्रियकुमार नों, जनक जिहां छै तिहां आय।
करतल जाव वधावै ते तदा, वधावी कहै इम वाय ।।

६०. अहो देवानुप्रिया जी ! तुम्है, दीजै आदेश उदार।
कार्य करिवा जोग जे, ते मुझ करिवूं सार।।
६१. जमाली क्षत्रियकुमार नों, जनक तिको तिहवार।
वर तरुण सहस्र कोटुम्बिक भणी, इहविध बोलै विचार।।
६२. तुम्है अहो देवानुप्रिया ! न्हाया कृत जावत सुजोय।
ग्रह्या निर्योग वस्त्राभरण जे, एक सरीखा पहिरी सोय।।
६३. जमाली क्षत्रियकुमार नीं, सिबका उपाड़ो वहो सार।
तब कोटुम्बिक जमाली नां जनक नों, वचन करै अंगीकार।।

*लय : ऐसी जोगणी री जोगमाया

४७. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स उत्तर-
पुरत्थिमे णं एगा वरतरुणी सिंगारागार-
४८,४९. जाव (सं० पा०) कलिया सेतं रययामयं विमल-
सलिलपुण्णं मत्तगयमहामुहाकितिसमाणं भिंगारं गहाय
चिट्ठइ। (श० ९।१९७)

५०. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिण-
पुरत्थिमे णं एगा वरतरुणी सिंगारागार
५१. जाव (सं० पा०) कलिया चित्तकणगदंडं तालवेंटं
गहाय चिट्ठइ। (श० ९।१९८)
५२. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया
कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !
५३. सरिसयं सरित्तयं सरिव्वयं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण
गुणोववेयं
५४. एगाभरणवसण-गहियनिज्जोयं कोडुंबियवरतरुण-
एकः—एकादश आभरणवसनलक्षणो गृहीतो निर्योगः
—परिकरो यैस्ते तथा (वृ० प० ४७९)
५५. सहस्सं सद्दावेह। (श० ९।१९९)
तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव
सरिसयं जाव (सं० पा०) सरित्तयं।
५६,५७. कोडुंबियवरतरुणसहस्सं सद्दावेंति।
(श० ९।२००)
तए णं ते कोडुंबियवरतरुणपुरिसा जमालिस्स खत्तिय-
कुमारस्स पिउणा कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा
हट्ठतुट्ठा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-

५८. मंगलपायच्छित्ता एगाभरणवसण-गहियनिज्जोया

५९. जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव
उवागच्छंति उवागच्छित्ता करयल जाव (सं० पा०)
वद्धावेत्ता एवं वयासी—
६०. संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं अम्हेहिं करणिज्जं।
(श० ९।२०१)
६१. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तं कोडुं-
बियवरतरुणसहस्सं एवं वयासी—
६२. तुब्भे णं देवाणुप्पिया! ण्हाया कय जाव (सं० पा०)
गहियनिज्जोया
६३. जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीयं परिवहेह।
(श० ९/२०२)
तए णं ते कोडुंबियवरतरुणपुरिसा जमालिस्स खत्तिय-
कुमारस्स पिउणा एवं वुत्ता समाणा जाव पडिसुणेत्ता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६४. स्नान करि यावत जिणे, ग्रह्या निर्योग परिकर जेण।
जमाली क्षत्रियकुमार नीं, सिविका वहै शुभ श्रेण ।।
६५. दोयसौ नें इग्यारमीं, ढाल विशाल सुचंग।
जमाली चरण लेवा भणी, त्यार थयो मन रंग ।।

६४. ण्हाया जाव एगाभरणवसण-गहियनिज्जोगा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीयं परिवहंति।
(श० ९।२०३)

ढाल : २१२

दूहा

१. तत्र जमाली क्षत्रिय-सुत, वहै जसु पुरुष हजार।
एहवी वर सिविका प्रते, चढ़ये छते अवधार ।।
२. विवक्षित वस्तू मझे, प्रथमपणें ते मंत।
मंगलीक अठ-अठ क्रमे, मुख आगल चालंत ।।
३. अष्ट-अष्ट बे वार जे, अत्र शब्द आख्यात।
वीप्सा विषेज द्विवचन, मंगल वस्तू ख्यात ।।
४. अन्य आचार्य इम कहै, अठ-अठ संख्यक जाण।
आठ मांगलिक वस्तु जे, चालै आगीवाण ।।
५. अष्ट मंगल कहियै तिके, प्रथम साथियो पेख।
श्रीवत्स यावत जाणवो, दर्पण अष्टम देख ।।

१. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरिससहस्स-वाहिणि सीयं दुरूढस्स समाणस्स
२. तप्पढमयाए इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया
३. 'अट्ठट्ठमंगलग' त्ति अष्टावष्टाविति वीप्सायां द्विर्वचनं मंगलकानि मांगल्यवस्तूनि (वृ० प० ४७९)
४. अन्ये त्वाहुः—अष्टसंख्यानि अष्टमंगलकसंज्ञानि वस्तूनि (वृ० प० ४७९)
५. तं जहा— सोत्थिय-सिरिवच्छ जाव [सं० पा०] दप्पणा

सोरठा

६. जात्र शब्द थी जोय, नंद्यावर्त्त निहालियै।
वर्द्धमान अवलोय, तेह सराव कहीजियै ।।
७. अन्याचार्य कहेह, पुरुषारूढज पुरुष ए।
फुन अन्य इम आखेह, स्वस्तिक पंचक ए अछै ।।
८. फुन अन्य कहै प्रासाद, भद्रासण नैं कलश फुल।
मच्छयुग्म अहलाद, जाव शब्द में पंच ए ।।
*जी कांइ चरण लेवा नैं संचर्‍यो,
जी कांइ खत्रियकुंवर धर खंत। (ध्रुपदं)
९. तदनंतर चालै तदा जी कांइ, पूर्ण कलश भृंगार।
जिम उववाई नें विषे जी कांइ, जात्र गगन तल धार ।।

६. णंदियावत्त-वद्धमाणग
तत्र वर्द्धमानकं— शरावं (वृ० प० ४७९)
७. पुरुषारूढपुरुष इत्यन्ये स्वस्तिकपञ्चकमित्यन्ये (वृ० प० ४७९)
८. भद्दासण-कलस-मच्छ
प्रासादविशेषमित्यन्ये (वृ० प० ४७९)
९. तदाणंतरं च णं पुण्णकलसभिंगारं जहा ओववाइए (सू० ६४) जाव (सं० पा०) गगणतलमणुलिहंती····

सोरठा

१०. वाचनांतरे वाय, दीसै छै साक्षात ए।
ते छै इहविध ताय, चित लगाई सांभलो ।।

१०. 'जहा उववाइए' (सू० ६४) त्ति अनेन च यदुपात्तं तद्वाचनान्तरे साक्षादेवास्ति तच्चेदं (वृ० प० ४७९)

गीतक-छंद

११. वर दिव्य छत्र सहीत जे, पताक चामर सहित ही।
फुन रचित आरीसो जिहां, अतिहीज उच्चपणें रही।

११-१३. दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसण-रइयआलोय-दरिसणिज्जा वाउद्धुय-विजयवेजयंती य ऊसिया' गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया।

* लय : म्हारी सासूजी रे पांच पुत्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. जन निजर पहुंचै ज्यां लगै, दीसै छै जे दृष्टी करी ।
पवने करी उड़ती छती, बिहुं पास बे लघु ध्वज धरी ।।
१३. एहवी विजय नीं करणहारी वैजयंती ध्वज छती ।
नभतल प्रतेज उल्लंघती, अनुक्रमे आगल चालती ।।

वा०—बिहुं पासे चामर सहित जिका तिका सचामर कहियै । आरीसो रच्यो छै जेहनै विषे ते अदंसरइय कहियै । आलोक ते दृष्टिगोचर ज्यां लगे दीसै छै अति ऊंचैपणें करि जिका, तिका आलोकदर्शनीया ध्वजा कहियै । ते भणी इहां कर्मधारय समास करिवूं—सचामरादंसणरइयआलोय-दरिसणिज्जत्ति । पाठांतरे तु सचामरे ति भिन्नपदं । दर्शन जमाली नो दृष्टि पथ, तिण नें विषे रचित अथवा दर्शन नै विषे रतिदा कहिता सुख नीं दाता ते दर्शणरतिदा कहियै । ते इसी आलोक-दर्शनीया ध्वजा छै । इम कर्मधारय समास ।

वा०—सह चामराभ्यां या सा सचामरा आदर्शो रचितो यस्यां साऽऽदर्शरचिता आलोकं—दृष्टिगोचरं यावद् दृश्यतेऽत्युच्चत्वेन या साऽऽलोकदर्शनीया, ततः कर्म्मधारयः, 'सचामरा दंसणरइयआलोयदरिसणिज्ज' त्ति पाठान्तरे तु सचामरेति भिन्नपदं, तथा दर्शने-जमालेर्दृष्टिपथे रचिता—विहिता दर्शनरचिता दर्शने वा सति रतिदा—सुखप्रदा दर्शनरतिदा सा चासावा-लोकदर्शनीया चेति कर्मधारयः । (वृ० प ४७६)

१४. *इम जिम उववाई विषे, तिमहिज भणिवूं सार ।
जाव आलोक करता थका, जय-जय शब्द उचार ।।

१४. 'जहा उववाइए' (सू० ६४) त्ति अनेन यत्सूचितं तदिदं (वृ० प० ४७६)

गीतकछंद

१५. तदनंतरं जे छत्र चालै, तास वर्णक जाणियै ।
वैडूर्यमय देदीप्यमानज, विमल दंड वखाणियै ।।
१६. लंबायमानज वृक्ष कोरंट, तेहनां पुष्पदाम ही ।
तिण करी उपशोभितं, जे छत्र अति अभिराम ही ।।
१७. शशि तणुं मंडल ते सरीखूं, उर्द्ध कीधूं विमल ही ।
आतपत्र तड़को टालवा नैं, छत्र उज्जल निमल ही ।।
१८. फुन वर सिंहासण रत्न मणि नुं पायपीठ सुहामणूं ।
निज पादुकायुग करी सहितज, दीसतूं रलियामणूं ।।
१९. प्रभु पूछनें जूजुआ कारज करै ते किंकर कह्या ।
विण पूछियां जे करै कारज, कर्मकर ते पिण वह्या ।।
२०. किंकर करमकर पुरुष पायक-वृंद वींट्यूं जलहलै ।
एहवूं सिंहासण शोभतो, अनुक्रमे चालै आगलै ।।

१५. तदाणंतरं च णं वेरुलिय-भिसंत-विमलदंडं
'भिसंत' त्ति दीप्यमानं (वृ० प० ४७६)
१६. पलंबकोरंटमल्लदामोवसोभियं
१७. चंदमंडलणिभं समूसियं विमलं आयवत्तं
१८. पवरं सीहासणं वर मणिरयणपादपीढं सपाउया-जोयसमाउत्तं
१९,२०. बहुकिंकर - कम्मकर - पुरिस-पायत्त - परिक्खित्तं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ।
किंकराः—प्रतिकर्म्म प्रभोः पृच्छाकारिणः कर्म्म-कराश्च तदन्यथाविधास्ते (वृ० प० ४७६)

२१. तदनंतरं वहु लट्ठिग्राहक, कुंतग्राहक जाणियै ।
चामर तणां जे ग्रहणहारा, पासग्राहक माणियै ।।
२२. फुन धनुषग्राहक पोथग्राहक, फलगग्राहक वहु जना ।
वलि पीढग्राहक वीणग्राहक, कुतुपग्राहक नर घना ।।

२१. तदाणंतरं च णं बहवे लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा चामर-ग्गाहा पासग्गाहा
२२. चावग्गाहा पोत्थयग्गाहा फलगग्गाहा पीढग्गाहा वीणग्गाहा कूवग्गाहा

सोरठा

२३. चोवा नैं चंपेल, शतपाकादिक नां वली ।
मोगरेल फुन तेल, तास डावड़ा कुतुप ते ।।
२४. हडप्पग्राहक तेह, ग्राहक जे नाणां तणां ।
वा तांबूल अर्थेह, भाजन पूगफलादि नां ।।
२५. यथानुक्रमे जोय, आगल ए सहु चालिया ।
वलि विशेष अवलोय, चालै ते कहियै हिवै ।।

२३. कुतुपः—तैलादिभाजनविशेषः (वृ० प० ४७६)
२४. हडप्पग्गाहा
हडप्पो—द्रम्मादिभाजनं ताम्बूलार्थं पूगफलादिभाजनं वा (वृ० प० ४७६)
२५. पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।

*लय : म्हारी सासूजी रै पांच पुत्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गीतकछंद

२६. तदनंतरा बहु दंडग्राहक, मुंडिता शिरमुंडिका।
चोटी तणां जे धरणहारा, जटाधारी तुंडिका।

२६. तदाणंतरं च णं बहवे दंडिणो मुंडिणो सिहंडिणो जडिणो
सिहंडिणो— शिखाधारिण: जटिणो—जटाधरा:
(वृ० प० ४७६)

२७. फुन मोर-पिच्छज तणां धारक, हास्यकारक फुन कह्या।
विग्रह तणां कारक वली, परिहास नां कारक वह्या॥

२७. पिंछिणो हासकरा डमरकरा दवकरा
पिच्छिणो—मयूरादिपिच्छवाहिन: हासकरा ये हसंति डमरकरा—विड्वरकारिण: दवकरा:—परिहास-कारिण: (वृ० प० ४७६)

२८. चाटूकरा प्रियवादना, कंदर्प्पिका केलीकरा।
कुक्कुइया ते भांड अथवा भांड सरिखा नर धरा॥

२८. चाडुकरा कंदप्पिया कोक्कुइया
चाटुकरा:—प्रियवादिन: कंदप्पिया— कामप्रधानकेलि-कारिण: कुकुइया—भाण्डा: भाण्डप्राया वा
(वृ० प० ४७६)

२९. क्रीड़ा कुतूहल वली रामत, करै ते किड्डाकरा।
वाजंत्र नैज बजावता फुन, गीत गावंता नरा॥

२९. किड्डकरा य वायंता य गायंता य

३०. वलि नाचता अति नृत्य करता, अन्य प्रति ही नचावता।
अति हास्य करता हसै फुन जे, अन्य प्रति ही हसावता॥

३०. णच्चंता य हसंता य

३१. वलि विविध भाषा भाखता अरु सीख प्रति देता सही।
संभलावता अमुको रु अमुको, हुस्यै पौर परार ही॥

३१. भासंता य सासंता य सावेंता य
'साविता य' इदं चेदं भविष्यतीत्येवंभूतवचांसि श्रावयन्त: (वृ० प० ४७६)

३२. फुन राखता अन्याव प्रति जे, एह प्रथम-उपंग[1] ही।
वर अर्थ आख्यो तेम भाख्यो, जाव शब्द सुचंग ही॥

३२. रक्खंता य
अन्यायं रक्षन्त: (वृ० प० ४७६)

३३. फुन वाचनांतर विषे प्रायज, एह सगलूं जाणियै।
साक्षात दीसै प्रगट पाठज, वृत्तिकार वखाणियै॥

३३. एतच्च वाचनान्तरे प्राय: साक्षाद्‌दृश्यत एव
(वृ० प० ४७६)

३४. *आलोक करता देखता, मंगल अर्थे न्हाल।
आरीसादिक वस्तु नैं, वलि गज प्रमुख विशाल॥

३४. आलोयं च करेमाणा

३५. जय-जय शब्द प्रजूंभता, अनुक्रम आगल ताय।
चालंता चित्त चूंप सूं, मन में हरष अथाय॥

३५. जय-जय सद्दं पउंजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया।

सोरठा

३६. तथा अपर अधिकाय, तेहिज वाचनांतर विषे।
जेह कह्यु वृत्ति मांय, हय गय रथ पय[2] वण्णओ॥

३६. तथेदमपरं तत्रैवाधिकं (वृ० प० ४७६)

गीतक छंद

३७. तदनंतर जे जातिवंतज, प्रवर माल्याधान ही।
जे पुष्प-बंधन स्थान शिर नां, केश-समूह पिछान ही॥

३७. तयाणंतरं च णं जच्चाणं वरमल्लिहाणाणं .....
वरं माल्याधानं पुष्पबन्धनस्थानं शिर: केशकलापो येषां ते (वृ० प० ४७९,४८०)

३८. अथवा विकस्वर पवर पुष्पज, तेहवत तसु घ्राण ही।
तरमल्लिहायणाणं किंहाइक, तास अर्थ हिव आण ही॥

३८. अथवा वरमल्लिकावद् शुक्लत्वेन प्रवरविचकिल-कुसुमवद् घ्राणं—नासिका येषां ते तथा तेषां क्वचित् 'तरमल्लिहायणाणं' ति दृश्यते तत्र च
(वृ० प० ४८०)

---

*लय : म्हारी सासूजी रै पांच पुत्र

१. ओवाइयं सू० ६४ २. पदाति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३९. तर वेग अथवा बल प्रबल तसु, धरणहारो छै सही।
हायन संवत्सर वर्त्तवूं जसु, सखर योवन वय रही।।

वा०—तर कहितां वेग अथवा बल अनें मल्लि धातु ते धारण अर्थ नें विषे ते भणी तर ते वेग—बल नों धरणहार, हायन कहितां संवत्सर वर्त्तै जै जेहनें तेतरो 'मल्लिहायणा' कहियै, एतलै योवनवंत इत्यर्थः।

४०. वर मल्लि भासणाणं किहांइक पाठ दीसै छै सही।
वर माल्यवान इण कारणे हिज, दीप्तिवंता शोभही।।

वा०—वर कहितां प्रधान, मल्लि कहितां माल्यवान इण कारण थकीज भासणाणं कहितां दीप्तिमान।

४१. चंच्चुरित जे कुटिल गमनं, [1]वा शुक-चांच तणी परै।
जे वक्रता करि ऊर्द्ध थावूं, चरण-उत्पाटन करै।।
४२. तेहीज ललित विलास नीं पर, पुलित गमन-विशेष ही।
विशिष्ट क्रमण क्षेत्र लंघन प्रवर गति सुउल्लास ही।।

४३. क्वचित फुन चंचुरित ललितज, पुलितरूपा गति सही।
चल चपलथीज अत्यंत चंचल, अधिक ही मनहर रही।।

४४. हरिमेल नामैं वनस्पति नुं, मुकुल डोडो जाणियै।
जे मल्लिका विकसर समी, तसु चक्र धवल पिछाणियै।।

४५. दर्पण तणें आकार हय नुं, अलंकार विशेष ही।
अम्लान चामर दंड करि परिमंडिता जसु कटिक ही।।

४६. मुख तणुं जे आभरण ही, लंबायमान गुच्छा वही।
दर्पणाकार आभरण हय नुं, प्रवर तास पलाण ही।।

वा०—'चमरीगंडपरिमंडितकटय' इति एहनों अर्थ—चमरी गाय नां चामर दंड करि मंडित—शोभायमान कटि छै जे अश्व नीं। किहांइक वलि एम दीसै—थासगअहिलाणचामरगंडपरिमंडियकडीणं ति। अहिलाण कहितां लगाम छै जे अश्व नीं, शेष पूर्ववत्।

सोरठा

४७. एहवा प्रवर तुरंग, इकसौ आठ सुओपता।
यथानुक्रमे सुचंग, आगल चालंता छता।।

१. पांव उठाना

३९. तरो—वेगो बलं तथा 'मल मल्ल धारणे' ततश्च तरोमल्ली—तरोधारको वेगादिधारको हायनः—संवत्सरो वर्त्तते येषां ते तरोमल्लिहायनाः—यौवनवंत इत्यर्थः (वृ० प० ४८०)

४०. वरमल्लिभासणाणं ति क्वचिद्दृश्यते, तत्र तु प्रधानमाल्यवतामत एव दीप्तिमतां चेत्यर्थः (वृ० प० ४८०)

४१,४२. 'चंचुच्चियललियपुलियविक्कमविलासियगईणं' ति 'चंचुच्चियं' ति प्राकृतत्वेन चञ्चुरितं—कुटिलगमनम्, अथवा चञ्चुः—शुकचञ्चुस्तद्वद्वक्रतया उच्चितम्—उच्चताकरणं पदस्योत्पाटनं वा (शुक) पादस्येवेति चञ्चुच्चितं तच्च ललितं क्रीडितं पुलितं च—गतिविशेषः प्रसिद्ध एव विक्रमश्च—विशिष्टं क्रमणं क्षेत्रलंघनमिति द्वंद्वस्तदेतत्प्रधाना विलासिता—विशेषेणोल्लासिता गतिर्यैस्ते (वृ० प० ४८०)

४३. क्वचिदिदं विशेषणमेवं दृश्यते—'चंचुच्चियललियपुलियचलचवलचंचलगईणं' ति तत्र च चञ्चुरितललितपुलितरूपा चलानां— अस्थिराणां सतां चञ्चलेभ्यः सकाशाच्चञ्चला—अतीवचटुला गतिर्येषां ते (वृ० प० ४८०)

४४. 'हरिमेलमउलमल्लियच्छाणं' ति हरिमेलको—वनस्पतिविशेषस्तस्य मुकुलं—कुड्मलं मल्लिका च—विचकिलस्तद्वदक्षिणी येषां, शुक्लाक्षाणामित्यर्थः (वृ० प० ४८०)

४५. 'थासगअमिलाणचामरगंडपरिमंडियकडीणं' ति स्थासका—दर्प्पणाकारा अश्वालंकारविशेषास्तैरम्लानचामरैर्गण्डैश्च—अमलिनचामरदण्डैः परिमण्डिता कटिर्येषां ते (वृ० प० ४८०)

४६. तत्र मुखभाण्डकं—मुखाभरणम् अवचूलाश्च—प्रलंबमानपुच्छाः स्थासकाः प्रतीताः 'मिलाण' त्ति पर्याणानि च येषां सन्ति ते। (वृ० प० ४८०)
वा०—चमरी (चामर) गण्डपरिमण्डितकटय इति पूर्ववत्'''''क्वचित्पुनरेवमिदं दृश्यते—'थासगअहिलाणचामरगंडपरिमंडियकडीणं' ति (वृ० प० ४८०)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गीतक छंद

४८. तदनंतरं गज कलभ ते, लघु दंत अल्पज नीसर्या।
फुन अल्प जे मदवंत वलि तसु, दंत केहवा उच्चर्या ।।
४९. फुन जेहनें वर दंत नां जे पृष्ठ देश विशेष ही।
ईषत विशालज यौवनारंभवर्त्ति धवलज दंत ही ।।

५०. कंचन तणी खोली विषे जे, दंत पैठा छै म्ही।
तिण करीनें उपशोभिता, ए कलभ नीं महिमा कही ।।
५१. गज तणां कलभज एहवा, जे एकसौ अठ सोहता।
मुख आगलै अनुक्रमे चालै, जन तणां मन मोहता ।।
५२. तदनंतर जे छत्र-सहितज, ध्वजा सहित वखाणियै।
वलि घंट-सहित पताक-सहितज, प्रवर रथ पहिछाणियै।
५३. गरुड़ादि रूपे करी युक्तज, ध्वजा तेह कहीजियै।
तेह थकी अन्य पताक फुन, तोरण सहित सलहीजियै ।।
५४. लघु घंटिका तेणे करी जे, सहित ही सुंदर किया।
वर हेम जाले करी रथ पर्यंत, चिहुं दिशि वींटिया।

५५. रव नंदि-घोष सहीत द्वादश, तूर्यध्वनि समुदाय ही।
भंभा मकुंद रु मद्दलादिक, प्रवर रव सुखदाय ही ।।

५६. लघु घंटिका तेणे करी जे, सहित ही सुंदर कियो।
वर हेम जाले करी रथ, पर्यंत चिहुं दिशि वींटियो ।।
५७. गिरि हेमवंत नां नीपना जे, चित्र विविध प्रकार नां।
कठ तिनिश नामे तरु तणां ते, कनक खंचित रथ तनां ।।

५८. अति भला छै जे चक्र जेहनें, मंडला वृत वाटला।
वलि धुरा पिण रमणिक अर शोभायमानज भिलमिला ।।

५९. अय जेह कालायस विशेषज, तिण करी कीधुं भलुं।
नेमी तिका जे चक्र नुं वर भाग ऊपरलुं भिलुं ।।
६०. तिण अय करी जे चक्रधारा, बांधवा नी वर क्रिया।
रथ चक्र नुं जे अग्र भागज, नेमि ते दृढ़ता लियां ।।
६१. वलि जातिवंतज वर तुरंगम, जोतर्या ते रथ तणैं।
नर चतुर अवसर जाण सारथि, संग्रह्या प्रयतनपणैं ।।

४८. 'ईसिं दंताणं' ति 'ईषद्दान्तानां' मनाग्ग्राहितशिक्षाणां गजकलभानामिति योगः। (वृ० प० ४८०)
४९. ईसिं उच्छंगउन्नयविसालधवलदंताणं ति उत्संगः—पृष्ठदेशः ईषदुत्संगे उन्नता विशालाश्च ये यौवनारम्भवर्त्तित्वात्ते तथा ते च ते धवलदन्ताश्चेति (वृ० प० ४८०)
५०. कंचणकोसीपविट्ठदंतोवसोहियाणं' ति इह काञ्चनकोशी—सुवर्णमयी खोला (वृ० प० ४८०)

५२,५३. 'सज्झयाणं सपडागाणं' इत्यत्र गरुडादिरूपयुक्तो ध्वजः तदितरा तु पताका (वृ० प० ४८०)

५४. 'सखिखिणीहेमजालपेरंतपरिक्खित्ताणं' ति सकिंकिणीकं—क्षुद्रघण्टिकोपेतं यद् हेमजालं—सुवर्णमयस्तदाभरणविशेषस्तेन पर्यन्तेषु परिक्षिप्ता ये ते (वृ० प० ४८०,४८१)
५५. 'सनंदिघोसाणं' ति इह नन्दी—द्वादशतूर्यसमुदायः, तानि चेमानि—
"भंभा मउंद मद्दल कडंब झल्लरि हुडुक्क कंसाला।
काहल तलिमा वंसो संखो पणवो य बारसमो ।।" (वृ० प० ४८१)

५७. 'हेमवयचित्ततिणिसकणगनिजुत्तदारुयाणं' ति हैमवतानि—हिमवद्गिरिसम्भवानि चित्राणि—विविधानि तैनिशानि—तिनिशाभिधानतरुसम्बन्धीनि कनकनियुक्तानि—सुवर्णखचितानि दारुकाणि—काष्ठानि येषु ते (वृ० प० ४८१)
५८. 'सुसंविद्धचक्कमंडलधाराणं' ति सुष्ठु संविद्धानि चक्राणि मण्डलाश्च वृत्ता धारा येषां ते (वृ० प० ४८१)
५९,६०. कालायससुकयनेमिजंतकम्माणं' ति कालायसेन—लोहविशेषेण सुष्ठु कृतं नेमेः—चक्रमण्डनधाराया यन्त्रकर्म—बन्धनक्रिया येषां ते

६१. 'आइन्नवरतुरगसुसंपउत्ताणं' ति आकीर्णैः—जात्यैर्वरतुरगैः सुष्ठु संप्रयुक्ता ये ते ''''''कुसलनरच्छेयसारहिसुसंपग्गहियाणं' ति कुशलनरैः विज्ञपुरुषैश्छेकसारथिभिश्च—दक्षप्राजितृभिः सुष्ठु संप्रगृहीता ये ते (वृ० प० ४८१)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६२. शर घालवा नां भाथडा बत्तीस कर मंडित वही।
इक एक भाथड़ विषे सौ-सौ बाण छै अत प्रवर ही॥

६३. कवचे करीनैं वली जे, अवतंस शेखर सहित ही।
शिर-त्राण रक्षा कारका, तिण करीनैं युक्त ही॥
६४. फुन धनुष शर करिकै सहित, हथियार खड्गादिक घणां।
ढालादि करि वलि रथ भर्यो ए, सज्ज है जोधां तणां॥
६५. वर एहवा रथ एकसौ अठ, सुघट सखर सुहामणां।
अनुक्रमे आगल चालता बहु जन भणी रलियामणां॥
६६. तदनंतरं फुन असी शक्ती, कुंत तोमर सूल ही।
वलि लकुट नैं भिंडमाल धनु कर धरी सझिया मूल ही॥
६७. वर सुभट एहवा यथा अनुक्रम, चालता आगल वही।
ए वाचनांतर वृत्ति में, चतुरंग वर्णन छै सही॥
६८. *तदनंतर बहु चालिया, उग्र कुले उत्पन्न।
ऋषभ कोटवालपणें स्थापिया, तास वंश नां जन्न॥

६९. बहु भोग कुल नां ऊपनां, प्रभु ऋषभदेवजी जाण।
गुरुपणेंजे स्थापिया, तास वंश नां माण॥

७०. जिम उववाई में कह्यु, जाव महापुरुष धार।
सर्व परिवारे वींटिया, आगल चाल्या सार।

सोरठा

७१. जाव शब्द में एह, राजन कुल नां ऊपनां।
क्षत्रिय कुल नां लेह, ऋषभ वंश ईक्ष्वाकु जे॥

७२. वलि उपनां कुल ज्ञात, ईक्ष्वाकुवंश विशेष ए।
कुरुवंशी फुन ख्यात, इत्यादिक अवधारवा॥

७३. *जमाली क्षत्रियकुमार नैं, आगल फुन विहुं पास।
पूर्वे उग्रादिक कह्या, तिके अनुक्रम चाल्या तास॥

७४. जमाली क्षत्रियकुमार नों, जनक तिको चित चंग।
स्नान करी कीधो वलि, जाव विभूषित अंग॥
७५. वर गज खंध बैठो थको, कोरंट तरु नां मूल।
तसु माला सहित जे छत्र छै, ते धरते अनुकूल॥
७६. श्वेत प्रवर चामर करी, वींजंते छते जेह।
हय गय रथ वर भट भला, तिण करि सहितज तेह॥
७७. चउरंगणी सेन्या सझ करी, परिवरचो तेण संघात।
महा भट चाकर वृंद सूं, जावत वींटचो विख्यात॥

६२. 'सरसयबत्तीसतोणपरिमंडियाणं' ति शरशतप्रधाना ये द्वात्रिंशत्तोणा भस्त्रकास्तैः परिमण्डिता ये ते
(वृ० प० ४८१)
६३. 'सकंकडवडेंसगाणं' ति सह कंकटैः—कवचैरवतंसकैश्च-शेखरकैः शिरस्त्राणैर्वा ये ते (वृ० प० ४८१)
६४. 'सचावसरपहरणावरणभरियजुद्धसज्जाणं' ति सह चापैः शरैश्च यानि प्रहरणानि—कुन्तादीनि आवरणानि च—स्फुरकादीनि तेषां भरिता युद्धसज्जाश्च युद्धप्रगुणा ये ते (वृ० प० ४८१)

६८. तदाणंतरं च णं बहवे उग्गा
तत्र 'उग्राः' आदिदेवेनारक्षकत्वे नियुक्तास्तद्वंश्याश्च
(वृ० प० ४८१)
६९. भोगा
भोगास्तेनैव गुरुत्वेन व्यवहृतास्तद्वंश्याश्च
(वृ० प० ४८१)
७०. जहा ओववाइए (सू० ६४) जाव महापुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता

७१. खत्तिया इक्खागा
तत्र 'राजन्याः' आदिदेवेनैव वयस्यतया व्यवहृतास्तद्वंश्याश्च क्षत्रियाश्च प्रतीताः 'इक्ष्वाकवः' नाभेयवंशजाः
७२. नाया कोरव्वा
'ज्ञाताः' इक्ष्वाकुवंशविशेषभूताः 'कोरव्व' त्ति कुरवः—कुरुवंशजाः (वृ० प० ४८१)
७३. जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ य मग्गतो य पासओ य अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया।
(श० ९/२०४)
७४. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया ण्हाए कयबलिकम्मे जाव विभूसिए (सं० पा०)
७५. हत्थिक्खंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं
७६. सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुव्वमाणीहिं हय-गय रहपवरजोहकलियाए।
७७. चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभडचडगरविंदपरिक्खित्ते

*लय : म्हारी सासूजी रै पांच पुत्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७८. जमाली क्षत्रियकुमार नैं, इहविध जनक सुजाण।
पीठे पूठे चालतो, वारू कर मंडाण।।
७९. ते जमाली क्षत्रियकुमार नैं, आगल हय चालंत।
तेह तुरंगम केहवा, अश्व विषे वर मंत।।

सोरठा

८०. पाठांतर आख्यात, आसवारा असवार जे।
अश्वारूढ सुजात, पुरुष तिके आगल चलै।।

८१. *बिहुं पासे नागा गजा, ते गज मांहि प्रधान।
पूठे रथ अति शोभता, रथ-समुदाय सुजान।।

८२. जमाली क्षत्रियकुंवर तदा, सन्मुख जेहनैं जोय।
भृंगार कलश उपाड़ियो, ग्रह्यो वींजणो सोय।।
८३. उर्द्ध श्वेत छत्र छै जसु, अतिहि वींजंते जेह।
श्वेत चामर बाल नां समूह करीनैं तेह।।

८४. सर्व ऋद्धि करि सहित छै, जावत वाजंत्र जान।
तेह तणैं शब्दे करी, अतिही शोभायजमान।।
८५. तदनंतर बहु चालिया, लाठीग्राहा कुंतग्राह।
जावत पुस्तकग्राहका, जाव वीणग्रहा ताय।
८६. तदनंतर बहु चालिया, इकसौ अठ मातंग।
तुरंग एकसौ अठ वली, इकसौ अठ रथ चंग।।
८७. तदनंतर लकुट करे, इकसौ आठ विख्यात।
इकसौ अठ असी कर विषे, इकसौ अठ कुंत हाथ।।
८८. बहुला नर पाळा वली, आगल थी धर खंत।
चालंता चित चूंप सूं, मन मांहे हरष अत्यंत।
८९. तदनंतर बहु राजवी, ईश्वर तलवर मंत।
जाव सार्थवाह प्रमुख ही, आगल थी चालंत।।
९०. क्षत्रिय कुंडग्राम नगर नैं, मध्योमध्य थइ न्हाल।
जिहां माहणकुंड ग्राम नगर छै, चैत्य जिहां बहुसाल।।
९१. जिहां श्रमण भगवंत महावीर छै, तिणहिज स्थानक जोय।
जावा नैं उद्यत थया, संकल्प कीधो सोय।।
९२. जमाली क्षत्रिय-सुत नैं तदा, क्षत्रियकुंड ग्राम नगर विषेह।
मध्योमध्य थई करी, नीकलता नैं जेह।।
९३. त्रिक आकारे संघाट नैं, चउक्क मिलै पंथ च्यार।
यावत महापंथ नै विषे, बहु धन अर्थी धार।।
९४. जिम उववाई नैं विषे, जाव अभिनंदताय।
तूं समृद्धि पाम चिरं जीवजे, स्तवना कर कहै वाय।।

---

*लय : म्हारी सासूजी रै पांच पुत्र

७८. जमालिं खत्तियकुमारं पिट्ठओ अणुगच्छइ।
(श० ९/२०५)
७९. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ महं आसा आसवरा

८०. 'आसवरा' अश्वानां मध्ये वराः 'आसवार' त्ति पाठान्तरं तत्र 'अश्ववाराः' अश्वारूढपुरुषाः
(वृ० प० ४८१)
८१. उभओ पासिं नागा नागवरा, पिट्ठओ रहा, रहसंगेल्ली। (श० ९।२०६)
'रहसंगेल्लि' त्ति रथसमुदायः। (वृ० प० ४८१)
८२. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अब्भुग्गतभिंगारे परिग्गहियतालियंटे
८३. ऊसवियसेतछत्ते पवीइयसेतचामरबालवीयणीए
उच्छ्रितश्वेतच्छत्रः····प्रवीजिता श्वेतचामरवालानां सत्का व्यजनिका (वृ० प० ४८१)
८४. सव्विड्ढीए जाव दुंदुहिणिग्घोसणादितरवेणं

८५. तदाणंतरं च णं बहवे लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा जाव पुत्थयग्गाहा जाव वीणग्गाहा
८६. तदाणंतरं च णं अट्ठसयं गयाणं अट्ठसयं तुरयाणं, अट्ठसयं रहाणं
८७. तदाणंतरं च णं लउडअसिकोंतहत्थाणं

८८. बहूणं पायत्ताणीणं पुरओ संपट्ठियं

८९. तदाणंतरं च णं बहवे राईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभियओ पुरओ संपट्ठिया।
९०. खत्तियकुंडग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए
९१. जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पाहारेत्थ गमणाए।
(श० ९/२०७)
९२. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स खत्तियकुंडग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छमाणस्स
९३. सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह जाव पहेसु बहवे अत्थत्थिया
९४. जहा ओववाइए (सू० ६८) जाव अभिनंदंता[1]

---

१. यह जोड़ संक्षिप्त पाठ के आधार पर की गई है। इससे आगे की गाथाओं में संक्षिप्त पाठ में छोड़े गए सब शब्दों की जोड़ है। अंगसुत्ताणि भाग २ श. ९।२०८ में पाठ पूरा किया हुआ है। आगे की गाथाओं में वही पाठ उद्धृत किया गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरठा

९५. जिम उववाई ताम, इण वचने इम जाणवूं।
शुभ शब्द रूप ए काम, तेह तणां अर्थी जना ।।
९६. भोग गंध रस फास, तेह तणां अर्थी वली ।
धनादि लाभ विमास, अर्थी ते फुन लाभ नां ।।
९७. किल्विष ते भंडादि, कारोड़िया कापालिका ।
कारवाहिया वादि, राजदेय द्रव्य जे वहै ।।

९८. वली संखिया धार, चंदन गर्भज कर जसु ।
ते छै मंगलकार, अथवा जे शंखवादिका ।।

९९. वलि चक्रिया जाण, चक्र प्रहरण छै कर जसु ।
द्वितीय अर्थ फुन माण, कुंभकारादिक चाक्रिका ।।

१००. नंगलिका कहिवाय, सुवर्ण-गहणा हल सदृश ।
पहिरचा ते भट ताय, अथवा कहियै करसणी ।।

१०१. मुखमंगलिया ताय, मुख बोलै मंगलीक जे ।
वर्द्धमान कहिवाय, स्कंध आरोपित पुरुष जे ।।

१०२. पूसमाणवा[1] ताय, मागध बंदी जन जिके ।
इज्जिसिया पिंडिसिया य घंटिका दीसै किहां ।।

१०३. पूजा वांछक पेख, अथवा जे पूजा प्रते ।
गवेषता सुविशेख, इज्जिसिया ते जाणवा ।।
१०४. भोजनवांछक भाल, अथवा जे भोजन प्रतै ।
गवेषता सुविशाल, पिंडिसिया कहियै तसु ।।
१०५. घंटा करि चालंत, घंटा प्रते वजाड़ता ।
तेह घंटिका मंत, ए त्रिहुं पाठ दीसै किहां ।।
१०६. ते वांछित शब्देह, कहियै छै जे आगले ।
इष्ट वलभ वच जेह, बोलै छै शुभ शब्द जे ।।
१०७. इष्ट वचन पिण जोय, प्रयोजन तणांज वश थकी ।
किणही स्वरूप थी सोय, कमनीय तथा अकांत हुवै ।।
१०८. इण कारण थी आम, आगल कहियै छै हिवै ।
ते इष्ट किसो वच ताम, कांत वांछा करियै जसु ।।

---

१. अंगसुत्ताणि भाग २ श० ९।२०८ में पूसमाणया के बाद 'खंडियगणा' पाठ है । जयाचार्य ने इसकी जोड़ नहीं की । वृत्ति में भी इस पाठ का संकेत नहीं है ।

९५,९६. कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया
जहा उववाइए' त्ति करणादिदं दृश्यं—कामी—शुभशब्दरूपे भोगाः—शुभगन्धादयः 'लाभ त्थिया' धनादिलाभार्थिनः । (वृ० प० ४८१)

९७. किव्विसिया कारोडिया कारवाहिया
किल्बिषिका भाण्डादय इत्यर्थः,·······'कारोडिया' कापालिकाः 'कारवाहिया' कारं—राजदेयं द्रव्यं वहन्तीत्येवंशीलाः कारवाहिनस्त एव कारवाहिकाः
(वृ० प० ४८१)

९८. संखिया
'संखिया' चन्दनगर्भशंखहस्ता मांगल्यकारिणः शंखवादका वा (वृ० प० ४८१)

९९. चक्किया
'चक्किया' चाक्रिकाः—चक्र प्रहरणाः कुंभकारादयो वा (वृ० प० ४८१)

१००. नंगलिया
'नंगलिया' गलावलम्बितसुवर्णादिमयलाङ्गलप्रतिकृति-धारिणो भट्टविशेषाः कर्षका वा
(वृ० प० ४८१,४८२)

१०१. मुहमंगलिया वद्धमाणा
'मुहमंगलिया' मुखे मंगलं येषामस्ति ते मुखमंगलिकाः चाटुकारिणः 'वद्धमाणा' स्कन्धारोपितपुरुषाः
(वृ० प० ४८२)

१०२. पूसमाणया
'पूसमाणवा' मागधाः 'इज्जिसिया पिंडिसिया घंटिय' त्ति क्वचिद् दृश्यते (वृ० प० ४८२)

१०३,१०४. तत्र च इज्यां—पूजामिच्छन्त्येषयन्ति वा ये ते इज्यैषास्त एव स्वार्थिके कप्रत्ययविधानाद् इज्यैषिकाः, एवं पिण्डैषिका अपि, नवरं पिण्डो—भोजनं
(वृ० प० ४८२)

१०५. घाण्टिकास्तु ये घण्टया चरन्ति तां वा वादयन्तीति
(वृ० प० ४८२)

१०६,१०७ इट्ठाहिं
इष्यन्ते स्मेतीष्टास्ताभिः प्रयोजनवशादिष्टमपि किञ्चित्स्वरूपतः कान्तं स्यादकान्तं चेत्यत आह—कमनीयशब्दाभिरित्यर्थः । (वृ० प० ४८२)

१०८. कंताहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०९. प्रिय वचने करि पेख, मनोज्ञ सुंदर भाव थी।
मणाम ते सुविशेख, अतिही सुंदर वचन करि॥

१०९. पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं
'मणुन्नाहिं' मनसा ज्ञायन्ते सुन्दरतया यास्ता मनोज्ञा भावतः सुन्दरा इत्यर्थः ताभिः 'मणामाहिं' मनसाऽम्यन्ते—गम्यन्ते पुनः पुनर्याः सुन्दरत्वातिशयात्ता मनोऽमास्ताभिः (वृ० प० ४८२)

११०. उदार तेह प्रधान, शब्द थकी फुन अर्थ थी।
कल्याणकारी जान, कल्याण प्राप्ति-सूचक कह्यो॥
१११. शिव उपद्रव-रहीत, शब्दार्थे दूषण रहित।
धन नां लाभ सहीत, मंगल अनर्थ घातक हुवै॥

११०. 'ओरालाहिं' उदाराभिः शब्दतोऽर्थतश्च 'कल्लाणाहिं' कल्याणप्राप्तिसूचिकाभिः (वृ० प० ४८२)
१११. 'सिवाहिं' उपद्रवरहिताभिः शब्दार्थदूषणरहिताभिरित्यर्थः 'धन्नाहिं' धनलम्भिकाभिः 'मंगल्लाहिं' मंगले—अनर्थप्रतिघाते साध्वीभिः (वृ० प० ४८२)

११२. सस्सिरीयाइं सोय, सोभायुक्तज वचन करि।
हृदये गमती जोय, अर्थ गंभीर सुबोध करि॥
११३. हृदय कोप शोकादि, तास विलयकारी जिका।
हृदय विषे संवादि, अति अह्लादज वचन करि॥

११२. 'सस्सिरीयाहिं' शोभायुक्ताभिः 'हिययगमणिज्जाहिं' गम्भीरार्थतः सुबोधाभिरित्यर्थः (वृ० प० ४८२)
११३. 'हिययपल्हायणिज्जाहिं' हृदयगतकोपशोकादिग्रन्थिविलयनकरीभिरित्यर्थः (वृ० प० ४८२)

गीतकछंद

११४. मित अक्षरे करि परिमिता, परिमाण सहित सुवर्ण ही।
फुन मधुर कोमल वच कह्या, गंभीर ते महाध्वनि कही॥
११५. जे दुख करीनें धारियै, ते अर्थ पिण श्रोता भणी।
वाणीजु ग्रहण करावता, तसु धनादिक आशा घणी॥

वा०—मियमहुरगंभीरसस्सिरीयाहिं क्वचिद् दृश्यते। किहांइक दीसै छै। तिहां मिता ते अक्षर थकी, मधुरा शब्द थकी, गंभीर ते अर्थ थकी वलि ध्वनि थकी स्व श्री ते आत्म-संपत् जेहनी ते वाणी करिकै।

११४,११५. 'मियमहुरगंभीरगाहियाहिं' मिता—परिमिताक्षरा मधुराः कोमलशब्दाः गम्भीरा—महाध्वनयो दुरवधार्यमप्यर्थं श्रोतॄन् ग्राहयन्ति यास्ता ग्राहिकास्ततः (वृ० प० ४८२)

वा०—'मियमहुरगंभीरसस्सिरीयाहिं' ति क्वचिद् दृश्यते तत्र च मिताः अक्षरतो 'मधुराः शब्दतो' गम्भीरा - अर्थतो ध्वनितश्च स्वश्रीः—आत्मसम्पद् यासां तास्तथा ताभिः (वृ० प० ४८२)

सोरठा

११६. अर्थ सैकड़ां न्हाल, छै ते वाणी नैं विषे।
वा स्मृति बहू विशाल, अर्थ थकी छै जसु विषे॥

११६. 'अट्ठसइयाहिं' अर्थशतानि यासु सन्ति ता अर्थशतिकास्ताभिः, अथवा सइ—बहुफलत्वं अर्थतः (वृ० प० ४८२)

११७. अपुनरुक्त वच जास, एहवी वर वाणी करी।
वा एकार्थ विमास, प्राये इष्टादी वचन॥

११७. 'ताहिं अपुणरुत्ताहिं वग्गूहिं' वाग्भिर्गीर्भिरेकार्थिकानि वा प्राय इष्टादीनि वाग्विशेषणानीति (वृ० प० ४८२)

११८. वदै निरंतर वाय, एह भलावण धुर-उपंग[1]।
अभिनंदता ताय, आदि देइ सूत्रे लिख्यो॥
११९. *ढाल दोय सौ ऊपरै, द्वादशमीं सुविचार॥
चरण लेवा नैं संचरचो, जमाली क्षत्रियकुमार॥

११८. अणवरयं अभिनंदंता य
'अणवरयं' सन्ततम् 'अभिनंदंता ये' त्यादि तु लिखितमेवास्ते (वृ० प० ४८२)

*लय : म्हारी सासूजी रै पांच पुत्र
१. ओवाइयं सू० ६८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : २१३

दूहा

१. जमाली रै मुख आगलै, वच मंगलीक उदार।
धनादि नां अर्थी वदै, ते सुणज्यो विस्तार ।।

*हो म्हारा सौभागी वर लाल कुंवरजी,
धन्य-धन्य थांरो अवतार। (ध्रुपदं)

२. जय जय नंदा धर्म करीनै, वर्धमान थावो गुणधार।
जय-जय आशीर्वचन वखाण्यो, भक्ति अर्थे कह्यु बे वार ।।

३. जय-जय नंदा तपे करीनैं, द्वादश तप कर ताय।
नंदा कहितां तुम्हैं वृद्धि पामज्यो, उग्र तपे अधिकाय ।।

४. अथवा जय-जय कहतां जीपज्यो, हे नंद ! विपक्ष प्रतेह।
विपक्ष जे अधर्म छै तेहनैं, तुम्हें धर्म करी जीपेह ।।

५. जय-जय नंदा भद्रं ते तुझ, तू जय हे जगत नंदिकार।
तुझ भद्र कल्याण थावो अभिग्रह करि,
उत्तम ज्ञानादि चिहुं करि सार ।।

६. इंद्रिय वर्ग न जीत्या ज्यांनै, तुम्है जीपेज्यो महाभाग।
जीती नैं तुम्हे शुद्ध पालज्यो, श्रमण धर्म शिव माग ।।

७. वलि जीपज्यो विघ्न प्रतै तुम्ह, टालज्यो धर्म अंतराय।
अहो देव ! तुम्ह वसज्यो सुखसूं, वारू शिवगति मांय ।।

८. हणज्यो राग द्वेष बिहुं मल्ल प्रति तपसा करिकै ताम।
धृती रूप गाढी बांधी नैं, कच्छा कच्छोटी अभिराम ।।

सोरठा

९. बलवंत मल्ल सुदक्ष, समर्थ अन्य मल्ल जीपवा।
गाढो बांध्यो कक्ष, एहवूं छतूंज तेह मल्ल ।।

१०. *मर्द्दज्यो अष्ट कर्म शत्रु प्रति, ध्यान प्रवर उत्कृष्ट।
तेह उत्तम जे शुक्ल ध्यान करि, अप्रमत्त[1] छतो सुइष्ट ।।

११. ग्रहिज्यो आराधन रूप पताका, हे धीर ! त्रिलोक रंग मध्य।
ते मल्ल युद्ध बहु जन अवलोकन, स्थान रंग मध्य अनवद्य ।।

वा०—आराधना ते ज्ञानादिक सम्यक्त्व पालना, तिकाहिज पताका शत्रु नैं जीती ते नट नैं ग्रहिवा योग्य ते आराधना पताका प्रतै ग्रहण कीजै।

२. जय-जय नंदा ! धम्मेणं
'जय जये' त्याशीर्वचनं भक्तिसम्भ्रमे च द्विवचनं
'नंदा धम्मेणं' ति 'नन्द' वर्द्धस्व धर्मेण
(वृ० प० ४८२)

३. जय-जय नंदा तवेणं

४. अथवा जय जय विपक्षं, केन ? धर्मेण हे नन्द !

५. जय जय नंदा ! भद्दं ते अभग्गेहिं नाण-दंसण-चरित्तेहिमुत्तमेहिं
जय त्वं हे जगन्नन्दिकर ! भद्रं ते भवतादिति गम्यं
(वृ० प० ४८२)

६. अजियाइं जिणाहि इंदियाइं जियं पालेहि समणधम्मं
(श० ९।२०८)

७. जियविग्घो वि य वसाहि तं देव ! सिद्धि मज्झे

८. निहणाहि य रागदोसमल्ले तवेणं धितिधणियबद्धकच्छे
धृतिरेव धनिकं अत्यर्थं बद्धा कक्षा (कच्छोटा) येन
(वृ० प० ४८२)

९. मल्लो हि मल्लान्तरजयसमर्थो भवति गाढबद्धकक्षः सन्निति कृत्वोक्तं (वृ० प० ४८२)

१०. मद्दाहि य अट्ठ कम्मसत्तू झाणेणं उत्तमेणं सुक्केणं अप्पमत्तो

११. हराहि आराहणपडागं च धीर ! तेलोक्करंगमज्झे
त्रैलोक्यमेव रङ्गमध्यं—मल्लयुद्धद्रष्टृमहाजनमध्यं तत्र
(वृ० प० ४८२)

वा०—आराधना—ज्ञानादिसम्यक्पालना सैव पताका जयप्राप्तनटग्राह्या आराधनापताका (वृ० प० ४८२)

---

*लय : हो म्हांरा राजा रा गुरुदेव

१. अंगसुत्ताणि भाग २ श० ९।२०८ के संपादित पाठ तथा उसकी वृत्ति के अनुसार अप्पमत्तो शब्द का सम्बन्ध आराधना पताका के साथ है। जयाचार्य ने जोड़ में कर्म शत्रुओं का मर्दन करने के संदर्भ में इसका सम्बन्ध रखा है, इस दृष्टि से 'अप्पमत्तो' शब्द को इस गाथा के सामने उद्धृत किया गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. वितिमर निमल गयूं छै अंधारो, अनुत्तर सर्वोत्कृष्ट।
प्रवर प्रधान ज्ञान जे केवल, पावज्यो अतिहि वरिष्ठ।।
१३. मोक्ष परम पद प्रति फुन जायज्यो, देखाड़्यो जिनेंद्र शिव पंथ।
अकुटिल वक्रता रहित ते मारग, तिणे करीनें गच्छ गुणवंत।।
१४. परिषह रूप सेना प्रति हणीनें, पांचूं इंद्रियां नें कांटा समान।
उपसर्ग प्रति जीपी तुझ धर्म में विघ्न म थावो सुजान।।

१५. इम कही धन अर्थी प्रमुख जे, बहु जन वृंद तिवार।
अभिनंदता मंगल रव बोलै, विरुदावली स्तवना उदार।।
१६. तिण अवसर क्षत्रि-सुतन जमाली, श्रेणीभूत जे नर नां शोभाय।
नेत्रां नी माला सहस्रगमें करि, तेह देखीजतो छतो ताय।।

१७. इम जिम उववाइ[1] में आख्यो प्रभु, वंदन कोणिक धार।
यावत तिमज जमाली निकलै, निकली नें तिहवार।।

सोरठा

१८. वचन तणी सुखकार, माला जे पंक्ती तणां[2]।
सहस्रगमें करि सार, स्तवीजते स्तवीजते छते।।
१९. हृदय-माल सहस्रेह, जन-मन नां समूहे करी।
समृद्धि पमाड़तो तेह, जय जीव नंद इम चिंतवै।।

२०. मनोरथ-माल सहस्रेह, बहु जन नां विकल्प करि।
विशेष करिकै जेह, स्पृश्यमान हुंतो छतो।।

सोरठा

२१. तनु कांति फुन रूप, सौभाग्य योवन गुण करी।
प्रार्थ्यमान अनूप, स्वामीपणैं बहु जन करी।।

२२. अंगुली नहीं पहिछाण, माला जे पंक्ती तणां[3]-
सहस्रगमैं करि जाण, देखाड़तो-देखाड़तो।।
२३. दक्षिण हस्त करेह, बहु नर नारी सहस्र नीं।
अंजलिमाल सहस्रेह, पडिच्छमाण ग्रहितो छतो।।

१२. पावयवितिमिरमणुत्तरं केवलं च नाणं

१३. गच्छ य मोक्खं परं पदं जिणवरोवदिट्ठेणं सिद्धि-
मग्गेणं अकुडिलेणं
१४. हंता परीसहचमूं अभिभविय गामकंटकोवसग्गा णं
धम्मे ते अविग्घमत्थु
इन्द्रियग्रामप्रतिकूलोपसर्गानित्यर्थः (वृ० प० ४८२)
१५. त्ति कट्टु अभिनंदंति य अभिथुणंति य।
(श० ९।२०८)
१६. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे नयणमालासहस्सेहिं
पेच्छिज्जमाणे पेच्छिज्जमाणे
'नयणमालासहस्सेहिं' ति नयनमालाः—श्रेणीभूतजन-
नेत्रपंक्तयः (वृ० प० ४८२)
१७. एवं जहा ओववाइए कूणिओ जाव [सं० पा०]
निग्गच्छइ।

१८. वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे अभिथुव्वमाणे
(वृ० प० ४८२)
१९. हिययमालासहस्सेहिं अभिनंदिज्जमाणे-अभिनंदिज्ज-
माणे
जनमनःसमूहैः समृद्धिमुपनीयमानो जय जीवनन्देत्या-
दिपर्यालोचनादिति भावः। (वृ० प० ४८२, ८३)
२०. मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे-विच्छिप्पमाणे
एतस्य पादमूले वत्स्याम इत्यादिभिर्जनविकल्पैर्विशेषेण
स्पृश्यमान इत्यर्थः (वृ० प० ४८३)

२१. कंतिरोहग्गगुणेहिं पत्थिज्जमाणे-पत्थिज्जमाणे
कान्त्यादिभिर्गुणैर्हेतुभूतैः प्रार्थ्यमानो भर्तृतया स्वामि-
तया वा जनैरिति (वृ० प० ४८३)
२२. अंगुलिमालासहस्सेहिं दाइज्जमाणे २
(वृ० प० ४८३)
२३. दाहिणहत्थेणं बहूणं नरनारिसहस्साणं अंजलिमाला-
सहस्साइं पडिच्छेमाणे पडिच्छेमाणे (वृ० प० ४८३)

---

१. ओ० सू० ६५
२. अंगसुत्ताणि भाग २ श० ९।२०९ में 'नयणमाला' के बाद हिययमाला और 'मणोरहमाला' वाला पाठ है। पर भगवती की वृत्ति में 'औपपातिक' का संकेत देकर जो पाठ उद्धृत किया है, उससे 'वयणमाला' को पहले रखा गया है। और उक्त दोनों पाठों को बाद में। जोड़ इसी क्रम से की हुई है। इसलिए अंगसुत्ताणि के पाठ को आगे पीछे करके उद्धृत किया गया है।
३. अंगुलीमाला वाला पाठ अंगसुत्ताणि में नहीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरठा

२४. भवन महिल कहिवाय, तेह तणी जे भींत नां।
सहस्रगमैं करि ताय, उलंघतो अतिक्रमतो।।

२५. तंती वीणा ताम, तल ते हस्त तणां तला।
तालकांसिका नाम, गीत वाजित्र नां करी।।

२६. मधुर मनोहर आम, जय एहवा वर शब्द नां।
उद्घोषण अभिराम, तिण करिनें जे मिश्र छै।।

२७. अति कोमल ध्वनि करेह, स्तवनाकारक जन तणां।
वा नूपुर प्रमुखेह, भूषण संबंधी ध्वनि करी।।

२८. अपडिबुद्धयमानेह, अन्य शब्द अणधारतो।
तथा वैराग्यवशेह, ते रव चित्त हरतूं न तसु।।

२९. विवर भूमि रै मांय, कंदर तेह कहीजियै।
गिरि नीं गुफाज ताय, अथवा अंतर गिरि तणां।।

३०. प्रधान पर्वत सार, प्रासाद सप्तभूमि प्रमुख।
उच्च अविरल आगार, ऊर्ध्वंघण भवण तणो अरथ।।

३१. वली देवकुल ताम, शृंघाटक त्रिक चउक फुन।
चच्चर नें आराम, वर पुष्प जाति वनखंड जे।।

३२. तरु पुष्पादीमंत, तेह उद्यान कहीजियै।
कानन जे शोभंत, नगर दूरवर्ती तिको।।

३३. सभा अनैं पो स्थान, जसु प्रदेश लघु भाग जे।
मोटा भाग पिछान, देश रूप कहियै तसु।।

३४. तेह विषे पड़छंद, शत सहस्र लक्ष संकुला।
करतो छतो सोहंद, नगर विचे थइ नीकलै।।

३५. हय नुं रव हींसार, गुलगुलाट रव गज तणां।
वर रथ नां भिणकार, घणघणाट रव मिश्र करि।।

३६. जन नां अति मधुरेण, महा कलकल शब्दे करी।
अंबर तल प्रति तेण, सर्व प्रकारे पूरतो।।

३७. सुगंध फूल नीं ताम, वली चूर्ण नीं वास रज।
ऊर्द्ध गई अभिराम, तिण करिनें नभ मलिन जे।।

३८. वर कृष्णागरु ताम, चीड़ा सिल्लक धूप फुन।
तसु निवह करि आम, जीव लोक जिम वासतो।।

२४. भवणभित्ती (पन्ती) सहस्साइं समइच्छिमाणे-समइच्छिमाणे'
समतिक्रामन्नित्यर्थः (वृ० प० ४८३)

२५. 'तंतीतलतालगीयवाइयरवेणं' तन्त्री—वीणा तलाः—हस्ताः तालाः—कांसिकाः तलताला वा—हस्ततालाः गीतवादिते—प्रतीते एषां यो रवः स तथा तेन। (वृ० प० ४८३)

२६. 'महुरेणं मणहरेणं' 'जय जय सद्दुग्घोसमीसएणं' जयेतिशब्दस्य यद् उद्घोषणं तेन मिश्रो यः स तथा तेन (वृ० प० ४८३)

२७. 'मंजुमंजुणा घोसेणं' अतिकोमलेन ध्वनिना स्तावकलोकसम्बन्धिना नूपुरादिभूसणसम्बन्धिना वा (वृ० प० ४८३)

२८. 'अप्पडिबुज्झमाणे' त्ति अप्रतिबुद्धयमानः—शब्दान्तराण्यनवधारयन् अप्रत्युह्यमानो वा—अनपह्रियमाणमानसो वैराग्यगतमानसत्वादिति (वृ० प० ४८३)

२९. कन्दराणि—भूमिविवराणि गिरीणां विवरकुहराणि—गुहाः पर्वतान्तराणि वा (वृ० प० ४८३)

३०. गिरिवराः—प्रधानपर्वताः प्रासादाः—सप्तभूमिकादयः ऊद्ध्र्वघनभवनानि—उच्चाविरलगेहानि (वृ० प० ४८३)

३१. देवकुलानि—प्रतीतानि शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वराणि प्राग्वत् आरामाः—पुष्पजातिप्रधाना वनखण्डाः (वृ० प० ४८३)

३२. उद्यानानि—पुष्पादिमद्वृक्षयुक्तानि काननानि—नगराद् दूरवर्त्तीनि (वृ० प० ४८३)

३३. सभा—आस्थायिकाः प्रपा—जलदानस्थानानि एतेषां ये प्रदेशदेशरूपा भागास्ते तथा तान्, तत्र प्रदेशा—लघुतरा भागाः देशास्तु महत्तराः (वृ० प० ४८३)

३४. 'पडिसुयासयसहस्ससंकुले करेमाणे' त्ति प्रतिश्रुच्छतसहस्रसंकुलान् प्रतिशब्दलक्षसङ्कुलानित्यर्थः कुर्वन् निर्गच्छतीति सम्बन्धः (वृ० प० ४८३)

३५. हयहेसियहत्थिगुलुगुलाइयरहघणघणाइयसद्दमीसएणं (वृ० प० ४८३)

३६. महया कलकलरवेण य जणस्स सुमहुरेणं पूरेंतोऽम्बरं (वृ० प० ४८३)

३७. समंता सुयंधवरकुसुमचुन्नउव्विद्धवासरेणुमइलंणभं करेंते' सुगन्धीनां—वरकुसुमानां चूर्णानां च 'उव्विद्धः ऊद्ध्र्वंगतो यो वासरेणुः—वासकं रजस्तेन मलिनं यत्तत्तया (वृ० प० ४८३)

३८. कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवनिवहेण जीवलोगमिव वासयंते' कालागुरुः गन्धद्रव्यविशेषः प्रवरकुन्दुरुक्कं—वरचीडा तुरुक्कं—सिल्हकं धूपः—तदन्यः एतल्लक्षणो वा एषामेतस्य वा यो निवहः स तथा तेन जीवलोकं वासयन्निवेति (वृ० प० ४८३)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३९. सर्व थकी शोभात, जन-मंडल चक्रवाल जे।
तसु गमन विषे आख्यात, ते जिम ह्वै तिम नीकलै ।।

३९. 'समंतओ खुभियचक्कवालं' क्षुभितानि चक्रवालानि —जनमण्डलानि यत्र गमने तत्तथा तद्यथा भवत्येवं निर्गच्छतीति सम्बन्धः। (वृ० प० ४८३)

४०. पउर जन पहिछाण, प्रचुर जना वा पुर जना।
बाल वृद्ध बहु जाण, जेह प्रमोदज पावता ।।
४१. शीघ्र चालता सोय, ते अति व्याकुल तेहनां।
जे बोल बहु जिहां होय, एहवूं नभ करता छता[1] ।।

४०,४१. 'पउरजणबालवुड्ढपमुइयतुरियपहावियविउला-उलबोलबहुलं नभं करेंते' पौरजनाश्च अथवा प्रचुर-जनाश्च बाला वृद्धाश्च ये प्रमुदिताः त्वरितप्रधाविता-श्च—शीघ्रं गच्छन्तस्तेषां व्याकुलाकुलानां—अतिव्या-कुलानां यो बोलः स बहुलो यत्र तत्तथा तदेवम्भूतं नभः कुर्वन्निति (वृ० प० ४८३)

४२. क्षत्रियकुंड जे ग्राम, नगर मध्य-मध्य थइ करी।
एह भलावण ताम, वृत्ति थकी आख्यो इहां ।।

४२. खत्तियकुंडग्गामे नयरे मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ

४३. *जिहां माहण कुंड ग्राम नगर छै, जिहां चैत्य भलो बहु साल।
तिण स्थान आवै तिण स्थान आवी नैं देखै,
जिन अतिशय सुविशाल ।।
४४. छत्रादिक जिन नां अतिशय देखी, पुरुष सहस्र उपाड़ै जास।
एहवी पवर सिबका थी ऊतरै, सिविका थी उतरी हुल्लास ।।

४३,४४. जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादीए तित्थ-गरातिसए पासइ, पासित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं ठवेइ पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ ।। (श० ९।२०९)

४५. जमाली क्षत्रियकुमर प्रतै तब, मात पिता आगल करि ताम।
जिहां श्रमण भगवंत महावीर प्रभु छै,
तिहां आवै आवी गुणधाम ।।

४५. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता

४६. श्रमण भगवंत महावीर प्रभु नैं, जाव नमण करि वदै वाय।
इम निश्चै प्रभुजी ! ए एक पुत्र मुझ,
जमाली क्षत्रियसुत सुखदाय ।।

४६. समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव (सं० पा०) नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते ! जमाली खत्तियकुमारे अम्हं एगे पुत्ते

४७. इष्ट कांत मुझ वल्लभ यावत, किमंगपासणयाए सोय।
ऊंबर फूल तणी पर एहनों, जाव दर्शण दोहिलूं जोय।

४७. इट्ठे कंते जाव (सं० पा०) किमंग ! पुण पासणयाए ?

४८. ते यथानाम दृष्टांत करीनैं, उत्पल चंद्रविकासी कंज।
पद्म कमल ते सूर्यविकासी, जाव सहस्रपत्र मनरंज ।।

४८. से जहानामए उप्पले इ वा, पउमे इ वा जाव सहस्सपत्ते इ वा

सोरठा

४९. जाव शब्द थी वाद, कुमुद नलिन वा सुभग फुन।
सौगंधिक इत्याद, लोक रूढि थी भेद तसु ।।

४९. यावत्करणादिदं दृश्यं—'कुमुदेइ वा नलिणेइ वा सुभगेइ वा सोगंधिएइ वा' इत्यादि, एषां च भेदो रूढिगम्यः (वृ० प० ४८३)

५०. *ए कमल पंक कादा विषे ऊपनों, जल कर वधियो ताय।
न लिपाइ पंक रूप रजे करि, जल रज करिकैं न लिपाय ।।

५०. पंके जाए जले संवुड्ढे नोवलिप्पति पंकरएणं, नोव-लिप्पति जलरएणं

५१. इण दृष्टांते क्षत्रियसुत जमाली, काम शब्दादि करि उत्पन्न।
गंध फर्श रस रूप भोग करि, वृद्धिपणुंज प्रपन्न ।।

५१. एवामेव जमाली वि खत्तियकुमारे कामेहिं जाए, भोगेहिं संवुड्ढे
'कामेहिं जाए' त्ति कामेषु—शब्दादिरूपेषु जातः 'भोगेहिं संवुड्ढे' त्ति भोगा—गन्धरसस्पर्शास्तेषु मध्ये संवृद्धो—वृद्धिमुपगतः (वृ०प० ४८३)

---

*लय : हो म्हारा राजा रा गुरुदेव

१. २५-४१ तक की जोड़ वृत्ति के आधार पर की गई है। अंगसुत्ताणि में यह पाठ नहीं है। केवल २६ वीं गाथा का संवादी पाठ वहां है, पर वह भी वृत्ति से मिलता नहीं है। वृत्ति में पाठ लिया है—"मंजुमंजुणा घोसेणं अप्पडिबुज्झ-माणे" जबकि अंगसुत्ताणि का पाठ है—"मंजुमंजुणा घोसेणं आपडिपुच्छ-माणे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५२. काम रजे करिनें न लिपावै, अथवा काम रागे न लिपाय।
वलि भोग रूप रज करि न लिपावै, तेह विषे अनुरागता नांय।।

५३. मित्र प्रसिद्ध न्याती ते स्व जाति, निजक मामादि कहाय।
स्व जन पिता पितरियादिक ते, संबंधि ते सुसरादिक ताय।।

५४. परिजन ते दासी दास प्रमुख जे, एतलां नें विषे धार।
स्नेह करीनें नांहि लिपावै, ए तो जमाली क्षत्रियकुमार।।

५५. अहो देवानुप्रिया ! एह जमाली, पायो संसार भय थी उद्वेग।
बीहनों है जन्म मरण नां दुखे करि, पायो है परम संवेग।।

५६. हे देवानुप्रिया ! तुम्हारे समीपे, मुंड थइ सुखकार।
ग्रहस्थावासपणुं छांडीनें, थास्यै ए अणगार।।

५७. ते माटै हे देवानुप्रिया ! तुम्हनें, अम्है शिष्य-भिक्षा देवां एह।
अहो देवानुप्रिया ! थे वांछो, शिष्य रूपणी भिक्षा प्रतेह।।

५८. वीर कहै जिम सुख होवै तिम करो, अहो देवानुप्रिया जी !
मा प्रतिबंध विलंब न करिवूं, इम दीक्षा री आज्ञा ताजी।।

५९. जमाली क्षत्रियकुमर तिण अवसर, श्रमण भगवंत महावीरं।
एम कह्ये थके हरष थयो अति, पायो संतोष सुधीरं।।

६०. श्रमण भगवंत महावीर प्रतै जे, तीन वार धर खंत।
यावत नमण करी प्रभुजी नें, ओ तो कूण इशाणे जंत।।

६१. उत्तर पूर्व दिशि भाग जईनै, स्वयमेव पोतै इज तेह।
आभरण नैं माला पुष्पादिक नीं, अलंकार प्रतै मूकेह।।

६२. जमाली क्षत्रिकुमर तणी जे, माता ते तिहवारं।
हंस लक्षण पट-शाटक करिनैं, ग्रहै आभरण मल्लालंकारं।।

६३. आभरण मल्लालंकार ग्रही नैं, पवर मोत्यां नों हार।
जल नीं धार यावत आंसू प्रति, न्हाखती-न्हाखती तिहवार।।

सोरठा

६४. जाव शब्द थी जोय, सिंदुवार जे वृक्ष नां।
वा निर्गुन्डी सोय, तास कुसुम अति शुक्ल जे।।

६५. छिन्न-मुक्तावली जाण, प्रकाश ते सम ऊजला।
आंसू तास पिछाण, जाव शब्द में ए कह्या।।

६६. *जमाली क्षत्रियकुमर प्रतैं कहै, हे जात ! वल्लभ गुणगेह।
अप्राप्त संजम योग तणी जे, प्राप्ति अर्थे तूं घटना करेह।।

६७. पाम्या है संयम जोग प्रतै तूं, यत्न कीजे रूडी रीत।
संजम नैं विषे उद्यम कीजे, पराक्रम फोड़वजे पुनीत।।

*लय : हो म्हांरा राजा रा गुरुदेव

५२. नोवलिप्पति कामरएणं नोवलिप्पति भोगरएणं
'नोवलिप्पइ कामरएण' त्ति कामलक्षणं रजः काम-
रजस्तेन कामरजसा कामरतेन वा—कामानुरागेण
(वृ० प० ४८३)

५३,५४. नोवलिप्पति मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधि-परि-
जणेणं
'मित्तनाई' इत्यादि, मित्राणि—प्रतीतानि ज्ञातयः
स्वजातीयाः निजका—मातुलादयः स्वजनाः—
पितृपितृव्यादयः सम्बन्धिनः—श्वसुरादयः परिजनो—
दासादिः इह समाहारद्वन्द्वस्ततस्तेन नोपलिप्यते—
स्नेहतः सम्बद्धो न भवतीत्यर्थः (वृ० प० ४८३)

५५. एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभयुव्विग्गे भीए जम्मण-
मरणेणं

५६. इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ
अणगारियं पव्वइत्तए

५७. तं एयं णं देवाणुप्पियाणं अम्हे सीसभिक्खं दलयामो,
पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सीसभिक्खं।
(श० ९।२१०)

५८. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिं खत्तियकुमारं
एवं वयासी—अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं।।
(श० ९।२११)

५९. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे समणेणं भगवया
महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे

६०. समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव (सं० पा०)
नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं अवक्कमइ,

६१. अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ।
(श० ९।२१२)

६२. तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हंस-
लक्खणेणं पडसाडएणं आभरणमल्लालंकारं पडिच्छइ

६३. पडिच्छित्ता हारवारि जाव विणिम्मुयमाणी

६४,६५. सिंदुवारछिन्नमुत्तावलिप्पगासाइं अंसूणि
विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी

६६,६७. जमालिं खत्तियकुमारं एवं वयासी—'जइयव्वं
जाया ! घडियव्वं जाया ! परक्कमियव्वं जाया !
'जइयव्वं' ति प्राप्तेषु संयमयोगेषु प्रयत्नः कार्यः
'जाया !' हे पुत्र ! 'घडियव्वं' ति अप्राप्तानां संयम-
योगानां प्राप्तये घटना कार्या 'परिक्कमियव्वं' ति
पराक्रमः कार्यः पुरुषत्वाभिमानः सिद्धफलः कर्त्तव्य
इति भावः (वृ० प० ४८४)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६७. इण अर्थ विषे प्रव्रज्या पालण में, प्रमाद न करिवूं लिगार ।
इम कही जमाली क्षत्रियकुमार नां, मात पिता तिहवार ।।

६९. श्रमण भगवंत महावीर नैं वांदै, नमस्कार करै करि ताय ।
जिण दिशि थी आया प्रगट हुआ था, तिण दिशि पाछा जाय ।।

७०. जमाली क्षत्रियकुमर तिण अवसर, स्वयमेव पोतै निज हाथ ।
पंच मुष्टी लोच करै करीनैं, आयो जिहां जगनाथ ।।

७१. इम जिम ऋषभदत्त दीक्षा लीधी, तिमज प्रव्रज्या लीधं ।
णवरं पंच सौ पुरुष संघाते, तिमहिज सर्व[1] प्रसीधं ।।

सोरठा

७२. कह्युं ऋषभदत्त जिम जाण, इह वचने महावीर प्रति ।
तीन वार पहिछाण, दक्षिण नां पासा थकी ।।
७३. करै प्रदक्षिण ताम, वंदै नमण करै करी ।
इम बोलै अभिराम, आलित्त लोक इत्यादि जे ।।

७४ *जाव सामायिक आदि देइनैं, कांइ अंग एकादश सार ।
भणैं भणी बहु चौथ छठ तप, अठम भक्त उदार ।।
७५. मास अनैं अर्द्धमास खमण वली, विचित्र तप कर्म करेह ।
आतम प्रति भावतो विचरै, वीर प्रभू समीपेह ।।
७६. तिण अवसर अणगार जमाली, अन्य दिवस किणवार ।।
जिहां श्रमण भगवंत महावीर प्रभु, तिहां आवै आवीनैं धार ।।
७७. श्रमण भगवंत महावीर प्रतै जे, वांदै करै नमस्कार ।
प्रभु वांदी नमस्कार करीनैं, इम बोलै जिहवार ।।
७८. वांछूं छूं हे प्रभु ! तुझ आज्ञा थी, पंच सौ संत संघात ।
बाहिर जनपद देश विषे जे, विहार करिवूं जगनाथ ।।

७९. श्रमण भगवंत महावीर तदा, जमाली नां ए अर्थ प्रतेह ।
आदर न दियै तेह अर्थ विषे, अणआदर देता जेह ।।
८०. वलि चित्त में भलो पिण नहिं जाणैं, देख्यो दोष ऊपजवा नों भाव ।
ते माटै आज्ञा नहिं दीधी, प्रभु मून रह्या ते प्रस्ताव ।।
८१. तब जमाली अणगार श्रमण भगवंत महावीर प्रतै दूजी वार ।
तीजी वार पिण इहविध बोलै, हूं वांछूं छूं जगतार ।।

६८. अस्सिं च णं अट्ठे णो पमाएतव्वं ति कट्टु जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मापियरो
'अस्सिं चे' त्यादि, अस्मिंश्चार्थे—प्रव्रज्यानुपालनलक्षणे न प्रमादयितव्यमिति (वृ० प० ४८४)
६९. समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया । (श० ९।२१३)
७०. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ
७१. एवं जहा उसभदत्तो तहेव पव्वइओ नवरं पंचहिं पुरिससएहिं सद्धिं तहेव जाव (सं० पा०)

७२,७३. एवं जहा उसभदत्तो इत्यनेन यत्सूचितं तदिदं— (वृ० प० ४८४)
उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—
आलित्ते णं भंते !
७४,७५. जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । (श० ९।२१५)
७६. तए णं से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
७७. समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—
७८. इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए । (श० ९।२१६)
७९,८०. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणइ, तुसिणीए संचिट्ठइ ।। (श० ९।२१७)

८१. तए णं से जमाली अणगारे समणं भगवं महावीरं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—इच्छामि णं भंते !

***लय : हो म्हारा राजा रा गुरुदेव**

१. पा० टि० ७ में सं० पा० दिया गया है। इस पाठ की जोड़ करने के बाद आगे की दो गाथाओं में विस्तृत पाठ के आधार पर जोड़ लिखकर फिर दो गाथाओं में सं० पा० को आधार बनाया गया है। इसलिए इन गाथाओं के सामने कहीं पा० टि० का और कहीं मूल का पाठ उद्धृत है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८२. आप तणी प्रभु ! आज्ञा हुवां थी, पंचसौ श्रमण संघात।
जाव विचरवूं जनपद देशे, विहार करीनें विख्यात।।

८२. तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए। (श० ६।२१८)

८३. तब श्रमण भगवंत महावीर प्रभुजी, जमाली अणगार नां जेह।
बे त्रिण वार ही एह अर्थ प्रति, आदर न दियै तेह।।

८३. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स दोच्चं पि, तच्चं पि एयमट्ठं नो आढाइ,

८४. जाव पूर्ववत मौनपणैं रहै, तब ते जमाली अणगार।
श्रमण भगवंत महावीर प्रभु नैं, वांदै करै नमस्कार।।

८४. जाव (सं० पा०) तुसिणीए संचिट्ठइ। (श० ६।२१६)

तए णं से जमाली अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ

८५. वंदी नमण करी श्रमण भगवंत महावीर तणां पासा थी।
बहुसाल चैत्य थकी पाछो निकलै, निकली विण आज्ञा थी।

८५. वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता

८६. पांच सौ अणगार साधु संघाते, बाहिर ते तिणकाल।
जनपद देश विषे विचरंतो, ए कही दोय सौ तेरमीं ढाल।।

८६. पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ। (श० ६।२२०)

ढाल : २१४

दूहा

१. तिण काले नैं तिण समे, नगरी सावत्थी नाम।
हुंती अति रलियामणी, वर्णक तसु अभिराम।।

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नयरी होत्था—वण्णओ

२. कोट्ठग नामे बाग थो, जे वर्णववा जोग।
यावत ते वन-खंड लग, कहिवूं ते सुप्रयोग।।

२. कोट्ठए चेइए—वण्णओ जाव वणसंडस्स

३. तिण काले नैं तिण समय, नगरी चंपा नाम।
हुंती अतिही शोभती, तसु वर्णक अभिराम।।

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था—वण्णओ

४. पूर्णभद्र त्यां चैत्य थो, तसु वर्णक बहु ताम।।
यावत जे पृथ्वी तणों शिला-पट्ट अभिराम।।

४. पुण्णभद्दे चेइए—वण्णओ जाव पुढविसिलापट्टओ। (श० ६।२२१)

५. तब जमाली अणगार ते, अन्य दिवस किण काल।
श्रमण पंच सय साथ थी, परवरियो थको न्हाल।।

५. तए णं से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे

६. पूर्वानुपूर्वे चालतो, वलि ग्रामानुग्राम।
व्यतिक्रमतो विचरतो, जिहां सावत्थी नाम।।

६. पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे जेणेव सावत्थी नयरी

७. जिहां कोट्ठग नामैं चैत्य छै, तिहां आवै आवी ताम।
यथायोग्य अवग्रह प्रते, ग्रहै ग्रही नैं आम।।

७. जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता

८. संजम नैं फुन तप करी, आतम प्रति अवधार।
भावंतो ते वासितो, विचरै छै तिहबार।।

८. संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। (श० ६।२२२)

९. तब श्रमण भगवंत महावीर जी, अन्य दिवस किण काल।
पूर्वानुपूर्वी प्रभु, चालंता गुणमाल।।

९. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे

१०. यावत सुखे-सुखे करी, करता प्रभू विहार।
जिहां चम्पा नामे भली, नगरी छै सुखकार।।

१०. जाव (सं० पा०) सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव चम्पा नयरी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. जिहां पूर्णभद्र चैत्य छै, तिहां आवै आवी ताय।
यथायोग्य अवग्रह प्रते, ग्रहै ग्रही जिनराय ।।
१२. संजम नें फुन तप करी, आतम प्रति अवधार।
भावंता ते वासिता, विचरै जिन जगतार ।।
भवि ! सांभलो रे,
सांभलज्यो जमाली नुं चरित्त, वीतराग नां वच अवितत्थ ।। (ध्रुपदं)

११. जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ ओगिण्हित्ता
१२. संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। (श० ९/२२३)

१३. ते अणगार जमाली नें तिहवार, तेह अरस आहारे करि धार।
भवि ! सांभलो रे।
हींग प्रमुख नों नहिं संस्कार, ते कहियै अरस रस-रहित आहार।
भवि ! सांभलो रे ।।

१३. तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स तेहिं 'अरसेहि य' 'अरसेहि य' त्ति हिङ्ग्वादिभिरसंस्कृतत्वादविद्यमानरसैः (वृ० प० ४८६)

१४. पुराणपणां थी गयो रस जास, विरस आहार कहियै छै तास।
अंत ते अरसपणैं करि तेह, सर्व धान्य में अंत वर्त्तेह ।।

१४. विरसेहि य अंतेहि य
'विरसेहि य' त्ति पुराणत्वाद्विगतरसैः 'अंतेहि य' त्ति अरसतया सर्वधान्यान्तवर्त्तिभिर्वल्लचणकादिभिः (वृ० प० ४८६)

१५ तेहिज अरस जीम्यां पछै जोय, ऊवरियो वा वासी होय।
ते प्रकर्ष करि अंत वर्त्तेह, प्रांत आहार कहीजै जेह ।।

१५. पंतेहि य
'पंतेहि य' त्ति तैरेव भुक्तावशेषत्वेन पर्युषितत्वेन वा प्रकर्षेणान्तवर्त्तित्वात्प्रान्तैः (वृ० प० ४८६)

१६. लुक्ख अनैं तुच्छ अल्प आहारेह, कालातिक्रांत करीनें तेह।
भूख तृषा लागी तिण काल, आहार-पाणी अणपाम्ये न्हाल ।।

१६. लूहेहि य, तुच्छेहि य कालाइक्कंतेहि य
'लूहेहि य' त्ति रूक्षैः 'तुच्छेहि य' त्ति अल्पैः 'कालाइक्कंतेहि य' त्ति तृष्णाबुभुक्षाकालाप्राप्तैः (वृ० प० ४८६)

१७. प्रमाणातिक्रांत करेह, मात्रा थी अधिक भोगवियै जेह।
शीतल जल भोजन करि न्हाल, अन्यदा दिवस किण काल ।।

१७. पमाणाइक्कंतेहि य पाणभोयणेहिं अण्णया कयाइ
'पमाणाइक्कंतेहि य' त्ति बुभुक्षापिपासामात्रानुचितैः (वृ० प० ४८६)

१८. शरीर विषे विस्तीर्ण जेह, रोग ते व्याधि करी पीड़ेह।
तेहिज आतंक स्पष्ट दीसंत, जीवितव्य नें कष्टकारी अत्यंत ।।

१८. सरीरगंसि विउले रोगातंके पाउब्भूए
'रोगायंके' त्ति रोगो—व्याधिः स चासावातङ्कश्च कृच्छ्रजीवितकारीति रोगातङ्कः (वृ० प० ४८६)

१९. उज्जल सुख-बिंदु करि रहीत, तिउले[1] कहितां त्रितुल संगीत।
मन वच तनु नां अर्थ प्रतेह, तुले कहितां जीपै तेह ।।

१९. उज्जले विउले
'उज्जले' त्ति उज्ज्वलो—विपक्षलेशेनाप्यकलङ्कितत्वात् 'तिउले' त्ति त्रीनपि मनःप्रभृतिकानर्थान् तुलयति—जयतीति त्रितुलः (वृ० प० ४८६)

२०. किहांइक विपुल सकल तनु व्याप, प्रकर्ष करि गाढ संताप।
कर्कश द्रव्य जिम दृढ कठोर, कटुक वस्तु जिम अनिष्ट जोर ।।

२०. पगाढे कक्कसे कडुए
क्वचिद्विपुल इत्युच्यते, तत्र विपुलः सकलकायव्यापकत्वात्, 'पगाढे' त्ति प्रकर्षवृत्तिः 'कक्कसे' त्ति कर्कशद्रव्यमिव कर्कशोऽनिष्ट इत्यर्थः 'कडुए' त्ति कटुकं नागरादि तदिव यः स कटुकोऽनिष्ट एवेति (वृ० प० ४८६)

२१. चंड रौद्र दुक्खे दुख हेतु, दुर्गम तेह दुसाध्य कहेतु।
तीव्र नींब नीं पर अवलोय, दुक्खे करी अहियासंता सोय ।।

२१. चंडे दुक्खे दुग्गे तिव्वे दुरहियासे
'चंडे' त्ति रौद्रः 'दुक्खे' त्ति दुःखहेतुः 'दुग्गे' त्ति कष्टसाध्य इत्यर्थः 'तिव्वे' त्ति तीव्रं – तिक्तं निम्बादि द्रव्यं तदिव तीव्रः किमुक्तं भवति ? 'दुरहियासे' त्ति दुरधिसह्यः (वृ० प० ४८६)

*** लय : मेरी खिण गई, लाखीणी रे मेरी खिण**

१. अंगसुत्ताणि भाग २ श० ९।२२४ में तिउले के स्थान पर विउले पाठ है। वहां 'तिउले' पाठान्तर में रखा गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२. पित्त ज्वर करी व्याप्त तसु देह, वलि तनु ऊपनो दाह अछेह।
एहवो थको जमाली अणगार, विचरै सावत्थी नगर मझार।।

२३. अणगार जमाली ते तिणवार, पराभव्यो वेदन करि धार।
श्रमण निर्ग्रंथ तेड़ावै ताय, तेडावी इम बोलै वाय।।
२४. तुम्हे देवानुप्रिया ! मुझ काज, सेज्जा संथारो संथरो आज।
ते श्रमण निर्ग्रंथ तिण अवसर जेह, जमाली नां ए अर्थ प्रतेह।।
२५. विनय करीनें करै अंगीकार, अंगीकार करीनें तिवार।
जमाली अणगार नां जेह, सेज्जा संथारो संथरै तेह।।

सोरठा

२६. सेज्जा कहितां सोय, सूवा नें अर्थे जिको।
संथारो अवलोय, तिण सूं सेज्या-संथारो कह्यो।।
२७. *तिण अवसर ते जमाली अणगार,
अतिगाढी वेदनाइं पराभव्यो तिवार।
श्रमण निर्ग्रंथ नें बीजी वार, तेड़ै तेड़ी इम वचन उचार।।

२८. अहो देवानुप्रिया ! मुझ काज, स्यूं सेज्या-संथारो कीधो आज ?
कै करियै छै सेज्या-संथार, स्यूं नीपायो कै नीपावो छो धार ?

२९. श्रमण निर्ग्रंथ तिके तिह वेर, जमाली अणगार नें इम कहै हेर।
अहो देवानुप्रिया ! सेज्जा-संथार, निश्चै न कीधो, करियै धार।।

सोरठा

३०. पूछ्यो जमाली एम, मुज सूवा नें अर्थ जे।
संथारो धर प्रेम, कीधो कै करियै अछै।।
३१. इण वचने करि न्हाल, अतीत काल निर्देश करि।
वर्त्तमान जे काल, तेह तणुं देखाववूं।।
३२ कीधो नें क्रियमाण, भेद कह्युं ए तेह विषे।
उत्तरदायक जाण, साधू पिण इमहिज कह्यो।।
३३. करवा लागा जास, अणकीधो इम आखियो।
ते कारण थो तास, जमाली इम चिंतवै।।
३४. मुझ वच फुन संथार, करणहार मुनि नों वली।
बिहुं नो वच अवधार, इम विचारणा करतो हुवो।।
३५. करवा लागो तास, कीधो पक्ष अंगीकर्‍यै।
सम्यग प्रकार विमास, तेह वचन मिलतो नथी।।
३६. क्रियमाण जे कीध, जिण नर एह अंगीकर्‍यूं।
तिण विद्यमान नीं सीध, करण क्रिया अंगीकरी।।
३७. तथा दोष बहु थाय, जे कीधूं क्रियमाण नहिं।
विद्यमान थी ताय, चिरंतन घट नीं परै।।

*लय : मेरी खिनगाई, लाखीणी रे मेरी खिण

२२. पित्तज्जरपरिगतसरीरे, दाहवक्कंतिए या वि विहरइ। (श० ९/२२४)
दाहो व्युत्क्रान्तः—उत्पन्नो यस्यासौ (वृ० प० ४८६)
२३. तए णं से जमाली अणगारे वेयणाए अभिभूए समाणे समणे निग्गंथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—
२४,२५. तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम सेज्जा-संथारगं संथरह। (श० ९/२२५)
तए णं से समणा निग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एतमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जमालिस्स अणगारस्स सेज्जा-संथारगं संथरंति। (श० ९/२२६)
२६. 'सेज्जा-संथारगं' ति शय्यायै—शयनाय संस्तारकः शय्यासंस्तारकः (वृ० प० ४८६)
२७. तए णं से जमाली अणगारे बलियतरं वेदणाए अभिभूए समाणे दोच्चं पि समणे निग्गंथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—
'बलियतरं' ति गाढतरं (वृ० प० ४८६)
२८. ममं णं देवाणुप्पिया ! सेज्जासंथारए किं कडे ? कज्जइ ?
'किं कडे कज्जइ' त्ति किं निष्पन्न उत निष्पाद्यते ? (वृ० प० ४८६)
२९. तते णं ते समणा निग्गंथा जमालिं अणगारं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पियाणं सेज्जा-संथारए कडे, कज्जइ। (श० ९/२२७)

३१,३२. अनेनातीतकालनिर्देशेन वर्त्तमानकालनिर्देशेन च कृतक्रियमाणयो र्भेद उक्तः उत्तरेऽप्येवमेव (वृ० प० ४८६)

३३. तदेवं संस्तारककर्तृसाधुभिरपि क्रियमाणस्याकृततोक्ता (वृ० प० ४८७)
३४. ततश्चासौ स्वकीयवचनसंस्तारककर्तृसाधुवचनयोर्विमर्शात् प्ररूपितवान् (वृ० प० ४८७)
३५. क्रियमाणं कृतं यदभ्युपगम्यते तन्न सङ्गच्छते (वृ० प० ४८७)
३६. यतो येन क्रियमाणं कृतमित्यभ्युपगतं तेन विद्यमानस्य करणक्रिया प्रतिपन्ना (वृ० प० ४८७)
३७. तथा च बहवो दोषाः, तथाहि—यत्कृतं तत्क्रियमाणं न भवति विद्यमानत्वाच्चिरन्तनघटवत् (वृ० प० ४८७)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गीतक छंद

३८. अथ करयूं पिण जो कीजियै तो नित्य ही करिवूं वही।
कीधापणां थी धुर समय जिम क्रिया-समाप्ती ह्वै नहीं।।

३९. सहु काल में क्रियमाण थी जे आदि समया नीं परै।
करिवाज मांड्यूं करयूं ह्वै तो क्रिया विफल हुवै तरै।।

४०. जे पूर्व अछतो हीज छै ते हुंतो छतो दीसै वही।
प्रत्यक्ष एह विरोध छै वलि जमाली चिन्तै सही।।

४१. तिम घट प्रमुख जे कार्य नी निष्पत्ति विषेज जाणियै।
जे क्रिया करिवा तणुं कालज दीर्घ ही पहिछाणियै।।

४२. जे भणी प्रारंभ काल में घट आदि कार्य न देखियै।
शिवादि-पिंडादि अवस्था विषे पिण नहिं पेखियै।।

४३. क्रिया नां अवसान में घट आदि कारज संभवै।
तो क्रिया काले कार्य युक्त न क्रिया अवसाने हुवै।।

वा०—भाष्यकार कहै छै—इहलोक नें विषे जे पुरुषे क्रियमाण—करवा लागूं ते कृतं कहितां कीधूं, इम अंगीकार करयूं तिण पुरुषे विद्यमान नींज करण क्रिया अंगीकार कीधी। वली तिण प्रकार छते बहु दोष नीं निष्पत्ति हुवै।

इहां जे कीधूं ते क्रियमाण न हुवै कस्मात्—किण कारण थकी ? तब्भावाओ ते सत्पणां थकी—वस्तु नां विद्यमानपणां थकी इत्यर्थः। केहनी परै ? चिरंतन घट नीं परै। अथवा कृतं अपि क्रियते कहितां कीधां प्रतै पिण कीजियै तो नित्य करिवूं। वली क्रिया समाप्ति न हुवै सदा काल कीधा नें हीज क्रियमाणपणां थकी।

जो क्रियमाण कहितां करवा लागा ते कृतं कहितां कीधो हुवै तिवारै क्रिया नों निर्फलपणो हुवै। तथा पूर्वे न थयुं ते थातो दीसै तथा जे भणी घटादिक नीं निष्पत्ति नें विषे दीर्घ क्रिया काल दीसै छै।

३८. कृतमपि क्रियते ततः क्रियतां नित्यं कृतत्वात् प्रथमसमय इवेति, न च क्रियासमाप्तिर्भवति
(वृ० प० ४८७)

३९. सर्वदा क्रियमाणत्वादादिसमयवदिति, तथा यदि क्रियमाणं कृतं स्यात्तदा क्रियावैफल्यं स्याद्
(वृ० प० ४८७)

४०. तथा पूर्वमसदेव भवद्दृश्यते इत्यध्यक्षविरोधश्च
(वृ० प० ४८७)

४१. तथा घटादिकार्यनिष्पत्तौ दीर्घः क्रियाकालो दृश्यते
(वृ० प० ४८७)

४२. यतो नारम्भकाल एव घटादिकार्यं दृश्यते नापि स्थासकादिकाले (वृ० प० ४८७)

४३. युक्तं तर्हि, तत्क्रियाऽवसाने, यतश्चैवं ततो न क्रियाकालेषु युक्तं कार्यं किन्तु क्रियाऽवसान एवेति
(वृ० प० ४८७)

वा०—आह च भाष्यकारः—

जस्सेह कज्जमाणं कयंति तेणेह विज्जमाणस्स।
करणकिरिया पवन्ना तहा य बहुदोसपडिवत्ती[1]।।
कयमिह न कज्जमाणं तब्भावाओ चिरंतणघडोव्व।
अहवा कयंपि कीरइ कीरउ निच्चं न य समत्ती[2]।।
किरियावेफल्लंपि य पुव्वमभूयं च दीसए हुंतं।
दीसइ दीहो य जओ किरियाकालो घडाईणं[3]।।

---

१. इहास्मिन् लोके येन नरेण क्रियमाणं कृतमित्यभ्युपगतं तेन नरेण विद्यमानस्यैव करणक्रियाप्रतिपन्नांगीकृता तथा च सति बहुदोषनिष्पत्तिर्भवति।

२. तथाहि कयमिहेत्यादि इह यत् कृतं तत् क्रियमाणं न भवति कस्मात् तद्भावाओत्ति तत्सत्त्वाद् वस्तुनो विद्यमानत्वादित्यर्थः। किंवत् ? चिरंतनघटवत्। अथवा कृतमपि क्रियते ततः नित्यं क्रियतां न च क्रियासमाप्तिर्भवति सर्वदा कृतस्यैव क्रियमाणत्वात्।

३. किरियेत्यादि यदि क्रियमाणं कृतं स्यात्तदा क्रियावैफल्यं स्यादिति। तथा पूर्वमभूतं च भवद्दृश्यते। तथा यतः घटादीनां निष्पत्तौ दीर्घः क्रियाकालो दृश्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आरंभ काल नें विषे पिण घटादि कार्य न दीसै शिवादि अद्धा नें विषे— पिंडादि अवस्था नें विषे पिण न दीसै ते भणी क्रिया काल नें कार्य युक्त नहीं, किन्तु क्रिया नां अंत नें विषेहीज कार्य युक्त छै।

४४. ते अणगार जमाली नें तिहवार, एहवूं अध्यवसाय विचार।
यावत उपनो छै मन मांय, आगल ते कहियै छै ताय।।

४५. जे भणी श्रमण भगवंत महावीर, ए विध आखै छै जन तीर।
यावत एम परूपै वाय, इम निश्चै चलमान ते चल्यूं कहाय।

४६. उदीरवा मांड्यो छै ताम, तिणनैं उदीर्‌यूं भाखै स्वाम।
जाव निर्जरवा मांड्यूं सधीक, तसु निर्जर्‌यूं कहै ते झूठो अलीक।।

४७. इम निश्चै दीसै छै एह, सयन अर्थ संथारो जेह।
करिवा लागूं ते कर्‌यूं न कहाय, संथरिवा लागूं ते संथर्‌यूं नांय।।

४८. जे भणी सूवा अर्थ संथार, करिवा मांड्यूं ते अणकर्‌यूं धार।
संथरवा मांड्यूं छै तेह, अणसंथर्‌यूं कहियै जेह।।

४९. चलवा लागूं छै पिण जेह, अणचालियूं कहियै छै तेह।
जाव निर्जरिवा मांड्यूं तास, अणनिर्जर्‌यूं कहीजै जास।।

५०. एम विचारै विचारी जेह, श्रमण निर्ग्रंथ प्रतै तेड़ावेह।
तेड़ावी इम बोलै वाय, अहो देवानुप्रिया ! जे ताय।।

५१. श्रमण भगवंत महावीर सुजेम, इम कहै जाव परूपै एम।
इहविध निश्चै करिनैं जेह, चलवा लगूं ते चलियुं कहेह।।

५२. तिमहिज जाव सर्व पहिछाण,
निर्जरिवा मांड्यूं ते अनिर्जर्‌यूं जाण।
तव जमाली अणगार नुं तेह,
इम कहितां जाव परूपतां जेह।।

५३. केइ श्रमण निर्ग्रंथ ते अर्थ प्रतेह,
सद्दहे प्रतीते फुन रोचवेह।
केइ श्रमण निर्ग्रंथ ते अर्थ प्रति ताय,
न सद्दहै नहीं प्रतीते रुचै नांय।।

सोरठा

५४. श्रमण निर्ग्रंथ ताम, जमाली अणगार नां।
एक अर्थ प्रति आम, सद्दहै नहिं तसु एह मत।

५५. क्रियमाण विद्यमान, वस्तु नुं करिवूं न हुवै।
पिण अविद्यमान पिछान, वस्तु नुं करिवूं हुवै।।

५६. जिम आकाश विषेह, पुष्प कदापि हुवै नहीं।
छती वस्तु हुवै जेह, पिण अछती वस्तु हुवै नथी।।

५७. जो अछती वस्तू होय, तो खर-शृंग किम नहिं हुवै।
इम बहु युक्ती जोय, विशेषावश्यक ग्रंथ थी।।

नारंभे च्चिय दीसइ न सिवादद्धाइ दीसइ तदंते।
तो नहि किरियाकाले जुत्तं कज्जं तदंतंमि[1]।।
(वृ० प० ४८७)

४४. तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव (सं० पा०) समुप्पज्जित्था

४५. जण्णं समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ एवं खलु चलमाणे चलिए

४६. उदीरिज्जमाणे उदीरिए जाव (सं० पा०) निज्ज-रिज्जमाणे निज्जिण्णे तण्णं मिच्छा।

४७. इमं च णं पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे संथरिज्जमाणे असंथरिए।

४८. जम्हा णं सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथ-रिज्जमाणे असंथरिए

४९. तम्हा चलमाणे वि अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे वि अनिज्जिण्णे—

५०. एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता समणे निग्गंथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—जण्णं देवाणुप्पिया !
(श० ९/२२८)

५१. समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ— एवं खलु चलमाणे चलिए

५२. तं चेव जाव (सं० पा०) निज्जरिज्जमाणे वि अनिज्जिण्णे। (श० ९/२२८)
तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स एवमाइक्ख-माणस्स जाव परूवेमाणस्स

५३. अत्थेगतिया समणा निग्गंथा एयमट्ठं सद्दहंति पत्ति-यंति रोयंति अत्थेगतिया समणा निग्गंथा एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोयंति।

५४. 'अत्थेगइया समणा णिग्गंथा एयमट्ठं णो सद्दहंति' त्ति ये च न श्रद्दधति तेषां मतमिदं (वृ० प० ४८७)

५५. नाकृतं अभूतमविद्यमानमित्यर्थः क्रियते अभावात्
(वृ० प० ४८७)

५६. खपुष्पवत् (वृ० प० ४८७)

५७. यदि पुनरकृतमपि असदपीत्यर्थः क्रियते तदा खर-विषाणमपि क्रियतामसत्त्वाविशेषात् (वृ० प० ४८७)

१. नारंभे इत्यादि आरंभकाले एव घटादिकार्यं न दृश्यते शिवाद्यऽद्धायां पिंडाद्यवस्थायामपि कार्यं न दृश्यते किन्तु तदंते स्थासादिक्रियावसाने कार्यं दृश्यते ततः क्रियाकाले कार्यं न युक्तं किंतु तदंते एवेति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा०—केयक श्रमण निर्ग्रंथ जमाली नां ए अर्थ प्रति न श्रद्धै । तेहनुं मत—जे कडेमाणे कडे कहितां करतो थको ते क्रियमाण—विद्यमान वस्तु, तेहनुं करिवूं पिण अविद्यमान वस्तु नुं करिवूं न हुवै । जिम आकाश नें विषे फूल न हुवै । छती वस्तु हुवै, अछती न हुवै । जो अछती हुवै तो खरविसाण पिण हुवै । अछतापणां नां अविशेष थकी ।[1]

वली जे कीधां नुं करिवूं ते पक्ष नैं विषे नित्यक्रियादिक दोष कह्या छै, ते अछता नुं करिवूं ते पक्ष नें विषे पिण तुल्य वर्त्तै । तथा निश्चै अत्यंत अछतो न करियै असद्भाव थकी, खर विसाण नीं परै । अथ अत्यंत अछतो पिण करियै तिवारे नित्य ते अछतो करण प्रसंग । वली अत्यंत अछता करण कै विषे क्रिया समाप्ति न हुवै । तथा अत्यन्त अछता नां करण कै विषे क्रिया नों विफल पणों हुवै अछतापणां थकीज खरविसाण नीं परै ।

अथवा अविद्यमान नो करणो अंगीकार कीधे छते नित्यक्रियादिक दोष कष्टतरका हुवै अत्यंत अभाव रूपपणां थकी । विद्यमान पक्ष नें विषे तो पर्याय विशेषण अर्पण थकी क्रिया व्यपदेश पिण हुवै यथा आकाशं कुरु तथा वली नित्य क्रियादिक दोष न हुवै वली अत्यंत अछता खरविषाणादिक नें विषे ए न्याय न हुवै ।

जे वली कह्युं—पूर्वं अछतो हीज ऊपजतो थको दीसै इति प्रत्यक्ष विरोध तेहनें विषे कहियै छै—जो पूर्वं न थयुं छतो हुंतो दीसै छै तो पूर्व न थयुं छतो किण कारण थकी तुझ नें खरविषाण पिण न दीसै ।

जे वली कह्युं—दीर्घ क्रियाकाल दीसै तेहनें विषे कहियै छै—प्रति समय उत्पन्न होवा वाली परस्पर किंचिद भिन्न रूपवाली स्थास कोशादिक प्रारम्भ समय नें विषय पिण त्यार होवा वाली घणी कार्य कोटी नो पिण दीर्घ क्रियाकाल दीसै, तदा इहां घट नों स्यूं ? जेणे करी कहियै छै दीसै छै दीर्घ क्रिया काल घटादिक नुं इति ।

वली जे कह्युं—नारंभे एव दृश्यते इत्यादि, घट नां आरंभ नें विषे घट न दीसै, तेहनुं उत्तर कहै छै—अनेरा कार्य नां आरंभ नें विषे अनेरो कार्य किम दीसै, पट नां आरंभ नें विषै जिम घट न दीसै तिम शिवक अनें स्थासकादिक कार्य विशेष घट स्वरूप न हुवैं तिण कारण थकी शिवकादिक काल नें विषे किम घट दीसै इति ।

वलि स्यूं अंत समय नें विषेहीज घट प्रारंभ्यो, तिण काल नें विषेहीज ए घट दीसै, तिवारै कांइ दोष ? इम क्रियमाण कहितां करिवा लागो ते कीधूं हुवै क्रियमाण समय निरंशपणां थकी । अनें जो वर्त्तमान समय क्रिया काल नें विषे पिण अणकीधी वस्तु, तिवारै अतिक्रमे छते किम करिवूं ? अथवा किम आगामी काले ? क्रिया नां उभय काल नें विषे पिण विनष्ट अनें अनुत्पन्नपणें करी असतपणां थकी असंबध्यमानपणां थकी । ते भणी क्रिया कालहीज क्रियमाण कहितां करिवा लागो ते कृतं कहितां कीधूं कहियै । आह च—

वा०—अपि च—ये कृतकरणपक्षे नित्यक्रियादयो दोषा भणितास्ते च असत्करणपक्षेऽपि तुल्या वर्त्तन्ते, तथाहि—नात्यन्तमसत् क्रियतेऽसद्भावात् खरविषाणमिव, अथात्यन्तासदपि क्रियते तदा नित्यं तत्करणप्रसङ्गः, न चात्यन्तासतः करणे क्रियासमाप्तिर्भवति, तथाऽत्यन्तासतः करणे क्रिया वैफल्यं च स्यादसत्त्वादेव खरविषाणवत् ।

अथ च अविद्यमानस्य करणाभ्युपगमे नित्यक्रियादयो दोषाः कष्टतरका भवन्ति, अत्यन्ताभावरूपत्वात् खरविषाण इवेति विद्यमानपक्षे तु पर्यायविशेषणार्पणात् स्यादपि क्रियाव्यपदेशो यथाऽऽकाशं कुरु, तथा च नित्यक्रियादयो दोषा न भवन्ति, न पुनरयं न्यायोऽत्यन्तासति खरविषाणादावस्तीति

यच्चोक्तं—'पूर्वमसदेवोत्पद्यमानं दृश्यत इति प्रत्यक्षविरोधः', तत्रोच्यते, यदि पूर्वमभूतं सद्भवद्दृश्यते तदा पूर्वमभूतं सद्भवत् कस्मात्त्वया खरविषाणमपि न दृश्यते ।

'यच्चोक्तं—दीर्घः क्रियाकालो दृश्यते, तत्रोच्यते प्रतिसमयमुत्पन्नानां परस्परेणेषद्विलक्षणानां सुबह्वीनां स्थासकोसादीनामारम्भसमयेष्वेव निष्ठानुयायिनीनां कार्यकोटीनां दीर्घः क्रियाकालो यदि दृश्यते तदा किमत्र घटस्यायातं ? येनोच्यते—दृश्यते दीर्घश्च क्रियाकालो घटादीनामिति

यच्चोक्तं—'नारम्भ एव दृश्यते' इत्यादि तत्रोच्यते, कार्यान्तरारम्भे कार्यान्तरं कथं दृश्यतां पटारम्भे घटवत् ? शिवकस्थासकादयश्च कार्यविशेषा घटस्वरूपा न भवन्ति, ततः शिवकादिकाले कथं घटो दृश्यतामिति ?

किंच—अन्त्यसमय एव घटः समारब्धः ? तत्रैव च यद्यसौ दृश्यते तदा को दोषः ? एवं च क्रियमाण एव कृतो भवति क्रियमाणसमयस्य निरंशत्वात्, यदि च संप्रतिसमये क्रियाकालेऽप्यकृतं वस्तु तदाऽतिक्रान्ते कथं क्रियतां कथं वा एष्यति ? क्रियाया उभयोरपि विनष्टत्वानुत्पन्नत्वेनासत्त्वादसम्बध्यमानत्वात्, तस्मात् क्रियाकाल एव क्रियमाणं कृतमिति

---

१. यह वार्तिका टीका के आधार पर की हुई है । प्रथम पेराग्राफ की टीका ऊपर के चार सोरठों के सामने आ गई । इसलिए वार्तिका के सामने उसे नहीं रखा गया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्थविरां नीं ए पक्ष—अणकीधा प्रतै न करियै किण कारण थकी, अभाव थकी आकाश-पुष्प नीं परै । अथवा अकृत ते अविद्यमान प्रते पिण करियै तो खर के श्रृंग पिण करियै ।

ननु शब्द निश्चय अर्थ नें विषे । जे नित्य क्रियादिक दोष कृत करण पक्ष नें विषे तुम्हे कह्या ते असत करण पक्ष नें विषे पिण तुल्य वा कष्टतरका हुवै । तथा तुम्हारै मते पूर्वे न थयुं ते थातो दीसै, तिको नहीं । जो अणथयुं थातो दीसै तो खर-विसाण पिण किम न दीसै ।

समय-समय प्रति ऊपनां परस्पर विलक्षण अति बहु स्थासकोसादिक कार्य कोटि नों दीर्घ क्रियाकाल जो दीसै तो इहां कुंभ नो किसूं कहिवूं ?

अन्य कार्य नां प्रारंभ नै विषे अन्य कार्य किम दीसै, जिम पट नां आरंभ नें विषे घट नीं परै । सिवक अनें स्थासकादिक कार्य विशेष घट सरूप न हुवै, ते भणी सिवकादि काल नें विषे घट किम दीसै ।

अंत समय नें विषेहीज घट प्रारंभ्यो तिणहिज समय नें विषे ए घट दीसै तिवारै कांइ दोष ? एतलै कांइ पिण दोष नथी । अनें जो संप्रति – वर्त्तमान काल नें विषे अणकीधो हुवै तो गत—अतीत काल नें विषे किम करयुं हुवै अनें अनागत काल नें विषे किम करिये इत्यादि बहु विस्तार ते विशेषावश्यक ग्रंथ थकी जाणवो ।

५८ *तिहां जे तेह श्रमण निर्ग्रंथ, जमाली अणगार नो वच सद्हंत ।
प्रतीते रुचे ते जमाली प्रतेह, अंगीकार करी विचरेह ।।

५९. तिहां जे तेह श्रमण निर्ग्रंथ, जमाली नां ए अर्थ नें नहीं सद्हंत ।
नहीं प्रतीते न रुचै लिगार,
ते जमाली अणगार नां कनां थी तिवार ।।

*दशकंधर राजा

आह च—
थेराण मयं नाकयमभावओ कीरए खपुप्फं व ।
अहव अकयंपि कीरइ कीरउ तो खरविसाणंपि ।।

निच्चकिरियाइदोसा नणु तुल्ला असइकट्ठतरया वा ।
पुव्वमभूयं च न ते दीसइ किं खरविसाणंपि ?

पइसमउप्पन्नाणं परोप्परविलक्खणाण सुबहूणं ।
दीहो किरियाकालो जइ दीसइ किं च कुंभस्स ।।
अन्नारंभे अन्नं किह दीसउ? जह घडो पडारंभे ।
सिवगादओ न कुंभो किह दीसउ सो तदद्धाए ?

अंते च्चिय आरद्धो जइ दीसइ तंमि चेव को दोसो ?
अकयं च संपइ गए किहु कीरउ किह व एसंमि ?[1]
इत्यादि बहु वक्तव्यं तच्च विशेषावश्यकादवगन्तव्य-मिति । (वृ० प०४८७, ४८८)

५८. तत्थ णं जे ते समणा निग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं सद्दहंति पत्तियंति रोयंति, ते णं जमालिं चेव अणगारं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति ।

५९. तत्थ णं जे ते समणा निग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोयंति, ते णं जमालिस्स अणगारस्स अंतियाओ

१. स्थविराणामयं पक्षः नाऽकृतं क्रियते कस्मात् अभावात् खपुष्पवत् अथवा कृतमपि क्रियते तदा खरविषाणमपि क्रियताम् ।

२. नच्चेत्यादि ननु इति निश्चये ये नित्यक्रियादयो दोषाः कृतकरणपक्षे त्वया भणितास्ते सत्करणपक्षेपि तुल्याः कष्टतरका वा भवंति । तथा तव मते पूर्वमभूतं भवद् दृश्यते तन्न यदि दृश्यते तदा खरविषाणमपि कथं न दृश्यते ।

३. पइसमेत्यादि प्रतिसमयोत्पन्नानां परस्परविलक्षणानां सुबह्वीनां स्थासकोशादीनां कार्यकोटीनां दीर्घः क्रिया-कालो यदि दृश्यते तदात्र कुंभस्य किमायातं न किम-पीति ।

४. अणारंभेत्यादि अन्यारंभेऽन्यत् कथं दृश्यतां यथा पटारंभे टवत् शिवकादयश्च कार्यविशेषा घटस्वरूपा न ततः तदद्धाए शिवकादिकाले स घटः कथं दृश्यता-मिति ।

५. अन्तेच्चियेत्यादि अन्त्यसमये एव घटः प्रारब्धः, तंमि—तत्रैव समये यदि दृश्यते घटे तदा को दोषः ? न को पीति । यदि च संप्रति वर्त्तमाकालेऽकृतं तदागतेऽतीते काले कथं क्रियतां कथं वा एष्यति काले चेति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६०. ते कोट्ठग बाग थकी निकलंत, पूर्वानुपूर्वी गमन करंत।
ग्रामानुग्राम विचरता सोय, जिहां चंपा नगरी अवलोय।।

६०. कोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुग्गामं दूइज्जमाणा जेणेव चंपा नयरी

६१. जिहां पूर्णभद्र चैत्य सुमीर, जिहां श्रमण भगवंत महावीर।
तिहां आवै आवी गुणगेह, श्रमण भगवंत महावीर प्रतेह।।

६१. जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं

६२. जीमणै पासा थी त्रिणवार, प्रदक्षिणा करता सुविचार।
वांदै स्तुति करत उदार, नमस्कार करै करीनैं तिवार।।

६२. तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता

६३. श्रमण भगवंत महावीर प्रतेह, अंगीकार करी विचरेह।
जमाली नैं छोड्यो खोटो जाण, प्रभु तणैं पगे लागा आण।।

६३. समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति।
(श० ९।२२९)

६४. तिवारैं ते जमाली अणगार, कदाचित् अन्य दिवस किणवार।
ते रोगांतक थकी विप्रमुक्त, हृष्ट थयुं गद रहित प्रयुक्त।।

६४. तए णं से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ ताओ रोगायंकाओ विप्पमुक्के हट्ठे जाए, अरोए

६५ तनु बलवंत थयुं जिह वार, सावत्थी नगरी थी अवधार।
कोट्ठग बाग थकी निकलेह, बाग थकी निकली नैं तेह।।

६५. बलियसरीरे सावत्थीओ नयरीओ कोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता

६६ पूर्वानुपूर्वी गमन करंत, ग्रामानुग्राम प्रतैं विचरंत।
जिहां चंपा नगरी अवधार, जिहां पूर्णभद्र चैत्य उदार।।

६६. पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए,

६७. श्रमण भगवंत महावीर छै जेथ, तिहां आवै आवी नैं तेथ।
श्रमण भगवंत महावीर नैं जास, नहिं अति दूर नैं निकट विमास।।

६७. जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते

६८. इम रहि श्रमण भगवंत प्रति ताय, महावीर नैं वदै इम वाय।
जिम देवानुप्रिया नां जाण, बहु शिष्य अंतेवासी पिछाण।।

६८. ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—जहा ण देवाणुप्पियाणं बहवे अंतेवासी

६९. श्रमण निर्ग्रंथ छद्मस्थ थका जेह, गुरुकुलवास थी नीकल्या तेह।
तिम छद्मस्थ थको हूं ताय, निश्चै गण थी निकल्यो नांय।।

६९. समणा निग्गंथा छउमत्थावक्कमणेणं अवक्कंता, नो खलु अहं तहा छउमत्थावक्कमणेणं अवक्कंते
'छउमत्थावक्कमणेणं' ति छद्मस्थानां सतामपक्रमणं—गुरुकुलान्निर्गमनं छद्मस्थापक्रमणं तेन

७०. हूं उत्पन्न नाण दंसण धार, केवलज्ञान दर्शन छतूं सार।
जिन अरिहंत रु केवली थाय, छते गण थी निकल्यूं ताय।।

७०. अहं णं उप्पन्ननाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेणं अवक्कंते।
(श० ९।२३०)

यतनी

७१. तब भगवंत गोतम जेह, जमाली अणगार प्रतेह।
इम बोलै वचन विचार, अहो जमाली! निश्चै तूं धार।।

७२. केवली रै दर्शण ज्ञान, गिरि थंभ थूभे करि जान।
थोड़ो सो नहीं आवरै ताय, तथा विशेष आवरियै नांय।।

७१,७२. तए णं भगवं गोयमे जमालिं अणगारं एवं वयासी—नो खलु जमाली! केवलिस्स नाणे वा दंसणे वा सेलंसि वा 'थंभंसि वा' थूभंसि वा आवरिज्जइ वा निवारिज्जइ वा
'आवरिज्जइ' त्ति ईषद्व्रियते 'निवारिज्जइ' त्ति नितरां वार्यते प्रनिहन्यत इत्यर्थः (वृ० प० ४८८)

७३. जो तुम्है जमाली धार, उत्पन्न ज्ञान दर्शण धरणहार।
जिन केवली अरिहंत थाय, केवल छते निकलियूं ताय।।

७३. जदि णं तुमं जमाली! उप्पन्ननाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेणं अवक्कंते

७४. तो ए दोय प्रश्न कहो म्हाली, शाश्वतो छै लोक जमाली!
कै लोक अशाश्वतो जाणी, ए प्रथम प्रश्न पहिछाणी।।

७४. तो णं इमाइं दो वागरणाइं वागरेहि—सासए लोए जमाली! असासए लोए जमाली?

७५. शाश्वतो छै जीव जमाली! कै जीव अशाश्वतो म्हाली।
ए द्वितीय प्रश्न नो जाब, तुम्है उत्तर देवो सताब।।

७५. सासए जीवे जमाली! असासए जीवे जमाली?
(श० ९।२३१)

७६. जमाली अणगार तिवार, भगवंत गोतम इम कह्यै सार।
संकित कांक्षित जेह, कलुषभाव सहित थयुं तेह।।

७६. तए णं से जमाली अणगारे भगवया गोयमेणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए जाव (सं० पा०) कलुससमावण्णे जाए यावि होत्था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७७. नहीं समर्थ गोतम प्रतेह, किंचत पिण उत्तर देवो जेह।
मौनपणें रहै तिहवार, हिव भाखै श्री जगतार।।
७८. अहो जमाली ! इम आमंत्रेह, श्रमण भगवंत महावीर जेह।
जमाली अणगार प्रतेह, इम भाखै प्रभु गुणगेह।।
७९. अहो जमाली ! म्हारा जाण, बहु अंतेवासी पिछाण।
श्रमण निर्ग्रंथ छद्मस्थ ताय, तिके समर्थ छै अधिकाय।।
८०. ए प्रश्न नां उत्तर देवा, जिम हूं कहूं तिम स्वयमेवा।
नहिं निश्चै एण प्रकार, भाषा बोलवा नें अवधार।।
८१. जिम तूं कहै हूं सर्वज्ञानी, तिम कही न सकै सुजानी।
इम कहि प्रभु उत्तर आखे, साक्षात देखै तिम दाखे।।

वा०—एतावता अम्हे जिम कहूं छूं प्रश्न नां उत्तर तिम प्रश्नोत्तर कहिवा नें ते मुनि समर्थ छै। पिण जिम तूं छद्मस्थ थको कहै छै हूं केवली छूं, एहवो वचन ते श्रमण निर्ग्रंथ कही सकै नहीं।

एम कही नें भगवान प्रश्नां नों उत्तर आखै—

७७. नो संचाएति भगवओ गोयमस्स किंचि वि पमोक्ख-
माइक्खित्तए तुसिणीए संचिट्ठइ। (श० ९।२३२)
७८. जमालीति समणे भगवं महावीरे जमालिं अणगारं
एवं वयासी—
७९. अत्थि णं जमाली ! ममं बहवे अंतेवासी समणा
निग्गंथा छउमत्था, जे णं पभू।
८०,८१. एयं वागरणं वागरित्तए, जहा णं अहं, नो चेव णं
एतप्पगारं भासं भासित्तए जहा णं तुमं

यतनी

८२. शाश्वतो छै लोक जमाली ! जे न कदापि न हुवो न्हाली।
अनादिपणां थी जाणी, कदे नहिं हुओ तिम नहिं ठाणी।।

८२. सासए लोए जमाली ! जं न कयाइ नासि,
'न कयाइ नासी' त्यादि तत्र न कदाचिन्नासीदना-
दित्वात् (वृ० प० ४८८)

८३ नहिं कदापि नहिं हुवै जेह, सदैव भाव थी एह।
नहिं कदापि नहिं लोग, अपर्यवसित भाव थी जोग।।

८३. न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—
न कदाचिन्न भवति सदैव भावात् न कदाचिन्न
भविष्यति अपर्यवसितत्वात् (वृ० प० ४८८)

८४. तो स्यूं ते भणी लोक ए जोय, हुवो हिवड़ां छै होस्यै ए सोय।
तिण सूं त्रिकाल भावीपणेह, ध्रुव अचल मेरु जिम एह।।

८४. भुविं च भवइ य, भविस्सइ य—धुवे
किं तर्हि ? 'भुविं चे' त्यादि ततश्चायं त्रिकालभा-
वित्वेनाचलत्वाद् ध्रुवो मेर्वादिवत् ध्रुवत्वादेव
(वृ० प० ४८८)

८५. णितिए कहितां नियताकार, तिको नियतपणां थी विचार।
शाश्वतो ते खिण-खिण प्रति जोय, अछता नां अभाव थी होय।।

८५. णितिए सासए
'नियतः नियताकारो नियतत्वादेव शाश्वतः प्रतिक्षण-
मप्यसत्त्वस्याभावात् शाश्वतत्त्वादेव (वृ० प० ४८८)

८६. अक्षय ते विनाश रहीत, अक्षयपणां थी संगीत।
अव्यय ते प्रदेश अपेक्षाय, अवस्थित द्रव्य आश्रयी ताय।।

८६. अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए
अक्षयः निर्विनाशः, अक्षयत्वादेवाव्ययः प्रदेशापेक्षया
अवस्थितो द्रव्यापेक्षया (वृ० प० ४८८)

८७. नित्य ते बिहुं नीं अपेक्षाय, द्रव्य प्रदेश आश्रयी ताय।
अथवा कह्या ए पद सात, एकार्थवाची अवदात।।

८७. निच्चे
नित्यस्तदुभयापेक्षया, एकार्था वैते शब्दाः
(वृ० प० ४८८)

८८. अशाश्वतो ए लोक जमाली, तेहनों न्याय कहूं सुविशाली।
जे अवसर्प्पिणी थई नें अद्धा, उत्सर्प्पिणी थाय प्रसिद्धा।।
८९. उत्सर्प्पिणी थई पश्चात, अवसर्प्पिणी हुई विख्यात।
कह्यूं लोक तणुं ए न्याय, हिव जीव नुं कहै जिनराय।।

८८. असासए लोए जमाली ! जं ओसप्पिणी भवित्ता
उस्सप्पिणी भवइ,
८९. उस्सप्पिणी भवित्ता ओसप्पिणी भवइ

* सुण रे जमाली ! प्रभूजी भाखै सुविशाली। (ध्रुपदं)

९०. जीव शाश्वतो छै रे जमाली ! जे न कदापि न हुआ निहाली।
यावत नित्य कहीजै ताय, ए द्रव्य जीव नुं अभिप्राय।।

९०. सासए जीवे जमाली ! जं न कयाइ नासि जाव
(सं० पा०) निच्चे।

*लय : दशकंधर राजा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९१. अशाश्वतो जीव छै रे जमाली, नारकि थई तिर्यंच ह्वै न्हाली।
तिर्यंच थइ मनुष्यपणुं पाय, मनुष्य थई देवता थाय॥

९२. तिण अवसर जमाली अणगार, श्रमण भगवंत महावीर सार।
एम सामान्य थी कहितां सोय, जाव एम परूपतां जोय॥
९३. एह अर्थ प्रति नहिं सद्देह, नहिं प्रतीते नहिं रोचवेह।
एह अर्थ प्रति अणसद्दहंतो, अणप्रतीततो अणरोचवंतो॥
९४- श्रमण भगवंत महावीर उदार, ज्यांरा समीप थी बीजी वार।
स्वयमेव पोतै नीकलै जेह, दूजी वार पोतै निकली तेह॥

९५. *बहु असत्य अर्थ नों माण, प्रकट करिवै करि पहिछाण।
मिथ्यात्व नां उदय थकी अवधार,
अभिनिवेश कदाग्रह करिनैं तिवार॥

९६. आतम फुन पर उभय प्रतेह, विरुद्धपणुं करतूं अधिकेह।
दुर्लभ बोधिपणुं कहिवाय, दग्ध बीज जिम करतो ताय॥

९७. बहु वर्ष चारित्र पर्याय, पालै पाली नैं ते ताय।
संलेखणा अर्ध मास नीं जोय, आतम दुर्बल करै करी सोय।
९८. तीस भक्त अणसण करि ताम, छेदै छेदी अवगुण-धाम।
ते स्थानक नैं अणआलोय, अणपडिकमिये जमाली जोय॥
९९. काल नैं समय करीनैं काल, लंतक कल्प त्रिषेज निहाल।
सागर तेर तणैं स्थितिकेह, उपनुं सुर किल्विषिकपणेह॥

१००. ते भगवंत गोतम तिहवार, जमाली अणगार नैं धार।
काल गयो जाणी नैं ताय, वीर प्रभु पे आवी चलाय॥

१०१. श्रमण भगवंत महावीर पै आय, वंदै स्तुति करत सवाय।
नमस्कार करै शीस नमाय, नमण करीनैं वदै इम वाय।
१०२. इम निश्चै देवानुप्रिया नों देख, अंतेवासी कुशिष्य विशेख।
जमाली अणगार नीहाल, काल नैं समय करीनैं काल॥

१०३. किहां गयो नैं ऊपनो केथ, गोतम प्रति आमंत्री तेथ।
श्रमण भगवंत महावीर सुहेम, भगवंत गोतम नैं भाखै एम।

१०४. इम निश्चै करि गोयम! जगीस, म्हारो अंतेवासी कुशीष।
जमाली नामैं अणगार, ते मुझ कहितां थका तिवार॥

---

*लय : मेरी खिण गई, लाखीणी रे मेरी खिण

९१. असासए जीवे जमाली! जण्णं नेरइए भवित्ता तिरिक्खजोणिए भवइ तिरिक्खजोणिए भवित्ता मणुस्से भवइ, मणुस्से भवित्ता देवे भवइ।
(श० ९।२३३)

९२. तए णं से जमाली अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स
९३. एतमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एतमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे
९४. दोच्चं पि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ आयाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता

९५. बहूहिं 'असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य 'असब्भावुब्भावणाहिं' ति असद्भावानां—वितथार्थानामुद्भावना—उत्प्रेक्षणानि असद्भावोद्भावनास्ताभिः 'मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य' त्ति मिथ्यात्वात्—मिथ्यादर्शनोदयाद् येऽभिनिवेशा—आग्रहास्ते तथा तैः
(वृ० प० ४८९)

९६. अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे 'वुग्गाहेमाणे' त्ति व्युद्ग्राहयन् विरुद्धग्रहवन्तं कुर्वन्नित्यर्थः 'वुप्पाएमाणे' त्ति व्युत्पादयन् दुर्विदग्धीकुर्वन्नित्यर्थः। (वृ० प० ४८९)

९७. बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसेत्ता
९८. तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते
९९. कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरससागरोवमठितीएसु देवकिव्विसिएसु देवेसु देवकिव्विसियत्ताए उववन्ने। (श० ९।२३४)

१००. तए णं भगवं गोयमे जमालिं अणगारं कालगयं जाणित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ,

१०१. उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—
१०२. एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्से जमाली नामं अणगारे से णं भंते! जमाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा
१०३. कहिं गए? कहिं उववन्ने?
गोयमादी! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—
१०४. एवं खलु गोयमा! ममं अंतेवासी कुसिस्से जमाली नामं अणगारे से णं तदा मम एवमाइक्खमाणस्स एवं भासमाणस्स एवं पण्णवेमाणस्स एवं परूवेमाणस्स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०५. एह अर्थ प्रति नहिं सद्दहै, नहीं प्रतीत करै न रुचेह।
अणसद्दहतो प्रतीततो नांय, अणरोचवतो थकोज ताय ।।
१०६. मुझ पासा थी बीजी वार, पोतै निकलै निकली तिवार।
बहु असत्य अर्थ नों माण, प्रगट करिवै करी अयाण ।।
१०७. तिमहिज यावत ऊपनों जेह, सुर किल्विषिकपणां नैं विषेह।
इम सुणनैं गोयम गणधार, प्रश्न करै प्रभु नैं तिहवार ।।

यतनी

१०८. हे भगवंत ! कितै प्रकार, कह्या सुर किल्विषिक विचार।
तब जिन भाखै अवदात, सुर किल्विषिक त्रिविध आख्यात ।।
१०९. जे जिम छै तिम हिव कहियै, त्रिण पल्योपम स्थितिका लहियै।
वली तीन सागर स्थितिकेरा, तेरै सागर स्थितिका हेरा ।।

दूहा

११०. तीन पल्योपम स्थितियुता, सुर किल्विषिक जेह।
किहां वसै भगवंत जी ? हिव जिन उत्तर देह।
१११. अमर ज्योतिषि ऊपरै, सौधर्म ईशाण हेठ।
तीन पल्योपम स्थितियुता, इहां वसै ते नेठ ।।

११२. त्रिण सागरोपम स्थितिका, जे किल्विषिका देव।
किहां वसै भगवंत जी ? प्रभु कहै सुण शिष्य ! भेव ।।
११३. सौधर्म ईशाण ऊपरै, तृतीय तुर्य कल्प हेठ।
त्रिण सागरोपम स्थितिका, इहां वसै ते नेठ ।।

११४. तेर सागर नीं स्थितिका, सुर किल्विषिका देव।
किहां वसै छै हे प्रभु ! जिन भाखै स्वयमेव ।।
११५. ब्रह्मलोक कल्प ऊपरै, लंतक कल्प नैं हेठ।
तेर सागर नीं स्थितियुता, इहां वसै ते नेठ ।।

यतनी

११६. सुर किल्विषिका भगवान, कुण कर्म हेतु करि जान।
सुर किल्विषिकाजपणेह, अवतार हुवै तसु जेह ?

११७. जिन भाखै ए प्रत्यक्ष जेह, प्रत्यनीक आचार्य नां तेह।
उपाध्याय तणां प्रत्यनीक, कुल नां प्रत्यनीक अलीक ।।
११८. गण नां प्रत्यनीक पिछाण, संघ नां प्रत्यनीक अजाण।
आचार्य उपाध्याय नां पेख, अयश नां करणहार विशेख ।।
११९. अवर्णवाद नां बोलणहार, वले अकीर्ति नां करणहार।
अयश अवर्ण अकीर्ति केरा, त्रिहुं पद नां अर्थ हिव हेरा ।।

सोरठा

१२०. सहु दिशिगामी हीज, यश कहियै छै तेहनैं।
तास निखेध थकीज, अयशकरा कहियै तसु ।।

१०५. एतमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एतमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे

१०६. दोच्चं पि ममं अंतियाओ आयाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता बहूहि असब्भावुब्भावणाहि

१०७. तं चेव जाव देव (सं० पा०) किब्विसियत्ताए उववन्ने। (श० ९।२३५)

१०८. कतिविहा णं भंते ! देवकिब्विसिया पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा देवकिब्विसिया पण्णत्ता

१०९. तं जहा—तिपलिओवमट्ठिइया, तिसागरोवमट्ठिइया, तेरससागरोवमट्ठिइया। (श० ९।२३६)

११०. कहि णं भंते ! तिपलिओवमट्ठिइया देवकिब्विसिया परिवसंति ?

१११. गोयमा ! उप्पिं जोइसियाणं, हिट्ठिं सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु, एत्थ णं तिपलिओवमट्ठिइया देवकिब्विसिया परिवसंति। (श० ९।२३७)

११२. कहि णं भंते ! तिसागरोवमट्ठिइया देवकिब्विसिया परिवसंति ?

११३. गोयमा ! उप्पिं सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं, हिट्ठिं सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु एत्थ णं तिसागरोवमट्ठिइया देवकिब्विसिया परिवसंति। (श० ९।२३८)

११४. कहि णं भंते ! तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिब्विसिया परिवसंति ?

११५. गोयमा ! उप्पिं बंभलोगस्स कप्पस्स, हिट्ठिं लंतए कप्पे एत्थ णं तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिब्विसिया देवा परिवसंति। (श० ९।२३९)

११६. देवकिब्विसिया णं भंते ! केसु कम्मादाणेसु देवकिब्विसियत्ताए उववत्तारो भवंति ?
'केसु कम्मादाणेसु' त्ति केषु कर्महेतुषु सत्स्वित्यर्थः (वृ० प० ४८९)

११७. गोयमा ! जे इमे जीवा आयरियपडिणीया, उवज्झायपडिणीया, कुलपडिणीया,

११८. गणपडिणीया, संघपडिणीया, आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारा

११९. अवण्णकारा अकित्तिकारा

१२०. 'अजसकारगे' त्यादौ सर्वदिग्गामिनी प्रसिद्धिर्यशस्तत्प्रतिषेधादयशः (वृ० प० ४८९)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२१. अवर्ण अप्रसिद्धि मात्र, तसु कारक अवर्णकरा।
इक दिशगामी विमात्र, अप्रसिद्धि अकीर्ति ह्वै।।

१२१. अवर्णस्त्वप्रसिद्धिमात्रम्, अकीर्त्तिः पुनरेकदिग्गामिन्यप्रसिद्धिरिति (वृ० प० ४८६,४६०)

१२२. *बहु असत्य अर्थ नों माण,
प्रगट करिवै करि पहिछाण।
मिथ्यात्व नां उदय थकी अवधार,
अभिनिवेश कदाग्रह करिनैं तिवार।।

१२२. बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य

१२३. आतम फुन पर उभय प्रतेह, विरुद्धपणुं करवूं अविवेकेह।
दुर्लभ बोधिपणुं कहिवाय, दग्ध बीज जिम करतो ताय।।

१२३. अप्पाणं परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा

१२४. बहु वर्ष चारित्र पर्याय, पालैं पाली नैं ते ताय।
ते स्थानक नैं अणआलोय, अणपडिकमियै पिण ते जोय।।

१२४. बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता

१२५. काल नैं समय करीनैं काल, यां त्रिहुं मांहिलो एक निहाल।
ते अन्यतर किल्विष सुर मांय, किल्विष सुरपणैं उपजै जाय।।

१२५. कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवकिब्बिसिएसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवंति

१२६. ते जिम छै तिम कहियै तेह, तीन पल्योपम स्थितिक विषेह।
अथवा त्रिण सागर स्थितिकेह, तथा तेर सागर स्थितिक विषेह।।

१२६. तं जहा—तिपलिओवमट्ठितिएसु वा, तिसागरोवमट्ठितिएसु वा तेरससागरोवमट्ठितिएसु वा। (श० ६।२४०)

१२७. सुर किल्विषिक हे भगवान ! ते सुरलोक थकी पहिछान।
आयु क्षय भव क्षय करि आम, स्थिति क्षय करिनैं ते सुर ताम।

१२७. देवकिब्बिसिया णं भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं, भवक्खएणं, ठितिक्खएणं

१२८. अंतर रहित चवी किहां जाय, किण स्थानक ते उपजै ताय ?
जिन कहै जाव चत्तारि पंच, नारक तिरि मनु सुर भव संच।।

१२८. अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति ?
गोयमा ! जाव चत्तारि पंच नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइं

१२९. संसार भ्रमण करीनैं जेह, तठा पछै सीझै बुझेह।
जावत अंत करै अवलोय, के किल्विषिका एहवा होय।।

१२९. संसारं अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झंति बुज्झंति जाव (सं० पा०) अंतं करेंति

१३०. कैयक आदि-रहित ते धार, अंत रहित पिण तेह विचार।
दीर्घ अद्धा चिहुं गति संसार-अटवी मांहे भमैं निराधार।।

१३०. अत्थेगतिया अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसार-कंतारं अणुपरियट्टंति। (श० ६।२४१)

१३१. हे प्रभुजी ! जमाली अणगार, अरस आहार नो कारक धार।
विरस आहार तणो करणहार, अंताहारि पंत-आहारि विचार।।

१३१. जमाली णं भंते ! अणगारे अरसाहारे विरसाहारे अंताहारे पंताहारे

१३२. लुक्ख आहारी तुच्छ आहारी जेह, अरस आहार करिनैं जीवेह।
यावत तुच्छ आहार करि जाण, जीविवा नुं तसु शील पिछाण।।

१३२. लूहाहारे तुच्छाहारे अरसजीवी जाव (सं०पा०) तुच्छजीवी

१३३. उपशांत अंतर्वृत्ति करेह, जीविवा नुं तसु शील सुलेह।
इमहिज प्रशांत-वृत्ति हुंत, णवरं बाहिर वृत्ति प्रशंत।।

१३३. उवसंतजीवी पसंतजीवी
'उवसंतजीवि' त्ति उपशान्तोऽन्तर्वृत्त्या जीवतीत्येवंशील उपशान्तजीवी एवं प्रशान्तजीवी नवरं प्रशान्तो बहिर्वृत्त्या (वृ० प० ४६०)

१३४. विवित्तजीवी ते स्त्रियादि रहीत,
सेज्या संथारा नों भोक्ता संगीत।
जिन कहै हंता गोयम ! धार,
अरस-आहारि जमाली अणगार।।

१३४. विवित्तजीवी ?
हंता गोयमा ! जमाली णं अणगारे अरसाहारे विरसाहारे
'विवित्तजीवि' त्ति इह विविक्तः स्त्र्यादिसंसक्तासनादिवर्जनत इति। (वृ० प० ४६०)

१३५. जाव विवक्तजीवी कहिवाय, वलि पूछै गोयम ऋषिराय।
जो प्रभुजी ! जमाली अणगार, अरस आहारी ते अवधार।।

१३५. जाव विवित्तजीवी। (श० ६।२४२)
जति णं भंते ! जमाली अणगारे अरसाहारे विरसाहारे

*लय : मेरी खिण गई, लाखीणी रे मेरी खिण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३६. जाव विविक्तजीवी सुविचार, तो किण कारण जमाली अणगार।
काल नैं समय करीनैं काल, लंतक कल्प विषे ते न्हाल॥
१३७. सागर तेर तणी स्थितिकेह, सुर किल्विषिका नैंज विषेह।
देवपणैं ते ऊपनों जाय? जिन कहै गोयम! सुण चित ल्याय॥
१३८. जमाली अणगार अलीक, आचार्य नुं ते प्रत्यनीक।
उपाध्याय नुं वलि ते जाण, प्रत्यनीक निंदक पहिछाण॥
१३९. आचार्य नै वलि उपाध्याय, तेहनुं अयशकारक अधिकाय।
अवर्णकारक जावत जोय, दग्ध बीज करतो अवलोय॥
१४०. बहु वर्ष चारित्र पर्याय, पाली अर्द्धमास नीं ताय।
संलेखणा करिनैं संवेद, तीस भक्त अणसण कर छेद॥
१४१. तेह स्थानक नैं अणआलोय, अणपड़िकमियैं छते फुन जोय।
काल नैं समय काल कर जन्न, लंतक कल्पे जाव उत्पन्न॥

१४२. हे प्रभुजी! जमाली देव, ते सुरलोक थकी स्वयमेव।
आउखो क्षय करिनैं ताम, जावत उपजस्यै किण ठाम?
१४३. तब जिन कहै चत्तारि पंच, तिरि मनु सुर भव ग्रहण सुसंच।
संसार भ्रमण करीनैं तेह, तिवार पछै सीभस्यै जेह॥

१४४. जावत करस्यै दुख नों अंत, सेवं भंते! सेवं भंत।
तहत्ति भगवंत! तहत्ति भगवंत! आप तणां वच सत्य उदंत॥

१४५. केइ जमाली नां भव पनर कहंत, केई कहै भव वीसज हुंत।
केयक सप्तबीस कहै ताय, निश्चै जाणै श्री जिनराय॥

सोरठा

१४६. अथ श्री महावीर भगवंत, जे सर्वज्ञपणां थकी।
सगलो ए वृत्तंत, जमाली नों जाणता॥
१४७. किम एहनैं अवधार, प्रव्रज्या दीधी प्रभु!
इह विध प्रश्न प्रकार, पूछये तसु उत्तर हिवैं॥
१४८. अवश्यंभावी होणहार, महानुभाव पिण मेटवा।
समर्थ नहीं लिगार, वा इहां गुण देखी प्रभु॥

१४९. अमूढ-लक्ष भगवान, निष्प्रयोजन क्रिया विषे।
प्रवर्त्तैं नहीं सुजान, वृत्तिकार इम आखियो॥
१५०. वली जमाली लार, थया पंच सय चरणधर।
फुन जिनेंद्र जगतार, भव घटता देखै सही॥
१५१. इत्यादिक अवधार, बहु गुण जाणीनैं प्रभु।
जमाली नैं सार, दीक्षा दीधी दीपती॥

१५२. *एह दोयसौ नैं चवदमीं ढाल, नवसौ तेतीसमों अंक निहाल।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसाद, 'जय-जश' संपति सुखअहलाद॥

नवमशते त्रयस्त्रिंशोद्देशकार्थः॥९।३३॥

१३६. जाव विवित्तजीवी कम्हा णं भंते! जमाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे
१३७. तेरससागरोवमट्ठितिएसु देवकिव्विसिएसु देवेसु देवकिव्विसियत्ताए उववन्ने?
१३८. गोयमा! जमाली णं अणगारे आयरियपडिणीए, उवज्झायपडिणीए
१३९. आयरियउवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए जाव (सं० पा०) वुप्पाएमाणे
१४०. बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता
१४१. तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे जाव (सं० पा०) उववन्ने।
(श० ९।२४३)
१४२. जमाली णं भंते! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव (सं० पा०) कहिं उववज्जिहिति?
१४३. गोयमा! चत्तारि पंच तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइं ससारं अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झिहिति
१४४. जाव (सं० पा०) अंतं काहिति। (श० ९।२४४)
सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।
(श० ९।२४५)

१४६. अथ भगवता श्रीमन्महावीरेण सर्वज्ञत्वादमुं तद्व्यतिकरं जानताऽपि (वृ० प० ४९०)
१४७. किमिति प्रव्राजितोऽसौ? इति, उच्यते। (वृ० प० ४९०)
१४८. अवश्यम्भाविभावानां महानुभावैरपि प्रायो लङ्घयितुमशक्यत्वाद् इत्थमेव वा गुणविशेषदर्शनाद्। (वृ० प० ४९०)
१४९. अमूढलक्षा हि भगवन्तोऽर्हन्तो न निष्प्रयोजनं क्रियासु प्रवर्त्तन्त इति (वृ० प० ४९०)

*लय : खिण गई रे, लाखीणी रे मेरी खिण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : २१५

दूहा

१. तेतीसम उद्देश में, आख्या गुरु प्रत्यनीक।
नाश तास निज गुण तणुं, दाख्यो जिन तहतीक ।।

२. चउतीसम उद्देश फुन, पुरिस नाश करि पेख।
तेह थकी अन्य जीव नां, कहियै नाश विशेख ।।

३. तिण काले नैं तिण समय, नगर राजगृह नाम।
यावत गोतम वीर प्रति, प्रश्न करै छै ताम ।।

*प्रश्न गोयम करै वीर प्रभु नैं ।। (ध्रुपदं)

४. पुरुष प्रभुजी ! पुरुष प्रतै जे, हणते छते इम भणियै रे लोय।
पुरुष प्रतै स्यूं तेह हणै छै, कै पुरुष थकी अन्य हणियै रे लोय ?

५. जिन कहै पुरुष प्रतै पिण मारै, नोपुरुष प्रतै पिण हणियै।
किण अर्थे प्रभु ! हणै बिहूं नैं, हिव जिन उत्तर भणियै ।।
[वीर प्रभु इम उत्तर देवै]

६. इम निश्चै हूं एक पुरुष प्रति हणूं, एहवी मन आणी।
एक पुरुष प्रति हणतो थको ते, हणै अनेकज प्राणी ।।

सोरठा

७. जीव अनेकज ख्यात, जूं कृमि गंडोलक प्रमुख।
तसु तनु आश्रित घात, तिण अर्थे बिहुं नैं हणै ।।

८. अथवा तेहनों रूद्र[1], पड़तो बहु जीवां प्रतै।
हणै तिको नर क्षुद्र, इम बहु जीवां नैं हणै ।।

९. अथवा शरीर तास, संकोचवै प्रसारवै।
अन्य बहु जीव विणास, तिण कारण बहुं नैं हणै ।।

१०. *पुरुष प्रभुजी अश्व प्रतै जे, हणतो थको इम भणियै।
अश्व प्रतै स्यूं तेह हणै छै, कै अश्व थकी अन्य हणियै ?

११. जिन कहै अश्व प्रतै पिण मारै, नोअश्व प्रतै पिण हणियै।
किण अर्थे प्रभु ! हणै बिहूं नैं ? हिव जिन उत्तर भणियै ।।

१२. इम निश्चै हूं एक अश्व प्रति हणूं एहवी मन आणी।
एक अश्व प्रति हणतो थको ते, हणै अनेकज प्राणी ।।

१३. तिण अर्थे करिनैं इम भाख्यो, अश्व नोअश्व हणंतो।
छुण्णइ पाठ किहां क्षण धातु, हिंसा अर्थे वर्त्ततो ।।

१४. इम गज सींह नैं बाघ हणैं ते, जाव चिल्ललग जाणी।
अटवी जीव विशेष कह्यु ए, पूर्व रीत पिछाणी ।।

---

१. अनन्तरोद्देशके गुरुप्रत्यनीकतया स्वगुणव्याघात उक्तं (वृ० प० ४९०)

२. चतुस्त्रिंशत्तमे तु पुरुषव्याघातेन तदन्यजीवव्याघात उच्यते (वृ० प० ४९०)

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव एवं वयासी—

४. पुरिसे णं भंते ! पुरिसं हणमाणे किं पुरिसं हणइ ? नोपुरिसे हणइ ?
'नोपुरिसं हणइ' त्ति पुरुषव्यतिरिक्तं जीवान्तरं हन्ति (वृ० प० ४९०)

५. गोयमा ! पुरिसं पि हणइ, नोपुरिसे वि हणइ। (श० ९।२४६)
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—पुरिसं पि हणइ, नोपुरिसे वि हणइ ?

६. गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं एगं पुरिसं हणामि से णं एगं पुरिसं हणमाणे 'अणेगे जीवे' हणइ। (श० ९।२४७)

७,८. 'अणेगे जीवे हणइ' त्ति 'अनेकान् जीवान् यूकाशतपदिकाकृमिगण्डोलकादीन् तदाश्रितान् तच्छरीरावष्टब्धांस्तद्रुधिरप्लावितादींश्च हन्ति (वृ० प० ४९०)

९. अथवा स्वकायस्याकुञ्चनप्रसरणादिनेति (वृ० प० ४९१)

१०. पुरिसे णं भंते ! आसं हणमाणे किं आसं हणइ ? नोआसे हणइ ?

११. गोयमा ! आसं पि हणइ नोआसे वि हणइ।
से केणट्ठेणं ?

१२,१३. अट्ठो तहेव।
'छणइ' त्ति क्वचित्पाठस्तत्रापि स एवार्थः, क्षणधातोहिंसार्थत्वात् (वृ० प० ४९१)

१४. एवं हत्थिं, सीहं वग्घं जाव चिल्ललगं। (श० ९।२४८)

---

*लय : देखो रे भोला चेतं नां

१. रुधिर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५. पुरुष प्रभू ! जे एकज त्रस प्रति, हणतो थको आख्यातो।
स्यूं एकज त्रस तेह हणैं छै, कै तेहथी अनेरा त्रस घातो ?

१६. जिन कहै इक त्रस पिण हणै छै, तेहथी अनेरा पिण हणियै।
किण अर्थे प्रभु ! हणैं बिहूं नैं, हिव जिन उत्तर भणियै ।।

१७. इम निश्चै हूं एकज त्रस प्रति, हणूं एहवी मन धारै।
ते जीव इक जे त्रस हणंतो, जीव अनेक संहारै ।।

१८. तिण अर्थे कह्यु इक त्रस हणतां, जीव अनेक हणीजै।
ए गज प्रमुख नां सर्व अलावा, एक सरीखा कहीजै[1] ।।

१९. पुरुष प्रभूजी ! ऋषि साधु प्रति, हणते छते इम भणियै।
स्यु ऋषि मुनि प्रति तेह हणैं छै, कै ऋषि थी अनेरा हणियै ।।

२०. जिन कहै ऋषि प्रतं तेह हणैं छै, ऋषि थी अन्य पिण हणियै।
किण अर्थे प्रभु ! हणैं बिहूं नैं, हिव जिन उत्तर भणियै ।।

२१. इम निश्चै हूं एक साधु प्रति, हणूं एहवो मन धारै।
एक साधु प्रति हणतो छतो ते, जीव अनंत संहारै ।।

सोरठा

२२. ते ऋषि कीधां काल, घातक अनंत नुं हुवै।
हुवै अविरती न्हाल, घातक अनंत नुं तिको ।।

२३. अथवा ऋषि बहु जीव, प्रतिबोधै ते अनुक्रमे।
शिव सुख लहै अतीव, सिद्ध अघातक अनन्त नां ।।

२४. ते ऋषि नों वध कीध, प्रतिबोधादि हुवै नहीं।
तिण अर्थेज प्रसीध, ऋषि हणिवै जिय अनंत वध ।।

२५. *तिण अर्थे करनैं इम कहियै, ऋषि प्रति पिण हणैं सोइ।
साधु बिना अन्य नों पिण घातक, एह निक्खेवो होइ ।।

२६. पुरुष प्रभु ! पुरुष प्रतै हणतो, स्यूं पुरुष वैर करि फर्शै।
अथवा पुरुष थकी जीव अनेरा, तास वैर आकर्षै?

२७. श्री जिन भाखै पुरुष हण्यां थी, निश्चै थी पहिछाणी।
पुरुष वध पापे करि फर्शै, ए धुर भंगो जाणी।

२८. अथवा एक पुरुष नैं हणतो,इक जीव अन्य हणीजै।
एक पुरुष इक नोपुरिस वध तसु, द्वितीय भंग इम लीजै ।।

१५. 'पुरिसे णं भंते ! अण्णयरं तसं पाणं हणमाणे किं अण्णयरं तसं पाणं हणइ, नोअण्णतरे तसे पाणे हणइ ?

१६. गोयमा ! अण्णयरं पि तसं पाणं हणइ, नोअण्णतरे वि तसे पाणे हणइ। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ

१७. गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ – एवं खलु अहं एग अण्णयरं तसं पाणं हणामि, से णं एगं अण्णयरं तसं पाणं हणमाणे अणेगे जीवे हणइ।

१८. से तेणट्ठेणं गोयमा ! तं चेव। एए सव्वे वि एक्कगमा।" (अं० सु० भाग २ पृ ४६३ टि ०४)
'एते सव्वे एक्कगमा' 'एते' हस्त्यादय, 'एकगमा:' सदृशाभिलापा: (वृ० प० ४६१)

१९. पुरिसे णं भंते ! इसिं हणमाणे किं इसिं हणइ ? नोइसिं हणइ ?

२०. गोयमा ! इसिं पि हणइ, नोइसिं पि हणइ। (श० ९।२४९)
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—इसिं पि हणइ नोइसिं पि हणइ ?

२१. गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं एगं इसिं हणामि, से णं एगं इसिं हणमाणे 'अणंते जीवे' हणइ।

२२. यतस्तद्घातेऽनन्तानां घातो भवति, मृतस्य तस्य विरतेरभावेनानन्तजीवघातकत्वभावात्
(वृ० प० ४६१)

२३. अथवा ऋषिर्जीवन् बहून् प्राणिनः प्रतिबोधयति, ते च प्रतिबुद्धाः क्रमेण मोक्षमासादयन्ति, मुक्ताश्चानन्तानामपि संसारिणामघातका भवन्ति (वृ० प० ४६१)

२४. तद्वधे चैतत्सर्वं न भवत्यतस्तद्वधेऽनन्तजीववधो भवतीति (वृ० प० ४६१)

२५. से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—इसिं पि हणइ, नोइसिं पि हणइ। (श० ९।२५०)

२६. पुरिसे णं भंते ! पुरिसं हणमाणे किं पुरिसवेरेणं पुट्ठे ? 'नोपुरिसवेरेणं पुट्ठे ?'

२७. गोयमा ! नियमं—ताव पुरिसवेरेणं पुट्ठे
पुरुषस्य हतत्वान्नियमात्पुरुषवधपापेन स्पृष्ट इत्येको भङ्ग (वृ० प० ४६१)

२८. अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेण य पुट्ठे
तत्र च यदि प्राण्यन्तरमपि हतं तदा पुरुषवैरेण नोपुरुषवैरेण चेति द्वितीयः। (वृ० प० ४६१)

*लय : देखो रे भोला चेत नां

१. पन्द्रह से अठारह गाथा के सामने जो पाठ उद्धृत किया गया है, वह कई आदर्शों में नहीं है। अंगसुत्ताणि में उसे पाठान्तर के रूप में स्वीकृत किया है। यहां पाठान्तर का पाठ उद्धृत किया गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९. अथवा एक पुरुष नैं हणतो, बहु जीव अन्य हणीजै।
एक पुरुष बहु नोपुरुष वध तसु, तृतीय भंग इम लीजै ।।

३०. एम तुरंगम यावत इमहिज, चिल्ललग वन जीवो।
त्रिण-त्रिण भांगा सहु नां करिवा, जिन वचनामृत पीवो ।।

३१. पुरुष प्रभु ! ऋषि प्रतै हणंतो, स्यूं साधु वैर करि फर्शै ।
अथवा ऋषि थकी जीव अनेरा, तास वैर करि दर्शै ?

३२. श्री जिन भाखै साधु हण्यां थी, निश्चै प्रथमज जोइ।
इक ऋषि नैं ऋषि बिन अन्य बहु नैं वैर फर्श्यो होइ ।।

सोरठा

३३. ऋषि पक्षे सुविचार, इक ऋषि ऋषि बिन अन्य बहु।
ए तीजो भंग धार, एकहीज होवै अछै ।।

३४. अनंत जीव ऋषिपाल, ते मुनि नैं हणियां थकां।
तेह मुनी करि काल, सुर ह्वै घाति अनंत नों ।।

३५. अनंत जीव नों जाण, वेरे फर्श्यो इह विधे।
सुर ह्वै संत सयाण, ते आश्री कह्युं धर्मसी ।।

३६. वृत्ति विषे इम वाय, जो जे मुनि मर सिद्ध हुस्यै।
ऋषि वधवे करि ताय, ऋषि नों वैरज प्रथम भंग ।।

३७. अथ फुन चरम शरीर, निरुपक्रम आयुष्क जे।
शिवगामी गुणहीर, तास हनन नहिं संभवै।

३८. धुर भंग ते किम होय, तिण सुं अचरम-तनु मुनि।
तास अपेक्षा जोय, तृतीय भंग ए संभवै ।।

३९. जेह थकी अवलोय, यद्यपि चरमशरीरिक।
निरुपक्रमज सोय, छै आयू जे मुनि तणों ।।

४०. तथापि तसु वध अर्थ, प्रवर्त्यो तिण कारणैं।
वध भावेज तदर्थ, धुर भंग संभव सत्य इम ।।

४१. फुन जे ऋषि नुं जोय, सोपक्रम आयुष थकी।
पुरुष कृत वध होय, ते ऋषि आश्री सूत्र ए ।।

४२. ते ऋषि नों संहार, मुख्यवृत्ति स्यूं पुरुषकृत।
होवै छै अवधार, वृत्तिकार इह विध कह्युं ।।

४३. *नवम शतक चउतीसम देशज, बेसौ पनरमीं ढालो।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय, प्रसादे, 'जय-जश' मंगलमालो ।।

२९. अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेहि य
यदि तु बहवः प्राणिनो हतास्तत्र तदा पुरुषवैरेण नोपुरुषवैरैश्चेति तृतीयः (वृ० प० ४६१)

३०. एवं आसं जाव चिल्ललगं। (श० ९/२५१)
एवं सर्वत्र त्रयम् (वृ० प० ४६१)

३१. पुरिसे णं भंते ! इसिं हणमाणे किं इसिवेरेणं पुट्ठे ? नोइसिवेरेणं पुट्ठे ?

३२. गोयमा ! नियमं इसिवेरेण य नोइसिवेरेहि य पुट्ठे। (श० ९/२५२)

३३. ऋषिपक्षे तु ऋषिवैरेण नोऋषिवैरैश्चेत्येवमेक एव (वृ० प० ४६१)

३४. ननु यो मृतो मोक्षं यास्यत्यविरतो न भविष्यति तस्यर्षेर्वधे ऋषिवैरमेव भवत्यतः प्रथमविकल्पसम्भवः (वृ० प० ४६१)

३७,३८. अथ चरमशरीरस्य निरुपक्रमायुष्कत्वान्न हनन-सम्भवस्ततोऽचरमशरीरापेक्षया यथोक्तभङ्गकसम्भवः (वृ० प० ४६१)

३९. यतो यद्यपि चरमशरीरो निरुपक्रमायुष्कः (वृ० प० ४६१)

४०. तथाऽपि तद्वधाय प्रवृत्तस्य यमुनराजस्येव वैरमस्त्येवेति प्रथमभङ्गकसम्भव इति सत्यं (वृ० प० ४६१)

४१. किन्तु यस्य ऋषेः सोपक्रमायुष्कत्वात् पुरुषकृतो वधो भवति तमाश्रित्येदं सूत्रं प्रवृत्तं (वृ० प० ४६१)

४२. तस्यैव हननस्य मुख्यवृत्त्या पुरुषकृतत्वादिति (वृ० प० ४६१)

*लय : देखो रे भोला चेतै नां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : २१६

सोरठा

१. पूर्वे वध आख्यात, उश्वासादि वियोग ते।
तिण सूं हिव अवदात, उस्वासादिक नों कहूं।।

*प्रभु वच प्यारा जी,
हे देव जिनेन्द्र दयाल विश्व उजारा जी ।। (ध्रुपदं)

२. पृथ्वीकाय प्रभु! पृथ्वीकाय प्रति, आणपाण ते लेवै।
उस्वास नैं निःस्वास लेवै छै? जिन कहै हंता वेवै।।

सोरठा

३. इहां व्याख्या पूज्य कथित, जिण प्रकार कर वणस्सई।
अन्य ऊपर अन्य स्थित, तेज खांचलै तेहनों।।
४. पृथ्वी प्रमुख एम, अन्योऽन्य संवद्ध थी।
पृथ्वी प्रतैज तेम, करै उस्सासादिक तिको।।
५. तिहां इक पृथ्वी काय, स्व संवद्ध अन्य पृथ्वी प्रति।
करै उस्सासज ताय, तिण ऊपर दृष्टांत ए।।
६. पुरुष उदर घनसार, तेह कपूर स्वभाव प्रति।
करै उस्सास तिवार, इम अपकायिक प्रमुख पिण।।

७. *पृथ्वीकाय प्रभु आउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै?
उस्वास नैं निःस्वास लेवै छै? जिन कहै हंता वेवै।।

८. पृथ्वीकाय प्रभु! तेउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै?
उस्वास नैं निःस्वास लेवै छै, जिन कहै हंता वेवै।।
९. पृथ्वीकाय प्रभु! वाउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै?
उस्वास नैं निःस्वास लेवै छै, जिन कहै हंता वेवै।।
१०. पृथ्वीकाय प्रभु! वनस्पति प्रति, आणपाण ते लेवै?
उस्वास नैं निःस्वास लेवै छै? जिन कहै हंता वेवै।।
११. आउकाय प्रभु! पृथ्वीकाय प्रति, आणपाण ते लेवै?
उस्वास नैं निःस्वास लेवै छै? जिन कहै हंता वेवै।।

१२. आउकाय प्रभु! आउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै?
उस्वास नैं निःस्वास लेवै छै? जिन कहै हंता वेवै।।
१३. आउकाय प्रभु! तेउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै?
उस्वास नैं निःस्वास लेवै छै? जिन कहै हंता वेवै।।
१४. आउकाय प्रभु! वाउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै?
उस्वास नैं निःस्वास लेवै छै? जिन कहै हंता वेवै।।

---

१. प्राग् हननमुक्तं, हननं] चोच्छ्वासादिवियोगोऽत उच्छ्वासादिवक्तव्यतामाह— (वृ० प० ४६१)

२. पुढविक्काइए णं भंते! पुढविक्कायं चेव आणमइ वा? पाणमइ वा? ऊससइ वा? नीससइ वा?
हंता गोयमा! .... (श० ६/२५३)

३. इह पूज्यव्याख्या यथा वनस्पतिरन्यस्योपर्यन्यः स्थितस्तत्तेजोग्रहणं करोति। (वृ० प० ४६२)
४. एवं पृथिवीकायिकादयोऽप्यन्योऽन्यसंबद्धत्वात्तद्रूपं प्राणापानादि कुर्वन्तीति (वृ० प० ४६२)
५. तत्रैकः पृथिवीकायिकोऽन्यं स्वसंबद्धं पृथिवीकायिकम् अनिति—तद्रूपमुच्छ्वासं करोति (वृ० प० ४६२)
६. यथोदरस्थितकर्पूरः पुरुषः कर्पूरस्वभावमुच्छ्वासं करोति, एवमप्कायादिकानिति (वृ० प० ४६२)
७. पुढविक्काइए णं भंते! आउक्काइयं आणमइ वा जाव नीससइ वा?
हंता गोयमा! पुढविक्काइए णं आउक्काइयं आणमइ वा जाव नीससइ वा।
८-१०. एवं तेउक्काइयं, वाउक्काइयं, एवं वणस्सइकाइयं (श० ६/२५४)

११. आउक्काइए णं भंते! पुढविक्काइय आणमइ वा जाव नीससइ वा
हंता गोयमा! .... (श० ६/२५५)
१२-१५. आउक्काइए णं भंते! आउक्काइय चेव आणमइ वा? एवं चेव। एवं तेउ-वाउ-वणस्सइकाइयं। (श० ६।२५६)

*लय : साधू बोलोजी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५. आउकाय प्रभु ! वनस्पति प्रति, आणपाण ते लेवै ?
उस्वास नें निःश्वास लेवै छै ? जिन कहै हंता वेवै ।।
१६. तेउकाय प्रभु ! पृथ्वीकाय प्रति आणपाण ते लेवै ?
उस्त्रास नें निःस्त्रास लेवै छै ? जिन कहै हंता वेवै ।।
१७. तेउकाय प्रभु ! आउकाय पति, आणपाण ते लेवै ?
उस्वास नें निःस्वास लेवै छै ? जिन कहै हंता वेवै ।।
१८. तेउकाउ प्रभु ! तेउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ?
उस्वास नें निःस्वास लेवै छै ? जिन कहै हंता वेवै ।।
१९. तेउकाय प्रभु ! वाउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ?
उस्वास नें निःश्वास लेवै छै ? जिन कहै हंता वेवै ।।
२०. तेउकाय प्रभु वनस्पति प्रति, आणपाण ते लेवै ?
उस्वास नें निःस्वास लेवै छै ? जिन कहै हंता वेवै ।।
२१ वाउकाय प्रभु ! पृथ्वीकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ?
उस्वास नें निःस्वास लेवै छै ? जिन कहै हंता वेवै ।।
२२. वाउकाय प्रभु ! आउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ?
उस्त्रास नें निःस्वास लेवै छै ? जिन कहै हंता वेवै ।।
२३. वाउकाय प्रभु ! तेउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ?
उस्वास नें निःस्वास लेवै छै ? जिन कहै हंता वेवै ।।
२४. वाउकाय प्रभु ! वाउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ?
उस्वास नें निःस्वास लेवै छै ? जिन कहै हंता वेवै ।।
२५. वाउकाय प्रभु ! वनस्पति प्रति, आणपाण ते लेवै ?
उस्वास नें निःस्वास लेवै छै ? जिन कहै हंता वेवै ।।
२६. वनस्पति प्रभु ! पृथ्वीकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ?
उस्वास नें निःस्वास लेवै छै ? जिन कहै हंता वेवै ।।
२७. वनस्पति प्रभु ! आउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ?
उस्वास नें निःस्वास लेवै छै ? जिन कहै हंता वेवै ।।
२८. वनस्पति प्रभु ! तेउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ?
उस्वास नें निःस्वास लेवै छै ? जिन कहै हंता वेवै ।।
२९. वनस्पति प्रभु ! वाउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ?
उस्वास नें निःस्वास लेवै छै ? जिन कहै हंता वेवै ।।
३०. वनस्पति प्रभु ! वनस्पति नों, आणपाण ते लेवै ?
उस्सास नें निःस्वास लेवै छै ? जिन कहै हंता वेवै ।।

१६-३०. तेउक्काइए णं भंते ! पुढविक्काइयं आणमइ वा ? एवं जाव वणस्सइकाइए णं भंते ! वणस्सइकाइयं चेव आणमइ वा ? तहेव । (श० ६।२५७)

सोरठा

३१. कह्या सूत्र पणवीस, क्रिया सूत्र पिण हिव कहूं ।
ते पणवीस जगीस, चित्त लगाई सांभलो ।।

३१. पञ्चविंशतिः सूत्राण्येतानीति । क्रियासूत्राण्यपि पञ्चविंशतिः । (वृ० प० ४६२)

३२. *पृथ्वीकाय प्रभु ! पृथ्वीकाय प्रति, भ्यंतर ते आणपाण ।
वाह्य उस्वास-निस्सास लेवंतां, किती क्रिया तसु जाण ?

३२. पुढविक्काइए णं भंते ! पुढविक्काइयं चेव आणममाणे वा, पाणममाणे वा ऊससमाणे वा नीससमाणे वा कतिकिरिए ?

३३ श्री जिन भाखै कदाचि क्रिया त्रिण, कदा चिउं क्रियावंत ।
कदाचित पंच क्रियावंत ह्वै, हिव तसु न्याय कथंत ।।

३३. गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए । (श० ६/२५८)

*लय : साधू बोलोजी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरठा

३४. पृथ्वीकाय जिवार, उस्वास पृथ्वी नों लियै।
न करै पीड़ तिवार, तसु काइयादिक त्रिण क्रिया।।

३५. यदा पीड़ उपजाय, तदा क्रिया तसु च्यार ह्वै।
जीव घात जो थाय, पंच क्रिया तेहने हुवै।।

३६. *पृथ्वी प्रभु! अपकाय प्रतै जे, आणपाण लेवंत।
एवं चेव इमज यावत ही, वनस्पति प्रति हुंत।।

३७. इम अप पिण मही अप तेउ प्रति, वाउ वनस्पति नों जाणी।
आणपाणादि ले तो तसु किरिया, त्रिण चउ पंच पिछाणी।।

३८. तेउकाय इम पृथ्वी अप तेउ प्रति, वाउ वनस्पति नों जोय।
आणपाणादि ले तो तसु क्रिया, त्रिण चउ पंचज होय।।

३९ वाउकाय इम पृथ्वी अप तेउ प्रति, वाउ वनस्पति नुं धारं।
आणपाणादि ले तो तसु किरिया, त्रिण चउ पंच विचारं।।

४०. वनस्पति इम पृथ्वी अप तेउ प्रति, वाउ वनस्पति नों शरीर।
आणपाणादि ले तो तसु किरिया, त्रिण चउ पंच समीर।।

सोरठा

४१. कह्या सूत्र पणवीस, अन्योन्ये उश्वास नां।
वली कह्या सुजगीस, पंचवीस क्रिया तणां।।

वा०—अथ इहां कह्यो—पृथ्वीकाय पृथ्वीकाय नो उश्वास लेवै यावत वनस्पति वनस्पति नो उश्वास लेवै अनै तेहथी तेहनै तीन, च्यार, पांच क्रिया लागै। इहां पांच थावर नां मूकेलगा वायु रूप छै, तेहनो उश्वासादिक लेवै इम सम्भव छै। भगवती शतक २।३ में कह्यो—चउवीस दंडक नां जीव उश्वास निश्वास लेवै द्रव्य थकी तो अनंतप्रदेशिक खंध नों, क्षेत्र थकी असंख्यात प्रदेशावगाढ नों, काल थकी अन्यतरथितिया नों, भाव थकी वर्णमंतादिक नों अनै तेहथी आगला पाठ नीं टीका में कह्यो—उश्वास नां पुद्गल वायु रूप छै अनै वायु पिण ते अचित्त छै।

४२. [1]तेहथी इहां प्रतिपत्ति, पृथ्वीकाय पृथ्वी उदक।
तेउ वाउ वनस्पत्ति, उश्वासादिकपणैं लियै।।

४३. इमज वनस्पति जाव, पृथ्वी अप तेउ वाउ तणों।
वनस्पति तणों सुभाव, उश्वासादि लिये सदा।।

४४. ए पंच थावर नां जाण, मूकेलगा पुद्गल सहु।
वायु रूप पिछाण, तेहनो उश्वासादि लहै।।

४५. हिव आशंका वलि थाय, मूकेलगा पुद्गल तणो।
उश्वासादि लिराय, तो क्रिया तीन चिहुं पंच किम।।

३४. यदा पृथिवीकायिकादिः पृथिवीकायिकादिरूपमुच्छ्वासं कुर्वन्नपि न तस्य पीडामुत्पादयति स्वभावविशेषात्त-दाऽसौ कायिक्यादित्रिक्रियः स्यात्। (वृ० प० ४९२)

३५. यदा तु तस्य पीडामुत्पादयति तदा पारितापनिकी-क्रियाभावाच्चतुष्क्रियः प्राणातिपातसद्भावे तु पञ्च-क्रिय इति। (वृ० प० ४९२)

३६. पुढविक्काइए णं भंते! आउक्काइयं आणममाणे वा?
एवं चेव! एवं जाव वणस्सइकाइयं।

३७. एवं आउक्काएण वि सव्वे भाणियव्वा।

३८,३९. एवं तेउक्काइएण वि, एवं वाउक्काइएण वि जाव— (श० ९/२५९)

४०. वणस्सइकाइए णं भंते! वणस्सइकाइयं चेव आणम-माणे वा—पुच्छा? गोयमा! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए। (श० ९/२६०)

---

*लय: साधू बोलो जी

१. भगवई १७/१५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४६. तेहनो उत्तर एम, शतक भगवती सतरमैं[1]।
प्रथम उदेशे तेम, कहियो छै ते सांभलो ।।
४७. मन वचन रा जोग, निपजावतां क्रिया किती ?
त्रिहुं चिहुं पंच सुयोग, निमल चित्त आलोचियै ।।
४८. मन वचन रा जाण, पुद्गल चउफर्शी कह्या।
भगवती बारम[1] माण, पंचमुद्देशे पाठ ए।।
४९. चउफर्शी थी जाण, जीव-घात किम संभवे ?
जीव-घात विण ताण, पंच क्रिया किम ह्वै तदा ।।
५०. मन अरु वचन प्रयोग, निपजावै तिण अवसरे।
वर्त्तै अशुभज जोग, तिणसूं पंच क्रिया कही[2] ।।
५१. तिमहिज श्वासोश्वास, वायु नो लेता थकां।
अशुभ योग सुविमास, तिणसूं तसु क्रिया कही ।।" [ज० स०]

वा०—इहाँ कह्यो पांच थावर नां मूकेलगा वायु रूप छै, ते उश्वासपणें लेतां अथवा लियां पछै अशुभ कार्य में प्रवर्त्तै। तेहथी क्रिया लागै अनैं क्रिया लागवा रा अन्य पिण कारण घणां छै ते शास्त्र थी जाणवा।

५२. कह्यो क्रिया अधिकार, हिवै तेहिज क्रिया तणो।
कहियै छै विस्तार, चित्त लगाई सांभलो ।।

५२. क्रियाधिकारादेवेदमाह— (वृ० प० ४६२)

५३. *वाउकाय प्रभु ! वृक्ष तणां जे, मूल प्रति हलावंतो।
अथवा मूल प्रतै पाडंतो, तेह किती क्रियावंतो ?

५३. वाउक्काइए णं भंते ! रुक्खस्स मूलं 'पचालेमाणे वा' पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ?

५४. श्री जिन भाखै कदाचि क्रिया त्रिण,
कदा च्यार पंच किरिया।
न्याय तास पूर्ववत कहियै, पवर बुद्धे उच्चरिया ।।

५४. गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए।

सोरठा

५५. नदी भितादिक मांय, तरू-मूल होवै तदा।
पृथ्वी में न टिकाय, कंपावै पाड़ै पवन ।।

५६. पाड़ंतो तरु मूल, तीन क्रिया किम तेहनैं।
परितापादिक स्थूल, ते वायू नैं संभवै ।।

५५,५६. इह च वायुना वृक्षमूलस्य प्रचलनं प्रपातनं वा तदा संभवति यथा नदीभित्त्यादिषु पृथिव्या अनावृतं तरस्यादिति। अथ कथं प्रपातेन त्रिक्रियत्वं परितापादेः सम्भवात् ?
(वृ० प० ४६२)

५७. उत्तर कहियै जास, सूक गई जड़ तरु तणी।
मूल अचेतन तास, तेह अपेक्षा इम वृत्तौ ।।

५७. उच्यते, अचेतनमूलापेक्षयेति। (वृ० प० ४६२)

५८. *एवं तरु नों कंद चालवतो, इम जाव बीज चालंत।
त्रिण चउ पंच क्रिया पूर्ववत, सेव भंते ! सेवं भंत ।।

५८. एवं कंदं एवं जाव—
बीयं पचालेमाणे वा—पुच्छा ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए।
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति। (श० ९/२६१-२६३)

५९. नवम शतक चउतीसमुदेशक, बे सौ सोलमीं ढाल।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' हरष विशाल ।।

नवमशते चतुस्त्रिंशोद्देशकार्थः ।।९।३४।।

लय : साधू बोलो जी

१. भगवई १२।११७

२. मन से मंत्र पढ़कर, वचन से मंत्र का जाप कर हिंसा करे, उससे पांच क्रिया लगती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गीतकछंद

१. मम मन गगन तल नें प्रचारी पार्श्व तरणी तेज थी।
अति क्रूर मोह तम दूर कर भरपूर हर्षित ह्वेज थी॥
२. वर रीति नवमा शतक नीं कर जोड़ रचना मनरली।
गुरुदेव नें प्रसाद करि मुझ प्रवर ही आशा फली।

१,२. अस्मन्मनोव्योमतलप्रचारिणा;
श्रीपार्श्वसूर्यस्य विसर्प्पितेजसा।
दुर्धृष्यसंमोहतमोऽपसारणाद्
विभक्तमेवं नवमं शतं मया॥
(वृ० प० ४६२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दशम शतक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दशम शतक

ढाल : २१७

दूहा

१. व्याख्यातं नवमं शतं, अथ दशमं कहिवाय।
पुनः तास संबंध ए, निसुणो चित्त लगाय।।

२. शतक अनंतर आखिया, जीवादिक नां अर्थ।
प्रकारांतरे करि हिवै, कहियै तेह तदर्थ।।

३. उद्देशक चउतीस तसु, दिशि आश्रित धुर देख।
संवुडा अणगार नों, द्वितीय उद्देशक लेख।।

४. आतम ऋद्धि करि सुर सुरी, सुर वासंतर सोय।
उल्लंघियै इत्यादि जे, तृतीय उद्देशे होय।।

५. श्याम हस्ति महावीर शिष्य, प्रश्न तुर्य उद्देश।
पंचम चमरादिक तणी, अग्रमहेषि विशेष।।

६. सुधर्म सभा तणुं छठुं, उत्तर दिशि अठवीस।
अंतरद्वीप उद्देशका, दशम शते चउतीस।।

१. व्याख्यातं नवमं शतम् अथ दशमं व्याख्यायते, अस्य चायमभिसम्बन्धः (वृ० प० ४६२)

२. अनन्तरशते जीवादयोऽर्थाः प्रतिपादिताः इहापि त एव प्रकारान्तरेण प्रतिपाद्यन्ते (वृ० प० ४६२)

३-६. १ दिस २ संवुडअणगारे
३ आइड्ढी ४ सामहत्थि ५ देवि ६ सभा।
७ उत्तरअंतरदीवा दसमम्मि सयम्मि चउत्तीसा।।
(श० १० संगहणी-गाहा)

'दिसे' त्यादि, 'दिस' त्ति दिशमाश्रित्य प्रथम उद्देशकः। 'संवुडअणगारे' त्ति संवृतानगारविषयो द्वितीयः। 'आइड्ढि' त्ति आत्मद्धर्या देवो देवी वा वासान्तराणि व्यतिक्रामेदित्याद्यर्थाभिधायकस्तृतीयः। 'सामहत्थि' त्ति श्यामहस्त्यभिधानश्रीमन्महावीरशिष्यप्रश्नप्रतिबद्धश्चतुर्थः। 'देवि' त्ति चमराद्यग्रमहिषीप्ररूपणार्थः पञ्चमः। 'सभ' त्ति सुधर्मसभाप्रतिपादनार्थः षष्ठः। 'उत्तर अंतरदीवि' त्ति उत्तरस्यां दिशि येऽन्तरद्वीपास्तत्प्रतिपादनार्था अष्टाविंशतिरुद्देशकाः, एवं चादितो दशमे शते चतुस्त्रिंशदुद्देशका भवन्तीति। (वृ० प० ४६२)

७. नगर राजगृह नें विषे, यावत गोतम स्वाम।
प्रश्न करै प्रभुजी प्रतै, कर जोड़ी शिर नाम।।

७. रायगिहे जाव एवं वयासी—

*स्वाम थांरा वचनामृत सुखकारी।
वारी हो नाथ ! आप शिवमग नां नेतारी।। (ध्रुपदं)

८. पूरब दिशि ए स्यूं प्रभु ! कहियै ? जिन कहै धर अहलादो।
जीव एकेंद्रियादिक कहियै, अजीव धर्मास्ति आदो रा।।

८. किमियं भंते ! 'पाईणा ति' पवुच्चइ ?
गोयमा ! जीवा चेव अजीवा चेव। (श० १०।१)
तत्र जीवा—एकेन्द्रियादयः अजीवास्तु— धर्मास्तिकायादिदेशादयः। (वृ० प० ४६३)

९. इमहिज पश्चिम दिशि पिण कहियै, दक्षिण उत्तर इम लहियै।
एवं ऊर्द्ध दिशि एवं अधो दिशि, जीव अजीव नें कहियै रा।।

९. किमियं भंते ! पडीणा ति पवुच्चइ ?
गोयमा ! एवं चेव। एवं दाहिणा, एवं उदीणा, एवं उड्ढा एवं अहो वि। (श० १०।२)

१०. केतली भगवंत ! दिशा परूपी ? जिन कहै दश दिशि भाखी।
पूर्व दिशि पूर्व दक्षिण बिच, अग्निकूण में दाखी रा।।
(हो प्रभुजी ! धिन-धिन आपरो ज्ञान।
संशयतिमिर हरण वर केवल जाणक ऊग्यो भान।।)

१०. कति णं भंते ! दिसाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! दस दिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
पुरत्थिमा, पुरत्थिमदाहिणा

---

*लय : झिरमिर-झिरमिर मेहा बरसे, आंगण होय गयो आलो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. दक्षिण दिशि दक्षिण पश्चिम विच, नैर्ऋत कूण निहारी।
पश्चिम दिशि पश्चिम उत्तर विच, वायव्य कूण विचारी रा ।।
१२. उत्तर दिशि उत्तर पूरव बिच, कहियै कूण ईशानं।
ऊर्द्ध ऊंची दिशि अधो नीची दिशि, ए दश दिशि पहिछानं रा ।।
१३. ए दश दिशि नां नाम किता प्रभु ! जिन भाखै दश नाम ।।
इंद्र देवता जेहनैं अछै ते, इंद्रा पूर्व छै ताम रा ।।

१४. अग्नि देवता जेहनैं अछै ते, आग्नेयी ए कूण।
यम देवता जेहनैं अछै ते, यमा दक्षिण दिशि ऊण रा ।।

१५. निर्ऋति देवता जेहनैं अछै ते, नेर्ऋत कूण कहाई।
वरुण देवता जेहनैं अछै ते, वारुणी पश्चिम थाई रा ।।

१६. वायु देवता जेहनैं अछै ते, वायव्य कूण विशेखी।
सोम्य देवता जेहनैं अछै ते, सोम्या उत्तर संपेखी रा ।।

१७. ईशान देवता जेहनैं अछै ते, कहियै कूण ऐशानी।
विमलपणैं करि विमल ऊर्द्ध दिशि, तमा अधो दिशि जानी रा ।।

सोरठा

१८. सकट ओधि आकार, पूर्वादिक चिहुं दिशि हुवै।
धुर विहुं प्रदेश धार, क्रम वृद्धि असंख अनन्त लग ।।
१९. विदिशि चिऊं सुविचार, आखी एक प्रदेश नीं।
मुक्तावलि आकार, तेहनी वृद्धि हुवै नहीं ।।
२०. ऊर्द्ध अधो दिशि दोय, रुचक प्रदेशाकार है।
समय वचन करि जोय, च्यार-च्यार प्रदेश नीं ।।

२१. *इंदा पूर्व दिशि स्यूं प्रभुजी ! जीवां तणां खंध कहियै।
कै जीव तणां जे देश कहीजै, कै, जीव-प्रदेशा लहियै ?
२२. अथवा अजीव कै देश अजीव नां, अजीव-प्रदेश कहेसा।
जिन कहै जीवा पिण छै तिमहिज, जाव अजीव-प्रदेशा ।।

२३. जे जीवा ते निश्चै एगिंदिया, जाव पंचेंद्रिया जाणी।
अणिंदिया ते केवलज्ञानी, पूरव दिशि पहिछाणी ।।

२४. जीव तणां जे देश हुवै ते, नियमा एगेंदिय-देसा।
जाव अणिंदिया केवलज्ञानी, तसु बहु देश कहेसा ।।
२५. जे जीव-प्रदेशा ते नियमा एगेंदिय तणां प्रदेश कहेसा।
बेइंदिया नां प्रदेश घणां छै, जाव अणिंदिया नां प्रदेशा ।।

११. दाहिणा दाहिणपच्चत्थिमा पच्चत्थिमा पच्चत्थिमुत्तरा

१२. उत्तरा उत्तरपुरत्थिमा उड्ढा अहो। (श० १०।३)

१३. एयासि णं भंते ! दसण्हं दिसाणं कति नामधेज्जा पण्णत्ता ? गोयमा ! दस नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—इंदा
'इंदे' त्यादि, इन्द्रो देवता यस्याः सैन्द्री
(वृ० प० ४९३)

१४. अग्गेयी जम्मा य
'अग्निर्देवता यस्याः साऽग्नेयी, एवं यमो देवता याम्या (वृ० प० ४९३)

१५. नेरई वारुणी य
निर्ऋतिर्देवता नैर्ऋती वरुणो देवता वारुणी
(वृ० प० ४९३)

१६. वायव्वा सोमा
वायुर्देवता वायव्वा सोमदेवता सौम्या
(वृ० प० ४९३)

१७. ईसाणी य, विमला य तमा य बोद्धव्वा।
(श० १०।४)
ईशानदेवता ऐशानी विमलतया विमला……विमला तूद्ध्र्वा तमा पुनरधोदिगिति। (वृ० प० ४९३)

१८. इह च दिशः शकटोद्धिसंस्थिताः (वृ० प० ४९३)

१९. विदिशस्तु मुक्तावल्याकाराः (वृ० प० ४९३)

२०. ऊर्ध्वाधोदिशौ च रुचकाकारे, (वृ० प० ४९३, ४९४)

२१. इंदा णं भंते ! दिसा किं जीवा, जीवदेसा, जीवपदेसा

२२. अजीवा अजीवदेसा अजीवपदेसा ?
गोयमा ! जीवा वि तं चेव जाव (सं० पा०) अजीवपदेसा वि।

२३. जे जीवा ते नियमा एगिंदिया बेइंदिया जाव (सं० पा०) पंचिंदिया अणिंदिया।
तत्र ये जीवास्त एकेन्द्रियादयोऽनिन्द्रियाश्च केवलिनः
(वृ० प० ४९४)

२४. जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा।

२५. जे जीवपदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा बेइंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा।

*लय : झिरमिर-झिरमिर मेहा वरसे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६. जे अजीवा छै पूरव दिशि, द्विविध तेह कहीवा।
रूपी अजीवा कह्या पूर्व दिशि, वलि अरूपी अजीवा ।।
२७. जे रूपी अजीवा ते च्यार प्रकारे, खंध, खंध नां देशा।
खंध तणां प्रदेश कह्या वलि, परमाणु-पुद्गल कहेसा ।।
२८. अजीव अरूपी ते सप्त प्रकारे, नहिं धर्मास्तीकाय।
पूर्व दिशि में खंध नहिं तसु, सहु धर्मास्ती नांय ।।

२६. जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूविअजीवा य अरूविअजीवा य ।
२७. जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा, खंधदेसा, खंधपदेसा, परमाणुपोग्गला ।
२८. जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—नोधम्मत्थिकाए
अयमर्थः—धर्मास्तिकायः समस्त एवोच्यते, स च प्राचीदिग् न भवति तदेकदेशभूतत्वात्तस्याः
(वृ० प० ४९४)

२९. धर्मास्ती नों देश कहीजै, तास न्याय इम जाणी।
एक देश भागरूप पूर्व दिशि, धर्मास्ती पहिछाणी ।।

२९. धम्मत्थिकायस्स देसे
धर्मास्तिकायस्य देशः, सा तदेकदेशभागरूपेति
(वृ० प० ४९४)

३०. धर्मास्तिकाय तणांज प्रदेशा, तिका पूर्व दिशि होय।
असंख्यात प्रदेश प्रमाणैं, पूरव दिशि अवलोय ।।

३०. धम्मत्थिकायस्स पदेसा
तथा तस्यैव प्रदेशाः सा भवति असंख्येयप्रदेशात्मकत्वात्तस्याः (वृ० प० ४९४)

३१. अधर्मास्तिकाय नहीं छै, खंध संपूरण नांय।
अधर्मास्ति तणो देश वलि, प्रदेश बहु तसु पाय ।।
३२. आगासत्थिकाय नहीं खंध आश्री, आगासत्थि नों देश।
आगासत्थि प्रदेश बहू छै, अद्धा समय सुविशेष ।।
३३. ते इम सप्त प्रकार अरूपी, अजीव रूप ए इंदा।
पूरव दिशि ए प्रगटपणैं छै, सुण गोयम ! सुखकंदा ।।
३४ अग्नेयी कूण दिशा स्यूं प्रभुजी ! जीवा जीव नां देसा।
जीव तणां प्रदेश पूर्ववत, प्रश्न गोयम सुविशेषा ।।
३५. जिन कहै नोजीवा खंध आश्री, विदिशि प्रदेशिक एक।
एक प्रदेश विषेज जीव नीं, अवगाहना नहिं लेख ।।

३१. नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे अधम्मत्थिकायस्स पदेसा
३२. नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे आगासत्थिकायस्स पदेसा अद्धासमए । (श० १०।५)
३३. तदेवं सप्तप्रकाराऽरूप्यजीवरूपा ऐन्द्री दिगिति ।
(वृ० प० ४९४)
३४. अग्गेयी णं भंते ! दिसा किं जीवा, जीवदेसा, जीवपदेसा—पुच्छा ।
३५. गोयमा ! नोजीवा
विदिशामेकप्रदेशिकत्वादेकप्रदेशे च जीवानामवगाहाभावात् (वृ० प० ४९४)

३६. जीव तणी अवगाहना आखी, असंख्यात प्रदेश।
ते माटे अग्नेयी कूण में, जीव नथी वच एस ।।
३७. जीव तणां तिहां देश अछै वलि, जीव तणांज प्रदेशा।
अजीवा अजीव नां देश अछै वलि, अजीव नांज पएसा ।।
३८. जेह जीव नां देश कह्या ते, निश्चै करि अवलोई।
बहु एकेंद्री नां देश घणां त्यां, बेइंद्री आदि न होई ।।

३६. असंख्यातप्रदेशावगाहित्वात्तेषां (वृ० प० ४९४)
३७. जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि अजीवदेसा वि अजीवपदेसा वि ।
३८. जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा

सोरठा

३९. एकेंद्रिया अनंत, सकल लोक व्यापकपणैं।
अग्नेयी कूणे हुंत, निश्चै देश एकेंदिया।
४०. इकयोगिक ए ख्यात, द्विकयोगिक त्रिण भंग हिव।
आगल तसु अवदात, श्रोता चित देई सुणो ।।

३९. एकेन्द्रियाणां सकललोकव्यापकत्वादाग्नेय्यां नियमादेकेन्द्रियदेशाः सन्तीति (वृ० प० ४९४)

४१. *अथवा एकेंद्रिय नां देश बहुला, एक बेइंद्री नों अंग।
एक देश पावै तिण कूणे, द्विकयोगिक धुर भंग ।।

४१,४२. अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसे
'अहवे' त्यादि, एकेन्द्रियाणां सकललोकव्यापकत्वादेव द्वीन्द्रियाणां चाल्पत्वेन क्वचिदेकस्यापि तस्य सम्भवा-

*लय : झिरमिर-झिरमिर मेहा वरसे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरठा

४२. एकेंद्री बहु देश, बेइंदिय अल्पपणैं करी।
किहां लहै सुविशेष, एक बेइंदिय देश इक।।

४३. *अथवा एकेंद्रिय नां देश बहुला, इक बेइंद्रि नां जाण।
देश बहु पावै तिण कूणे, द्वितिय भंग इम माण।।

सोरठा

४४. यदा बेइंदिय एक, दोय आदि देशे करी।
फर्शै विदिशि विशेख, द्वितिय भंग होवै तदा।।

४५. *अथवा एकेंदिय नां देश बहुला, बहु बेइंद्रिय नां जाण।
देश बहु पावै तिण कूणे, तृतिय भंग इम माण।।

सोरठा

४६. बहु बेइंदिय धार, दोय आदि देशे करी।
फर्शै विदिशि तिवार, तृतियो भंग हुवै तदा।।

४७. देश तणां सुविशेष, द्विकयोगिक भंग एह में।
एगेंदिया बहु देश, कहिवा त्रिहुं भांगा मझे।।

४८. *अथवा एकेंद्री तेइंद्री संघाते, इमहिज त्रिण भंग कहिवा।
जाव एकेंद्री अणिंदिया साथे, तीन भांगा इम लहिवा।।

४९. जे जीव नां प्रदेश कह्या ते, निश्चै करिनें त्यांही।
बहु एकेंद्री नां प्रदेश बहु छै, बेंदियादिक नां नांही।।

सोरठा

५०. इकयोगिक ए ख्यात, द्विकयोगिक भंग बे हिवै।
प्रथम भंग नहिं पात, न्याय सहित निसुणो सहु।।

५१. *अथवा एकेंद्री नां प्रदेश बहुला, इक बेइंद्री नों ताय।
एक प्रदेश ए पहिलो भांगो, अग्नेयी कूण न पाय।।

सोरठा

५२. तेंद्री जाव अणिंद, प्रदेश तणी अपेक्षया।
बहु वचनांत कथिंद, इक वचनांत हुवै नहीं।।

५३. लोक व्यापक अवस्थान, अणिंद्रिय विण जीव नां।
एक प्रदेशे जान, असंख्यात प्रदेश ह्वै।।

५४. अणिंद्रिय सुविशेष, सर्व लोक व्यापक यदा।
इक आकाश प्रदेश, एक ईज प्रदेश तसु।।

५५. तो पिण अणिंदिय जोय, तसु प्रदेश पद नें विषे।
बहु वच निश्चै होय, अग्नि आदि चिउं विदिशि में।।

*लय : झिरमिर-झिरमिर मेहा वरसे

दुच्यते एकेन्द्रियाणां देशाश्च द्वीन्द्रियस्य देशश्चेति द्विकयोगे प्रथमः (वृ० प० ४६४)

४३. अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसा
अथवैकेन्द्रियपदं तथैव द्वीन्द्रियपदे त्वेकवचनं देशपदे पुनर्बहुवचनमिति द्वितीयः (वृ० प० ४६४)

४४. अयं च यदा द्वीन्द्रियो द्वयादिभिर्देशैस्तां स्पृशति तदा स्यादिति (वृ० प० ४६४)

४५. अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा।
अथवैकेन्द्रियपदं तथैव द्वीन्द्रियपदं देशपदं च बहुवचनान्तमिति तृतीयः (वृ० प० ४६४)

४८. अहवा एगिंदियदेसा य तेइंदियस्स य देसे। एवं चेव तियभंगो भाणियव्वो। एवं जाव अणिंदियाणं तियभंगो।

४९. जे जीवपदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा।

५२. एवं त्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियपञ्चेन्द्रियानिन्द्रियैः सह प्रत्येकं भङ्गकत्रयं दृश्यम् एवं प्रदेशपक्षोऽपि वाच्यो, नवरमिह द्वीन्द्रियादिषु प्रदेशपदं बहुवचनान्तमेव। (वृ० प० ४६४)

५३. यतो लोकव्यापकावस्थानिन्द्रियवर्जजीवानां यत्रैकः प्रदेशस्तत्रासंख्यातास्ते भवन्ति (वृ० प० ४६४)

५४. लोकव्यापकावस्थानिन्द्रियस्य पुनर्यद्यप्येकत्र क्षेत्रप्रदेशे एक एव प्रदेशः (वृ० प० ४६४)

५५,५६. तथाऽपि तत्प्रदेशपदे बहुवचनमेवाग्नेय्यां तत्प्रदेशानामसंख्यातानामवगाढत्वाद् (वृ० प० ४६४)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५६. विदिश तणां विख्यात, असंख्यात प्रदेश है।
तिहां अणिंदिय थात, प्रदेश बहु वच ते भणी ।।
५७. तिण सूं विदिशे जोय, इक बेइंदिय जीव नुं।
एक प्रदेश न होय, प्रथम भंग इम वरजियो ।।
५८. बीजो तीजो भंग, बेंद्री जाव अणिंदिय।
प्रदेश आश्री चंग, पावै ते कहूं जूजुआ ।।

५७,५८. अतः सर्वेषु द्विकयोगेष्वाद्यविरहितं भंगकद्वयमेव भवतीत्येतदेवाह— (वृ० प० ४६४)

५९. *अथवा एकेंद्री नां प्रदेश बहुला, एक बेइंदिय तणां जे।
प्रदेश बहु पावै तिण कूणे, द्वितीय भंग इम छाजे ।।

५९. अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियस्स पदेसा

सोरठा

६०. यदा बेइंदिय एक, असंख्यात प्रदेश करि।
फर्शै विदिश विशेख, द्वितियो भंग हुवै तदा ।।

६१. *अथवा एकेंद्रिय प्रदेश बहुला, बहुबेइंद्रिय तणां जे।
प्रदेश बहु पावै तिण कूणे, तृतीय भंग इम साजे ।।

६१. अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियाण य पदेसा

सोरठा

६२. बहु बेइंदिय जिवार, असंख्यात प्रदेश करि।
फर्शै विदिशि तिवार, तृतीयो भंग हुवै तदा ।।
६३. प्रदेश नां सुविशेष, द्विकयोगिक भंग एह में।
एगेंदि बहु प्रदेश, ए पिण कहिवा भंग बिहुं ।।

६४. *प्रदेश आश्री प्रथम भंग विण, दोय भंग पहिछाणी।
जाव अणिंदिया नैं इम कहिवो, जीव विस्तार ए जाणी ।।

६४. एवं आइल्लविरहिओ जाव अणिंदियाणं।

६५. अग्नेयी कूण में जेह अजीवा, तेहनां दोय प्रकार।
रूपी अजीव ते वर्ण सहित छै, अरूपी अजीव विचार ।।

६५. जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूविअजीवा य अरूविअजीवा य।

६६. जे रूपी अजीव ते च्यार प्रकारे, खंध, खंध नों देश।
खंध तणो प्रदेश कह्यो वली, परमाणु-पोग्गल विशेष ।।

६६. जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा— खंधा जाव परमाणुपोग्गला।

६७. जेह अरूपी अजीव कह्या ते, सात प्रकारे ज्यांही।
धर्मास्तिकाय नहीं तिण कूणे, खंध संपूरण नांही ।।

६७. जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा— नोधम्मत्थिकाए

६८. देश धर्मास्तिकाय तणो छै, वलि बहु तास प्रदेशा।
अधर्मास्तिकाय तणां इम, देश प्रदेश विशेषा ।।
६९. इमज आकास्तिकाय तणां बे, देश प्रदेश कहाया।
अद्धा समय ए भेद सातमों, अरूपी अजीव नां पाया ।।

६८,६९. धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, एवं अधम्मत्थिकायस्स वि जाव आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए। (श० १०।६)

७०. वली विशेष थकीज कहै छै, विदिश विषे नहिं जीवा।
जीव तणो देश एह भंग ह्वै, सर्व विदिश में कहीवा ।।
७१. जम्मा दक्षिण दिशि स्यूं प्रभु ! जीवा, जिम पूर्व दिशि भाखी।
तिमहिज सर्व दक्षिण दिशि कहिवी, श्री जिन वच ए साखी ।।

७१. जम्मा णं भंते ! दिसा किं जीवा ? जहा इंदा 'तहेव निरवसेसं'

७२. नैर्ऋतकूण जे अग्निकूण तिम, पश्चिम दिशि पहिछाणी।
पूर्व दिशि जिम समस्त कहिवूं, वायव्य अग्नि जिम जाणी ।।

७२. नेरती य जहा अग्गेयी। वारुणी जहा इंदा। वायव्वा जहा अग्गेयी

७३. उत्तर दिशि जिम पूर्व दिशि कही, अग्नेयी जेम ईशाणी।
ऊर्द्ध दिशा जीवा अग्निकूण जिम, अजीवा पूर्व जिम जाणी ।।

७३. सोमा जहा इन्दा। ईसाणी जहा अग्गेयी। विमलाए जीवा जहा अग्गेयीए, अजीवा जहा इंदाए

*लय : झिरमिर-झिरमिर मेहा बरसे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरठा

७४. ऊर्द्ध च्यार प्रदेश, खंध आश्री नहिं जीव त्यां।
देश प्रदेश कहेस, तिण सूं अग्नी जिम कही ।।
७५. अजीव भेद इग्यार, पावै ऊर्द्ध दिशा विषे।
रूपी तणांज च्यार, सप्त अरूपी नां सही ।।

७६. *ऊर्द्ध दिशा विमला जिम भाखी, तिमज तमा पिण कहियै।
णवरं अरूपी नां भेद तिहां छह, अद्धा समय नहिं लहियै ।।

सोरठा

७७. ऊर्द्ध दिशे सिद्ध वास, तिण सूं अणिंदिया तणां।
देश प्रदेश विमास, सिद्ध स्थान तमा नथी ।।
७८. अणिंदिया नां देश, वलि प्रदेश तसु किम हुवै।
उत्तर तास कहेस, चित्त लगाई सांभलो ।।
७९. सर्व लोक फर्शंत, समुद्घात केवल समय।
दंडादि तिहां हुंत, तेह प्रतै जे आश्रयी ।।
८०. हुवै तास इक देश, तथा हुवै बहु देश तसु।
अथवा बहु पएस, युक्तहीज तिण सूं तिहां ।।
८१. वलि समय व्यवहार, रवि-संचरण प्रकाश कृत।
तमा नहीं रवि चार, अद्धा समय नहिं ते भणी ।।

८२. तो विमला दिशि जोय, मंदर मध्य हुवै तिहां।
रवि प्रकाश किम होय, कथं समय व्यवहार त्यां ।।
८३. उत्तर तसु इम जाण, मेरू पर्वत नों तिहां।
अवयवभूत पिछाण, फटिक कांड छै तेह विषे।
८४. रवि चंदादि प्रकाश, किरण कांति द्वारे करी।
संचरतां रवि तास, प्रकाश ऊर्द्ध दिशे हुवै ।।
८५. विमला दिशि इण न्याय, समय तणो व्यवहार है।
तमा विषे नहिं पाय, वृत्ति विषे इम आखियो ।।
८६. दिशि जीवादी रूप, पूर्वे तेह परूपिया।
जीव शरीरी चूंप, शरीर नों अधिकार हिव ।।

८७. *किता प्रभुजी ! शरीर परूप्या ? जिन कहै पंच शरीर।
ओदारिक नैं जाव कार्मण, जूजुआ भेद समीर ।।

८८. औदारिक प्रभु ! कतिविध भाख्यो ? इम ओगाहण संठाण।
पन्नवण पद इकवीसमें आख्यो, भणवो सर्व पिछाण ।।

वा० —वृत्तिकार रै कथनानुसार एक संग्रहगाथा इहां लाभै छै। तेहनों अर्थ—कति - केतला शरीर ? एहवो कहिवो ओदारिकादि पंच। संठाण—ओदारिक नां संस्थान ते आकार कहिवा। ते जिम अनेक प्रकार नैं संस्थाने औदारिक। पमाणंति तेहनोंज प्रमाण कहिवो, जिम औदारिक शरीर जघन्य थकी अंगुल नों असंखेय भाग मात्र, उत्कृष्ट थी साधिक योजन सहस्र मान। पोग्गल-

७६. एवं तमाए वि, नवरं—अरूवी छव्विहा, अद्धासमयो न भण्णति। (श० १०।७)
'एवं तमावि' त्ति विमलावत्तमाऽपि वाच्येत्यर्थः (वृ० प० ४९४)

७७,७८. अथ विमलायामनिन्द्रियसम्भवात्तद्देशादयो युक्तास्तमायां तु तस्यासम्भवात्कथं ते ? इति, उच्यते (वृ० प० ४९४)

७९,८०. दण्डाद्यवस्थं तमाश्रित्य तस्य देशो देशाः प्रदेशाश्च विवक्षायां तत्रापि युक्ता एवेति। (वृ० प० ४९४)

८१. 'अद्धासमयो न भन्नइ' त्ति समयव्यवहारो हि सञ्चरिष्णुसूर्यादिप्रकाशकृतः, स च तमायां नास्तीति तत्राद्धासमयो न भण्यत इत्यर्थः। (वृ० प० ४९४)
८२. अथ विमलायामपि नास्त्यसाविति कथं तत्र समयव्यवहारः ? इति। (वृ० प० ४९४)
८३,८४. उच्यते, मन्दरावयवभूतस्फटिककाण्डे सूर्यादिप्रभासंक्रान्तिद्वारेण तत्र सञ्चरिष्णुसूर्यादिप्रकाशभावादिति। (वृ० प० ४९४)

८६. अनन्तरं जीवादिरूपा दिशः प्ररूपिताः, जीवाश्च शरीरिणोऽपि भवन्तीति शरीरप्ररूपणायाह— (वृ० प० ४९४)
८७. कति णं भंते ! सरीरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए जाव (सं० पा०) कम्मए। (श० १०।८)
८८. ओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? एवं ओगाहणासंठाणं निरवसेसं भाणियव्वं

वा०—कइ संठाण पमाणं, पोग्गलचिणणा सरीरसंजोगो।
दव्वपएसप्पबहुं, सरीरओगाहणाए या ।।

तत्र च कतीति कति शरीराणीति वाच्यं, तानि पुनरौदारिकादीनि पञ्च, तथा 'संठाणं' ति औदारिकादीनां संस्थानं वाच्यं, यथा नानासंस्थानमौदारिकं, तथा 'पमाणं' ति एषामेव प्रमाणं वाच्यं, यथा—

*लय : झिरमिर-झिरमिर मेहा वरसे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिणणा—पुद्गल चय कहिवो। सरीर-औदारिक नों निर्व्याघाते छ दिशि नैं विषे व्याघात प्रते आश्रयी नैं किवारैक तीन दिशि नैं विषे इत्यादिक। संयोग एहनों संयोग कहिवो। यथा ओदारिक शरीर हुवैं तेहनैं, वैंक्रिय हुवैं इत्यादि। दव्वप्पएस—एहनों द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थपणैं करी अल्पबहुत्व कहिवो, यथा सव्वत्थोवा आहारगसरीरदव्वट्ठयाए इत्यादि। सरीरोगाहणा—अवगाहना नों अल्पबहुत्व कहिवो, यथा सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स जहन्निया ओगाहणा इत्यादि।

ओदारिकं जघन्यतोऽङ्गुलासंख्येयभागमात्रमुत्कृष्टतस्तु सातिरेकयोजनसहस्रमानं, तथैषामेव पुद्गलचयो वाच्यो, यथौदारिकस्य निर्व्याघातेन षट्सु दिक्षु व्याघातं प्रतीत्य स्यात् त्रिदिशीत्यादि, तथैषामेव संयोगो वाच्यो, यथा यस्यौदारिकशरीरं तस्य वैक्रियं स्यादस्तीत्यादि, तथैषामेव द्रव्यार्थप्रदेशार्थतयाऽल्प-बहुत्वं वाच्यं, यथा 'सव्वत्थोवा आहारगसरीरा दव्वट्ठयाए' इत्यादि, तथैषामेवावगाहनाया अल्पबहुत्वं वाच्यं, यथा 'सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स जहन्निया ओगाहणा' इत्यादि। (वृ० प० ४६५)

८९. यावत अल्पाबहुत्व लग इम, सेवं भंते! सेवं भंत।
दशम शते ए प्रथम उदेशे, जिन वच महा जयवंत॥
९०. ढाल दो सौ सतरमीं ए, भिक्षु भारीमाल ऋषिराया।
उगणीसे वीसे जेष्ठ जोधाणे, 'जय-जश' हरष सवाया॥

८९. जाव अप्पाबहुगं ति। (श० १०।९)
सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति। (श० १०।१०)

दशमशते प्रथमोद्देशकार्थः ॥१०।१॥

ढाल : २१८

दूहा

१. पूर्व शरीर परूपिया, जीव शरीरी जाण।
करणहार क्रिया तणो, हुवै तिको पहिछाण॥
२. ते माटै कहियै हिवै, क्रिया परूपण अर्थ।
द्वितीय उद्देशक नैं विषे, वर जिन वयण तदर्थ॥

१,२. अनन्तरोद्देशकान्ते शरीराण्युक्तानि शरीरी च क्रियाकारी भवतीति क्रियाप्ररूपणाय द्वितीय उद्देशकः। (वृ० प० ४९५)

*जय-जय ज्ञान जिनेन्द्र तणों रे, जयवंता जिन जाणी जी।
जयवंता गोयम गणधरजी, पूछ्या प्रश्न पिछाणी जी॥ (ध्रुपदं)
३. राजगृह जाव गोतम इम बोल्या, प्रभु संवुड अणगारो रे।
वीयी पाठ ते कषायवंत नैं, तसु अशुभ जोग व्यापारो रे॥

३. रायगिहे जाव एवं वयासी—संवुडस्स णं भंते! अणगारस्स वीयीपंथे

सोरठा

४. सामान्य करिकै मंत, प्राणातिपातादि जे।
आश्रव द्वार रूंधंत, संवर सहितज संवृतः॥
५. वीचि शब्द आख्यात, कहियै ते संयोग में।
तिको विहूं नों थात, इहां कषाय रु जीव नों॥
६. तथा विचिर् ए धातु, पृथक् भाव जुदै अरथ।
ए वच थी कहिवातु, यथाख्यात थी ए जुदो॥

४. संवृतस्य सामान्येन प्राणातिपाताद्याश्रवद्वारसंवरो-पेतस्य। (वृ० प० ४९५)
५. वीचिशब्दः सम्प्रयोगे, स च सम्प्रयोगोर्द्वयोर्भवति, ततश्चेह कषायाणां जीवस्य च सम्बन्धो वीचिशब्द-वाच्यः ततश्च वीचिमतः कषायवतः (वृ० प० ४९५)
६. अथवा 'विचिर् पृथग्भावे' इति वचनात् विविच्य—पृथग्भूय यथाऽऽख्यातसंयमात् कषायोदयमनपवार्येत्यर्थः (वृ० प० ४९५)

*लय : कुंकुवर्णी हुंती रे देही

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. अथवा विचिंत्य धार, राग तणोंज विकार तसु।
तथा विरूपाकार, क्रिया सरागपणैं करि॥

७. अथवा विचिन्त्य रागादिविकल्पादित्यर्थः, अथवा विरूपा कृतिः—क्रिया सरागत्वात्। (वृ० प० ४६५)

८. जे अवस्थाने जेह, राग विकारज जिम हुवै।
क्रिया सरागपणेह, अर्थ कह्यो ए वृत्ति थी॥

८. यस्मिन्नवस्थाने तद्विकृति र्यथा भवतीत्येवं (वृ० प० ४६५)

९. *पंथ मारग नैं विषे रही नैं, उपलक्षण थी जेहो।
अन्य आधारे रही मुख आगल रूप जोवै धर नेहो।

९. ठिच्चा पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स 'पंथे' त्ति मार्गे 'अवयक्खमाणस्स' त्ति अवकांक्षतोऽपेक्ष-माणस्य वा, पथिग्रहणस्य चोपलक्षणत्वादन्यत्राप्या-धारे स्थित्वेति द्रष्टव्यं (वृ० प० ४६६)

१०. पूठै रूप अछै त्यांरी पिण, देखण इच्छा धरतो।
विहुं पसवाड़े रूप प्रतै पिण, अति अवलोकन करतो॥

१०. मग्गओ रूवाइं अवयक्खमाणस्स, पासओ रूवाइं अवलोएमाणस्स

११. ऊर्द्ध रह्या ते रूप विलोकत, अधो रूप पिण जोवै।
स्यूं प्रभु! तसु इरियावहि किरिया, कै संपरायिकी होवै?

११. उड्ढं रूवाइं ओलोएमाणस्स, अहे रूवाइं आलोए-माणस्स तस्स णं भंते! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ? संपराइया किरिया कज्जइ?

१२. श्री जिन भाखै सुण गोतम शिष! संवृत जे अणगारो।
कषायवंत पंथ रहि मारग, जोवै रूप जिवारो॥

१२. गोयमा! संवुडस्स णं अणगारस्स वीयीपंथे ठिच्चा

१३. यावत जेहनैं इरियावहिया किरिया मूल न थाई।
संपरायिकी किरिया जेहनैं, उपजै अशुभ बंधाई॥

१३. जाव (सं० पा०) तस्स णं नो इरियावहिया किरिया कज्जइ संपराइया किरिया कज्जइ। (श० १०।११)

१४. किण अर्थे करिनैं हे प्रभुजी! आखी एहवी वायो।
संवृत नैं यावत संपरायिकी किरिया अशुभ बंधायो॥

१४. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—संवुडस्स णं जाव संपराइया किरिया कज्जइ?

१५. जिन कहै जेहनैं क्रोध मान वलि, माया लोभ पिछाणी।
जिम सप्तम शत प्रथम उद्देशक[1], यावत उत्सूत्रे ठाणी॥

१५. गोयमा! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा एवं जहा सत्तमसए पढमउद्देसए (सू० २१) जाव (सं० पा०)

१६. वृत्तिकार[2] कह्यो जाव शब्द में, वोच्छिण्णा जास कषायो।
तेहनैं इरियावहिया किरिया, चोकड़ी उदय न ताह्यो॥

१६. से वोच्छिण्णा भवंति तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ

१७. क्रोध मान अरु माय लोभ जसु, अवोच्छिण्णा कहिवायो।
उदय कषाय नहीं क्षय उपशम, किरिया संपरायिकी ताह्यो॥

१७. जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवंति तस्स णं संपराइया किरिया कज्जइ

१८. अहासुत्तं जिम सूत्रे कह्यु, तिम चाले न चूकै लिगारो।
वीतराग मुनि आश्री वचन ए, तसु इरियावहि सुविचारो॥

१८. अहासुत्तं रीयमाणस्स इरियावहिया किरिया कज्जइ

१९. उत्सूत्र ते आगम अतिक्रम नैं, चालै जिनाज्ञा बारो।
संपरायिकी क्रिया तेहनैं, अशुभ जोग व्यापारो॥

१९. उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ। 'से णं उस्सुत्तमेव' त्ति स पुनरुत्सूत्रमेवागमाति-क्रमणत एव। (वृ० प० ४६६)

२०. जाव शब्द में एह कह्या छै, जे पंथ रही रूप जोवै।
तेह उत्सूत्रपणेंज प्रवर्त्तै, अशुभ जोगी इम होवै॥

२०. से णं उस्सुत्तमेव रीयति।

***लय : कुंकुवर्णी हुंती रे देही**

१. यह जोड़ संक्षिप्त पाठ के आधार पर की गई है, इसलिए इसके सामने पाद-टिप्पण का पाठ उद्धृत किया है।

२. जयाचार्य ने जोड़ की रचना संक्षिप्त पाठ के आधार पर की। उसके बाद वृत्ति के आधार पर जाव की पूर्ति कर छूटे हुए पाठ की जोड़ लिख दी। अंगसुत्ताणि में संक्षिप्त पाठ को पाद टिप्पण में रखा गया है और मूल में पाठ पूरा लिया है। इसलिए यहां वृत्तिकार का उल्लेख होने पर भी अंगसुत्ताणि का पाठ उद्धृत किया गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१. ते तिण अर्थ करीनें गोतम ! जावत ससंपरायो।
संपराइया किरिया होवै, प्रमादी एह कहिवायो ।।

२१. से तेणट्ठेणं जाव संपराइया किरिया कज्जइ।
(श० १०।१२)

सोरठा

२२. कह्यो संवृत अणगार, सकषाई प्रमत्त है।
तास विपर्यय सार, अकषाइ नों प्रश्न हिव ।।

२२. 'संवुडस्से' त्याद्युक्तविपर्ययसूत्रं (वृ० प० ४९६)

२३. *हे प्रभु ! संवुड़ा मुनिवर नैं, अकषाई वीतरागो।
पंथ मारग रहिनें मुख आगल, रूप जोवै तजि रागो ।।

२३. संवुडस्स णं भंते ! अणगारस्स अवीयीपंथे ठिच्चा पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स

सोरठा

२४. अवीचि अकषाय, संबंध नहीं कषाय नों।
तथा अविचिर् कहाय, यथाख्यात थी नहिं जुदो ।।

२४. तत्र च 'अवीइ' त्ति 'अवीचिमतः' अकषायसम्बन्धवतः 'अविविच्य' वा अपृथग्भूय यथाऽऽख्यातसंयमात्
(वृ० प० ४९६)

२५. तथा अविचिंत्य सार, राग विकार न मन तसु।
तथा विरूपाकार, ते पिण नहिं छै तेहनों ।।

२५. अविचिन्त्य वा रागविकल्पाभावेनेत्यर्थः अविकृति वा यथा भवतीति। (वृ० प० ४९६)

२६. *यावत स्यूं इरियावहि पूछा ? भाखै तब जिनरायो।
संवृत जाव तास इरियावहि, संपराय नहिं थायो ।।

२६. जाव तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ— पुच्छा। गोयमा ! संवुडस्स ....जाव तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ। (श० १०।१३)

२७. किण अर्थे प्रभु ! जिम सप्तम शत, भाख्यो सप्तमुद्देशे।
यावत ते जिम सूत्रे आख्यो, तिमहिज चालै विशेषे ।।

२७. से केणट्ठेणं भंते ! ....जहा सत्तमसए सत्तमुद्देसए (सू० १२६) जाव (सं० पा०) से........
(श० १०।१४)

२८. तिण अर्थे गोतम ! इम भाख्यो, संवृत जे अकषाई।
जाव तास इरियावहि किरिया, संपराय नहिं थाई ।।

२८. तेणट्ठेणं जाव नो संपराइया किरिया कज्जइ।
(श० १०।१४)

सोरठा

२९. पूर्वे किरियावंत उक्त, तेहनैं बहुलपणें करि।
योनि पामवूं हुंत, हिव ते योनि-परूपणा ।।

२९. अनन्तरं क्रियोक्ता, क्रियावतां च प्रायो योनिप्राप्तिर्भवतीति योनिप्ररूपणायाह— (वृ० प० ४९६)

३०. *किते प्रकारे हे भगवंत जी ! योनि कही जिनरायो।
जीव नूं उत्पत्तिस्थानक तेहनैं, योनि कहीजै ताह्यो ।।

३०. कतिविहा णं भंते ! जोणी पण्णत्ता ?

वा०—यु धातु मिश्र अर्थ नैं विषे। इण वचन थकी तैजस कार्मण शरीरवंत थको ओदारिकादिक शरीर योग्य खंध समुदाये करी मिश्र हुवै जीव जेहनैं विषे, ते योनि कहियै।

वा०—'यु मिश्रणे' इतिवचनात् युवन्ति—तैजसकार्म्मणशरीरवन्त औदारिकादिशरीरयोग्यस्कन्धसमुदायेन मिश्रीभवन्ति जीवा यस्यां सा योनिः
(वृ० प० ४९६)

३१. जिन कहै त्रिविधा योनि परूपी, शीत योनि धुर जाणी।
उत्पत्ति स्थानक शीत फर्श करि, परिणत तेह पिछाणी ।।

३१. गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा—सीया 'सीय' त्ति शीतस्पर्शा (वृ० प० ४९६)

३२. उष्ण योनि ते उष्ण फर्शवंत, तीजी शीतोष्णा जानो।
शीत-उष्ण ए बिहुं फर्शकरि, परिणत उत्पत्ति स्थानो।

३२. उसिणा सीतोसिणा
'उसिण' त्ति उष्णस्पर्शा 'सीओसिण' त्ति द्विस्वभावा
(वृ० प० ४९६)

*लय : कुंकुवर्णी हुंती रे देही

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३. योनी पद इम सर्वज भणिवो, सूत्र पन्नवणा मांह्यो।
नवमैं पद ए भाव कह्या छै, ते सगला कहिवायो।।

वा०—रत्नप्रभा सर्करप्रभा वालुकप्रभा पृथ्वी में नारक नां जे उपजवा नां क्षेत्र कुंभी छै, ते सर्व शीतस्पर्श परिणत छै अनें कुंभी विना अन्यत्र सर्व उष्ण स्पर्श परिणत छै। तिणें करि तिहां नारक शीतयोनिया छै अनें उष्ण वेदना भोगवै छै।

पंकप्रभा पृथ्वी में घणां उपपात-क्षेत्र कुंभी शीत-स्पर्श परिणत छै अनें थोड़ा उपपात-क्षेत्र कुंभी उष्ण-स्पर्श परिणत छै। जिणें पाथड़े, नरकावासे उपपात-क्षेत्र शीत-स्पर्श परिणत छै, तिहां अन्यत्र सर्व उष्ण-स्पर्श परिणत छै। ते पाथड़ा नां नरकावासा नां नारक घणां शीतयोनिया उष्ण वेदना वेदै छै अनें जे पाथड़े नरकावासा उपपात-क्षेत्र उष्ण-स्पर्श परिणत छै, तिहां अन्यत्र सर्व क्षेत्र शीत-स्पर्श परिणते। ते पाथड़ा नां नरकावासा नां नारक उष्णयोनिया शीत वेदना वेदै छै। ते माटै पंकप्रभा में घणां नारकी शीतयोनिया छै।

तथा धूमप्रभा में घणां उपपातक्षेत्र उष्ण-स्पर्श परिणत छै, तिहां नारक घणां उष्णयोनिया शीत वेदना वेदै छै। अनें जे पाथड़े नरकावासे थोड़ा उपपात-क्षेत्र शीत-स्पर्श परिणत छै—तिहां अन्य क्षेत्र सर्व उष्ण स्पर्श परिणत छै। तिहां नां थोड़ा नारक शीतयोनिया उष्ण वेदना वेदै छै। ते माटैं धूमप्रभा में घणां नारक उष्ण-योनिया शीत वेदना वेदै छै अनें थोड़ा नारक शीत-योनिया ते उष्ण वेदना वेदै छै।

अनें छठी सातमी नारकी में सर्व उष्णयोनिया शीत वेदना वेदै छै, ते माटै नारकी में शीत योनि छै, उष्ण योनि छै, पिण शीतोष्णा योनि नथी।

शीतादि योनि प्रकरणार्थ संग्रह बलि बहुलपणें करी—सर्व देवता अनें गर्भज नी शीतोष्णा योनि। अनें तेउकाय नीं उष्ण योनि। अनें नरक नें विषे शीत अनें उष्ण ए बे योनि। शेष नें विषे तीनूं योनि।

भंते! योनि केतला प्रकार नी कहियै?
गोतमा! योनि तीन प्रकार नीं कहियै—सचित्त, अचित्त और मिश्र।

जेह उपपात क्षेत्र समग्रपणें जीव-परिगृहीत हुवै, ते सचित्त योनि कहियै। जे उपपात क्षेत्र सर्वथा जीव रहित हुवै ते अचित्त योनि कहियै। उपपात क्षेत्र नां पुद्गल केतलाइक जीव-परिगृहीत हुवै अनें केतलाइक जीव-रहित हुवै ते मिश्र योनि कहियै।

बलि सचित्तादि योनि प्रकरणार्थ संग्रह बहुलपणें इम—नारकी देवता नीं अचित्त योनि अनें गर्भज नीं मिश्र, शेष नें विषे तीनूं।

३३. एवं जोणीपदं निरवसेसं भाणियव्वं। (श० १०।१५)
योनिपदं च प्रज्ञापनायां नवमं पदं (वृ० प० ४६६)

वा०—रत्नप्रभायां शर्कराप्रभायां वालुकाप्रभायां च यानि नैरयिकाणामुपपातक्षेत्राणि तानि सर्वाण्यपि शीतस्पर्शपरिणामपरिणतानि, उपपातक्षेत्रव्यतिरेकेण चान्यत् सर्वमपि तिसृष्वपि पृथिवीषूष्णस्पर्शपरिणामपरिणतं तेन तत्रत्या नैरयिकाः शीतयोनिका उष्णां वेदनां वेदयन्ते।

पंकप्रभायां बहून्युपपातक्षेत्राणि शीतस्पर्शपरिणामपरिणतानि स्तोकान्युष्णस्पर्शपरिणामपरिणतानि येषु च प्रस्तटेषु येषु च नरकावासेषु शीतस्पर्शपरिणामान्युपपातक्षेत्राणि तेषु तद्व्यतिरेकेणान्यत्सर्वमुष्णस्पर्शपरिणामं येषु च प्रस्तटेषु येषु च नरकावासेषु उष्णस्पर्शपरिणामानि उपपातक्षेत्राणि तेषु तद्व्यतिरेकेणान्यत्सर्वं शीतस्पर्शपरिणामं तेन तत्रत्या बहवो नैरयिकाः शीतयोनिका उष्णां वेदनां वेदयन्ते स्तोका उष्णयोनिकाः शीतवेदनामिति।

धूमप्रभायां बहून्युपपातक्षेत्राणि उष्णस्पर्शपरिणामपरिणतानि स्तोकानि शीतस्पर्शपरिणामानि, येषु च प्रस्तटेषु येषु च नरकावासेषु चोष्णस्पर्शपरिणामपरिणतानि उपपातक्षेत्राणि तेषु तद्व्यतिरेकेणान्यत्सर्वं शीतपरिणामं येषु च शीतस्पर्शपरिणामान्युपपातक्षेत्राणि तेष्वन्यदुष्णस्पर्शपरिणामं, तेन तत्रत्या बहवो नारका उष्णयोनिकाः शीतवेदनां वेदयन्ते स्तोकाः शीतयोनिका उष्णवेदनामिति।

तमःप्रभायां तमस्तमःप्रभायां च……तत्रत्या नारका उष्णयोनिकाः शीतवेदनां वेदयितार इति।
(प्रज्ञापना, वृ० प० २२५)

शीतादियोनिप्रकरणार्थसंग्रहस्तु प्रायेणैवं—
सिओसिणजोणीया सव्वे देवा य गब्भवक्कंती।
उसिणा य तेउकाए दुह निरए तिविह सेसेसु।
(वृ० प० ४६६)

'कतिविहा णं भंते! जोणी पन्नत्ता? गोयमा! तिविहा जोणी पन्नत्ता, तं जहा—सच्चित्ता अचित्ता मीसिया' (वृ० प० ४६६)

सचित्ता जीवप्रदेशसंबद्धा, अचित्ता सर्वथा जीवविप्रमुक्ता, मिश्रा जीवविप्रमुक्ताविप्रमुक्तस्वरूपा।
(प्रज्ञापना वृ० प० २२६)

सचित्तादियोनिप्रकरणार्थसंग्रहस्तु प्रायेणैवम्—
अचित्ता खलु जोणी नेरइयाणं तहेव देवाणं
मीसा य गब्भवासे तिविहा पुण होई सेसेसु।
(वृ० प० ४६६)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे नारक देवता रें उपपात क्षेत्र सूक्ष्म एकेंन्द्रिय जीव नो संभव छै, तथा पोलाड़ में बादर वायुकाय नों संभव छै, तो पिण नारक देवता नां उपपात क्षेत्र नां पुद्गल समूह किणही जीवे करि परिगृहीत नहिं ते भणी देवता नारक नै अचित्त योनि कहियै।

अनें गर्भवास योनि मिश्र—शुक्र शोणित पुद्गल तो अचित्त अनें गर्भ नो ठिकाणो सचित्त नां भाव थी। शेष पृथ्वीव्यादि सम्मुर्च्छिम तिर्यंच मनुष्य नो जीव ग्रहण कीधा क्षेत्र नें विषे उत्पत्ति ते सचित्त। जीव ग्रहण अणकीधा क्षेत्र नें विषे उपजवो ते अचित्त। अनें उभय रूप क्षेत्र नें विषे उपजवो, ते मिश्र। इम त्रिविधापि योनि इत्यर्थः।

भंते! योनि केतला प्रकार नी कहियै?

गोतम! योनि तीन प्रकार नीं कहियै—संवुडा जोणी, वियडा जोणी, संवुड-वियडा जोणी।

उत्पत्ति स्थानक संवृत—आच्छादित हुवै ते संवृत योनि कहियै। उत्पत्ति स्थानक विवृत—उघाड़ो हुवै ते विवृता योनि। कांइक संवृत कांइक विवृत हुवै, ते संवृत-विवृता योनि।

संवृतादि योनि प्रकरणार्थ संग्रह बहुलपणें इम—एकेंद्रिय नें संवृता योनि। तथा सभाव थकी एकेंद्रिय नें उत्पत्ति-स्थानक स्पष्टपणें ओलखायैं नहीं, ते माटै संवृता योनि।

नारक नैं पिण संवृता योनि हीज जे कारण थकी नरक निष्कुटा ते कुंभी संवृत ते ढक्या गवाक्ष सरीखी छै। एतलैं नारकी नें उत्पत्ति-स्थानक कुंभी-ढांक्या गोखैं नें आकार छैं। तेहनें विषे ऊपनां ते देह वध्यां छतां तेह थकी पड़ैं शीत निष्कुट थकी उष्ण क्षेत्र नें विषे पड़ैं अनें उष्ण निष्कुट थकी शीत क्षेत्र नें विषे पड़ैं।

अनें देवता नीं पिण संवृत हीज योनि कहियैं। जे भणी देव-सेज्या नें विषे देवता ऊपजैं, देव-दूष्य वस्त्रे करी ते सेज्या ढांकी। ते सेज्या नें विषे ऊपजतां आंगुल नें असंख्यातमें भाग अवगाहना देवता नी जाणवी।

विकलेंद्री वियडा योनि छै। तेहना उत्पत्ति-स्थानक जलाशयादि प्रत्यक्ष दीसैं छैं। समुच्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच नें अनें समुच्छिम मनुष्य नें इमज विवृता योनि कहिवी। विवृता योनि विशेषणपणें उत्पत्ति-स्थानक जलाश्रय प्रमुख प्रगट योनि दीसैं छैं। शेष बे योनि नथी।

अनें गर्भज तिर्यञ्च अनें मनुष्य नें संवृता योनि नथी, विवृता योनि पिण नथी। संवृत-विवृता योनि छै। गर्भ अभ्यंतर सरूप जणाए नहीं, बाह्य रूपै उदरवृद्ध्यादिक प्रत्यक्ष दीसैं छैं ते माटै गर्भज नें संवृत—विवृता योनि छै।

भंते! योनि केतला प्रकार नी कहियैं? गोतम! योनि तीन प्रकार नीं कहियैं—कुर्मोन्नता, शंखावर्त्ता, वंशीपत्रा।

त्रिण भेदे योनि परूपी ते कहै छैं—काछवा नीं पीठ नीं परैं उन्नत हुवैं ते कुर्मोन्नता योनि। तिण में तीर्थंकर, चक्रवर्ती, वासुदेव, बलदेव उत्तम पुरुष गर्भे ऊपजैं। उदर-वृद्धि न हुवैं गूढगर्भपणें करी।

संख नी परैं आवर्त्त हुवैं जिहां ते शंखावर्त्ता योनि। स्त्री रत्न नें घणां जीव संबद्ध पुद्गल आवै, गर्भपणें उपजैं पुष्ट हुवैं, विशेष थी पुष्ट हुवैं, पिण नीपजैं

सत्यप्येकेन्द्रियसूक्ष्मजीवनिकायसम्भवे नारकदेवानां यदुपपातक्षेत्रं तन्न केनचिज्जीवेन परिगृहीतमित्य-चित्ता तेषां योनिः (वृ० प० ४६६)

गर्भवासयोनिस्तु मिश्रा शुक्रशोणितपुद्गलानामचित्तानां गर्भाशयस्य सचेतनस्य भावादिति, शेषाणां पृथिव्या-दीनां संमूर्च्छनजानां च मनुष्यादीनामुपपातक्षेत्रे जीवेन परिगृहीतेऽपरिगृहीते उभयरूपे चोत्पत्तिरिति त्रिविधाऽ-पि योनिरिति। (वृ० प० ४६७)

'कतिविहा णं भंते! जोणी पन्नत्ता? गोयमा! तिविहा जोणी पन्नत्ता, तं जहा—संवुडा जोणी वियडाजोणी संवुडवियडाजोणी' (वृ० प० ४६७)

संवृत्तादियोनिप्रकरणार्थसंग्रहस्तु प्राय एवम्—

एकेन्द्रिया अपि संवृतयोनिकाः तेषामपि योनेः स्पष्ट-मनुपलक्ष्यमानत्वात् (प्रज्ञापना वृ० प० २२७)

नारकाणामपि संवृतैव यतो नरकनिष्कुटाः संवृतगवाक्ष-कल्पास्तेषु च जातास्ते वर्द्धमानमूर्त्तयस्तेभ्यः पतन्ति शीतेभ्यो निष्कुटेभ्य उष्णेषु नरकेषु उष्णेभ्यस्तु शीतेष्विति (वृ० प० ४६७)

देवानामपि संवृतैव यतो देवशयनीये दूष्यान्तरितोऽ-गुलासंख्यातभागमात्रावगाहनो देव उत्पद्यत इति।

(वृ० प० ४६७)

द्वीन्द्रियादीनां चतुरिन्द्रियपर्यन्तानां संमूर्च्छिमतिर्यक्-पञ्चेन्द्रियसंमूर्च्छिममनुष्याणां च विवृता योनिः तेषा-मुत्पत्तिस्थानस्य जलाशयादेः स्पष्टमुपलभ्यमानत्वात्।

(प्रज्ञापना वृ० प० २२७)

गर्भव्युत्क्रान्तिकतिर्यक्पञ्चेन्द्रियगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्-याणां च संवृतविवृता योनिः, गर्भस्य संवृतविवृत-रूपत्वात्, गर्भो ह्यन्तः स्वरूपतो नोपलभ्यते बहिस्तूदर-वृद्ध्यादिनोपलक्ष्यते इति। (प्रज्ञापना वृ० प० २२७)

कतिविहा णं भंते! जोणी पन्नत्ता? गोयमा! तिविहा जोणी पन्नत्ता, तं जहा—कुम्मुन्नया संखा-वत्ता वंसीपत्ता

कूर्मपृष्ठमिवोन्नता कूर्मोन्नता (प्रज्ञापना वृ० प० २२८)

"…कुम्मुण्णयाए णं जोणीए उत्तमपुरिसा गब्भे वक्क-मंति तं जहा—अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा

(पण्ण० ९।२६)

शंखस्येवावर्तो यस्याः सा शंखावर्ता

(प्रज्ञापना वृ० प० २२८)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नहीं, प्रबल कामाग्नि नें परितापे विध्वंस पामैं।

संखावत्ता णं जोणी इत्थिरयणस्स संखावत्ताए णं जोणीए बहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमंति विउक्कमंति चयंति, उवचयंति नो चेव णं णिप्फज्जंति।
(पण्ण ९।२९)

ते योनि माहिं जे जीव ऊपजैं ते मरैंज। नीकलिवा ने मार्ग मिलै नहीं अनें वृद्धि पामी न सकै ते भणी हत-गर्भ योनि कहियै। ते स्त्री रत्न नैं बीजो पुरुष भोगवी न सकै। चक्रवर्ती नै इज भोग में आवै।

शंखावर्तायां योनौ बहवो जीवा जीवसंबद्धापुद्गलाश्चावक्रमन्ते—आगच्छंति, व्युत्क्रामन्ति–गर्भतयोत्पद्यन्ते तथा चीयन्ते—सामान्यतश्चयमागच्छन्ति, उपचीयंते—विशेषत उपचयमायान्ति परं न निष्पद्यन्ते अतिप्रबलकामाग्निपरितापतो ध्वंसगमनादिति
(प्रज्ञापना वृ० प० २२८)

बंशी नां पत्र नें आकारैं हुवै ते वंशीपत्रा योनि। घणी मनुष्यणी स्त्री नें हुवै। ते वंशीपत्रा योनि नें विषे घणां गर्भ अपक्रमैं, संक्रमै, गर्भपणैं ऊपजैं। पृथगजना प्राकृतजना इत्यर्थः।

संयुक्तवंशीपत्रद्वयाकारत्वाद् वंशीपत्रा
(प्रज्ञा० वृ० प० २२८)

वंसीपत्ता णं जोणी पिहुजणस्स, वंसीपत्ताए णं जोणीए पिहुजणा गब्भे वक्कमंति। (पण्ण ९।२९)

सोरठा

३४. पूर्वे योनी उक्त, योनिवंत जीवां तणैं।
वेदन जिन-वच युक्त, कहियै छै हिव वेदना।।

३४. अनन्तरं योनिरुक्ता, योनिमतां च वेदना भवन्तीति तत्प्ररूपणायाह— (वृ० प० ४९७)

३५. *हे प्रभु! वेदना किते प्रकारै? जिन कहै तीन प्रकारो।
शीत वेदना उष्ण वेदना, शीतोष्णा वेदना धारो।।

३५. कतिविहा णं भंते! वेयणा पण्णत्ता?
गोयमा! तिविहा वेयणा पण्णत्ता, तं जहा—सीया, उसिणा, सीओसिणा।

३६. पन्नवण वेदन पद पैंतीसम, जाव नारक स्यूं भदंतो!
दुख-वेदन कै सुख नीं वेदन, कै अदुख असुख वेदंतो?

३६. एवं वेयणापदं (प० ३५।११) भाणियव्वं जाव— (श० १०।१६)
नेरइया णं भंते! किं दुक्खं वेयणं वेदेंति? सुहं वेयणं वेदेंति? अदुक्खमसुहं वेयणं वेदेंति?

३७. जिन कहै दुख-वेदन पिण वेदै, सुख-वेदन पिण वेदै।।
अदुख असुख वेदन पिण वेदै, भाखी ए त्रिहुं भेदै।।

३७. गोयमा! दुक्खं पि वेयणं वेदेंति, सुहं पि वेयणं वेदेंति, अदुक्खमसुहं पि वेयणं वेदेंति।
(श० १०।१७)

सोरठा

३८. केवल दुख नहिं होय, वलि केवल पिण सुख नहीं।
अदुख असुख अवलोय, अर्थ पन्नवणा में इसो।।

वा०—वेदना-पद ते पन्नवणा नां पैंतीसमा पद नै विषे कह्यो छै ते देखाड़े छै—

वा०—'वेयणापयं भाणियव्वं' ति वेदनापदं च प्रज्ञापनायां पञ्चत्रिंशत्तमं तच्च लेशतो दर्श्यते।
(वृ० प० ४९७)

३९. नारक हे भगवंत! स्यूं वेदै शीत वेदना।
तथा उष्ण वेदंत, कै शीत उष्ण वेदैति कै?

४०. जिन कहै शीत वेदंत, एम उष्ण पिण वेदियै।
पिण ते नारक जंत, शीतोष्णा वेदै नथी।।

४१. असुरकुमार सुजोय, वेदै ए त्रिहुं वेदना।
एवं जावत सोय, कहिवुं वैमानिक लगै।।

वा०—इहां वृत्ति में कह्यो—नारक नें शीत वेदना अनें उष्ण वेदना, पिण शीतोष्णा वेदना नथी। एहनों पाठ लिख्यो ते तो शुद्ध। एवं वेदना पद भणवो। अनें आगल कह्यो—एवमसुरादयो वैमानिकांता: असुरकुमार थी वैमानिक तक इमज जाणवो, एहवो कह्यं। "पन्नवणा सूत्रे नारक में प्रथम दोय वेदना कही

वा०—नेरइयाणं भंते! किं सीयं वेयणं वेयंति? गोयमा! सीयंपि वेयणं वेयंति एवं उसिणंपि णो सीओसिणं एवं सुरादयो वैमानिकान्ता:
(वृ० प० ४९७)

*लय: कुंकुवर्णी हुंती रे देही

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असुरकुमार में तीन कही। एवं जाव वेमाणिया इम कह्यु। ते माटे सूत्रे कह्यु ते सत्य अनें सूत्र थी न मिलैं ते वृत्ति विरुद्ध जाणवी।" (ज० स०)

४२. इम वेदन च्यार प्रकार, द्रव्य खेत्र काल भाव थी।
ए चिहुं नों विस्तार, कहियै छै ते सांभलो।।

४३. नारक आदिक तास, पुद्‌गल द्रव्य संबंध थी।
वेदन द्रव्य विमास, चउवीसूं दंडक विषे।।

४४. नारक आदि विचार, क्षेत्र तणांज संबंध थी।
क्षेत्र वेदना धार, चउवीसूं दंडक विषे।।

४५. नारक आदि कहेह, तसु भव काल संबंध थी।
काल वेदना लेह, दंडक चउवीसूं विषे।।

४६. कर्म वेदना जेह, तेहनां उदय थकी जिके।
वेदन प्रति वेदेह, भाव वेदन सहु दंडके।।

४७. तथा वेदना तीन, प्रथम शरीरी वेदना।
मानसिक फुन चीन, तीजी शरीर-मानसिक।।

४८. नारक में त्रिहुं पाय, एवं जाव वेमाणिया।
णवरं विशेष ताय, एकेंद्री विकलेन्द्रिये।।

४९. पांच थावर में पेख, फुन तीनूं विकलेंन्द्रिया।
वेदन वेदै एक, शारीरिक वेदन तसु।।

५०. तथा वेदना तीन, धुर साता नीं वेदना।
द्वितिय असाता चीन, तीजी सात-असात नी।।

५१. सहु संसारी मांय, आखी ए त्रिण वेदना।
निमल विचारो न्याय, श्री जिन वचन प्रमाण छै।।

५२. तथा वेदना तीन, प्रथम दुख नीं वेदना।
द्वितीय सुख नी चीन, तृतिय अदुख-असुख तणी।।

५३. सर्व संसारिक जात, वेदै ए त्रिहुं वेदना।
सुख-दुख सात-असात, तिणमें एह विशेष छै।।

५४. अनुक्रमे करि जेह, कर्म वेदनीनांज दल।
उदय पामिया तेह, अनुभव सात असात ही।।

५५. फुन सुख-दुःख कहाय, अन्य जन उदीरतां छतां।
कर्म वेदनीं ताय, अनुभवरूपज जाणवूं।।

५६. तथा वेदना सोय, दाखी दोय प्रकार नीं।
आभ्युपगमिकी होय, औपक्रमिकी दूसरी।।

५७. आभ्युपगमिकी होय, अंगीकार पोतै करी।
वेदन वेदै सोय, आतापन लोचादि जिम।।

५८. औपक्रमिकी ताम, स्वयं उदय आव्यां प्रतै।
वा उदीरणा पाम, उदय आण वेदै तिको।।

५९. पंचेंद्रिय तिर्यंच, वलि मनुष्य में ए विहुं।
शेष दंडके संच, औपक्रमिकी वेदना।।

६०. फुन वेदन द्विविध, निदा कहियै चित्तवती।
द्वितीय अनिदा सिध, तेह अचित्तवती भणी।।

६१. नारक दश-असुरादि, पंचेंद्री तिर्यंच फुन।
मनुष्य व्यंतरा वादि, वेदै ए बिहुं वेदना।।

४२. 'एवं चउव्विहा वेयणा दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ' (वृ० प० ४९७)

४३. तत्र पुद्‌गलद्रव्यसम्बन्धात्द्रव्यवेदना (वृ० प० ४९७)

४४. नारकादिक्षेत्रसम्बन्धात्क्षेत्रवेदना (वृ० प० ४९७)

४५. नारकादिकालसम्बन्धात्कालवेदना (वृ० प० ४९७)

४६. शोकक्रोधादिभावसम्बन्धाद्भाववेदना, सर्वे संसारिणश्चतुर्विधामपि (वृ० प० ४९७)

४७. तथा 'तिविहा वेयणा—सारीरा माणसा सारीरमाणसा। (वृ० प० ४९७)

४८,४९. समनस्कास्त्रिविधामपि असञ्ज्ञिनस्तु शारीरीमेव (वृ० प० ४९७)

५०. तथा 'तिविहा वेयणा साया असाया सायासाया। (वृ० प० ४९७)

५१. सर्वे संसारिणस्त्रिविधामपि (वृ० प० ४९७)

५२. तथा तिविहा वेयणा—दुक्खा सुहा अदुक्खमसुहा (वृ० प० ४९७)

५३. सर्वे त्रिविधामपि, सातासातसुखदुःखयोश्चायं विशेषः (वृ० प० ४९७)

५४. सातासाते अनुक्रमेणोदयप्राप्तानां वेदनीयकर्मपुद्‌गलानामनुभवरूपे (वृ० प० ४९७)

५५. सुखदुःखे तु परोदीर्यमाणवेदनीयानुभवरूपे (वृ० प० ४९७)

५६. तथा 'दुविहा वेयणा—अब्भुवगमिया उवक्कमिया (वृ० प० ४९७)

५७. आभ्युपगमिकी या स्वयमभ्युपगम्य वेद्यते यथा साधवः केशोल्लुञ्चनातापनादिभिर्वेदयन्ति (वृ० प० ४९७)

५८. औपक्रमिकी तु स्वयमुदीर्णस्योदीरणाकरणेन चोदयमुपनीतस्य वेद्यस्यानुभवात् (वृ० प० ४९७)

५९. द्विविधामपि पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चो मनुष्याश्च शेषास्त्वौपक्रमिकीमेवेति (वृ० प० ४९७)

६०. तथा 'दुविहा वेयणा—निदा य अनिदा य' निदा—चित्तवती विपरीता त्वनिदेति (वृ० प० ४९७)

६१-६४. संज्ञिनो द्विविधामसंज्ञिनस्त्वनिदामेवेति (वृ० प० ४९७)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६२. ए जे सन्नीभूत, निदा वेदना तेहनें।
असन्नीभूत संजूत, वेदै अनिदा वेदना ।।
६३. सगला पृथ्वीकाय, असन्नी तसु निदा नथी।
अनिदा वेदै ताय, इम जावत चउरिंद्रिया ।।
६४. अमर जोतिषी जोय, फुन वैमानिक देवता।
तसु पिण वेदन दोय, न्याय तास निसुणो हिवै ।।
६५. माई मिथ्यावंत, वेदै अनिदा वेदना।
जेह निदा वेदंत, अमाई समदृष्टि ते ।।

वा०—इहां निदा ते नितरां—अतिही तथा निश्चय सम्यक् प्रकारे दियै चित्त जे वेदना नें विषे ते निदा सम्यक् विवेकवती इत्यर्थ। एह थी अनेरी ते अनिदा। चित्त विकला चित्त रहित सम्यक् विवेक रहित। नेरइया सन्नीभूत ते निदा वेदना वेदै, असन्नीभूत ते अनिदा वेदना वेदै। १० भवनपति, व्यंतर पिण इमहिज कहिवा। पांच थावर, तीन विकलेंद्री अनिदा वेदना वेदै। तिर्यंच पंचेंद्री नैं सन्नी मनुष्य ते निदा वेदना वेदै, असन्नी ते अनिदा वेदणा वेदै। जोतिषी, वैमानिक तिहां जे मायावंत मिथ्यादृष्टि ऊपनां छै, ते मिथ्यादृष्टि माटे तत्त्व विराधना थकी अज्ञान तप थकी अम्हे इहां ऊपनां छां इम सम्यक् प्रकारे न जाणै ते माटै अनिदा वेदना वेदै। अनें जे माया रहित सम्यक् दृष्टि ऊपनां छै ते सम्यग् दृष्टिपणें करी यथावस्थित स्वरूप जाणै ते माटै निदा वेदना वेदै छै—वलि इहां पन्नवणा नें विषे द्वार गाथा छै तिका इम—

सीता य दव्व सारीरा सात तह वेदणा हवति दुक्खा।
अब्भुवगमोवक्कमिया निदा य अनिदा य णायव्वा[1] ।।

अधिकृत वाचना नें विषे गाथा पूर्वार्द्धं में कह्यो तिकोहीज दुख पर्यंत द्वार नों कथन कियो—वेयणापयं भाणियव्वं जाव नेरइयाणं भंते! किं दुक्खमित्यादि। एतो ए अधिकृत वाचना नें विषे भाख्यो ते कह्यूं। अनें अन्य वाचना नें विषे संपूर्ण गाथा कही। ते भणी तिहां अन्य वाचना नें विषे पिण कह्यो निदा य अनिदा य वज्जं।

६६. वेदन कर्म प्रसूत, तेह तणां प्रस्ताव थी।
वेदन हेतूभूत, प्रतिमा प्रति कहियै हिवै ।।

६६. वेदनाप्रस्तावाद्वेदनाहेतुभूतां प्रतिमां निरूपयन्नाह—
(वृ० प० ४६७)

६७. *हे भगवंत! मासिकी प्रतिमा-प्रतिपन्न जे अणगारो रे।
स्नानादिक परिकर्म वर्जवै, छांड्यो तनु-श्रृंगारो रे ।।

६७. मासियण्णं भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स, निच्चं वोसट्ठकाए।
'वोसट्ठे काए' त्ति व्युत्सृष्टे स्नानादिपरिकर्म्मवर्जनात्।
(वृ० प० ४६८)

६८. त्यक्तदेह उपसर्ग सहंतो, जिम दशाश्रुतखंध मांह्यो रे।
यावत आज्ञा करि आराधक, सहु विस्तार कहायो रे ।।

६८. चियत्तदेहे जे केइ परीसहोवसग्गा उप्पज्जंति… जहा दसाहिं (७।२६-३५) जाव (७) आराहिया भवइ।
(श० १०।१८)

सोरठा

६९. आराधना इम होय, जिन आज्ञा करिनें कह्यो।
ते माटे अवलोय, आराधन कहियै हिवै ।।

६९. आराहिया भवतीत्युक्तमथाराधना: यथा न स्याद्यथा च स्यात्तद्दर्शयन्नाह— (वृ० प० ४६८)

७०. *भिक्षु अन्यतर एक अकारजसेवी विण आलोयो रे।
काल कियां नहिं तास आराधन, आलोयां सुध होयो रे ।।

७०. भिक्खू य अण्णयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता से णं तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा, से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा।
(श० १०।१९)

---

*लय : कुंकुवर्णी हुंती रे देही
१. पन्नवणा ३५।१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरठा

७१. पडिसेवित्ता सोय, वाचनांतरे इम कह्यु ।
पडिसेविज्जा होय, प्रतिसेव्य सेवी करी ।।

७२. *भिक्षु अन्यतर एक अकारजसेवी इम मन धारै रे ।
मरण अवसरे ए स्थानक नें, आलोवीस जिवारै रे ।।

७३. तेह अकरवा जोग स्थानक नें, आलोयां विण कालो रे ।
कीधो तास आराधन नांहीं, दाखै दीनदयालो रे ।।

७४. तेह अकरवा जोग स्थानक नैं, अंत समय आलोई रे ।
काल कियां तेहनैं आराधना, ए जिन वच अवलोई रे ।।

७५. भिक्षु अन्यतर एक अकारजसेवी एम विचारै रे ।
जे श्रावक पिण काल करीनैं, सुरलोके संचारै रे ।।

७६. तो हूं स्यूं व्यंतर नहीं होइस, इम चिंतव ते स्थानो रे ।
आलोयां विण काल कियो तो, आराधक मति जानो रे ।।

७७. ते स्थानक आलोइ पडिकमी, काल कियो ते संतो रे ।
आराधक कहियै छै तेहनैं, सेवं भंते ! सेवं भंतो ! रे ।।

७८. दशम शते ए द्वितीय उद्देशक, बे सौ अठारमीं ढालो रे ।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' मंगलमालो रे ।।

दशमशते द्वितीयोद्देशकार्थः ।।१०।२।।

७१. 'पडिसेवित्त' त्ति अकृत्यस्थानं प्रतिषेविता भवतीति गम्यं वाचनान्तरे त्वस्य स्थाने 'पडिसेविज्ज' त्ति दृश्यते (वृ० प० ४९८)

७२. भिक्खू य अण्णयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता तस्स णं एवं भवइ—पच्छा वि णं अहं चरिमकालसमयंसि एयस्स ठाणस्स आलोएस्सामि

७३. से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा

७४. से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा । (श० १०।२०)

७५. भिक्खू य अण्णयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता तस्स णं एवं भवइ—जइ ताव समणोवासगा वि कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ।

७६. किमंग ! पुण अहं अणपन्नियदेवत्तणंपि नो लभिस्सामि त्ति कट्टु से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा,

७७. से णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा । (श० १०।२१)
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । (श० १०।२२)

ढाल : २१९

दूहा

१. द्वितीय उद्देशक अंत में, देवपणो आख्यात ।
तृतीय उद्देशक हिव कहूं, अमर तणों अवदात ।।

२. नगर राजगृह जाव इम, गौतम एम वदंत ।
आत्म-ऋद्धि स्व शक्ति करी, सुर सामान्य भदंत !

३. जाव च्यार अरु पंच जे, सामान्य सुर नां ताय ।
वासंतर प्रति लंघ नैं, वीतिक्कंते ते जाय ?

४. च्यार पंच वासा थकी, उपरंत सुर सामान ।
जावै पर शक्ती करी ? जिन कहै हंता जान ।।

१. द्वितीयोद्देशकान्ते देवत्वमुक्तम्, अथ तृतीये देवस्वरूपमभिधीयते (वृ० प० ४९८)

२. रायगिहे जाव एवं वयासी—आइड्ढीए णं भंते ! देवे 'आइड्ढीए णं' ति आत्मर्द्धया स्वकीयशक्त्या (वृ० प० ४९९)

३. जाव चत्तारि, पंच देवावासंतराइं वीतिक्कंते 'देवे' त्ति सामान्यः·······लंघितवान् (वृ० प० ४९९)

४. तेण परं परिड्ढीए ?
हंता गोयमा !

---

* लय : कुंकुवर्णी हुंतीं रे देही

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. एवं असुरकुमार पिण, णवरं इतो विशेख।
लंघै वासा असुर नां, शेष तिमज संपेख।।
६. इम इण अनुक्रमे करी, यावत थणियकुमार।
इम व्यंतर नैं जोतिषी, वैमानिक सुविचार।।

*प्रश्न गोतम तणां ए। (ध्रुपदं)

७. प्रभु! देव अल्प ऋद्धि नों धणी ए, महर्द्धिक सुर विच होय।
जावै? तब जिन कहै ए, अर्थ समर्थ नहिं कोय।।

८. प्रभु! देव सरीखी-ऋद्धि नों धणी ए,
सम ऋद्धि सुर विच होय।
जावै? तब जिन कहै ए, अर्थ समर्थ नहिं कोय।।
९. ते देव प्रमादी हुवै वली ए, तो सरिखी ऋद्धिवंत देव।
तास विच में थई ए, जावै छै स्वयमेव।।
१०. ते देव विमोह उपजायनैं ए, जावा समर्थ भगवंत।
धूंअर प्रमुख करी ए, अंधकार करि जंत?

वा०—धूंअर प्रमुख अन्धकार करिवै करी मोह प्रति उपजावी नें ते अण-देखतां छतां ईज देव प्रतै उल्लंघी नें जाय।

११. अथवा धूंअर प्रमुखे करी ए, अंधकार विण कीध।
तास विमोह्यां विना ए, जावा समर्थ सीध?
१२. जिन भाखै विमोह्यां विना ए, जावा समर्थ न कोय।
विमोह उपजाय नैं ए, जावा समर्थ होय।।
१३. ते प्रभु! स्यूं पहिलां थको ए, विमोह उपजाई जाय।
कै पहिलां उल्लंघ नैं ए, पछै विमोह उपाय?
१४ जिन कहै पहिलां विमोह नैं ए, पछै उलंघी जाय।
पिण पहिलां उल्लंघ नैं ए, पछै विमोहै नांय।।

१५. प्रभु! महाऋद्धिवंत देवता ए, अल्पऋद्धिवंत सुर बीच।
जायै मध्योमध्य थई ए? जिन कहै हंत समीच।।

१६. ते प्रभु! स्यूं विमोही करी ए, जावा समर्थ जेह।
तथा विमोह्यां विना ए, महर्द्धिकगमन करेह?
१७. जिन भाखै विमोही करी ए, जावा समर्थ जाण।
वलि विमोह्यां विना ए, समर्थ तेह पिछाण।।
१८. ते स्यूं प्रथम विमोह नैं ए, पछै उलंघी जाय।
तथा पहिलां जई ए, पछै विमोह उपाय?
१९. जिन कहै प्रथम विमोह नैं ए, पछै उलंघी जाय।
तथा पहिलां जई ए, पछै विमोह उपाय।।

२०. अल्प ऋद्धिवंत असुर प्रभु! ए, असुर महऋद्धिक विच होय-
जावै? तब जिन कहै ए, अर्थ समर्थ नहिं कोय।।

५. एवं असुरकुमारे वि, नवरं—असुरकुमारावासंतराइं, सेसं तं चेव

६. एवं एएणं कमेणं जाव थणियकुमारे, एवं वाणमंतरे जोइसिए वेमाणिए जाव तेण परं परिड्ढीए। (श० १०।२३)

७. अप्पिड्ढीए णं भंते! देवे महिड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा?
नो इणट्ठे समट्ठे। (श० १०।२४)

८. समिड्ढीए णं भंते! देवे समिड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा?
नो इणट्ठे समट्ठे।

९. पमत्तं पुण वीइवएज्जा। (श० १०।२५)

१०. से भंते! किं विमोहित्ता पभू?
महिकाद्यन्धकारकरणेन मोहमुत्पाद्य अपश्यन्तमेव तं व्यतिक्रामेदिति भावः (वृ० प० ४९९)

११. अविमोहित्ता पभू?

१२. गोयमा! विमोहित्ता पभू, नो अविमोहित्ता पभू। (श. १०।२६)

१३. से भंते! किं पुव्विं विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा? पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा?

१४. गोयमा! पुव्विं विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा, नो पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा। (श० १०।२७)

१५. महिड्ढीए णं भंते! देवे अप्पिड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा?
हंता वीइवएज्जा। (श० १०।२८)

१६. से भंते! किं विमोहित्ता पभू? अविमोहित्ता पभू?

१७. गोयमा! विमोहित्ता वि पभू, अविमोहित्ता वि पभू। (श० १०।२९)

१८. से भंते! किं पुव्विं विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा? पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा?

१९. गोयमा! पुव्विं वा विमोहेत्ता पच्छा वीइवएज्जा, पुव्विं वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा। (श० १०।३०)

२०. अप्पिड्ढिए णं भंते! असुरकुमारे महिड्ढियस्स असुरकुमारस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा?
नो इणट्ठे समट्ठे।

*लय : छट्ठो व्रत रयणी तणो ए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१. समचै देव तणां कह्या ए, तीन आलावा तेह।
असुर नां तिम इहां ए, आलावा तीन कहेह[1] ॥
२२. अल्पऋद्धिक महाऋद्धिक नों ए, प्रथम आलावो पेख।
समर्द्धिक समऋद्धि नों ए, दूजो आलावो देख ॥
२३. महर्द्धिक अल्पऋद्धिक तणों ए, तीजो आलावो ताय।
समुच्चय सुर तणां ए, तेम असुर नां थाय ॥
२४. वाणव्यंतरा जोतिषी ए, वैमानिक इम जाण।
आलावा एहनां ए, तीन-तीन पहिछाण ॥
२५. प्रभु ! देव अल्पऋद्धि नों धणी ए, महर्द्धिकसुरी विच होय-
जावै ? तब जिन कहै ए, अर्थ समर्थ नहिं कोय ॥

२६. प्रभु! देव सरीखी ऋद्धिनों धणी ए, समऋद्धि सुरी विच होय-
जावै ? तब जिन कहै ए, अर्थ समर्थ नहिं कोय ॥
२७. जो प्रमादी ते देवी हुवै ए, तो तसु विच होय जाय।
आलावो दूसरो ए, पूर्व कह्यो ज्यूं कहाय ॥
२८. प्रभु ! देवता महाऋद्धि नों धणी ए,
अल्प ऋद्धि सुरी विच होय-
जावै ? तब जिन कहै ए, हंता समर्थ जोय ॥
२९. इम असुर व्यंतर जोतिषी तणां ए, तीन-तीन आलाव।
वैमानिक नां वली ए, सुर सुरी बीच कहाव[2] ॥
३०. प्रभु! देवी अल्प ऋद्धिवंत छै ए, महर्द्धिक सुर विच होय-
जावै ? तब जिन कहै ए, अर्थ समर्थ नहिं कोय ॥
३१. प्रभु! देवी सरीखी ऋद्धिवंत छै ए, समऋद्धिसुर विच होय।
आलावो दूसरो ए, पूर्ववत अवलोय ॥
३२. प्रभु! देवी महाऋद्धिवंत छै ए, अल्प-ऋद्धि सुर विच होय-
जावै ? तब जिन कहै ए, हंता समर्थ जोय ॥
३३. इम असुर व्यंतर जोतिषी तणां ए, तीन-तीन आलाव।
वैमानिक नां वली ए, देवो देव-विच जाय ॥
३४. प्रभु! देवी अल्प-ऋद्धिवंत छै ए, महर्द्धिक देवी विच होय-
जावै ? तब जिन कहै ए, अर्थ समर्थ नहिं कोय ॥
३५. इम सम ऋद्धि देवी समऋद्धि विचै ए, जावा समर्थ नांय।
प्रमत्तपणैं जो हुवै ए, तो पूर्ववत विच जाय ॥
३६. स्यूं देवी महाऋद्धिवंत छै ए, अल्पऋद्धि देवी विच होय-
जावै ? तब जिन कहै ए, हंता समर्थ जोय ॥
३७. इमहिज असुरकुमार नां ए, कहिवा तीन आलाव।
व्यंतर जोतिषी तणां ए, तीन आलाव कहाव ॥

२१-२३. एवं असुरकुमारेण वि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जहा ओहिएणं देवेणं भणिया।
'एवं असुरकुमारेण वि तिन्नि आलावग' त्ति अल्पर्द्धिकमहर्द्धिकयोरेकः समर्द्धिकयोरन्यः महर्द्धिकाल्पर्द्धिकयोरपर इत्येवं त्रयः। (वृ० प० ४९९)

२४. वाणमंतर-जोइसियवेमाणिएणं एवं चेव।
(श० १०।३१)

२५. अप्पिड्ढिए णं भंते ! देवे महिड्ढियाए देवीए मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे। (श० १०।३२)

२६-२९. समिड्ढिए णं भंते ! देवे समिड्ढियाए देवीए मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
एवं तहेव देवेण य देवीए य दंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणियाए। (श० १०।३३)

३०-३३. अप्पिड्ढिया णं भंते ! देवी महिड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
एवं एसो वि ततिओ दंडओ भाणियव्वो जाव—
महिड्ढिया वेमाणिणी अप्पिड्ढियस्स वेमाणियस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
हंता वीइवएज्जा। (श० १०।३४,३५)

३४. अप्पिड्ढिया णं भंते ! देवी महिड्ढियाए देवीए मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ? नो इणट्ठे समट्ठे।
३५. एवं समिड्ढिया देवी समिड्ढियाए देवीए तहेव।

३६. महिड्ढिया वि देवी अप्पिड्ढियाए देवीए तहेव।

३७. एवं एक्केक्के तिण्णि-तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जाव— (श० १०।३६)

---

१. इसके बाद अंगसुत्ताणि भाग २ श० १०।२१ में 'एवं जाव थणियकुमारेणं' पाठ है। पर इसकी जोड़ नहीं है।
२. इस ढाल की गाथा २६ से २९ तक की जोड़ विस्तृत पाठ के आधार पर की हुई है। उसका संकेत न अंगसुत्ताणि में है और न वृत्ति में है। इसलिए इन गाथाओं के सामने अंगसुत्ताणि का संक्षिप्त पाठ ही उद्धृत किया गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३८. वैमानिक नां पिण वली ए, तीन आलावा एम।
कहूं हिव तीसरो ए, सांभलज्यो धर प्रेम।।
३९. मर्हद्धिक सुरी वैमानिक तणी ए, अल्पऋद्धि नीं ताय।
वैमानिक नीं सुरी ए, तास विचै होय जाय।।
४०. ते प्रभु! स्यूं विमोही करी ए, जावा समर्थ तेह।
तिमज कहिवो सहू ए, पूर्वली परै जेह।।
४१. यावत प्रथम उलंघ नैं ए, पछै विमोह उपजाय।
सुरी ते सुरी विचै ए, तुर्य दंडक ए थाय।।
४२. दशम शते देश तीसरो ए, बे सौ गुनीसमीं ढाल।
भिक्षु दीर्घ राय थी ए, 'जय-जश' हरष विशाल।।

३९. महिड्ढिया णं भंते! वेमाणिणी अप्पिड्ढियाए वेमाणिणीए मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा?
हंता वीइवएज्जा। (श० १०।३७)
४०. सा भंते! किं विमोहित्ता पभू? अविमोहित्ता पभू?
गोयमा! विमोहित्ता वि पभू, अविमोहित्ता वि पभू। तहेव
४१. जाव पुव्विं वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा। एए चत्तारि दंडगा। (श० १०।३८)

ढाल : २२०

दूहा

१. पूर्वे देव क्रिया कही, विस्मयकारिणी तेह।
विस्मय करि अन्य वस्तु नों, गोतम प्रश्न करेह।।
२. अश्व दोड़तो हे प्रभु! 'खु खु' शब्द करंत।
ए किण कारण स्वाम जी! भाखै तब भगवंत।।
३. अश्व दोड़ता नैं तदा, हृदय कालजा बीच।
कर्कट नामैं वायू ते, उपजै कर्म कलीच।।
४. ते कर्कट वायू करी, अश्व दोड़तो एह।
'खु खु' शब्द करै अछै, भाखै जिन गुणगेह।।
५. पूर्वे 'खु खु' रव कह्यो, ते भाषारूपेह।
तिणसूं हिव भाषा कहूं, वलि भाषणीयपणेह।।
*चतुर नर गोयम प्रश्न उदार।। (ध्रुपदं)
६. गोतम पूछै वीर नैं रे, अथ हिव हे भगवान!
आश्रयणीय पदार्थ नैं रे, अम्है आश्रयस्यूं जान।
७. अम्है सुयस्यूं वलि अम्है ऊभो रहिस्यूं धार।
अम्हे वलि इहां बैसस्यूं, आडो होयस्यूं संथार।।
८. इत्यादिक भाषा तिका, प्रज्ञापनी पिछान।
भाषा परूपण जोग छै? ते प्रज्ञापनी जान।।

१. अनन्तरं देवक्रियोक्ता, सा चातिविस्मयकारिणीति विस्मयकरं वस्त्वन्तरं प्रश्नयन्नाह—
(वृ० प० ४९९)
२. आसस्स णं भंते! धावमाणस्स किं 'खु-खु' त्ति करेति?
३. गोयमा! आसस्स णं धावमाणस्स हिययस्स य जगस्स य अंतरा एत्थ णं 'कब्बडए नामं' वाए संमुच्छइ।
'हिययस्स य जगयस्स य' त्ति हृदयस्य यकृतश्च—दक्षिणकुक्षिगतोदरावयवविशेषस्य (वृ० प० ५००)
४. जेण आसस्स धावमाणस्स 'खु-खु' त्ति करेति।
(श० १०।३९)
५. 'खु-खु' त्ति प्ररूपितं तच्च शब्दः, स च भाषारूपोऽपि स्यादिति भाषाविशेषान् भाषणीयत्वेन प्रदर्शयितुमाह—
(वृ० प० ५००)
६. अह भंते! आसइस्सामो
'आसइस्सामो' त्ति आश्रयिष्यामो वयमाश्रयणीयं वस्तु
(वृ० प० ५००)
७. सइस्सामो, चिट्ठिस्सामो, निसिइस्सामो तुयट्टिस्सामो
'सइस्सामो' त्ति शयिष्यामः 'चिट्ठिस्सामो' त्ति उर्ध्वस्थानेन स्थास्यामः''''तुयट्टिस्सामो' त्ति संस्तारके भविष्यामः (वृ० प० ५००)
८. पण्णवणी णं एस भासा?
इत्यादिका भाषा किं प्रज्ञापनी? (वृ० प० ५००)

लय : राम पूछे सुग्रीव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा० —"इहां बैसस्यूं, सूवस्यूं इत्यादिक अनागत काल आश्रयी कहै, जद तो निश्चयकारणी हुवै। पिण ए वर्त्तमान काल में बैसण, सूवण का भाव, तिवारै कहै—हिवड़ां बेसूं, शयन करूं छूं अथवा ए आश्रयवा जोग वस्तु हिवड़ां आश्रूं छूं, इत्यादि कह्यां निश्चयकारिणी नहीं, ए बोलवा जोग छै ते माटै। ए भाषा नें प्रज्ञापनी कहियै, पिण मृषा न कहियै। वर्तमान रै समीप ए अनागत काल छै, ते माटैवर्तमान कार्य नें विषे आसइस्सामो ए अनागत नों पाठ कह्यु जणाय छै।" (ज० स०)

९. उपलक्षण पर वचन ए, ते कारण थी जाण।
एहवी भाषाजात नों, पूछयो प्रश्न पिछाण॥
१०. वलि भाषा नीं जात नें, परूपवा योग जेह।
पूछै बे गाथा करी, आमंत्रणी आदेह[1]॥
११. हे देवदत्त! आमंत्रणी, इत्यादिक अवधार।
सत्य असत्य मिश्र नहीं, व्यवहार वृत्ति मभार॥

१२. आज्ञापनी कारज विषे, प्रवर्त्तावणहार।
कहै अमुको कारज करो, घट कर इत्यादि विचार॥
१३. याचणी मांगे वस्तु नें, पूछणी अर्थ पूछेह।
जेह अर्थ जाण्यो नहीं, जाणवा अर्थे जेह॥

१४. प्रज्ञापनी सुविनीत नें, उपदेशरूप प्रयोग।
निवर्त्तं प्राणी-वध थकी, ते दीर्घायु अरोग॥

१५. प्रत्याख्यानी जे हुवै, मांगे तास निषेध।
देण तणी इच्छा नहीं, मति मांगो इम भेद॥

१६. इच्छा-अनुलोमा इसी, बोलै इच्छा लार।
किण कह्यो—ए कारज करां? हां, मुझ पिण रुचिकार॥

९.१०. अनेन चोपलक्षणपरवचनेन भाषाविशेषाणामेवंजातीयानां प्रज्ञापनीयत्वं पृष्टमथ भाषाजातीनां तत्पृच्छति—'आमंतणि' गाहा (वृ० प० ५००)

११. तत्र आमन्त्रणी' हे देवदत्त! इत्यादिका, एषा च किल वस्तुनोऽविधायकत्वादनिषेधकत्वाच्च सत्यादिभाषात्रयलक्षणवियोगतश्चासत्यामृषेति प्रज्ञापनादावुक्ता (वृ० प० ५००)

१२. 'आणवणि' त्ति आज्ञापनी कार्ये परस्य प्रवर्त्तनी यथा घटं कुरु (वृ० प० ५००)

१३. 'जायणि' त्ति याचनी—वस्तुविशेषस्य देहीत्येवंमार्गणरूपा···'पुच्छणी य' त्ति प्रच्छनी—अविज्ञातस्य संदिग्धस्य वाऽर्थस्य ज्ञानार्थं तदभियुक्तप्रेरणरूपा (वृ० प० ५००)

१४. पण्णवणि' त्ति प्रज्ञापनी—विनेयस्योपदेशदानरूपा यथा—
पाणवहाओ नियत्ता भवंति दीहाउया अरोगा य (वृ० प० ५००)

१५. 'पच्चक्खाणीभास' त्ति प्रत्याख्यानी याचमानस्यादित्सा मे अतो मां मा याचस्वेत्यादि प्रत्याख्यानरूपा भाषा (वृ० प० ५००)

१६. 'इच्छाणुलोम' त्ति प्रतिपादयितुर्या इच्छा तदनुलोमा—तदनुकूला इच्छानुलोमा यथा कार्ये प्रेरितस्य एवमस्तु ममाप्यभिप्रेतमेतदिति वचः (वृ० प० ५००)

---

१. आमंतणी आणवणी, जायणी तह पुच्छणी य पण्णवणी।
पच्चक्खाणी भासा, भासा इच्छाणुलोमा य॥
अणभिग्गहिया भासा, भासा य अभिग्गहम्मि बोद्धव्वा।
संसयकरणी भासा, वोयडमव्वोयडा चेव॥

इन दो संग्रह गाथाओं में असत्यामृषा—व्यवहारभाषा के बारह प्रकार निरूपित हैं। प्रज्ञापना के भाषापद में इनका निरूपण इसी प्रकार हुआ है। प्रज्ञापनी भाषा के प्रस्तुत प्रकरण में प्रासंगिक रूप से ये संग्रहगाथाएं लिखी हुई थीं। किसी प्रतिलिपिकार ने इनका मूलपाठ में समावेश कर दिया। उत्तरकाल में भी यह परम्परा इसी रूप में चलती रही। वृत्तिकार ने भी मूल के साथ ही इनकी व्याख्या कर दी।

अंगसुत्ताणि भाग २ पृ० ४७३ में इनको पा० टि० (४) में उद्धृत किया है। उसी के आधार पर इनको जोड़ के साथ न रखकर टिप्पण में रखा गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७. अनभिग्रहिता जेहनों, अर्थ न होवै कोय।
डित्थ डवित्थवत शब्द नों, अर्थ नहीं छै सोय।।

१७. अणभिग्गहिया भासा' अनभिगृहीता—अर्थानभिग्रहेण योच्यते डित्थादिवत् (वृ० प० ५००)

१८. अभिग्रहिता भाषा इसी, अर्थ सहित छै एह।
घट वस्त्रादिक नीं परै, तास अर्थ समझेह।।

१८. 'भासा य अभिग्गहंमि बोद्धव्वा' भाषा चाभिग्रहे बोद्धव्या—अर्थमभिगृह्य योच्यते घटादिवत्
(वृ० प० ५००)

१९. संसयकरणी इक तणां, अर्थ बहू अवलोय।
सैंधव शब्द कह्यां छतां, पुरुष लवण हय होय।।

१९. 'संसयकरणी भास' त्ति याऽनेकार्थप्रतिपत्तिकरी सा संशयकरणी यथा सैन्धवशब्दः पुरुषलवणवाजिषु वर्त्तमान इति (वृ० प० ५००)

२०. वोयड़ व्याकृत स्पष्ट जे, लोक प्रसिद्ध पिछाण।
भाषा तणों प्रयोग ह्वै, गज अश्वादिक जाण।।

२०. 'वोयड' त्ति व्याकृता लोकप्रतीतशब्दार्था
(वृ० प० ५००)

२१. अवोयड ते प्रगट नहीं, शब्द अर्थ गम्भीर।
अथवा मन्मन अक्षरे, अर्थ न समझै तीर।।

२१. 'अव्वोयड' त्ति अव्याकृता—गम्भीरशब्दार्था मन्मनाक्षरप्रयुक्ता वाऽनाविर्भावितार्था (वृ० प० ५००)

२२. ए भाषा भगवंतजी ! प्रज्ञापनी कहाय?
स्पष्ट अर्थ प्रकटनपरा, मृषा न कहियै ताय?

२२. 'पन्नवणी णं' ति प्रज्ञाप्यतेऽर्थोऽनयेति प्रज्ञापनी—अर्थकथनी वक्तव्येत्यर्थः (वृ० प० ५००)
न एसा भासा मोसा?

२३. जिन कहै हंता गोयमा ! आश्रयस्यूं ए आदि।
जाव मृषा भाषा नहीं, सेवं भंते! सेवं भंते! साधि।।

२३. हंता गोयमा ! आसइस्सामो तं चेव जाव (सं० पा०)
न एसा भासा मोसा।
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति। (श० १०।४०,४१)

सोरठा

२४. निरर्थक वच ओलखाय, कहियै डित्थ डवित्थ भणी।
एम बतावा ताय, योग्य परूपण इम हुवै।।

२५. इहां पृच्छा अभिप्राय, आश्रयस्यूं ए आदि दे।
काल अनागत मांय, कार्य न थयां असत्य हुवै।।

२५. पृच्छतोऽयमभिप्रायः—आश्रयिष्याम इत्यादिका भाषा भविष्यत्कालविषया सा चान्तरायसम्भवेन व्यभिचारिण्यपि स्यात्···तथा (वृ० प० ५००)

२६. उत्तर तेहनों आर्य, निश्चयकारणी ए नहीं।
वर्त्तमान जे कार्य-काल मझे बोल्यां छतां।।

२७. वर्त्तमान रै जोग, बेसूं सोवूं इम कह्यां।
असत्य तणो न प्रयोग, इम नहिं निश्चयकारणी।।

२६,२७. उत्तरं तु 'हंता' इत्यादि इदमत्र हृदयम्—आश्रयिष्याम इत्यादिकाऽनवधारणत्वाद्वर्त्तमानयोगेनेत्येतद्विकल्पगर्भत्वात्···· (वृ० प० ५००)

२८. तथा पाठ में जाण, आसइस्सामो बहु वचन।
इक वच विषय पिछाण, ए बहु वच किण कारणैं।।

२९. उत्तर तेहनों एह, आतम विषे वलि गुरु विषे।
एकार्थ विषयेह, आज्ञा छै बहु वचन नीं।।

३०. तिण स्यूं भाषा एह, कहियै कहिवा योग्य ए।
तेहनुं नाम कहेह, प्रज्ञापनीज जाणवूं।।

२९,३०. गुरौ चैकार्थत्वेऽपि बहुवचनस्यानुमतत्वात्प्रज्ञापन्येव (वृ० प० ५००)

वा०—तथा आमंत्रणी आदि पिण वस्तु विषे विधि ते कार्य नो करिवो अनैं प्रतिषेध ते कार्य करिवा नों निषेध करिवो ए बिहुं नी कहिणहारी नहीं। पिण जे निरवद्य पुरुषार्थ साधनी प्रज्ञापनीज कहियै। प्रज्ञापनी कहितां ए भाषा बोलवा योग्य जाणवी।

वा०—तथाऽऽमन्त्रण्यादिकाऽपि वस्तुनो विधिप्रतिषेधाविधायकत्वेऽपि या निरवद्यपुरुषार्थसाधनी सा प्रज्ञापन्येवेति। (वृ० प० ५००)

३१. *दशम शते तीजो कह्यो, दोयसौ बीसमीं ढाल।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' हरष विशाल।।

३१. दशमशते तृतीयोद्देशकः (वृ० प० ५००)

*लय : राम पूछै सुग्रीव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : २२१

दूहा

१. तृतीय उद्देशक देव नीं, वक्तव्यता आख्यात।
तुर्य उदेशे पिण वली, अमर तणों अवदात॥

२. तिण काले नें तिण समय, वाणिय ग्राम पिछाण।
नाम नगर तस वण्णओ, दूतिपलास उद्यान॥

३. त्यां श्री वीर समोसर्‍या, यावत परषद जान।
सुण वाणी स्वामी तणीं, पोंहती निज-निज स्थान॥

४. तिण काले नें तिण समय, वीरप्रभु नों सार।
अंतेवासी ज्येष्ठ वर, इंद्रभूति अणगार॥

५. यावत जानू ऊर्द्ध करि, अधो सीस वर ध्यान।
संजम तप करि आतमा भावत विचरै जान॥

६. तिण काले नें तिण समय, स्वाम तणों सुखकार।
अंतेवासी गुणनिलो, सामहत्थि अणगार॥

७. प्रकृति स्वभावे भद्र वर, जिम रोहो गुणवंत।
यावत जानू ऊर्द्ध करि, यावत मुनि विचरंत॥

८. *सामहत्थि नें तिण समय गुणधारी रे, कांइ जात—प्रवर्त्ती जाण।
मुनि सुखकारी रे।
श्रद्धा ते इच्छा कही गुणधारी रे, प्रश्न तणी पहिछाण।
मुनि सुखकारी रे।

९. यावत ऊठी आवियो गुणधारी रे, भगवंत गोतम पास।
तीन प्रदक्षिणा दे वदै गुणधारी रे, जाव करी पर्युपास॥

१०. छै भगवंत ! चमर तणैं गुणधारी रे, कांइ असुर इंद्र नें एव।
असुर तणैं राजा तणैं गुणधारी रे, त्रायत्रिंसगा देव॥

सोरठा

११. त्रायस्त्रिंशगा जाण, सुर तेतीस सुहामणा।
मंत्री तुल्य पिछाण, एहवूं आख्यो वृत्ति में॥

१२.*गोतम कहै हंता अत्थि गुणधारी रे, ते किण अर्थे स्वाम।
त्रायत्रिंसगा चमर नैं गुणधारी रे, आप कह्या अभिराम ?

१३. इम निश्चै गोयम ! कहै गुणधारी रे, हे सामहत्थि अणगार॥
तिण कालै नें तिण समय गुणधारी रे, इण जंबूद्वीप मझार॥

१४. भरत क्षेत्र मांहे भली गुणधारी रे, कांकदी अभिधान।
नगरी ऋद्ध समृद्ध छै गुणधारी रे, तसु वर्णन पहिछान॥

---

१. तृतीयोद्देशके देववक्तव्यतोक्ता, चतुर्थेप्यसावेवोच्यते
(वृ० प० ५०१)

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियग्गामे नयरे होत्था—
वण्णओ। दूतिपलासए चेइए।

३. सामी समोसढे जाव परिसा पडिगया।
(श० १०।४२)

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावी-
रस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे

५. जाव उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं
तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। (श० १०।४३)

६. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावी-
रस्स अंतेवासी सामहत्थी नामं अणगारे

७. पगइभद्दए जहा रोहे जाव (सं० पा०) उड्ढंजाणू
जाव विहरइ। (श० १०।४४)

८. तए णं से सामहत्थी अणगारे जायसड्ढे

९. जाव उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव भगवं गोयमे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं तिक्खुत्तो
जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी—
(श० १०।४५)

१०. अत्थि णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो
तावत्तीसगा देवा। तावत्तीसगा देवा ?

११. 'तायत्तीसग' त्ति त्रायस्त्रिंशा—मन्त्रिविकल्पाः
(वृ० प० ५०२)

१२. हंता अत्थि। (श० १०।४६)
से केणट्ठेणं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमार-
रण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

१३. एवं खलु सामहत्थी ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव
जंबुद्दीवे दीवे

१४. भारहे वासे कायंदी नामं नयरी होत्था—वण्णओ।

---

*लय : मोजी तुररा रे

१. अंगसुत्ताणि भाग २ श० १०।४६ में यहां 'तावत्तीसगा' पाठ है। 'तायत्तीसगा' को पाठान्तर में लिया गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५. तिण काकंदी नगरी विषे गुणधारी रे, मित्र हुंता तेतीस।
माहोमांहि सखाइया गुणधारी रे, करण सहाय सरीस।।

१५. तत्थ णं कायंदीए नयरीए तायत्तीसं सहाया
त्रयस्त्रिंशत्परिमाणाः 'सहायाः' परस्परेण साहायककारिणः (वृ० प० ५०२)

१६. गाथापति कुटुंब तणां गुणधारी रे, कांइ नायक ते तेतीस।
मुनी सुखकारी रे।
श्रमणोपासक छै सहू मुनिराया रे, महा ऋद्धिवंत जगीस।।
सुण मुनिराया रे।।

१६. गाहावई समणोवासया परिवसंति—अड्ढा
'गृहपतयः' कुटुम्बनायकाः (वृ० प० ५०२)

१७. यावत अपरिभूत छै मुनिराया रे, कांइ धन करिनैं अवलोय।
सुण मुनिराया रे।
पराभवि कोई नां सकै मुनिराया रे, कांइ गंज सकै नहिं कोय।।
सुण मुनिराया रे।।

१७. जाव बहुजणस्स अपरिभूता

१८. जाण्या जीव अजीव नैं मुनिराया रे, कांइ पुन्य पाप पहिछान।
वर्णव तास वखाणवो मुनिराया रे, यावत विचरै जान।।

१८. अभिगयजीवाजीवा, उवलद्धपुण्णपावा जाव……
विहरंति। (श० १०।४७)

१९. तेतीस सहाया तिण समय मुनिराया रे, कांइ गाथापती गिणाय।
कुटंब तणां नायक तिके मुनिराया रे, कांइ समणोपासक ताय।।

१९. तए णं ते तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया

२०. पहिलां उत्कृष्ट भाव थी मुनिराया रे, उग्र कह्या सुखकार।
वलि भला अनुष्ठान थी मुनिराया रे, कांइ उग्र विहार आचार।।

२०. पुव्विं उग्गा, उग्गविहारी
'उग्ग' त्ति उग्राः उदात्ता भावतः 'उग्गविहारि' त्ति उदात्ताचाराः सदनुष्ठानत्वात् (वृ० प० ५०२)

२१. संविग्गा शिवगमन नीं मुनिराया रे, कांइ इच्छा तसु अभिलाष।
तथा डरै संसार थी मुनिराया रे, भ्रमण तणो भय भास।।

२१. संविग्गा
'संविग्ग' त्ति संविग्नाः—मोक्षं प्रति प्रचलिताः संसारभीरवो वा (वृ० प० ५०२)

२२. संविग्गविहारी ते वली मुनिराया रे, कांइ संविग्ग तसु अनुष्ठाण।
रूड़े अनुष्ठाने रता मुनिराया रे, कांइ पूरव काल पिछाण।।

२२. संविग्गविहारी भवित्ता
'सविग्गविहारि' त्ति संविग्नविहारः—संविग्नानुष्ठानमस्ति येषां ते तथा (वृ० प० ५०२)

२३. पछै पासत्था ते थया मुनिराया रे,
कांइ ज्ञान दर्शन थी बार।
बाहिर देश चारित्र थकी मुनिराया रे,
कांइ सम्यक्त्व विरति निवार।।

२३. तओ पच्छा पासत्था
'पासत्थि' त्ति ज्ञानादिबहिर्वर्त्तिनः (वृ० प० ५०२)

२४. पासत्थविहारी ते थया मुनिराया रे, कांइ छेहड़ा लग पिण जाण।
पासत्थपणों मूक्यो नहीं मुनिराया रे, कांइ एहवा मूढ अयाण।।

२४. पासत्थविहारी
'पासत्थविहारी' त्ति आकालं पार्श्वस्थसमाचाराः (वृ० प० ५०२)

२५. ओसन्ना थाका नीं परै मुनिराया रे, कांइ खेदातुर जिम जेह।
पवर भला अनुष्ठान थी मुनिराया रे, कांइ थया आलसू तेह।।

२५. ओसन्ना
'ओसण्णि' त्ति अवसन्ना इव—श्रान्ता इवावसन्ना आलस्यादनुष्ठानासम्यक्करणात् (वृ० प० ५०२)

२६. वले ओसन्नविहारिका मुनिराया रे, कांइ छेहड़ा तांइ ताय।
शिथिलाचारी ते थया मुनिराया रे, कांइ पाछा मंडिया नांय।।

२६. ओसन्नविहारी
'ओसन्नविहार' त्ति आजन्मशिथिलाचारा इत्यर्थः (वृ० प० ५०२)

२७. वले कुशीला ते थया मुनिराया रे, कांइ ज्ञानादिक गुण सार।
तेह तणां आचार नैं मुनिराया रे, विराधना अधिकार।।

२७. कुसीला
'कुसील' त्ति ज्ञानाद्याचारविराधनात् (वृ० प० ५०२)

२८. वले कुशीलविहारिका मुनिराया रे, कांइ छेहड़ा लग पहिछाण।
ज्ञानादिक आचार नां मुनिराया रे, अधिक विराधक जाण।।

२८. कुसीलविहारी
'कुसीलविहारि' त्ति आजन्मापि ज्ञानाद्याचारविराधनात् (वृ० प० ५०२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९. वलि अपछंदा ते थया मुनिराया रे, नहिं आगम तणो विचार।
स्व-इच्छाचारी सहू मुनिराया रे, कांइ थाप जिनाज्ञा बार।

२९. अहाच्छंदा
'अहाछंद' त्ति यथाकथञ्चिन्नागमपरतन्त्रतया छन्दः—अभिप्रायो बोधः प्रवचनार्थेषु येषां ते यथाच्छन्दाः
(वृ० प० ५०२)

३०. अपच्छंदविहारी ते थया मुनिराया रे, कांइ छेहड़ा तांई धार।
अपछंदपणों नहीं छोडियो मुनिराया रे, कांइ थाप करै अविचार।।

३०. अहाच्छंदविहारी
'अहाच्छंदविहारि' त्ति आजन्मापि यथाच्छन्दा एवेति
(वृ० प० ५०२)

३१. बहु वर्ष श्रावकपणों मुनिराया रे, कांइ पाली नैं पर्याय।
संलेखणा अर्द्धमास नीं मुनिरायारे, कांइ तीस भक्त छेदाय।।

३१. बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता, अद्ध-मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता, तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता

३२. ते स्थानक त्रिण पडिकम्यां मुनिराया रे, आलोयां विण आम।
मरण तणैं अवसर सहू मुनिराया रे, कांइ काल करीनैं ताम।।

३२. तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा

३३. चमर असुर नां इंद्र नां मुनिराया रे, असुरराय नां जेह।
तीवतीसगा सुरपणें मुनिराया रे, कांइ मित्रपणैं उपजेह।।

३३. चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगदेव-त्ताए उववण्णा। (श० १०।४८)

३४. सामहत्थि तिण अवसरे मुनिराया रे, कांइ गोयम प्रति पूछंत।
हे भदंत! जे दिवस थी मुनिराया रे, ए तावत्तीसगा हुंत।

३५. तेतीस सहाया गाहावई मुनिराया रे, कांइ काकंदी नां जाण।
मित्रपणैं ए ऊपनां मुनिराया रे, कांइ चमर तणैं ए आण।।

३४,३५. जप्पभिइं च णं भंते! ते कायंदगा तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना,

३६. ते दिन थी कहियै अछै मुनिराया रे, असुरेंद्र नैं ताय।
तीवत्तीसगा देवता मुनिराया रे, पिण पहिलां कहियै नांय।।

३६. तप्पभिइं च णं भंते! एवं वुच्चइ—चमरस्स असुरिं-दस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्ती-सगा देवा?

३७. भगवंत! गोतम नैं तदा मुनिराया रे, कांइ सामहत्थि अणगार।
कह्यो छते संकित थया मुनिराया रे, कांखित थया तिवार।।

३७. तए णं भगवं गोयमे सामहत्थिणा अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए

३८. मन वितिगिच्छा ऊपनी मुनिराया रे, कांइ ऊठी ऊभा थाय।
सामहत्थि साथे तदा मुनिराया रे, वीर समीपे आय।।

३८. वितिगिच्छिए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता सामहत्थिणा अणगारेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ,

३९. भगवंत श्री महावीर नैं मुनिराया रे, वंदै वच स्तुति ताय।
नमस्कार शिर नाम नैं मुनिराया रे, कांइ बोलै एहवी वाय।।

३९. उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी— (श० १०।४९)

४०. छै भगवंत! चमर तणैं मुनिराया रे, कांइ तावत्तीसगा देव?
जिन भाखै हंता अत्थि मुनिराया रे, किंण अर्थे प्रभु! भेव?

४०. अत्थि णं भंते! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमार-रण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा?
हंता अत्थि। (श० १०।५०)
से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—

४१. इम तिम हीज कह्यो सहू मुनिराया रे, कांइ त्रिण आलोयां दीस।
देवपणैं ए ऊपनां मुनिराया रे, कांइ चमर तणैं तेतीस।।

४१. एवं तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव

४२. जे दिन थी ए ऊपनां मुनिराया रे, कांइ तावत्तीसगा आय।
ते दिन थी कहियै अछै मुनिराया रे, तिण पहिलां कहियै नांय।।

४२. जप्पभिइं च णं भंते! ......तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना' तप्पभिइं च णं भंते! एवं वुच्चइ....
'तप्पभिइं च णं' ति यत्प्रभृति त्रयस्त्रिंशत्संख्योपेतास्ते श्रावकास्तत्रोत्पन्नास्तत्प्रभृति न पूर्वमिति
(वृ० प० ५०२)

४३. जिन कहै अर्थ समर्थ नहीं मुनिराया रे, इम निश्चै करि ताम।
तावत्तीसगा चमर नैं मुनिराया रे, कह्या शाश्वता नाम।।

४३. नो इणट्ठे समट्ठे। गोयमा! चमरस्स णं असुरिं-दस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगाणं देवाणं सासए नामधेज्जे पण्णत्ते—

४४. नहीं कदापि नहिं हुआ मुनिराया रे, कांइ नहीं हुवै इम नांय।
नहीं हुसै इम पिण नहीं मुनिराया रे, कांइ छता काल त्रिहुं मांय।।

४४. जं न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४५. हुवा हुवै होस्यै वली मुनिराया रे, कांइ यावत नित्य पिछाण।
अव्वोच्छित्ति नय आश्रयी मुनिराया रे, कांइ देव शाश्वता जाण ।।
४६. चवै अनेरा देवता मुनिराया रे, कांइ अन्य अमर उपजाय।
पिण स्थानक नें नाम थी मुनिराया रे, कांइ एहनों विच्छेद नांय ।।
४७. वलि वेरोचन इंद्र नें गुणधारी रे,
छै तावत्तीसगा भंत ! महागुणधारी रे।
जिन भाखै हंता अत्थि गुणधारी रे,
कांइ किण अर्थे प्रभु ! हुंत । महागुणधारी रे ।।
४८. जिन भाखै सुण गोयमा ! मुनिराया रे,
इम निश्चै अवलोय। सुण मुनिराया रे।
तिण कालै नें तिण समैं मुनिराया रे,
इण जंबू भरत में जोय। सुण मुनिराया रे ।।
४९. विभेल एहवै नाम थो मुनिराया रे, सन्निवेस सुखदाय।
वर्णन तास वखाणवो मुनिराया रे, तिहां वसै तेतीस सहाय ।।

५०. जेम चमर नां आखिया मुनिराया रे, तिम बलि नें कहिवाय।
जाव तेतीसूं ऊपनां मुनिराया रे, मित्रपणें सुर आय ।।
५१. हे भदंत ! जे दिवस थी मुनिराया रे, विभेलगा तेतीस।
विभेल नां वासी तिके मुनिराया रे, कांइ सखाइया सुजगीस ।।
५२. वलि वैरोचनराय नें मुनिराया रे, शेष तिमज कहिवेह ।।
जाव नित्य ते आखिया मुनिराया रे, अव्वोच्छित्ति नय एह ।।

५३. चवै अनेरा देवता मुनिराया रे, कांइ वली अनेरा देव।
तिहां ऊपजै आयनें मुनिराया रे, कांइ भाखै जिन ए भेव ।।
५४. प्रभु ! नागकुमार नां इंद्र नैं गुणधारी रे,
कांइ नागराय नें ताम। महागुण धारी रे।
धरण तणें छै देवता गुणधारी रे,
कांइ तावत्तीसगा नाम ? महागुणधारी रे ।।
५५. जिन भाखै हंता अत्थि गुणधारी रे, किण अर्थे ए वाय ?
जिन कहै नागकुमार नां गुणधारी रे, कांइ इंद्र तणें कहिवाय ।।
५६. नागकुमार नां राय नैं गुणधारी रे, कांइ धरण तणें अभिराम।
तावत्तीसगा देवता गुणधारी रे, कांइ कह्या शाश्वता नाम ।।
५७. जे नहीं कदापि नहिं हुआ गुणधारी रे, कांइ यावत अन्य चवंत।
वले अनेरा ऊपजै गुणधारी रे, कांइ पूरवली पर हुंत ।।
५८. इमहिज भूतानंद नैं मुनिराया रे,
कांइ एवं जाव जगीस। सुण मुनिराया रे।
महाघोष नैं पिण कह्यो मुनिराया रे,
ए वीस इंद्र नैं दीस ।। सुण मुनिराया रे ।।
५९. छै प्रभु ! शक्र सुरिंद्र नैं गुणधारी रे,
कांइ देवराय नैं जोय। महागुणधारी रे।
तावत्तीसगा देवता गुणधारी रे,
कांइ जिन कहै हंता होय ।। महागुणधारी रे ।।

४५. भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य —धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए निच्चे, अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए
४६. अण्णे चयंति, अण्णे उववज्जंति। (श० १०।५१)

४७. अत्थि णं भंते ! बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
हंता अत्थि। (श० १०।५२)
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—
४८. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे

४९. बेभेले नामं सण्णिवेसे होत्था—वण्णओ। तत्थ णं बेभेले सण्णिवेसे तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया परिवसंति
५०. जहा चमरस्स जाव तावत्तीसगदेवत्ताए उववण्णा। (श० १०।५३)
५१. जप्पभिइं च णं भंते ! ते बेभेलगा तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा
५२. बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना, सेसं तं चेव जाव निच्चे, अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए
५३. अण्णे चयंति, अण्णे उववज्जंति। (श० १०।५४)

५४. अत्थि णं भंते ! धरणस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

५५,५६. हंता अत्थि। (श० १०।५५)
से केणट्ठेणं जाव तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा? गोयमा ! धरणस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो तावत्तीसगाणं देवाणं सासए नामधेज्जे पण्णत्ते—
५७. जं न कयाइ नासी जाव अण्णे चयंति, अण्णे उववज्जंति
५८. एवं भूयाणंदस्स वि, एवं जाव महाघोसस्स। (श० १०।५६)

५९. अत्थि णं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
हंता अत्थि। (श० १०।५७)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६०. किण अर्थे प्रभु ! इम कह्यो गुणधारी रे,
कांइ तब भाखै जिनराय। महागुणधारी रे।
तिण काले नैं तिण समैं मुनिराया रे,
इण जंबू भरत रै मांय ! सुण मुनिराया रे ।।

६१. पालए नामैं हुंतो मुनिराया रे, कांइ सन्निवेस सुखदाय।
वर्णन तास वखाणवो मुनिराया रे, तिहां वसै तेतीस सहाय ।।

६२. कुटंब तणां नायक सहू मुनिराया रे, कांइ श्रमणोपासक हुंत।
जेम चमर नां तिम इहां मुनिराया रे, कांइ जावत ते विचरंत ।।

६३. तेतीस सहाया गाहावई मुनिराया रे, कांइ श्रमणोपासक साव।
पहिलां पिण शुद्ध भाव था मुनिराया रे, कांइ पाछै पिण शुद्ध भाव ।।

६४. उग्रा उत्कृष्ट भाव थी मुनिराया रे, उग्रविहार आचार।
संविग्गा इच्छा शिव तणी मुनिराया रे, वलि संविग्गाविहार ।।

६५. बहु वरसां श्रावकपणों मुनिराया रे, पाली नैं पर्याय।
मास तणी संलेखणा मुनिराया रे, साठ भक्त छेदाय ।।

६६. सहु आलोई पडिकमी मुनिराया रे, कांइ पाम्या समाधी तेह।
काल समय करि काल नैं मुनिराया रे, जाव ऊपनां जेह ।।

६७. हे भदंत ! जे दिवस थी गुणधारी रे,
कांइ पाला नां वसवान। महागुणधारी रे।
तेतीस सहाया गाहावई मुनिराया रे,
कांइ श्रमणोपासक जान ।। सुण मुनिराया रे ।।

६८. शेष कह्यो जिम चमर नैं मुनिराया रे, तिम सगलो कहिवाय।
चवै अनेरा देवता मुनिराया रे, कांइ अन्य ऊपजै आय ।।

६९. छै भदंत ! ईशाण नैं मुनिराया रे, जेम शक्र तिम एह।
णवरं चंपा नैं विषे मुनिराया रे, कांइ यावत उपनां जेह ।।

७०. जे दिन थी प्रभु चंपिज्जा[1] मुनिराया रे, तेतीस सहाया हुंत।
शेष वात तिमहीज सहु मुनिराया रे, कांइ जाव अन्य उपजंत ।।

७१. छै प्रभु ! सनंतकुमार नैं मुनिराया रे, देव इंद्र नैं देख।
देव तणां राजा तणैं मुनिराया रे, कांइ तावत्तीसगा पेख ?

७२. जिन भाखै हंता अत्थि मुनिराया रे, ते किण अर्थ स्वाम !
जेम कह्यो छै धरण नैं मुनिराया रे, कांइ तिमहिज कहिवूं ताम ।।

सोरठा

७३. धरण तणैं अधिकार, पूरव भव चाल्यो नथी।
तेम इहां सुविचार, नहिं पूर्वभव वारता ।।

७४. *इम यावत पाणत तणैं मुनिराया रे, कांइ अच्युत नैं पिण एम।
जाव अन्य सुर ऊपजै मुनिराया रे, कांइ सेवं भंते ! तेम ।।

* लय : मोजी तुररा रे

१. चंपा नगरी के वासी।

६०. से केणट्ठेणं जाव तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ? एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे

६१. पालए नामं सण्णिवेसे होत्था—वण्णओ। तत्थ णं पालए सण्णिवेसे तायत्तीसं सहाया

६२. गाहावई समणोवासया जहा चमरस्स जाव विहरंति।
(श० १०।५८)

६३. तए णं ते तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया पुव्विं पि पच्छा वि

६४. उग्गा उग्गविहारी संविग्गा संविग्गविहारी

६५. बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता

६६. आलोइय-पडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा जाव (सं० पा०) उववन्ना।

६७. जप्पभिइं च णं भंते ! ते पालगा तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा,

६८. सेसं जहा चमरस्स जाव अण्णे उववज्जंति।
(श० १०।५९)

६९. अत्थि णं भंते ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
एवं जहा सक्कस्स, नवरं—चंपाए नयरीए जाव उववण्णा

७०. जप्पभिइं च णं भंते !
ते चंपिज्जा तायत्तीसं सहाया, सेसं तं चेव जाव अण्णे उववज्जंति। (श० १०।६०)

७१. अत्थि णं भंते ! सणंकुमारस्स देविंदस्स देवरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

७२. हंता अत्थि। (श० १०।६१)
से केणट्ठेणं ?
जहा धरणस्स तहेव

७४. एवं जाव पाणयस्स, एवं अच्चुयस्स जाव अण्णे उववज्जंति।
सेवं भंते ! सेवं भंते त्ति। (श० १०।६२,६३)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरठा

७५. तीजा थकी विचार, स्वर्ग बारमा इंद्र नें।
धरण जेम अवधार, पूरव भव न कह्या प्रभु ।।
७६. चमर बली नां जाण, सोधर्म नें ईशाण नां।
तावत्तीसगा माण, पाछिल भव जिन आखियो ।।

७७. *दशमें शत चोथो कह्यो गुणधारी रे,
बेसौ इकवीसमीं ढाल। महा गुणधारी रे।
भिक्खु भारीमाल ऋषिराय थी गुणधारी रे,
कांइ 'जय-जश' मंगलमाल ।। महागुणधारी रे ।।
दशमशते चतुर्थोद्देशकार्थः ।।१०।४।।

ढाल : २२२

दूहा

१. तुर्य उदेशे सुर तणी, वक्तव्यता दाखंत।
पंचमुदेश सुरी तणी, ते निसुणो धर खंत।।

१. चतुर्थोद्देशके देववक्तव्यतोक्ता, पञ्चमे तु देवीवक्तव्यतोच्यते (वृ० प० ५०२)

२. तिण काले नैं तिण समय, नगर राजगृह जान।
यावत परिषद वंदनैं, पहुंती अपणैं स्थान ।।

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे। गुणसिलए चेइए जाव परिसा पडिगया।

३. तिण काले नैं तिण समय, वीर तणां बहु शीस।
भगवंत स्थविर गुणे भला, गणहितकार गणीस ।।

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अंतेवासी थेरा भगवंतो

४. जातिवंत इत्यादि गुण, जिम अष्टम शतकेह।
सप्तमुदेश विषे कह्यो, यावत विचरै जेह ।।

४. जाइसंपन्ना जहा अट्ठमे सए सत्तमुद्देसए (सू० २७२) जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति।

५. ते भगवंत स्थविर तदा, जात—प्रवर्त्ती जास।
श्रद्धा इच्छा प्रश्न नीं, जातसंसया तास ।।

५. तए णं ते थेरा भगवंतो जायसड्ढा जायसंसया

६. जिम गोतम स्वामी तिमज, यावत वारू सेव।
करता थकाज इम कहै, अलगो करि अहमेव ।।

६. जहा गोयमसामी जाव पज्जुवासमाणा एवं वयासी— (श० १०।६४)

†अब सुणलै प्राणी ! ऋद्धि चमरादि नीं जी ।। (ध्रुपदं)

७. हे भदंत ! असुरिंद्र नैं कांइ, असुरकुमार नों राय।
चमर तणैं छै केतली जी, अग्रमहेषी ताय।।

७. चमरस्स णं भंते असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?

८. हे आर्यो ! इम जिन कहै, तसु अग्रमहेषी पंच।
काली राई रयणी कही जी, विज्जू मेघा संच ।।

८. अज्जो ! पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा— काली, रायी, रयणी, विज्जू, मेहा।

९. एक-एक देवी तिहां कांइ, अठ-अठ सहस्र उदार।
देवी नां परिवार नैं जी, इम भाख्यो जगतार ।।

९. तत्थ णं एगमेगाए देवीए अट्ठट्ठ देवीसहस्सं परिवारो पण्णत्तो। (श० १०।६५)

१०. समर्थ ते इक-इक सुरी, अन्य अठ-आठ हजार।
सुरी रूप परिवार छै जी, विकुर्वण नैं सार ?

१०. पभू णं भंते ! ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं अट्ठट्ठ देवीसहस्साइं परियारं विउव्वित्तए ?

*लय : भोजी तुररा रे

†लय : अब लगज्या प्राणी ! चरणें प्रभु तणें जी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. पूर्व सहित ए पाछली कांइ, सुरी सहस्र चालीस।
तुटित इसे नामे करी जी, कांइ वर्ग[1] कह्यो जगदीश ।।

११. एवामेव सपुव्वावरेणं चत्तालीसं देवीसहस्सा। सेत्तं तुडिए। (श० १०।६६)
'से तं तुडिए' त्ति तुडिकं नाम वर्गः (वृ० प० ५०५)

१२. हे भदंत ! समर्थ अछै कांइ, चमर असुर नों इंद।
राजा असुरकुमार नों जी कांइ, महापुन्यवंत सोहंद ।।

१२. पभू णं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया

१३. चमरचंचा नामे भली कांइ, राजधानी रै मांय।
सभा सुधर्मा नें विषे जी कांइ, चमर सिंघासण ताय ।।

१३. चमरचंचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरंसि सीहासणंसि

१४. तुटित वर्ग साथे तिहां कांइ, देव संबंधी भोग।
भोगवतो थको विचरवा जी कांइ, समर्थ चमर प्रयोग ?

१४. तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ?

१५. जिन कहै अर्थ समर्थ नहीं कांइ, प्रभु ! किण अर्थे ए वाय।
चमर सुधर्मा भोग नें जी कांइ, भोगविवा समर्थ नांय ?

१५. नो इणट्ठे समट्ठे। (श० १०।६७)
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नो पभू चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचाए रायहाणीए जाव विहरित्तए ?

१६. हे आर्यो ! इम जिन कहै कांइ, चमर असुर नों राय।
चमरचंचा नामे भली जी कांइ, राजधानी रै मांय ।।

१६. अज्जो ! चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचाए रायहाणीए

१७. सभा सुधर्मा नें विषे कांइ, माणवक इण नाम।
चैत्य स्तंभ छै तिण विषे जी कांइ, डाबा बहु अभिराम ।।

१७. सभाए सुहम्माए, माणवए चेइयखंभे

१८. वज्र मांहि ते डाबड़ा कांइ, वृत्त गोलकाकार।
रहै तिहां जिन नीं बहू जी कांइ, दाढा प्रमुख उदार ।।

१८. वइरामएसु गोल-वट्ट-समुग्गएसु बहुओ जिणसकहाओ सन्निक्खित्ताओ चिट्ठंति,
गोलकाकारा वृत्तसमुद्गकाः गोलवृत्तसमुद्गकास्तेषु (वृ० प० ५०५)

सोरठा

१९. 'जिन नी दाढा होय, तो छै एह अशाश्वती।
असंख काल अवलोय, तेहनीं स्थिती कही नथी ।।
२०. जिन-दाढा आकार, पुद्गल स्थित्या तेहनैं।
कहि जिन-दाढा सार, तो तसु कहियै शाश्वती ।।
२१. सुरियाभादिक सार, तसु पिण जिन-दाढा कही।
ए दाढा आकार, पुद्गल-स्थित्या तेह छै ।।
२२. जिन-दाढा तो जोय, इंद्र विना अन्य सुर तणें।
कर नहिं आवै कोय, प्रवर न्याय अवलोकियै ।।
२३. सौधर्म नैं ईशाण, चमर वली चिहुं इंद्र नैं।
जिन-दाढा पिण जाण, पिण छै तेह अशाश्वती ।।' [ज० स०]

२४. *चमर असुर नां राय नैं कांइ, अन्य बहु असुरकुमार।
देव अनैं देवी वली जी कांइ, ए जिन-दाढा विचार ।।
२५. चंदन आदि सुगंध थी कांइ, अछै अरचवा जोग।
वंदन वच स्तुति जोग छै जी कांइ, नमण करेवा जोग ।।

२४,२५. जाओ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो अण्णेसिं च बहूणं असुरकुमाराणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ नमंसणिज्जाओ
'अच्चणिज्जाओ' त्ति चन्दनादिना 'वंदणिज्जाओ' त्ति स्तुतिभिः 'नमंसणिज्जाओ' प्रणामतः (वृ० प० ५०५)

२६. वलै पूजवा जोग छै कांइ, पुष्पादिक थी एह।
बलि सतकारण जोग छै जी कांइ, वलि सन्मान करेह ।।

२६. पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ
'पूयणिज्जाओ' पुष्पैः (वृ० प० ५०५)

*लय : अब लगज्या प्राणी ! चरणे प्रभु तणें जी

१. एणी परै सपूर्वापर संघाते चालीस सहस्र देवी आठ सहस्रगुणां करियै तिवारे बत्तीस कोड़ देवांगना थावै तेहनें तुटित वर्ग कहियै।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७. कल्याणकारी जाणनैं कांइ, वलि जाणी मंगलीक।
देवत जाणी तेहनै जी कांइ, चित्त प्रसन्नकारीक।।
२८. इम जाणी बहु असुर नें कांइ, देव देवी नें जाण।
सेवा करिवा जोग छै जी कांइ, ए मग लौकिक पिछाण।।
२९. तास पूज्य जाणी करी कांइ, भोग भोगविवा तेह।
चमर तिको समर्थ नहीं जी कांइ, रीत अनादी एह।।

सोरठा

३०. पिण रायप्रश्रेणी[1] मांय, राज बेसवा अवसरे।
प्रतिमा दाढा ताय, पूजै छै सुरियाभ सुर।।
३१. पहिलां पछै पिछाण, पाठ हियाए आदि दे।
ए मग लौकिक जाण, पिण पेच्चा परभव नहीं।।
३२. निस्सेसाए पहिछाण, विघ्न तणी ए मोक्ष है।
पच्छा शब्दे जाण, इह भव द्रव्य मंगलीक ए।।
३३. वांद्या श्री वर्द्धमान, ते सुरियाभे देवता।
पेच्चा पाठ पिछान, परभव हियाए प्रमुख।।
३४. निस्सेसाए पहिछाण, ए परभव नीं मोक्ष है।
पेच्चा शब्दे जाण, लोकोत्तर मारग कह्यो।।
३५. खंधक नें अधिकार, सूत्र भगवती[2] में कह्यो।
लाय थकी धन बार, काढै जे गाथापती।।
३६. पहिलां पछैज होय, हियाए प्रमुख कह्या।
प्रतिमा पूजै सोय, तेह सरीखो पाठ त्यां।।
३७. निस्सेसाए सुविचार, दालिद्र नीं ए मोक्ष है।
पच्छा रव अनुसार, इह भव हित सुख मोक्ष है।।
३८. खंधक दीक्षा लीध, परलोके हित सुख प्रभु।
ए लोकोत्तर सीध, निस्सेसाए परलोक शिव।।
३९. लाय थकी धन बार, प्रतिमा दाढा पूजतां।
पच्छा पाठ विचार, ए खाते लोकीक रै।।
४०. खंधक दीक्षा लीध, सुरियाभे जिन वांदिया।
पेच्चा परभव सीध, लोकोत्तर खाते इहां।।
४१. वलि बहु ठामे जोय, जिन-वांदण दीक्षा समय।
पेच्चा परभव होय, पच्छा शब्द किहां नथी।।
४२. प्रतिमा नैं पूजंत, पेच्चा वा परलोक नों।
किहांइक पाठ न हुंत, न्याय विचारी लीजियै।।
४३. तिण सूं यां पिण ताय, दाढा नां कारण थकी।
भोग भोगवै नांय, कल्पस्थिति लोकीक मग।।
४४. त्रायत्रिंस गुरु-स्थान, इन्द्र विनय तेहनों करै।
अभ्युत्थान पिछान, ते मग लोकिक तेम ए।।
४५. मेघ-जमाली-माय, चरण लियां सुत केश ले।
ए मुझ दर्शण थाय, मोह कर्म नों उदय ए।।

२७. कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं

२८. पज्जुवासणिज्जाओ भवंति।

२९. से तेणट्ठेणं अज्जो! एवं वुच्चइ—नो पभू चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया जाव (सं० पा०) विहरित्तए। (श० १०।६८)

१. सू० २९१
२. श० २।५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४६. तिम ए पिण छै जेह, जीत आचार भणीज इन्द।
दाढा ल्ये पूजेह, पिण ते धर्म खाते नथी ।।
४७. श्रावक सरिखा जाण, जिन दाढा लेता नथी।
इन्द्र तणांज पिछाण, एह 'जीत व्यवहार' छै ।।
४८. अभव्य सुर पूजंत, जिन-प्रतिमा दाढा भणी।
इन्द्र सामानिक हुंत, सभा सुधर्मा छै तसु ।।
४९. आवश्यक नीं वृत्ति, ग्रंथाग्र बावीस हजार तसु।
सूरि हरिभद्र प्रवृत्ति, कह्यो सामायक वृत्ति में ।।
५०. संगम सुधर्म वास, सामानिक ते शक्र नों।
वीर चलावूं तास, यूं ही इन्द्र प्रशंसतो ।।

वा० – वलि सामानिक देवपणें जो अभव्य मिथ्यादृष्टि जीव न ऊपजै तो तुम्हारे मतेज आवश्यक नीं वृत्ति बावीस हजारी हरिभद्र सूरि नीं कीधी, ते मध्ये सामायक नामा अध्ययन नीं टीका में अभव्य संगम देवता नों अधिकार छै। तिहां महावीर नां उपसर्ग नें अधिकारे शक्रेंद्र बोल्यो—महावीर नें चलावी न सकै। तिवारे शक्रेंद्र नों सामानिक अभव्य देवता संगम बोल्यो—इओ य संगमओ नाम सोहम्मकप्पवासी देवो सक्कसामाणिओ अभवसिद्धिओ सो भणति—देवराया अहो रागेण उल्लवेइ, को माणुसो देवेण न चालिज्जइ ? अहं चालेमि, ताहे सक्को तं न वारेइ। मा जाणिहिइ—परणिस्साए भगवं तवोकम्मं करेति, एवं सो आगओ – इहां संगमो देवता शक्रेन्द्र नैं सामानिक देवता नैं कह्यो।

वली 'संदेहदोलावलि' ग्रंथ छै तेहनीं वृत्ति मध्ये कह्यो—नन्वेवं तर्हि संगमकप्रायो महामिथ्यादृष्टि र्देवविमानस्थाम् सिद्धायतनप्रतिमां अपि सनातनमिति चेत् न, नित्यचैत्येषु हि संगमवत् अभव्या अपि देवा मदीयमदीयमिति बहुमानात् कल्पस्थितिव्यवस्थानुरोधात् तद्भूतप्रभावाद् वा न कदाचित् असंयमक्रियां आरभन्ते।

एस संगमो देवता अभव्य कह्यो, इंद्र नों सामानिक कह्यो सामानिक देवता इंद्र सरिखा विमान नों धणी ऊपजती वेला सुरियाभ नीं परै प्रतिमा दाढ़ा पूजै पोता नीं कल्पस्थिति माटै। अनैं सुधर्मा सभा नें विषे दाढा नैं मुरातबपणें[1] करी काम भोग न भोगवै ते पिण कल्पस्थिति जीत आचार माटै पिण धर्म खाते नथी, तिमहिज अनेरा इन्द्र सुरियाभादिक नें जाणवूं।

५१. सूत्र उववाई[2] मांय, पूर्णभद्र बहु लोक नैं।
अर्चन जोग कहाय, वन्दन पूजन योग्य वलि ।।
५२. सतकार सनमान जोग, कल्लाणं मंगलं वली।
दैवत चैत्य प्रयोग, जाणी सेवा योग्य छै ।।
५३. बहु जन नैं ए ताय, कह्या पूजवा जोग ए।
आख्या जन-अभिप्राय, पिण नहिं अरिहंत आगन्या ।।
५४. सुर नर नैं अवधार, भोग वंछवा योग्य ए।
चौथे आश्रव द्वार, इहां पिण जिन आज्ञा नहीं ।।
५५. तिम सुर नैं कहिवाय, दाढा पूजण योग्य ए।
कह्या तास अभिप्राय, पिण आज्ञा जिन नीं नथी ।।

१. महत्त्व
२. सू० २

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५६. कृष्णादिक धर प्रेम, सभा सुधर्मा नें विषे।
भोग भोगवै केम, तो सुर किण विध भोगवै ॥

५७. दादा नों सुविशेख, अधिक मुरातब आखियो।
जीत आचार संपेख, कल्प-स्थिति लौकीक मग ॥

५८. भव्य अभव्य सुर ताय, समदृष्टी नैं मिच्छदिट्ठि।
सभा सुधर्मा मांय, काम भोग नहिं भोगवै ॥

५९. ए च्यारूं अवधार, विमाण नां स्वामी हुवै।
राखै जीत आचार, चमर सुरियाभ तणी परै ॥

६०. चमर सुधर्मा तेम, काम भोग नहिं भोगवै।
जीत आचारे एम, पिण ते धर्म खाते नहीं ॥" (ज० स०)

६१. *हे आर्यो ! समर्थ अछै कांइ, चमर असुर नो राय।
चमरचंचा नामे भली जी कांइ, राजधानी रै मांय ॥

६२. सभा सुधर्मा नैं विषे कांइ, चमर सिंघासण ताय।
चउसठ सहस्र अछै भला जी कांइ, सामानिक सुखदाय ॥

६३. तावत्तीसग यावत वली कांइ, अन्य बहु असुरकुमार।
अमर सुरी संग परिवर्यो जी कांइ, महाऽहत जाव विचार ॥

वा० इहां जाव शब्द थकी इम जाणवो 'नट्टगीयवाइयतंतीतलतालघण मुयंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइंति। तिहां महता नाम मोटा, अहत नाम अच्छिन्न निरन्तर अथवा कथा स्यूं बंध्या जे गीत, नाट्य वाजंत्र तेहनैं शब्दे करी अनैं तंत्री तल ताल नां शब्द करी अनैं तुडिय कहितां शेष बाजा वली घन-मृदंग ते मेघ समान ध्वनि वालो मार्दल तेहनैं पटु कहितां चतुर पुरुषे बजायो तेहनों जे शब्द तेणे करी दिव्य भोग प्रतै भोगवतो विचरवा समर्थ इम कह्युं।

तेहनैं विषेहीज विशेष कहै छै—'केवलं परियारिड्ढीए'—केवलं नवरं परिचार ते परिचारणा, ते इहां स्त्री शब्द श्रवणरूप देखवादिरूप, तेहिज ऋद्धि—संपदा ते परिचारणाऋद्धि। तेणे करी कलत्रादि परिजन परिचार मात्र करिकै इत्यर्थः।

६४. भोगवतोज छतो तिहां कांइ, विचरण समरथ तेह।
केवल ऋद्धि परिचारणा जी कांइ, शब्द रूप आदेह ॥

६५. स्त्री रव सुणवा नीं विषे कांइ, रूप देखवो आदि।
तेहिज ऋद्धिनीं संपदा जी कांइ, तिण करि चित अहलादि[1] ॥

६६. पिण नहिं ते निश्चै करी कांइ, मैथुन प्रत्यय पेख।
भोग भोगवतो विचरवा जी कांइ, समर्थ नहिं छै विशेख ॥

६७. चमर असुरिंद नों प्रभु ! कांइ, तास सोम महाराय।
अग्रमहिषी केतली जी कांइ ? जिन कहै च्यार कहाय ॥

६१. पभू णं अज्जो ! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचाए रायहाणीए

६२. सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं

६३. तायत्तीसाए जाव (सं० पा०) अण्णेहि य बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं य, देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे महयाहय जाव (सं० पा०)

वा०—इह यावत्करणादिदं दृश्यं—'नट्टगीयवाइयतंतीतल-तालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोग-भोगाइं' ति तत्र च महता—बृहता अहतानि—अच्छिन्नानि आख्यानकप्रतिबद्धानि वा यानि नाट्य-गीतवादितानि तेषां तन्त्रीतलतालानां च 'तुडिय' त्ति शेष तूर्याणां च घनमृदंगस्य च मेघसमानध्वनिमर्द्द-लस्य पटुना पुरुषेण प्रवादितस्य यो रवः स तथा तेन प्रभुर्भोगान् भुञ्जानो विहर्त्तुमित्युक्तं।

तत्रैव विशेषमाह—'केवलं परियारिड्ढीए' त्ति केवलं नवरं परिवारः—परिचारणा स चेह स्त्रीशब्दश्रवण-रूपसंदर्शनादिरूपः स एव ऋद्धिः—सम्पत् परिवार-र्द्धिस्तया परिवारर्द्धया वा कलत्रादिपरिजनपरिचारणा-मात्रेणेत्यर्थः। (वृ० प० ५०६)

६४. भुंजमाणे विहरित्तए ? केवलं परियारिड्ढीए

६६. नो चेव णं मेहुणवत्तियं। (श० १०।६६)
'नो चेव……' ति नैव च मैथुनप्रत्ययं यथा भवति एवं भोगभोगान् भुञ्जानो विहर्तुं प्रभुरिति।
(वृ० प० ५०६)

६७. चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

*लय : अब लगज्या प्राणी ! चरणे प्रभु तणें जी

१. गाथा ६४ एवं ६५ की रचना पाठ और वृत्ति दोनों के आधार पर की हुई है। वृत्ति का अंश पूर्ववर्ती वार्तिका में उद्धृत है, इसलिए उसे यहां नहीं रखा गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६८. कनका कनकलता कही कांइ, चित्तगुप्ता तन चंग।
वसुंधरा चउथी वली जी कांइ, ए चिहुं रूप सुरंग।।

६९. एक-एक देवी तिहां कांइ, सहस्र-सहस्र सुविधान।
सुरी परिवार परूपियो जी कांइ, इम भाखै भगवान।।

७०. समर्थ ते इक-इक सुरी कांइ, अन्य एक-एक हजार।
परिचारण अर्थे तिका जी कांइ, रूप विकुर्वण सार।।

७१. इमहिज पूर्वापर सही कांइ, देवी च्यार हजार।
तुटित वर्ग[1] कहियै तसु जी कांइ, इम भाखै जगतार।।

७२. लोकपाल प्रभु! चमर नों कांइ, समर्थ सोम महाराय।
सोमा राजधानी विषे जी कांइ, सभा सुधर्मा मांय।।

७३. सोम नाम सिंघासणे कांइ, तुटित वर्ग संघात।
शेष चमर नीं पर सहु जी कांइ, वरणवियै अवदात।।

७४. णवरं इतो विशेष छै कांइ, सोम तणो परिवार।
जिम सूर्याभ तणो कह्यो जी कांइ, इम कहिवो सुविचार।।

७५. शेष तिमज चमरेंद्र जिम कांइ, जाव सौधर्म मांय।
मिथुन भोग करिवा भणी जी कांइ, निश्चै समरथ नांय।।

७६. लोकपाल प्रभु! चमर नों कांइ, जम नामे महाराय।
अग्रमहिषी तसु किती जी कांइ? एवं चेव कहिवाय।।

७७. णवरं इतो विशेष छै कांइ, जमा नाम पहिछाण।
रजधानी रलियामणी जी कांइ, शेष सोम जिम जाण।।

७८. एम वरुण नें पिण कह्यूं कांइ, णवरं इतो विशेख।
वरुण नामे तेहनीं जी कांइ, रजधानी संपेख।।

७९. एम वेश्रमण नों अछै कांइ, णवरं इतो विशेख।
वेश्रमणा नामे भली जी कांइ, रजधानी वर रेख।।

८०. शेष तिमज जावत तिके कांइ, सभा सुधर्मा मांय।
मिथुन प्रत्यय भोगनें जी कांइ, सेवण समरथ नांय।।

८१. देश दशम पंचम तणो कांइ, बेसौ बावीसमीं ढाल।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी जी कांइ,
'जय-जश' मंगलमाल।।

६८. कणगा, कणगलता, चित्तगुत्ता, वसुंधरा।

६९. तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे पण्णत्ते। (श० १०।७०)

७०. पभू णं ताओ 'एगामेगा देवी' अण्णं एगमेगं देवी-सहस्सं परिवारं विउव्वित्तए?

७१. एवामेव सपुव्वावरेणं चत्तारि देवीसहस्सा। सेत्तं तुडिए। (श० १०।७१)

७२. पभू णं भंते! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमे महाराया सोमाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए

७३. सोमंसि सीहासणंसि तुडिएणं सद्धिं……अवसेसं जहा चमरस्स

७४. नवरं—परियारो जहा सूरियाभस्स।

७५. सेसं तं चेव जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियं। (श० १०।७२)

७६. चमरस्स णं भंते! असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो जमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ?
एवं चेव,

७७. नवरं—जमाए रायहाणीए, सेसं जहा सोमस्स।

७८. एवं वरुणस्स वि नवरं—वरुणाए रायहाणीए

७९. एवं वेसमणस्स वि, नवरं—वेसमणाए रायहाणीए।

८०. सेसं तं चेव जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियं। (श० १०।७३)

---

१. एणी परै सपूर्वापर संघाते ४००० सहस्र नें १००० सहस्र गुणा करियै तिवारे ४०००००० लाख एतला रूप थावै तेहनें तुटित वर्ग कहियै।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : २२३

दूहा

१. प्रभु ! बलि वैरोचन इंद्र नैं, प्रश्न महेषी संच।
जिन कहै हे आर्यो ! कही अग्रमहेषी पंच।।

१. बलिस्स णं भंते ! वइरोयणिंदस्स—पुच्छा।
अज्जो ! पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ,

२. शुंभा निशुंभा नै रंभा, प्रवर निरंभा पेख।
मदना आखी पंचमी, वर्ण रूप वर रेख।।

२. सुंभा, निसुंभा, रंभा, निरंभा, मदणा।

३. एक-एक देवी तणें, अठ-अठ सहस्र उदार।
शेष चमर नीं पर सहु, कहिवूं सर्व विचार।।

३. तत्थ णं एगमेगाए देवीए अट्ठट्ठ देवीसहस्सं परिवारो, सेसं जहा चमरस्स,

४. णवरं बलिचंचा भली, रजधानी सुविशेष।
तसु परिकर तीजे शतक, मोया धुर उद्देश[1]।।

४. नवरं—बलिचंचाए रायहाणीए, परियारो जहा मोउद्देसए।
'मोउद्देसए' ति तृतीयशतस्य प्रथमोद्देशके इत्यर्थः
(वृ० प० ५०६)

५. इम परिकर कहिवूं इहां, शेष सर्व तं चेव।
जाव सुधर्मा नैं विषे, मिथुन न सेवै देव।।

५. सेसं तं चेव जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियं।
(श० १०।७४)

६. प्रभु ! बलि वैरोचन इंद्र नैं, सोम नाम महाराय।
अग्रमहिषी तसु किती ? जिन कहै च्यार कहिवाय।।

६. बलिस्स णं भंते ! वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ

७. प्रथम मेनका नाम है, द्वितीय सुभद्रा धार।
तृतीय विद्युता सुभग तनु, चउथी असनी सार।।

७. मीणगा, सुभद्दा, विज्जुया, असणी

८. एक-एक देवी तिहां, शेष चमर महाराय।
आख्यो तिम कहिवो इहां, जाव वेसमण[2] ताय।।

८. तत्थे णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारो, सेसं जहा चमरसोमस्स एवं जाव वरुणस्स।
(श० १०।७५)

*स्थविर प्रश्न नों उत्तर जिन आखै। (ध्रुपदं)

९. नाग कुमारिंद्र धरण तणें प्रभु ! केतली अग्रमहेषी उक्त ?
जिन कहै षट अला सक्का सतेरा,
सोदामनी इंद्रा घनविद्युता प्रयुक्त।।

९. धरणस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं जहा—
अला, सक्का सतेरा सोदामिणी इंदा घणविज्जुया।

१०. इक-इक सुरी छः-छः सहस्र परिवारे समर्थ ते अन्य छः-छः हजार।
सर्व छत्तीस सहस्र रूप विकुर्वे, तुटित वर्ग[3] तसु कहियै उदार।।

१०. तत्थ णं एगमेगाए देवीए छ-छ देवीसहस्सं परिवारो पण्णत्तो। पभू णं ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं छ-छ देवीसहस्साइं परियारं विउव्वित्तए ?
एवामेव सपुव्वावरेणं छत्तीसाइं देविसहस्साइं। सेत्तं तुडिए। (श० १०।७६,७७)

११. समर्थ हे भगवंत ! धरण छै, शेष तं चेव पूर्ववत पेख।
णवरं धरणा नामे राजधानी है, धरण सिंहासण विषे विशेख।।

११. पभू णं भंते ! धरणे ? सेसं तं चेव, नवरं—धरणाए रायहाणीए, धरणंसि सीहासणंसि,

१२. धरण नै पोता नों परिवार कहिवो, सामानिक षट सहस्र है तास।
इत्यादि परिवार छै तिको कहिवो, शेष तिमज पूर्व पाठ अभ्यास।।

१२. सओ परियारो। सेसं तं चेव। (श० १०।७८)
'सओ परिवारो' त्ति धरणस्य स्वकः परिवारो वाच्यः स चैवं— (वृ० प० ५०६)

---

१. अंगसुत्ताणि भाग २, श० ३।४

२. अंगसुत्ताणि भाग २ श० १०।७५ में वेसमण के स्थान पर वरुण पाठ है। वहां वेसमण को पाठान्तर में रखा गया है।

३. एणी प्रकारे सपूर्वापर संघाते छत्तीस सहस्र नैं छ सहस्र गुणा करियैं तिवारे २१ कोडि ६०००००० लाख एतला रूप थावैं, तेहनैं तुटित वर्ग कहियै।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. निज परिवार कहिवै षट सहस्र सामानिक,
तावतीस तेतीस लोकपाल च्यार।
अग्रमहिषी छः अणिय कटक सप्त,
सात अणिय कटक नां अधिपति धार।।

१४. चउवीस सहस्र आतमरक्षक सुर छै, अन्य वलि बहु नागकुमार।
देव देवी संघाते परवरियो, नृत्य गीत रव भोग उदार।।

१५. नागकुमारिंद धरण नों हे प्रभु! कालवाल लोकपाल महाराय।
केतली अग्रमहेषी तेहनैं? जिन कहै च्यार सुभग सुखदाय।।

१६. अशोगा विमला सुप्रभा सुदर्शना, इक-इक नो वैक्रिय परिवार।
अवशेष चमर नां लोकपाल जिम,
वलि त्रिण लोकपाल इम धार।।

१७. भूतानंद नीं पृच्छा जिन उत्तर, छः अग्रमहिषी रूया नैं रूयंसा।
सुरूवा रूयगावती रूयकंता, रूयप्रभा परिवार धरण जिम वंशा।।

१८. नागकुमारिंद भूतानन्द नों, लोकपाल चित्र प्रश्न सुजना।
जिन कहै अग्रमहिषी च्यार है, सुनंदा सुभद्रा सुजाता सुमना।।

१९. इक-इक देवी रूप विकुर्वै, चमर लोकपाल नीं पर जाणी।
शेष तीन लोकपाल तणी पिण, इमहिज कहिवो सर्व पिछाणी।।

२०. दक्षिण दिश नां इंद्र अछै तसु, धरण तणी पर कहिवूं उदंत।
तेह तणां जे लोकपाल नैं, भूतानंद लोकपाल[1] ज्यूं हुंत।।

२१. णवरं सर्व राजधानी सिंहासण, इंद्र नां नाम सरीखे नाम।
परिवार मोया उद्देश विषे तिम, तीजे शतक धुर उद्देशे[2] ताम।।

२२. लोकपाल नीं राजधानी नैं सिंहासण, लोकपाल रै सरीखा नाम।
परिवार चमर नां लोकपाल जिम, सर्व विचारी कहिवूं ताम।।

२३. काल पिसाच नां इंद्र नैं भगवन! अग्रमहिषी केतली आखी।
जिन कहै च्यार कमला कमलप्रभा, उत्पला चउथी सुदर्शना दाखी।।

---

१. अंगसुत्ताणि भाग २ श० १०।८१ में 'जहा धरणस्स लोगपालाणं' के बाद उत्तरिल्लाणं इंदाणं जहा भूयाणंदस्स ......पाठ है। अन्य आदर्शों में यह पाठ नहीं है। इसकी सूचना उक्त ग्रन्थ के पृ० ४८० टिप्पण-संख्या ९ में दी गई है। जयाचार्य ने उपर्युक्त पाठ की जोड़ नहीं की। जयाचार्य को प्राप्त प्रतियों में यह पाठ नहीं रहा होगा। यही सम्भावना पुष्ट होती है।

२. अंगसुत्ताणि भाग २, श० ३/४

१३. 'छहिं' सामाणियसाहस्सीहिं तायत्तीसाए तायत्तीसएहिं चउहिं लोगपालेहिं छहिं अग्गमहिसीहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं (वृ० प० ५०६)

१४. चउवीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अन्नेहि य बहूहिं नागकुमारेहिं देवेहिं य सद्धिं संपरिवुडे' त्ति (वृ० प० ५०६)

१५. धरणस्स णं भंते! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ?
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ,

१६. असोगा, विमला, सुप्पभा सुदंसणा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारो, अवसेसं जहा चमरलोगपालाणं। एवं सेसाणं तिण्ह वि। (श० १०।७९)

१७. भूयाणंदस्स भंते! पुच्छा
अज्जो! छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा - रूया, रूयंसा सुरूया रूयगावती रूयकंता रूयप्पभा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, अवसेसं जहा धरणस्स। (श० १०।८०)

१८. भूयाणंदस्स णं भंते! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो नागचित्तस्स पुच्छा। अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सुणंदा, सुभद्दा, सुजाया, सुमणा।

१९. तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे अवसेसं जहा चमरलोगपालाणं। एवं सेसाणं तिण्ह वि लोगपालाणं।

२०. जे दाहिणिल्ला इंदा तेसिं जहा धरणिंदस्स लोगपालाण वि तेसिं जहा धरणस्स लोगपालाणं

२१. नवरं—इंदाण सव्वेसिं रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि, परियारो जहा मोउद्देसए।

२२. लोगपालाणं सव्वेसिं रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि परियारो जहा चमरस्स लोगपालाणं। (श० १०।८१)

२३. कालस्स णं भंते! पिसायिंदस्स पिसायरण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ? अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कमला, कमलप्पभा, उप्पला, सुदंसणा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. एक-एक देवी रूप विकुर्वै, इक-इक सहस्र सुंदर सिणगार।
शेष चमर लोकपाल तणी पर, परिवार पिण इमहीज विचार ।।
२५. णवरं काला नामे राजधानी है, काल सिंहासण शेषं तं चेव।
इमहिज महाकाल पिण कहिवो, बे इंद्र एह पिसाच नां भेव ।।
२६. भूतेन्द्र नाम सुरूप दक्षिण नो, प्रश्न नो उत्तर महिषी च्यार।
रूपवती बहुरूपा सुरूपा सुभगा, ए चिहुं रूप उदार ।।
२७. एक-एक देवी नो कहियै, इक-इक देवी सहस्र परिवार।
शेष ज्यूं काल पिशाच इन्द्रवत, इम प्रतिरूप तणों विस्तार ।।
२८. पूर्णभद्र यक्षेन्द्र नीं पूछा, उत्तर अग्रमहीषी च्यार।
पूर्णा बहुपुत्रिका नै उत्तमा, तारका ए चिहुं रूप उदार ।।
२९. एक एक देवी रूप विकुर्वै, इक-इक सहस्र शेष काल जेम।
एवं माणभद्र इंद्र उत्तर नों, बे इंद्र जक्ष तणां नित्य क्षेम ।।
३०. राक्षस इंद्र दक्षिण नां भीम नैं, प्रश्न नों उत्तर महिषी च्यार।
पद्मा पदमावती[1] कनका रत्नप्रभा, इक-इक देवी सहस्र परिवार ।।
३१. शेष काल जिम वर्णन कहिवो, महाभीम उत्तर नों एम।
च्यार सुरी सहस्र-सहस्र परिवारे, ए राक्षस नां दोय इंद्र सुप्रेम ।।
३२. किन्नर नीं पूछा कीधां जिन भाखै, अग्रमहेषी च्यार सुलेवा।
अवतंसा केतुमती रतिसेना, रतिप्रिया शेषं तं चेव[2] कहेवा ।।
३३. सतपुरुष पूछा चिउं अग्रमहिषी, रोहणी नवमिका ह्री पुष्फवंती।
इक-इक सहस्र परिवार शेष तिम, महापुरुष नैं पिण इम हुंती ।।
३४. अतिकाय नामे इंद्र च्यार महिषी, भुजगा भुजगवती नैं महाकच्छा।
फुडा सहस्र परिवार शेष तिम, महाकाय नैं पिण इम अच्छा ।।

२४. तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारो सेसं जहा चमरलोगपालाणं। परिवारो तहेव,
२५. नवरं—कालाए रायहाणीए, कालंसि सीहासणंसि, सेसं त चेव। एवं महाकालस्स वि।
२६. सुरूवस्स णं भंते! भूतिदस्स भूतरण्णो—पुच्छा
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा - रूववई बहुरूवा सुरूवा सुभगा।
[२]७. तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे सेसं जहा कालस्स। एवं पडिरूवस्स वि।
(श० १०।८३)
२८. पुण्णभद्दस्स णं भंते! जक्खिंदस्स—पुच्छा।
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पुण्णा, बहुपुत्तिया, उत्तमा, तारया।
२९. तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, सेसं जहा कालस्स। एवं माणभद्दस्स वि।
(श० १०।८४)
३०. भीमस्स णं भंते! रक्खसिंदस्स—पुच्छा
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पउमा वसुमती कणगा रयणप्पभा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे,
३१. सेसं जहा कालस्स। एवं महाभीमस्स वि।
(श० १०।८५)
३२. किन्नरस्स णं—पुच्छा
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—वडेंसा केतुमती रतिसेणा रइप्पिया। ......
परिवारे सेसं तं चेव। (श० १०।८६)
३३. सप्पुरिसस्स णं—पुच्छा।
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रोहिणी, नवमिया, हिरी, पुप्फवती। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, सेसं तं चेव। एवं महापुरिसस्स वि। (श० १०।८७)
३४. अतिकायस्स णं—पुच्छा
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—भुयगा, भुयगवती, महाकच्छा, फुडा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, सेसं तं चेव। एवं महाकायस्स वि। (श० १०।८८)

---

१. अंगसुत्ताणि में 'पउमावती' को पाठान्तर में रखा गया है, वहां मूल में 'वसुमती' शब्द है।
२. इसके बाद अंगसुत्ताणि भाग २ श० १०।८६ में 'एवं किंपुरिसस्स वि' पाठ है। इस पाठ की जोड़ नहीं है। सम्भव है कुछ आदर्शों में यह पाठ नहीं रहा होगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३५. गीतरति इंद्रच्यार महिषी, सुघोषा विमला सुस्वरा जाणी।
सरस्वती सहस्र परिवार शेष तिम, गीतजश नैं पिण इम माणी।।

३६. ए सर्व नैं काल तणी पर कहिवो, णवरं आप आपणो छै नाम।
ते सरीखे नामे रजधानी सिंहासण, कहिवो शेष तिमहिज तमाम।।

३७. ज्योतिषी इंद्र चंद्र नों पूछा, जिन कहै अग्रमहेषी च्यार।
चंद्रप्रभा नैं जोत्स्नाभा, अर्चिमाली नैं प्रभंकरा सार।।

३८. इम जिम जीवाभिगम[1] सूत्र में, कह्यो ज्योतिषी उदेशा मझार।
सर्व इहां पिण तिमहिज कहिवो, इक-इक चिहुं-चिहुं सहस्र परिवार।।

३९. सूर्य नैं पिण इमहिज कहिवूं, अग्रमहेषी च्यार उदार।
सूरप्रभा नै दूजी आदित्या[2], अर्चिमाली नैं प्रभंकरा सार।।

४०. शेष थाकतो तिमहिज कहिवो, जाव सुधर्मा सभा रै मांय।
मिथुन-प्रत्यय भोग भोगविवा, निश्चय करिनैं समर्थ नांय।।

४१. महाग्रह अंगार नैं भगवंत, केतली अग्रमहेषी कहाय?
जिन कहै च्यार विजया वेजयंती, जयंती नैं अपराजिता ताय।।

४२. इक-इक देवी रूप विकुर्वे, शेषं तं चेव चंद्र जिम आख्यो।
णवरं विमान अंगार अवतंसक, अंगार नाम सिंहासण भाख्यो।।

४३. इम व्याल नामे महाग्रह पिण कहिवो,
एवं अठयासी महाग्रह भणवा।
जावत भावकेतु पिण णवरं, विमान सिंहासण स्व नाम थुणवा।।

४४. प्रभु! शक्र नैं अग्रमहेषी नीं पूछा, जिन कहै अष्ट महिषी जाणी।
पद्मा शिवा सूची[3] अंजू नैं अमला,
अप्सरा नवमिका रोहिणी माणी।।

४५. इक-इक देवी नैं प्रभु भाख्यो, सोलै-सोलै सहस्र नों परिवार।
समर्थ इक-इक सुरी अनेरा, वैक्रिय करण सोल-सोल हजार।।

४६. एहीज पूर्व अपर कह्यां सगलां, इक लक्ष सहस्र अठावीस रूप।
परिचारणा नैं अर्थे विकुर्वे, तेह तुटित[4] वर्ग कहियै अनूप।।

३५. गीयरइस्स णं—पुच्छा
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सुघोसा, विमला, सुस्सरा, सरस्सई। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे सेसं तं चेव। एवं गीयजसस्स वि।

३६. सव्वेसिं एएसिं जहा कालस्स नवरं—सरिसनामियाओ रायहाणीओ सीहासणाणि य, सेसं तं चेव। (श० १०।८९)

३७. चंदस्स णं भंते! जोइसिंदस्स जोइसरण्णो पुच्छा।
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—चंदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभंकरा।

३८. एवं जहा जीवाभिगमे जोइसियउद्देसए तहेव।

३९. सूरस्स वि सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली पभंकरा

४०. सेसं तं चेव जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियं। (श० १०।९०)

४१. इंगालस्स णं भंते! महग्गहस्स कति अग्गमहिसीओ—पुच्छा।
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—विजया, वेजयंती, जयंती, अपराजिया।

४२. तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे सेसं जहा चंदस्स नवरं—इंगालवडेंसए विमाणे इंगालगंसि सीहासणंसि, सेसं तं चेव।

४३. एवं वियालगस्स वि। एवं अट्ठासीतिए वि महग्गहाणं भाणियव्वं जाव भावकेउस्स नवरं—वडेंसगा सीहासणाणि य सरिसनामगाणि सेसं तं चेव। (श० १०।९१)

४४. सक्कस्स णं भंते! देविंदस्स देवरण्णो—पुच्छा।
अज्जो! अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पउमा, सिवा, सची, अंजू, अमला, अच्छरा, नवमिया, रोहिणी

४५. तत्थ णं एगमेगाए देवीए सोलस-सोलस देवीसहस्सा परिवारो पण्णत्तो। (श० १०।९२)
पभू णं ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं सोलस-सोलस देवीसहस्साइं परिवारं विउव्वित्तए?

४६. एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठावीसुत्तरं देवीसयसहस्सं। सेत्तं तुडिए। (श० १०।९३)

---

१. जी० प० ३।१०२८-१०३६
२. अंगसुत्ताणि (१०।९०) 'आयवा' पाठ है। आयच्चा को वहां पाठान्तर में रखा गया है।
३. अंगसुत्ताणि १०।९२ में सची पाठ है। वहां सेया और सुयी को पाठान्तर में रखा गया है।
४. एणी परै सपूर्वापर संधाते एक लाख अठावीस सहस्र नैं सोलै सहस्र गुणा करियै तिवारै २०० दोय सौ कोड़ि ४८० लाख एतला रूप थावै तेहनैं तुटित वर्ग कहियै।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४७. समर्थ छै प्रभु ! शक्र देवेंद्रज, देवराजा सौधर्म देवलोक।
विमान सौधर्म अवतंसक नैं विषे, सभा सुधर्मा नैं विषे संयोग ।।

४८. शक्र सिंहासणे तुटिक वर्ग संग, शेष चमर नीं परै सहु कहिवो।
णवरं परिवार जे तीजा शतक[1] नों, मोय उद्देशो पहिलुं गहिवो ।।

४९. शक देवेंद्र नों सोम महाराजा, अग्रमहिषी किती प्रभु ! तास।
जिन कहै च्यार रोहिणी, मदना चित्रा नैं सोमा रूप गुणरास ।।

५०. तिहां एक-एक देवी शेष चमर नां, लोकपाल जिम नवरं कहीजै।
सयंप्रभ विमाने सभा-सुधर्मा सोम सिंहासन शेष तिमहीजै ।।

५१. इम जाव वेसमण लोकपाल लग, णवरं जूजुआ विमाण नां नाम।
तीजा शतक[2] जिम संझप्पभ वरसिट्ठ सयंजल वग्गु ताम ।।

५२. ईशाण पूछा आठ महिषी, कृष्ण कृष्णराई रामा सुनाम !
रामरक्षिता वसु वसुगुप्ता, वसुमित्ता नैं वसुंधरा ताम ।।

५३. इक-इक देवी शक्र जिम सगलूं, हिवै ईसाणेंद्र नुं लोकपाल।
सोम महाराय नैं किती पटराणी ?
जिन कहै च्यार कही सुविशाल ।।

५४. पृथिवी रात्री रत्नी विद्युत चौथी, शक्र नां लोकपाल जेम शेष।
इम जाव वरुण चौथा लग कहिवूं, णवरं विमाण नाम ए देख ।।

५५. चउथा शतक[3] में कह्या तिम कहिवा, सुमन सर्वतोभद्र वग्गु नाम।
सुवग्गु शेष तिम जाव सुधर्मा, मिथुन सेवन समर्थ नहिं ताम ।।

५६. सेवं भंते! सेवं भंते! कही नैं, यावत विचरै स्थविर ध्यान-सुधारस।
ए दशमा शतक नों पंचमुद्देशो,
उगणीसै इकवीसै पोह सुदि ग्यारस ।।

५७. ढाल भली दोय सौ तेवीसमीं, शहर बालोतरे जोड़ी विशाल।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रतापे, 'जय-जश' सम्पति मंगलमाल ।।
दशमशते पंचमोद्देशकार्थः ।।१०।५।।

४७. पभू णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे, सोहम्मवडेंसए विमाणे, सभाए सुहम्माए,

४८. सक्कंसि सीहासणंसि तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोग-भोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए। सेसं जहा चमरस्स नवरं—परियारो जहा मोउद्देसए। (श० १०।९४)

४९. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
रोहिणी, मदणा, चित्ता, सोमा

५०. तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, सेसं जहा चमरलोगपालाणं, नवरं—सयंपभे विमाणे, सभाए सुहम्माए, सोमंसि सीहासणंसि सेसं तं चेव।

५१. एवं जाव वेसमणस्स, नवरं—विमाणाइं जहा ततियसए। (श० १०।९५)
'विमाणाइं जहा तइयसए' त्ति तत्र सोमस्योक्तमेव यमवरुणवैश्रमणानां तु क्रमेण वरसिट्ठे सयंजले वग्गुत्ति विमाणा। (वृ० प० ५०६)

५२. ईसाणस्स णं भंते !—पुच्छा।
अज्जो ! अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
कण्हा, कण्हराई, रामा, रामरक्खिया, वसू, वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुंधरा

५३. तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे सेसं जहा सक्कस्स। (श० १०।९६)
ईसाणस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

५४. पुढवी, राई, रयणी, विज्जू।......सेसं जहा सक्कस्स लोगपालाणं एवं जाव वरुणस्स, नवरं—विमाणा।

५५. 'जहा चउत्थसए' सेसं तं चेव जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियं। (श० १०।९७)
जहा चउत्थसए' त्ति क्रमेण च तानीशानलोकपालानामिमानि—'सुमणे सव्वओभद्दे वग्गू सुवग्गू' इति। (वृ० प० ५०६)

५६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति (श० १०।९८)

---

१. अंगसुत्ताणि भाग २, श० ३।४
२. अंगसुत्ताणि भाग २ श० ३।२४८
३. अंगसुत्ताणि भाग २ श० ४।२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : २२४

दूहा

१. पंचमुद्देशक देव नीं, वक्तव्यता कही जेह।
छट्ठै सुर नों आश्रय-विशेष कहियै तेह।।

२. शक्र सुरिंद्र तणी प्रभु ! सभा सुधर्मा नाम।
किहां कही ? तब जिन कहै, सुण गौतम ! गुणधाम।।

३. जंबू मंदर-गिर तणी, दक्षिण दिशि में जेण।
रत्नप्रभा पृथ्वी अछै, इम जिम रायप्रसेण।।

४. जाव पंच अवतंसका, जाव शब्द में ठीक।
घणुं बरोबर सम अछै, भूमिभाग रमणीक।।

५. तेह भूमि थी ऊर्ध्व छै, चंद्र सूर्य ग्रह गन्न।
नक्षत्र ताराऊप थी, ऊंचो बहु योजन्न।।

६. योजन बहुसय बहु सहस्र, बहु लक्ष नैं बहु कोड़।
योजन कोड़ाकोड़ बहु, ऊर्द्ध दूर इम जोड़।।

७. सोधर्म कल्प तिहां कह्यो, इत्यादिक अवधार।
रायप्रसेणी[1] में कह्युं, तिम कहिवूं सुविचार।।

८. पंच अवतंसक में प्रथम, वर असोग अवतंस।
जावत मध्ये सौधरम-अवतंसक सुप्रशंस।।

सोरठा

९. जाव शब्द थी जाण, सप्तपर्ण-अवतंस फुन।
चंपकवतंस माण, तुर्य चूय-अवतंस ही।।

दूहा

१०. सौधर्म-अवतंसक तिको, महाविमाण पिछाण।
योजन साढा बार लक्ष, लांबो चोड़ो जाण।।

११. एवं इण अनुक्रम करि, जिम सुरियाभ-विमाण।
रायप्रश्रेणी[2] सूत्र में, आख्यो तास प्रमाण।।

१२. सुधर्म-अवतंसक विषे, तिमहिज कहिवूं ताम।
त्रिगुणी जाझी परिधि है, अतिही मन अभिराम।।

वा०—लांबपणै चोड़ापणै पूर्वे कह्यो हीज। शेष परिधि रही, ते इम—गुणचालीस लक्ष, बावन हजार, आठसै अडतालीस योजन—ए सौधर्मावतंसक नामैं महाविमाण नीं परिधि जाणवी।

१३. जिम सुरियाभ तणो कह्यो, देवपणैं उपपात।
तिम उपपातज शक्र नुं, कहिवूं सह अवदात।।

१४. अभिषेक फुन शक्र नों, तिमहिज कहिवूं जाण।
जिम सुरियाभ तणुं कह्युं, तिणहिज रीत पिछाण।।

१५. अलंकार नैं अर्चनिका, जिम सुरियाभ सुरेन्द्र।
तिमहिज कहिवूं इंद्र नों, जाव आयरक्ख देव।।

---

१. पञ्चमोद्देशके देववक्तव्यतोक्ता, षष्ठे तु देवाश्रयविशेष प्रतिपादयन्नाह— (वृ० प० ५०६)

२. कहि णं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ? गोयमा !

३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए…………एवं जहा रायप्पसेणइज्जे (सू० १२४)

४,५. जाव पंच वडेंसगा पण्णत्ता,
'पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणाइं (वृ० प० ५०६)

६. बहूइं जोयणसयाइं एवं सहस्साइं एवं सयसहस्साइं बहूओ जोयणकोडीओ बहूओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं वीइवइत्ता (वृ० प० ५०६)

७. एत्थ णं सोहम्मे नामं कप्पे पन्नत्ते इत्यादि (वृ० प० ५०६)

८. तं जहा—असोगवडेंसए जाव (सं० पा०) मज्झे सोहम्मवडेंसए।

९. इह यावत्करणादिदं दृश्यं—'सत्तवन्नवडेंसए चंपगवडेंसए चूयवडेंसए' त्ति (वृ० प० ५०७)

१०. से णं सोहम्मवडेंसए महाविमाणे अद्धतेरस-जोयणसय-सहस्साइं आयामविक्खंभेणं

११,१२. एवं जह सूरियाभे तहेव माणं
'एवं' अनेन क्रमेण यथा सूरिकाभे विमाने राजप्रश्नकृताख्यग्रन्थोक्ते प्रमाणमुक्तं तथैवास्मिन् वाच्यं (वृ० प० ५०७)
वा०—तत्र प्रमाणं—आयामविष्कम्भसम्बन्धि दर्शितं, शेषं पुनरिदम्—'ऊयालीसं च सयसहस्साइं बावन्नं सहस्साइं अट्ठ य अडयाले जोयणसए परिक्खेवेणं' ति। (वृ०प० ५०७)

१३,१४. तहेव उववाओ
सक्कस्स य अभिसेओ तहेव जह सूरियाभस्स
यथा सूरिकाभाभिधानदेवस्य देवत्वेन तत्रोपपात उक्तस्तथैवोपपातः शक्रस्येह वाच्योऽभिषेकश्चेति, (वृ० प० ५०७)

१५. अलंकारअच्चणिया तहेव जाव आयरक्ख त्ति। (श० १०।९९)

---

१. सू० १२५
२. सू० १२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. हिव वर्णक अभिषेक नुं, इंद्र तणो अवधार।
रायप्रश्नेणी सूत्र थी, कहियै इहां उदार।।
*शक्र सुर राजा, तिणरा चढता है सुजश दिवाजा।।(ध्रुपदं)
१७. तिण अवसर शक्र देविंद, ओ तो देवराजा सुखकंद।
ऊपजवा री सभा थी ताह्यो, ओ तो नीकल द्रह में न्हायो।।

१८. द्रह थी नीकल सुररायो, अभिषेक सभा में आयो।
बेठो सिंहासण तेहो, मुख पूरव साहमो करेहो।।

१९. सामानिक परषद नां देवा, सेवग सुर प्रति कहै स्वयमेवा।
इंद्राभिषेक थापवा काजो, स्नान करिवा पाणी आणो साजो।।

२०. सेवग सुण हरष्या तिण वारो, वचन विनय सहित अंगीकारो।
आया ईशाणकूण मभारो, वैक्रिय समुद्घात दोय वारो।।

२१. एक सहस्र वलि आठो, ए तो सोना रा कलश सुघाटो।
एक सहस्र आठ सुजाणी, एतो रूपा रा कलश पिछाणी।।
२२. एक सहस्र अठ मणि रत्नां नां, एक सहस्र अठ सुवर्णरूपा नां।
एक सहस्र आठ सुवर्ण मणी नां, इमहिज रूपमणिमय सुचीना।।

२३. सुवर्ण-रूप-मणिमय सुघाटो, ए तो कलश एक सहस्र आठो।
एक सहस्र नैं आठ माटी नां, आठ सहस्र नैं चउसठ सुविधाना।।
२४. इम भृंगार आरिसा नैं थालो, ए तो एक सहस्र नैं आठ विशालो।
पात्री एक सहस्र नैं आठो, इतरा सुप्रतिष्ठिया वर घाटो।
२५. चित्र-रत्न-करंडिया[1] विचारी, एतो एक सहस्र नैं अष्ट उदारी।
सहस्र अठ फूल चंगेरी, इतरी फूल-माल चंगेरी फेरी।।

*लय : सुण चरिताली ! थारा लक्षण

१. 'रायपसेणइयं' सूत्र २७९ में सुपतिट्ठाणं के बाद वायकरगाणं चित्ताणं रयणकरंडगाणं पाठ है। इसकी मुद्रित वृत्ति में वायकरगाण और रयणकरंडगाणं ये दो पाठ हैं। वृत्ति के अनुसार रयणकरंडग शब्द का अर्थ है—चित्र रत्न करंडग (वृ० प० २४२)।

इस पाठ की जोड़ में केवल एक ही शब्द है—'चित्र रत्नकरण्डिया' जो वृत्तिकार द्वारा किए गए अर्थ का संवादी लगता है। इससे निष्कर्ष यह निकलता है कि जयाचार्य को प्राप्त आदर्श में वायकरगाणं और चित्ताणं पाठ नही थे। ये पाठ कई प्रतियों में उपलब्ध नहीं हैं। यह सूचना रायपसेणइयं पृ० १०७ की टिप्पण संख्या २ में दी गई है।

१७. तए णं से ·······उववायसभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं निग्गच्छइ, जेणेव हरए तेणेव···जलमज्जणं करेइ, (राय सू० २७७)
१८. हरयाओ······पच्चोत्तरित्ता जेणेव अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छति·····सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे। (राय० सू० २७७)
१९. ···सामाणियपरिसोववण्णगा देवा आभिओगिए देवे सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो! ···· ····इंदाभिसेयं उवट्ठवेह। (राय० सू० २७८)
२०. तए णं ते आभिओगिआ देवा···एवं वुत्ता समाणा हट्ठ···विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति···दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति (राय० सू० २७९)
२१. ····अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं कलसाण, अट्ठसहस्सं रुप्पमयाणं कलसाणं (राय० सू० २७९)
२२. अट्ठसहस्सं मणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं सुवण्णरुप्पामयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं सुवण्णमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं रुप्पमणिमयाणं कलसाणं (राय० सू० २७९)
२३. अट्ठसहस्सं सुवण्णरुप्पमणिमयाणं कलसाणं अट्ठसहस्सं भोमिज्जाणं कलसाणं (राय० सू० २७९)
२४. एवं—भिंगाराणं आयंसाणं थालाणं पाईणं सुपतिट्ठाणं (राय० सू० २७९)
२५. रयणकरंडगाणं (चित्ररत्न करण्डक (वृ० प० २४२) पुप्फचंगेरीणं मल्लचंगेरीणं (राय० सू० २७९)

१. भगवती सूत्रकार ने शक्र देवेन्द्र के सौधर्मावतंसक महाविमान के वर्णन प्रसंग (श० १०।९९) में 'रायपसेणइयं' सूत्र का संकेत देते हुए लिखा है—'शक्र देवेन्द्र के विमान का प्रमाण, उपपात सभा, अभिषेक सभा, अलंकार सभा तथा अर्चनिका से लेकर आत्मरक्षक देवों तक पूरा प्रसंग सूर्याभ देव की तरह समझना चाहिए। यह बात 'भगवती जोड़' (ढाल २२४, गा० १५ तक आ गई है। इसके बाद जयाचार्य ने जोड़ में राजप्रश्नीय सूत्र के अनुसार कहीं विस्तार के साथ और कहीं संक्षेप में पूरा वर्णन किया है। इसी ढाल की १७ वीं गाथा से प्रारंभ हुआ यह वर्णन ३१२ वीं गाथा तक चलता है। सूर्याभ देव और शक्र देवेन्द्र के वर्णन में थोड़ा अन्तर है। प्रस्तुत क्रम में सूर्याभ देव के नाम, राजधानी, परिवार आदि के स्थान को खाली छोड़ते हुए जोड़ के सामने 'रायपसेणइयं' का पाठ उद्धृत किया गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६. आभरण चंगेरी चंगी, एक सहस्र नैं आठ सुरंगी।
मयूरपिच्छ पूंजणी नीं चंगेरी, एक सहस्र नैं आठ भलेरी।।
२७. पुष्पपडल पिण एता, जाव लोमहत्थ पडल समेता।
एक सहस्र नैं आठ सुछत्रो, चामर सहस्र नैं आठ पवित्रो।।
२८. सुगंध तेल नां डाबडा इतरा, जाव अंजन डाबडा जितरा।
एता कुडछा धूप उखेवा, सहु विकुर्वे सेवग देवा।।
२९. स्वभाविक वैक्रिय नां तेही, कलशा यावत धूप कुडछा लेई।
सौधर्मावतंसक थी चाल्या, ए तो उत्कृष्ट गति थी हाल्या।।

३०. ग्रहै क्षीरसमुद्र नों पाणी, तेहनां उत्पल कमल पिछाणी।
जाव लक्षपत्र[1] कमल लेई, आया पुष्करोदक दधि तेही।।

३१. ग्रहै पुक्खरदधि जल सारो, कमल सहस्रपत्रादि उदारो।
आया समय-क्षेत्र रै मांह्यो, क्षेत्र भरत एरवत ताह्यो।।

३२. तीर्थ मागध वर दाम प्रभास, सुर उदक माटी लै तास।
ए लौकिक तीरथ होई, पिण धर्म तीर्थ नहिं कोई।।
३३. ग्रहै गंगा सिंधु नों पाणी, वली रत्ता रत्तवती नों जाणी।
बिहुं तट नीं माटी उदारो, ते पिण देव ग्रहै तिणवारो।।
३४. भरत सीमा चूल हेमवंतो, एरवत सीमा सिखरी सोहंतो।
तिहां आया देव हुलासो, सर्व तूवर रस ले तासो।।
३५. सर्व फूल सर्व गंधो, ग्रहै सर्व माल्य सुखकंदो।
ओषधि सर्व उदारो, वलि ग्रहै सरिसव सुविचारो।।
३६. हेमवंते पद्म द्रह ठीक, सिखरी पर्वत द्रहे पुंडरीक।
बिहुं द्रह नां उदक ग्रहै आछा, जाव कमल सहस्रपत्र जाचा।।
३७. युगल क्षेत्र हेमवंत वासो, तिहां नदी रोहिया रोहितासो।
क्षेत्र एरणवत में पिछाणी, सुवर्णकूला रूपकूला जाणी।।
३८. ए पिण महानदी नों सारो, ग्रहै उदक धरी अति प्यारो।
बिहुं तट नीं माटी आछी, ते पिण देव ग्रहै अति जाची।।
३९. वृत्त वैताढ्य ते बिहुं खेतो, सद्दावई वियडावई तेथो।
सर्व तूवर रस पुष्फ गंध माला, ओषधि सरिसव ग्रहै सुविशाला।।
४०. गिरि महाहेमवंत नैं रूपी, ग्रहै खाटो रस पुष्पादि अनूपी।
महापद्म द्रह महापुंडरीक, तेहनों उदक कमल लै सधीक।।

१. 'रायपसेणइयं' मूल पाठ में यहां 'सहस्सपत्ताइं' पाठ है। इस पाठ के पाठांतर का यहां उल्लेख नहीं है। इस ढाल की अनेक गाथाओं में इसी प्रकार लक्षपत्र या लाख पांखुडिया शब्द प्रयुक्त है।

२६. आभरणचंगेरीणं ···लोमहत्थचंगेरीणं
(राय० सू० २७९)
२७. पुप्फपडलगाणं जाव (सं० पा०) लोमहत्थपडलगाणं
····छत्ताणं चामराणं (राय० सू० २७९)
२८. तेल्लसमुग्गाणं जाव (सं० पा०) अंजणसमुग्गाणं····
अट्ठसहस्सं धूवकडुच्छुयाणं विउव्वंति
(राय० सू० २७९)
२९. विउव्वित्ता ते साभाविए य वेउव्विए य कलसे य
जाव कडुच्छुए य गिण्हंति, गिण्हित्ता (सोहम्मवडेंसाओ)
विमाणाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता
ताए उक्किट्ठाए···देवगईए·······वीतिवयमाणा
(राय० सू० २७९)
३०. ···खीरोयगं गिण्हंति, गिण्हित्ता जाइं तत्थुप्पलाइं
जाव (सं० पा०) सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हित्ता
गिण्हंति जेणेव पुक्खरोदए समुद्दे तेणेव उवागच्छंति
(राय० सू० २७९)
३१. उवागच्छित्ता पुक्खरोदयं गेण्हंति, गेण्हित्ता जाइं
तत्थुप्पलाइं सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हंति, गिण्हित्ता
जेणेव समयखेत्ते जेणेव भरहेरवयाइं वासाइं
(राय० सू० २७९)
३२. जेणेव मागहवरदामपभासाइं तित्थाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तित्थोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता
तित्थमट्टियं गेण्हंति (राय० सू० २७९)
३३. जेणेव गंग-सिंधू-रत्ता-रत्तवईओ महानईओ तेणेव
उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सलिलोदगं गेण्हंति,
गेण्हित्ता उभओकूलमट्टियं गेण्हंति, (राय० सू० २७९)
३४. जेणेव चुल्लहिमवंतसिहरिवासहरपव्वया तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता सव्वतूयरे
(राय० सू० २७९)
३५. सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए
गिण्हंति, (राय० सू० २७९)
३६. जेणेव पउमपुंडरीयदहा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता दहोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं
(जाव) सहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हंति (राय० सू० २७९)
३७,३८. जेणेव हेमवयएरण्णवयाइं वासाइं जेणेव रोहिय-
रोहियंससुवण्णकूल-रुप्पकूलाओ महाणईओ तेणेव
उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सलिलोदगं गेण्हंति,
गेण्हित्ता उभओकूलमट्टियं गिण्हंति (राय० सू० २७९)
३९. जेणेव सद्दावाति-वियडावाति वट्टवेयड्ढपव्वया तेणेव
उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए गिण्हंति
४०. जेणेव महाहिमवंत-रुप्पि-वासहरपव्वया··· सव्वतूयरे
सव्वपुप्फे···जेणेव महापउम-पुंडरीयद्दहा ···दहोदगं····
सहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हंति (राय० सू० २७९)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४१. क्षेत्र हरिवास सोहंता, नदी हरिसलिला हरिकंता।
रम्यकक्षेत्र नरकंता नारीकंता, ग्रहै उदक माटी धर खंता॥

४२. तिणे बिहुं क्षेत्रे अवलोय, वृत्त वैताढ्य गिरि है दोय।
गंधावई मालवंत, तूवर रस पुष्पादि ग्रहंत॥

४३. निषध नीलवंत गिरि केरो, तूवर पुष्पादि लेवै भलेरो।
द्रह तिगिच्छ केसरी नां जाचा, लियै उदक कमल अति आछा॥

४४. पछै क्षेत्र विदेह तिहां आया, नदी सीता सीतोदा सुखदाया।
तेहनों निर्मल पाणी लेवै, बिहुं तट नीं माटी ग्रहेवै॥

४५. विजय सर्व चक्री नीं तास, तीर्थ मागध वर दाम प्रभास।
तेह तीर्थ नुं उदक ग्रहंता, वलि माटी ग्रहै धर खंता॥

४६. विदेह क्षेत्रे अंतर नदी बार, तसु उदकादिक लियै उदार।
वलि वक्खारा पर्वत सोल, लियै तूवर पुष्पादि सुचोल॥

४७. हिवै मंदरगिरि गुणमाल, भूमि ऊपर वन भद्रसाल।
ग्रहै सव तूवर सर्व फूल, सर्व माल्य प्रमुख जे अमूल॥

४८. ऊर्द्ध पांच सौ योजन सुहाया, नंदन वन छै तिहां सुर आया।
सर्व तूवर आदि ग्रहंता, सरस गोशीर्ष चंदन लेवंता॥

४९. तीजो वन सोमनस उदार, ऊंचो योजन बासठ हजार।
ग्रहै सर्व तूवर रस जाव, सर्व ओषधि सरिसव साव॥

५०. वलि चंदन सरस गोसीस, दिव्य फूलमाला सुजगीस।
गाल्यो तथा पचायो श्रीखंड, जेहवो गंध सुगंध सुमंड॥

५१. तेहथी छत्तीस सहस्र योजन्न, ओ तो ऊंचो पंडग वन्न।
सर्व तूवर रस अमंद, श्रीखंड गंध सरीखो सुगंध॥

५२. सेवग सर्व वस्तु लेई सधीक, जिहां अभिषेक-सभा रमणीक।
जिहां इंद्र तिहां शीघ्र आय, सिर आवर्त्त करि अधिकाय॥

५३. अंजलि बिहुं कर जोड़ी नैं, जय विजय कर वधावी नैं।
ते महाअर्थ महामूल्य, वर मोटो योग्य अतुल्य॥

५४. विपुल विस्तीर्ण आरोग्य, इन्द्राभिषेक करिवा योग्य।
उदक प्रमुख अवलोय, थापै सर्व सामग्री सोय॥

४१. जेणेव हरिवासरम्मगवासाइं जेणेव हरि[1] हरिकंत-नरनारिकंताओ महाणईओ तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सलिलोदगं गेण्हंति गेण्हित्ता उभओकूल-मट्टियं गेण्हंति। (राय० सू० २७९)

४२. जेणेव गंधावाति-मालवंत-परियागा वट्टवेयड्ढपव्वया ····सव्वतूयरे सव्वपुप्फे·······गिण्हंति (राय० सू० २७९)

४३. जेणेव णिसढ-णीलवंत-वासधरपव्वया······सव्वतूयरे सव्वपुप्फे····गिण्हंति
जेणेव तिगिच्छि केसरिद्दहाओ······दहोदगं·······सहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हंति (राय० सू० २७९)

४४. जेणेव महाविदेहे वासे जेणेव सीता-सीतोदाओ महाणदीओ···सलीलोदगं गेण्हंति गेण्हित्ता उभओकूल-मट्टियं गेण्हंति (राय० सू० २७९)

४५. जेणेव सव्वचक्कवट्टि-विजया जेणेव सव्वमागहवर-दाम-पभासाइं तित्थाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तित्थोदगं गेण्हंति गेण्हित्ता तित्थमट्टियं गेण्हंति। (राय० सू० २७९)

४६. जेणेव सव्वंतरणईओ····सलिलोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता उभओकूलमट्टियं गेण्हंति····जेणेव सव्ववक्खारपव्वया ······सव्वतूयरे सव्वपुप्फे··· · य गेण्हंति (राय० सू० २७९)

४७. जेणेव मंदरे पव्वते जेणेव भद्दसालवणे···सव्वतूयरे सव्वपुप्फे····सव्वमल्ले ····गेण्हंति (राय० सू० २७९)

४८. जेणेव णंदणवणे तेणेव उवागच्छंति····सव्वतूयरे···· सरसं गोसीसचंदणं गिण्हंति (राय० सू० २७९)

४९. जेणेव सोमणसवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे जाव (सं० पा०) सव्वोसहिसिद्धत्थए य (राय० सू० २७९)

५०. सरसं गोसीसचंदणं च दिव्वं च सुमणदामं गिण्हंति (राय० सू० २७९)

५१. जेणेव पंडगवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता·— सव्वतूयरे····दद्दरमलयसुगंधियगंधे गिण्हंति। (राय० सू० २७९)

५२. जेणेव अभिसेयसभा जेणेव सक्के देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए (राय० सू० २७९)

५३. अंजलि कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं (राय० सू० २७९)

५४. विउलं इंदाभिसेयं उवट्ठवेंति (राय० सू० २७९)

---

१. जोड़ में इसके स्थान पर हरिसलिला है। रायपसेणइयं में हरिसलिला को पाठान्तर में रखा गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५५. हिवै इन्द्र तणां तिण वार, सामानिक चउरासी हजार।
वलि अग्रमहिषी अठ, परिवार सहित सुघट।।
५६. परिषद तीन सुजात, वलि अणिय कटकाधिप सात।
जाव अन्य बहु सुधर्मवासी, वर अमर सुरी सुखरासी।।

५७. अष्ट सहस्र नैं चउसठ उदार, कलश सुवर्णादिक नां सार।
स्वभाविक वैक्रिय नां वारु, ते कलश किसायक चारु।।

गीतक-छंद

५८. वर कमल नूं वैसणू जेहनैं, सुगंध वर जल करि भर्या।
वलि चंदने करि चर्चिता, अतिही मनोहर उच्चर्या।।
५९. आरोपिता जसु कलश कंठे, रक्त सूत्र सुहामणा।
फुन पद्म उत्पल कमल नां, तसु ढांकणा रलियामणा।।
६०. सुकुमाल कोमल कर तले करि, अमर कलशा संग्रह्या।
सहु सुगंध जल करि सर्व, तीरथ-मृत्तिका कर शोभिया।।
६१. सहु तूवर रस करि जाव सघली, ओषधी सरिसव करी।
सहु ऋद्धि करिकै जाव सघलै, पवर वाजित्रे वरी।।
६२. इह रीत अति मोटैज मोटै, इंद्र अभिषेके करी।
अभिषेक करता चित्त हरता, हरख धरता सुर सुरी।।
६३. तव शक्र नैं सामानिकादिक, राज बैसाणे तदा।
वर पूर्व कृत तप तसु प्रभावे, लही उत्तम संपदा।।

दूहा

६४. अमर बहू तिण अवसरे, सुधर्मावतंस विमान।
तेह विषे कोतुक करै, सुणो सुरत दे कान।।
६५. *इन्द्राभिषेक उदारो रे, वर्त्तते छते सुर केइ सारो।
रज रेणु मिटावण भावै रे, ए तो सुरभि उदक वरसावै।।

६६. केइ विशेष रज उपशमायो, उदक छांटी नैं ताह्यो।
जिम कचवर सोधन लीपेहो, मार्ग पवित्र करै तिम एहो।।

६७. केइ मंच ऊपर करै मंचो, केइ अनेक रंगे रंगी संचो।
एहवी ध्वजा पताका जानो, मंडित ऊर्द्ध करै असमानो।।
†पुरन्दर सुर प्यारे, शक्र सुर इन्द्र प्यारे।
ए तो सुकृत नां फल सारो, मघवन सुर प्यारे।। (ध्रुपदं)

५५. तए णं····चउरासीइ सामाणियसाहस्सिओ अट्ठ अग्ग-
महिसीओ सपरिवारातो, (राय० सू० २८०)
५६. तिण्णि परिसाओ सत्त अणियाहिवइणो जाव
(सं० पा०)अण्णेवि बहवे सोहम्मविमाणवासिणो देवा
य देवीओ य (राय० सू० २८०)
५७-६२. तेहिं साभाविएहिं य वेउव्विएहिं य वरकमल-
पइट्ठाणेहिं सुरभिवरवारिपडिपुण्णेहिं चंदणकयचच्चा-
एहिं आविद्धकंठगुणेहिं पउमुप्पलपिहाणेहिं सुकुमाल-
करयलपरिग्गहिएहिं अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं कल-
साणं····जाव (सं० पा०)····सव्वोदएहिं सव्वमट्टियाहिं
सव्वतूयरेहिं जाव (सं० पा०) सव्वोसहिसिद्धत्थ-
एहिं य सव्विड्ढीए (जाव सू० १३) 'नाइयरवेणं'
महया-महया इंदाभिसेएणं अभिसिंचंति
(राय० सू० २८०)

६५. तए णं तस्स····महया-महया इंदाभिसेए वट्टमाणे
—अप्पेगतिया देवा······रय-रेणु-विणासणं दिव्वं
सुरभिगंधोदगवासं वासंति। (राय० सू० २८१)
६६. अप्पेगतिया देवा·······पसंतरयं करेंति। अप्पेगतिया
देवा······आसियसंमज्जिओवलित्तं सित्तसुइ·······
करेंति। (राय० सू० २८१)
आसिकम्—उदकच्छटकेन सम्मार्जितं—संभाव्यमान-
कचवरशोधनेन उपलिप्तमिव गोमयादिना उपलिप्तं
तथा सिक्तानि जलेन अत एव शुचीनि—पवित्राणि
(राय० वृ० प० २४७)
६७. अप्पेगतिया देवा·····मंचाइमंचकलियं करेंति अप्पे-
गतिया देवा·····णाणाविहरागोसियझयपडागाइ-
पडागमंडियं करेंति। (राय० सू० २८१)

---

*लय : थे तो चतुर सीखो सुध चरचा
†लय : ज्यारे शोभै केसरिया साड़ी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६८. केइ लीपै धवल विमानं, गोसीस सरस सुविधानं। पुरन्दर।
रक्त चन्दन करि सीधा, पंचांगुलि हाथा दीधा।। शक्र०।

६८. अप्पेगतिया देवा सोहम्मवडेंसयं विमाणं लाउल्लोइय-महियं गोसीस-सरस-रत्तचंदण-दद्दर-दिण्ण-पचंगुलितलं करेंति। (राय० सू० २८१)

६९. केइ द्वार नैं देश भागेह, चंदन[1] चर्चित घट स्थापेह।
वले शोभन तोरण सारं, एहवा कीधा अधिक उदारं।।

६९, अप्पेगतिया देवा······उवचिय·······वंदणघड-सुकय तोरण-पडिदुवार-देसभागं करेंति। (राय० सू० २८१)

७०. केइ नीचली भूमि थी ताह्यो, ऊपर चंदवा लग अधिकायो।
बांधै वर्तुल बहु पुष्पमाला, बारू लंबायमान विशाला।।

७०. अप्पेगतिया देवा···आसत्तोसत्त-विउल-वट्टवग्घारिय-मल्ल-दाम-कलावं करेंति (राय० सू० २८१)

७१. केइ पंच वर्ण नां सुगंध, मूकै पुष्प-पुंज सुखकंद।
तेहिज पूजा उपचार सहीतं, एहवो करै विमाण सुरीतं।।

७१. अप्पेगतिया देवा···पंचवण्ण-सुरभि-मुक्कपुप्फपुंजोव-यारकलियं करेंति। (राय० सू० २८१)

७२. केइ सुधर्मावतंस विमाणं, वर कृष्णागर कुंदरुक्कं जाणं।
सेल्हा रस नां धूप करि जेह, मघमघायमान करेह।।

७२. अप्पेगतिया देवा सोहम्मवडेंसयं विमाणं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेंत - गंधुद्धुयाभिरामं करेंति। (राय० सू० २८१)

७३. केइ सुगंध पवर गंध युक्तं, गंध नीं वातीभूत प्रयुक्तं।
सुर एहवो विमाण करेह, अति उचरंग हरष धरेह।।

७३. अप्पेगइया देवा···सुगंधगंधियं गंधवट्टि भूतं करेंति। (राय० सू० २८१)

७४. *केइ हिरण्य सुवर्ण वर्षायो, वले रत्न-वर्षा करै ताह्यो।
वलि फूल नीं वृष्टि करेहो, फल वृष्टि करै धर नेहो।।

७४. अप्पेगतिया देवा हिरण्णवासं वासंति, सुवण्णवासं वासंति रयणवासं वासंति·····पुप्फवासं वासंति फलवासं वासंति। (राय० सू० २८१)

७५. वलि फूलमाल वर्षायो, आभरण नी वृष्टि[2] सुहायो।
करै गंध कपूरादिक वृष्टि, चूर्ण वृष्टि अबीरादि इष्टि।।

७५. मल्लवासं वासंति, गंधवासं वासंति चुण्णवासं वासंति आभरणवासं वासंति। (राय० सू० २८१)

७६. केइ रूपा नीं विध मंगलभूतो, अन्य सुर भणी दै शुभ सूतो।
इम सुवर्ण रत्न प्रकारो, सुर दियै फूलादिक सारो।।

७६. अप्पेगतिया देवा हिरण्णविहिं भाएंति एवं---सुवण्ण-विहिं रयणविहिं पुप्फविहिं···भाएंति। (राय० सू० २८१)
हिरण्यविधिहिरण्यरूपं मंगलभूतं प्रकारं (राय० वृ० प० २४७)

७७. केइक सुर वलि ताह्यो, चिउंविध वाजंत्र वजायो।
ततं कहितां मृदंग पडहादि, विततं कहितां वीणादि।।

७७. अप्पेगतिया देवा चउव्विहं वाइत्तं वाएंति---ततं विततं (राय० सू० २८१)

७८. घन कहितां कंसादि, झुसिर शंख काहलादि।
ए बाजित्र च्यार प्रकारो, ए तो देव बजावै उदारो।।

७८. घणं सुसिरं (राय० सू० २८१)

---

*लय : थे तो चतुर सीखो सुध चरचा

१. रायपसेणइयं सूत्र २८१ में वंदण कलश और वंदणघड इन दो शब्दों का उल्लेख है। जोड़ में चन्दनचर्चित घट लिखा हुआ है। यहां दो बिन्दु चिन्तनीय हैं---
० कुछ प्रतियों में चंदन कलस और चंदन घड दोनों पाठ हों और कुछ प्रतियों में केवल चंदण घड पाठ ही हो।
० कुछ प्रतियों में वंदणकलस और वंदणघड पाठ है जहां वंदणकलस पाठ है वहां पाठान्तर की कोई सूचना नहीं है। ऐसी स्थिति में यह अनुमान किया जा सकता है कि लिपि दोष के कारण चंदण का वंदण अथवा वन्दन का चंदण हो गया हो। जोड़ में चंदण होने पर भी 'रायपसेणइयं' में स्वीकृत पाठ वंदण को ही उसके सामने उद्धृत किया गया है। आगे की गाथाओं के सामने भी यही पाठ उद्धृत है।

२. रायपसेणइयं में मल्लवासं के बाद गंधवासं चुण्णवास पाठ है। उसके बाद आभरणवास है। जोड़ में क्रम का व्यत्यय है। संभव है कुछ आदर्शों में पाठ का क्रम यह रहा होगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७९. *केइ चउविध गावै गीतं, उक्खित्तं पायताय पुनीतं।
तृतीय मंदाय सुजानं, तूर्य रोइय ते अवसानं॥

वा० – कोइक देवता चिहुं प्रकारे गीत गावै, ते कहै छै—उक्खित्ताय—प्रथम गीत प्रारंभ्यो छै। पायत्ताय—चिहुं चरणे बांध्यो। मंदाय—मध्य भागे मूर्च्छनापूरय गुण करी। छेहड़े रोइयावसाणं—चोरिवा योग्य थया।

८०. केइ शीघ्र नाटक विधि देखाड़ै, केइ नाटक विलंबित पाड़ै।
केइ द्रुत-विलंबित विद्ध, एहवा नाटक देखाड़ै प्रसिद्ध॥

८१. केइ अंचित नाटक देखाड़ै, केइ आरभित नाटक पाड़ै।
केइ अंचित-आरभित विद्धि, नाटक उभय देखाड़ै समृद्धि॥

८२. केइ आरभड नाटक देखाड़ै, केइ भसोल नाटक पाड़ै।
केइ आरभड-भसोल पिछाणी, नाटक देखाड़ै उचरंग आणी॥

गीतक-छंद

८३. ऊंचोज उत्पतवै करी फुन, अधो पड़वुं व्यापवुं।
संकोचवूं ज पसारवुं, गमनागमन फुन थापवुं॥

८४. वलि भ्रंत भाव संभ्रंत भाव ज, नाम दिव्य प्रधान ही।
ए नृत्यविधि आरभड़ भसोलज, सुर दिखाड़ै जान ही॥

८५. उत्पात पूर्व निपात, जेह में ते उत्पात-निपात ही।
पहिलूं पड़ी नें ते पछै, उत्पात ऊंचो जात ही॥

८६. निपात पूर्व उत्पात जेह में, ते निपात-उत्पात ही।
उत्पत्य ऊंचो जई पहिलां, पछै नीचो आत ही॥

८७. संकुचित पूर्व प्रसारितं जे, ते संकुचित-प्रसारितं।
पहिलां पसारी नें पछै संकोचिवूं इम कारितं॥

८८. इम गमन नें आगमन आख्यूं, अर्थ पूरववत वही।
इम भ्रंत नें संभ्रंत नामे दिव्य नाटक विध कही॥

वा०—उत्पात ते ऊंचो जायवूं, पिण पूर्व निपात—नीचुं पड़वूं छै जेहनें विषे, एतलै पहिलां नीचो जई पछै ऊंचो जाय ते उत्पात-निपात कहियै। इम निपात ते नीचूं पड़वूं, पिण पूर्व उत्पात—ऊंचो जायवूं छै जेहनें विषे एतलै पहिलां ऊंचो जई पछै नीचो पड़ै ते निपात-उत्पात कहियै। इम संकुचित-प्रसारित नां बे भेद। इम गमन ते जायवूं अनें आगमन ते आयवूं, तेहनां बे भेद। इम भ्रंत-संभ्रंत कहिवूं। ए सर्व भेद 'आरभड-भसोल' नाटक नां छै। ते आरभड-भसोल एहवै नामे दिव्य नाटक विध देखाड़ै।

८९. †केइ षट-भाषा[1] च्यार प्रकारो, बोली देखाड़ै सुर धर प्यारो।
ते दाष्टांतादिक धारो, नाटक ग्रंथ मांहि अधिकारो।

*ज्यांरै शोभै केसरिया साड़ी

†लय : थे तो चतुर सीखो सुध चरचा

१. षट्भाषा मूल पाठ में नहीं है। जयाचार्य ने अपनी दृष्टि से व्याख्या दी है। शायद टब्बे आदि के आधार पर यह पद्य लिखा गया है।

७९. अप्पेगइया देवा चउव्विहं गेयं गायंति, तं जहा—उक्खित्तायं पायंतायं मंदायं रोइयावसाणं।
(राय० सू० २८१)

८०. अप्पेगतिया देवा विलंबियं दुयं नट्टविहिं उवदंसेंति।
अप्पेगतिया देवा विलंबियं णट्टविहिं उवदंसेंति।
अप्पेगतिया देवा दुय-विलंबियं णट्टविहिं उवदंसेंति।
(राय० सू० २८१)

८१. अप्पेगतिया देवा अंचियं नट्टविहिं उवदंसेंति।
अप्पेगतिया देवा रिभियं नट्टविहिं उवदंसेंति।
अप्पेगइया देवा अंचिय-रिभियं नट्टविहिं उवदंसेंति।
(राय० सू० २८१)

८२. अप्पेगइया देवा आरभडं नट्टविहिं उवदंसेंति।
अप्पेगइया देवा भसोलं नट्टविहिं उवदंसेंति।
अप्पेगइया देवा आरभड-भसोलं नट्टविहिं उवदंसेंति
(राय० सू० ३८१)

८३. अप्पेगइया देवा उप्पायनिवायपसत्तं संकुचिय-पसारियं रियारियं
(राय० सू० २८१)

८४. भंत-संभंतं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति।
(राय० स० २८१)

वा०—उत्पातपूर्वो निपातो यस्मिन् स उत्पातनिपातस्तं एवं निपातोत्पातं संकुचितप्रसारितं भ्रान्त-संभ्रान्तं नाम आरभटभसोलं दिव्यं नाट्यविधिमुपदर्शयन्ति। (राय० वृ० प० २४८)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा०—केतलायक देवता च्यार प्रकारे षट भाषा बोली देखाड़ै, ते च्यार प्रकार कहै छै—१. दार्ष्टांतिक, २. प्रात्यंतिक, ३. सामंतोपपातिक, ४. लोक-मध्यावसान—ए चिहुं पद नीं व्याख्या नाटक ग्रंथ थकी जाणवी।

९०. केयक देव बुक्कारे, म्हांसू युद्ध कर तूं इहवारे।
केइ प्रीणे धरी अहंकारो, आतम स्थूल करै तिहवारो॥

९०. अप्पेगतिया देवा बुक्कारेंति, अप्पेगतिया देवा पीणेंति। (राय० सू० २८१)
अप्येकका देवा बुक्काशब्दं कुर्वन्ति, पीनयन्ति—पीनमात्मानं कुर्वन्ति—स्थूला भवन्तीत्यर्थः
(राय० वृ० प० २४८)

९१. केइ लास्य रूप नाटक पाड़ै, केइ ताण्डव नाटक देखाड़ै।
केइ च्यारूं साथ सुवासो, इम कर रह्या देव तमासो॥

९१. अप्पेगतिया लासेंति। अप्पेगतिया तंडवेंति।
अप्पेगतिया बुक्कारेंति, पीणेंति, लासेंति, तंडवेंति। (राय० सू० २८१)
लासयन्ति लास्यरूपं नृत्यं कुर्वन्ति, ताण्डवयन्ति—ताण्डवरूपं नृत्यं कुर्वन्ति। (राय० वृ० प० २४८)

९२. केइ देव आस्फोटन करंता, मही प्रमुख कर स्यूं हणंता।
केइ देव विलगै मांहोमांह्यो, केइ त्रिपदी छेद करै ताह्यो॥

९२. अप्पेगतिया अप्फोडेंति। अप्पेगतिया वग्गंति। अप्पेगतिया तिवइं छिंदंति। (राय० सू० २८१)
आस्फोटयन्ति भूम्यादिकमिति गम्यते।
(राय० वृ० प० २४८,२४९)

९३. केइ आस्फोटन पिण ताह्यो, वले वलगावुं ते मांहोमांह्यो।
वलि त्रिपदी छेद सांकल तोड़ै, एह तीनूंई विध प्रति जोड़ै॥

९३. अप्पेगतिया अप्फोडेंति वग्गंति, तिवइं छिंदंति।
(राय० सू० २८१)

९४. केइ हय जिम करै हीसारो, केइ गज जिम गुलगुलाटकारो।
केइ रथ जिम करै घणघणाटो, केइ तीनूं करै सुर थाटो॥

९४. अप्पेगतिया हयहेसियं करेंति।
अप्पेगतिया हत्थिगुलगुलाइयं करेंति।
अप्पेगतिया रहघणघणाइयं करेंति।
अप्पेगतिया हयहेसियं करेंति, हत्थिगुलगुलाइयं करेंति, रहघणघणाइयं करेंति। (राय० सू० २८१)

९५. *केइ सुर उछलै स्वयमेवा, केइ विशेष ऊछलै देवा।
केइ पेला नीं कूटि काढंता, केइ देव तीनूंई करंता॥

९५. अप्पेगतिया उच्छलेंति, अप्पेगतिया पोच्छलेंति, अप्पेगतिया उक्किट्ठियं करेंति। अप्पेगतिया उच्छलेंति, पोच्छलेंति, उक्किट्ठियं करेंति। (राय० सू० २८१)

९६. केइ उड़ जाय ऊंचा आकाशो, केइ देव नीचा पड़ै तासो।
केइ कूदी-कूदी तिरछा पड़ता, केइ देव तीनूंई धरता॥

९६. अप्पेगतिया ओवयंति, अप्पेगतिया उप्पयंति, अप्पेगतिया परिवयंति, अप्पेगइया तिण्णि वि।
(राय० सू० २८१)
परिपतन्ति—तिर्यक् निपतन्तीत्यर्थः
(राय० वृ० प० २४९)

९७. केइ सुर सिंहनाद करंता, केइ पग करि भूमि कूटंता।
केइ भूमि चपेटा देवै, केइ देव तीनूंई करेवै॥

९७. अप्पेगइया सीहनायं नयंति, अप्पेगतिया पाददद्दरयं करेंति।
अप्पेगतिया भूमिचवेडं दलयंति, अप्पेगतिया तिण्णि वि। (राय० सू० २८१)

९८. केइक देव गाजंता, केइ विजल जिम चमकंता।
केयक मेह वर्षाय, केइ देव तीनूं करै ताय॥

९८. अप्पेगतिया गज्जंति, अप्पेगतिया विज्जुयायंति, अप्पेगइया वासं वासंति, अप्पेगतिया तिण्णि वि करेंति। (राय० सू० २८१)

९९. केइ ज्वलै छै देवा, केइ तपै ततखेवा।
केइ तपै छै विशेख, केइ कार्य तीनूं उवेख॥

९९. अप्पेगतिया जलंति, अप्पेगतिया तवंति, अप्पेगतिया पतवेंति, अप्पेगतिया तिण्णि वि।
(राय० सू० २८१)

*लय : ज्यांरै शोभै केसरिया साड़ी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१००. केइ हक्कारे केइ फुक्कारे[1], केइक पर नें थुक्कारे।
केइ पोता नों नाम संभलावै, केइ च्यारूंई कर हुलसावै॥

वा०—हक्कारेंति ते पर नें विनय करि कला देखाड़ै, फुक्कारेंति ते फुरकार करै, थुक्कारेंति ते थू-थू करै।

१०१. केइ सुर करै सुर-सन्निपातो, सुर एकटा मिले विख्यातो।
सुर उद्योत करै केइ देवा, केइ सुर उत्कलिका करेवा॥

१०२. केइ देव कहकहं करता, प्रकृत देव हर्ष अति धरता।
स्वेच्छा वचन कर जेहो, कोलाहल[2] बाल जेम करेहो॥

१०३. केइ दुहदुहक्कं शब्द करता, केइ चेलुक्खेव विकरता।
इम एक-एक आदरता, केइ कार्य छहुं आचरता॥

१०४. केइ ऊभा उत्पल हस्त लेई, जाव लक्ष पांखड़िया कहेई।
वलि कलश ग्रही ऊभा केई, जाव धूप-कड़ुच्छ कर लेई॥

१०५. हृष्ट तुष्ट थका जाव जेहो, हृदय विकसायमान करेहो।
चिहुं दिशि सर्व थकी दोडंता, फुन परिधावंति आवंता॥

१०६. *हिवै इंद्र तणां तिणवार, सामानिक चउरासी हजार।
जाव आत्मरक्षक देवा, त्रिणलख सहस्र छतीस सुलेवा॥

१०७. अन्य बहु सुर सुरी जाणो, एतो सुधर्मवासी पिछाणो।
महाइंद्राभिषेक करंता, सिर आवर्त्तन करिनें वदंता॥

†हो म्हारा दक्षिण अर्ध लोक नां स्वामी!
चिरं जीव चिर नंद॥ (ध्रुपदं)

१०८. जय जय नंदा! जय जय भद्दा! जय जय तूं हे नंद।
भुवन समृद्धिकारी आनन्द थावो, भद्र कल्याण थावो अमंद॥

१०९. जय जय नंद! भद्र तुझ थावो, अणजीत्या शत्रु जीतीज्यो।
जीत्या पोता नां वर्ग पालीज्यो, जीत्या वर्ग में वसीज्यो॥

११०. सुर-गण महेंन्द्र तणी पर, तारा-गण में जिम चंद।
असुर-समूह विषे जिम चमरेंद्र, जिम नाग विषे धरणेंद्र॥

१११. मनुष्य विषे जिम भरत चक्री फुन, बहु पल्योपम लगेह।
बहु सागरोपम लग स्वामी, सुखे-सुखे विचरेह॥

*लय : सुण चिरताली थारा लक्षण

†लय : हो म्हारा राजा रा गुरुदेव बाबाजी

१. फुक्कारे और थुक्कारे के स्थान पर रायपसेणइयं में क्रमशः थुक्कारेंति और थक्कारेंति पाठ है।

२. यहां रायपसेणइयं की वृत्ति में 'बोलकोलाहल' पाठ है।

१००. अप्पेगतिया हक्कारेंति, अप्पेगतिया थुक्कारेंति, अप्पेगतिया थक्कारेंति, अप्पेगतिया 'साइं साइं नामाइं साहेंति' अप्पेगतिया चत्तारि वि।
(राय० सू० २८१)

१०१. अप्पेगइया देवसण्णिवायं करेंति, अप्पेगतिया देवुज्जोयं करेंति, अप्पेगइया देवुक्कलियं करेंति।
(राय० सू० २८१)

१०२. अप्पेगइया देवकहकहगं करेंति। (राय० सू० २८१)
प्राकृतानां देवानां प्रमोदभरवशतः स्वेच्छावचनैर्बोल-कोलाहलो देवकहकहस्तं कुर्वन्ति।
(राय० वृ० प० २४९)

१०३. अप्पेगतिया देवदुहदुहगं करेंति। अप्पेगतिया चेलुक्खेवं करेंति। अप्पेगइया देवसण्णिवायं, देवुज्जोयं, देवुक्कलियं, देवकहकहगं, देवदुहदुहगं, चेलुक्खेवं करेंति। (राय० सू० २८१)

१०४. अप्पेगतिया उप्पलहत्थगया जाव सहस्सपत्तहत्थगया। अप्पेगतिया वंदणकलसहत्थगया जाव अप्पेगतिया धूवकडुच्छुयहत्थगया। (राय० सू० २८१)

१०५. हट्ठतुट्ठ जाव (सं० पा०) हियया सव्वओ समंता आहावंति परिधावंति। (राय० सू० २८१)

१०६,१०७. तए णं तं···अण्णे य बहवे······देवा य देवीओ य महया महया इंदाभिसेगेणं अभिसिंचंति, अभिसिंचित्ता पत्तेयं-पत्तेयं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—
(राय० सू० २८२)

१०८. जय जय नंदा! जय जय भद्दा!
(राय० सू० २८२)

१०९. जय जय नंदा! भद्दं ते अजियं जिणाहि, जियं च पालेहि जियमज्झे वसाहि— (राय० सू० २८२)

११०. इंदो इव देवाणं, चंदो इव ताराणं, चमरो इव असुराणं, धरणो इव नागाणं, (राय० सू० २८२)

१११. भरहो इव मणुयाणं—बहूइं पलिओवमाइं बहूइं सागरोवमाइं (राय० सू० २८२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११२. सहंस चउरासी सामानिक सुरवर, जाव आतमरक्ष जाणी।
त्रि लख सहंस छतीस तुम्हारी, सेव करै सुखदाणी।।
११३. अन्य बहु सुधर्म कल्प नां वासी, देव देवी नीं ताम।
अधिपतिपणुं मालिकपणुं करता, आप विचरज्यो स्वाम।।
११४. जावत तुम्है मोटै आडंबर करता, पालता विचरज्यो ताह्यो।
इम कही जय-जय शब्द प्रजुंजे, देव देवी सुखदायो।।
११५. *शक्र सुरिंद्र तिवार, मोटे मोटे आडंबरे सार। आछेलाल।
इंद्राभिषेक कीधे छते।।
११६. अभिषेक सभा नें सोय, पूर्व नें बारणे होय। नीकेलाल।
निकलै निकली निज मते।।
११७. जिहां सभा अलंकार, तिहां आवै आवी धर प्यार।
सभा प्रदक्षिणा देतो छतो।।

११८. अलंकार सभा नें जोय, पूरब बारणे होय।
जिहां सिंहासण तिहां आवतो।।

११९. सींहासण नें विषेह, पूरब साहमों जेह।
मुख करनें बेठो तिहां।।
१२०. इंद्र तणां सामानीक, वलि परषद देव सधीक।
भंड शृंगार जोग स्थापै जिहां।।
१२१. †शक्र देवेंन्द्र तिवारो, लूहे वस्त्र करी तनु सारो।
ते पसम सहित सुकमालो, रक्त वर्ण सुगंध रसालो।।
१२२. एहवे इक पट वस्त्रे उदारू, अंग लूहै लूही नें वारू।
सरस गोशीर्ष चंदन करीनें, गात्र प्रतै लीपै लीपी नें।।

दोहा

१२३. चंदन तनु चरची करी, युगल देवदूष्य जाण।
तेह वस्त्र पहिरै तदा, केहवो वस्त्र पिछाण?
१२४. †नासिका नीं निःस्वासे कंपायो, तिके देख्यां नयन ठरायो।
वर्ण फर्श युक्त सुखकारी, एहवो वस्त्र अधिक उदारी।।
१२५. कोमल हय नीं लाला, तेहथी अधिक धवल मृदु म्हाला।
सुवर्ण तारे वारू, छेहड़ा खंचित अधिक उदारू।।

१२६. निर्मल आकाश स्फटिक सरीखो, दिव्य देवदूष्य सुपरीखो।
एहवो वस्त्र-युगल सुखकंदो, ओ तो पहिरै पहिरी शक्र-इंदो।।

*लय : आछेलाल
†लय : ज्यांरै शोभै केसरिया साड़ी

११२. ......जाव (सं० पा०) आयरक्ख-देवसाहस्सीणं....
(राय० सू० २८२)
११३,११४. अण्णेसिं च बहूणं... देवाण य देवीण य आहे-वच्चं पोरेवच्चं....कारेमाणे पालेमाणे विहराहि त्ति कट्टु महया महया सद्देणं जय-जय सद्दं पउंजंति।
(राय० सू० २८२)
११५. तए णं से....महया-महया इन्दाभिसेगेणं अभिसित्ते समाणे (राय० सू० २८३)
११६. अभिसेयसभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता (राय० सू० २८३)
११७. जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अलंकारियसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे-अणुपयाहिणीकरेमाणे (राय० सू० २८३)
११८. अलंकारियसभं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छति
(राय० सू० २८३)
११९. सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे।
(राय० सू० २८३)
१२०. तए णं तस्स.........सामाणियपरिसोववण्णगा देवा अलंकारियभंडं उवट्ठवेंति। (राय० सू० २८४)
१२१,१२२. तए णं से....तप्पढमयाए पम्हलसूमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेति लूहेत्ता, सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपति, अणुलिंपित्ता
(राय० सू० २८५)
पक्ष्मला च सा सुकुमारा च पक्ष्मलसुकुमारा तया सुरभ्या गन्धकाषायिक्या—सुरभिगन्धकषायद्रव्यपरिकर्मितया लघुशाटिकया गात्राणि रूक्षयति।
(राय० वृ० प० २५१)
१२४. नासा-नीसास-वाय-वोज्झं चक्खुहरं वण्णफरिसजुत्तं
(राय० सू० २८५)
'नासिकानिःश्वासवाह्यम्' (राय० वृ० प० २५१)
१२५. हयलालापेलवातिरेगं धवलं कणग-खचियंतकम्मं
(राय० सू० २८५)
हयलाला—अश्वलाला तस्या अपि पेलवमतिरेकेण हयलालापेलवातिरेकम्—अतिविशिष्टमृदुत्वलघुत्वगुणोपेतमिति भावः, धवलं श्वेतं तथा कनकेन खचितानि—विच्छुरितानि अन्तकर्माणि—अंचलयोर्वानलक्षणानि यस्य तत् कनकखचितान्तकर्म
(राय० वृ० प० २५१)
१२६,१२७. आगासफालियसमप्पभं दिव्वं देवदूस-जुयलं नियंसेति, नियंसेत्ता (राय० सू० २८५)
आकाशस्फटिकं नामातिस्वच्छः स्फटिकविशेषस्तत्समप्रभं दिव्यं देवदूष्ययुगलं परिधत्ते परिधाय हारादीन्याभरणानि पिनह्यति। (राय० वृ० प० २५१)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा

१२७. देवदूष्य पहिरी करी, पेहरै गेहणा सार।
कहियै ते अधिकार हिव, सांभलज्यो धर प्यार।।

१२८. *पहिरै अष्टादशसर हारो, ए पूर्ण हार श्रीकारो।
अर्द्ध हार पहिरंत, ते नवसरियो द्युतिमंत।।

१२८. हारं पिणिद्धेति······अद्धहारं पिणिद्धेइ (राय० सू० २८५)
हारः—अष्टादशसरिकः, अर्द्धहारो—नवसरिकः (राय० वृ० प० २५१)

१२९. वली एकावली पहिरंतो, विचित्र मणी मोती नों सोहंतो।
पछै पहिरै मुक्तावली हारो, वली रत्नावली सुविचारो।।

१२९. एगावलिं पिणिद्धेति पिणिद्धेत्ता मुत्तावलिं पिणिद्धेति ············रयणावलिं पिणिद्धेइ (राय० सू० २८५)
एकावली—विचित्रमणिका मुक्तावली—मुक्ताफलमयी (राय० वृ० प० २५१)

१३०. अंगद बहिरखा एमो, केऊर कडग त्रुटित पिण तेमो।
कटिसूत्र कणदोरो एहो, मुद्रिका दश अंगुली विषेहो।।

१३०. पिणिद्धेत्ता एवं—अंगयाइं केयूराइं कडगाइं तुडियाइं कडिसुत्तगं दसमुद्दाणंतगं (राय० सू० १८५)
अंगदानि—बाह्याभरणविशेषाः। दशमुद्रिकानन्तकं हस्तांगुलिसम्बन्धिमुद्रिकादशकं। (राय० वृ० प० २५२)

१३१. वक्षसूत्र हिया नों वारू, ओ तो पहिरै अधिक उदारू।
मुरवि मादल नें आकारो, गेहणो पहिरै अति धर प्यारो।।

१३१. विकच्छसुत्तगं मुरविं (राय० सू० २८५)

१३२. वलि कंठमुरवी पहिरंत, ते तो कंठ विषे झलकंत।
वलि झूंबणा अति लहकंत, पहिरै उद्योतकारी अत्यंत।।

१३२. कंठमुरविं पालंबं (राय० सू० २८५)

१३३. कर्ण कुंडल अति झलकै, चूड़ामणी ते सेहरो चलकै।
ओ तो सर्व रत्न में सारो, शोभै इंद्र नें शिर श्रीकारो।।

वा०—चूड़ामणि नाम सकल पार्थिव रत्न सर्व सार, देवेंद्र नें मस्तके कीधो है निवास, सर्व अमंगल नें शांति नों करणहार, रोग-प्रमुख दोष नें नाश नों करणहार, अतिही श्रेष्ठ लक्षणे करी सहित परम मंगलभूत आभरण विशेष।

१३३. कुंडलाइं चूडामणिं (राय० सू० २८५)
कुण्डले—कर्णाभरणे (राय० वृ० प० २५२)
वा०—चूडामणिर्नाम सकलपार्थिवरत्नसर्वसारो देवेन्द्र-मनुष्येन्द्रमूर्द्धकृतनिवासो निःशेषामंगलाशान्तिरोग-प्रमुखदोषापहारकारी प्रवरलक्षणोपेतः परममंगलभूत-आभरणविशेषः। (राय० वृ० प० २४२)

१३४. नाना प्रकार नां जेह, रत्ने करि युक्त सुलेह।
एहवो मुकुट अनूप, इम गेहणा पहिरचा धर चूंप।।

१३४. ····मउडं पिणिद्धेइ (राय० सू० २८५)
चित्राणि—नानाप्रकाराणि यानि रत्नानि तैः संकट-श्चित्ररत्नसंकटः—प्रभूतरत्ननिचयोपेतः (राय० वृ० प० २५२)

१३५. गंथिम वेढिम पूरिम संघातं, चउविध माल्य करीनें सुजातं।
सुरतरु जिम आत्म प्रतेह, अलंकृत विभूषित करेह।।

१३५. गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगं पित्र अप्पाणं अलंकियविभूसियं करेइ। (राय० सू० २८५)

१३६. कुंडिका भाजन विषेह, गाल्यो श्रीखंड जेहवूं एह।
परम सुगंध करेह, चारू उज्जल कीधी देह।।

१३६. दद्दर-मलय-सुगंध-गंधएहिं गायाइं भुकुंडेति (राय० सू० २८५)

१३७. प्रवर पुष्प नीं माला, तिका पहिरै अधिक विशाला।
हिव शक्र सुरेंद्र तिवार, कीधा चउविध अलंकार।।

१३८. केशालंकार मल्लालंकारं, वलि वस्त्रालंकार विचारं।
आभरणालंकार[1] सुजोय, प्रतिपूर्ण अलंकार कर सोय।।

१३७,१३८. दिव्वं च सुमणदामं पिणिद्धेइ। (राय० सू० २८५)
तए णं से······केसालंकारेणं मल्लालंकारेणं आभरणालंकारेणं वत्थालंकारेणं—चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकियविभूसिए समाणे पडिपुण्णालंकारे (राय० सू० २८६)

***लय : ज्यांरै शोभै केसरिया साड़ी**

१. 'रायपसेणइयं' में पहले आभरणलंकार और उसके बाद वस्त्रालंकार है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३९. सिंहासण थी ऊठी नैं तिवार, अलंकार सभा नैं पूर्व द्वार।
नीसरी जिहां सभा व्यवसाय, तिहां आवै आवी नैं ताय।।

१४०. व्यवसाय सभा न तेथ, प्रदक्षिणा करतो जेथ।
पेठो पूर्व बारणे ताय, जिहां सिंहासण तिहां आय।।

१४१. सिंहासण नैं विषेह, पूर्व मुख कर बेठो जेह।
शक्र तणां तिह वार, सुर सामानिक हितकार।।

१४२. वलि त्रिण परषद सुर जाणी,
पुस्तक रत्न आपै तिहां आणी।
हिवै शक्र सुरिंद्र तिवार, ग्रहै पुस्तक रत्न उदार।।
१४३. वलि पुस्तक रत्न मूकंत, खोलां विषे थापंत।
पुस्तक रत्न प्रतै उघाडंत, पछै पुस्तक रतन वाचंत।।

सोरठा

१४४. 'शक्र सुरेंद्र प्रसीध, पुस्तक रत्नज वांचतां।
तिहां ते जयणा कीध, एहवूं न कह्यूं सूत्र में।।
१४५. तिण सूं ए अवधार, मुख उघाड़ै पिण तिके।
सावज जोग व्यापार, कुल धर्म शास्त्रज ते भणी।।' [ज० स०]
१४६. ग्रहै धार्मिक व्यवसाय, पुस्तक रत्न निक्षेपै ताय।
पुस्तक रत्न प्रतै स्थापी ठाम, सिंहासण सूं ऊठी नैं ताम।।

१४७. व्यवसाय सभा थी संचरियो, पूर्व बारणे होय नीसरियो।
पछै नंदा पुष्करणी आय, पूर्व तोरण पावड़ियै पेठो मांय।।

१४८. †एक मोटो कलश भिंगारो, श्वेत रूपा नों अधिक उदारो।
ते निर्मल जल भर लीधो, वली उत्पलादिक ग्रह्यो सीधो।।
[सुरेंद्र सधीको, ओ तो करै द्रव्य मंगलीको।]
१४९. पछै नंदा पोक्खरणी थी सारो, ओ तो नीसरियो तिहवारो।
जिहां सिद्धायतन जाणी, चाल्यो तिण दिश कानी पिछाणी।।

१५०. शक्र तणां तिहवारो, सामानिक चउरासी हजारो।
जाव आतमरक्ष देवा, त्रि लख सहंस छतीस सुलेवा।।
१५१. अन्य बहु सुधर्मवासी, ए तो देव देवी सुखरासी।
केइ देव उत्पल कर लेई, जाव लक्षपांखड़िया ग्रहेई।।

---

*लय : ज्यांरै शोभै केसरिया साड़ी

†लय : सुण चिरताली थारा लक्षण

१३९. सीहासणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठेत्ता अलंकारिय-सभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छति,
(राय० सू० २८६)

१४०. ववसायसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे-अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छति
(राय० सू० २८६)

१४१. सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे।
(राय० सू० २८६)
तए णं तस्स····सामाणियपरिसोववण्णगा देवा
(राय० सू० २८७)

१४२. पोत्थयरयणं उवणेंति। (राय० सू० २८७)
तते णं से····पोत्थयरयणं गिण्हति,
(राय० सू० २८८)

१४३. पोत्थयरयणं मुयइ, मुइत्ता पोत्थयरयणं विहाडेइ, विहाडित्ता पोत्थयरयणं वाएति, (राय० सू० २८८)

१४६. धम्मियं ववसाय ववसइ, ववसइत्ता पोत्थयरयणं पडिणिक्खिवइ, पडिणिक्खिवित्ता सीहासणातो अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठेत्ता (राय० सू० २८८)

१४७. ववसायसभातो पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव नंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता णंदं पुक्खरिणिं पुरत्थिमिल्लेणं तोरणेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहइ
(राय० सू० २८८)

१४८. ····एगं महं सेयं रययामयं विमलं सलिलपुण्णं········ भिंगारं पगेण्हति····उप्पलाइं····गेण्हति
(राय० सू० २८८)

१४९. णंदातो पुक्खरिणीतो पच्चोतरति, पच्चोतरित्ता जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।
(राय० सू० २८८)

१५०. तए णं जाव····आयरक्खदेवसाहस्सीओ
(राय० सू० २८९)

१५१. अण्णे य बहवे····वेमाणिया देवा य देवीओ य अप्पेगतिया उप्पलहत्थगया जावसहस्सपत्तहत्थगया
(राय० सू० २८९)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५२. शक्र तणैं सुविचारो, पूठै पूठै चालै घर प्यारो।
हिवै आभियोगिक अधिकारो, ते सांभलज्यो विस्तारो ।।
१५३. शक्र तणां परिवारो, आभियोगिक सुर सुरी सारो।
केइ कलश हाथ में लेइ, जाव धूप कडुच्छा ग्रहै केइ ।।

१५४. हर्ष संतोष पामंता, शक्र पूठै पूठै चालंता।
इम देव देवी परिवारो, बहु वाजंत्र नैं झिणकारो ।।

१५५. हिवै सिद्धायतन सुविशेषो, पूर्व बारणे कीध प्रवेशो।
जिहां छै देवच्छंद गूंभारो, तिहां जिन-प्रतिमा अवधारो ।।

१५६. तिहां आवै आवा नैं तामो, देखी जिन प्रतिमा नैं परणामो।
पूंजै लोम हस्त कर ताय, सुगंध जल करिनैं न्हवराय ।।

१५७. सरस गोशीर्ष चंदन करेह, गात्र लीपै लीपी नै जेह।
पछै जिन-प्रतिमा नैं ताय, देवदूष्य महामूल्य पहिराय ।।

१५८. पछै फूल चढावै तिण कालो, चढावै फूलां नीं मालो।
गंध कपूरादि चढाय, वलि वर्ण चढावै ताय ।।
१५९. चूर्ण चढावै चंगो, वलि वस्त्र चढावै सुरंगो।
आभरण गहणा अमंद, ओ तो चढावै शक्र सुरिंद ।।
१६०. नीचली भूम थी ताह्यो, ऊपर चंदवा लग अधिकायो।
बांधै वर्तुल बहु पुष्पमाला, वारू लंबायमान विशाला ।।
१६१. पछै पंच वर्ण श्रीकार, मूकै पुष्प-पुंज उपचार।
तिण ऊपर दियो दृष्टांत, स्त्री नां शिर केश ग्रहो नैं मूकंत ।।

दूहा

१६२. नर स्त्री नां शिर केश ग्रह चुंबन कामवसेण।
मूकया पसरे चिहुं दिशे, तिम पुष्फवृंद करेण ।।
१६३. *जिन प्रतिमा नैं आगै, निर्मल श्वेत रूपामय सागै।
अच्छरस कहितां ताह्यो, कांइ अतिही निर्मल करिवायो ।।

*लय : सुण चिरताली थारा लक्षण

१५२. ····पिट्ठतो-पिट्ठतो समणुगच्छंति।
(राय० सू० २८९)
१५३. तए णं······आभिओगिया देवा य देवीओ य अप्पेगतिया कलसहत्थगया वंदण जाव अप्पेगतिया धूवकडुच्छुयहत्थगया (राय० सू० २९०)
१५४. हट्ठतुट्ठ····पिट्ठतो-पिट्ठतो समणुगच्छंति।
(राय० सू० २९०)
तए······देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे······ णातियरवेणं (राय० सू० २९१)
१५५. जेणेव सिद्धायतणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सिद्धायतणं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति अणुपविसित्ता जेणेव देवच्छंदए जेणेव जिणपडिमाओ
(राय० सू० २९१)
१५६. तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता जिणपडिमाणं आलोए पणामं करेति, करेत्ता लोमहत्थगं गिण्हति, गिण्हित्ता जिणपडिमाणं लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता जिणपडिमाओ सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेइ
(राय० सू० २९१)
१५७. सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपइ, अणुलिंपइत्ता जिणपडिमाणं अहयाइं देवदूसजुयलाइं नियंसेइ, नियंसेत्ता (राय० सू० २९१)
१५८,१५९. ···पुप्फारुहणं मल्लारुहणं वण्णारुहणं चुण्णारुहणं गंधारुहणं आभरणारुहणं[1] करेइ
(राय० सू० २९१)

१६०. आसत्तोसत्त-विउल-वट्ट-वग्घारिय-मल्ल-दाम-कलावं करेइ, (राय० सू० २९१)
१६१. कयग्गह-गहिय-करयल-पब्भट्ठ-विप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ
(राय० सू० २९१)

१६३,१६४. जिणपडिमाणं पुरतो अच्छेहिं सण्हेहिं[2] रययामएहिं अच्छरसा-तंदुलेहिं अट्ठट्ठ मंगले आलिहइ,

१. रायपसेणइयं (सू० २९१) में पुष्प, माला, वर्ण, चूर्ण, गंध और आभरण यह क्रम है। जोड़ की गाथा १५८,१५९ में गंध को वर्ण से पहले लिया गया है और चूर्ण के बाद वस्त्र का ग्रहण किया गया है। यह अन्तर पाठभेद के कारण हो सकता है।
२. सेएहिं के स्थान पर सण्हेहिं पाठ है। सेएहिं को पाठांतर में लिया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६४. एहवा तंदुल करेह, अष्ट अष्ट मंगल आलिखेह।
स्वस्तिक साथियो जाणी, जाव दर्पण आरिसो पिछाणी॥

१६५. तदनंतर तहतीक, रत्न चंद्रप्रभ वज्रमय सधीक।
वली वेडूर्य रत्न रै मांय, निर्मल दंड कडुच्छा नों दीपाय॥
१६६. सुवर्ण मणि रत्न तेह, भांत चित्रित दंड विषेह।
हिवै धूप नीं जाति सुजान, कृष्णागर अधिक प्रधान॥
१६७. कुंदुरुक्क ते गूंद चीड कहाय,
तुरुक्क कहितां सेल्हा रस ताय।
तेह तणो जे धूप, मघमघायमान अनूप॥
१६८. उत्तम गंध करेह, तिको व्याप्त छै अधिकेह।
धूप नीं वाटी सोहंतो, गंध प्रति विशेष मूकंतो॥
१६९. रत्न वैडूर्य मांय, कडुछो यत्न करी ग्रही ताय।
धूप दियो जिनवर नैं जेह, कहियै स्थापना जिनवर एह॥
१७०. नवा काव्य एकसौ अट्ठ, छंद-दोष रहित सुघट्ट।
सार अर्थ करीनैं सहीत, तिके पुनरुक्त दोष रहीत॥
१७१. मोटां छंद जे पद नां बंध, देव लब्धि प्रभाव सुसंध।
एहवा काव्य करीनैं स्तवेह, राज रीत लोकिक मग एह॥

१७२. सात आठ पग पाछो उसरी नैं, डावो ढींचण ऊंचो करीनैं।
गोडो जीमणो भूमितल धार, मही लगावै शिर त्रिण वार॥

१७३. मस्तक कांयक ऊंचो करेह, कांयक ऊंचो करीनैं जेह।
शिर आवर्त्त करी बिहुं हाथ, अंजली करो वदै सुरनाथ॥

१७४. नमोत्थुणं अरिहंताणं, जाव संपत्ताणं लग जाणं।
वांदै नमस्कार करि सोय, ए पिण द्रव्य मंगलीक सुजोय॥
१७५. जिहां सिद्धायतन नों जाणी, बहु मझ देश भाग पिछाणी।
तिहां आवै आवी नैं, मोरपिच्छ नीं पूंजणी ग्रही नैं॥
१७६. सिद्धायतन नों जेह, बहु मध्य देश भाग प्रतेह।
मयूरपिच्छ करी पूंजेह, दिव्य उदक-धारा सींचेह[1]॥
१७७. आला गोशीर्ष चंदन करेह, पंचांगुलि करि हाथा देह।
मंडल प्रति आलिखेह, ए पिण राज नी रीत करेह॥
१७८. पछै केश नैं दृष्टांतेह, जाव पुष्प विखेरेह।
फूल-फगर[2] सहित करेह, धूप दियै देई नैं तेह॥
१७९. जिहां सिद्धायतन नों विचार, दक्षिण नों छै द्वार।
तिहां आवै आवी नैं, मयूर पिच्छ नीं पूंजणी ग्रही नैं॥

१. इन गाथाओं में पाठ की तुलना में जोड़ अधिक है। जिस पाठ के आधार पर यह अतिरिक्त जोड़ की गई है वह 'रायपसेणइयं' में पाठान्तर के रूप में स्वीकृत है। जयाचार्य के प्राप्त आदर्श में यह पाठ मूल में रहा होगा।

२. प्रकर - समूह

तं जहा—सोत्थियं जाव (सं० पा०) दप्पणं।
(राय० सू० २९१)
अच्छो रसो येषु ते····अतिनिर्मला इत्यर्थः
(राय० वृ० प० २५५)

१६५. तयाणंतरं च णं चंदप्पभ-वइर-वेरुलिय-विमलदंडं
(राय० सू० २९२)

१६६. कंचणमणिरयणभत्तिचित्तं कालागरुपवर
(राय० सू० २९२)

१६७. कुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूवमघमघेंत (राय० सू० २९२)

१६८. गंधुत्तमाणुविद्धं च धूववट्टिं विणिम्मुयंतं
(राय० सू० २९२)

१६९. वेरुलियमयं कडुच्छुयं पग्गहिय पयत्तेणं धूवं दाऊण जिणवराणं (राय० सू० २९२)

१७०,१७१. ····अट्ठसय-विसुद्धगंधजुत्तेहिं अत्थजुत्तेहिं अपुणरुत्तेहिं महावित्तेहिं संथुणइ (राय० सू० २९२)
विशुद्धो—निर्मलो लक्षणदोषरहितः···· ····अर्थयुक्तैः—अर्थसारैरपुनरुक्तैर्महावृत्तैः, तथाविधदेवलब्धिप्रभावः
(राय० वृ० प० २५५)

१७२. सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता (पा० टि० १२) वामं जाणुं अंचेइ, अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणीतलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवाडेइ (राय० सू० २९२)

१७३. ईसिं पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—
(राय० सू० २९२)

१७४. नमोत्थुणं अरहंताणं····संपत्ताणं वंदइ नमंसइ ····
(राय० सू० २९२)

१७५,१७६. जेणेव सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ (राय० सू० २९३)

१७७. सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलं दलयइ, मंडलगं आलिहइ (पा० टि० २) (राय० सू० २९३)

१७८. कयग्गहगहियं जाव (सं० पा०) पुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता धूवं दलयइ (राय० सू० २९३)

१७९. जेणेव सिद्धायतणस्स दाहिणिल्ले तेणेव दारे उवागच्छति, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता (राय० सू० २९४)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८०. वार शाखा जे अनूप, वली पूतलिया नां रूप।
वली रूप सर्प नां तेह, मयूर पिच्छ करी पूंजेह ।।

१८१. दिव्य उदक धारा सींचेह, सरस गोशीर्ष चंदन चर्चेह।
फूल चढावै ताय, जाव आभरण गेहणा चढाय ।।

१८२. मांडी वार शाखा थी जेह, नीचली भूमि लगेह।
बांधै लंबायमान पुष्पमाला, जाव धूप दियै सुविशाला ।।

१८३. जिहां दक्षिण द्वार नों देख, मुख मंडप छै सुविशेख।
जिहां दक्षिण नां मुख मंडप नों चंग, बहु मझ देश भाग सुरंग ।।

१८४. तिहां आवै आवी नै, मोर पिच्छ नीं पूंजणी ग्रही नैं।
बहु मज्झ देश भाग प्रतेह, मयूर पिच्छ करी पूंजेह ।।

१८५. दिव्य उदक धारा सींचेह, आले गोशीर्ष चंदन करेह ।।
पंचांगुलि तल हाथा देह, वलि मंडल प्रति आलिखेह।

१८६. केश ग्रही छोड़ै दृष्टंत, फूल-फगर करै धर खंत।
जावत धूप उखेव, त्यां लग पाठ कहेव ।।
१८७. जिहां दक्षिण नां मुख मंडप नों विचार, पश्चिम नों छै द्वार।
तिहां आवै आवी नैं, मयूरपिच्छ नीं पूंजणी ग्रही नैं ।।

१८८. वार शाखा जे अनूप, वली पुतलिया नां रूप।
वली रूप सर्प नां तेह, मयूरपिच्छ करि पूंजेह ।।
१८९. दिव्य उदक धारा सींचेह, सरस गोशीर्ष चंदन चर्चेह।
फूल चडावै ताय, जाव आभरण गेहणा चढाय ।।

१९०. मांडो बार-शाखा थी जेह, नीचली भूम लगेह।
बांधै लंबायमान पुष्पमाला, जाव धूप दियै सुविशाला ।।
*ए स्वर्ग-स्थिति कोइ विरला ही जाणै ।।

१९१. जिहां दक्षिण नां मुख मंडप नैं, उत्तर नां थांभा नीं पंती।
तिहां आवै आवी मयूरपिच्छ नीं, पूंजणी ग्रहै शोभंती ।।

१९२. थंभ अनैं वलि पूतलियां नैं, सर्प नां रूप प्रतेह।
मयूरपिच्छ नीं पूंजणी करनैं, पूंजै पूंजी नैं तेह ।।
१९३. तिमहिज जिम कह्यु, पश्चिम दिशि नां द्वार तणी पर जाणी।
जावत धूप उखेवै सुरपति, त्यां लग पाठ पिछाणी ।।
१९४. जिहां दक्षिण नां मुख मंडप नैं, पूर्व दिशि नैं द्वार।
तिहां आवै आवी मयूर पिच्छ नीं, पूंजणी ग्रहै तिहवार ।।

१८०. दारचेडाओ य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थएणं पमज्जइ (राय० वृ० प० २६०)
दारचेडाओ—द्वारशाखे··· (राय० सू० २६४)
१८१. दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलइत्ता पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ। (राय० सू० २६४)
१८२. आसत्तोसत्तविउल-वट्ट-वग्घारिय-मल्ल-दाम-कलावं करेइ, जाव (सं० पा०) धूवं दलयइ।
(राय० सू० २६४)
१८३. जेणेव दाहिणिल्ले दारे मुहमंडवे जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए
(राय० सू० २६५)
१८४. तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता बहुमज्झदेसभागं लोमहत्थेणं पमज्जइ, (राय० सू० २६५)
१८५. दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलं मंडलगं आलिहइ
(राय० सू० २६५)
१८६. कयग्गह-गहिय जाव (सं० पा०) धूवं दलयइ।
(राय० सू० २६५)
१८७. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता (राय० सू० २६६)
१८८. दारचेडाओ य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थेणं पमज्जइ, (राय० सू० २६६)
१८९. दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलयित्ता पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ। (राय० सू० २६६)
१९०. आसत्तोसत्त जाव (सं० पा०) धूवं दलयइ।
(राय० सू० २६६)

१९१. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स उत्तरिल्ला खंभपंती तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थं परामुसइ,
(राय० सू० २६७)
१९२. खंभे य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता (राय० सू० २६७)
१९३. जहा चेव पच्चत्थिमिल्लस्स दारस्स जाव धूवं दलयइ, (राय० सू० २६७)
१९४. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसति,
(राय० सू० २६८)

*लय : पर नारी नो संग न कीजै

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६५. बार-शाखा पूतलिया पन्नग, तिमहिज सर्व कहेह।
पूंजे जल सींचै चंदन चर्चे, पूरववत सहु जेह।।

१६६. जिहां दक्षिण नां मुख मंडप नैं, दक्षिण दिशि नैं द्वार।
तिहां आवै आवी द्वार-शाखा नैं, तिमहिज सर्व विचार।।

वा०—इहां दक्षिण दिशि नां मुख मंडप नै तीन द्वारहीज छै, ते माटै तीन द्वारहीज पूजै। अनै उत्तर दिशि थांभा नीं पंक्ति पूजै। हिवै दक्षिण नां मुख मंडप नैं द्वारे करी नीकली प्रेक्षा गृह मंडपे आवै, पूजै ते अधिकार कहै छै—

*ओ तो इन्द्र अभिषेक सधीको रे, कीधै सुरपति नीको।
ओ तो करै द्रव्य मंगलीको रे, ते कारज लोकीको।। (ध्रुपदं)

१६७. जिहां दक्षिण नों प्रेक्षा घर मंडप, प्रेक्षा घर मंडप नो जेह।
बहु मज्झ देश भाग जिहां छै, तिहां अक्खाड़ कहेह।।
१६८. तेह अखाड़ो अछै वज्रमय, जिहां मणिपीठिका ताह्यो।
जिहां सींहासण छै तिहां आवै, आवी नैं सुररायो।।
१६९. मोरपिच्छ नीं पूंजणी ग्रही नैं, वज्र अखाड़ प्रतेहो।
मणिपीठिका सिंहासन प्रति, मयूरपिच्छे पूंजेहो।।

२००. दिव्य उदक धारा कर सींचे, गोशीर्ष चंदन चर्चेहो।
वली पुष्पादिक प्रतै चढ़ावै, संसारिक खाते हो।।

२०१. ऊपर थी मांडी महितल लग, माला प्रति बांधेहो।
जावत धूप उखेवै सुरपति, पाठ इहां लग जेहो।

२०२. जिहां दक्षिण नां प्रेक्षा घर मंडप नैं पश्चिम द्वारे।
तिमहिज कहिवो पूरववत जे, द्वार-शाखादि प्रकारे।।

२०३. उत्तर दिशि थांभा नीं पंक्ति, पूरववत पूजेहो।
पूर्व द्वारे आवी तिमहिज, द्वार-शाखादि विषेहो।।

२०४. दक्षिण नों जे द्वार तिहां पिण, तिमहिज कहिवूं जेहो।
द्वार-शाखा नैं पूतलियां फुन, पन्नग रूप अर्चेहो।।

वा०—'दक्षिण नां प्रेक्षा-घर-मंडप नैं घणी परतां में पश्चिम पूर्व द्वार देख्या। किणही परत में पश्चिम, पूर्व,दक्षिण द्वार देख्या, पिण उत्तर दिशे थंभा नीं पंक्ति नों पाठ नथी देख्यूं। पिण इहां तीन द्वार नें उत्तर दिशे थंभ-पंक्ति जणाय छै। जे दक्षिण नां मुख मंडप नैं पश्चिम पूर्व दक्षिण द्वार कह्या। अनैं उत्तर थंभ नी पंक्ति कही तिम इहां प्रेक्षा-घर मंडप नैं विषे तीन द्वार नें उत्तर दिशे थंभ-पंक्ति संभवै। वलि आगल उत्तर नैं प्रेक्षा-घर मंडपे दक्षिण दिशे थंभ-पंक्ति पाठ में कही छै। तिम इहां दक्षिण नैं प्रेक्षा-घर-मंडपे उत्तर दिशे थंभ पंक्ति संभवै।

१९५. दारचेडाओ य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थेणं पमज्जइ पमज्जित्ता तं चेव सव्वं। (राय० सू० २९८)

१९६. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दारचेडाओ य···· तं चेव सव्वं। (राय० सू० २९९)

१९७,१९८. जेणेव दाहिणिल्ले पेच्छाघर-मंडवे जेणेव दाहिणिल्लस्स-पेच्छाघर-मंडवस्स बहुमज्झदेसभागे जेणेव वइरामए अक्खाडए जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता (राय० सू० ३००)

१९९. लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता अक्खाडगं च मणिपेढियं च सीहासणं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, (राय० सू ३००)

२००. दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलयित्ता पुप्फारुहणं ·······करेइ (राय० सू० ३००)

२०१. आसत्तोसत्त-विउल-वट्ट-वग्घारिय-मल्ल-दाम- कलावं करेइ जाव (सं० पा०) धूवं दलयइ। (राय० सू० ३००)

२०२. जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघर-मंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे·······तं चेव। (राय० सू० ३०१)

२०३. [उत्तरिल्ला खंभपंती ?]·······तं चेव। जेणेव पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव (राय० सू० ३०२,३०३)

२०४. जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघर-मंडवस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव। (राय० सू० ३०४)

*लय : ए तो जिन मार्ग नां राजा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वली वृत्तिकार पिण उत्तर नैं प्रेक्षा-घर-मंडपे दक्षिण दिशे थंभ पंक्ति कही। अनैं पूर्व नैं प्रेक्षा-घर-मंडप नैं तीन दिशि द्वार नैं पश्चिम दिशे थंभ पंक्ति कही। ते माटै इहां दक्षिण नैं प्रेक्षा-घर-मंडपे पिण तीन दिश द्वार नैं उत्तर दिश थंभ-पंक्ति संभवै। वली इहां सूत्रे हीज प्रथम अधिकार कह्यो, तिहां सुधर्मा सभा नां तीन द्वार कह्या। अनैं मुखमंडप नैं सभा नीं भलावण दीधी। अनैं प्रेक्षा-घर मंडप नैं मुख-मंडप नी भोलावण दीधी। इण न्याय पिण मुखमंडप प्रेक्षा-घर-मंडप नां पिण तीन दिशे तीन-तीन द्वार अनैं एक दिशे थांभा नी पंक्ति हुवै।' (ज०स०)

हिवै दक्षिण नां प्रेक्षा-घर-मंडप नैं दक्षिण द्वारे करि नीकली चैत्य थूभ आवी पूजे तेहनो अधिकार कहै छै—

२०५. जिहां दक्षिण नां चैत्य थूभ छै, त्यां सुरपति आवेहो।
थूभ अनैं फुन मणिपीठिका, पूंजै जल सींचेहो।।

वा०—इहां मणिपीठिका ऊपरै चैत्य थूभ छै ते माटै बिहुं नैं पूंजै।

२०६. आले गोशीर्ष चंदन करि, दियै छांटणा तासं।
फूल चढ़ावै माला बांधै, जाव धूप दै जासं।।

२०७. जिहां पश्चिम नीं मणिपीठिका, जिहां पश्चिम नीं तामो।
जिन प्रतिमा त्यां आवै आवी, देखी करै प्रणामो।

२०८. जिम सिद्धायतने जिन प्रतिमा, पूजी कही तिवारो।
तिमहिज इहां जिन प्रतिमा, पूजै जाव करी नमस्कारो।।

२०९. जिहां उत्तर नीं जिन-प्रतिमा छै, तिमहिज सर्व कहीजै।
जिम सिद्धायतने कहि पूजा, तेम इहां पभणीजै।।

२१०. जिहां पूर्व दिश मणिपीठिका, ज्यां पूर्व दिशि पेखो।
जिन-प्रतिमा तिहां आवै आवी, तिमहिज पाठ अशेखो।।

२११. पछै दक्षिण नीं मणिपीठिका, फुन दक्षिण नीं जेहो।
जिन प्रतिमा पूजै पूरववत, सगला पाठ कहेहो।।

२१२. जिहां दक्षिण नों चैत्य रूंख छै, तिहां आवी सुररायो।
तिमहिज पूंजै जल सूं सींचै, इत्यादिक कहिवायो।।

२१३. जिहां दक्षिण नीं महेन्द्र ध्वजा छै, तिहां आवी नैं तास्यो।
तिमहिज पूंजै जल सूं सींचै, चंदनादि विधि वायो।।

२१४. दक्षिण नीं नंदा पुक्खरणी, त्यां आवै आवी नैं।
मोरपिच्छ नीं जेह पूंजणी, ते प्रतै ग्रहै ग्रही नैं।।

२१५. तोरण पावड़िया पूतलिया, सर्प रूप फुन नेहो।
मयूरपिच्छ करि पूंजै पूंजी, जलधारा सींचेहो।।

२०५. जेणेव दाहिणिल्ले चेइयथूभे तेणेव उवागच्छइ⋯⋯ थूभं च मणिपेढियं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ।
(राय० सू० ३०५)

२०६. सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलयित्ता—पुप्फारुहणं जाव (सं० पा०) धूवं दलयइ।
(राय० सू० ३०५)

उदकधारयाऽभ्युक्ष्य (वृ० प० २६१)

२०७. जेणेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पच्चत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जिणपडिमाए आलोए पणामं करेइ।
(राय० सू० ३०६)

२०८. (जहा जिणपडिमाणं तहेव जाव नमंसित्ता सू० २६१,२६२)

२०९. ⋯जेणेव उत्तरिल्ला जिणपडिमा⋯⋯तं चेव सव्वं। (राय० सू० ३०७)

२१०. जेणेव पुरत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पुरत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव। (राय० सू० ३०८)

२११. जेणेव दाहिणिल्ला मणिपेढिया जेणेव दाहिणिल्ला जिणपडिमा⋯⋯तं चेव सव्वं।
(राय० सू० ३०९)

२१२. जेणेव दाहिणिल्ले चेइय-रुक्खे तेणेव उवागच्छइ⋯ लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता तं चेव
(राय० सू० ३१०)

२१३. जेणेव दाहिणिल्ले महिंदज्झए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता⋯⋯लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता तं चेव सव्वं। (राय० सू० ३११)

२१४. जेणेव दाहिणिल्ला नंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसति, परामुसित्ता
(राय० सू० ३१२)

२१५. तोरणे य तिसोवाणपडिरूवए य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, (राय० सू० ३१२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१६. आले गोशीर्ष चंदन करि, तास छांटणां देहो।
फूल चढावै माला बांधै, वली धूप खेवेहो ।।

वा०—ए सिद्धायतन नें दक्षिण नें विषे दक्षिण द्वार मुख-मंडप, प्रेक्षागृह-मंडप, चैत्य-थूभ, जिन-प्रतिमा, चैत्य-रूंख, महेंद्र-ध्वज, नंदा-पुष्करणी—ए सर्व दक्षिण दिशे छै। तेहनीं पूजा करीनें हिवै प्रथम जे सिद्धायतन कह्यु छै, तिहां आवी तेहनें प्रदक्षिणा देई उत्तर दिशे मुखमंडपादिक जे छै, तेहनें पूजे। ते अधिकार कहै छै—

२१७. प्रदक्षिणा सिद्धायतन प्रति, करतो शक्र जिवारै।
जिहां उत्तर नीं नंदा पुक्खरिणी, आवै तिहां तिवारै ।।

वा०—सिद्धायतन नें प्रदक्षिणा करतो उत्तर दिशे जिहां छेहड़े नंदा पोक्खरणी छै, तिहां आयो।

२१८. तिमहिज सर्व कार्य पूजा ते, मयूरपिच्छ पूंजेहो।
उदक सींचवै चंदन चर्चे, कार्य इत्यादि करेहो ।।

२१९. जिहां उत्तर नीं महेन्द्र ध्वजा छै, तिहां शक्र आवेह।
तिमहिज पूंजै जल सूं सींचै, पूवरवत अर्चेह ।।

२२०. जिहां उत्तर नों चैत्य रूंख छै, तिहां आवै आवी नें।
तिमहिज पूंजै जल सूं सींचै, कार्य इत्यादि करीनें ।।

२२१. जिहां उत्तर नों चैत्य थूभ छै, तिहां आवै धर खंतो।
तिमहिज पूंजै जल सूं सींचै, कार्य इत्यादि करंतो ।।

२२२. जिहां पश्चिम नीं मणिपीठिका, जिहां पश्चिम नीं जेहो।
जिन प्रतिमा त्यां आवै आवी पूजा तिमज करेहो ।।

२२३. जिहां उत्तर नीं जिन-प्रतिमा छै, त्यां आवै आवी नें।
तिमहिज पूजा सगली जाणो, अर्चा सर्व करीनें।

२२४. ज्यां पूरब नी जिन-प्रतिमा छै, तिमहिज अर्चा जाणं।
ज्यां दक्षिण नीं जिन-प्रतिमा छै, पूजा तिमज पिछाणं ।।

२२५. जिहां उत्तर नों प्रेक्षा धर मंडप छै महासुखदायो।
तिहां शक्र सुर इन्द्र सुराधिप, आवै आवी ताह्यो ।।

२२६. वक्तव्यता जे कही दक्षिण नीं, तेहिज सर्व विचार।
पूरव नें द्वारे पिण कहिवी, वलि उत्तर नैं द्वार ।।

वा०—इहां घणी परतां देखी। तिहां पश्चिम नां द्वार नों अधिकार नथी कह्यो, पिण संभवियै छै[1]—

२२७. दक्षिण खंभ पंक्ति फुन पूजै, उत्तर प्रेक्षा गेहो।
जिम दक्षिण प्रेक्षा-गृह उत्तर खंभ पंक्ति तिम एहो ।।

२१६. सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलयित्ता पुप्फारुहणं जाव धूवं दलयति।
(राय० सू० ३१२)

२१७. सिद्धायतणं अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति
(राय० सू० ३१३)

२१८. तं चेव। (राय० सू० ३१३)

२१९. जेणेव उत्तरिल्ले महिंदज्झए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता। (राय० सू० ३१४)

२२०. जेणेव उत्तरिल्ले चेइयरुक्खे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता। (राय० सू० ३१५)

२२१. जेणेव उत्तरिल्ले चेइयथूभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता (राय० सू० ३१६)

२२२. जेणेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पच्चत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव। (राय० सू० ३१७)

२२३. ....जेणेव उत्तरिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव। (राय० सू० ३१८)

२२४. जेणेव पुरत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
जेणेव दाहिणिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव। (राय० सू० ३१९,३२०)

२२५. जेणेव उत्तरिल्ले पेच्छाघर-मंडवे....(सू० ३००) तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता (राय० सू० ३२१)

२२६. जा चेव दाहिणिल्ले वत्तव्वया सा चेव सव्वा।
(राय० सू० ३२१)

२२७. जेणेव उत्तरिल्लस्स पेच्छाघर-मंडवस्स दाहिणिल्ला खंभपंती तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—
(राय० सू० ३२५)

---

१. जोड़ जिस प्रति के आधार पर की गई है उसमें पश्चिम द्वार का उल्लेख नहीं मिला। जयाचार्य ने यह संभावना प्रकट की है कि पश्चिम द्वार का वर्णन भी होना चाहिए। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित 'रायपसेणइयं' में ऐसा पाठ है। (देखें सू० ३२२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा०—जिम दक्षिण प्रेक्षा गृह मंडपे पश्चिम पूर्व दक्षिण द्वार पूज्या अनें उत्तर दिशे खंभ-पंक्ति पूजी। तिम इहां उत्तर प्रेक्षा-गृह-मंडपे पश्चिम उत्तर पूर्व द्वार पूज्या अनें दक्षिण खंभ-पंक्ति पूजी। जे दक्षिण प्रेक्षा-गृह-मंडप नें विषे तो उत्तर दिशे खंभ-पंक्ति छै अनें बाकी तीन दिशे द्वार छै। अनें उत्तर प्रेक्षा-गृह-मंडप नें विषे दक्षिण दिशे खंभ-पंक्ति छै अनें अनेरी दिशे द्वार छै, ते माटै।

२२८. जिहां उत्तर नों मुखमंडप छै, वली जिहां छै जेहो।
उत्तर नां मुख-मंडप नें बहु मध्य देश भागेहो।।

२२९. जिम दक्षिण मुखमंडप नां, बहु मध्य देश भागेहो।
पूजा नीं विधि आखी तिमहिज, सगली इहां कहेहो।।

२३०. जिहां पश्चिम नें द्वार तिहां आवी, फुन उत्तर नें द्वारो।
पूर्व द्वार दक्षिण खंभ पंक्ति, तिमहिज कहिवूं सारो।।

२३१. आवी जिहां सिद्धायतन नां, उत्तर द्वार विरेहो।
पूरवली पर अर्चा करि, हिव पूर्व द्वार आवेहो।।

वा०—इहां सिद्धायतन थकी उत्तर दिशे छेहड़ै नंदा-पुष्करणी छै, तेहनीं प्रथम पूजा करी। महेन्द्र-ध्वज, चैत्य-थूभ, जिन-प्रतिमा, प्रेक्षा-घर-मंडपे, सिद्धायतन नें उत्तर द्वारे इम पश्चानुपूर्वी पूजा करतो आयो। हिवै सिद्धायतन नां पूर्व द्वार पूर्व मुख-मंडप जाव पूर्व नंदा-पुष्करणी इम पूर्वानुपूर्वी स्यूं पूजै, तेहनों अधिकार कहै छै—

२३२. जिहां सिद्धायतन नों पूरव-द्वार तिहां चल आवै।
तिमहिज पूजै जल सूं सींचै, दक्षिण द्वार तिम भावै।।

२३३. जिहां पूर्व नो मुख-मंडप छै, जिहां पूर्व नों जेहो।
मुख मंडप नां बहु मज्झ देशज भाग तिमज कहेहो।।

२३४. पूर्व दिशि नां मुखमंडप नें, दक्षिण द्वार विचारं।
पश्चिम दिशि थांभा नीं पंक्ति, तिमहिज उत्तर द्वारं।।

२३५. पूर्व द्वार विषे पिण पूजा, तिमहिज करिनें तामो।
जिहां पूर्व प्रेक्षा घर मंडप, आवै सुरपति आमो।।

वा०—पूर्व प्रेक्षा घर मंडप नें बहु मध्य देश भाग पूजी, पश्चिम थंभ-पंक्ति पूजी, उत्तर द्वारे पूर्व द्वारे पिण तिमज पूजा जाणवी। जिम दक्षिण मुख मंडप नों बहु मध्य देश पूज्यो, पश्चिम द्वार पूज्यो, उत्तर थंभ-पंक्ति पूजी, पूर्व द्वार पूज्यो, उत्तर द्वार पूज्यो, तिम इहां पूजा जाणवी।

२३६. एवं थूभ अनें जिन-प्रतिमा, चैत्य रूंख फुन जेहो।
महिंद्र ध्वजा नें नन्दा पुष्करणी, तिमज जाव धूपेहो।।

वा०—सिद्धायतन नें विषे जिन-प्रतिमा पूजी, नमोत्थुणं गुणी नमस्कार कियो। तठा पछली वारता वृत्ति थकी लिखियै छै अतः ऊर्ध्वं सूत्रं सुगमं, केवल घणी विध विषय प्रतै वाचना भेद, इति यथावस्थित वाचना देखाड़िवा नें अर्थे विधि मात्र देखावियै छै—तिवारे पछै देवच्छंदक प्रतै पूजै, जल-धारा करी सींचै, तिवार पछै चंदन करी पंचांगुली हाथा दियै, पछै फूल चढावादिक, धूप दहन

२२८,२२९. जेणेव उत्तरिल्लस्स दारे मुहमंडवे जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता। (राय० सू० ३२६)

२३०. जेणेव····पच्चत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता।
जेणेव····उत्तरिल्ले दारे····।
जेणेव····पुरत्थिमिल्ले दारे····।
जेणेव····दाहिणिल्ला खंभपंती तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता। (राय० सू० ३२७-३३०)

२३१. जेणेव सिद्धायतणस्स उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव। (राय० सू० ३३१)

२३२. जेणेव सिद्धायतणस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता। (राय० सू० ३३२)

२३३. जेणेव पुरत्थिमिल्ले दारे मुहमंडवे जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभागे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता। (राय० सू० ३३३)

२३४. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे पच्चत्थिमिल्ला खंभपंती उत्तरिल्ले दारे तं चेव। (पा० टि० ६ पृ १५४)

२३५. पुरत्थिमिल्ले दारे तं चेव। (पा० टि० ६ पृ० १५४)

२३६. एवं थूभे जिणपडिमाओ चेइयरुक्खा महिंदज्झया नंदापुक्खरिणी तं चेव जाव धूवं दलइ। (पा० टि० १० पृ० १५४)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करै सिद्धायतन नां बहु मध्य देश भाग नैं विषे पूंजणी करी पूंजी, उदक-धारा सींचै, चंदन करी पंचांगुली हाथा दियैं, पुष्पपुंज उपचार, धूप-दान करैं।

तिवार पछै सिद्धायतन नां दक्षिण द्वार विषे आवी पूंजणी ग्रही नैं तिण पूंजणी करिकै द्वार-शाखा, पूतल्या अनैं सर्प नां रूप प्रतै पूजै। तिवार पछै उदक-धारा सींचैं, गोशीर्ष चंदन चर्चै, पुष्पादि चढावै, धूप देवै।

तिवार पछै दक्षिण द्वारे करि नीकली नें दक्षिण नां मुख-मंडप नैं बहु मध्य देश भाग विषे पूंजणी करी पूंजी नें उदक-धारा सींचै, चंदन करि पंचांगुली हाथा दियैं, पुष्प-पुंज उपचार, धूप-दान करैं, करिनैं पश्चिम द्वारे आवी नें पूर्ववत पूजा करै। उत्तर दिशे थंभपंक्ति पूजै। पछै पूर्व द्वारे आवी दक्षिण द्वार नीं परै पूजा करै। पछै दक्षिण द्वारे तिमहिज पूजा करै। तिण द्वार करी नीकली प्रेक्षा गृह मंडप नें बहु मध्य देश भागे आवी नें आषाढक, मणिपीठिका अनें सिंहासन प्रतै पूंजणी करी पूंजी, उदक-धारा सींचै, चंदन-चर्चा, पुष्प-पूजा, धूप-दान करी तेहिज प्रेक्षा-गृह-मंडप नें अनुक्रमै करिकै पश्चिम द्वार उत्तर थंभ-पंक्ति पूर्व दक्षिण द्वार नी अर्च्चा करीनें दक्षिण द्वार करि नीकली नें चैत्य थूभ अनें मणिपीठिका प्रतै पूंजणी करी पूंजी उदक-धारा सींचै, सरस गोशीर्ष चंदने करी पंचांगुली हाथा देइनै अनें पुष्पादिक चढावी नै धूप देवै।

तिवारै पछै जिहां पश्चिम दिशि नीं मणिपीठिका तिहां आवै। तिहां आवी नें जिन-प्रतिमा देखी नें प्रणाम करै, करीनें पूंजणी करी पूंजै, सुगंध जले करी स्नान करावै, सरस गोशीर्ष चंदन करी गात्र लीपै, देवदूष्य युगल पहिरावै, पुष्पादिक चढावै, प्रतिमा आगे पुष्प-पुंज उपचार, धूप दियैं, दिव्य तंदुले करी आठ मंगलीक आलेखै, एकसौ आठ छंद करिकै स्तुति करै, प्रणिपात दंडक पाठ करिनें वांदै, नमस्कार करै, तेहिज अनुक्रम करिकै उत्तर पूर्व दक्षिण प्रतिमा नीं पिण अर्चनिका करीनें दक्षिण द्वारे करी नीकली नें दक्षिण दिशि नें विषे जिहां चैत्य वृक्ष छै, तिहां आवी नें चैत्य वृक्ष नीं द्वार नी परै अर्चनिका करै।

तिवारै पछै महेंद्र ध्वजा नीं, तिवार पछै जिहां दक्षिण दिशि नीं नंदा पुष्करणी, तिहां आवै। आवी नें तोरण पावड़िया नै विषे रही शालभंजिका अनें सर्प नां बहु रूप नें पूंजणीं करी पूंजै, उदक-धारा सींचै, चंदन-चर्चा पुष्पादि चढावै धूप दान करिनें सिद्धायतन नें प्रदक्षिणा करीनें उत्तर दिशे नंदा पुष्करणी नें विषे आवी नें पूर्वली परै तेहनीं अर्चा करै।

तिवार पछै उत्तर नां चैत्य वृक्ष विषे, तिवार पछै उत्तर नां चैत्य थूभ नें, तिवार पछै पश्चिम उत्तर पूर्व दक्षिण जिन प्रतिमा नीं पूर्वली परै पूजा करीनै उत्तरा नां प्रेक्षा-गृह-मंडप विषे आवै। तिहां दक्षिण नां प्रेक्षा-गृह-मंडप नीं परै सर्व वक्तव्यता कहिणी।

तिवार पछै दक्षिण स्तंभ पंक्ति करिकै नीकली नें उत्तर नें मुख मंडपे आवै। तिहां पिण दक्षिण नां मुख मंडप नीं परै सर्व पश्चिम उत्तर पूर्व द्वार विषे अनुक्रम करिकै पूजा करीनें दक्षिण स्तंभ पंक्ति करिकै नीकली नें सिद्धायतन नें उत्तर द्वारे आवी नें पूर्ववत अर्चा करीनें पूर्व द्वारे आवै। तिहां पिण अर्चा पूर्ववत करीनें पूर्व नां मुख-मंडप नें दक्षिण द्वार पश्चिम थंभ-पंक्ति उत्तर पूर्व द्वार नें विषे अनुक्रम करिकै पूर्वे कही तिम पूजा करीनें पूर्व द्वारे करी वलि अनुक्रम करिकै नीकली नें प्रेक्षा-घर-मंडप नें विषे आवै। पूर्ववत मध्य भाग दक्षिण द्वार पश्चिम थंभ पंक्ति उत्तर पूर्व द्वारे पूर्ववत पूजा करै।

तिवारै पछै पूर्व प्रकार करिकै तेहिज अनुक्रम करिकै चैत्य-थूभ, जिन-प्रतिमा,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चैत्य-वृक्ष, महेंद्र-ध्वज, नंदा-पुष्करणी नै पूजै, तिवार पछै सुधर्मा सभा नें विषे पूर्व द्वार करिकै प्रवेश करै। ए रायपश्रेणी नीं वृत्ति में कह्यु, तिम लिख्यं।

*शक्र सुरेन्द्र सधीको
ओ तो करै द्रव्य मंगलीको जी, कारज छै ए लोकीको जी।
ओ तो सुरनायक जश टीको जी, शक्र सुरेन्द्र सधीको जी ।। (ध्रुपदं)

२३७ जिहां सभा सुधर्मा ताह्यो, तिहां आवै शक्र सुररायोजी।
सुधर्मा सभा नें विशेषे, पूर्व द्वारे करि पेसे जी ।।

२३८. जिहां माणवक इह नामो, छै चैत्य थूभ अभिरामो।
जिहां वज्र रत्न रै मांह्यो, गोल वृत्त डाबडा ताह्यो ।।

२३९. तिहां आवै आवी नें, मयूर पिच्छ पूंजणी ग्रहीनै।
गोल वृत्त डाबा वज्र मांह्यो, पूंजणीइं पूंजै ताह्यो ।।

२४०. गोल वृत्त डाबा वज्र मांह्यो, सुरराय उघाड़ै ताह्यो।
जिन नी दाढा प्रति तेहो, पूंजणी करी पूंजेहो ।।

२४१. पूंजी नें वलि तिह काले, सुगंध जल करीनें पखाले।
मुख्य प्रवर गंध माल्य कर, दाढा प्रति पूजै सुरवर ।।

२४२. धूप खेवी दाढा नें ताह्यो, घालै ते डाबा मांह्यो।
खंभ चैत्य माणवक जासो, पूंजणीइं पूंजै तासो ।।

२४३. दिव्य जल धारा करि जेहो, आभोखै सींचै तेहो।
आले गोशीर्ष चंदण कर, चर्चै छांटा दै सुरवर ।।

२४४. पुष्पादि चढावै इंदो, जावत दै धूप सुरिंदो।
फुन जिहां सिंहासण जाणी, पूजा तिमहिज पहिछाणी ।।

२४५. सुर सेज्या आवी सुरवर, पूजा ते द्वार तणी पर।
जिहां क्षुल्लक महिंद्र ध्वज आयो, ध्वज ज्यूं पूजै सुररायो ।।

२४६. जिहां प्रहरण कोश चोप्फालं, तिहां आवै आयुधशालं।
लोमहस्त पूंजणी ग्रही नें, आयुधशाला पूंजी नें ।।

२४७. दिव्य जल धारा करि जोइ, आभोखै सींचै सोइ।
गोशीर्ष सरस चंदन कर, दियै छांटणा सुरवर ।।

२४८. पुष्पादि चढावै सारो, जावत दै धूप उदारो।
जिहां सभा सुधर्मा केरो, बहु मध्य देश भाग सुमेरो ।।

२४९. जिहां मणिपीठिका आछी, जिहां सुर सेज्या अति जाची।
तिहां आय पूंजणी ग्रही नें, ते उभय प्रतै पूंजी नें[1] ।।

२३७. जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सभं सुहम्मं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ। (राय० सू० ३५१)

२३८. जेणेव माणवए चेइयखंभे जेणेव वइरामया गोलवट्ट-समुग्गा। (राय० सू० ३५१)

२३९. तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ। (राय० सू ३५१)

२४०. वइरामए गोलवट्टसमुग्गए लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता वइरामए गोलवट्टसमुग्गए विहाडेइ, विहाडेत्ता जिणसकहाओ लोमहत्थेणं पमज्जइ। (राय० सू० ३५१)

२४१. पमज्जित्ता सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेइ, पक्खालेत्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहिं य मल्लेहिं य अच्चेइ। (राय० सू० ३५१)

२४२. अच्चेत्ता धूवं दलयइ, दलयित्ता जिणसकहाओ वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु ····माणवगं चेइयखंभं लोमहत्थएणं पमज्जइ। (राय० सू० ३५१)

२४३. दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ। (राय० सू० ३५१)

२४४. पुप्फारुहणं जाव धूवं दलयइ। (राय० सू० ३५१)
····जेणेव सीहासणे···· (राय० सू० ३५२)

२४५. जेणेव देवसयणिज्जे····।
जेणेव खुड्डागमहिंदज्झए····तं चेव। (राय० सू० ३५३,३५४)

२४६. जेणेव पहरणकोसे चोप्पालए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता···· (राय० सू० ३५५)

२४७. दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ (राय० सू० ३५५)

२४८. पुप्फारुहणं जाव (सं० पा०) धूवं दलयइ। (राय० सू० ३५५)
जेणेव सभाए सुहम्माए बहुमज्झदेसभाए। (राय० सू० ३५६)

---

*लय : चरित्र निर्मल पालीजै जी

१. गाथा २४९ की जोड़ जिस पाठ के आधार पर की गई है वह पाठ (वृ० प० २६५) में मिलता है किन्तु यहां जीवाभिगम (प्रतिपत्ति ३) के विवरणानुसार पाठ स्वीकृत किया है। इसलिए 'मणिपेढ़िया' और 'देवसयणिज्ज' की जोड़ के सामने कोई पाठ उद्धृत नहीं किया गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५०. जावत छै धूप सुगंधो, इम धूप उखेवी इंदो।
कही सभा सुधर्मा नीं बातो, हिवै सुणो आगल अवदातो ।।

वा०— इहां वृत्तिकार कह्यु — सुधर्मा सभा नां बहु मध्य देश भाग नीं पूर्ववत पूजा करीनें, सुधर्मा सभा नें दक्षिण द्वारे आवी नें, ते द्वार नीं पूजा पूर्ववत करै, तिवारै पछै दक्षिण द्वार करिकै नीकलै, एह थकी आगल जिण प्रकार करिकैहीज सिद्धायतन थकी नीकलतो छतो दक्षिण द्वारादिक दक्षिण नंदा-पुष्करणी पर्यवसान वली प्रवेश थकी उत्तर नंदा-पुष्करण्यादिक थकी उत्तरद्वारांत पूज्यो। तिवार पछै द्वितीय द्वार प्रतै पूजी पूजी नीकलतो पूर्व द्वारादिक पूर्व नंदा-पुष्करणी पर्यवसान अर्चनिका कही, तिकाहीज सुधर्मा सभा नें विषे पिण कहिवी। पिण ऊणी अधिकी नहीं।

तिवारै पछै पूर्व नंदा-पोक्खरणी नी अर्चनिका करीनें उपपात सभा नें पूर्व द्वारे करी पेसे, पेसी नें मणिपीठका नीं अनें देव-सेज्या नी पूजा करी तदनंतर बहु मध्य देश भाग नीं पूर्ववत अर्चनिका करी। तिवारै पछै उपपात सभा नें दक्षिण द्वारे आयो।

ए अधिकार वृत्ति में कह्यो अनें सूत्रे सुधर्मा सभा नें तीनूं दिशे द्वार मुख-मंडपादिक पुष्करणी तांइ पूजे— इम नथी कह्यु। अनें उपपात सभा नें विषे पिण पूर्व द्वारे पेसी मणिपीटिका देवसेज्या बहु मध्य देश भाग पूजै—ए पिण नथी कह्यो। पिण ए सर्व पूज्या संभवै छै। सिद्धायतन नें तीनूं द्वारादिक नंदा पुष्करणी तांइ पूजै कह्युंज छै, तिम इहां पिण जाणवूं। इण सूत्रे हीज प्रथम विस्तार कह्यो, तिहां सिद्धायतन नें तीनूं दिशे मुख मंडपादिक कह्या। अनें सुधर्मा सभा नें पिण तीनूं दिशे मुख मंडपादिक नंदा पोक्खरणी लगै छै, ते माटै ए पूजा संभवै वली आगल उपपात सभा नें तीनूं दिशे मुख मंडपादिक पूजै। तिहां नीं भलावण दीधी, ते माटै सुधर्मा सभा नें तीनूं दिशे द्वार अनें मुखमंडपादिक पूजा संभवै।

अत्र चरचा लिखिये छै—

'कोई कहै—ए सिद्धायतन नें चैत्य थूभे जिन प्रतिमा पूजी नमोत्थुणं गुण्यो, ते धर्म हेते छै। तेहनो उत्तर—ए जिन प्रतिमा नीं द्रव्य पूजा आरम्भ सहित छै। ए पूजा नीं तीर्थंकर आज्ञा देवै नहीं। साधु दीक्षा लीधी तिवारै सावज जोग नां पचखाण किया। तिण में द्रव्य पूजा नां त्रिविधे-त्रिविधे पचखाण आया। ते द्रव्य पूजा करै नहीं, करावै नहीं, करता नें अनुमोदै पिण नहीं। जो ए धर्म नों कार्य छै तो साधु अनुमोदना किम न करै ? अनै ए द्रव्य पूजा नीं अनुमोदना कियां साधु नें पाप लागै, व्रत भागै तो द्रव्य पूजा करण वाला नै धर्म किम हुवै ? जो द्रव्य पूजा में धर्म छै तो धर्म अनुमोदना कियां पाप किम हुवै ? अनै व्रत किम भागै ?

श्रावक सामायक पोसा करै तिहां 'सावज्जं जोगं पच्चक्खामि' पाठ कहै — तिण में ए द्रव्य पूजा नें सावज जाणनै त्यागी छै। ते सावज कार्य सामायक पोसा विना खुलो करै, तिणनै पिण धर्म नथी। तिण नें पिण केवली नीं आज्ञा नथी। अनें आज्ञा बारै धर्म पुन्य रो अंश नहीं। ते भणी ए द्रव्य पूजा सावज जाणवी। इंद्रे कीधी ते लौकिक खाते, संसार नां द्रव्य मंगलीक हेते, पिण धर्म हेते नहीं।

तुंगिया नगरी प्रमुख नां श्रावक स्थविर प्रमुख नैं वंदवा गया। तिहां दधि अक्षत, द्रोबादिक द्रव्य मंगलीक संसार हेते साचव्या, ते लौकिक खाते छै। तिम ए पिण द्रव्य पूजा लौकिक खाते जाणवी अनें नमोत्थुणं गुण्यो ते पिण लौकिक

२५०. जाव धूवं दलयइ। (राय० सू० ३५६)

वा०—सभायाः सुधर्मायाः बहुमध्यदेशभागेऽर्चनिकां पूर्ववत् करोति, कृत्वा सुधर्मायाः सभायाः दक्षिणद्वारे समागत्य तस्य अर्चनिकां पूर्ववत् कुरुते, ततो दक्षिणद्वारेण विनिर्गच्छति, इत ऊर्ध्वं यथैव सिद्धायतनान्निष्क्रामतो दक्षिणद्वारादिका दक्षिणनन्दापुष्करिणीपर्यवसाना पुनरपि प्रविशतः उत्तरनन्दापुष्करिण्यादिका उत्तरद्वारान्ता ततो द्वितीयद्वारान्निष्क्रामतः पूर्वद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्करिणी-पर्यवसाना अर्चनिकावक्तव्यता सैव सुधर्मायां सभाया-मप्यन्यूनातिरिक्ता वक्तव्या।

ततः पूर्वनन्दापुष्करिण्या अर्चनिकां कृत्वा उपपातसभां पूर्वद्वारेण प्रविशति प्रविश्य च मणिपीढिकाया देवशयनीय-स्य तदनन्तरं बहुमध्येदेशभागे प्राग्वदर्चनिकां विदधाति, ततो दक्षिणद्वारे समागत्य तस्यार्चनिकां कुरुते।

(वृ० प० २६५,२६६)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खाते छै, ते भणी उघाड़ै मुखे गुण्यो पिण मुख आडो हस्त वस्त्रादिक देइ गुण्यो—इम नथी कह्यो, ते माटै ए नमोत्थुणं उघाड़ै मुख गुण्यो संभवै। अनें ए उघाड़ै मुख गुण्यो, ते माटै ते संसार नां द्रव्य मंगलीक नें अर्थे लोकिक खाते छै, पिण धर्म हेते नहीं।

जे भगवती शतक १६वें दूजे उद्देसे (सूत्र ३६) कह्यो—जिवारै शक्र उघाड़ै मुख भाषा बोलै, तिवारै ते सावज भाषा, अनें जिवारै शक्र हस्तादिक तथा वस्त्रादिक मुख आडो देइ बोलै, तिवारे निरवद्य भाषा हुवै। तिहां वृत्तिकार कह्यु —जीव नां संरक्षण थकी निरवद्य भाषा हुवै। पिण इम नथी कह्यु —जे मुख आडो वस्त्रादिक देइ बोलै ते विनय छै। इम विनय थी निरवद्य भाषा नथी कही। अनें जे देवलोक नें विषै बेइंद्रियादिक प्रज्याप्ता नां स्थान नथी अनें मनुष्य लोक नें विषे इंद्रादिक, तेहनां मुख नें विषे माखी माछरादिक प्रवेश नों उपद्रव न संभवै, ते भणी इंद्र मुख आडो वस्त्रादिक देइ बोलै ते वायुकाय नां जीव नी रक्षा अनै उघाड़े मुख बोलै तिहां वायुकाय नां जीव नीं हिंसा जाणवी। ए सूत्रे इंद्र नीं सावद्य निरवद्य भाषा कही, ते वचन देखतां जिवारै शक्र धर्म रूप वचन कहै तिवारै उघाड़ै मुख नथी बोलै। अनें जिवारे धर्म वार्त्ता विण अन्य वारता लोकिक संबंधी कहै, तिवारै उघाड़ै मुख बोलै, एहवूं दीसै छै। अनें छंद, नमोत्थुणं गुण्यो तिहां मुख आडो हस्त वस्त्रादिक नों पाठ नथी कह्यो। ते भणी उघाड़ै मुख गुण्या माटै ए सावज भाषा संसार नां मंगलीक हेते जाणवी पिण धर्म हेते नथी।

वलि कह्यु —जिन प्रतिमा नें लोम हस्त नीं पूंजणी करी पूंजै, जले करी स्नान करावै, चंदने करि गात्र लीपै, वस्त्र युगल पहिरावै, पुष्पादिक चढावै, मुख आगल मूकै जाव धूप खेवै —एतला बोल कह्या, पिण मुख आडी जयणा नथी कही। वलि नमोत्थुणं गुण्यो त्यां पिण कह्यो—एक सौ आठ छंद नां दोष रहित ग्रंथे करी युक्त वली पुनरुक्त दोष रहित मोटा पदे करी युक्त एहवा छंदे करी स्तवना करै। वलि सात-आठ पग पाछो ओसरी, डावो गोडो ऊंचो राखी, जीमणो गोडो धरती नां तला विषे स्थापी तीन वार मस्तक धरणी तल नें विषे लगाडी नें कांयक धरती सूं ऊंचो मस्तक राखी नें हाथ जोड़ी शिर आवर्त्त करीनें नमोत्थुणं गुणै, एतली विधि आखी। पिण इम न कह्यो—मुख आडी जयणा करीनें नमोत्थुणं गुणै, ते माटै ए छंद नें नमोत्थुणं उघाड़ै मुख गुण्या संभवै। जिम पूंजणी सूं प्रतिमा नें पूंजे, स्नानादिक जाव धूप खेवै तिम संसार नां मंगल हेते प्रतिमा नें नमोत्थुणं गुण्यो ते पिण सावज जाणवो।

इहां प्रथम शक्र इंद्राभिषेक करी अलंकार सभा में आवै, आवी वस्त्र-गहणा पहिरया, व्यवसाय सभा में आवै, आवी पुस्तक-रत्न वांची 'धम्मियं ववसाइयं गिण्हइ' (सू० २८८) एहवो पाठ कह्यो। पछै सिद्धायतन आवै, आवी नें जिन-प्रतिमा पूजी, द्वार शाखा, पूतल्यां, सर्प नां रूप, मुख-मंडपादिक, तोरण, बावड़ी, दाढा, हथियार प्रमुख पूज्या।

इहां कोइ कहै—प्रतिमा पूजी ते धर्म-व्यवसाय मध्ये कही छै, तेहनो उत्तर—ए धर्म-व्यवसायपद कह्यो, ते निकेवल प्रतिमा पूजवा आश्रयी नें नथी कह्यो। ए धर्म-व्यवसाय ग्रह्यो तिवारै पछै जिन प्रतिमा, द्वार शाखा, पूतल्यां, सर्प नां रूप, मुख-मंडपादिक जे-जे वस्तु पूजी, पोता नां जीत आचार नीं विध करी, ते सर्व धर्म व्यवसाय मध्य आवी।

ठाणांगे दशमें ठाणें दश धर्म कह्या, तिणमें कुलधर्म कह्यो ते माटै ए कुलधर्म जाणवो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विमाण रा धणी सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, भव्य, अभव्य ऊपजतां राज्य बेसे छै तिवारै सगलाइ प्रतिमादिक पूजै छै। ते कल्प-स्थिति माटै, पिण धर्म हेते नहीं। तिमहिज इंद्र पिण कुल स्थिति राखवा माटै ए सर्व वाना पूज्या छै। जिम मनुष्य लोक नें विषे जैन, वैष्णव, मुसलमान नां देहरा, ठाकुर द्वारा, मस्जिद जूजुआ छै, तिम देवलोक में सम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि नीं श्रद्धा तो जूई-जुई छै, पिण पूजवा नां स्थानक जूआ-जूआ नथी कह्या। जूआ-जूआ किहांहि कह्या हुवै तो देखावो। पांच सभा अनें सिद्धायतन - ए छह वाना अनें मुख-मंडपादिक सर्व विमाण रा धणी रै हुवै, ते तिण विमाण नें विषे सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि जे ऊपजतां राज-अभिषेक करचे छते एहिज प्रतिमा, द्वार-शाखा, पूतल्यां प्रमुख सगलाइ विमानाधिप पूजै छै। ते माटै ए समदृष्टि, मिथ्यादृष्टि सर्व नों कल्प-स्थिति जीत व्यवहार एक हीज जाणवो।

आवश्यक नीं वृत्ति बावीस हजारी हरिभद्र सूरि नीं कीधी, ते मध्ये सामायिक नामा अध्ययन नीं टीका, ते मध्ये अभव्य संगम देवता नों अधिकार छै। महावीर नें उपसर्ग नें अधिकारे जिवारै शक्रेंद्र बोल्यो—'महावीर नें चलावी न सकै।' तिवारै शक्रेंद्र नों सामानिक अभव्य संगम देवता बोल्यो, ते पाठ लिखियै छै—

संगमो नाम सोहम्मकप्पवासी देवो सक्कसामाणिओ अभवसिद्धिओ सो भणति—देवराया अहो रागेण उल्लवेइ, को माणुसो देवेण न चालिज्जइ ? अहं चालेमि, ताहे सक्को तं न वारेइ। मा जाणिहिइ— परणिस्साए भगवं तवोकम्मं करेति, एवं सो आगओ।[1]

इहां संगमो देवता शक्रेन्द्र नों सामानिक देवता कह्यो। वलि संदेह दोलावली ग्रंथ छै, तेहनी वृत्ति मध्ये कह्यो छै ते लिखिये छै—नन्वेवं तर्हि संगमकप्रायो महामिथ्यादृष्टिः देवविमानस्थां सिद्धायतनप्रतिमा अपि सनातनामिति चेत्, न नित्यचैत्येषु हि संगमवद् अभव्या अपि देवा मदीयमदीयमिति बहुमानात् कल्पस्थितिव्यवस्थानुरोधात् तद्भूतप्रभावाद् वा न कदाचित् असंयमक्रियां आरभन्ते[2]।

इहां ए संगम नें अभव्य कह्यो अनें इन्द्र नो सामानिक आवश्यक नीं वृत्ति में पूर्वे कह्योज छै। सामानिक देवता इन्द्र सरीखा अनें विमान नां धणी उपजती वेला सूरियाभ नीं परै प्रतिमा दाढा पूजै पोता नीं कल्प स्थिति माटै। इहां कह्यो संगम महामिथ्यादृष्टि देव विमान कै विषे सिद्धायतन प्रतिमा नें ते अभव्य पिण देवता ए 'मांहरी मांहरी' इम बहु मान थकी कल्प स्थिति व्यवस्था नां वश थकी पूजै ते माटै।

जद कोई कहै—द्रोपदी सम्यक्त्व-धारणी प्रतिमा क्यूं पूजी ? तेहनों उत्तर—ओघनिर्युक्ति ग्रंथ नें अभिप्राये द्रोपदी प्रतिमा पूजी ते वेला सम्यक्त्वधारणी नहीं ते देखाडै छै—

'दव्वंमि जिणहरा' इति ओघनिर्युक्ति व्याख्या—द्रव्यलिंगिपरिगृहीतानि चैत्यानि किं सम्यग्दृष्टिना न संभावितानि इति, कस्मात् ? यस्मात् द्रव्यलिंगि-मिथ्यादृष्टित्वात्। यद्येवं तर्हि दिगम्बरसंबंधिचैत्यानि किं सम्यग्दृष्टिना न संभावितानि ? एतत्सत्यम्। यद्येतत् सत्यं तर्हि स्वर्गलोकेषु शाश्वतानि चैत्यानि सूर्याभादिभिः देवैः सम्यग्दृष्टिभिः प्रपूज्यन्ते, तत् चैत्यानि संगमकवत् अभव्यदेवा

१. आव. निर्युक्ति गाथा ५०१ की हारिभद्रीया व्याख्या

२. संदेहदोलावली की वृत्ति का जो अंश यहां उद्धृत किया गया है, वह संस्कृत की दृष्टि से कुछ स्थलों पर अशुद्ध प्रतीत होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मदीयमदीयमिति बहुमानात् प्रपूजयन्ति, किमेतत् पूर्वापरं विरुद्धं न स्यात्? ननु सूर्याभादयो देवाः स्वर्गलोकेषु शाश्वतानि चैत्यानि प्रपूजयन्ति तत्कल्पस्थिति-व्यवस्थानुरोधात्, अत एव विरुद्धं न संभवति।

यद्येवं, तर्हि द्रौपद्या सम्यक्त्वधारिण्या यानि चैत्यानि नमस्कृतानि किं द्रव्य-लिंगिपरिगृहीतानि न संभवंतीत्याह—द्रौपदी न सम्यक्त्वधारिणी स्यात्, ओघ-निर्युक्तौ इत्युक्तम्—

'इत्थिजणसंघट्टं तिविहेण तिविहं वज्जए साहू' इति वचनात्। स्त्रीजन-स्पर्शस्त्रिविध-त्रिविधेन साधूनां वर्जनीयः। साधोश्च अकल्पनीयकर्माचरतः सम्यक्त्वाभावात्। आगमेषु श्रूयते—द्रौपदी 'लोमहत्थयं परामुसइ' लोमहस्तेन परामृशति परिमार्जयतीत्यर्थः। तत्परिमार्जनेन जिनस्पर्शो जातः, जिनस्य स्त्रीजन-स्पर्शेन आशातना स्यात्। आशातनातः सम्यक्त्वाभावः, अत एव द्रौपदी न सम्यक्त्वधारिणी संभाव्यते। पुनः ओघनिर्युक्तेश्चिरन्तनटीकायां गन्धहस्त्याचार्येण उक्तम्—द्रौपद्या नृपपुत्रिकया निदानं कृतं, भर्तृपंचकस्येच्छन्ती निदानभोजितवती जातैकपुत्रा पुनः पश्चात् साधोः पार्श्वे शंकां निवार्य प्रवरसम्यक्त्वमार्गं धरते स्मः।[1]

इहां कह्यो—द्रव्यलिंगी परिग्रहीत चैत्य स्यूं सम्यग्दृष्टि संभावित नहीं, ते किण कारण थकी? द्रव्यलिंगी मिथ्यादृष्टि छै, ते भणी। जो इम छै तो दिगम्बर संबंधी चैत्य स्यूं सम्यग्दृष्टि संभावित नहीं? ए सत्य। जो ए सत्य तो स्वर्ग लोक नें विषे शाश्वता चैत्य सूर्याभादि देवता सम्यग्दृष्टि पूजै, ते चैत्य संगमवत् अभव्य देव 'मांहरी मांहरी' इम बहुमान थकी पूजै, ए पूर्वापर विरुद्ध नहीं हुवै कांइ? सूर्याभादि देव स्वर्गलोक नें विषे शाश्वता चैत्य पूजै ते कल्पस्थिति वस अनुरोध थकी, इण कारण थकीज विरुद्ध नहीं हुवै।

जो इम छै तो द्रोपदी सम्यक्त्वधारणी जे चैत्य नें नमस्कार कियो, ते स्यूं द्रव्यलिंगी परिगृहीत न हुवै कांइ? द्रोपदी सम्यक्त्वधारणी न हुवै ओघनिर्युक्ति नें विषे इम कह्यो—स्त्री जन नो स्पर्श साधु नें त्रिविधे त्रिविधे वर्जवुं। साधु नें अकल्पनीय आगम नें विषे सांभलियै छै—"लोमहत्थं परामुसइ" लोमहस्त करिकै फर्शे—पूंजे इत्यर्थः। ते पूंजवै करी जिन नों स्पर्श हुवै। जिन नें स्त्री जन स्पर्शवै करी आशातना हुवै, आशातना करवै करी सम्यक्त्व नों अभाव। इण कारण थकी द्रोपदी सम्यक्त्वधारणी न संभवियै।

वलि ओघनिर्युक्ति नीं चिरंतन टीका नें विषे गंधहस्ति आचार्य कह्यो—द्रोपदी नृपपुत्री नीयाणा नीं करणहारी, तिणे भर्तार पंच नें वरी सो नियाणो भोगवी, एक पुत्र थयां पछै साधु समीपे सम्यक्त्व पामी—एहवो ओघ निर्युक्ति नीं टीका नें विषे गंधहस्ति आचार्य कह्यो। ते मिथ्यात्व नां वश थकी पुष्पादिक करीकै प्रतिमा पूजी। इहां ओघ-निर्युक्ति नीं टीका तेहनें विषे द्रोपदी प्रतिमा पूजी, ते वेला सम्यक्त्व धारणी नथी अनें एक पुत्र थयां पछै साधु समीपे सम्यक्त्व पामी एहवुं कह्युं।

वली सूर्याभादिक देवता देवलोक नें विषे शाश्वता चैत्य पूजै। ते कल्प देवलोक नीं स्थिति राखवा माटै कह्यो, पिण धर्म हेते पूजै, इम नथी कह्यो। अनें शक्र देवेंद्र नीं अर्चनिका सूर्याभ नें भलाई। ते माटे शक्र देवेंद्र प्रतिमादिक पूजी, नमोत्थुणं गुण्यो, ते पिण कल्प—देवलोक नीं स्थिति राखवा माटै जाणवो। वलि

---

१. ओघनिर्युक्ति की व्याख्या का यह अंश कुछ स्थलों पर अशुद्ध प्रतीत होता है। संस्कृत की दृष्टि से कुछ शब्दों एवं क्रियाओं में परिवर्तन करने पर भी कुछ स्थल संदिग्ध रह गए हैं। व्याख्या की प्रति उपलब्ध न होने के कारण इसे पूरी तरह से शुद्ध नहीं किया जा सका।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संगमादिक अभव्य ते पिण कल्प-स्थिति राखवा माटे सूर्याभ नीं पर प्रतिमादिक पूजैं, नमोत्थुणं गुणैं छैं, ते भणी शक्र देवेंद्र जिन प्रतिमा पूजी, जिन दाढा पूजी, जिनप्रतिमा आगैं नमोत्थुणं गुण्यो, द्वार-शाखा, पूतल्यां, सर्प नां रूप, मुखमंडपादिक अनेक वस्तु पूजी, ते सर्व लोकिक खाते जाणवा पिण लोकोत्तर हेते नथी। कल्पस्थिति राखवा माटै पूज्या, ए सावज पूजा नीं केवली नीं आज्ञा नथी।

ए जिन प्रतिमा तो स्थापना निक्षेपो छै। पिण साक्षात भाव निक्षेपे महावीर आगे सूर्याभ सावज भक्ति करी, नाटक पाड्यो, भगवान नें कह्यो—गोतमादिक नें म्हारी भक्ति नां वश थकी बत्तीस विध नाटक देखाडूं। तिहां एहवो पाठ छै—'तए णं समणे भगवं महावीरे''''—सूरियाभस्स देवस्स एयमट्ठं णो आढाइ णो परियाणइ तुसिणीए संचिट्ठति (सू० ६४)।' एहनों अर्थ वृत्तिकार कियो ते लिखिये छै—ततः श्रमणो भगवान् महावीरः सूर्याभेण देवेन एवमुक्तःसन् सूर्याभस्य देवस्य एनम्—अनंतरोदितम् अर्थं न आद्रियते—न तदर्थकरणाय आदरपरो भवति, नापि परिजानाति अनुमन्यते स्वतो वीतरागत्वात् गौतमादीनां च नाट्यविधेः स्वाध्यायादिविघातकारित्वात् केवलं तूष्णीकः अवतिष्ठते।

एहनों अर्थ—तिवारै श्रमण भगवान् महावीर सूर्याभ देवताइं इम कह्ये छते सूर्याभ देवता नां ए पूर्वोक्त अर्थ प्रतै नो आढाइ कहितां आदर न दियो ते नाटक नां कार्य माटे आदरपरायण न हुवें। नो परिजाणाइ कहितां अनुमोदैं पिण नहीं, पोतैं वीतरागपणां थकी अनैं गोतमादिक नें माटैं नाटक स्वाध्यायादिक में विघातकारी, ते विघ्नकारीपणां थकी 'तुसिणीए संचिट्ठति' कहितां निकेवल मौन करीनें रहै।

इहां ए नाटक नें भगवान् आदर न दियो। अनुमोदना पिण न कीधी। ते माटै ए सावज भक्ति छै, जिन आज्ञा बारे छै। जे कार्य नें साधु करै नहीं, करावै नहीं, करतां प्रति अनुमोदैं पिण नहीं, ते कार्य सावज पाप कर्म बंध नो हेतु जाणवो।

तिवारैं कोइ कहै—ए सूर्याभ नें नाटक करणो मांड्यो ते वेला वर्ज्यो क्यूं नथी? तेहनो उत्तर—शतक ९ उद्देशे ३३ में जमाली विहार करण री आज्ञा भगवंत कनै मांगी तिहां पिण एहिज पाठ कह्यो—

तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणइ, तुसिणीए संचिट्ठइ। (सू० २१७)

इहां पिण विहार करण री आज्ञा मांगी। तिवारैं ते जमाली नां अर्थ नें आदर न दियो, अनुमोदना पिण न कीधी, मौन राखी। तिवारैं जमाली आज्ञा विना विहार कीधो। सावत्थी नगरी गयो। तिहां वचन उत्थापी भ्रष्ट थयो। ते भणी भगवान आज्ञा न दीधी, मौन राखी, तेहनें पिण वर्ज्यो नथी। ते केवली त्रिलोकीनाथ ए निश्चैं विहार करसीज इम जाण्यो, ते भणी वर्ज्यो नहीं।

प्रभु निरर्थक भाषा बोलैं नहीं। तिम इहां पिण प्रभु जाण्यो—ए सूर्याभ निश्चै नाटक पाड़सीज, ते भणी वर्ज्यो नथी। अथवा ते नाटक पाड़वा नों तेहनो तीव्र मन जाण्यो अनैं वर्जे तो ते जबरदसती रो धर्म वीतराग रो नथी। अथवा हां कह्यां हिंसा लागै, नां कह्या भोगी रा भोग भागै। ते हजारां लोकां रै नाटक देखवा री वांछा ते वर्त्तमान काले वर्ज्यां तेहनें अन्तराय नो संभव इत्यादिक अनेक कारण जाणी नें वर्ज्यो नथी। पिण आज्ञा न दीधी, अनुमोदना न कीधी, ते माटै सावज्ज छै।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे खंधकादिक[1] तपसा री आज्ञा मांगी, गोतमादिके गोचरी नी आज्ञा मांगी तिहां एहवुं पाठ—"अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह" इहां ए तपस्या अथवा साधु री गोचरी निरवद्य कार्य छै, ते भणी कह्यो—जिम सुख हुवै तिम करो, हे देवानुप्रिय ! विलंब करो मती। इम शीघ्र आज्ञा दीधी। अनें सूर्याभ नां नाटक नें आदर न दियो, अनुमोदना पिण न करी, मून राखी, ते भणी ए सावज छै। आज्ञा बारै छै। अनें सूर्याभ नां आभियोग देवता अथवा सूर्याभ पोतै वंदणा कीधी तिहां भगवान् सूत्र में छह पाठ कह्या, तिहां "अब्भणुणायमेयं" एहवुं पाठ छै, ए वंदणा करवा री मांहरी आज्ञा छै। ए वंदणा रूप कार्य निरवद्य छै, ते भणी आज्ञा दीधी। अनें नाटक नुं कार्य सावज छै, ते भणी अनुमोदना न कीधी, मून राखी। ए प्रत्यक्ष भाव निक्षेपा आगे नाटक पाड्यो, ते पिण सावज आज्ञा बाहिर छै तो थापना निक्षेपा री पूजा, ते जिन आज्ञा में किम हुवै ? ज्ञान नेत्रे करी निरपेक्षपणें विचारी जोइज्यो।' (ज० स०)

हिवै सुधर्मा सभा नें विषे पूजा करी तेहनें त्रिहुं दिशे द्वार मुख-मंडपादिक पूजी, उपपात सभा तिहां आवी, उपपात सभा नें विषे मणिपीठिका, सिंहासन, बहु मध्य देश भाग पूजी, ते उपपात सभा नें विषे त्रिहुं दिशे द्वार मुख-मंडपादिक पूजें ते अधिकार कहै छै—

२४९. *जिहां उपपात सभा नों जाण, कांइ दक्षिण द्वार पिछाण।
तिमहिज सभा सरीस उच्चरणी, जाव पूर्वनंदा पोक्खरणी॥

वा०—जिम सुधर्मा सभा नें तीनूं दिशे द्वार मुख-मंडपादिक पूज्या, तिम उपपात सभा नें दक्षिण द्वार मुख मंडपादिक नंदा पुष्करणी तांइ पूजी। वलि उत्तर नी नंदा पुष्करणी थी लेइ उत्तर द्वार लगैं पूजी। पछै पूर्व द्वार थी लेइ पूर्व नंदा पुष्करणी लगैं पूजा करै, करीनै द्रह नें विषे आवै ते कहै छै—

२५०. पछै द्रह तिहां आवै आवी, द्रह नां तोरण पावड़ियां सुहावी।
पूतलियां नें सर्प नां रूप, तिमहिज पूजै धर चूंप॥

२५१. पछै सभा जिहां अभिषेक, तिहां आवै आवी नें संपेख।
सिंहासण मणिपीठिका सार, तेहनी पूजा करै धर प्यार॥

वा०—इहां वृत्तिकार कह्यो—पूर्व द्वार करी अभिषेक सभा में प्रवेश करै, प्रवेश करीनें मणिपीठिका नीं अनें सिंहासण नीं वली अभिषेक-भांड नीं अनें बहु मध्य देश भाग नीं पूर्ववत अर्चनिका अनुक्रम करिकै करै।

२५२. शेष तिमहिज कहिवुं उदंत, आयतन सरीखो वृतंत।
जाव पूर्व नंदा पुष्करणी, तिहां आवी पूजा विधि वरणी॥

वा०—अभिषेक सभा नो बहु मध्य देश भाग पूजी नें तिवार पछै इहां पिण सिद्धायतन नीं परै दक्षिण द्वार दक्षिण मुखमंडपादिक थकी दक्षिण नंदा पुष्करणी लगै पूजी नें उत्तर नंदा पुष्करणी लेइ उत्तर द्वारांत पूजी नें पूर्व द्वारादिक थकी लेइ पूर्व नंदा पुष्करणी लगै पूजै, पूजी नें हिवै अलंकार सभा में आवै, ते कहै छै—

२५३. जिहां सभा अलंकार, तिहां आवै आवी नें तिहवार।
जिम अभिषेक सभा विस्तार, तिमज सर्व कहिवूं अलंकार॥

२४९. जेणेव उववायसभाए दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—
(जहा २६४-३१२ सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि)।
(राय० सू० ४१६-४३४)

२५०. जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता······ तोरणे य तिसोवाण-पडिरूवए य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता।
(राय० सू० ४७३)

२५१. जेणेव अभिसेय सभा तेणेव उवागच्छइ,उवागच्छित्ता ·····मणिपेढियं च सीहासणं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता। (राय० सू० ४७४)

वा०—पूर्वद्वारेणाभिषेकसभां प्रविशति, प्रविश्य मणिपीठिकायाः सिंहासनस्याभिषेकभाण्डस्य बहुमध्यदेशभागस्य च क्रमेण पूर्ववदर्चनिकां करोति। (वृ० प० २६६)

२५३. जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता······ (राय० सू० ५३४)

---

*लय : म्हारी सासू रो नाम छै फूली

1. भ० २।६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा०—अभिषेक सभा नीं पूर्व नंदा पुष्करणी थकी नीकली, पूर्व द्वार करी अलंकारिक सभा में पैसी नें मणिपीठिका अनें सिंहासन नी वलि अलंकारिक भांड नीं अनें बहु मध्य देश भाग नीं अनुक्रम करिकै पूर्ववत अर्चनिका करै, करीनें तिहां पिण अनुक्रम करिकै सिद्धायतन नी परैं दक्षिण द्वार थी लेइ पूर्व नंदा पुष्करणी पर्यवसान अर्चनिका कहिवी । हिवै व्यवसाय सभा में आवै, ते कहै छै—

२५४. पछै जिहां सभा व्यवसाय, तिहां आवै आवी सुरराय ।
तिमहिज पूंजणी हस्त ग्रही नें, पुस्तक रत्न प्रतै पूंजी नें ।।

२५५. दिव्य उदक धारा कर सोय, आभोखै सींचै अवलोय ।
मुख्य पवर गंध पुष्पमाल, तिण करि अर्चै तिण काल ।।

२५६. मणिपीठिका प्रति पूजेह, वली सिंहासण अर्चेह ।
शेष तिमहिज सर्व कहेव, पूर्व नंदा पोक्खरणी तं चेव ।।

वा०—तिवार पछै अलंकार सभा नीं पूर्व नंदा पुष्करणी थकी पूर्व द्वार करिकै व्यवसाय सभा में पेठो, पैसी नें पुस्तक रत्न नें मयूरपिच्छ नीं पूंजणी करी पूंजी नें उदक धारा करिकै सींची नें वर गंध माल्य करि अर्ची नें तदनंतर मणिपीठिका नी अनें सिंहासन नीं वली बहु मध्य देश भाग नीं अनुक्रम करिकै पूर्ववत अर्चनिका करै । तदनंतर तिहां पिण सिद्धायतन नीं परैं दक्षिण द्वार थी लेई पूर्व नंदा पुष्करणी पर्यवसान अर्चनिका कहिवी ।

२५७. पूर्व नंदा पुष्करणी थी ताय, जिहां बलिपीठ छै तिहां आय ।
बलि विसर्जन करै तिवार, उगर्‍या ते वाना मूकै सार ।।

वा०—पूर्वोक्त बत्तीस वाना कह्या ते पूजतां पूजतां जे कोई वस्तु चंदण फूलादिक उगर्‍या हुवै, ते बलिपीठ नें विषे विसर्जन करै—मूकै ।

२५८. पछै आभियोगिक देव, तसु तेड़ावी ततखेव ।
इह विध बोलै सुरराय, हे देवानुप्रिय ! शीघ्र जाय ।।

२५९. सुधर्मावतंस विमान, तेह विमान विषे पहिछान ।
जे सिंघाड़ा नें आकार, त्रिकोण स्थान जे उदार ।।

२६०. त्रिक ज्यां तीन वाट मिलंत, चउक्क ते ज्यां मिलै चिहुं पंथ ।
वली चच्चर जे कहिवाय, बहु वाट मिलै जिहां आय ।।

२६१. वलि जिहां थकी अवलोय, चिहुं दिश नें विषे पिण सोय ।
नीसरै चिहुं पंथ उदार, तसु कहियै चतुर्मुख सार ।।

२६२. महापथ राजपंथ विषेह, शेष सामान्य पंथ कहेह ।
प्राकार तिको गढ जोय, अट्टालग बुरजां अवलोय ।।

वा—ततः पूर्वनन्दापुष्करिणीतः पूर्वद्वारेणालङ्कारिकसभां प्रविशति, प्रविश्य मणिपीठिकायाः सिंहासनस्य अलंकारभाण्डस्य बहुमध्यदेशभागस्य च क्रमेण पूर्ववदर्चनिकां करोति, तत्रापि क्रमेण सिद्धायतनवत् दक्षिणद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्करिणीपर्यवसाना अर्चनिका वक्तव्या ।

(वृ० प० २६६)

२५४. जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ....लोमहत्थगं परामुसइ परामुसित्ता पोत्थयरयणं लोमहत्थएणं पमज्जइ । (राय० सू० ५६४)

२५५. दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता........ अग्गेहिं वरेहि य गंधेहिं मल्लेहि य अच्चेइ, अच्चेत्ता पुप्फारुहणं । (राय० सू० ५६४)

२५६. ....मणिपेढियं च सीहासणं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता । (राय० सू० ५६५)

वा०— ततः पूर्वनन्दापुष्करिणीतः पूर्वद्वारेण व्यवसायसभां प्रविशति, प्रविश्य पुस्तकरत्नं लोमहस्तकेन प्रमृज्य उदकधारया अभ्युक्ष्य चन्दनेन चर्चयित्वा वरगन्धमाल्यैरर्चयित्वा पुष्पाद्यारोपणं दाधूपनं च करोति, तदनन्तरं मणिपीठिकायाः सिंहासनस्य बहुमध्यदेशभागस्य च क्रमेण पूर्ववदर्चनिकां करोति, तदनन्तरमत्रापि सिद्धायतनवत् दक्षिणद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्करिणीपर्यवसाना अर्चनिका वक्तव्या । (वृ० प० २६७)

२५७. जेणेव बलिपीढे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बलिविसज्जणं करेइ । (राय० सू० ६५४)

२५८. आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! (राय० सू० ६५४)

२५९. ....विमाणे सिंघाडएसु (राय० सू० ६५४)

शृंगाटकः—शृंगाटकाऽऽकृतिपथयुक्तं त्रिकोणं स्थानम् (राय० वृ० प० २६७)

२६०. तिएसु चउक्केसु चच्चरेसु (राय० सू० ६५४)
त्रिकं—यत्र रथ्यात्रयं मिलति चतुष्कं—चतुष्पथयुक्तं चत्वरं—बहुरथ्यापातस्थानं (राय० वृ० प० २६७)

२६१. चउम्मुहेसु (राय० सू० ६५४)
चतुर्मुखं—यस्माच्चतसृष्वपिदिक्षु पन्थानो निस्सरन्ति (राय० वृ० प० २६७)

२६२. महापहपहेसु पगारेसु अट्टालएसु (राय० सू० ६५४)
महापथः—राजपथः शेषः सामान्यः पन्थाः प्राकारः प्रतीतः अट्टालकाः—प्राकारस्योपरिभृत्याश्रयविशेषाः (राय० वृ० प० २६७)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६३. चरिका ते अष्ट हस्त प्रमाण, गढ नगर विषे मग जाण।
वली महल तणां जे द्वार, गोपुर गढ नीं पोल उदार।।

२६४. तोरण द्वार संबंधी जान, माधवी लतादि गृह-स्थान।
जिहां आवी पुरुष स्त्री ताम, रमै कहियै तास आराम।।

२६५. उत्सवादिक विषे आरोग्य, बहु जन नैं भोगविवा जोग्य।
वारू उद्यान ते सुखकंद, ढुकडुं ते कानन तरु वृन्द।।
२६६. वेगलुं तिको वन कहिवाय, एक जाति तणां सुखदाय।
उत्तम वृक्ष समूह सुचारू, वनराई कहियै वारू[1]।।

२६७. एक अनेक जात नां उदार, तरु-समूह वनखंड विचार।
ए सहु नीं अर्चा करि ताय, शीघ्र आज्ञा सूंपो आय।।

२६८. आभियोगिया देवा तिवार, इंद्र वचन कियो अंगीकार।
सहु नीं अर्चा कर स्वयमेव, पाछी आज्ञा सूंपी ततखेव।।

२६९ शक्र इन्द्र हिवै सुखदाय, जिहां नंदा-पुष्करणी त्यां आय।
नंदा पोक्खरणी नैं सुचंग, प्रदक्षिणा करतो उमंग।।
२७०. पूर्व नैं पावड़ियै कर ताहि, पेठो नंदा-पोक्खरणी मांहि।
हस्त पाय पखाली सार, आयो नंदा-पोक्खरणी बार।।

२७१. जिहां सभा सुधर्मा उदार, तिहां गमन भणी सुविचार।
प्रवर्त्यो सुराधिप इंद, साथै देव देव्यां रा वृंद।।
२७२. सामानिक चउरासी हजार, जाव तीन लाख अवधार।
ऊपर सहंस छत्तीस संगीत, आत्मरक्षक देव सहीत।।
२७३. वलि अन्य बहु सुधर्मवासी, वैमानिक देव देवी हुलासी।
परवरचो इन्द्र तेह संघात, सर्व ऋद्धि करि सुविख्यात।

२७४. जाव वाजित्र नां झिणकार, सुर दुंदुभि घोष उदार।
जिहां सभा सुधर्मा सुचंग, तिहां आयो धर उचरंग।।
२७५. हिवै सभा सुधर्मा तेह, विषे प्रवेश करै गुणगेह।
जिहां सिंहासण तिहां आय, बैठो पूर्व मुख सुरराय।।

२६३. चरियासु दारेसु गोपुरेसु (राय० सू० ६५४)
चरिका—अष्टहस्तप्रमाणो नगरप्राकारान्तरालमार्गः
द्वाराणि—प्रासादादीनां गोपुराणि—प्राकारद्वाराणि
(राय० वृ० प० २६८)
२६४. तोरणेसु आरामेसु (राय० सू० ६५४)
तोरणानि—द्वारादिसम्बंधीनि आरमंते यत्र माधवी-
लतागृहादिषु दम्पत्यादीनि इत्यसावारामः
(राय० वृ० प० २६८)
२६५,२६६. उज्जाणेसु वणेसु वणराईसु काणणेसु
(राय० सू० ६५४)
पुष्पादिमयवृक्षसंकुलमुत्सवादौ बहुजनोपभोग्यमुद्यानं,
एकजातीयोत्तमवृक्षसमूहो वनराजी।
(राय० वृ० प० २६७)
२६७. वणसंडेसु अच्चणियं करेह करेत्ता एयमाणत्तियं
खिप्पामेव पच्चप्पिणह। (राय० सू० ६५४)
एकाऽनेकजातीयोत्तमवृक्षसमूहो वनखण्डः
(राय० वृ० प० २६८)
२६८. तए णं ते आभिओगिया देवा……एवं वुत्ता
समाणा…तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।
(राय० सू० ६५५)
२६९. तए णं से……जेणेव णंदा पुक्खरिणी तेणेव
उवागच्छइ उवागच्छित्ता (राय० सू० ६५६)
२७०. णंदं पुक्खरिणिं पुरत्थिमिल्लेणं तिसोमाणपडिरूव-
एणं पच्चोरुहति पच्चोरुहित्ता हत्थपाए पक्खालेइ,
पक्खालेत्ता णंदाओ पुक्खरिणीओ पच्चुत्तरेइ,
(राय० सू० ६५६)
२७१. जेणेव……तेणेव पहारेत्थ गमणाए।
(राय० सू० ६५६)
२७२. तए णं से……आयरक्खदेवसाहस्सीहिं
(राय० सू० ६५७)
२७३. अण्णेहि य बहूहिं……विमाणवासीहिं वेमाणिएहिं
देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए
(राय० सू० ६५७)
२७४. जाव (सं० पा०) नाइयरवेणं जेणेव……तेणेव
उवागच्छइ
२७५. ……पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति
अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णि-
सण्णे। (राय० सू० ६५७)

---

१. रायपसेणइयं में उज्जाणेसु के बाद पाठ का क्रम इस प्रकार है—वणेसु वणराईसु काणणेसु……। जोड़ में उद्यान के बाद कानन की व्याख्या है। उसके बाद वन और वनराजि की। वृत्ति में उद्यान के बाद कानन हैं। उसके बाद वन, वनखण्ड और वनराजि है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७६. *हिवै शक्र तणां सुविचार, सामानिक सुखकारी।
सुर सहंस चउरासी सार, बड़ा है जशधारी।
जशधारी जी, अति हितकारी, वायव्य ईशाण बैठा सारी।
ओ तो सखर सुराधिप शक्र, परम मुद्रा प्यारी॥

२७६. तए णं तस्स······ ····उत्तरपुरत्थिमिल्लेणं···· ······
सामाणिय-साहस्सीओ (राय० सू० ६५८)

सोरठा

२७७. सहंस चउरासी जाण, भद्रासण अति ओपता।
वायव्य नैं ईशाण, बैठा तिहां सामानिका॥

२७७. ········भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति (राय० सू० ६५८)

२७८. *हिवै पूर्व दिश रै मांय, भद्रासण अष्ट भला।
तिहां अग्रमहेषी आठ, रूप करि अधिक भिला॥
अधिक भिला जी, आभरण उजला,
अतिही द्युति कांतिकरी अमला।
ओ तो सबल शक्र सहस्राक्ष, सुजश करता सगला॥

२७८. तए णं तस्स······ पुरत्थिमेणं········अग्गमहिसीओ
········भद्दासणेसु निसीयंति। (राय० सू० ६५६)

सोरठा

२७९. सोल सोल सहंस सार, रूप वैक्रिय करण नीं।
शक्ति तास परिवार, अग्रमहेषी नीं अखी॥

२८०. *हिवै आग्नेयी कूण सुजाण, सहस्र फुन द्वादशही।
ए तो पवर भद्रासण जाण, तिहां बैठा उमही।
बैठा उमही जी, प्रकृति शुभही, वार सहस्र अभ्यंतर परिषद ही।
ओ तो प्रवल पुरंदर पेख, तास अति कीर्त्ति कही॥

२८०. तए णं तस्स······दाहिणपुरत्थिमेणं अब्भिंतरियाए
परिसाए······देवसाहस्सीओ········भद्दासणसाहस्सीसु
निसीयंति। (राय० सू० ६६०)

२८१. दक्षिण चवद हजार, मझिम ही परिषद नां।
नैरुत कूण मझार, परिषदा बाहिर नां।
बाहिर नां जी, देवाधिप नां, सुर षट दश सहस्र अधिक सुमना।
ओ तो मणिधारी मघवान, अमर पालै अपना॥

२८१. तए णं तस्स······ दाहिणेणं मज्झिमाए परिसाए······
देवसाहस्सीओ भद्दासणसाहस्सीहिं निसीयंति
(राय० सू० ६६१)
तए णं तस्स······ ···दाहिणपच्चत्थिमेणं बाहिरियाए
परिसाए······देवसाहस्सीतो········भद्दासणसाहस्सीहिं
निसीयंति। (राय० सू० ६६२)

सोरठा

२८२. दक्षिण दिशि में देख, चउद सहस्र भद्रासणे।
त्यां बैठा सुविशेख, मज्झिम परिषद नां सुरा॥
२८३. नेरुत कूण मझार, सोल सहस्र भद्रासणे।
त्यां बैठा सुविचार, बाहिर परिषद नां सुरा॥

२८४. *पश्चिम दिशि में पेख, सप्त शोभंज अति।
भद्रासण सुविशेख, तिहां अनिकाधिपति।
अनिकाधिपति जी, तसु सखर द्युति, वर परम पीत देवाधिप थी।
ओ तो वज्रपाणि विबुधेश, तास सिर अधिक रती॥

२८४. तए णं तस्स········पच्चत्थिमेणं सत्त अणियाहिवयणो
सत्तहिं भद्दासणेहिं णिसीयंति
(राय० सू० ६६३)

२८५. फुन चिहुं दिश रै मांय, आत्मरक्षक मिणिया।
इक-इक दिश में सहंस चोरासी सुर गिणिया।
सुर गिणिया जी, सूत्रे भणिया, कर विविध आयुध जोधा बणिया।
ओ तो अपछरपति अमरेश, पुव्व जिन वच सुणिया॥

२८५. तए णं तस्स······चउद्दिसिं·······आयरक्ख-देव-
साहस्सीओ भद्दासणसाहस्सीहिं णिसीयंति
(राय० सू० ६६४)

---

* लय : म्है तो जास्यां जास्यां वंदन वीर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरठा

२८६. पूरव दिश रै मांय, भद्रासण शोभै भला।
सहंस चउरासी ताय, इम दक्षिण पश्चिम उत्तर॥

२८६. पुरत्थिमिल्लेणं······ साहस्सीओ, दाहिणेणं······· साहस्सीओ, पच्चत्थिमेणं साहस्सीओ, उत्तरेणं······ साहस्सीओ,
(राय० सू० ६६४)

२८७. आतमरक्षक अभिराम, ते भद्रासण नैं विषे।
चिहूं दिश मांहे ताम, बैठा शोभ रहा तदा॥

२८७. ते णं आयरक्खा सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवया
(राय० सू० ६६४)

२८८. *ते सुर आतमरक्ष, सन्नद्ध बद्ध कवच भला।
बगतर पहिरचा सार, झलकता अधिक झिला॥
अधिक झिला जी, दीसै उजला, अंगरक्षक काज अमर अमला।
ओ तो जशधारी सुरनाथ, तास वस है कमला॥

२८९. बांध्या गाढा करी, शरासण तीर तणां।
तरकश पट्टिका तेण, तिहां शर अतिहि घणां।
अतिहि घणां जी, सुरवर सुमणां, पहिरचा फुन ग्रीवा आभरणां।
ए तो आतमरक्षक देव, शक्र किंकर नमणां॥

२८९. उप्पीलियसरासणपट्टिया पिणद्ध-गेविज्जा
(राय० सू० ६६४)
उत्पीडितशरासनपट्टिका: पिनद्धग्रैवेया:—पिनद्ध-ग्रैवेयकाभरणा:
(राय० वृ० प० २७०)

२९०. आरोप्या शिर विषे, विमल चिह्न-पट्ट वारू।
छोगा विशेष एह, चमकता अति चारू।
अति चारू जी, सुरहित कारू आयुध प्रहरण ग्रह्या सारू।
ए तो आतमरक्षक देव, अधिप आज्ञाकारू॥

२९०. आविद्ध-विमल-वरचिंधपट्टा गहियाउहपहरणा
(राय० सू० ६६४)

२९१. आदि मध्य अवसान, विषे सुरवर नमता।
एहिज तीनूं स्थान, संधि छै अति जमता।
अति जमता जी, मन में गमता, देवाधिप नां अरि नैं दमता।
ए तो आतम रक्षक देव, शक्र आणा रमता॥

२९१. ति-णयाणि ति-संधीणि (राय० सू० ६६४)
त्रिनतानि आदिमध्यावसानेषु नमनभावात् त्रिसन्धीनि आदिमध्यावसानेषु संधिभावात्
(राय० वृ० प० २७०)

२९२. वज्र रत्न रै मांय, कोटि ते अग्र अणी।
एहवा धनुष उदार, ग्रहीं तसुं शक्ति घणी।
शक्ति घणी जी, सूत्रे पभणी, शर-वृंद तिहां सम्पूर्ण थुणी।
ए तो आतम रक्षक देव, सेव सहस्राक्ष तणी॥

२९२. वयरामयकोडीणि धणूइं पगिज्झ परियाइय-कंडकलावा (राय० सू० ६६४)

२९३. केयक सुर नैं हाथ, नील वर्णज ग्रह्या।
शर नां वृंद कलाप, नील-पाणीज कह्या।
पाणीज कह्या जी, अतिही उमह्या, इम पीत रक्त पाणीज लह्या।
ए तो आतम रक्षक देव, सुराधिप आण रह्या॥

२९३. णीलपाणिणो पीतपाणिणो रत्तपाणिणो
(राय० सू० ६६४)

२९४. धनुष हाथ छै जास, चाप-पाणी कहियै।
चारू-पाणी केय, चारु प्रहरण लहियै।
प्रहरण लहियै जी, अति हर्ष हियै, के चर्मपाणीज चर्म गहियै।
ए तो आतम रक्षक देव, अधिप आणा रहियै॥

२९४. चावपाणिणो चारुपाणिणो चम्मपाणिणो
(राय० सू० ६६४)
चारु:—प्रहरणविशेष: पाणौ येषां ते चारुपाणय:
(राय० वृ० प० २७०)

सोरठा

२९५. अंगुष्ठ अंगुली सोय, तसु आच्छादन चर्म ते।
जेह तणै कर जोय, चर्म-पाणी कहियै तसु॥

२९५. चर्म अंगुष्ठांगुल्योराच्छादनरूपं येषां ते चर्मपाणय:
(राय० वृ० प० २७०)

* लय: म्हे तो जास्यां जास्यां वंदन वीर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९६. *दंड-पाणि इम देख, खड्ग-पाणी देवा।
पाश-पाणि पिण एम, रज्जु नीं ए केवा।
ए केवा जी कांइ अधिकेवा, सुर सामर्थीम सेवग जेवा।
ए तो आतम रक्षक देव, सुराधिप नीं सेवा॥

२९७. नील पीत फुन रक्त, चाप चारू जाणी।
चर्म दंड नैं खड्ग, पाश धारक माणी॥
धारक माणी जी, इक चित आणी, आतमरख भाव प्रतै ठाणी।
ए तो आतमरक्षक देव, शक्र नां पहिछाणी॥

२९८. निज स्वामी प्रति जेह, गोपवी नैं रहिया।
वींटी बैठा तेह, गुप्त पालक कहिया।
पालक कहिया जी, चित गहगहिया,
जिम पालि तेम चिहुं दिश रहिया।
ए तो आतमरक्षक देव, सेव तत्पर वहिया॥

२९९. सेवग नां गुण करि जुक्त जुत्ता कहियै।
विचै आंतरा रहित, पालि जेहनी लहियै।
जेहनी लहियै जी, अति हरष हियै,
तसु युक्तपालिका उच्चरियै।
ए तो आतमरक्षक देव, शक्र आणा वहियै॥

३००. प्रत्येक-प्रत्येक पेख, समय आचार भणी।
आचरवै कर लेख, विनय करवैज थुणी।
करवैज थुणी जी, तसु कीर्त्त घणी, किंकर नीं पर तिष्ठैज गुणी।
ए तो आतमरक्षक देव, सबल तस शक्र धणी॥

सुधर्मा सभा नैं विषे पूर्व द्वारे प्रवेश करीनैं जिहां मणिपीठिका छै तिहां आवै अनैं देखै छतै जिन दाढा नैं प्रणाम करै करीनैं जिहां माणवक चैत्य स्तंभ, जिहां वज्रमय गोल वृत्त डाबडा, तिहां आवी नैं डाबडा प्रतै ग्रहै, ग्रही नैं उघाड़ै, उघाडी नैं लोमहस्त पूंजणी करिकै पूंजी नैं, उदक धारा करिकै सींची नैं, गोशीर्ष चंदने करी लीपै, तिवार पछै प्रधान गंध माल्य करिकै अर्चै, धूप देवै, तदनंतर वली वज्रमय गोल डाबडा नैं विषै प्रक्षेपै, निक्षेपी नैं तेहनैं विषे पुष्प, गंध, माल्य, वस्त्र, आभरण आरोपै। तिवार पछै लोमहस्त करिकै माणवक चैत्य स्तंभ पूंजी नैं, उदक धारा करिकै सींची नैं, चंदन-चर्चा पुष्पादि आरोपै—चढावै अनैं धूपदान करै, करीनैं जिहां देव-सिंहासन प्रदेश छै तिहां आवी नैं मणिपीठिका अनैं सिंहासन नैं लोमहस्त करिकै प्रमार्जनादि रूप पूर्ववत् अर्चनिका करै, करीनैं जिहां मणिपीठिका अनैं जिहां देव-सेज्या तिहां आवी नैं मणिपीठिका अनैं देवसेज्या नीं द्वारवत अर्चनिका करै। तिवार पछै पूर्वे कही तिण प्रकार करिकैहीज क्षुल्लक इंद्रध्वज विषे पूजा करै। तिवार पछै जे जिहां चोप्पालक नाम प्रहरण कोश तिहां आवी नैं लोमहस्त करिकै परिघ रत्न प्रमुख प्रहरण रत्न प्रतै पूंजै, पूंजी नैं उदक धारा करिकै सींचै, चंदन-चर्चा पुष्पादि-आरोपण धूप-दान करै।

तिवार पछै सुधर्मा सभा नैं बहु मध्य देश भागे अर्चनिका पूर्ववत् करै, करीनैं सुधर्मा सभा नैं दक्षिण द्वारे करी आवी नैं तेहनीं अर्चनिका पूर्ववत् करै। तिवार पछै दक्षिण द्वार करिकै नीकलै। इहां थकी आगै जिमहिज सिद्धायतन थकी नीकलतो दक्षिण द्वारादिक दक्षिण नंदा पुष्करणी पर्यवसान पुनरपि प्रवेश

२९६. दंडपाणिणो खग्गपाणिणो पासपाणिणो
(राय० सू० ६६४)

२९७. नीलपीय-रत्त-चाव-चारु-चम्म-दंड-खग्ग-पासधरा आयरक्खा (राय० सू० ६६४)

२९८. रक्खोवगा गुत्ता गुत्तपालिया (राय० सू० ६६४)

२९९. जुत्ता जुत्तपालिया (राय० सू० ६६४)
युक्ताः—सेवकगुणोपेततया उचितास्तथा युक्ताः परस्परासंबद्धा न तु बृहदन्तरा पालिर्येषां ते युक्तपालिकाः (राय० वृ० प० २७०)

३००. पत्तेयं-पत्तेयं समयओ विणयओ किंकरभूया इव चिट्ठंति (राय० सू० ६६४)

सभायां सुधर्मायां पूर्वद्वारेण प्रविशति, प्रविश्य यत्रैव मणिपीठिका तत्राऽऽगच्छति आलोके च जिनसक्थां प्रणामं करोति, कृत्वा यत्र माणवकचैत्यस्तम्भो यत्र वज्रमयाः गोलवृत्ताः समुद्गकाः तत्रागत्य समुद्गकान् गृह्णाति, गृहीत्वा विघाटयति विघाट्य च लोमहस्तकं परामृश्य तेन प्रमार्ज्य उदकधारया अभ्युक्ष्य गोशीर्षचन्दनेनानुलिम्पति, ततः प्रधानैर्गन्धमाल्यैरर्चयति धूपं दहति, तदनन्तरं भूयोऽपि वज्रमयेषु गोलवृत्तसमुद्गेषु प्रतिनिक्षिपति, प्रतिनिक्षिप्य तेषु पुष्पगन्धमाल्यवस्त्राभरणानि चारोपयति, ततो लोमहस्तकेन माणवकचैत्यस्तम्भं प्रमार्ज्य उदकधारयाऽभ्युक्षणचन्दनचर्चापुष्पाद्यारोपणं धूपदानं च करोति, कृत्वा च सिंहासनप्रदेशमागत्य मणिपीठिकायाः सिंहासनस्य च लोमहस्तकेन प्रमार्जनादिरूपां पूर्ववदर्चनिकां करोति, कृत्वा यत्र मणिपीठिका यत्र च देवशयनीयं तत्रोपागत्य मणिपीठिकाया देवशयनीयस्य च द्वारवदर्चनिकां करोति, तत उक्तप्रकारेणैव क्षुल्लकेन्द्रध्वजे पूजा करोति, ततो यत्र चोप्पालको नाम प्रहरणकोशस्तत्र समागत्य लोमहस्तकेन परिघरत्नप्रमुखाणि प्रहरणरत्नानि प्रमार्जयति प्रमार्ज्य उदकधारयाऽभ्युक्षणं चन्दनचर्चाम् पुष्पाद्यारोपणं धूपदानं च करोति।

* लय : म्है तो जास्यां जास्यां वंदन वीर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थकी उत्तर नंदा पुष्करणीआदिक उत्तर द्वारांत। तिवार पछै द्वितीय वार नीकलतो छतो पूर्व द्वारादिक पूर्व नंदा-पुष्करणी पर्यवसान अर्चनिका नीं वक्तव्यता तिकाहीज वक्तव्यता सुधर्मा सभा नें विषे, पिण ऊणी अधिकी न कहिवी। तिवार पछै पूर्व नंदा पुष्करणी नीं अर्चनिका करीनैं उपपात सभा नें विषे पूर्व द्वार करिकै प्रवेश करै। प्रवेश करीनें मणिपीठिका अनें देव-सेज्या नीं तदनंतर बहु मध्य देश भागे पूर्ववत अर्चनिका करै। तिवार पछै दक्षिण द्वारे आवी नें तेहनीं अर्चनिका करै। तिवार पछै कहै छै—

अठा थी आगै इहां पिण सिद्धायतनवत दक्षिण द्वारादिक पूर्व नंदा पुष्करणी पर्यवसान अर्चनिका कहिवी। तिवार पछै पूर्व नंदा पुष्करणी थकी नीकली नें द्रह नें विषे आवी नें पूर्ववत तोरणादिक नीं अर्चनिका करै, करीनैं पूर्व द्वारे करि अभिषेक सभा नें विषे प्रवेश करै। प्रवेश करीनैं मणिपीठिका अनैं सिंहासन नी वली अभिषेक भांड नी अनैं बहु मध्य देश भाग नीं पूर्ववत अर्चनिका अनुक्रम करिकै करै। तिवारैं पछै इहां पिण सिद्धायतनवत दक्षिण द्वारादिक पूर्व नंदा पुष्करणी पर्यवसान अर्चनिका कहिवी। तिवार पछै पूर्व नंदा पुष्करणी थकी पूर्व द्वार करीनैं अलंकारिक सभा प्रति प्रवेश करीनैं मणिपीठिका अनैं सिंहासन नीं वली अलंकारिक भांड नीं अनैं बहु मध्य देश भाग नीं अनुक्रम करिकै पूर्ववत् अर्चनिका करै। तिवार पछै इहां पिण अनुक्रम करी सिद्धायतनवत दक्षिण द्वारादिक पूर्व नंदा पुष्करणी पर्यवसान अर्चनिका कहिवी।

तिवार पछै पूर्व नंदा पुष्करणी थकी पूर्व द्वार करी व्यवसाय सभा प्रति प्रवेश करै। प्रवेश करीनें पुस्तक रत्न प्रतैं लोमहस्त करिकै पूंजीनें उदक धारा करिकै सींची नें चंदने करी चर्ची नें वर गंध माल्य करी अर्ची नैं पुष्पादि-आरोपण अनें धूप-दान करै। तदनंतर मणिपीठिका नीं अनें सिंहासन नीं अनें बहु मध्य देश भाग नीं अनुक्रम करिकै अर्चनिका करै। तदनंतर तिहां पिण सिद्धाय-तनवत दक्षिण द्वारादिक पूर्व नंदा पुष्करणी पर्यवसान अर्चनिका कहिवी।

तिवार पछी पूर्व नंदा पुष्करणी थकी वलिपीठ विषे आवी नें बहु मध्य देश-भागवत अर्चनिका करै, करीनें आभियोगिक देवता प्रति बोलावी नें कहै— खिप्पामेव इत्यादिक सुगम। जिहां लगे आभियोगिक देवता शक्र सुरेंद्र कह्यो तिम सुधर्मावतंसक विमान नै विषे सर्व स्थानक पूजी नें आज्ञा पाछी सूंपै। णवरं इहां शृंघाटकादिक शब्द नो वृत्तिकार जूओ-जूओ अर्थ कियो छै।

तिवार पछै शक्र वलि-पीठे वलि-विसर्जन करै, पूजतां जे वाना ऊगरया, ते वलि-पीठ नें विषे स्थापे। तिवार पछै ईशाण कूणे नंदा पुष्करणी प्रति प्रदक्षिणा देइ पूर्व तोरणे करी नंदा पोखरणी में पैसी हाथ पग पखाली नंदा पुष्करणी थी नीकली सामानिकादि परिवार सहित सर्व ऋद्धि करिकै यावत दुंदुभि नां निर्घोष नाद शब्दे करी सुधर्मावतंसक विमान नें मध्योमध्य थइ सुधर्मा सभा तिहां आवी ते सभा नें पूर्व द्वारे करी प्रवेश करै। मणिपीठिका नें ऊपर सिंहासन नें विषे पूर्व साम्हो मुख करी बेसै। तिवार पछै पूर्वे कह्यो तिण प्रकार करि सिंहासन नें विदिस पूर्वादि दिशे सामानिकादिक बेसै।

'ए वृत्ति थी वारता लिखी तिणमें सुधर्मा सभा नें तीन दिशे द्वार मुख मंडपादिक पूज्या कह्या अनें घणी परतां में सुधर्मा सभा नें त्रिहुं दिशे द्वार मुख मंडपादिक पूजवा नो पाठ नथी कह्यो। ते ए वाचना भेद दीसैं छै। वलि सुधर्मा सभा थी उपपात सभा नें विषे आवी मणिपीठिका, देवसेज्या, बहु मध्य देश भाग नीं पूजा वृत्ति में तो कही अनैं घणी परतां में ए पाठ दीसतो नथी। ए पिण

ततः सभायाः सुधर्माया बहुमध्यदेशभागेऽर्चनिकां पूर्ववत् करोति, कृत्वा सुधर्मायाः सभाया दक्षिणद्वारे समागत्य तस्य अर्चनिकां पूर्ववत् कुरुते, ततो दक्षिण-द्वारेण विनिर्गच्छति, इत ऊर्ध्वं यथैव सिद्धायतना-न्निष्क्रामतो दक्षिणद्वारादिका दक्षिणनन्दापुष्करिणी-पर्यवसाना पुनरपि प्रविशतः उत्तरनन्दापुष्करिण्या-दिका उत्तरद्वारान्ता ततो द्वितीयद्वारान्निष्क्रामतः पूर्वद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्करिणीपर्यवसाना अर्चनिका-वक्तव्यता सैव सुधर्मायां सभायामप्यन्यूनातिरिक्ता वक्तव्या, ततः पूर्वनन्दापुष्करिण्या अर्चनिकां कृत्वा उपपातसभां पूर्वद्वारेण प्रविशति, प्रविश्य च मणि-पीठिकाया देवशयनीयस्य तदनन्तरं बहुमध्यदेशभागे प्राग्वदर्चनिकां विदधाति, ततो दक्षिणद्वारे समागत्य तस्यार्चनिकां कुरुते।

अत ऊर्ध्वमत्रापि सिद्धायतनवत् दक्षिणद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्करिणीपर्यवसानाऽर्चनिका वक्तव्या, ततः पूर्वनन्दापुष्करिणीतोऽपक्रम्य ह्रदे समागत्य पूर्ववत् तोरणार्चनिकां करोति, कृत्वा पूर्वद्वारेणाभिषेकसभां प्रविशति, प्रविश्य मणिपीठिकायाः सिंहासनस्या-भिषेकभाण्डस्य बहुमध्यदेशभागस्य च क्रमेण पूर्ववदर्च-निकां करोति, ततोऽत्रापि सिद्धायतनवत् दक्षिणद्वारा-दिका पूर्वनन्दापुष्करिणीपर्यवसाना अर्चनिका वक्तव्या ततः पूर्वनन्दापुष्करिणीतः पूर्वद्वारेणालङ्कारिकसभां प्रविशति, प्रविश्य मणिपीठिकायाः सिंहासनस्य अलंकारभाण्डस्य बहुमध्यदेशभागस्य च क्रमेण पूर्व-वदर्चनिकां करोति, तत्रापि क्रमेण सिद्धायतनवत् दक्षिणद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्करिणीपर्यवसाना अर्चनिका वक्तव्या।

ततः पूर्वनन्दापुष्करिणीतः पूर्वद्वारेण व्यवसायसभां प्रविशति, प्रविश्य पुस्तकरत्नं लोमहस्तकेन प्रमृज्य उदकधारया अभ्युक्ष्य चन्दनेन चर्चयित्वा वरगन्ध-माल्यैरर्चयित्वा पुष्पाद्यारोपणं धूपदानं च करोति, तदनन्तरं मणिपीठिकायाः सिंहासनस्य बहुमध्यदेश-भागस्य च क्रमेण पूर्ववदर्चनिकां करोति, तदनन्तर-मत्रापि सिद्धायतनवत् दक्षिणद्वारादिका पूर्वनन्दा-पुष्करिणीपर्यवसाना अर्चनिका वक्तव्या, ततः पूर्वनन्दा-पुष्करिणीतो बलिपीठे समागत्य तस्य बहुमध्यदेश-भागवत् अर्चनिकां करोति, कृत्वा च आभियोगिक-देवान् शब्दापयति, शब्दापयित्वा एवमवादीत् 'खिप्पामेव' इत्यादि सुगमं यावत् 'तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति'।

ततः शक्रेन्द्रः बलिपीठे बलिविसर्जनं करोति, कृत्वा चोत्तरपूर्वां नन्दापुष्करिणीमनुप्रदक्षिणीकुर्वन् पूर्वतोरणे-नानुप्रविशति, अनुप्रविश्य च हस्तौ पादौ प्रक्षालयति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाचना भेद दीसैं छै। अनैं वृत्तिकार सुधर्मा सभा नैं त्रिहुं दिशे द्वार मुख मंडपादिक नीं पूजा कही अनैं उपपात सभा नैं विषे पिण मणिपीठिका, देव सेज्या नैं बहु मध्य देश भाग नीं पूजा इत्यादिक वारता कही ते किणही वाचना में देखी दीसैं छै। तिण अनुसारे कही जणाय छै। ते बात मिलती संभवै। वली शक्रे पूजा करी बलिपीठिका नैं विषे बलि विसर्जन कियो, घणी परतां में तो एहवुं कह्यु अनैं वृत्तिकार आभियोगिक देवता सुधर्मावतंसक विमान नी पूजा करी तठा पछै बलि पीठिका नैं विषे बलि विसर्जन कियो कह्यो, ए पिण वाचना भेद हुवै तो ते पिण केवली जाणै।' [ज० स०]

३०१. *एहवो शक्र तणो परिवार, तिणरा पुन्य तणो नहि पार।
स्थित दोय सागर नीं हुंत, वलि गोयम प्रश्न करंत।।

३०२. प्रभु ! शक्र सुरिंद्र सुरराय, केहवो महाऋद्धिवान कहाय।
जाव केहवो महा ईश्वर सुखवंत ? हिवै वीर कहै सुण संत।।
३०३. शक्र सुरिंद्र महाऋद्धिवान, जाव महाईस्वर सुविधान।
तिणरै बतीस लाख विमाण, सहंस चउरासी सामानिक जान।।
३०४. तावत्तीसग तेतीस, आठ अग्रमहिषी जगीस।
जाव अन्य बहु सुर सुरी जेह, तसु अधिपतिपणैं विचरेह।।

३०५. एहवो शक्र महाऋद्धिवान, जाव महाईस्वरवंत जान।
सेवं भंते ! सेवं भंते ! प्रभु तहत्ति वचन तुम तंत।।

३०६. शतक दशमा नों सोय, ओ तो छट्ठो उद्देशो जोय।
अर्थ थकी आख्यात, बहु अन्तर ढाल साख्यात।।
३०७. ढाल बेसौ चउवीसमीं ताह्यो, भिक्षु भारीमाल ऋषिरायो।
सुख संपति तास पसायो, हद 'जय-जश' हरष सवायो।।

दशमशते षष्ठोद्देशकार्थः।।१०।६।।

दूहा

३०८. षष्ठमुदेशे सुधर्मा सभा कही सुखकार।
ते आश्रय तिण कारणें, हिव आश्रय अधिकार।।
३०९. अन्तरद्वीपा मेरु थी, उत्तर दिशि वृत्ति मांय।
सिखरी गिरि दाढा लवण-दधि अंतर कहिवाय।।
३१० कह्यो धर्मसी इहविधे, लवणोदधि जल मांय।
अंतर छै तिण कारणैं, अंतरद्वीप कहाय।।
३११. प्रभु ! उत्तर नां मनुष्य नों, एकोरुक अभिधान।
तास द्वीप पिण एगुरुक, किहां कह्यो भगवान ?
३१२. इम जिम जीवाभिगम में, तिमज सर्व सुविशेष।
जाव शुद्धदंत द्वीप लग, ए अठबीस उद्देश।।

प्रक्षाल्य नन्दापुष्करिण्याः प्रत्यवतीर्य सामानिकादिपरिवारसहितः सर्वर्द्ध्या यावद् दुन्दुभिनिर्घोषनादितरवेण सूर्याभविमाने मध्यंमध्येन समागच्छन् यत्र सुधर्मा सभा तत्रागत्य तां पूर्वद्वारेण प्रविशति, प्रविश्य मणिपीठिकाया उपरि सिंहासने पूर्वाभिमुखो निषीदति।
[१४०] ततः (पृ० १०२ पं० ३] प्रागुपदर्शितसिंहासनक्रमेण १ सामानिकादय उपविशन्ति।
(वृ० प० २६४-२६९)

३०१. ……णं भंते ! ……केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! ……ठिई पण्णत्ता।
(राय० सू० ६६५)

३०२,३०३. सक्के णं भंते ! देविंदे देवराया केमहिड्ढिए जाव केमहासोक्खे ? गोयमा ! महिड्ढिए जाव महासोक्खे। से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साणं जाव

३०४. तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं जाव अन्नेसिं च बहूणं जाव देवाणं देवीण य आहेवच्चं जाव कारेमाणे पालेमाणे त्ति।
(वृ० प० ५०७)

३०५. एमहिड्ढिए जाव एमहासोक्खे सक्के देविंदे देवराया। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति
(श० १०।१००,१०१)

३०६. दशमशते षष्ठोद्देशकः (वृ० प० ५०७)

३०८,३०९. षष्ठोद्देशके सुधर्म्मसभोक्ता, सा चाश्रय इत्याश्रयाधिकारादाश्रयविशेषानन्तरद्वीपाभिधानान् मेरोरुत्तरदिग्वर्त्तिशिखरिपर्वतदंष्ट्रागतान् लवणसमुद्रान्तर्वर्त्तिनः। (वृ० प० ५०७)

३११. कहि णं भंते ! उत्तरिल्लाणं एगूरुयमणुस्साणं एगूरुयदीवे नामं दीवे पण्णत्ते ?
३१२. एवं जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं जाव सुद्धदंतदीवो त्ति एए अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा।
(श० १०।१०२)

*लय : सुण चरिताली थारा लक्षण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३१३. दक्षिण दिशि नां दाखिया, पूरव अंतरद्वीप।
तिण अनुसारे जाणवा, सेवं भंत ! समीप ।।
३१४. दशमा शतक तणां कह्या, च्यार तीस उद्देश।
दशमो शतक कह्यो हिवै, एकादशम कहेस ।।

दशमशते सप्तमोद्देशकादारभ्य चतुस्त्रिंशत्तमोद्देशकार्थः ।।१०।७-३४।।

३१३. पूर्वोक्तदाक्षिणात्यान्तरद्वीप-वक्तव्यताऽनु-सारेणावग-न्तव्यः । (वृ० प० ५०८)
३१४. दशमशते चतुस्त्रिंशत्तम उद्देशकः समाप्तः (वृ० प० ५०८)

गीतक छंद

१. इह रीत गुरु जन सीख अरु प्रभु पार्श्वनाथ प्रसादमय,
सुविस्तृत द्वय पंख नो सामर्थ्य पा थइ नै अभय।
२. शतक दशम विचाररूपज भूधराग्र चढ्यो सही।
शकुनि-शिशु निभ तुच्छ ज्ञानज तनु छतो पिण हूं वही ।।

१,२. इति गुरुजनशिक्षापार्श्वनाथप्रसाद-
प्रसृततरपतत्रद्वन्द्वसामर्थ्यमाप्य ।
दशमशतविचारक्ष्माधराग्र्येऽधिरूढः,
शकुनिशिशुरिवाहं तुच्छबोधांगकोऽपि ।। (वृ० प० ५०८)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एकादश शतक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एकादश शतक

ढाल : २२५

दूहा

१. छेहड़ै दशमां शतक रै, अंतरद्वीपा ख्यात।
वनस्पति बहु छै तिहां, तेहथी हिव अवदात॥
२. इहां वनस्पति प्रमुख जे, घणां पदार्थ कहिवाय।
द्वादश उद्देशा तसु, एकादशमां मांय॥
३. उत्पल अर्थ प्रथम कह्यो, द्वितीय उत्पल-कंद।
पलास-केसु नो तृतीय, कुंभी वणस्सइ मंद॥

१,२. अनन्तरशतस्यान्तेऽन्तरद्वीपा उक्तास्ते च वनस्पति-बहुला इति वनस्पतिविशेषप्रभृतिपदार्थस्वरूपप्रतिपादनार्थैकादशं शतं भवति। (वृ०प० ५०८)

३. उप्पल सालु पलासे कुंभी
'उप्पले' त्यादि उत्पलार्थः प्रथमोद्देशकः 'सालु' ति शालूकं—उत्पलकन्दस्तदर्थो द्वितीयः 'पलासे' त्ति पलाशः—किंशुकस्तदर्थस्तृतीयः 'कुंभी' ति वनस्पति-विशेषस्तदर्थश्चतुर्थः। (वृ० प० ५११)

४. नाडी सदृश फल तसु, वनस्पति नाडीक।
पद्म करणिका नै नलिण, तसु अधिकार सधीक॥

४. नालि य पउम कण्णी य नलिण
नाडीवद्यस्य फलानि स नाडीको—वनस्पतिविशेष एव तदर्थः पञ्चमः। (वृ०प० ५११)

५. यद्यपि पद्मोत्पल नलिण, नाम कोश एकार्थ।
तो पिण रूढि थकी इहां, जुदा-जुदा तत्त्वार्थ॥
६. शिव नामा ते राजऋषि, दशम लोक अधिकार।
एकादशमुद्देशके, कह्यो काल विस्तार॥

५. यद्यपि चोत्पलपद्मनलिनानां नामकोशे एकार्थतोच्यते तथाऽपीह रूढेर्विशेषोऽवसेयः। (वृ०प० ५११)

६. सिव लोग काल
'सिव' त्ति शिवराजर्षिवक्तव्यतार्थो नवमः। 'लोग' त्ति लोकार्थो दशमः,…कालार्थ एकादशः। (वृ०प० ५११)

७. आलभिका नगरी विषे, अर्थ परूप्या स्वाम।
ते उद्देशो बारमो, आलंभिका तसु नाम॥

७. आलभिय दस दो य एक्कारे॥
आलभिकायां नगर्यां यत्प्ररूपितं तत्प्रतिपादक उद्देशको ऽप्यालभिक इत्युच्यते ततोऽसौ द्वादशः। (वृ० प० ५११)

८. प्रथम उद्देशक द्वार नीं, संग्रह गाथा जेह।
वाचनांतर[1] देखनैं, आगल लिखियै एह॥
९. तिण काले नैं तिण समय, नगर राजगृह नाम।
यावत गोतम वीर नैं, प्रश्न करै गुणधाम॥
१०. *हे प्रभु! उत्पल पेख, एक पत्रे जीव स्यूं एक।
अथवा है जीव अनेक? जिन कहै जीव इक लेख॥

८. तत्र प्रथमोद्देशकद्वारसंग्रहगाथा वाचनान्तरे दृष्टास्ता-श्चेमाः। (वृ०प० ५११)
९. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी—
१०. उप्पले णं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे? अणगजीवे?
गोयमा! एगजीवे

---

१. अतोऽग्रे प्रथमोद्देशकद्वारसंग्रहगाथा लभ्यन्ते, ताश्च इमा—
उववाओ परिमाणं, अवहारुच्चत्त बंध वेदे य।
उदए उदीरणाए, लेसा दिट्ठी य नाणे य॥
जोगुवओगे वण्ण, रसमाई ऊसासगे य आहारे।
विरई किरिया बंधे, सन्न कसायित्थि बंधे य॥
सन्निंदिय अणुबंधे, संवेहाहार ठिइ समुग्घाए।
चयणं मूलादीसु य, उववाओ सव्वजीवाणं॥ (वृपा)

* लय : बिना रा भाव सुण-सुण गूंजे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. ए किसलय नव अंकूर, ते अवस्था थी ऊपर भूर।
किसलय सूओ[1] तो छै अनंतकाय, सूआ पछै एक पत्र थाय ।।
१२. एक पत्रपणां थी विशेष, एक जीव पिण नहिं छै अनेक।
उत्पल शब्दे ताय, नीलोत्पलादि कहाय ।।
१३. एक पत्र थकी उपरंत, शेष पत्रादि विषे कहंत ।।
तिणमें एक जीव नहिं हुंत, तिहां जीव घणां उपजंत ।।

वा०—'तेण परं' ते प्रथम पत्र थकी पछै 'जे अन्ने जीवा उववज्जंति' जे अनेरा घणां जीव ऊपजै, अनेक जीव नां आश्रयपणां थकी पत्रादि अवयव कहियै। ते एक जीव नहीं, एक जीव नैं आश्रयी नहीं, किंतु अनेक जीव छै। अथवा 'तेण इत्यादि' ते एक पत्र थी पछै शेष पत्रादिक नें विषे जे अनेरा जीव ऊपजै ते एक जीव नहीं, अनैं एक नें विषे ऊपजै पिण नहीं, किंतु अनेक जीव छै, अनैंक नैं विषे ऊपजै छै। इहां ए भावार्थ—एक पान थकी शेष पत्र आदि नैं विषे अनेक जीव छै तेहनें विषे अनेक जीव ऊपजै छै।

उपपात द्वार (१)

१४. हे भगवंत ! ते जीवा, किहां थकी ऊपजै अतीवा।
स्यूं नरक थकी उपजंत, तिरि मनुष्य देव थी हुंत ?

१५. जिन भाखै उत्पल मांय, नरक थकी ऊपजै नांय।
तिरि मनुष्य देव थी जाण, उत्पल में ऊपजै आण ।।

१६. पद छठे पनवणा मांय, ऊपजवो तिम कहिवाय।
जाव ईशान नां देव, उत्पल में ऊपजै भेव ।।

परिमाण द्वार (२)

१७. जीव तिके भगवंत ! एक समय किता उपजंत ?
जिन कहै जघन्य एक दोय, तीन ऊपजै छै अवलोय ।।
१८. उत्कृष्टा संख्याता हुंत, तथा असंख्याता उपजंत।
ए परिमाण द्वार कह्यो बीजो, अपहरण द्वार हिव तीजो ।।

अपहरण द्वार (३)

१९. प्रभु ! समय-समय प्रति जेह, अपहरतां काढतां तेह।
अपहरियै केतलै काल ? इम गोयम प्रश्न विशाल ।।
२०. जिन कहै असंख्याता जंत, ते समय-समय अपहरंत।
असंख अव-उत्सर्पिणी ताय, निश्चै अपहरिया नहिं जाय ।।

उच्चत्व द्वार (४)

२१. तनु अवगाहना प्रभु ! केती ? जघन्य आंगुल असंख भाग एती।
उत्कृष्टी हुवै घणेरी, इक सहस्र योजन जाझेरी ।।

११. एकपत्रकं चेह किशलयावस्थाया उपरि द्रष्टव्यम् ।
(वृ०प० ५११)

१२. नो अणेगजीवे ।
'उत्पलं' नीलोत्पलादि । (वृ०प० ५११)

१३. तेण परं जे अण्णे जीवा उववज्जंति ते णं नो एग-जीवा । अणेगजीवा (श० ११।१)
यदा तु द्वितीयादि पत्रं तेन समारब्धं भवति तदा नैक-पत्रावस्था तस्येति बहवो जीवास्तत्रोत्पद्यन्त इति
(वृ० प० ५१२)

वा०—'तेण परं' ति ततः—प्रथमपत्रात् परतः 'जे अन्ने जीवा उववज्जंति' त्ति येऽन्ये—प्रथमपत्रव्यतिरिक्ता जीवा जीवाश्रयत्वात् पत्रादयोऽवयवा उत्पद्यन्ते ते 'नैकजीवाः' नैकजीवाश्रयाः किन्त्वनेकजीवाश्रया इति ।
अथवा 'तेणे' त्यादि, ततः—एकपत्रात्परतः शेषपत्रा-दिष्विस्यर्थः येऽन्ये जीवा उत्पद्यन्ते ते 'नैकजीवा' नैकका: किन्त्वनेकजीवा अनेके इत्यर्थः । (वृ०प० ५१२)

१४. ते णं भंते ! जीवा कतोहिंतो उववज्जंति—किं नेर-इएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएहिंतो उवव-ज्जंति ? मणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? देवेहिंतो उवव-ज्जंति ?

१५. गोयमा! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिए-हिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, देवेहिंतो वि उववज्जंति ।

१६. एवं उववाओ भाणियव्वो जहा वक्कंतीए (प० ६।८) वणस्सइकाइयाणं जाव ईसाणेति । (श० ११।२)
जहा वक्कंतीए' त्ति प्रज्ञापनायाः षष्ठपदे ।
(वृ०प० ५१२)

१७. ते णं भंते ! जीवा एगसमए णं केवइया उववज्जंति? गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा,

१८. उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति ।
(श० ११।३)

१९. ते णं भंते ! जीवा समए-समए अवहीरमाणा-अवहीर-माणा केवतिकालेणं अवहीरंति ?

२०. गोयमा ! ते णं असंखेज्जा समए-समए 'अवहीरमाणा-अवहीरमाणा' असंखेज्जाहिं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहिं अवहीरंति, नो चेव णं अवहिया सिया ।
(श० ११।४)

२१. तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ-भागं, उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं । (श० ११।५)

---

१. उगता हुआ अंकुर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरठा

२२. तथाविध सुविचार, दधि[1] गोतीर्थादिक विषे।
उच्चपणें अवधार, साधिक योजन सहस्र जे ।।

बंध द्वार (५)

२३. *ज्ञानावरणी कर्म नां भदंत ! बंधगा कै अबंधगा हुंत ?
जिन कहै अबंधगा नांय, बंधगे वा बंधगा वा थाय ।।

सोरठा

२४. एक पत्र अवस्थाय, बंधग इक वचने कह्यो।
द्वयादिक पत्रे पाय, बहु वचने छै बंधगा ।।

२५ *एवं जाव अंतराय संग, णवरं आयु कर्म अठ भंग।
इकसंयोगिक भंग च्यार, द्विकयोगिक चिहुं धार ।।

इकसंयोगिक भांगा च्यार

२६. एक पत्र अवस्थाए न्हाल, आखखो बांधै तिण काल।
बंधए इक वचने कहियै, ए प्रथम भंग इम लहियै ।।
२७. इक पत्र तणै अवस्थाय, आयु बंध काल विण ताय।
अबंधए इक वचनेह, भंग दूजो कह्यो छै एह ।।
२८. दोय आदि पत्र अवस्थाय, आउखा नैं बंध-काल ताय।
बंधगा बहु वचने कहाय, ए तीजो भांगो इण न्याय ।।
२९. दोय आदि पत्र अवस्थाय, आयु बंध-काल विण ताय।
अबंधगा बहु वचनेह, भंग चउथो कह्यो छै एह ।।

द्विकसंयोगिक भांगा च्यार

३०. बंधक इक वचनेह, अबंधक इक वच तेह।
बंधक इक वच जेह, अबंधगा बहु वचनेह ।।
३१. बंधगा बहु वच जेह, अबंधग इक वच एह।
बंधगा बहु वचनेह, अबंधगा बहु वच तेह ।।

वेद द्वार (३)

३२. हे भगवंत ! ते जीवा, ज्ञानावरणी कर्म नां अतीवा।
वेदक ते वेदन्त, अथवा अवेदक हुंत ?
वा०—वेदवो ते अनुक्रम उदै आया नै तथा उदीरणा करिकै उदय आण्या कर्म नो अनुभव—भोगविवूं ।
३३. जिन कहै अवेदका नांय, वेदक प्रथम पत्र अपेक्षाय।
तथा वेदगा बहु वचनेह, दोय आदि पत्र आश्री एह ।।

२२. 'साइरेगं जोयणसहस्सं' ति तथाविधसमुद्रगोतीर्थकादाविदमुच्चत्वमुत्पलस्यावसेयम् । (वृ०प० ५१२)

२३. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा ? अबंधगा ? गोयमा ! नो अबंधगा, बंधए वा, बंधगा वा । (श० ११।६)

२४. एकपत्रावस्थायां बन्धक एकत्वात् द्व्यादिपत्रावस्थायां च बन्धका बहुत्वादिति । (वृ०प० ५१२)

२५. एवं जाव अंतराइयस्स, नवरं—आउयस्स—पुच्छा । 'नवर' मित्यादि, इह बन्धकाबन्धकपदयोरेकत्वयोगे एकवचनेन द्वौ विकल्पौ बहुवचनेन च द्वौ द्विकयोगे तु यथायोगमेकत्वबहुत्वाभ्यां चत्वारः इत्येवमष्टौ विकल्पाः । (वृ०प० ५१२)

२६. बंधए वा,

२७. अबंधए वा,

२८. बंधगा वा,

२९. अबंधगा वा

३०. अहवा बंधए य अबंधए य अहवा बंधए य अबंधगा य ।

३१. अहवा बंधगा य अबंधए य अहवा बंधगा य अबंधगा य । (श० ११।७)

३२. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं वेदगा ? अवेदगा ?

वा०—वेदनं अनुक्रमोदितस्योदीरणोदीरितस्य वा कर्मणोऽनुभवः । (वृ०प० ५१२)

३३. गोयमा ! नो अवेदगा, वेदए वा, वेदगा वा ।
अत्रापि एक पत्रतायामेकवचनान्तता अन्यत्र तु बहुवचनान्तता । (वृ० प० ५१२)

---

१. समुद्र

*बिना रा भाव सुण-सुण गूंजे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४. एवं जाव कर्म अंतराय, वलि गोतम पूछै वाय।
सातावेदगा ते प्रभु ! जीवा, कै असातावेदगा कहीवा ?

३४. एवं जाव अंतराइयस्स। (श० ११।८)
ते णं भंते ! जीवा किं सायावेदगा ? असायावेदगा

३५. जिन कहै साता नें असात, वेदग वेदगा नो अवदात।
आठ भांगा पूर्ववत जाणी, साता असाता नां सुपिछाणी ।।

३५. गोयमा ! सायावेदए वा असायावेदगा वा—अट्ठ भंगा। (श० ११।९)

उदय द्वार (७)

३६. हे भगवंत ! ते जीवा, ज्ञानावरणी कर्म नां सदीवा।
उदयवंत कै अणउदयवंत ? जिन कहै अणउदय न हुंत ।।

३६. तेणं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं उदई ? अणुदई ? गोयमा ! नो अणुदई।

वा०—उदय ते अनुक्रम उदय आया नों ईज। इण हेतु थकी वेदकपणां नी परूपणा कीधे छते पिण भेद करिकै उदयपणां नो परूपवो।

वा०—उदयश्चानुक्रमोदितस्यैवेति वेदकत्वप्ररूपणेऽपि भेदेनोदयित्वप्ररूपणमिति। (वृ० प० ५१२)

३७. उदई इक वच धुर पत्र एह, तथा उदइणो बहु वच जेह।
दोय आदि पत्र अपेक्षाय, एवं जाव कर्म अंतराय ।।

३७. उदई वा, उदइणो वा। एवं जाव अंतराइयस्स।
(श० ११।१०)

उदीरणा द्वार (८)

३८. हे भगवंत ! ते जीवा, ज्ञानावरणी नां अतीवा।
उदीरणावंत कहाय, कै उदीरणावंत छै नांय ?

३८. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं उदीरगा ? अणुदीरगा ?

३९. जिन कहै अनुदीरक नांय, एतले ते उदीरक थाय।
उदीरक इक वच धुर पत्र, बहु वच उदीरगा बहु पत्र ।।

३९. गोयमा ! नो अणुदीरगा, उदीरए वा, उदीरगा वा।

४०. एवं जाव अंतराय पेख, णवरं एतलो छै विशेख।
वेदनी आयु विषे विख्यात, आठ भांगा पूर्ववत थात ।।

४०. एवं जाव अंतराइयस्स, नवरं—वेदणिज्जाउएसु अट्ठ भंगा। (श० ११।११)

४१. वेदनी कर्म साता असात, तेह अपेक्षाय अवदात।
आयु विषे वलि कहिवाय, उदीरक अनुदीरक पेक्षाय ।।

४१. वेदनीये—सातासातापेक्षया आयुषि पुनरुदीरकत्वानुदीरकत्वापेक्षयाऽष्टौ भंगाः। (वृ०प० ५१२)

इकसंजोगिया ४ भांगा

१. साता उदीरए
२. असाता उदीरए
३. साताउदीरगा
४. असाता उदीरगा

हिवै द्विकसंजोगिक ४ भांगा

५. साता उदीरए असाता उदीरए
६. साता उदीरए असाता उदीरगा
७. साता उदीरगा असाता उदीरए
८. साता उदीरगा असाता उदीरगा

एतलै सर्व मिली ८ भांगा वेदनी कर्म नां हुआ।

हिवै आउखा आश्री कहै छै—

इकसंजोगिया ४ भांगा

१. आउ उदीरए वा
२. आउ अणुदीरए वा
३. आउ उदीरगा वा
४. आउ अणुदीरगा वा

द्विकसंजोगिक ४ भांगा

५. आउ उदीरए आउ अणुदीरए
६. आउ उदीरए आउ अणुदीरगा
७. आउ उदीरगा आउ अणुदीरए
८. आउ उदीरगा आउ अणुदीरगा

ए ४ भांगा एक वचन, ए ४ भांगा बहु वचन, एवं ८।

वा०—ए आउखा नों अनुदीरकपणो किम हुवै ? आउखा नें उदीरणा करिकै उदीरवो कदाचितपणां थकी।

वा०—अनुदीरकत्वं चायुष उदीरणायाः कादाचित्कत्वादिति (वृ० प० ५१२)

लेश्या द्वार (९)

४२. उत्पल जीवा भदन्त ! स्यूं कहियै कृष्ण लेश्यावंत।
अथवा नील तथा कापोत, तथा तेजु लेश्यावंत होत ?

४२. ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेसा ? नीललेसा ? काउलेसा ? तेउलेसा ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४३. जिन कहै इकयोगिक अठ, कृष्ण लेस्से इक वच प्रगट ।।
तथा नील तथा काउ धार, तथा तेजु ए इक वच च्यार ।।

४४. तथा कृष्ण लेस्सा सुविशेषा, अथवा जाव तेजु लेस्सा ।
ए बहु वच भंग चिहुं दीस, हिवै द्विकयोगिक चउवीस ।।

४५. त्रिकयोगिक भंग बत्तीस, चउक्कयोगिक सोल कहीस ।
इम असी भांगा अवलोय, तिके कहिवा विचारी जोय ।।

इकसंजोगिया भांगा ८ ए च्यार भांगा एक वचन		
१	कृ.	१
२	नी.	१
३	का.	१
४	ते.	१
ए च्यार भांगा बहुवचन		
५	कृ.	३
६	नी.	३
७	का.	३
८	ते.	३

द्विकसंजोगिया भांगा २४		
	कृ.	नी.
१	१	१
२	१	३
३	३	१
४	३	३

	कृ.	का.
५	१	१
६	१	३
७	३	१
८	३	३
	कृ.	ते.
९	१	१
१०	१	३
११	३	१
१२	३	३
	नी.	का.
१३	१	१
१४	१	३
१५	३	१
१६	३	३

४३. गोयमा ! कण्हलेसे वा नीललेसे वा काउलेसे वा तेउलेसे वा ।
एककयोगे एकवचनेन चत्वारः । (वृ० प० ५१२)

४४. कण्हलेस्सा वा नीललेस्सा वा काउलेस्सा वा तेउलेस्सा वा अहवा कण्हलेसे य नीललेसे य । एवं एए दुयासंजोगतियासंजोगचउक्कसंजोगेणं असीति भंगा भवंति । (श० ११।१२)

४५. बहुवचनेनापि चत्वार एव, द्विकयोगे तु यथायोगमेकवचनबहुवचनाभ्यां चतुर्भंगी, चतुर्णां च पदानां षड् द्विकयोगास्ते च चतुर्गुणाश्चतुर्विंशतिः त्रिकयोगे तु त्रयाणां पदानामष्टौ भंगाः चतुर्णां च पदानां चत्वारस्त्रिकसंयोगास्ते चाष्टाभिर्गुणिता द्वात्रिंशत्, चतुष्कसंयोगे तु षोडश भंगाः, सर्वमीलने चाशीतिरिति (वृ०प० ५१२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	नी.	ते.
१७	१	१
१८	१	३
१९	३	१
२०	३	३
	का.	ते.
२१	१	१
२२	१	३
२३	३	१
२४	३	३

त्रिकसंजोगिया भांगा ३२

	क्रु.	नी.	का.
१	१	१	१
२	१	१	३
३	१	३	१
४	१	३	३
५	३	१	१
६	३	१	३
७	३	३	१
८	३	३	३

	क्रु.	नी.	ते.
९	१	१	१
१०	१	१	३
११	१	३	१
१२	१	३	३
१३	३	१	१
१४	३	१	३
१५	३	३	१
१६	३	३	३

	क्रु.	का.ते.	
१७	१	१	१
१८	१	१	३
१९	१	३	१
२०	१	३	३
२१	३	१	१
२२	३	१	३
२३	३	३	१
२४	३	३	३

	नी.	का.	ते.
२५	१	१	१
२६	१	१	३
२७	१	३	१
२८	१	३	३
२९	३	१	१
३०	३	१	३
३१	३	३	१
३२	३	३	३

एवं त्रिक सजोगिया
३२ भांगा कह्या

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउक्कसंजोगिया १६ भांगा कहै छै—				
	क्र.	नी.	का.	ते.
१	१	१	१	१
२	१	१	१	३
३	१	१	३	१
४	१	१	३	३
५	१	३	१	१
६	१	३	१	३
७	१	३	३	१
८	१	३	३	३
९	३	१	१	१
१०	३	१	१	३
११	३	१	३	१
१२	३	१	३	३
१३	३	३	१	१
१४	३	३	१	३
१५	३	३	३	१
१६	३	३	३	३
एवं चउक्कसंजोगिया १६ भांगा एतलै सर्व ८० भांगा कह्या।				

दृष्टि द्वार (१०)

४६. उत्पल जीव सुजोय, प्रभु ! स्यूं समदृष्टि होय।
कै मिथ्यादृष्टि कहिवाय, कै समामिथ्यादृष्टि थाय ?

४७. जिन कहै समदृष्टि न पाय, समामिथ्यादृष्टि पिण नांय।
इक वच मिथ्यादृष्टि उदिष्ट, तथा बहु वच मिथ्यादृष्ट ॥

नाणी-अनाणी द्वार (११)

४८. ते प्रभु ! जीव पिछानी, स्यूं ज्ञानी कै कहियै अज्ञानी ?
जिन कहै ज्ञानी नहिं होय, अज्ञानी इक बहु वच जोय ॥

४६. ते णं भंते ! जीवा किं सम्मदिट्ठी ? मिच्छादिट्ठी ? सम्मामिच्छादिट्ठी ?

४७. गोयमा ! नो सम्मदिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी वा मिच्छादिट्ठिणो वा। (श० ११।१३)

४८. ते णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी वा, अण्णाणिणो वा।
(श० ११।१४)

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

जोग द्वार (१२)

४९. स्यूं प्रभु ! ते मन जोगी, के वच जोगी काय प्रयोगी ?
जिन कहै मन वच नांय, काय जोग इक बहु वच पाय ।।

४९. ते णं भंते ! जीवा किं मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?
गोयमा ! नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी वा, कायजोगिणो वा । (श० ११।१५)

उपयोग द्वार (१३)

५०. प्रभु ! स्यूं ते सागारोवउत्ता, कै अणागारोवउत्ता उक्ता ?
जिन कहै सागारोवउत्ते, इक वचन करीनें प्रयुक्ते ।।

५०. ते णं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता ?
गोयमा ! सागारोवउत्ते वा ।

५१. अथवा अणागारोवउत्ते, ए पिण एक वचन करि उक्ते ।
इम अठ भंगा अवधार, इक द्विक योगिक च्यार-च्यार[1] ।।

५१. अणागारोवउत्ते वा—अट्ठ भंगा । (श० ११।१६)

वर्णादि द्वार (१४)

५२. प्रभु ! उत्पल शरीर में तास, केता वर्ण गंध रस फास ?
उत्तर—वर्ण पंच गंध दोय, रस पंच फर्श अठ होय ।।

५२. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा कतिवण्णा, कतिगंधा, कतिरसा, कतिफासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचवण्णा दुगंधा पंचरसा अट्ठफासा पण्णत्ता ।

५३. ते पिण आतम स्वरूपे जाण, अवर्ण अगंध पिछाण ।
वलि फर्श अनें रस नांय, जीव ते अरूपी कहिवाय ।।

५३. ते पुण अप्पणा अवण्णा, अगंधा 'अरसा, अफासा'[1] पण्णत्ता ! (श० ११।१७)
'अप्पण' त्ति स्वरूपेण 'अवर्णा' वर्णादिवर्जिता: अमूर्त्तत्वात्तेषामिति । (वृ० प० ५१२)

उस्सास द्वार (१५)

५४. प्रभु ! उस्सासगा ते जीवा, कै निस्सासगाज कहीवा ।
कै उस्सास-निस्सास नांय ? ए छै अपर्याप्त अवस्थाय ।।

५४. ते णं भंते ! जीवा किं उस्सासगा ? निस्सासगा ? नो उस्सासनिस्सासगा ?
'नो उस्सासनिस्सासए' त्ति अपर्याप्तावस्थायाम् । (वृ० प० ५१२)

५५. जिन उत्तर दियै सुचंग, इकसंयोगिक षट भंग ।
एक वचन उस्सासए तास, अथवा एक वचन ए निस्सास ।।

५५. गोयमा ! उस्सासए वा, निस्सासए वा

५६. अथवा नो उस्सास-निस्सास, ए पिण एक वचन सुविमास ।
एवं बहु वचने त्रिहुं जाण, इकयोगिक षट ए पिछाण ।।

५६. नो उस्सासनिस्सासए वा, उस्सासगा वा, निस्सासगा वा, नो उस्सासनिस्सासगा वा,

५७. द्विकयोगिक भांगा बार, त्रिकयोगिक आठ विचार ।
एवं सर्व भांगा छब्बीस, तिके यंत्र थकी सुजगीस ।।

५७. अहवा उस्सासए य, निस्सासए य ...... एते छव्वीसं भंगा भवंति । (श० ११।१८)
द्विकयोगे तु यथायोगमेकत्वबहुत्वाभ्यां तिस्रश्चतुर्भंगिका इति द्वादश, त्रिकयोगे त्वष्टाविति अत एवाह—"एए छव्वीसं भंगा भवंति' त्ति । (वृ० प० ५१२)

---

१. इकसंजोगिक ४ भांगा—

१. सागारोवउत्ते १	३. सागारोवउत्ता ३
२. अणागारोवउत्ते २	४. अणागारोवउत्ता ३

द्विकसंजोगिक ४ भांगा—

५. सागारोवउत्ते १ अणागारोवउत्ते १	७. सागारोवउत्ता ३, अणागारोवउत्ते १
६. सागारोवउत्ते १ अणागारोवउत्ता ३	८. सागारोवउत्ता ३, अणागारोवउत्ता ३

एवं सर्व ८ भांगा ।

१. जयाचार्य ने पहले अफासा और उसके बाद अरसा की जोड़ की है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इकसंयोगिक भांगा ६		
उ	नि.	नो.
१	१	१
३	३	३

द्विकसंजोगिया भांगा १२		
	उ.	नो.
७	१	१
८	१	३
९	३	१
१०	३	३

	उ.	नो.
११	१	१
१२	१	३
१३	३	१
१४	३	३

	नि.	नो.
१५	१	१
१६	१	३
१७	३	१
१८	३	३

त्रिकसंजोगिक भांगा ८			
	उ.	नि.	नो.
१९	१	१	१
२०	१	१	३
२१	१	३	१
२२	१	३	३
२३	३	१	१
२४	३	१	३
२५	३	३	१
२६	३	३	३
एवं सर्व २६			

आहारक द्वार (१६)

५८. आहारक अनाहारक[1] प्रभु ! तेह ? उत्तर आहारक इक वच लेह ।
तथा अनाहारक वच एक, एहनां भांगा आठ उवेख ।।

विरती द्वार (१७)

५९. प्रभु ! विरती अविरती ते जीवा, अथवा विरताविरती कहीवा ?
उत्तर—विरती विरताविरती नांय, अविरती इक बहु वच ताय ।।

क्रिया द्वार (१८)

६०. प्रभु ! सक्रिया अक्रिया तेह ? उत्तर—क्रिया रहित न कहेह ।
क्रिया सहित वच एक, तथा सक्रिया बहु वच पेख ।।

बंध द्वार (१९)

६१. प्रभु ! सप्त बंधगा ते जीवा, कै अष्ट बंधगा अतीवा ?
उत्तर—सप्त तथा अठ एक, इहां आठ भांगा सुविशेख ।।

संज्ञा द्वार (२०)

६२. आहारसंज्ञोपयुक्त ते जीवा, भय मिथुन परिग्रह कहीवा ?
जिन कहै असी भंग होय, पूर्व लेश्या कही तिम जोय ।।

कषाय द्वार (२१)

६३. प्रभु ! उत्पल क्रोध-कषाई, जाव लोभ-कषाई कहाई ?
जिन कहै पूर्ववत जाण, लेश्या ज्यूं असी भंगा पिछाण ।।

१. विग्रहगतिकाः ।

५८. ते णं भंते ! जीवा किं आहारगा ? अणाहारगा ?
गोयमा ! आहारए वा अणाहारए वा—अट्ठ भंगा ।
(श० ११।१९)

५९. ते णं भंते ! जीवा किं विरया ? अविरया ?
गोयमा ! नो विरया, नो विरयाविरया, अविरए वा अविरया वा । (श० ११।२०)

६०. ते णं भंते ! जीवा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! नो अकिरिया, सकिरिए वा सकिरिया वा ।
(श० ११।२१)

६१. ते णं भंते ! जीवा किं सत्तविहबंधगा ?
गोयमा ! सत्तविहबंधए वा, अट्ठविहबंधए वा --अट्ठ भंगा । (श० ११।२२)

६२. ते णं भंते ! जीवा किं आहारसण्णोवउत्ता ? भय-सण्णोवउत्ता ? मेहुणसण्णोवउत्ता ? परिग्गहसण्णो-वउत्ता ?
गोयमा ! आहारसण्णोवउत्ता—असीति भंगा ।
(श० ११।२३)

६३. ते णं भंते ! जीवा किं कोहकसाई ? माणकसाई ? मायाकसाई ? लोभकसाई ? असीति भंगा ।
(श० ११।२४)

....लेश्याद्वारवद् व्याख्येयाः (वृ० प० ५१३)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेद द्वार (२२)

६४. हे प्रभु ! उत्पल जीवा, इत्थी पुरुष नपुंसक कहीवा ?
जिन कहै इत्थी पुरुष न होय, नपुंसक इक बहु वच जोय ।।

वेद बंध द्वार (२३)

६५. प्रभु ! स्त्री-वेद बंधग जीवा, पुं नपुंस बंधगा कहीवा ?
जिन कहै भांगा छब्बीस, सास-उस्सास जेम जगीस ।।

सन्नी असन्नी द्वार (२४)

६६. प्रभु ! सन्नी असन्नी ते जीवा ? जिन कहै सन्नी न कहीवा ।
एक वचन असन्नी कहिवाय, बहु वच असन्नी पिण थाय ।।

इन्द्रिय द्वार (२५)

६७. प्रभु ! उत्पल जीव स्यूं कहिया, सइन्द्रिया कै अणिंदिया ?
जिन कहै अणिंदिया न तेह, सइंदिय इक बहु वचनेह ।।

अनुबंध द्वार (२६)

६८. प्रभु ! उत्पल जीव निहाल, रहै काल थी केतलो काल ?
उत्तर—जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त थात, उत्कृष्ट काल असंख्यात ।।

संवेध द्वार (२७)

६९. प्रभु ! उत्पल जीव मरीनैं, पृथ्वी जीवपणें उपजी नें ।
वलि उत्पलपणें उपजंत, कितो काल गतागत हुंत ?

७०. जिन कहै भव आश्री सोय, जघन्य थकी करै भव दोय ।
एक पृथ्वी उत्पल भव बीजो, उत्कृष्ट असंख भव लीजो ।।

७१. हिवै काल थकी अवलोय, जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त दोय ।
उत्कृष्ट काल असंख्यात, इतो काल गतागत थात ।।

वा०—भव आश्रयी जघन्य बे भव, उत्पल जीव मरी प्रथम भव पृथ्वीपणें, द्वितीय भव उत्पलपणें । तिवारै पछै मनुष्यादि गति प्रति गमन करै ।

काल आश्रयी जघन्य बे अन्तर्मुहूर्त्त, ते किम ? उत्पल को जीव मरी एक पृथ्वीपणें अन्तर्मुहूर्त्त वली उत्पलपणें बीजो अन्तर्मुहूर्त्त, इम काल आश्रयी जघन्य थी दोय अन्तर्मुहूर्त्त ।

७२. प्रभु ! उत्पल जीव मरीनैं, अपकायपणें उपजी नें ।
एवं चेव पृथ्वीवत भणवा, जाव वाउकाय लग गुणवा ।।

७३. प्रभु ! उत्पल जीव मरीनैं, वनस्पतिपणें उपजी नें ।
वलि उत्पलपणें उपजंत, कितो काल गतागत हुंत ?

७४. जिन कहै भव आश्री सोय, जघन्य थकी करै भव दोय ।
एवं वणस्सइ उत्पल बीजो, उत्कृष्ट अनंत भव लीजो ।।

७५. हिवै काल थकी अवलोय, जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त दोय ।
उत्कृष्टो अनंतो काल, इतो काल गतागति न्हाल ।।

६४. ते णं भंते ! जीवा किं इत्थिवेदगा ? पुरिसवेदगा ? नपुंसगवेदगा ?
गोयमा ! नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदए वा नपुंसगवेदगा वा । (श० ११।२५)

६५. ते णं भंते ! जीवा किं इत्थिवेदबंधगा ? पुरिसवेदबंधगा ? नपुंसगवेदबंधगा ?
गोयमा ! ....छब्बीसं भंगा । (श० ११।२६)

६६. ते णं भंते ! जीवा किं सण्णी ? असण्णी ?
गोयमा ! नो सण्णी, असण्णी वा असण्णिणो वा । (श० ११।२७)

६७. ते णं भंते ! जीवा किं सइंदिया ? अणिंदिया ?
गोयमा ! णो अणिंदिया, सइंदिए वा सइंदिया वा । (श० ११।२८)

६८. से णं भंते ! उप्पलजीवेत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं । (श० ११।२९)

६९. से णं भंते ! उप्पलजीवे पुढविजीवे पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ?

७०. गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं ।

७१. कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । (श० ११।३०)

वा०—'भवादेसेणं' ति भवप्रकारेण भवमाश्रित्येत्यर्थः 'जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं' ति एकं पृथिवीकायित्वे ततो द्वितीयमुत्पलत्वे ततः परं मनुष्यादिगतिं गच्छेदिति । कालादेसेण जहन्नेण दो अंतोमुहुत्त' त्ति पृथ्वीत्वेनान्तर्मुहूर्त्तं पुनरुत्पलत्वेनान्तर्मुहूर्त्तमित्येवं कालादेशेन जघन्यतो द्वे अन्तर्मुहूर्त्ते इति । (वृ० प० ५१३)

७२. से णं भंते ! उप्पलजीवे, आउजीवे ......एवं चेव ।
एवं जहा पुढविजीवे भणिए तहा जाव वाउजीवे भाणियव्वे । (श० ११।३१)

७३. से णं भंते ! उप्पलजीवे सेसवणस्सइजीवे से पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ?

७४. गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं अणंताइं भवग्गहणाइं,

७५. कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अणंतं कालं तरुकालं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । (श० ११।३२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७६. प्रभु ! उत्पल जीव मरी नें, बेइन्द्रिपणें उपजो नें।
वलि उत्पलपणें उपजंत, कितो काल गतागति हुंत ?

७७. जिन कहै भव आश्री सोय, जघन्य थकी करै भव दोय।
इक बेइन्द्रि उत्पल बीजो, उत्कृष्ट संख भव लीजो।।

७८. हिवै काल थकी अवलोय, जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त दोय।
उत्कृष्टो संख्यातो काल, इतो काल गतागति न्हाल।।

७९. इमहिज जीव तेइन्द्री कह्यु, इमहिज जीव चउरिंद्री।
तिर्यंच पंचेंद्री नीं पृच्छा, हिव सांभलजो धर इच्छा।।

८०. प्रभु ! उत्पल जीव मरी नें, पंचेंद्री-तिर्यंच थई नें।
वलि उत्पलपणें उपजंत, कितो काल गतागति हुंत ?

८१. जिन कहै भव आश्री सोय, जघन्य थकी करै भव दोय।
उत्कृष्ट आठ भव जाण, बिहुं नां चिहुं-चिहुं पहिछाण।।

८२. हिवै काल थकी अवलोय, जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त दोय।
उत्कृष्ट पृथक पूर्व कोड़, उत्पल भव अद्धा अधिको जोड़।।

८३. इम मनुष्य संघाते पिण कहिवूं, इतो काल सेववूं लहिवूं।
इतो काल गतागति तास, करै मनुष्य उत्पल सुविमास।।

आहार द्वार (२८)

८४. हे भगवंत ! ते जीवा, स्यूं आहार करै छै अतीवा ?
जिन कहै द्रव्य थकी जाण, अनंतप्रदेशि द्रव्य पिछाण।।

८५. इम पन्नवण पद अठवीसं, कह्यो आहार उद्देश जगीसं।
आहार कह्यो वणस्सइ नो ताय, जाव सर्वात्म लग कहिवाय।।

८६. णवरं लोक तणैं अन्त ताय, ते उत्पल कहियै नांय।
तिणसूं निश्चै छ दिशि नों ले आहार, शेषं तं चेव सर्व विचार।।

स्थिति द्वार (२९)

८७. उत्पल जीव तणी स्थिति केती ? हिवै वीर कहै हुवै जेती।
जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त दृष्ट, दश सहस्र वर्ष उत्कृष्ट।।

समुद्घात द्वार (३०)

८८. तिणमें किती प्रभु ! समुद्घात ? जिन भाखै तीन विख्यात।
वेदनी नें कषाय है बीजी, मारणांतिक कहियै तीजी।।

८९. मारणांतिक करि भगवंत ! ते समोह्या मरण मरन्त।
कै असमोह्या मरण होई ? जिन कहै मरण ह्वै दोई।।

७६. से णं भंते ! उप्पलजीवे बेइंदियजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ?

७७. गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं भवग्गहणाइं,

७८. कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा।

७९. एवं तेइंदियजीवे, एवं चउरिंदियजीवे वि।
(श० ११।३३)

८०. से णं भंते ! उप्पलजीवे पंचिंदियतिरिक्खजोणियजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति -पुच्छा।

८१. गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं
चत्वारि पंचेन्द्रियतिरश्चश्चत्वारि चोत्पलस्येत्येवमष्टौ भवग्रहणान्युत्कर्षत इति। (वृ० प० ५१३)

८२. कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहत्तं,
उत्पलजीवितं त्वेतास्वाधिकमित्येवमुत्कृष्टतः पूर्वकोटीपृथक्त्वं भवतीति। (वृ० प० ५१३)

८३ एवं मणुस्सेण वि समं जाव एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। (श० ११।३४)

८४. ते णं भंते ! जीवा किमाहारमाहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ अणंतपदेसियाइं दव्वाइं,

८५. एवं जहा आहारुद्देसए (प० २८।२८-३६) वणस्सइकाइयाणं आहारो तहेव जाव सव्वप्पणयाए आहारमाहारेंति।

८६. नवरं—नियमा छद्दिसिं, सेसं तं चेव। (श० ११।३५)
उत्पलजीवास्तु बादरत्वेन तथाविधनिष्कुटेष्वभावान्नियमात् षट्सु दिक्ष्वाहारयन्तीति।
(वृ० प० ५१३)

८७ तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतियं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं। (श० ११।३६)

८८. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता तं जहा—वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए।
(श० ११।३७)

८९. ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहता मरंति ? असमोहता मरंति ? गोयमा ! समोहता वि मरंति, असमोहता वि मरंति।
(श० ११।३८)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चयण द्वार (३१)

९०. प्रभु ! अन्तर-रहित ते जंत, नीकली किण गति उपजंत ?
जिन कहै पन्नवणा मांहि, पद छठै कह्यो छै ताहि ।।

९१. वनस्पतिकाय नों विचार, उद्वर्त्तन कह्यो तिवार ।
तिमहिज सर्व ए भणवो, उत्पल नों नीकलवो थुणवो ।।

९०, ९१. ते णं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति......एवं जहा वक्कंतीए (प० ६।१०३,१०४) उव्वट्टणाए वणस्सइकाइयाणं तहा भाणियव्वं । (श० ११।३९)
'वक्कंतीए' त्ति प्रज्ञापनायाः षष्ठपदे । (वृ० प० ५१३)

मूलादिक नें विषे सर्व जीव नों उपपात द्वार (३२)

९२. अथ सर्व प्राण भगवान ! सर्व भूत जीव सत्व जान ।
उत्पल मूल-जीवपणैं जोय, पूर्वे ऊपनां ते सोय ।।

९२. अह भंते ! सव्वपाणा, सव्वभूता, सव्वजीवा, सव्वसत्ता उप्पलमूलत्ताए,

९३. उत्पल कंदपणैंज उपनां, उत्पल नालपणैंज प्रमना ।
उत्पल पत्रपणैं सहु जीवा, पूर्वे ऊपनां छै अतीवा ।।

९३. उप्पलकंदत्ताए, उप्पलनालत्ताए, उप्पलपत्तत्ताए,

९४. उत्पल नां केसरपणैं, कर्णिका पासै अवयव जेह ।
उत्पल कर्णिकापणैं कहाय, मध्य भाग बीज कोस ताय ।।

९४. उप्पलकेसरत्ताए, उप्पलकण्णियत्ताए,
'उप्पलकेसरत्ताए' त्ति इह केसराणि—कर्णिकायाः परितोऽवयवाः 'उप्पलकन्नियत्ताए' त्ति इह तु कर्णिका —बीजकोशः (वृ० प० ५१३)

९५. उत्पल थिबुकपणैं करि जेह, जिहां पत्र ऊपजै तेह ।
पूर्व काल विषे सर्व जीवा, ऊपनां छै प्रभुजी ! अतीवा ?

९५. उप्पलथिभगत्ताए उववन्नपुव्वा ?
'उप्पलथिभुगत्ताए' त्ति थिभुगा च यतः पत्राणि प्रभवन्ति । (वृ० प० ५१३)

९६. तब हुंता कहै जगतार, सहू ऊपनां बारंबार ।
अथवा ते वार अनंत, सेवं भंते ! सेवं भंत !

९६. हंता गोयमा ! असतिं अदुवा अणंतखुत्तो । (श० ११।४०)
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । (श० ११।४१)

९७. कह्यो उत्पल उद्देशो एह, एकादशमा शतक नों कहेह ।
प्रथम उद्देशे जगीस, उगणीसै वर्ष इकवीस ।।

९८. दोयसौ नें पच्चीसमीं ढाल, भिक्षु भारीमाल गुणमाल ।
ऋषिराय तणें सुपसाय, सुख संपति 'जय-जश' पाय ।।

एकादशशते प्रथमोद्देशकार्थः ।।११।१।।

ढाल : २२६

दूहा

१. अष्ट उद्देशा नें विषे, नानापणुंज भेद ।
संग्रह अर्थे छै इहां, गाथा तीन उमेद ।।

१. एतेषु चोद्देशकेषु नानात्वसंग्रहार्थास्तिस्रो गाथाः— (वृ० प० ५१४)

२. *पृथक धनुष सालु नीं तास, पृथक गाउ कहियै पलास ।
शेष छहुं नी इम अवगान, योजन सहस्र अधिक पहिछान ।।

२. सालंमि धणुपुहत्तं होइ पलासे च गाउयपुहत्तं ।
जोयणसहस्समहियं अवसेसाणं तु छण्हंपि ।। (वृ० प० ५१४)

३. कुंभी नालिका पलास मांय, तीन लेश्या सुर उपजै नांय ।
शेष पंच में लेश्या च्यार, उपजै देव वणस्सइ सार ।।

३. कुंभीए नालियाए होंति पलासे य तिन्नि लेसाओ ।
चत्तारि उ लेसाओ अवसेसाणं तु पंचण्हं ।। (वृ० प० ५१४)

४. कुंभी नालिका नी सुविमास, पृथक वर्ष कही स्थिति तास ।
शेष छहुं वर्ष दश हजार, अर्थ त्रिहुं गाथा नों सार ।।

४. कुंभीए नालियाए वासपुहत्तं ठिई उ बोद्धव्वा ।
दसवाससहस्साइं अवसेसाणं तु छण्हंपि ।। (वृ० प० ५१४)

*लय : इण पुर कंबल कोइय न लेसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. हे भदंत ! सालु इक पत्र, एक जीव कै अनेक तत्र ?
जिन कहै एक जीव छै एम, कहियै उत्पल उद्देश जेम ।।

६. जाव अनंतखुत्तो पहिछाण, णवरं विशेष तनु अवगाण ।
जघन्य अंगुल नैं भाग असंख, उत्कृष्ट धनुष पृथक नो अंक ।।
७. शेषं तिमहिज सेवं भंत ! सेवं भंत ! गोयम वच तंत ।
एकादशम शतक गुणगेह, द्वितीय उद्देश अर्थ वर एह ।।

एकादशशते द्वितीयोद्देशकार्थः ।।११।२।।

८. हे भदंत ! इक पत्र पलास, एक जीव कै अनेक तास ?
एवं उत्पल उद्देश जेम, वक्तव्यता कहियै सहु तेम ।।
९. णवरं तनु अवगाहन माग, जघन्य आंगुल नों असंख भाग ।
उत्कृष्ट पृथक गाउ कहिवाय, पलास में सुर उपजै नांय ।।

१०. पलाश में प्रभु ! केती लेश ? जिन कहै धुर त्रिहुं लेश कहेस ।
भंग छब्बीस शेष तिम हुंत, सेवं भंते ! सेवं भंत !

एकादशशते तृतीयोद्देशकार्थः ।।११।३।।

११ वनस्पति प्रभु ! कुंभी विशेख, एक पत्र जीव इक कै अनेक ?
कह्यो पलास उद्देशक जेह, तिम कहिवूं पिण णवरं एह ।।

१२. स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त जघन्य, उत्कृष्ट पृथक वर्षज मन्य ।
शेष तिमज प्रभु ! सेवं भंत ! तुर्य उद्देशक एह कहंत ।।

एकादशशते चतुर्थोद्देशकार्थः ।।११।४।।

१३. वनस्पति प्रभु ! नालिका देख, एक पत्रजीव इक कै अनेक ?
कुंभी उद्देश विषेज वृतंत, तिम सहु कहिवूं सेवं भंत !

एकादशशते पंचमोद्देशकार्थः ।।११।५।।

१४. पद्म तिको प्रभु ! कमल विशेख, एक पत्र जीव इक कै अनेक ?
उत्पल प्रथम उद्देश वृतंत, तिम सहु कहिवूं सेवं भंत !

एकादशशते षष्ठोद्देशकार्थः ।।११।६।।

१५. कर्णिका जाति कमल नीं पेख, एक पत्र जीव इक कै अनेक ?
उत्पल प्रथम उद्देश वृतंत, तिम सहु कहिवूं सेवं भंत !

एकादशशते सप्तमोद्देशकार्थः ।।११।७।।

१६. नलिण—कमल नीं जाति विशेख, एक पत्र जीव इक कै अनेक ?
उत्पल प्रथम उद्देश वृतंत, तिम सहु कहिवूं सेवं भंत !

एकादशशते अष्टमोद्देशकार्थः ।।११।८।।

५. सालुए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
गोयमा ! एगजीवे । एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा ।
६. जाव अणंतखुत्तो, नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं धणुपुहत्तं,
७. सेसं तं चेव । (श० ११।४२)
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । (श० ११।४३)

८. पलासे णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा,
९. नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं गाउयपुहत्ता । देवेहिंतो न उववज्जंति । (श० ११।४४)
१०. लेसासु—ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेस्सा ? नीललेस्सा ? काउलेस्सा ?
गोयमा ! कण्हलेस्से वा, नीललेस्से वा, काउलेस्से वा —छव्वीस भंगा, सेसं तं चेव । (श० ११।४५)
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति (श० ११।४६)

११. कुंभिए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं जहा पलासुद्देसए तहा भाणियव्वे, नवरं—
१२. ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वासपुहत्तं, सेसं तं चेव । (श० ११।४७)
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । (श० ११।४८)

१३. नालिए णं भंते ! एगपत्तए किं एकजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं कुंभिउद्देसगवत्तव्वया निरवसेसं भाणियव्वा । (श० ११।४९)
सेवं भंते ! सेवं भंते त्ति । (श० ११।५०)
१४. पउमे णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे?
एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा । (श० ११।५१)
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । (श० ११।५२)
१५. कण्णिए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं चेव निरवसेसं भाणियव्वं । (श० ११।५३)
सेवं भंते ! सेवं भंते त्ति । (श० ११।५४)
१६. नलिणे णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं चेव निरवसेसं जाव अणंतखुत्तो । (श० ११।५५)
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । (श० ११।५६)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा

१७. सालु उत्पल कंद ते, आदि देइनैं सात।
बहुलपणैं उत्पल तणां, उद्देशक सम ज्ञात॥

१७. शालूकोद्देशकादयः सप्तोद्देशकाः प्रायः उत्पलोद्देशक-समानगमाः। (वृ० प० ५१४)

१८. वलि विशेष जे जिण विषे, आख्या आगम मांहि।
णवरं पलास नैं विषैं, देव ऊपजै नांहि॥

१८. विशेषः पुनर्यो यत्र स तत्र सूत्रसिद्ध एव, नवरं पलाशोद्देशके यदुक्तं 'देवेसु न उववज्जंति' त्ति। (वृ० प० ५१४)

१९. उत्पल उद्देशक विषे, सुर उत्पल उपजंत।
इहां पलासे देवता, नहिं उपजै ए मंत॥
२०. उत्पल प्रमुख वनस्पति, प्रशस्त में सुर आय।
पलास अप्रशस्त ते भणी, देव ऊपजैं नांय॥

१९,२०. उत्पलोद्देशके हि देवेभ्य उद्वृत्ता उत्पले उत्पद्यन्त इत्युक्तमिह तु पलाशे नोत्पद्यन्त इति वाच्यम्, अप्रशस्तत्वात्तस्य, यतस्ते प्रशस्तेष्वेवोत्पलादिवनस्पति-षूत्पद्यन्त इति। (वृ० प० ५१४)

२१. उत्पल सुर उत्पत्ति भणी, तेजूलेश्या पाय।
पलास सुर नहिं ऊपजै, तेजूलेश्या नांय॥

२१. यदा किल तेजोलेश्यायुतो देवो देवभवादुद्वृत्त्य वनस्पतिषूत्पद्यते तदा तेषु तेजोलेश्या लभ्यते, न च पलाशे देवत्वोद्वृत्त उत्पद्यते पूर्वोक्तयुक्तेः, एवं चेह तेजोलेश्या न संभवति। (वृ० प० ५१४)

२२. तेजू तणां अभाव थी, पलास में त्रिहुं लेश।
पद त्रिहुं नां षटवीस भंग, संभव तास विशेष॥

२२. तदभावादाद्या एव तिस्रो लेश्या इह भवन्ति, एतासु च षड्विंशतिभंगकाः, त्रयाणां पदानामेतावतामेव भावादिति। (वृ० प० ५१४)

२३ *ग्यारमा शत नों अष्टम न्हाल, दोयसौ नैं छवीसमीं ढाल।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय पसाय,
'जय-जश' संपति हरष सवाय॥

ढाल : २२७

दूहा

१. कह्या अर्थ उत्पल प्रमुख, एहवा अर्थ प्रतेह।
यथातथ्य जे जाणवा, समर्थ सर्वज्ञ जेह॥
२. पिण अन्य समर्थ छै नहीं, द्वीप समुद्र प्रतेह।
शिव ऋषिराज तणी परै, हिव कहियै छै जेह॥

१,२. अनन्तरमुत्पलादयोऽर्था निरूपिताः, एवंभूतांश्चार्थान् सर्वज्ञ एव यथावज्ज्ञातुं समर्थो न पुनरन्यो, द्वीपसमुद्रानिव शिवराजर्षिः, इति सम्बन्धेन शिवराजर्षि-संविधानकं नवमोद्देशकं प्राह — (वृ० प० ५१४)

३. तिण कालै नैं तिण समय, हत्थिणापुर वर नाम।
नगर हुंतो रलियामणो, वर्णक अति अभिराम॥

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ।

४. तिण हत्थिणापुर नगर रै, बाहिर कूण ईशान।
सहस्रंब वन नाम जे, हुंतो वर उद्यान॥

४. तस्स णं हत्थिणापुरस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे, एत्थ णं सहसंबवणे नामं उज्जाणे होत्था—

५ ते वन सब ऋतु नैं विषे, फूलै फलै समृद्ध।
नंदन वन सम अति सुखद, मन रमणीक सुऋद्ध॥

५. सव्वोउय-पुप्फ-फलसमिद्धे रम्मे णंदणवणसन्निभप्पगासे

६. सुखदायक शीतल घणी, छाया तरु नीं इष्ट।
मन रमणीक इसा अछै, स्वादू फल अति मिष्ट॥

६. सुहसीतलच्छाए मणोरमे सादुप्फले

७. कंटाला तरु करि रहित, पासादिए पिछान।
जाव तिको प्रतिरूप छै, एहवो वर उद्यान॥

७. अकंटए पासादीए जाव (सं० पा०) पडिरूवे। (श० ११।५७)

---

*लय : इण पुर कंबल कोइय न लेसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*सरस बतका सुणो, शिवराज ऋषि नीं रे ।। (ध्रुपदं)

८. तिण हत्थिणापुर नगरी तणो, हुंतो शिव नामैं राजान ।
मोटो हेमवंत नीं परै जी, वर्णक अति सुविधान ।।

८. तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे सिवे नामं राया होत्था—
महयाहिमवंत······वण्णओ ।

सोरठा

९. राज-वर्णक इम दीस, महाहिमवंत तणी परै ।
मोटो शिव अवनीस, शेष धराधिप पेक्षया ।।
१०. पर्वत मलय संवादि, मंदर ते मेरू गिरि ।
महेंद्र ते शक्रादि, तदवत सार प्रधान जे ।।

९. राजवर्णको वाच्य इति सूचितं, तत्र महाहिमवानिव
महान् शेषराजापेक्षया (वृ० प० ५१९)
१०. मलयः—पर्वतविशेषो मन्दरो—मेरुः महेन्द्रः—
शक्रादिर्देवराजस्तद्वत्सारः प्रधानो यः स तथा,
(वृ० प० ५१९)

११. *शिव वसुधाधिप नैं हुंती जी, राणी धारणी नाम ।
अति सुकुमाल सुहामणी जी, वर्णक अति अभिराम ।।

११. तस्स णं सिवस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था—
सुकुमालपाणिपाया वण्णओ ।

सोरठा

१२. वर कर पग सुकुमाल, इत्यादिक राणी तणो ।
वर्णक अधिक विशाल, अन्य स्थान थी जाणवूं ।।

१२. 'सुकुमाल० वन्नओ' त्ति अनेन च 'सुकुमालपाणिपाए'
त्यादी राज्ञीवर्णको वाच्य इति सूचितं ।
(वृ० प० ५१९)

१३. *पवर पुत्र शिवराय नों जी, धारणी नों अंगजात ।
शिवभद्र नामैं कुमार थो जी, अति सुकुमाल आख्यात ।।
१४. जिम सूर्यकंत कुमार नों जी, आख्यो छै अधिकार ।
जाव चिंता करतो राज नी जी, विचरै एह कुमार ।।

१३. तस्स णं सिवस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए अत्तए सिवभद्दे
नामं कुमारे होत्था—सुकुमालपाणिपाए
१४. जहा सूरियकंते जाव

सोरठा

१५. कर पग तसु सुकुमाल, लक्षण व्यंजन गुण सहित ।
इत्यादिक सुविशाल, रायपसेणी[1] थी इहां ।।

१५. 'सुकुमालपाणिपाए लक्खणवंजणगुणोववेए' इत्यादिना
यथा राजप्रश्नकृताभिधाने ग्रन्थे सूर्यकान्तो राज-
कुमारः (वृ० प० ५१९)

१६. विचरै करतो चित, सूर्यकंत तणी परै ।
इण वचने इम तंत, इहां कहिवो शिवभद्र नैं ।।

१६. 'पच्चुवेक्खमाणे पच्चुवेक्खमाणे विहरइ' इत्येतदन्तेन
वर्णकेन वर्णितस्तथाऽयं वर्णयितव्यः ।
(वृ० प० ५१९)

१७. ते शिवभद्र कुमार, हुंतो वर युवराज पद ।
शिव राजा नैं सार, राज-चित करतो थको ।।
१८. राष्ट्र देश नीं जाण, बल वाहन भंडार नीं ।
कोठागार पिछाण, पुर अंतेउर नीं वली ।।
१९. जनपद[2] नी स्वयमेव, चिंतवना करतो छतो ।
विचरै अहनिशिहेव, शिवभद्र नाम कुमार ते ।।

१७. से णं सिवभद्दे कुमारे जुवराया यावि होत्था सिवस्स
रन्नो······ (वृ० प० ५१९)
१८,१९. रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च
कोट्ठारं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव पच्चुवेक्खमाणे-
पच्चुवेक्खमाणे विहरइ । (श० ११।५८)

२०. *तिण अवसर शिवराय नैं जी, अन्य दिवस किणवार ।
मध्य निशि काल समय विषे, राज धुरा चिंतवतां धार ।।
२१. एहवे रूपे आतम नैं विषे, जाव उपनो मन में विचार ।
छै मुझ जूना तप तणां जी, दान नां फल वलि सार ।।

२०. तए णं तस्स सिवस्स रण्णो अण्णया कयाइ पुव्वरत्ता-
वरत्तकालसमयंसि रज्जधुरं चिंतेमाणस्स
२१. अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव (सं० पा०) समुप्प-
ज्जित्था—अत्थि ता मे पुरा पोराणाणं कल्लाणफल-
वित्तिविसेसे

*लय : अमड़ मड़ रावणा

१. सू. ६७३,६७४

२. अंगसुत्ताणि में 'जनपद' शब्द नहीं है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२. जेम तामली चिंतव्यूं जी, तिम चिंतव्यूं शिवराज।
जाव पुत्रे करि हूं वध्यो, पशु करि बाध्यो समाज।।
२३. राज करि बाध्यो वली जी, रथ करकैं पिण एम।
बल—कटके करि बाधियो जी, वाहन करकैं तेम।।
२४. कोष भंडार करी वध्यो जी, कोट्ठागार करेह।
पुर अंतेउर करि बध्यो जी, हूं बाध्यो अधिकेह।।
२५. विस्तीर्ण धन कनके करीजी, रत्न करीनैं जाव।
छता सार द्रव्ये करी जी, घणुं घणुं बाध्यो साव।।
२६. ते भणी हूं स्यूं पूर्व भवे जी, तप दानादिक कीध।
जाव एकंत ते पुन्य नैं, क्षय करतो विचरूं प्रसीध।
२७. ते माटै हूं ज्यां लगै जी, प्रथम बाध्यो हिरण्येण।
तं चेव जाव घणुं-घणुं जी, बाध्यो सार द्रव्येण।।
२८. ज्यां लगै सामंत राजवी जी, मुझ वश वर्त्तै विशेख।
त्यां लग मुझनैं श्रेय भलो जी, काल प्रभात संपेख।।
२९. पवर प्रभा प्रगट्ये छते जी, जाव जलंते जान।
जाज्वलमान सूरज जिको जी, उदय थयो असमान।।
३०. अति बहु लोही लोह नां जी, कडाहा कुडछी जेह।
रोटी पचावा नां वली जी, अन्न हलावा नां एह।।
३१. ते पिण योग्य तापस तणैं जी, भंड घड़ावी तेह।।
शिवभद्र नामैं कुमार नैं जी, स्थापी राज्य प्रतेह।।
३२. ते अति बहु लोही लोह नां जी, कडाहा कुडछी जोय।
ते पिण योग्य तापस तणैं जी, भंड ग्रही नैं सोय।।
३३. जे ए गंगा तट नैं विषे जी, वानप्रस्थ विख्यात।।
तापस छै तप में रता जी, होत्तियादिक आख्यात।।

सोरठा

३४. वन नैं विषे वसंत, वानप्रस्थ कहियै तसु।
अथवा तीजो मंत, च्यारूं आश्रम नैं विषे।।
३५. ब्रह्मचारी नैं गृहस्थ, वानप्रस्थ चउथो जती।
तीजो ए वानप्रस्थ, होत्तियादि गंगा तटे।।

गीतक-छंद

३६. नित्य अग्निहोमज जे करै, ते कह्या तापस होत्तिया।
फुन वस्त्र नां धारक जिके छै, तेह तापस पोत्तिया।।
३७. फुन क्वचित पाठज सोत्तिया, ते सूत्र धार लहीजियै।
भगवती पाठ विषे कह्या, तिणहीज रीत कहीजियै।।

वा० - इहां भगवती नी वृत्ति विषे इम कह्यु[1]—होत्तिया पोत्तिया... सोत्तियत्ति-क्वचित् पाठः। जहा उववाइए (सू.९४) इति इण अतिदेश थकी इम जाणवो—कोत्तिया जन्नई सड्ढइ हुंबउट्ठा दंतुक्खलिया उम्मज्जगा समज्जगा निमज्जगा इत्यादि उववाई में पाठ कह्या, ते जाणवा।'

२२. जहा तामलिस्स जाव (सं० पा०) पुत्तेहिं वड्ढामि पसूहिं वड्ढामि

२३. रज्जेणं वड्ढामि एवं रट्ठेणं बलेणं वाहणेणं

२४. कोसेणं कोट्ठागारेणं पुरेणं अंतेउरेणं वड्ढामि

२५. विपुलधण-कणग-रयण जाव (सं० पा०) संतसार-सावएज्जेणं अतीव-अतीव अभिवड्ढामि

२६. णं किं णं अहं पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं······एगंतसो खयं उवेहमाणे विहरामि ?

२७. तं जावताव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि जाव अतीव-अतीव अभिवड्ढामि।

२८. जाव मे सामंतरायाणो वि वसे वट्टंति, तावता मे सेयं कल्लं

२९. पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते

३०,३१. सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं तंबियं ताव सभंडगं घडावेत्ता सिवभद्दं कुमारं रज्जे ठावेत्ता

३२. तं सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं तंबियं ताव सभंडगं गहाय

३३. जे इमे गंगाकुले वाणपत्था तावसा भवंति तं जहा—होत्तिया

३४. 'वाणपत्थ' त्ति वने भवाः······ (वृ० प० ५१९)

३५. 'ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वानप्रस्थो यतिस्तथा'······ एतेषां च तृतीयाश्रमवर्त्तिनो वानप्रस्थाः।
(वृ० प० ५१९)

३६. 'होत्तिय' त्ति अग्निहोत्रिकाः 'पोत्तिय' त्ति वस्त्रधारिणः

३७. 'सोत्तिय' त्ति क्वचित्पाठस्तत्राप्ययमेवार्थः।
(वृ० प० ५१९)

वा०—'जहा उववाइए' इत्येतस्मादतिदेशादिदं दृश्यं— (वृ० प० ५१९)

१. भगवती सूत्र के कुछ आदर्शों में विस्तृत पाठ देने के बाद औपपातिक सूत्र का समर्पण किया गया है। संक्षिप्त और विस्तृत दो वाचनाओं के मिश्रण से ऐसा होना संभव प्रतीत होता है। 'ब' संकेतित आदर्श में केवल एक विस्तृत वाचना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३८. कोत्तिया सूवै मही विषे, फुन यज्ञकारक जण्णई।
फुन जेह श्रद्धावंत तेहनैं, कह्या प्रभुजी सड्ढई॥
३९. उपगरण लीधे जे रहै, ते थालइ पहिछाणियै।
जे श्रमण कूंडी प्रति ग्रहै, ते हुंबउट्ठा जाणियै॥
४०. फल भोगवै ते दंतुखलिया, फुन उम्मजग इह परै।
इक वार जल में पेसनैं, तत्काल ही जे नीसरै॥
४१. बहु वार जल में पेस निकलै, कह्या तेह समज्जगा।
फुन स्नान अर्थे जल विषे, खिण रहै तेह निमज्जगा॥

४२. फुन प्रथम मट्टी प्रमुख घस, तनु-अंग क्षालण जे करै।
इह रीत स्नान करैज तेहनैं, संपखालणगा वरै॥
४३. गंगा तणैं दक्षिण तटे, वसनार दक्षिणकूलगा।
वास्तव्य जे उत्तर तटे, कहिवाय उत्तरकूलगा॥
४४. फुन संखधमगा करै भोजन, आय तसु जीमाय नैं।
नहिं आय तो फुन तेह जीमै, संख प्रति सुबजाय नैं॥
४५. जे नदी तट ऊभा रही नैं, शब्द कर जीमैं सही।
ते कूलधमगा कह्या फुन मृगलुब्धगा जु प्रसिद्ध ही॥
४६. जे गज हणी तिणहीज करि, बहु काल भोजन आचरै।
ते हस्तितापस[1] आखिया, पाखंड वृत्ति समाचरै॥
४७. फुन स्नान अणकीधे न जीमे, कठिन गात्रज जेहनां।
वृद्धा कहै स्नाने करी, पांडुरा गात्रज तेहनां॥

वा०—किण हि प्रते 'जलाभिसेयकढिणगायभूय' त्ति पाठ है। तिहां जल नां अभिषेके करी नें कठिन गात्र थयो है जेहनों, एहवूं कह्यु छै।

४८. जल हि स्थानक वास जेहनुं, अम्बुवासिज दाखिया।
फुन पवन छै जेह स्थान रहिवै, वायुवासी भाखिया॥
४९. जल विषे बूडा रहै, जलवासिणो तापस कह्या।
फुन वेलनैंज समीप वसवै, वेलवासी जे लह्या[2]॥

है, उसे अंगसुत्ताणि पृ. ४९४ के पाद टिप्पण (१२) में ज्यों का त्यों ले लिया गया है। उसके बाद औपपातिक सूत्र (९४) का पाठ भी दिया गया है।

१. 'होत्तिया' से लेकर हत्थितावसा' तक अंगसुत्ताणि के पाद-टिप्पण और भगवती की वृत्ति का पाठ समान है। इसलिए जोड़ के सामने वृत्ति का पाठ उद्धृत किया गया है। 'हत्थितावसा' के बाद वृत्ति में कुछ शब्द अधिक हैं, और कुछ आगे पिछे हैं। इसका कारण यह है कि वृत्ति में औपपातिक सूत्र वाला पाठ लिया गया है। जब कि जयाचार्य ने भगवती के मूल आदर्श से प्राप्त पाठ के अनुसार जोड़ की है। व्यवस्थित पाठ उपलब्ध न होने के कारण तथा यत्र तत्र वृत्तिगत व्याख्या के आधार पर जोड़ होने के कारण जोड़ के सामने कहीं वृत्ति को, कहीं अंगसुत्ताणि और कहीं दोनों को उद्धृत किया गया है।

२. वेलवासिणो और जलवासिणो पाठ वृत्ति में है, अंगसुत्ताणि' में नहीं है। जोड़ में पाठ का व्यत्यय है।

३८. 'कोत्तिय' त्ति भूमिशायिनः 'जन्नइ' त्ति यज्ञयाजिनः 'सड्ढइ' त्ति श्राद्धाः (वृ० प० ५१९)

३९. 'थालइ' त्ति गृहीतभाण्डाः 'हुंबउट्ठ' त्ति कुण्डिका-श्रमणाः (वृ० प० ५१९)

४०. 'दंतुक्खलिय' त्ति फलभोजिनः 'उम्मज्जग' त्ति उन्मज्जनमात्रेण ये स्नान्ति (वृ० प० ५१९)

४१. 'संमज्जग' त्ति उन्मज्जनस्यैवासकृत्करणेन ये स्नान्ति 'निमज्जग' त्ति स्नानार्थं निमग्ना एव ये क्षणं तिष्ठन्ति। (वृ० प० ५१९)

४२. 'संपक्खाल' त्ति मृत्तिकादिघर्षणपूर्वकं येऽङ्गं क्षालयन्ति। (वृ० प० ५१९)

४३. 'दक्षिणकूलग' त्ति यैर्गंगाया दक्षिणकूल एव वास्तव्यम् 'उत्तरकूलग' त्ति उक्तविपरीताः। (वृ० प० ५१९)

४४ 'संखधमग' त्ति शंखं ध्मात्वा ये जेमन्ति यद्यन्यः कोऽपि नागच्छतीति (वृ० प० ५१९)

४५. 'कूलधमग' त्ति ये कूले स्थित्वा शब्दं कृत्वा भुञ्जते 'मियलुद्धय' त्ति प्रतीता एव (वृ० प० ५१९)

४६. 'हत्थितावस' त्ति ये हस्तिनं मारयित्वा तेनैव बहुकालं भोजनतो यापयन्ति। (वृ० प० ५१९)

४७. 'जलाभिसेयकिढिणगाय' त्ति येऽस्नात्वा न भुंजते स्नानाद् वा पाण्डुरीभूतगात्रा इति वृद्धाः, (वृ० प० ५१९)

वा०—क्वचित् 'जलाभिसेयकढिणगायभूय' त्ति दृश्यते तत्र जलाभिषेककठिनं गात्रं भूताः—प्राप्ता ये ते तथा (वृ० प० ५१९)

४८. अंबुवासिणो वाउवासिणो

४९. 'वेलवासिणो' त्ति समुद्रवेलासंनिधिवासिनः 'जलवासिणो' त्ति ये जलनिमग्ना एवासते। (वृ० प० ५१९)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५०. जलहीज पीवी नें रहै, ते अंबुभक्षी जाणवा।
फुन पवनहीज भखै जु तापस, पवनभक्षी माणवा ॥

५०. अंबुभक्खिणो वाउभक्खिणो

५१. फुन भखै जे सेवाल प्रति, सेवालभक्षी आखियै।
तरु मूल नों हिज आ'र करिवै, मूलाऽऽहारा दाखियै ॥

५१. सेवालभक्खिणो मूलाहारा

५२. फुन कंदाऽऽहारा पत्राऽऽहारा, त्वचाऽऽहारा जाणियै।
वलि पुष्पाऽऽहारा फलाहारा, बीजाऽऽहारा आणियै ॥

५२. कंदाहारा पत्ताहारा तयाहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा

५३. अतिही सड्या जे कंद मूलज, त्वचा पत्रज आहारियै।
फल फूल जे पंडुर थया, तेहनोज आ'र विचारियै ॥

५३. परिसडिय-पंडु-पत्तपुप्फफलाहारा

५४. फुन दंड ऊंचो करी हींडै, कह्या तास उद्दंडगा।
तरुमूलिया तरु-मूल वसिवै, कह्या ए पाखंडगा ॥

५४. उद्दंडा रुक्खमूलिया
'उद्दंडग' त्ति ऊर्द्ध्वकृतदण्डा ये संचरन्ति
(वृ० प० ५१६)

५५. मंडलाकारे एकठा रहै, तास मंडलिया कह्या।
बिल रूप बिल नें विषे जेहनुं, वास बिलवासी लह्या ॥
वा०—वृक्ष नी छालि रूप वस्त्र धरै ते 'वक्कवासिणो' ए पाठ किणहि परत में छै, किणहि परत में नहीं।

५५. मंडलिया बिलवासिणो

वा०—'वक्कलवासिणो' त्ति वल्कलवाससः (वृ० प० ५१६)

५६. दिशि जले छांटी लै फलादिक, दिशापोखी[1] छै जिके।
आतापना पंचाग्नि तापे करीनें तापस तिके ॥

५६. दिसापोक्खिया आतावणेहि पंचग्गितावेहिं
'दिसापोक्खिणो' त्ति उदकेन दिशः प्रोक्ष्य ये फल-पुष्पादि समुच्चिन्वन्ति। (वृ० प० ५१६)

५७. कोयला सदृश पच्यो तनु, फुन कंदुभाजन जिम पच्यु।
फुन जल्या काष्ठ सरीख तन, तसु श्याम वर्ण कर रच्यु ॥

५७. इंगालसोल्लियं कंदुसोल्लियं कट्ठसोल्लियं
'इंगालसोल्लियं' ति अंगारैरिव पक्वं 'कंदुसोल्लियं' ति कंदुपक्वमिवेति। (वृ० प० ५१६)

५८. इम आतम प्रति करता थका, विचरैज तापस ए कह्या।
शिवराज नें मझ रात्रि समये, अध्यवसाय इसा थया ॥

५८ पिव अप्पाणं करेमाणा विहरंति।
(अं० सु० पृ० ४६४ पा० टि० १२)

५९. *तिहां दिशापोखी तापस जेह छै जी, तसु पासे मुंड होय।
दिशापोखी तापसपणेंजी, लेसूं प्रव्रज्या सोय ॥

५९. तत्थ णं जे ते दिसापोक्खो तावसा तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइत्तए

६०. प्रव्रज्या लीधे छते जी, एहवुं अभिग्रह सार।
आदरवुं श्रेय मों भणी जी, कहियै ते अधिकार ॥

६०. पव्वइत्ते वि य णं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि—

६१. कल्पै मुझ जीवूं ज्यां लगै जी, छठ-छठ अंतर रहीत।
दिशाचक्रवाले करी जी, तप करिवै विधि रीत ॥

६१. कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेणं

सोरठा

६२. धुर छठ पारण पेख, पूर्व विषे जल छांटतो।
फलादि ग्रहीं विशेख, आ'र करै इह रीत सूं ॥
६३. इम बीजे दिन जाण, दक्षिण दिशि छांटी उदक।
इम फिरती दिशि माण, कही दिशा-चक्रवाल ते ॥

६२,६३. दिसाचक्कवालएणं 'तवोकम्मेणं' ति एकत्र पारणके पूर्वस्यां दिशि यानि फलादीनि तान्याहृत्य भुंक्ते द्वितीये तु दक्षिणस्यामित्येवं दिक्चक्रवालेन यत्र तपःकर्मणि पारणककरणं तत्तपःकर्म्म दिक्चक्रवाल-मुच्यते तेन तपःकर्म्मणेति। (वृ० प० ५१६,५२०)

६४. *ऊंची बे बाहू करी जी, जाव विचरवुं श्रेय।
इम निशि करि विचारणा जी, शिवराजा चित देय ॥

६४. उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय जाव (सं०पा०) विहरित्तए, त्ति कट्टु एवं संपेहेइ।

६५. शत ग्यारम देश नवम नुं जी, ढाल बेसौ सतावीस।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी जी, 'जय-जश' हरष जगीस ॥

***लय : अभड़ भड़ रावणा**

१. उववाई में 'दिसापोक्खी' के स्थान पर 'दिसापोक्खिणो' पाठ है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : २२८

दूहा

१. निशि इम करी विचारणा, कल्ले जाव जलंत।
अति बहु लोही लोहमय, जाव घड़ावी तंत।।
२. आज्ञाकारी नर प्रतै, तेड़ावी कहै राय।
शीघ्र अहो देवानुप्रिये! काम करो ए जाय।।
३. हत्थिणापुर ए नगर नैं, भ्यंतर सहितज बार।
आसित्त कहितां अल्प जे, उदके छिड़को सार।।
४. जावत सेवग काम करि, आज्ञा सूंपी आय।
द्वितिय वार शिव नृप वलि, सेवग नैं कहै वाय।।

१. संपेहेत्ता कल्लं…जाव…जलंते सुबहुं लोहीलोह जाव (सं०पा०) घडावेत्ता
२. कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो! देवाणुप्पिया!
३ हत्थिणापुरं नगरं सब्भिंतरबाहिरियं आसिय…
४. जाव…ते वि तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति। (श० ११।५९)
तए णं से सिवे राया दोच्चं पि कोडंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

५. शीघ्र देवानुप्रिय! तुम्हे, शिवभद्र नाम कुमार।
महाअर्थ महामूल्य जे, मोटा योग्य उदार।।
६. निस्तीरण जे राज नैं, अभिषेक नीं सार।
सामग्री नैं सभ्भ करो, म करो ढील लिगार।।
७. सेवग सुण तिमहीज ते, जाव उवस्थापंत।
राज बेसाणैं किणविधे, ते सुणजो धर खंत।।

५. खिप्पामेव भो! देवाणुप्पिया! सिवभद्दस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं
६. विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह।
७. तए णं ते कोडंबियपुरिसा तहेव उवट्ठवेंति। (श० ११।६०)

*चतुर नर पुन्य तणां फल देख।। (ध्रुपदं)

८. जी हो शिवराजा तिण अवसरे कांइ, बहु गणनायक साथ।
जी हो दंडनायक जावत बलि, परिवरयो संधिपाल संघात।।
९. जी हो वर सिंघासण ऊपरै कांइ, शिवभद्र नाम कुमार।
जी हो पूर्व मुख बैसाण नैं कांइ, स्नान करावै सार।।
१०. जी हो एक सौ आठ सोना तणां कांइ, जाव एकसौ आठ।
जी हो माटी नैं कलशे करी, सर्व ऋद्धि करी गहघाट।।
११. जी हो जावत वाजित्र बाजते कांइ, शब्द मोटा मंगलीक।
जी हो महाराज्य अभिषेके करी, अभिषेक करावै सधीक।।
१२. जी हो पसम सहित कोमल घणो, कांइ सुरभि गंध सहीत।
जी हो एहवै रक्त वस्त्रे करी, कांइ अंग लूहे रूड़ी रीत।।
१३. जी हो चंदन सरस गोसीस थी कांइ, गात्र लेपन करै सार।
जी हो जेम जमाली नीं परै कांइ, कीधा सर्व अलंकार।।
१४. जी हो जाव कल्पतरु नीं परै, अलंकृत विभूषित अंग।
जी हो कर जोड़ी जावत करी कांइ, बोलै वचन सुचंग।।
१५. जी हो शिवभद्र नाम कुमार नैं, जय-विजय करीनैं बधाय।
जी हो इष्ट मनोज्ञ वचने करी, प्रीतिकार वचन करि ताय।।
१६. जी हो जेम उववाइ नैं विषे, कह्यु कोणिक नो अधिकार।
जी हो जाव परम आयु पालज्यो कांइ, होज्यो चिरंजीव सुखकार।।

८. तए णं से सिवे राय अणेगगणनायग दंडनायग जाव (सं०पा०) संधिपालसद्धिं संपरिवुडे
९. सिवभद्दं कुमारं सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहं निसियावेइ, निसियावेत्ता
१०. अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव अट्ठसएणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्विड्ढीए
११. जाव दुंदुहि-णिग्घोसणाइयरवेणं महया महया रायाभिसेगेणं अभिसिंचइ,
१२. पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेति,
१३. सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपति एवं जहेव जमालिस्स (भ० ९।१९०) अलंकारो तहेव
१४. जाव कप्परुक्खगं पिव अलंकिय-विभूसियं करेइ, करेत्ता करयल जाव (सं०पा०) कट्टु
१५. सिवभद्दं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं
१६. जाव (सं० पा०) जहा ओववाइए (सू० ६८) कूणियस्स जाव परमाउं पालयाहि

---

*लय : चतुर नर पोषो पात्र विशेष

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७. जी हो जाव शब्द मांहे कह्या कांइ, उववाइ[1] में पाठ अनेक ।
जी हो मनगमती वाणी करी, बोलै स्तवन करता विशेख ।।
१८. जी हो जय-जय नंदा आपरै कांइ, जय जय भद्दा जाण ।
जी हो जय जय नंदा भद्र वली, मंगलीक वदै इम वाण ।।
१९. जी हो अणजीतां नैं जीतज्यो कांइ, जीतां नीं प्रतिपाल ।
जी हो जीतां मज्झ बसज्यो तुम्हे, हिवै एहनों अर्थ निहाल ।।
२०. जी हो शत्रु पक्ष अणजीतिया कांइ, त्यांनै जीतेज्यो गुणमाल ।
जी हो मित्र पक्ष जीतां प्रतै, त्यांरी कीज्यो घणी प्रतिपाल[2] ।।
२१. जी हो विघन सर्व जीती करी, वसो स्वजन मध्य हे देव !
जी हो सुरवृंद में इंद्र नी परै, तुम्है राज कीज्यो स्वयमेव ।।
२२. जी हो तारां में जिम चंद्रमा कांइ, धरण नाग रै मांय ।
जी हो नरां में भरत तणी परे, आप राज करो सुखदाय ।।
२३. जी हो आप घणां वर्षां लगै, बलि घणां सैकडां वास ।
जी हो बहु लाखां वर्षां लगै, पालो नृप-पद सुख नीं राश ।।
२४. जी हो पाप रहित संपूर्ण छतो, कांइ हरष संतोष सहीत ।
जी हो परम आउखो पालज्यो, जाव शब्द में अर्थ संगीत ।।
२५. जी हो इष्ट वल्लभजन आपरा कांइ, परिवार तेह संघात ।
जी हो राज हत्थिणपुर नगर नों, पालज्यो रूड़ी रीत विख्यात ।।
२६. जी हो अन्य बहु ग्रामागर नगर नों कांइ, जावत ही ए राज ।
जी हो करता विचरो इम कही, उच्चरै जय शब्द आवाज ।।
२७. जी हो शिवभद्र कुमर राजा थयो, मोटो हेमवंत जिम जाण ।
जी हो वर्णन तिणरो अति घणो, जाव विचरै पुन्य प्रमाण ।।
२८. जी हो दोयसौ नैं अठावीसमीं, आखी ढाल रसाल अपार ।
भिक्खु भारीमाल ऋषिराय थी कांइ, 'जय-जश' संपति सार ।।

१७. मणुण्णाहिं मणामाहिं···अभित्थुणंतो य एवं वयासी—

१८. जय-जय नंदा ! जय-जय भद्दा ! भद्दं ते

१९. अजियं जिणाहि, जियं पालयाहि, जियमज्झे वसाहि

२०. अजियं च जिणाहि सत्तुपक्खं जियं च पालेहि मित्त-पक्खं (वृ० प० ५२०)

२१. जियविग्घोऽविय वसाहि तं देव ! सयणमज्झे इंदो इव देवाणं (वृ० प० ५२०)

२२. चंदो इव ताराणं धरणो इव नागाणं भरहो इव मणुयाणं (वृ० प० ५२०)

२३. बहूइं वासाइं बहूइं वाससयाइं बहूइं वाससहस्साइं बहूइं वाससयसहस्साइं

२४. अणहसमग्गो हट्ठतुट्ठो परमाउं पालयाहि

२५. इट्ठजणसंपरिवुडे हत्थिणापुरस्स नगरस्स

२६. अण्णेसिं च बहूणं गामागर-नगर जाव (सं०पा०) विहराहि त्ति कट्टु जयजयसद्दं पउंजंति (श ११।६१)

२७. तए णं से सिवभद्दे कुमारे राया जाते महया हिमवंत ···वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ ।
(श ११।६२)

ढाल : २२९

दूहा

१. तिण अवसर ते शिव नृपति, कदा अन्यदा पेख ।
शोभनीक तिथि करण दिन, नक्षत्र मुहूर्त्त देख ।।
२. विस्तीर्ण असणादि चिहुं, रंधावी नैं सार ।
मित्र ज्ञाति वलि निजग प्रति, परिजन नैं परिवार ।।
३. राजा क्षत्रिय प्रति वलि, न्हैत—आमंत्र स्वजन्न ।
सदनंतर मज्जन कियो, जाव विभूषित तन्न ।।

१. तए णं से सिवे राया अण्णया कयाइ सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-मुहुत्त-नक्खत्तंसि

२. विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं

३. रायाणो य खत्तिए य आमंतेति, आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव (सं० पा०) सरीरे

---

१. सू० ६८

२. अंगसुत्ताणि ११।६१ में ऐसा पाठ नहीं है । वृत्ति में यह पाठ है । जयाचार्य को प्राप्त आदर्श में यह पाठ रहा होगा, पर अंगसुत्ताणि में यह पाठ न होने के कारण यहां वृत्ति का पाठ उद्धृत किया गया है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. भोजन मंडप नें विषे, बैठी सुख आसन्न।
ते मित्री ज्ञाती निजग, सयण जाव परिजन्न॥
५. राजा क्षत्रिय साथ फुन, विस्तीर्ण असणादि।
एवं जिम ते तामली, तेहनी पर संवादि॥
६. भोजन जीम्यां जाव ही, वस्त्रादि सत्कार।
सन्माने आदर दियो, सन्मानी नें सार॥
७. ते मित्र न्याति निजग प्रति, जाव नफर राजान।
क्षत्रिय शिवभद्र नृपति प्रति, पूछै पूछी जान॥
८. अति बहुलोही लोह नां, कडाहा कुड़छा जेह।
जावत तापस योग्य जे, भंड पात्र ग्रही तेह॥
९. जे तापस गंगा तटे, वानप्रस्थ वनवास।
तिमहिज होत्तिया प्रमुख जे, जाव पूर्ववत्[1] तास॥
१०. तास समीपे मुंड थई, दिसापोखी कहिवाय।
तापसपणुंज आदरै, लियै प्रव्रज्या ताय॥
११. प्रव्रज्या लीधे छते, अभिग्रह इसो ग्रहंत।
जावजीव कल्पै मुझे, छठ-छठ तप धर खंत॥
१२. तिमज जाव अभिग्रहे प्रतै, ग्रहै ग्रहो नें ताय।
प्रथम छट्ठ अंगीकरी, विचरै हरष सवाय॥

*रायऋषी शिव करै रे पारणो॥ (ध्रुपदं)

१३ तिण अवसर शिवराज ऋषीश्वर, धुर छठ पारण धाम जी।
आतापना लेवा नीं भूमि थी, पाछो वलियो ताम जी॥
१४. वल्कल वस्त्र पहिर निज ओरै, आयो छै निज स्थान जी।
किढिण-वंशमय तापस भाजन, वलि कावड़ ग्रही जान जी॥

१५. पूरव दिशि पोखी जल छांटै, पूरव दिशि में पेख जी।
सोम नामे महाराय इंद्र नों, लोकपाल ए देख जी॥

१६. पत्थाणे परलोग साधन मग, तेह विषे प्रस्थित्त जी।
तथा फलादिक ग्रहिवा अर्थे, गमन विषे प्रवृत्त जी॥

१७. रक्षा करो शिवराज ऋषि प्रति, जे तिहां कंद नें मूल जी।
छाल पत्र फल-पुष्प[2] बीज हरि, तसु आज्ञा अनुकूल जी॥

१८. इम कही पूरव दिशि प्रति पसरै, कंद जाव हरि लेय जी।
वंश भाजन कावड़ प्रति भरि नें, वलि ग्रहि डाभ कुशेय जी॥

४. भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए तेणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि परिजणेणं

५,६. राएहि य खत्तिएहि सद्धिं विपुलं असण-पाण-खाइम साइम एवं जहा तामली (भ० २।३३) जाव (सं० पा०) सक्कारेइ, सम्माणेइ।

७. तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं रायाणो य खत्तिए य सिवभद्दं च रायाणं अपुच्छइ, आपुच्छित्ता

८. सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं तंबियं तावसभंडगं गहाय

९. जे इमे गंगाकूलगा वाणपत्था तावसा भवंति, तं चेव जाव

१०. तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए,

११. पव्वइए वि य णं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हति—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं

१२. तं चेव जाव अभिग्गहं अभिगिण्हित्ता पढमं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। (श० ११।६३)

१३. तए णं से सिवे रायरिसी पढमछट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ,

१४. वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं गिण्हइ
'किढिण' त्ति वंशमयस्तापसभाजनविशेषस्ततश्च तयोः सांकायिकं—भारोद्वहनयंत्रं किढिणसांकायिकं
(वृ० प० ५२०)

१५. पुरत्थिमं दिसं पोक्खेइ, पुरत्थिमाए दिसाए सोमे महाराया
'महाराय' त्ति लोकपालः। (वृ० प० ५२०)

१६. पत्थाणे पत्थियं
'पत्थाणं पत्थियं' ति 'प्रस्थाने' परलोकसाधनमार्गे 'प्रस्थितं' प्रवृत्तं फलाद्याहरणार्थं गमने वा प्रवृत्तं
(वृ० प० ५२०)

१७. अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणउ

१८. त्ति कट्टु पुरत्थिमं दिसं पसरइ, पसरित्ता जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव हरियाणि य ताइं गेण्हइ, गेण्हित्ता किढिण-संकाइयगं भरेइ, भरेत्ता दब्भे य कुसे य

*लय : पूज भीखणजी रो समरण
१. श० ११।५९
२. पाठ में पुप्फ पहले है और फल बाद में है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९. मूल सहित ते दर्भ कहीजै, मूल रहित कुश जान जी।
समिध इंधन वलि शाखा मोड़ी, ग्रहण करै छै पान जी ॥

१९. समिहाओ य पत्तामोडं च गिण्हइ
'दब्भे य' त्ति समूलान् 'कुसे य' त्ति दर्भानेव निर्मूलान् 'समिहाओ य' त्ति समिधः—काष्ठिकाः 'पत्तामोडं च' तरुशाखामोटितपत्राणि। (वृ० प० ५२०)

२०. जिहां निज ओरे तिहां आयनैं, भाजन कावड़ थाप जी।
स्थान देवार्चन प्रति पूंजी नैं, लीपै शुद्ध करि आप जी ॥

२०. जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं ठवेइ, ठवेत्ता वेदिं वड्ढेई वड्ढेत्ता उवलेवणसंमज्जणं करेइ
'वेदिवड्ढेइ' त्ति वेदिकां—देवार्चनस्थानं वर्द्धनी—बहुकरिका तां प्रयुंक्त इति वर्द्धयति—प्रमार्जयतीत्यर्थः (वृ० प० ५२०)

२१. दर्भ अनैं वलि कलश ग्रही कर, गंगा महानदी आय जी।
जल मज्जन ते जल करिनैं तनु, शुद्ध मात्र कर ताय जी ॥

२१. दब्भकलसाहत्थगए जेणेव गंगा महानदी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गंगं महानदिं ओगाहेइ, ओगाहेत्ता जलमज्जणं करेइ
'जलमज्जणं' ति जलेन देहशुद्धिमात्रं (वृ० प० ५२०)

२२. जलक्रीडं तनु शुद्ध कीधै पिण, जल करि अभिरत प्रीत जी।
जल अभिषेक पाणी नों भरवो, साचवतो वर रीत जी ॥

२२. जलकीडं करेइ, करेत्ता जलाभिसेयं करेइ
'जलकीडं' ति देहशुद्धावपि जलेनाभिरतं 'जलाभिसेयं' ति जलक्षरणम् (वृ० प० ५२०)

२३. आयंते जल फर्श करण थी, चोखे असुचि करि दूर जी।
परम सुचि थइ देव पितर नैं, जलांजली कृत भूर जी ॥

२३. आयंते चोक्खे परमसुइभूए देवय-पिति-कयकज्जे
'आयंते' त्ति जलस्पर्शात् 'चोक्खे' त्ति अशुचिद्रव्यापगमात्, किमुक्तं भवति ?—'परमसूइभूए' ति 'देवयपिइ-कयकज्जे' त्ति देवतानां पितॄणां च कृतं कार्यं—जलांजलिदानादिकं येन स तथा (वृ० प० ५२०)

२४. कलश मांहै जे दर्भ गर्भित छै, तेह ग्रही निज हाथ जी।
पाठांतर नों अर्थ कह्यो ए, दर्भ कलश किहां आत जी ॥

२४. दब्भकलसाहत्थगए
'दब्भसगब्भकलसगहत्थगए' त्ति क्वचित् (वृ० प० ५२०)

२५. महानदी गंगा थी उतरै, निज ओरे आवेह जी।
दर्भ कुशे वालु करि वेदी, देवार्चन स्थान रचेह जी ॥

२५. गंगाओ महानदीओ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाएहि य वेदिं रएति,

२६. सरए निर्मंथन काष्ठे करि, अरणि काष्ठ घसेय जी।
अग्नि पाड़ वलि अग्नि संधुकी, ईंधन काष्ठ घालेय जी ॥

२६. सरएणं अरणिं महेइ, महेत्ता अग्गिं पाडेइ, पाडेत्ता अग्गिं संधुक्केइ, संधुक्केता समिहाकट्ठाइं पक्खिवइ
'सरएणं अरणि महेइ' त्ति 'शरकेन' निर्मन्थनकाष्ठेन 'अरणिं' निर्मन्थनीयकाष्ठं 'मथ्नाति' घर्षयति (वृ० प० ५२०)

२७. अग्नि उजाली वलि अग्नि नैं, दक्षिण पासे देख जी।
सप्त अंग स्थापै ते आगल, कहियै नाम विशेख जी ॥

२७. अग्गिं उज्जालेइ, उज्जालेत्ता अग्गिस्स दाहिणे पासे सत्तंगाइं समादहे, तं जहा—

२८. सकथा वानप्रस्थ नैं आगम, उपधि प्रसिद्ध ए जान जी।
वल्कल स्थानक ज्योति-स्थान ए, अथवा पात्र नों स्थान जी ॥
२९. सय्या भंड ते सय्या उपकरण, वलि कमंडल जेह जी।
दंड दारु ते दंड कहीजै, जीव सहित निज देह जी ॥

२८,२९. सकहं वक्कलं ठाणं, सिज्जाभंडं कमंडलुं।
दंडदारुं तहप्पाणं, अहे ताइं समादहे ॥
तत्र सकथा—तत्समयप्रसिद्ध उपकरणविशेषः स्थानं—ज्योतिः स्थानं पात्रस्थानं वा शय्याभाण्डं—शय्योपकरणं दण्डदारु—दण्डकः आत्मा—प्रतीत इति (वृ० प० ५२०)

३०. मधु घृत तंदूल करीनैं, अग्नि प्रतै होमंत जी।
चरू चढावै वलि द्रव्य रांधी, ए निज मत नों पंथ जी ॥

३०. महुणा य घएण य तंदुलेहि य अग्गिं हुणइ, हुणित्ता चरुं साहेइ
'चरुं साहेति' त्ति चरुः—भाजनविशेषस्तत्र पच्यमानद्रव्यमपि चरुरेव तं चरुं बलिमित्यर्थः 'साधयति' रन्धयति (वृ० प० ५२०)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३१. वलि करिनें विश्वानर पूजै, पूजी अग्नि उदार जी।
आया अतिथि तणी कर पूजा, पछै करै निज आहार जी।

३१. बलिवइस्सदेवं करेइ, करेत्ता अतिहिपूयं करेइ, करेत्ता तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेति।
(श० ११।६४)
'बलिवइस्सदेवं करेइ' त्ति बलिना वैश्वानरं पूजयतीत्यर्थः 'अतिहिपूयं करेइ' त्ति अतिथेः—आगन्तुकस्य पूजां करोतीति। (वृ० प० ५२०)

३२. तिण अवसर शिवराज ऋषी ते, दूजो छठ सुविचार जी।
अंगीकार करीनें विचरै, द्वितीय पारण अधिकार जी।।

३२. तए णं से सिवे रायरिसी दोच्चं छट्ठंक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। (श० ११।६५)
तए णं से सिवे रायरिसी दोच्चे छट्ठक्खमणपारणगंसि

३३. भूमि आतापन थकी वली नें, वल्कल पहिरी तेह जी।
इम जिम प्रथम पारणे भाख्यो, तिम इहां सर्व कहेह जी।।

३३. आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता एवं जहा पढमपारणगं

३४. णवरं दक्षिण दिशि जल छांटै, जम नामें महाराय जी।
शेष तिमज जाव अतिथि पूजनें, करै पारणो ताय जी।।

३४. नवरं (सं० पा०) दाहिणगं दिसं पोक्खेइ, दाहिणाए दिसाए जमे महाराया······सेसं तं चेव जाव तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ। (श० ११।६६)

३५. तिण अवसर शिवराज ऋषी ते, तृतीय छठ सुविचार जी।
अंगीकार करीनें विचरै, हिव पारण अधिकार जी।।

३५. तए णं से सिवे रायरिसी तच्चे छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। (श० ११।६७)
तए णं से सिवे रायरिसी तच्चं छट्ठक्खमणपारणगंसि

३६. भूमि आतापन थकी वली नें, वल्कल पहिरी तेह जी।
इम जिम प्रथम पारणे भाख्यो, तिम इहां सर्व कहेह जी।।

३७. णवरं पश्चिम दिशि जल छांटै, वरुण नामे महाराय जी।
शेष तिमज जाव अतिथि पूजनें, करै पारणो ताय जी।।

३६,३७. आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे···—सेसं तं चेव नवरं (सं० पा०) पच्चत्थिमं दिसं पोक्खेइ, पच्चत्थिमाए दिसाए वरुणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं सेसं तं चेव जाव तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ। (श० ११।६८)

३८. तिण अवसर शिवराज ऋषी ते, तुर्य छठ धर प्यार जी।
अंगीकार करीनें विचरै, हिव पारण अधिकार जी।।

३८. तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। (श० ११।६९)
तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थे छट्ठक्खमणपारणगंसि

३९. भूमि आतापन थकी वली नें, वल्कल पहिरी तेह जी।
इम जिम प्रथम पारणे भाख्यो, तिम इहां सर्व कहेह जी।।

४०. णवरं उत्तर दिशि जल छांटै, वेसमण महाराय जी।
शेष तिमज जाव अतिथि पूजनें, करै पारणो ताय जी।।

३९,४०. आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे एवं तं चेव नवरं (सं० पा०) उत्तरदिसं पोक्खेइ, उत्तराए दिसाए वेसमणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, सेसं तं चेव जाव तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ।
(श० ११।७०)

४१. ढाल भली दोयसौ गुणतीसमीं, भिक्षु भारीमाल ऋषिराय जी।
संपति दोय सौ बीस अज्जा मुनि, 'जय-जश' हरष सवाय जी।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : २३०

दूहा

१. तिण अवसर शिवराज ऋषि, छठ-छठ अंतर रहित ।
दिशा चक्रवाले करी, जाव आतापन सहित ।।

१. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं जाव (सं० पा०) आयावेमाणस्स

२. इम तपसा करतां छतां, प्रकृति भद्र करि ताय ।
प्रकृत स्वभावे विनय करि, पतली च्यार कषाय ।।

२. पगइभद्दयाए…पगइपयणुकोहमाणमायालोभयाए

३. वलि मृदु मार्दव गुण करि, विनय करीनें जान ।
प्रतिपख वचन अछै इहां, तज्या मच्छर नें मान ।।

३. मिउमद्दवसंपन्नयाए…विणीययाए

४. कदाचित ते अन्यदा, तदावरणी कर्म ।
तेहनें क्षय उपशम करी, थई आतमा नर्म ।।

४. अण्णया कयाइ तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं

५. भला अर्थ नें जाणवा, विचारवाज तदर्थ ।
सन्मुख चेष्टावंत ते, ए ईहा नों अर्थ ।।
६. अर्थ अपोह तणो इसो, धर्म ध्यान चितवंत ।
बीजा पक्ष रहित ते, निर्णय करिवो तंत ।।
७. मग्गण समुच्चय धर्म नों, आलोचना करंत ।
अधिक धर्म आलोचना, तेह गवेषण हुंत ।।
८. इम करतां नै ऊपनो, विभंग नाम अज्ञान[1] ।
ते विभंग उपनां छतां, देखै इह विध जान ।।

५-८. ईहापूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स विब्भंगे नामं नाणे समुप्पन्ने । से णं तेणं विब्भंगनाणेणं समुप्पन्नेणं पासति ।

९. सप्त द्वीप इहलोक में, सप्त समुद्र सुतंत ।
जाणें नहिं देखै नहिं, सात समुद्र उपरंत ।।

९. अस्सिं लोए सत्त दीवे सत्त समुद्दे, तेण परं न जाणइ न पासइ । (श ११।७१)

*शिव-अभिलाषी राजऋषी शिव ।। (ध्रुपदं)

१०. तिण अवसर शिवराजऋषी नें, उपनों एहवा अध्यवसाय ।
अतिशेष ज्ञान दर्शन मुझ उपनों, अतिशेष समस्त कहाय ।।

१०. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए…समुप्पज्जित्था—अत्थि णं ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने

११. इम निश्चै इण लोक विषै छै, द्वीप समुद्र सात-सात ।
इण उपरंत विच्छेद गया छै, अधिक नहीं आख्यात ।।

११. एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य—

१२. इम चिंतव आताप भूमि थी, पाछो वली नें ताह्यो ।
वल्कल छाल नां वस्त्र पहिरी नें, पोता नें ओरै आयो ।।

१२. एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ ।

१३. बहु लोह पात्र कडाही नें कुड़छा, यावत भंड कहायो ।
वंशमय भाजन कावड ग्रही नें,
आयो नगर हत्थिणापुर मांह्यो ।।

१३. सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं जाव (सं० पा०) भंडगं किढिण संकाइयगं च गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव हत्थिणापुरे नगरे

१४. तापस नो मठ छै तिहां, आवै भंड स्थापन करै ताय ।
नगर हत्थिणापुर त्रिक सिंघाडक, जाव महापंथ मांय ।।

१४. जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग तिग जाव (सं०पा०) पहेसु

---

*लय : मंदोदरी मांदो पति पेखी

१. अंगसुत्ताणि भाग २ श० ११।७१ में मूल पाठ 'नाणे' है । 'अण्णाणे' पाठान्तर में रखा गया है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५. बहु जन आगल एम परूपै, अहो देवानुप्रिया ! जी।
अतिशेष ज्ञान दर्शन मुझ उपनो, लहि पूर्ण संपति ताजी ।।
१६. इम निश्चै इण लोक विषे छै, द्वीपोदधि सात-सात।
इण उपरंत विच्छेद गया छै, अधिक नहीं आख्यात ।।
१७. शिव राजऋषि पे वचन ए सुणनें, नगर हत्थिणापुर मांहि।
सिंघाडक यावत महा पंथे, बहु लोक वदै मांहोमांहि ।।

१८. इम निश्चै हे देवानुप्रिया ! शिव राजऋषि इम भाखै।
पूर्ण ज्ञान दर्शन मुझ उपनो, सात-सात द्वीपोदधि दाखै ।।

१९. सात द्वीप नें सात समुद्र थी, अधिक नहीं लोक मांहि।
किण रीते इम एह वारता, मन्ये वितर्के ताहि ।।

२०. तिण काले तिण समय विषे, हिवे समवसरया वर्द्धमान।
परषद वीर वंदी सुण वाणी, पहुंती निज-निज स्थान ।।

२१. तिण काले तिण समय विषे, जे भगवंत श्री महावीर।
तास जेष्ठ शिष्य अंतेवासी, इंद्रभूती गुण-हीर ।।
२२. दूजा शतक नें पंचमुदेशे, जेम कह्यो तिम के'णो।
आज्ञा ले गोचरी फिरतां नगर में, सांभलिया जन वेणो ।।

२३. बहु जन इम कहै जाव परूपं, शिवराजऋषी इम भाखे।
ऊपनो पूर्ण ज्ञान दर्शण मुझ, तं चेव पूर्ववत दाखै ।।
२४. जाव सप्त-सप्त द्वीप समुद्र थी, अधिका नहीं लोक मांय।
किण रीते ए बात वितर्के, ए लोक तणी सुण वाय ।।

२५. गोतम नें मन श्रद्धा प्रवर्त्ती, जेम निर्ग्रंथ उद्देश।
द्वितीय शतक नें पंचमुद्देशे, आख्यो तेम कहेस ।।
२६. वीर कनै आय प्रश्न पूछै इम, जन करै पुर में बात।
शिव राजऋषि कहै पूर्ण ज्ञान मुझ,
लोक में द्वीपोदधि सात-सात ।।

२७. ते किम हे भगवंत ! बात ए ? दोय सौ नें तीसमीं ढाल।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' मंगलमाल ।।

१५. बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसं नाणदंसणे समुप्पन्ने

१६. एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। (११।७२)

१७. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडगतिग जाव (सं० पा०) पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—

१८. एवं खलु देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा

१९. तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। से कहमेयं मन्ने एवं ? (श० ११।७३)
अत्र मन्येशब्दो वितर्कार्थः (वृ० प० ५२०)

२०. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ परिसा पडिगया। (श० ११।७४)

२१. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे

२२. जहा वितियसए नियंठुद्देसए (भ० २।१०६-१०९) जाव घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजण सद्दं निसामेइ
'बितियसए नियंठुद्देसए' त्ति द्वितीयशते पञ्चमोद्देशक इत्यर्थः (वृ० प० ५२०)

२३,२४. बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! तं चेव जाव (सं० पा०) वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। से कहमेयं मन्ने एवं ? (श० ११।७५)

२५,२६. तए णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जायसड्ढे जहा नियंठुद्देसए (भ० २।११०) जाव (सं० पा०) समणं भगवं महावीरं··· एवं वदासी···बहुजणसद्दं निसामेमि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने एवं खलु अस्सि लोए सत्तदीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। (श० ११।७६)

२७. से कहमेयं भंते ! एवं ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : २३१

दूहा

१. इंद्रभूति इम पूछियां, तव बोलै जगनाथ।
बहु जन मांहोमांही कहै, तिमज सर्व अवदात।।

२. छठ-छठ आतापन छतां, उपनो विभंग अज्ञान।
सप्त द्वीप देखै अछै, सप्त उदधि पिण जान।।

३. तिणसूं ते जाणै अछै, मुझ संपूरण ज्ञान।
द्वीप समुद्र अधिका नहीं, लोक इतोज पिछान।।

४. जाव भंड निक्षेप करि, हथिणापुरे सिंघाड।
तिमज द्विपोदधि सप्त थी, उपरंत विच्छेद धार।।

५. तिण अवसर बहु जन तदा, शिव राजऋषि रै पास।
ए अर्थ निसुणी करी, दिल में धारी तास।।

६. तिमज सप्त-सप्त उपरंत जे, द्वीपोदधि विच्छेद।
इम जन भाखै ते मिथ्या, ए जिन वचन संवेद।।

७. हूं पिण गोयम ! इम कहूं, इम निश्चै करि ताय।
जंबूद्वीपज आदि दे, द्वीप असंख कहाय।।

८. लवण आदि दे समुद्र छै, ते सहु नों संस्थान।
एक सरीखा वाटला, सर्व वृत्त पहिछान।।

९. विधि अनेक विस्तार थी, दुगुण-दुगुण विस्तार।
इम जिम जीवाभिगम में, आख्यो ए अधिकार।।

१०. जाव स्वयंभूरमण दधि, तिरिछे लोके जान।
असंख्यात द्वीपोदधि, हे श्रमण आयुष्मान !

वा०—एवं जहा जीवाभिगमे इम एणे वचने करी जे कह्यु ते इम—दुगुणादुगुणं पडुप्पाएमाणा पवित्थरमाणा ओभासमाण-वीइया कहितां अवभासमान वीची ते शोभायमान तरंगां, समुद्र अपेक्षाय ए विशेषण। बहुउप्पलकुमुदनलिणसुभगसोगंधियपुंडरीयमहापुंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तसयसहस्सपत्तपफुल्लकेसरोववेया—घणां विकसित उत्पलादिक नां जे केशरा तिण करिके संयुक्त। जे तिहां उत्पल ते नीलोत्पलादिक, कुमुद ते चंद्रविकाशी, पुंडरीक ते धवला, वली शेष पद ते लोक रूढि थी जाणवा। पत्तेयं-पत्तेयं पउमवरवेइया परिक्खित्ता पत्तेयं-पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्तत्ति।

११. छै प्रभु ! जंबूद्वीप में, द्रव्य तिके पहिछाण।
वर्णे करी सहीत पिण, वर्ण रहित पिण जाण ?

१-३. गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—जण्णं गोयमा ! एवं खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं··· आयावेमाणस्स···विब्भंगे नामं नाणे समुप्पन्ने, तं चेव सव्वं भाणियव्वं।

४. जाव भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग···एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य।

५. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म···

६. एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य तण्णं मिच्छा।

७. अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—एवं खलु जंबुद्दीवादीया दीवा।

८. लवणादीया समुद्दा संठाणओ एगविहिविहाणा 'एगविहिविहाण' त्ति एकेन विधिना—प्रकारेण विधानं व्यवस्थानं येषां ते तथा सर्वेषां वृत्तत्वात्
(वृ० प० ५२०)

९. वित्थारओ अणेगविहिविहाणा एवं जहा जीवाभिगमे (३।२५६)
'वित्थारओ अणेगविहिविहाण' त्ति द्विगुणद्विगुण विस्तारत्वात्तेषामिति। (वृ० प० ५२०)

१०. जाव सयंभूरमणपज्जवसाणा अस्सिं तिरियलोए असंखेज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता समणाउसो !
(श० ११।७७)

वा०—एवं जहा जीवाभिगमे इत्यनेन यदिह सूचितं तदिदं—'दुगुणादुगुणं पडुप्पाएमाणा पवित्थरमाणा ओभासमाणवीइया' अवभासमानविचय:—शोभमानतरंगा:, समुद्रापेक्षमिदं विशेषणं, बहुप्पलकुमुदनलिणसुभगसोगंधियपुंडरीयमहापुंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तसयसहस्सपत्तपफुल्लकेसरोववेया' बहूनामुत्पलादीनां प्रफुल्लानां—विकसितानां यानि केशराणि तैरुपचिता:—संयुक्ता ये ते तथा, तत्रोत्पलानि—नीलोत्पलादीनि कुमुदानि—चन्द्रबोध्यानि पुण्डरीकाणि—सितानि शेषपदानि तु रूढिगम्यानि 'पत्तेयं पत्तेयं पउमवरवेइयापरिक्खित्ता पत्तेयं पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्त' त्ति।
(वृ० प० ५२०,५२१)

११. अत्थि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे दव्वाइं—सवण्णाइ पि अवण्णाइं पि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. गंधे करी सहीत पिण, गंध रहित पिण ताय।
फुन रस करी सहीत पिण, वलि रस रहित कहाय ?
१३. फर्शे करी सहीत पिण, फर्श रहित पिण होय।
अन्नमन्न मांहो मांहि ते, गाढा बंध्या सोय ?

१४. फर्श्या मांहोमांहि ते, जावत मांहोमांहि।
रहै जु समभर घटपणें, प्रश्न गोयम ए ताहि ?
१५. हंता अत्थि जिन कहै, पुद्गल वर्ण सहीत।
धर्म अधर्मास्ति प्रमुख, वर्णादिके रहीत।।

१६. छै प्रभु ! लवण समुद्र में, द्रव्य वर्णादि सहीत ?
एवं पूरवली परै, इमज घातकी रीत।।
१७. इम यावत सयंभूरमण, समुद्र लग कहिवाय।
हंता अत्थि जिन कहै, पूरवली पर न्याय।।

*वाणो प्रभु नीं वारू हो।। (ध्रुपदं)

१८. तिण अवसर महा परषदा, सांभल जिन वाणी हो।
हिये धार हरखी घणी, वलि संतोषाणी हो।।

१९. वीर प्रभु प्रति वंदनें, करि नमण सुखोती हो।
जे दिशि थी आवी हुंती, तेहिज दिशि प्होंती हो।।

२०. तिण अवसर हत्थिणापुरे, सिंघाडग आखै हो।
यावत मोटा पंथ में, बहु जन इम भाखै हो।।
२१. जे भणी अहो देवानुप्रिया ! शिव राजऋषि इम बोलै हो।
पूरण दरशण ज्ञान ते, मुझ थयो अतोलै हो।।

२२. सप्त द्वीप इह लोक में, दधि सातज होई हो।
एहथी अधिका को नहीं, ए अर्थ समर्थ न कोई हो।।
२३. भगवंत श्री महावीर जी, इम भाखै वाणो हो।
छठ-छठ तप शिवराजऋषि, करतां पहिछाणी हो।।
२४. आतापन लेतां छतां, भद्र विनीत स्वभावे हो।
पतला क्रोधादिक चिउं, मृदु मार्दव भावे हो।।
२५. कदा अन्यदा तेहनें, तदावरणी कर्मो हो।
तेहनें क्षयोपशम करी, आतम थई नर्मो हो।।
२६. ईहापोह मग्गणा, गवेषणा करंतो हो।
विभंग अज्ञान समुप्पनो, द्वीप सप्त देखंतो हो।।
२७. देखै सप्तोदधि वली, नहि अधिक विनाणो हो।
तिण मन मांहै जाणियो, मुझ पूरण नाणो हो।।
२८. इम चिंतव आतापना भूमि थकी वलि ताहि हो।
वल्कल वस्त्र पहीर नैं, निज ओरै आई हो।।

१२. सगंधाइं पि अगंधाइं पि, सरसाइं पि अरसाइं पि,

१३ सफासाइं पि अफासाइं पि, अण्णमण्णबद्धाइं
'अन्नमन्नबद्धाइं' ति परस्परेण गाढाश्लेषाणि
(वृ० प० ५२१)
१४. अण्णमण्णपुट्ठाइं जाव (सं० पा०) घडत्ताए चिट्ठंति ?
१५. हंता अत्थि। (श० ११।७८)
'सवन्नाइंपि' त्ति पुद्गलद्रव्याणि 'अवन्नाइंपि' त्ति धर्मास्तिकायादीनि (वृ० प० ५२१)
१६,१७. अत्थि णं भंते ! लवणसमुद्दे दव्वाइं—सवण्णाइं पि··· (श० ११।७९)
अत्थि णं भंते ! धायइसंडे दीवे दव्वाइं—सवण्णाइं पि··· (श० ११।८०)
अत्थि णं भंते ! सयंभूरमणसमुद्दे दव्वाइं······हंता अत्थि। (श० ११।८१)
१८. तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा
१९. समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया।
(श. ११।८२)
२०. तए णं हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग जाव (सं० पा०) पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ।
२१. जण्णं देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने।
२२. एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। तं नो इणट्ठे समट्ठे।
२३-२८ समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एवं खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं तं चेव जाव भंडनिक्खेवं करेइ।

*लय : सीता रामे राची हो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९. लोह पात्रादिक भंड प्रति, कावड़ नें लेई हो।
हत्थिणापुर तापस मठे, भंड निक्षेप करेई हो।।
३०. हत्थिणापुर शृंगाटके, यावत महापंथो हो।
पूर्ण दर्शण ज्ञान मुझ, उपनो है तंतो हो।।
३१. सप्त-सप्त द्वीपोदधि, अधिका नहिं कोई हो।
शिव बच सुण जन पिण कहै, ते मिथ्या जोई हो।।

३२. भगवंत श्री महावीर जी, भाखै इम वाणी हो।
जंबूद्वीप लवणोदधि, आदि देई पहिछाणी हो।।
३३. तिमज जाव पूरव परै, द्वीप असंख कहंतो हो।
वलि असंख्याता उदधि, हे श्रमण आउखावंतो हो।।
३४. तिण अवसर शिव राजऋषि, बहु जन पे ताह्यो हो।
एह अर्थ निसुणी करी, धारी हिय मांह्यो हो।।
३५. एहनों उत्तर स्यूं हुई? ए उपनी शंका हो।
कोई पे उत्तर मिलै, ए वांछा कंखा हो।।
३६. उत्तर ए दीधां थकां, पर अन्य पिछाणी हो।
मानै कै मानै नहीं, ए वितिगिच्छा जाणी हो।।
३७. मति भेद पाम्यो वलि, ते विभ्रम कहियै हो।
हूं क्यूं ही जाणूं नहीं, कलुष भाव इम लहियै हो।।
३८. राजऋषि शिव नों तदा, संकित कांक्षित किण हो।
जाव कलुष पाम्यां तणो, गयो विभंग ततखिण हो।।

३९. शिव राजऋषि नें ऊपनां, एहवा अध्यवसायो हो।
भगवंत श्री महावीर जी, तपधारी ताह्यो हो।।

४०. आदि करण जिन धर्म नीं, तीरथ तेह करंता हो।
जाव सर्व ज्ञानी प्रभु, सर्व वस्तु देखंता हो।।
४१. धर्म चक्र आकाश गत, जाव सहस्राम्ब मांही हो।
नियम अभिग्रह सहित जिन, यावत विचरै त्यांही हो।।
४२. महाफल निश्चै ते भणी, तथा नाम अरिहंतो हो।
नाम गोत्र भगवंत नों, सुणियां लाभ अत्यंतो हो।।
४३. जिम उववाइ में कह्यूं, तेम इहां पिण कहियै हो।
जाव अर्थ ग्रहिवा तणो, फल अधिकेरो लहियै हो।।
४४. हूं जावूं तिण कारणे, वीर प्रभु नें वंदूं हो।
जावत हूं सेवा करूं, भाव पाप निकंदूं हो।।
४५. ए सेवा मुझ इह भवे, परभव हित सुख नै हो।
क्षम शिव नें अनुगामिका, होस्यै प्रत्यख नै हो।।
४६. एम विचारी आवियो, तापस मठ तामो हो।
घणां लोह पात्रादिके, जाव कावड़ ग्रही आमो हो।।

४७. तापस नां स्थानक थकी, बाहिर नीकरियो हो।
विभंग अज्ञाने रहित ते, पुर मध्य थइ संचरियो हो।।

३०. हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग जाव (सं० पा०) पहेसु···
मम अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने

३१. एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जाव तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य तण्णं मिच्छा,

३२. समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ—एवं खलु जंबुद्दीवादीया दीवा लवणादीया समुद्दा

३३. तं चेव जाव असंखेज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता समणा-उसो! (श. ११।८३)

३४. तए णं से सिवे रायरिसी बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म

३५. संकिए कंखिए

३६. वितिगिच्छिए

३७. भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था

३८. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स संकियस्स कंखियस्स जाव (सं० पा०) कलुससमावन्नस्स से विब्भंगे नाणे खिप्पामेव परिवडिए। (श. ११।८४)

३९. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए·········समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे भगवं महावीरे

४०. तित्थगरे आदिगरे जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी

४१. आगासगएणं चक्केणं जाव सहसंबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं जाव (सं. पा.) विहरइ।

४२. तं महप्फलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए

४३. जहा ओववाइए (सू० ५२) जाव गहणयाए (पा० टि०)

४४. तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि जाव पज्जुवासामि

४५. एयं णे इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ

४६. त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ······सुबहुं लोही-लोहकडाह जाव (सं० पा०) किढिण-संकाइयगं च गेण्हइ।

४७. तावसावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पडिवडियविब्भंगे हत्थिणापुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४८. जिहां सहस्रांब वन अछै, जिहां प्रभु तिहां आवै हो।
तीन वार वंदना करै, वलि शीस नमावै हो॥

४९. नहिं अति नेड़ो ढूकड़ो, यावत बे कर जोड़ी हो।
सेव करै स्वामी तणी, निज मान मरोड़ी हो॥

५०. वीर प्रभू तिण अवसरे, शिव नामा नृप ऋप नैं हो।
धर्म देशना धुन करी, दाखै महा परपद नैं हो॥

५१. दोय धर्म दिखाविया, शिवपुर नां साधक हो।
यावत बेहुं आराधियां, आज्ञा तणो आराधक हो॥

५२. रायऋषि शिव तिण समे, वीर प्रभु नीं वाणी हो।
धर्म सुणी हरख्यो घणो, खंधक जिम जाणी हो॥

५३. जाव ईशाणे आयनैं, लोह पात्र प्रमुख नैं हो।
एकांते न्हाखै सहु, यावत वलि कावड़ नैं हो॥

५४. पंच मुष्टि लोचन कियो, पोतैंहीज पिछाणी हो।
वीर प्रभु प्रति वंदनै, बोलै वर वाणी हो॥

५५. ऋषभदत्त संजम लियो, तिमहिज चारित्र लीधो हो।
अंग इग्यार भणैं मुनि, तिमहिज प्रसीधो हो॥

५६. तिणहिज विध कहिवो सहु, जाव सर्व दुख अंतो हो।
महामुनी मुक्ते गया, शिव ऋषिराय महंतो हो॥

दूहा

५७. राजऋषी शिव नैं इहां, सिद्धि परूपी सोय।
ते संघयणादिक करी, आगल हिव अवलोय॥

५८. *हे भगवंत! इसो कही, गोतम भगवंतो हो।
वीर प्रतै वंदन करी, शिर नाम वदंतो हो॥

५९. प्रभु! जीव बहु सीझता, किसे संघयण सीझै हो?
वज्रऋषभ नाराच ते, जिन कहै मुक्ति लहीजै हो॥

६०. इम जिम उववाइ विषे, आख्यो जिम कहियै हो।
धुर संघयण संठाण पट, शिव पद ते लहियै हो॥

६१. जघन्य सात कर ऊंचपणैं, धनुष्य पांचसै जाणी हो।
उत्कृष्टी अवगाहना, सीझै भव्य प्राणी हो॥

६२. अष्ट वर्ष जाझो सही, जघन्य आयु सिद्ध थावै हो।
कोड पूर्व उत्कृष्ट ही, शिव सुख विलसावै हो॥

६३. रत्नप्रभा प्रमुख पृथ्वी, सौधर्मादि विमानं हो।
सिद्धशिला हेठै वलि, न वसै सिद्ध सुजानं हो॥

---

*लय : सीता रामे राची हो

४८. जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ

४९. नच्चासन्ने नातिदूरे जाव (सं० पा०) पंजलिकडे पज्जुवासइ। (श० ११।८५)

५०. तए णं समणे भगवं महावीरे सिवस्स रायरिसिस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ

५१. जाव आणाए आराहए भवइ। (श० ११।८६)

५२. तए णं से सिवे रायरिसी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म जहा खंदओ (भ० २।५२)

५३. जाव उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सुबहुं लोही लोहकडाह जाव (सं० पा०) किढिण-संकाइयगं च एगंते एडइ

५४. सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता समणं भगवं महावीरं……वंदइ नमंसइ……

५५,५६. एवं जहेव उसभदत्तो (भ० ९।१५१) तहेव पव्वइओ तहेव एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ तहेव सव्वं जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। (श० ११।८७)

५७. अनन्तरं शिवराजर्षेः सिद्धिरुक्ता, तां च संहननादिभिर्निरूपयन्निदमाह— (वृ० प० ५२१)

५८. भंतेत्ति! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

५९. जीवा णं भंते! सिज्झमाणा कयरम्मि संघयणे सिज्झंति? गोयमा! वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति।

६०. एवं जहेव ओववाइए (सू० १८५-१९५) तहेव।
संघयणं संठाणं
तत्र संस्थाने षण्णां संस्थानानामन्यतरस्मिन् सिद्ध्यन्ति। (वृ० प० ५२१)

६१. उच्चत्तं
उच्चत्वे तु जघन्यतः सप्तरत्निप्रमाणे उत्कृष्टतस्तु पंचधनुःशतके (वृ० प० ५२१)

६२. आउयं च
आयुषि पुनर्जघन्यतः सातिरेकाष्टवर्षप्रमाणे उत्कृष्टतस्तु पूर्वकोटीमाने (वृ० प० ५२१)

६३. परिवसणा
परिवसना पुनरेवं—रत्नप्रभादिपृथिवीनां सौधर्मादीनां चेषत्प्राग्भारान्तानां क्षेत्रविशेषाणामधो न परिवसन्ति सिद्धाः (वृ० प० ५२१)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६४. सर्वार्थसिद्ध ऊपरे, शिखर अग्र थी जाणी हो।
बार योजन ऊंची अछै, सिद्धशिला पहिछाणी हो।।

६४. किन्तु सर्वार्थसिद्धमहाविमानस्योपरितनात्स्तूपिकाग्रा-दूर्ध्वं द्वादश योजनानि व्यतिक्रम्येषत्प्राग्भारा नाम पृथिवी। (वृ० प० ५२१)

६५. लाख पैंताली योजनुं, लांबी चौड़ी कहियै हो।
ऊपर इक योजन तिहां, लोकांतज लहियै हो।।

६५. पंचचत्वारिंशद्योजनलक्षप्रमाणाऽऽयामविष्कम्भाभ्यां ......योजने लोकान्तो भवति (वृ० प० ५२१)

६६. ते योजन नों ऊर्ध्व जे, गाऊ एक कहै छै हो।
तेहनां छठा भाग में, सहु सिद्ध रहै छै हो।।

६६. तस्य च योजनस्योपरितनगव्यूतोपरितनषड्भागे सिद्धाः परिवसन्तीति (वृ० प० ५२१)

६७. इम पूर्व जे आखिया, संघयणादिक द्वारं हो।
सिद्धिगंडिया अनुक्रमे, सिद्ध तणो अधिकारं हो।।

६७. एवं सिद्धिगंडिया निरवसेसा भाणियव्वा
एवमिति— पूर्वोक्तसंहननादिद्वारनिरूपणक्रमेण 'सिद्धि-गण्डिका' सिद्धिस्वरूपप्रतिपादनपरा। (वृ०प० ५२१)

६८. सिद्ध वसै त्यां लग इहां, कह्यो लेश थी सागै हो।
पडिहया सिद्धा कहिं, इत्यादिक आगै हो।।

६८. इयं च परिवसनद्वारं यावदर्थलेशतो दर्शिता, तत्पर-तस्त्वेवं 'कहिं पडिहया सिद्धा······ इत्यादिका······ (वृ० प० ५२१)

६९. जावत बाधा रहित ते, सिद्धा सुख अनुभवै हो।
सेवं भंते! इह विधे, गोतमजी कहवै हो।।

६९. जाव—
अव्वाबाहं सोक्खं अणुहोंति सासयं सिद्धा। (श० ११।८८)

७०. वेसौ नैं इकतीसमीं, आखी ढाल अमंदा हो।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी,
'जय-जश' सुख आनंदा हो।।

७०. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति। (श० ११।८९)

एकादशशते नवमोद्देशकार्थः ।।११।९।।

ढाल : २३२

दूहा

१. नवम उद्देशक अंत में, लोकांते सिद्धवास।
ते माटै दशमैं हिवे, लोक स्वरूप अभ्यास।।

१. नवमोद्देशकस्यान्ते लोकान्ते सिद्धपरिवसनोक्तेत्यतो लोकस्वरूपमेव दशमे प्राह— (वृ० प० ५२१)

२. नगर राजगृह नैं विषे, यावत गोतम स्वाम।
वीर प्रतै वंदी करी, इम बोलै शिर नाम।।

२. रायगिहे जाव एवं वयासी—

*हिये धर रे, श्री प्रभुजी नां वचन अंगीकर रे। (ध्रुपदं)

३. कतिविध लोक कह्यो भगवंते! जिन कहै च्यार प्रकार।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव ए, वलि शिष्य पूछै सार।।

३. कतिविहे णं भंते! लोए पण्णत्ते?
गोयमा! चउव्विहे लोए पण्णत्ते, तं जहा—दव्वलोए खेत्तलोए काललोए भावलोए। (श० ११।९०)

वा०—'दव्वओ लोए' त्ति द्रव्य थकी लोक बे प्रकारे—आगम थकी अनैं नोआगम थकी। तिहां आगम थकी द्रव्य लोक ते लोक शब्द नां अर्थ नों जाण, ते लोक शब्द नां अर्थ नैं विषे उपयोग रहित हुवै इत्यर्थः। अनुपयोगो द्रव्यं इति वचनात्। उपयोग-रहित द्रव्य, एहवुं कह्यु छै। ते वचन थकी लोक शब्द नां अर्थ नो जाण छै, पिण तेहनैं विषे उपयोग नहीं, ते माटै तेहनैं द्रव्य लोक

वा०—'दव्वलोए' त्ति द्रव्यलोक आगमतो नोआगमतश्च तत्रागमतो द्रव्यलोको लोकशब्दार्थज्ञस्तत्रानुपयुक्तः 'अनुपयोगो द्रव्य' मिति वचनात्

*लय : तू चामड़ा री पुतली! भजन कर हे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहियै ।

मंगल शब्द आश्रयी द्रव्य नुं लक्षण भाष्यकार कहै छै—

अनुपयुक्त कहितां मंगल शब्द नां अर्थ नैं विषे उपयोग रहित । मंगल शब्द नो अनुवासित—भावित एहवो वक्ता आगम थकी द्रव्य मंगल कहियै । ज्ञान लब्धि युक्त मंगल शब्द नैं विषे अनुपयुक्त, इण हेतु थकी आगम थकी द्रव्य मंगल कह्यो ।

अनैं नोआगम थकी द्रव्य तीन प्रकारे—जाणक शरीर, भव्य शरीर, जाणक शरीर भव्य शरीर थकी व्यतिरक्त—एवं त्रिविध । तिहां लोक शब्द नां अर्थ नौं जाण, तेहनों शरीर मृत अवस्था में ज्ञान अपेक्षा करिकै भूत—अतीत काले लोक शब्द नां अर्थ नों जाण हुंतो तेणे करी । जिम ए घृत नो घड़ो हुंतो ते घृत काढ्यां पछै पिण घृत नों घड़ो कहै । तिम लोक शब्द नां अर्थ नों जाण हुंतो, तेहनों ए शरीर छै, ते जाणवावाला नों शरीर द्रव्य रूप । ते भणी जाणक शरीर द्रव्य लोक कहियै । नोआगम थकी द्रव्य लोक नों ए प्रथम भेद । इहां नो शब्द सर्व निषेध नैं विषे ।

आह च मंगलं प्रतीत्य द्रव्यलक्षणम्

आगमओऽणुवउत्तो मंगलसद्दाणुवासिओ वत्ता ।
तन्नाणलद्धिजुत्तो उ नोवउत्तोत्ति दव्वं ।।

ते नोआगमतस्तु ज्ञशरीर-भव्यशरीर-तद्व्यतिरिक्त-भेदात् त्रिविधः, तत्र लोकशब्दार्थज्ञस्य शरीरं मृतावस्थं ज्ञानापेक्षया भूतलोकपर्यायतया घृतकुम्भवल्लोकः स च ज्ञशरीररूपो द्रव्यभूतो लोको ज्ञशरीरद्रव्यलोकः, नोशब्दश्चेह सर्वनिषेधे

तथा लोक शब्द नों अर्थ जाणस्यै जे जीव, ते जीव नों शरीर चेतन सहित भावि लोकपर्यायपणै करी, मधु घटवत । ए मधु घड़ो थास्यै । तेहनी परै ए लोक शब्द नां अर्थ नों जाणणहार थास्यै ए भव्यशरीर द्रव्य लोक । नो शब्द इहां पिण सर्व निषेधहीज ।

तथा लोकशब्दार्थं ज्ञास्यति यस्तस्य शरीरं सचेतनं भाविलोकभावत्वेन मधुघटवद् भव्यशरीरद्रव्यलोकः नोशब्द इहापि सर्वनिषेध एव

हिवै जाणक शरीर भविक शरीर थी व्यतिरिक्त द्रव्य लोक कहियै छै—जीव-अजीव, रूपी-अरूपी, सप्रदेश-अप्रदेश वली नित्य-अनित्य जे द्रव्य छै, ए द्रव्य प्रतैं हे शिष्य ! तूं जाण । इहां पिण नो शब्द सर्व निषेध नैं विषे आगम शब्दवाची ज्ञान नैं सर्वथा निषेध थकी । इति द्रव्य लोक ।

० ज्ञशरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्तश्च द्रव्यलोको द्रव्याण्येव धर्मास्तिकायादीनि, आह च—

जीवमजीवे रूविमरूवि सपएसअप्पएसे य ।
जाणाहि दव्वलोयं निच्चमणिच्चं च जं दव्वं ।।

इहापि नोशब्द सर्वनिषेधे आगमशब्दवाच्यस्य ज्ञानस्य सर्वथा निषेधात्

'खेत्तलोए' त्ति क्षेत्र रूप लोक क्षेत्र लोक । आकाश नां प्रदेश ऊर्द्ध अधः अनैं तिरछा लोक नैं विषे अनैं ज्ञानी जिन सम्यक प्रकारे देखाड्यो ते क्षेत्र प्रते हे शिष्य ! तूं जाण । इति क्षेत्र लोक ।

'काललोए' ति काल समयादि ते रूप लोक—काल लोक । समय, आवलिका, मुहूर्त्त, दिवस, अहोरात्र, पख, मास, संवत्सर, जुग, पल्य, सागर, उत्सर्पिणी, पुद्गल परावर्त्तन ए काल लोक ।

'भाव लोए' त्ति भाव लोक बे प्रकार—आगम थकी अनैं नोआगम थकी । तिहां आगम थकी लोक शब्द नां अर्थ नां जाण ते लोक शब्द नां अर्थ नैं विषे उपयोग सहित । भाव रूप लोक भाव लोक इति । अनैं नोआगम थकी भाव औदयिकादि, ते रूप लोक भाव लोक ।

इहां नों शब्द सर्व निषेध नैं विषे अथवा मिश्र वचन । आगम नैं ज्ञानपणां थकी क्षायिक क्षायोपशमिक ज्ञान स्वरूप भाव विशेष करिकै वली मिश्रपणां थकी औदयिकादि भाव लोक नैं इति ।

० 'खेत्तलोए' त्ति क्षेत्ररूपो लोकः स च क्षेत्रलोकः आह च—

आगासस्स पएसा उड्ढं च अहे य तिरियलोए य ।
जाणाहि खेत्तलोयं अणंतजिणदेसियं सम्मं ।।

'काललोए' त्ति कालः समयादिः तद्रूपो लोकः काललोकः आह च—

समयावली मुहुत्ता दिवसअहोरत्तपक्खमासा य ।
संवच्छर जुगपलिया सागरउस्सप्पिपरियट्टा ।।

'भावलोए' त्ति भावलोको द्वेधा —आगमतो नोआगमतश्च तत्रागमतो लोकशब्दार्थज्ञस्तत्र चोपयुक्तः भावरूपो लोको भावलोक इति नोआगमतस्तु भावा—औदयिकादयस्तद्रूपो लोको भावलोकः,

इह नोशब्दः सर्वनिषेधे मिश्रवचनो वा आगमस्य ज्ञानत्वात् क्षायिकक्षायोपशमिक ज्ञानस्वरूपभावविशेषेण च मिश्रत्वादौदयिकादिभावलोकस्येति ।

(वृ० प० ५२३)

४. क्षेत्रलोक प्रभु ! किते प्रकारे ? जिन कहै तीन प्रकार ।
नीचो तिरछो नैं वलि ऊंचो, क्षेत्रलोक त्रिहुं धार ।।

४. खेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—अहेलोयखेत्तलोए तिरियलोयखेत्तलोए, उड्ढलोयखेत्तलोए ।

(श० ११।९१)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा०—इहां अष्ट प्रदेश रुचक, तेहनों हेठलो प्रतर, तेह नीचै नवसौ योजन लगै तिर्यग लोक छै। तिवार पछी नीचै रह्या माटै नीचलो क्षेत्र लोक कहियै, ते साधिक सात राज प्रमाण छै।

तथा 'तिरिय' त्ति—रुचक नीं अपेक्षाए नवसौ योजन ऊंचो तेहथी नीचै पिण नवसौ योजन—ए अठारैसौ योजन मान तिर्यगरूपपणां थकी तिर्यग लोक क्षेत्र लोक कहियै।

तथा 'उड्ढत्ति'—तिर्यग लोक नैं ऊपर देसोन सात राज प्रमाण ऊर्द्ध भागे वर्त्ते ते माटै ऊर्द्धलोक क्षेत्रलोक कहियै।

अथवा जिण लोक नैं विषे क्षेत्र नां स्वभाव थकीज द्रव्यां नो अशुभ परिणाम छै तेहथी—अधोलोक क्षेत्र लोक। तथा मध्यम अनुभाव क्षेत्र अति शुभ नहीं, अति अशुभ नहीं, तद्रूप लोक ते तिर्यक् लोक क्षेत्र लोक। तथा द्रव्य नो शुभ परिणाम घणो जिहां ते ऊर्द्धलोक क्षेत्र लोक कहियै।

५. प्रभु ! अधोलोक खित्तलोक कतिविध ? जिन कहै सप्त प्रकार।
रत्नप्रभा पृथ्वी यावत तल, सप्तम पृथ्वी धार।।

६. प्रभु ! तिरियलोक खित्तलोक कतिविध ?
जिन कहै असंख्य प्रकार।
जंबू द्वीप नैं जाव, स्वयंभूरमण समुद्र विचार।।

७. प्रभु ! ऊर्द्धलोक खित्तलोक कतिविध ? जिन कहै पनर प्रकार।
बार कल्प ग्रैवेयक अनुत्तर, सिद्ध शिला सुविचार।।

८. अधोलोक प्रभु ! किण संठाणे ? जिन कहै तप्राकार[1]।
अधोमुख जे सरावला नैं, संठाणे सुविचार।।

९. तिरियलोक प्रभु ! किण संठाणे ? जिन कहै झल्लरि[2] आकार।
ऊंचपणां थी अल्प कहीजै, तिरछो महाविस्तार।।

वा०—इह किलाष्टप्रदेशो रुचकस्तस्य चाधस्तनप्रतरस्याधो नवयोजनशतानि यावत्तिर्यग्लोकस्ततः परेणाधः स्थितत्वादधोलोकः साधिकसप्तरज्जुप्रमाणः 'तिरियलोयखेत्तलोए' त्ति रुचकापेक्षयाऽध उपरि च नव नव योजनशतमानस्तिर्यग्रूपत्वात्तिर्यग्लोक स्तद्रूपः क्षेत्रलोकस्तिर्यग्लोकक्षेत्रलोकः, 'उड्ढलोयखेत्तलोए' त्ति तिर्यग्लोकस्योपरि देशोनसप्तरज्जुप्रमाण ऊर्द्ध्वभागवर्तित्वादूर्द्ध्व लोकस्तद्रूपः क्षेत्रलोक ऊर्द्ध्वलोकक्षेत्रलोकः, अथवाऽधः—अशुभः परिणामो बाहुल्येन क्षेत्रानुभावाद् यत्र लोके द्रव्याणामसावधोलोकः, तथा तिर्यङ्—मध्यमानुभावं क्षेत्रं नातिशुभं नाप्यत्यशुभं तद्रूपो लोकस्तिर्यग्लोकः तथा ऊर्द्ध्वं—शुभः परिणामो बाहुल्येन द्रव्याणां यत्रासावूर्द्ध्वलोकः,

(वृ० प० ५२३, ५२४)

५. अहेलोयखेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—रयणप्पभापुढविअहेलोयखेत्तलोए जाव अहेसत्तमापुढविअहेलोयखेत्तलोए। (श० ११।९२)

६. तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! असंखेज्जविहे पण्णत्ते, तं जहा—जंबुद्दीवे दीवे तिरियलोयखेत्तलोए जाव सयंभुरमणसमुद्दे तिरियलोयखेत्तलोए। (श० ११।९३)

७. उड्ढलोयखेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पन्नरसविहे पण्णत्ते, तं जहा—सोहम्मकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए जाव (सं० पा०) अच्चुयकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए गेवेज्जविमाणउड्ढलोयखेत्तलोए अणुत्तरविमाणउड्ढलोयखेत्तलोए ईसिपब्भारपुढविउड्ढलोयखेत्तलोए। (श० ११।९४)

८. अहेलोयखेत्तलोए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?
गोयमा! तप्पागारसंठिए पण्णत्ते। (श० ११।९५)
'तप्पागारसंठिए' त्ति तप्रः—उडुपकः अधोलोकक्षेत्रलोकोऽधोमुखशरावाकारसंस्थान इत्यर्थः

(वृ० प० ५२४)

९. तिरयलोयखेत्तलोए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! झल्लरिसंठिए पण्णत्ते।

(श० ११।९६)

'झल्लरिसंठिए' त्ति अल्पोच्छ्रायत्वान्महाविस्तारत्वाच्च तिर्यग्लोकक्षेत्रलोको झल्लरीसंस्थितः

(वृ० प० ५२४)

१

२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. ऊर्द्धलोक प्रभु ! किण संठाणे ? तब भाखै जगतार।
ऊर्द्ध मुखे जे मृदंग[1] होवै, कहियै ते आकार ।।

१०. उड्ढलोयखेत्तलोए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! उड्ढमुइंगाकारसंठिए पण्णत्ते ।
(श० ११।९७)
'उड्ढमुइंगागारसंठिए' त्ति ऊर्द्ध्वः—ऊर्द्ध्वमुखो यो मृदंगस्तदाकारेण संस्थितो यः स यथा शरावसंपुटाकार इत्यर्थः । (वृ० प० ५२४)

११. हे प्रभु ! लोक[2] किसे संठाणे ? हिव जिन उत्तर एह।
सुप्रतिष्ठक संठाणे है, न्याय विचारी लेह ।।

वा०—सुप्रतिष्ठित स्थापनक, ते इहां आरोपित वारकादि ग्रहण करियै तथा विध करिकै हीज लोक सरीखापणां नी उपपत्ति थकी इति वृत्तौ। ऊंधा सरावला ऊपर कलशादिक स्थापन करै, ते आकारे जाणवूं। अनैं टबा में कह्यो आखला नैं आकारे।

११. लोए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! सुपइट्ठगसंठिए पण्णत्ते ।

१२. हेठै तो विस्तारवंत छै, मध्य सांकड़ो जाण।
जिम सप्तम शत प्रथम उद्देशक, जाव अंत कर आण ।।

वा०—जहा सत्तमसए इत्यादि जाव शब्द थकी इम जाणवुं—उप्पिं विसाले अहे पलियंकसंठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिय उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठिए तंसि च णं सासयंसि लोगंसि हेट्ठा विच्छिण्णंसि जाव उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठियंसि उप्पण्ण-नाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ-पासइ, अजीवे वि जाणइ-पासइ, तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ इत्यादीति ।

१२. हेट्ठा विच्छिण्णे मज्झे संखित्त (सं० पा०) जहा सत्तमसए (७।३) पढमुद्देसए जाव अंतं करेइ।
(श० ११।९८)

१३. हे भगवंत ! अलोक छै ते, कह्यो किसे संठाण ?
जिन कहै पोलागोला[3] नैं, आकारे तेह पिछाण ।।

१३. अलोए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! झुसिरगोलसंठिए पण्णत्ते ।
(श० ११।९९)
'झुसिरगोलसंठिए' त्ति अन्तःशुषिरगोलकाकारो
(वृ० प० ५२४)

१४. अधोलोक नैं विषे प्रभुजी ! स्यूं जीवा सुविशेष ?
तथा जीव नां देश कहीजै, जीवां तणां प्रदेश ?
१५. इम जिम दशमा शतक[4] तणें जे, प्रथम उद्देशे न्हाल।
जिम पूर्व दिशि कही तिम कहिवूं, यावत अद्धाकाल ।।

१४. अहेलोयखेत्तलोए णं भंते ! किं जीवा जीवदेसा जीवपदेसा
१५. एवं जहा इंदा दिसा तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव अद्धासमए । (श० ११।१००)
दशमशतेप्रथमोद्देशके यथा ऐन्द्री दिगुक्ता तथैव निरवशेषमधोलोकस्वरूपं भणितव्यं
(वृ० प० ५२४)

१६. तिरछे लोक प्रभु ! स्यूं जीवा ? एवं चेव अशेष।
इमज उर्द्ध लोक क्षेत्र लोके पिण, णवरं इतो विशेष ।।
१७. अरूपी नां भेद छै षट, अद्धा समयो नांहि।
रवि प्रकाश थकी उपनो ते, काल नहीं छै तांहि ।।

१६. तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! किं जीवा···
एवं चेव । उड्ढलोयखेत्तलोए वि, नवरं
१७. अरूवी छव्विहा, अद्धासमयो नत्थि ।
(श० ११।१०१)
ऊर्द्ध्वलोके तु रविप्रकाशाभिव्यंग्यकालो नास्ति तिर्यगधोलोकयोरेव रविप्रकाशस्य भावाद् अतः षडेव त इति । (वृ० प० ५२४)

---

१ 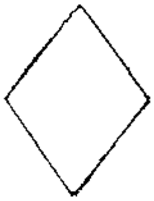
२
३ 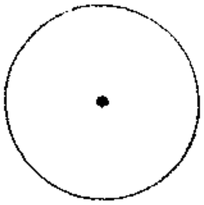

४. भ० १०।५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८. लोक विषे स्यूं जीव प्रभुजी ! बीजे शतके तास ।
उद्देशे दशमें तिण ठामें, पूछ्यो लोकाकाश ।।

१८. लोए णं भंते ! किं जीवा······
जहा बितियसए अत्थिउद्देसए (भ० २।१३६),
लोयागासे
यथा द्वितीयशते दशमोद्देशक इत्यर्थः ।
(वृ० प० ५२४)

१९. णवरं सात प्रकार अरूपी, खंध धर्मास्तिकाय ।
धर्मास्ती नों देश नहीं छै, लोक पूर्ण पूछाय ।।
२०. धर्मास्ती नां वलि प्रदेशक, अधर्मास्तिकाय ।
तेहनों देश नहीं छै तेहनां प्रदेश बहु कहिवाय ।।
२१. आगासत्थि नों खंध नहीं छै, आगासत्थि नों देश ।
तास प्रदेश काल ए सातू, शेष तिमज सुविशेष ।।

१९,२०. नवरं—अरूवि अजीवा सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा —धम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकायस्सदेसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, अधम्मत्थिकाए नोअधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा

२१. नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायस्स पदेसा अद्धा-समए सेसं तं चेव ।
(श० ११।१०२)

सोरठा

२२. द्वितीय शतके[1] तास, दशमा उद्देशा मझै ।
पूछ्यो लोकाकाश, तिहां अरूपी पंचविध ।।
२३. लोकाकाश आधार, तिण ठामें वांछ्यो तिहां ।
अपर भेद सुविचार, पंच कह्या इण कारणे ।।
२४. पूर्ण लोक मझार, इहां आकाश आधेय छै ।
सप्त भेद सुविचार, बे भेद आकाश तणां गिण्या ।।

२२-२४. यथा द्वितीयशते दशमोद्देशक इत्यर्थः 'लोयागासे' त्ति लोकाकाशे विषयभूते जीवादय उक्ता एवमिहापीत्यर्थः, 'नवर' मिति केवलमयं विशेषः—तत्रारूपिणः पंचविधा उक्ता इह तु सप्तविधा वाच्याः तत्र हि लोकाकाशमाधारतया विवक्षितमत आकाशभेदास्तत्र नोच्यन्ते इह तु लोकाऽस्तिकायसमुदायरूप आधारतया विवक्षितोऽत आकाशभेदा अप्याधेया भवन्तीति सप्त । (वृ० प० ५२४)

वा०—तिहां दूजा शतक नां १० उद्देशा में आकाश रूप लोक में धर्मास्तिकायादिक नीं पूछा करी । तिण कारणे आकाशास्ति नां बे भेद नहीं लिया । अनें इहां पंचास्तिकाय समुदाय रूप लोक नैं विषे पूछा करी तिणसूं आकाशास्ति नां पिण बे भेद लिया । इण हेते बीजे शतक ५ भेद अनें इहां सात भेद लिया ।

२५. *हे भगवंत ! अलोक विषे स्यूं जीवा इम जिम जाण ।
दूजे शतक उद्देशे दशमें, कह्यो तेम पहिछाण ।।
२६. नो जीवा नो देश जीव नां, तिमहिज जावत उक्त ।
अगुरुलघु ते अनंत अगुरुलघु, गुण करनैं संयुक्त ।।
२७. सर्वाकाश नों भाग अनंतमुं, कहियै लोक आकाश ।
तेह लोकाकाश करिनैं ऊणो, ए जिन वचन प्रकाश ।।

२५-२७. अलोए णं भंते ! किं जीवा·········
एवं जहा अत्थिकायउद्देसए (भ० २।१४०) अलोयागासे, तहेव निरवसेसं जाव सव्वागासे अणंतभागूणे ।
(भ० श० ११।१०३)

२८. अधोलोक नां एक आकाश, प्रदेश विषे भगवान ।
स्यूं जीवा कै देश जीव नां, जीव प्रदेश पिछान ।।
२९. तिहां अजीव कहीजै कै वलि, अजीव देश प्रदेश ?
गोतम ए षट प्रश्न पूछ्यां, उत्तर दियै जिनेश ।।
३०. नो जीवा ते खंध आश्रयी, आखो जीव न पाय ।
बहु जीव तणां बहु देश अनैं वलि, बहु प्रदेश पिण थाय ।।
३१. बहु अजीव पिण ह्वै तिण ठामें, अजीव नां बहु देश ।
अजीव नां बहु प्रदेश ह्वै, ए पांचूंइ लहेस ।।

२८. अहेलोगखेत्तलोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे किं जीवा जीवदेसा जीवपदेसा ?
२९. अजीवा अजीवदेसा अजीवपदेसा ?
३०. गोयमा ! नो जीवा जीवदेसा वि जीवपदेसा वि
३१. अजीवा वि अजीवदेसा वि अजीवपदेसा वि

वा०—एक प्रदेश नें विषे जीव नीं अवगाहना नथी ते माटै खंध आश्री जीव न कह्या । अनें जीव-देश ते घणां जीव नां एकेक देश नें अवगाहन थकी

वा० —नो जीवा एकप्रदेशे तेषामनवगाहनात्, बहूनां पुनर्जीवानां देशस्य प्रदेशस्य चावगाहनात् उच्यते,

---

* लय : तू चामड़ा नी पूतली ! भजन कर हे

1. भ० २।१३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीव नां घणा देश पिण कहियै ।

अनैं एक आकाश प्रदेश में अजीवावि कहियै ते संपूर्ण धर्मास्तिकायादि अजीव द्रव्य एक आकाश प्रदेश में न अवगाहै तो पिण परमाणु द्विप्रदेशिकादि घणां संपूर्ण द्रव्य नो अवगाहक एक आकाश प्रदेश छै ते माटै अजीवावि कहियै ।

अनैं अजीवदेसावि ते घणां द्विप्रदेशादि खंध आप आपरा देशनां अवगाहन थकी अजीव नां घणां देश कह्या ।

अजीवप्पदेसावि कह्या ते धर्मास्ति अनैं अधर्मास्ति ए बिहुं नों एकेक प्रदेश अवगाहै । अनै पुद्गल द्रव्य नें घणां प्रदेश अवगाहन थकी एक आकाश प्रदेश में अजीव नां घणां प्रदेश पिण कहियै ।

३२. जीव देश ते निश्चै करि बहु, एकेंद्रिय बहु देश ।
इक संयोगिक ए इक भांगो, हिव द्विकयोग कहेस ।।

३३. अथवा बहु एकेंद्रिय केरा, बहु देश कहिवाय ।
एकबेइंद्री जीव केरो, एक देश तिहां पाय ।।

वा०—इहां प्रश्नोत्तर इम कहिवूं—अलोके हे भगवन् ! स्यूं जीव इत्यादि एवं जहा—इत्यादि अतिदेश थी इम कहिवूं—

अलोयागासे णं भंते ! किं जीवा ? जीवदेसा ? जीवप्पदेसा ? अजीवा ? अजीवदेसा ? अजीवप्पदेसा ?

गोयमा ! नो जीवा, नो जीवदेसा, नो जीवप्पदेसा, नो अजीवा, नो अजीवदेसा, नो अजीवप्पदेसा, एगे अजीवदव्वदेसे अगरुयलहुए अणंतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूणे त्ति ।

तिहां सर्व आकाश अनंत भाग ऊणो । एहनो ए अर्थ—लोक लक्षण समस्त आकाश नैं अनंतवें भागे करी न्यून सर्व आकाश अलोक इति ।

३४. अथवा घणां एकेंद्रिय केरा, घणां देश तिम ठाम ।
घणां बेइंद्री जीव केरा, घणां देश छै ताम ।।

३५. इम जिम दशमें शतक[1] देखाल्या, तीन भांगा रे मांहि ।
विचलो भांगो जे नहिं पावै, तेह संभवै नांहि ।।

सोरठा

३६. बहु एकेंद्री बहु देश, एक बेइंद्री जीव नां ।
घणां देश सुविशेष, ए मध्यम भांगो नथी ।।

३७. एक आकाश प्रदेश, एक बेइंद्री जीव नां ।
देश बहु न कहेस, ते माटै नवि संभवै ।।

३८. एक प्रदेश जोय, एक बेइंद्री जीव नां,
इक देशज अवलोय, तिण सूं ए भांगो नथी ।।

वा०—एक आकाश प्रदेश नैं विषे एक बेइंद्री नां घणां प्रदेश छै । पिण एक आकाश एक प्रदेश अवगाह्यां माटै तेहनैं बेइंद्रिय नों एक देशहीज कहियै ।

३९. *जावत अथवा घणां एकेंद्रिय, घणां देश छै तास ।
घणां अणिंदिया नां बहु देशज, इहां लग सर्व अभ्यास ।।

***लय : तू चामड़ा नी पूतली ! भजन कर हे**

१. भ० १०।६

जीवदेसावि जीवपएसावि' त्ति ।

० यद्यपि धर्मास्तिकायाद्यजीवद्रव्यं नैकत्राकाशप्रदेशेऽवगाहते तथापि परमाणुकादिद्रव्याणां कालद्रव्यस्य चावगाहनादुच्यते—'अजीवावि' त्ति

० द्वयणुकादिस्कन्धदेशानां त्ववगाहनादुक्तम् —'अजीवदेसावि' त्ति

० धर्माधर्मास्तिकायप्रदेशयोः पुद्गलद्रव्यप्रदेशानां चावगाहनादुच्यते—'अजीवपएसावि' त्ति ।

३२. जे जीवदेसा ते नियमं एगिंदियदेसा

३३. अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसे

३४. अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा

३५. एवं मज्झिल्लविरहिओ
'एवं मज्झिल्लविरहिओ' त्ति दशमशतप्रदर्शितत्रिकभंगे । (वृ० प० ५२५)

३६. 'अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियदेसा य' इत्येवंरूपो यो मध्यमभंगस्तद्विरहितोऽसौ त्रिकभंगः । (वृ० प० ५२५)

३७,३८. द्वीन्द्रियस्यैकस्यैकत्राकाशप्रदेशे बहवो देशा न सन्ति, देशस्यैव भावात् (वृ० प० ५२५)

३९. जाव अहवा एगिंदियदेसा य अणिंदियाण य देसा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४०. जे जीव प्रदेशा ते निश्चै करि, घणां एकेंद्रिय तास।
बहु प्रदेश ए इकसंयोगिक, हिवै द्विकयोग अभ्यास ।।

४०. जे जीवपदेसा ते नियमं एगिंदियपदेसा

४१. अथवा घणां एकेंद्रिय केरा, घणां प्रदेश तहंत।
एक बेइंद्रिय जीव केरा, घणां प्रदेश कहंत ।।

४१. अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियस्सपदेसा

४२. अथवा घणां एकेंद्रिय केरा, घणां प्रदेशज पाय।
घणां बेइंद्रिय जीव केरा, घणां प्रदेश कहाय ।।

४२. अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियाण य पदेसा

४३. दशम शतक[1] नैं प्रथम उद्देशे, तीन भांगा अख्यात।
तेह मांहिलो पहिलो भांगो, पावै नहिं विख्यात ।।

४३. एवं आइल्लविरहिओ

४४. घणां एकेंद्रिय जीव केरा, घणां प्रदेश कहंत।
इक प्रदेश इक बेइंद्री नों, ए धुर भंग न हुंत ।।

४४. 'अहवा एगिंदियस्स पएसा य बेंदियस्स पएसा य' इत्येवंरूपाद्यभंगकविरहितस्त्रिभंगः। (वृ० प० ५२५)

सोरठा

४५. एक आकाश प्रदेश, समुद्‌घात केवल विना।
इक जंतु नों विशेष, एक प्रदेश न संभवै ।।

४६. एक प्रदेश मझार, केवल विण अन्य जीव नों।
असंख्यात अवधार, तिण सूं ए धुर भंग नहीं ।।

४५,४६. नास्त्येवैकत्राकाशप्रदेशे केवलिसमुद्‌घातं विनैकस्य जीवस्यैकप्रदेशसंभवोऽसंख्यातानामेव भावादिति।

४७. *जाव पंचेंद्री लग इम कहिवो, इकयोगिक भंग एक।
द्विकसंयोगिक बे भांगा पिण, धुर भांगो नहिं पेख ।।

४७. जाव पंचिदिएसु

४८. अणिंदिया में इकयोगिक इक, द्विकयोगिक भंग तीन।
तीनूंई भांगा नो संभव, केवलि इहां सुचीन।

४८. अणिंदिएसु तियभंगो
'अणिंदिएसु तियभंगो' त्ति अनिन्द्रियेषूक्तभंगकत्रयमपि संभवतीतिकृत्वा तेषु तद्वाच्यमिति। (वृ० प० ५२५)

४९. जेह अजीवा ते द्विविध छै, रूपी अजीव हेव।
अरूपी अजीव छै वली, रूपी नां चिहुं भेव ।।

४९. जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूवी अजीवा य अरूवी अजीवा य रूवी तहेव।
'रूवी तहेव' त्ति स्कन्धाः देशाः प्रदेशा अणवश्चेत्यर्थः। (वृ० प० ५२५)

५०. अरूपी अजीव केरा, पंच भेद कहिवाय।
नो धमत्थिकाए भाख्यो, ते खंध आश्री नांय ।।

५०. जे अरूवी अजीवा ते पंचविहा पण्णत्ता तं जहा—नोधम्मत्थिकाए

५१. धर्मास्ति नों देश पावै, तास प्रदेश निहाल।
अधर्मास्ति नां पिण बेहुं, पंचम अद्धा काल ।।

५१. धम्मत्थिकायस्स देसे धम्मत्थिकायस्स पदेसे एवं अधम्मत्थिकायस्स वि (सं० पा०) अद्धासमए। (श० ११।१०४)

वा०—'नो धमत्थिकाए' त्ति एक आकाश प्रदेश नें विषे संपूर्ण धर्मास्तिकाय न संभवै। ते धर्मास्ति नें असंख्यात प्रदेश अवगाहीपणा थकी।

'धम्मत्थिकायस्स देसे' त्ति यद्यपि एक आकाश प्रदेश में धर्मास्ति नो प्रदेश होज हुवै तो पिण देश नाम अवयव नो छै—'देशोवयवः इति वचनात्' इण कारणे देश प्रदेश नां अभेदोपचार थकी अवयवमात्र नी विवक्षा करी नें अनें निरंशता तेहमें छै तो पिण तेहनीं अविवक्षा करी नें धर्मास्ति नो देश इम कह्यो। एतले खंध नां अवयव नें देश कहियैं अनें जेहनों बीजो अंश नहीं ते निरंश नें प्रदेश कहियैं। इहां अवयव नीं अपेक्षाये देश कह्युं अनें निरंशपणुं पिण तेहनें विषे छै, पिण तेहनें वंछ्यो नथी। इण कारण धर्मास्ति नुं देश कह्युं।

वा०—'नो धम्मत्थिकाये' त्ति नो धर्मास्तिकाय एकत्राकाशप्रदेशे संभवत्यसंख्यातप्रदेशावगाहित्वात्तस्येति।
'धम्मत्थिकायस्स' देसे त्ति यद्यपि धर्मास्तिकायस्यैकत्राकाशप्रदेशे प्रदेश एवास्ति तथापि देशोऽवयव इत्यनर्थान्तरत्वेनावयवमात्रस्यैव विवक्षितत्वात् निरंशतायाश्च तत्र सत्या अपि अविवक्षितत्वाद्धर्मास्तिकायस्य देश इत्युक्तं

*लय : तू चामड़ा नी पूतली ! भजन कर हे
१. भ० १०।६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'धम्मत्थिकायस्स पदेस' त्ति धर्मास्तिकाय नों प्रदेश छै। इहां खंध नां अवयव नैं नथी वंछ्यो, अंश रहितपणुं ते प्रदेश, ते निरंशपणुं वंछवे करी प्रदेश कह्युं।

प्रदेशस्तु निरुपचरित एवास्तीत्यत उच्यते—'धम्मत्थिकायस्स पएसे' त्ति। (वृ० प० ५२५)

५२. तिरछा लोक तणैं हे प्रभुजी ! एक आकाश प्रदेश।
स्यूं जीवा ? जिम अधोलोक में, आख्यो तेम कहेस ॥

५३. इमहिज ऊंचा लोक विषे पिण, णवरं नहिं छै काल।
सूर्य चार प्रतिबिंब नहीं त्यां, अन्य चिउं भेद निहाल ॥

५४. लोक तणां इक गगन-प्रदेश विषे स्यूं जीवा स्वाम !
अधोलोक नैं एक आकाश-प्रदेश विषे तिम ताम ॥

५२. तिरियलोगखेत्तलोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे किं जीवा ? एवं जहा अहेलोगखेत्तलोगस्स तहेव

५३. एवं उड्ढलोगखेत्तलोगस्स वि नवरं—अद्धासमयो नत्थि।
अरूवि चउव्विहा। (श० ११।१०५)

५४. लोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे किं जीवा ? जहा अहेलोगखेत्तलोगस्स एगम्मि आगासपदेसे। (श० ११।१०६)

५५. अलोक नैं प्रभु ! एक आकाश, प्रदेश जीवा आदि।
श्री जिन भाखै नो जीवा वलि, जीव देश नहिं लाधि ॥

५६. तिमहिज जाव अनंत अगुरुलघु गुण करि संयुक्त तास।
सर्व आकाश तणैंज अनंतम भाग ऊण आकाश ॥

५५. अलोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे—पुच्छा। गोयमा ! नो जीवा नो जीवदेसा

५६. तं चेव जाव (सं० पा०) अणंतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासस्स अणंतभागूणे (श० ११।१०७)

वा०—अलोक नां एक आकाश-प्रदेश नैं विषे स्यूं जीवा इत्यादि पूछा—हे गोतम ! नो जीवा नो जीवदेसा तं चेव जाव—जिम लोक नां प्रश्न नां उत्तर तिमहिज उत्तर। किहां लगैं कहिवूं ? नो जीवप्पदेसा नो अजीवा नो अजीवदेसा नो अजीवप्पदेसा एगे अजीवदव्वदेसे इहां लगैं उत्तर जाव शब्द में जाणवो। जाव शब्द आगैं एहवो पाठ—अगुरुयलहुए अणंतेहिं अगुरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूणे—अगुरुयलहुए त्ति प्रदेश अगुरुलघु छै अनंत अगुरुलघु गुणे करी संयुक्त एहवूं एक आकाश प्रदेश छै। वले ते सर्व आकाश अनंत भागरूपपणैं ऊण एक प्रदेश छै। इहां सव्वागासस्स छठी विभक्ति कही, ते भणी सर्व आकाश नैं अनंत भागरूपपणैं ऊण ते एक प्रदेश कह्युं। अनैं इण उद्देशेहीज पूर्वे अलोकाकाश नो प्रश्न इम पूछ्यो—अलोकाकाश नैं विषे हे भगवंत ! स्यूं जीवा ? इम जिम अस्तिकाय उद्देशो बीजा शतक नुं दशमा नैं भलायो तिहां नो जीवा इत्यादि छहुं बोल नुं निषेध कह्युं—एगे अजीवदव्वदेसे अगुरुयलहुए अणंतेहिं अगुरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूणे। एहनुं अर्थ—ते अलोकाकाश केहवुं ? एक आगासत्थिकाय अजीव द्रव्य नुं देश छै। वलि अलोकाकाश केहवुं छै ? अगुरुलघु छै पिण गुरुलघु नथी। अनैं अनंता स्वपर्याय परपर्याय रूप गुण अगुरुलघु स्वभाव करिकैं संयुक्त। सव्वागासे अणंतभागूणे अणंत भाग ऊण सर्व आकाश छै एतलै सर्व आकाश नैं अणंतवें भाग लोक छै ते माटै अणतवें भाग ऊण सर्व आकाश अलोकाकाश नैं कह्युं। इहां सव्वागासे प्रथम विभक्ति कही ते भणी ए अलोकाकाश लोक जितरो ऊण सर्व आकाश छै अनैं एक प्रदेश री पूछा में सव्वागासस्स इहां छठी विभक्ति कही ते सर्वाकाश नैं अणंतभागरूपपणैं ऊण ते एक प्रदेश छै इति तत्वं।

५७. द्रव्य थकी जे अधोलोक में, अनंत जीव द्रव्य हुंत।
वलि अनंत अजीव द्रव्य छै, जीवाजीव अनंत ॥

५८. इमहिज तिरछा क्षेत्र लोक में, ऊर्द्ध लोक इम हुंत।
जीव अनंत अजीव अनंता, जीवाजीव अनंत ॥

५९. द्रव्य थकीज अलोक विषे जे, जीव द्रव्य छै नांय।
वलि अजीव द्रव्य पिण नहिं छै, जीवाजीव न पाय ॥

५७. दव्वओ णं अहेलोगखेत्तलोए अणंता जीवदव्वा अणंता अजीवदव्वा अणंता जीवाजीवदव्वा

५८. एवं तिरियलोयखेत्तलोए वि एवं उड्ढलोयखेत्तलोए वि

५९. दव्वओ णं अलोए नेवत्थि जीवदव्वा नेवत्थि अजीवदव्वा नेवत्थि जीवाजीवदव्वा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६०. एक आकाश अजीव द्रव्य नुं, देश तिहां जिन ब्रूण।
जाव सर्व आकाश नुं ए, भाग अनंतमें ऊण ।।

६१. काल थकी जे अधोलोक ते, जाव न हुवो किवार।
न हुवै न हुस्यै ए, नहिं तीनूं, जाव नित्य सुविचार ।।

६२. एवं जाव अलोक लगै जे, जाव शब्द रै मांय।
तिरिय लोक नें ऊर्द्ध लोक ए, काल थकी कहिवाय ।।

६३. भाव थकी जे अधोलोक में, अनंत वर्ण पर्याय।
जिम खंधक अधिकारे आख्यो, तेम इहां कहिवाय ।।

६४. जाव अनंत अगुरुलघु पजवा, एवं जावत लोय।
जाव शब्द में तिरिय ऊर्द्ध है, भाव थकी ए जोय ।।

६५. भाव थकीज अलोक विषे जे, नहीं वर्ण पर्याय।
जावत नहीं अगुरुलघु पजवा, पुद्गलादिक ए नांय ।।

६६. एक आकाश अजीव द्रव्य नुं, देश तिहां जिन ब्रूण।
जाव सर्व आकाश अछे ए, भाग अनंतमें ऊण ।।

६७. शत इग्यारम दशम दोयसौ, बत्तीसमीं ए ढाल।
भिक्खू भारीमाल ऋषिराय प्रसादे,
'जय-जश' मंगलमाल ।।

६०. एगे अजीवदव्वदेसे जाव (सं० पा०) सव्वागासस्स अणंतभागूणे।

६१. कालओ णं अहेलोयखेत्तलोए न कयाइ नासि, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ

६२. एवं तिरियलोयखेत्तलोए, एवं उड्ढलोयखेत्तलोए एवं अलोए।

६३. भावओ णं अहेलोयखेत्तलोए अणंता वण्णपज्जवा (सं० पा०) जहा खंदए (भ० २।४५)

६४. जाव (सं० पा०) अणंता अगरुयलहुयपज्जवा एवं तिरियलोयखेत्तलोए, एवं उड्ढलोयखेत्तलोए एवं लोए।

६५. भावओ णं अलोए नेवत्थि वण्णपज्जवा जाव (सं० पा०) नेवत्थि गरुयलहुयपज्जवा[1]

६६. एगे अजीवदव्वदेसे जाव (सं० पा०) अणंतभागूणे। (श० ११।१०८)

ढाल : २३३

दूहा

१. मोटो लोक कितो प्रभु ! जिन कहै जंबू एह।
भ्यंतर सगला द्वीप नें, यावत परिधि कहेह ।।

इहां जावत शब्द थकी इम जाणवो—
समुद्दाणं सव्वब्भंतराइए सव्वखुड्डाए, वट्टे—तेल्लापूयसंठाणसंठिए, वट्टे—रहचक्कवालसंठाणसंठिए, वट्टे—पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिए, वट्टे—पडिपुण्णचंद-संठाणसंठिए, एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलससहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं च धणु-सयं तेरस अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहियंति।

*गोयमजी ! सांभलजै चित ल्याय ।। (ध्रुपदं)

२. तिण काले नें तिण समें जी, षट सुर महाऋद्धिवंत।
यावत महासुख नां धणी जी, वलि महाईश्वरवंत[1]।

१. लोए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव...परिक्खेवेणं।

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं छ देवा महिड्ढीया जाव महासोक्खा

*लय : बंधविया ! ए कुण आया रे आज

१. 'महासोक्खे' के बाद मूलपाठ में कोई शब्द नहीं है। किन्तु इससे पहले 'जाव' शब्द है। 'जाव' की पूर्ति इसी ग्रंथ के ३।४ से की गई है। वहां महासोक्खे के बाद 'महाणुभागे' पाठ है। यह जोड़ उसी के आधार पर होनी चाहिए।

१. अलोक में वर्णपर्यव यावत् गुरुलघुपर्यव नहीं होते, किन्तु अगुरुलघु पर्यव होते हैं। इसलिए 'नेवत्थि गरुयलहुयपज्जवा' यहीं तक पाठ होना चाहिए। किन्तु अंगसुत्ताणि भाग २ पृ० ५०८ पा० टि० ८ के अनुसार वृत्तिकार को 'नेवत्थि अगरुयलहुयपज्जवा' पाठ उपलब्ध हुआ। उसके अर्थ की संगति बिठाने के लिए वृत्तिकार ने उसकी व्याख्या इस प्रकार की है—'अलोक में अगुरुलघु पर्यवों से युक्त द्रव्य पुद्गलों का अभाव है।' यदि वृत्तिकार को शुद्ध पाठ उपलब्ध होता तो इस व्याख्या की आवश्यकता ही नहीं होती।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. जंबूद्वीप मेरू तणी जी, प्रवर चूलिका एह।
सर्व थकी वींटी रह्या जी, सर्व प्रकारे जेह।।

४. हिव चिहुं दिशाकुमारिका जी, महत्तरिका महाऋद्ध।
धरणहार तेहनी तिके जी, चिहुं बलिपिंड कर लिद्ध।।

५. जंबूद्वीप चिहुं दिशि विषे जी, बाहिर मुख कर तेह।
ते च्यारूं ऊभी रही जी, चिहुं बलि पिंडी लेह।।

६. सम काले बलिपिंडिका जी, बाहिरली दिशि मांय।
न्हाखै दिशाकुमारिका जी, बलि प्रभु भाखै वाय।।

७. एक एक ते देवता जी, चिहुं बलि-पिंड तदर्थ।
धरणि पड्यां पहिलां तिके जी, शीघ्र ग्रहण समर्थ।।

८. हे गोतम ! ते देवताजी, पूर्वे भाखी जेह।
तिण उत्कृष्ट जावत बलि जी, सुर गति करनैं तेह।।

वा०—इहां जाव शब्द कहिवा थी इम जाणवो—तुरियाए आकुलपणैं करी, चवलाए—काया नैं चापलपणैं करि, चंडाए—गति नां उत्कर्ष योग थकी चंड ते रोद्र गति करी, सीहाए— दृढ़ स्थिरपणैं करी, उद्धयाए- उद्धत ते अतिही दर्प्प गति करी, जइणाए—विपक्ष गति नैं जीतवैं करी, छेयाए—छेक ते निपुण गति करी, दिव्वाए—स्वर्ग नैं विषे थइ एतलै प्रधान गति करी[1]।

९. जंबू नां मेरू थकी जी, पूरव स्हामो पेख।
एक देवता चालियो जी, तिण गति करिनैं देख।।

१०. इमहिज दक्षिण सामुहो जी, इक सुर चाल्यो तेम।
इक सुर पश्चिम सामुहो जी, उत्तर साहमों एम।।

११. ऊंची दिशि इक देवता जी, तिण गति चाल्यो ताम।
इक सुर नीचो चालियो जी, तिणहिज गति कर आम।।

१२. तिण काले नैं तिण समे जी, किणहिक जायो बाल।
सहस्र वर्ष तस आउखो जी, सुर चाल्यो तिण काल।।

१३. बालक नां माता-पिता जी, पाम्या मरण तिवार।
तो पिण ते सुर नां लहै जी, लोक तणो अंत पार।।

१४. ते बालक नों आउखो जी, क्षीण थयो तिणवार।
तो पिण सुर पामै नहीं जी, लोक तणो अंत पार।।

१५. क्षीण हुवै बालक तणी जी, हाड हाड नीं मींज।
तो पिण ते सुर चालतो जी, लोक अंत न लहीज।।

१६. तिम क्षीण हुवां ते बाल नां जी, आसप्तम कुल वंश।
तो पिण ते सुर नां लहै जी, लोक अंत नुं अंश।।

१७. नाम गोत ते बाल नां जी, हुवा विछेद तिवार।
तो पिण ते सुर नां लहै जी, लोक तणो अंत पार।।

१८. वलि गोतम पूछै तदा जी, ते सुर हे भगवान।
स्यूं जे क्षेत्र गयो घणो जी, कै बहु रह्यो सुजान?
[प्रभुजी ! कृपा करो जिनराज]

३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरे पव्वए मंदरचूलियं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठेज्जा।

४. अहे णं चत्तारि दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ चत्तारि बलिपिंडे गहाय

५. जंबुद्दीवस्स दीवस्स चउसु वि दिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा।

६. ते चत्तारि बलिपिंडे जमगसमगं बहियाभिमुहे पक्खिवेज्जा

७. पभू णं गोयमा ! तओ एगमेगे देवे ते चत्तारि बलिपिंडे धरणितलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए।

८. ते णं गोयमा ! देवा ताए उक्किट्ठाए जाव (सं० पा०) देवगईए

वा०—तत्र 'त्वरितया' आकुलया 'चपलया कायचापल्येन 'चण्डया' रौद्रया गत्युत्कर्षयोगात् 'सिंहया' दार्ढ्यस्थिरतया 'उद्धतया' दर्पातिशयेन 'जयिन्या' विपक्षजेतृत्वेन 'छेकया' निपुणया 'दिव्यया' दिवि भवयेति।
(वृ० प० ५२७)

९. एगे देवे पुरत्थाभिमुहे पयाते
'पुरत्थाभिमुहे' ति मेर्वपेक्षया। (वृ० प० ५२७)

१०. एगे देवे दाहिणाभिमुहे पयाते, एगे देवे पच्चत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे उत्तराभिमुहे पयाते,

११. एगे देवे उड्ढाभिमुहे पयाते, एगे देवे अहोभिमुहे पयाते।

१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससहस्साउए दारए पयाते।

१३. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति।

१४. तए णं तस्स दारगस्स आउए पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति।

१५. तए णं तस्स दारगस्स अट्ठिमिंजा पहीणा भवंति, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति।

१६. तए णं तस्स दारगस्स आसत्तमे वि कुलवंसे पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति।

१७. तए णं तस्स दारगस्स नामगोए वि पहीणे भवति नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति।

१८. तेसि णं भंते ! देवाणं किं गए बहुए? अगए बहुए?

---

१ यह वार्तिका वृत्त्यनुसारी पाठ के आधार पर की गई है। अंगसुत्ताणि भाग २ श० ११।११० में चंडाए के बाद 'जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धयाए' पाठ है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९. वीर कहै सुण गोयमा जी ! गयो क्षेत्र बहु होय।
रह्यो क्षेत्र बहुलो नहीं जी, तास मान तूं जोय ।।

१९. गोयमा ! गए बहुए, नो अगए बहुए,

२०. गयो क्षेत्र छै तेहथी जी, रह्यो क्षेत्र जे पथ।
असंख्यातमों भाग छै जी, न गयो इतरो खेत ।।

२०. गयाओ से अगए असंखेज्जइभागे

२१. रह्यो क्षेत्र छै तेहथी जी, गयो क्षेत्र सुविचार।
असंख्यातगुणो आखियो जी, अदल न्याय अवधार ।।

२१. अगयाओ से गए असंखेज्जगुणे

सोरठा

२२. पूर्व आदि दिशि च्यार, अर्द्ध रज्जु गिरि मेरु थी।
ऊर्द्ध अधो अवधार, सप्त रज्जु न्यूनाधिके ।।

२२. ननु पूर्वादिषु प्रत्येकमर्द्धरज्जुप्रमाणत्वाल्लोकस्योर्द्ध्वाधश्च किञ्चिन्न्यूनाधिकसप्तरज्जुप्रमाणत्वात्तुल्यया गत्या गच्छतां देवानां (वृ० प० ५२७)

२३. षट दिशि में सुर माग, अगत क्षेत्र गत क्षेत्र थी।
असंख्यातमें भाग, न्याय तास किम एहनों ।।

२३. कथं षट्स्वपि दिक्षु गतादगतं क्षेत्रमसंख्यातभागमात्रं (वृ० प० ५२७)

२४. तथा अगत थी जाण, असंख्यात गुण क्षेत्र गत।
एहनों पिण पहिछाण, किण विध न्याय कहीजियै ।।

२४. अगताच्च गतमसंख्यातगुणमिति (वृ० प० ५२७)

२५. घन कृत कल्पित लोग, लांबो चोडो सप्त रज्जु।
इतरो जाडो जोग, विच मंदर सुर अवतरण ।।

२५. घनचतुरस्रीकृतस्य लोकस्यैव कल्पितत्वान्न दोषः। (वृ० प० ५२७)

२६. इण गति करि लोकंत, बहु काले पावै न सुर।
तो झट किम आवंत, अच्युत जिन जन्मादिके ?

२६. ननु यद्युक्तस्वरूपयाऽपि गत्या गच्छन्तो देवा लोकान्तं बहुनापि कालेन न लभन्ते तदा कथमच्युताज्जिनजन्मादिषु द्रागवतरन्ति (वृ० प० ५२७)

२७. बहुत क्षेत्र ए जोय, अल्प काल अवतरण को।
तसु उत्तर अवलोय, वृत्तिकार इम आखियो ।।

२७. बहुत्वात्क्षेत्रस्याल्पत्वादवतरणकालस्येति। (वृ० प० ५२७)

२८. आखी मंद गति एह, जिन जनमादिक अवसरे।
सुर अवतरण करेह, अति गति शीघ्र करी इहां ।।

२८. सत्यं, किन्तु मन्देयं गतिः जिनजन्माद्यवतरणगतिस्तु शीघ्रतमेति। (वृ० प० ५२७)

वा०—इहां शिष्य प्रश्न करै जो पूर्वे कही तिण गति करिकै जाता थका पिण देवता बहु काल करिकै पिण लोक नों अंत न पामै तो बारमा देवलोक नां इंद्रादि जिन जन्मादि नैं विषे शीघ्र किम अवतरे, क्षेत्र नां बहुपणां थकी अनैं अवतरण काल नां अल्पपणां थकी। इम शिष्य पूछ्ये थके गुरु कहै—ए सत्य, पिण पूर्वे ए सुर नीं गति कही ते मंद छै। अनै जिन जन्मादि काले सुर आवै ते गति अतिही शीघ्र छै[1]।

२९. लोक इतो मोटो कह्यो जी, कहै गोतम नैं जिनेश।
एकादशमां शतक नों जी, दशम उद्देशक देश ।।

२९. लोए णं गोयमा ! एमहालए पण्णत्ते। (श० ११।१०९)

३०. दोयसौ नैं तेतीसमींजी, आखी ढाल उदार।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी जी, 'जय-जश' हरष अपार ।।

१. इस वार्तिका का निर्माण जिस वृत्ति के आधार पर किया गया है, वह पूर्ववर्ती गाथा २६-२८ के सामने उद्धृत है। इसलिए यहां वार्तिका के सामने उसे नहीं रखा गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : २३४

दूहा

१. अलोक प्रभु ! मोटो कितो ? दाखै ताम दयाल ।
समयक्षेत्र मनुक्षेत्र ए, जोजन लख पैंताल ।।

२. खंधक नैं अधिकार जिम, जाव परिधि लग जोय ।
आख्यो तिम कहिवूं इहां, सगलोई अवलोय ।।

*प्रभु इम भाखै रे ।। (ध्रुपदं)

३. तिण काले नैं तिण समें हो, दश सुर महाऋद्धवंत ।
तिमज जाव मंदर-चूलिका हो, वींट रह्या धर खंत ।।

४. अथ अठ दिशाकुमारिका हो, महत्तरिका महाऋद्ध ।
धरणहार तेहनीं सही हो, अठ बलि-पिंड कर लिद्ध ।।

५. मानुसुत्तर गिरि विषे हो, च्यारूंई दिशि मांहि ।
च्यारूंई बिदिशि विषे वली हो,
रहि बाहिर मुख कर ताहि ।।

६. तेह अष्ट बलि-पिंड नैं हो, जमगसमग समकाल ।
न्हाखै बाहिर सनमुखी हो, बलि कहै दीनदयाल ।।

७. इकइक सुर अठ पिंड प्रतै हो, धरण पड्यां पहिलाह ।
ग्रहिवा नैं समर्थ होवै हो, शीघ्रपणैं जे ओछाह ।।

८. हे गोतम ! ते देवता हो, रहि लोकांते ताय ।
तिण उत्कृष्टी गति करी हो, चाल्यो अलोक रै मांय ।।

९. असब्भावपट्ठवणा करी हो, अलोक में सुर गति नांय ।
तिणसूं अणहुंती कल्पना हो, तिण करि ए कहिवाय ।।

१०. इक सुर पूरव सामुहो हो, अग्निकूण इक पेख ।
यावत एक ईशाण में हो, एक ऊर्द्ध अधो एक ।

११. तिण काले नैं तिण समे हो, जायो किणहि रै पूत ।।
लक्ष वर्ष रो आउखो हो, निज घर राखण सूत ।।

१२. ए बालक नां माता पिता हो, काल कियो तिणवार ।।
तो पिण सुर ते अलोक नां हो, निश्चै न पामै पार ।

१३. लोक तणो जिम आखियो हो, तिणहिज रीते ताम ।
अलोक नों कहिवूं इहां हो, सर्व पाठ अभिराम ।।

१४. जावत ते सुरवर तणैं हो, स्यूं गयो क्षेत्र बहु होय ?
कै अणगयो क्षेत्र रह्यो तिको हो, बहुलो कहियै सोय ?

१५. जिन भाखै सुण गोयमा ! हो, गयो क्षेत्र बहु नांय ।
अणगयो क्षेत्र रह्यो घणुं हो, वलि कहै आगल न्याय ।।

---

१. अलोए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! अयण्णं समयखेत्ते पणयालीसं जोयणसय-सहस्साइं

२. जहा खंदए (भ० २।४७) जाव परिक्खेवेणं ।

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं दस देवा महिड्ढिया जाव महासोक्खा जंबुद्दीवे दीवे मंदरे पव्वए मंदरचूलियं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं संचिट्ठेज्जा

४. अहे णं अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ अट्ठ बलि-पिंडे गहाय

५. माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स चउसु वि दिसासु चउसु वि विदिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा

६. ते अट्ठ बलिपिंडे जमगसमगं बहियाभिमुहे पक्खि-वेज्जा ।

७. पभू णं गोयमा ! तओ एगमेगे देवे ते अट्ठ बलिपिंडे धरणितलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए ।

८. ते णं गोयमा ! देवा ताए उक्किट्ठाए जाव (सं० पा०) देवगईए लोगंते ठिच्चा

९. असब्भावपट्ठवणाए
'असब्भावपट्ठवणाए' त्ति असद्भूतार्थकल्पनयेत्यर्थः
(वृ० प० ५२७)

१०. एगे देवे पुरत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे दाहिणपुरत्था-भिमुहे पयाते जाव (सं० पा०) उत्तरपुरत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे उड्ढाभिमुहे पयाते, एगे देवे अहोभि-मुहे पयाते ।

११. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससयसहस्साउए दारए पयाते ।

१२. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणंति ।

१३. तं चेव जाव (सं० पा०)

१४. तेसि णं भंते ! देवाणं किं गए बहुए ? अगए बहुए ?

१५. गोयमा ! नो गए बहुए, अगए बहुए

---

*लय : राम को सुजश घणो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. गयो क्षेत्र थी अनंतगुणो हो, अणगयो क्षेत्र पिछाण।
अणगया क्षेत्र थकी गयो हो, भाग अनंतमें जाण॥
१७. इतरो मोटो अलोक छै हो, कहै गोतम नें जिनेश।
एकादशमां शतक नों हो, दशम उद्देशम देश॥
१८. ढाल दोयसौ चोतीसमीं हो, भिक्षु नें भारीमाल।
ऋषिराय तणां प्रसाद थी हो, 'जय-जश' मंगलमाल॥

१६. गयाओ से अगए अणंतगुणे, अगयाओ मे गए अणंत-भागे।

१७. अलोए णं गोयमा! एमहालए पण्णत्ते।
(श० ११।११०)

ढाल : २३५

दूहा

१. पूर्वे लोकालोक नीं, वक्तव्यता पहिछाण।
लोक एक प्रदेश गत, एकेंद्रियादिक जाण॥

१. पूर्वं लोकालोकवक्तव्यतोक्ता, अथ लौकैकप्रदेशगतं वक्तव्यविशेषं दर्शयन्नाह— (वृ० प० ५२७)

* प्रभूजी ! आप तणी बलिहारी (ध्रुपदं)

२. लोक तणां सुविशेषे, कांइ एक आकाश प्रदेशे हो, प्र.।
जे एकेंद्री नां प्रदेशा, जाव पंचिंदि अणिंदि नां कहेसा हो, प्र.॥

२. लोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे जे एगिंदिय-पदेसा जाव पंचिंदियपदेसा अणिंदियपदेसा

३. बंध्या ते मांहोमांय, वलि मांहोमांहि फर्शाय हो, प्र.।
जाव अन्योअन्य जेह, घटपणें करी रहै तेह हो, प्र.॥
४. प्रभु! ते जीवां रा प्रदेश, त्यांरै मांहोमांहि सुविशेष हो, प्र.।
किंचित पीड़ा कहियै, अथवा बहु बाधा लहियै हो, प्र.॥
५. छेद त्वचा नों करेह ? जिन कहै अर्थ समर्थ न एह हो, प्र.।
वलि गोतम पूछंत, किण अर्थे पीड़ न हुंत ? हो, प्र.॥

३. अण्णमण्णबद्धा अण्णमण्णपुट्ठा जाव (सं० पा०) अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति ?

४. अत्थि णं भंते ! अण्णमण्णस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पायंति ?

५. छविच्छेदं वा करेंति ?
णो इणट्ठे समट्ठे। (श० ११।१११)
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ……आबाहं वा…
करेंति

६. जिन भाखै जिनराय, दृष्टांत देइ कहै वाय हो, गोयमजी।
नाटकणी इक होय, शृंगार तणो घर सोय हो॥
(गोयमजी ! सांभल तूं चित ल्याय॥
७. मनोहर वेश सुरीत, जावत ते युक्त संगीत हो, गो.।
जाव शब्द में जाण, रायप्रश्रेणी[1] रा पाठपिछाण हो, गो.॥
८. ते कहिवा इह रीत, संगत प्राप्ति करि सहीत हो, गो.।
तास गमन गति रूडी, मुख हास करोनें सनूरी हो, गो.॥
९. मृदु मंजुल वर वाणी, तनु चेष्टा तास बखाणी हो, गो.।
चारू बात विलास, लीला सहित बोलणो तास हो, गो.॥
१०. निपुणपणें करि जुक्त, उपचार करिनें संयुक्त हो, गो.।
एहवी नाटकणी ताहि, ते रंग स्थानक रै मांहि हो, गो.॥

६,७. गोयमा ! से जहानामए नट्टिया सिया—सिंगारा-गारचारुवेसा जाव (सं० पा०) कलिया।
'जाव कलिय' त्ति इह यावत्करणादेवं दृश्यं
(वृ० प० ५२७)

८,९. संगय-गय-हसिय - भणिय-चेट्ठिय - विलास-सललिय-संलाव

१०. निउणजुत्तोवयारकुसला………रंगट्ठाणंसि

***लय : स्वामीजी ! थांरा दर्शन**

१. सू० ७०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. जन सय वा सहंस सहीत, जन लक्ष सहित वर गीत हो, गो. ।
एहवो मंडप रमणीक, तिहां नाटकणी तहतीक हो, गो. ।।
१२. नाटक बत्तीस प्रकारे, तेह विषे इक नाटक देखाड़े हो, गो. ।
ते निश्चै गोतम ! जाणी, इम पूछै जिन गुणखाणी हो, गो. ।।

वा०—'बत्तीसइविहस्स नट्टस्स' त्ति ३२ भेद है जे नाटक नां, ते द्वात्रिंशत्-विध नाटक कहियै। ईहा-मृग-ऋषभ-तुरग-नर-मकर-विहग-व्याल-किन्नरादि-भक्तिचित्रो नाम एको नाट्यविधिः एतच्चरिताभिनयनमिति चेष्टा सूचक संभावियै छै। इम अनेरा पिण एकतीस विध रायप्रश्नेणि सूत्र(७९-११३) में कह्या, तिम कहिवा।

१३. ए नटणी नां देखणहारा, अणिमिस नेत्रे करि सारा हो, गो. ।
नटणी प्रति देखंता, सहु दिशि थी पास पेखंता हो, गो. ।।
१४. गोतम कहै जिवारे, हां भगवंत ! देखै तिवारे हो, गो. ।
वलि गोतम नें स्वाम, पूछै इहविध गुण, धाम हो, गो. ।।
१५. सहु जन नीं दृष्टि तिवारे, पड़ नटणी विषे जिवारे हो, गो. ?
हां प्रभु ! दृष्टि पडंत, वलि पूछै श्री भगवंत हो, गो. ।।

१६. ते सहु दृष्टी ताय, नटणी नैं पीड़ उपाय हो, गो. ।
त्वचा छेद ह्वै सोय, गोतम कहै पीड़ न होय हो, गो. ।।

१७. अथवा नाटकणी ताय, दृष्टि प्रतै पीड़ उपजाय हो, गो. ।
त्वचा छेद पिण थाय ? गोतम कहै ए पिण नांय हो, गो. ।।

१८. अथवा ते बहु दृष्टि, मांहोमांहि दृष्टि करि स्पृष्टि हो, गो ।
छविछेद बाधा उपजावै? गोतम कहै दुख न पमावै हो, प्र. ।।

१९. तिण अर्थे इम आख्यो, हे गोतम ! पूर्वे भाख्यो हो, गो. ।
रह्या एकेंद्रियादिक नां प्रदेश, बाधा छविछेद न लेश हो, गो. ।।

सोरठा

२०. लोके एक प्रदेश, नेह तणां अधिकार थी।
वलि तेहीज विशेष, कहियै छै ते सांभलो।।
२१. *जे लोक नां भगवंत ! इक, आकाश नां जु प्रदेश में।
पद जघन्य करिकै जीव नां जु, प्रदेश छै ते शेष में।।
२२. उत्कृष्ट पद करि इक प्रदेशे, जीव नां जु प्रदेश ही।
सहु जीव द्रव्य फुन एहनों, कुण अल्प बहु तुल्य अधिक ही ?

२३. जिन कहै थोड़ा इक आकाश-प्रदेश में जु पिछाणियै।
पद जघन्य करिकै जीव नां जु, प्रदेश छै ते जाणियै।।

११. जणसयाउलंसि जणसयसहस्साउलंसि

१२. बत्तीसइविहस्स नट्टस्स अण्णयरं नट्टविहिं उवदंसेज्जा.
से नूणं गोयमा !

वा०—'बत्तीसइविहस्स नट्टस्स' त्ति द्वात्रिंशद् विधा—भेदा यस्य तत्तथा तस्य नाट्यस्य, तत्र इहामृग-ऋषभतुरगनरमकरविहगव्यालककिन्नरादिभक्तिचित्रो नामैको नाट्यविधिः, एतच्चरिताभिनयनमिति संभाव्यते, एवमन्येऽप्येकत्रिंशद्विधयो राजप्रश्नकृतानुसारतोवाच्याः। (वृ० प० ५२७)

१३. ते पेच्छगा तं नट्टियं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएंति ?

१४. हंता समभिलोएंति।

१५. ताओ णं गोयमा ! दिट्ठीओ तंसि नट्टियंसि सव्वओ समंता सन्निपडियाओ ?
हंता सन्निपडियाओ।

१६. अत्थि णं गोयमा ! ताओ दिट्ठीओ तीसे नट्टियाए किंचि वि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पायंति? छविच्छेदं वा करेंति ?
नो इणट्ठे समट्ठे।

१७. सा वा नट्टिया तासिं दिट्ठीणं किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएति ?
छविच्छेदं वा करेइ ?
नो इणट्ठे समट्ठे।

१८. ताओ वा दिट्ठीओ अण्णमण्णाए दिट्ठीए किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएंति ? छविच्छेदं वा करेंति
नो इणट्ठे समट्ठे।

१९. से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव (सं० पा०) छविच्छेदं वा करेंति। (श० ११।११२)

२०. लोकैकप्रदेशाधिकारादेवेदमाह— (वृ० प० ५२७)

२१. लोगस्स णं भंते ! एगंसि आगासपदेसे जहण्णपए जीवपदेसाणं

२२. उक्कोसपए जीवपदेसाणं सव्वजीवाण य कयरे कयरे-हिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसे-साहिया वा ?

२३-२५. गोयमा ! सव्वत्थोवा लोगस्स एगंसि आगास-पदेसे जहण्णपए जीवपदेसा सव्वजीवा असंखेज्जगुणा

*लय : पूज मोटा भांजै तोटा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. पद जघन्य करिकै जीव नां जु, प्रदेश थी सुविचारियै।
जे लोक में सहु जीव द्रव्य, असंख गुण अवधारियै।।
२५. फुन तेहथी जे इक आकाश-प्रदेश में जु कहीज ही।
उत्कृष्ट पद करि जीव नां जु, प्रदेश तेह विशेष ही।।

सोरठा

२६. तिहां जघन्यपदे इम हुंत, लोक अंत गोला प्रतै।
त्रिहुं दिशि नां फर्शत, निगोद नां गोला भणी।।
२७. शेष दिशा जे तीन, तेह अलोके आवरी।
खंड गोल ए चीन, इम थोड़ा ए सर्व थी।।

२८. मध्य लोक सुविशेष, जे गोला षट दिशि तणां।
निगोद नांज प्रदेश, फर्शै छै इण कारणें।।
२९. उत्कृष्ट पदे विचार, जीव प्रदेश कह्या घणां।
लोकांत विण अवधार, खंडगोलका न हुवै।
३०. संपूरण जे गाल, लोक मध्य निश्चैज ह्वै।
खंड गोल दिल तोल, ते तो लोकांतेज ह्वै।।
३१. सर्व लोक रै मांय, गोला अछै निगोद नां।
कह्यो वृत्ति थी न्याय, सेवं भंते! सत्य वच।।
३२. *एकादशमां नों दशमो न्हाल, दो सौ पैंतीसमीं ढाल हो, प्र०।
भिक्खु भारीमाल ऋषिराय, 'जय-जश' सुख संपति पाय हो, प्र०।।

।।इति एकादशशते दशमोद्देशकार्थः।।११।१०।।

उक्कोसपए जीवपदेसा विसेसाहिया।
(श० ११।११३)

२६,२७. तत्र तयोर्जघन्येतरपदयोर्जघन्यपदं लोकान्ते भवति 'जत्थ' त्ति यत्र गोलके स्पर्शना निगोददेशैस्तिसृष्वेव दिक्षु भवति, शेषदिशामलोकेनावृतत्वात्, स च खण्डगोल एव भवतीति भावः।
(वृ० प० ५२८)

२८,२९. 'छद्दिसिं' ति यत्र पुनर्गोलके षट्स्वपि दिक्षु निगोददेशैः स्पर्शना भवति तत्रोत्कृष्टपदं भवति, तच्च समस्तगोलैः परिपूर्णगोलके भवति, नान्यत्र, खण्डगोलके न भवतीत्यर्थः (वृ० प० ५२८)

३०. सम्पूर्णगोलकश्च लोकमध्य एव स्यादिति।
(वृ० प० ५२८)

३१. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।
(श० ११।११४)

ढाल : २३६

दूहा

१. दशमां उद्देशक विषे, कह्यो लोक विस्तार।
लोक विषे हिव काल द्रव्य, कहियै ते अधिकार।।
२. तिण काले नैं तिण समय, वाणियग्राम सुजान।
नामैं नगर हुंतो वर्णन, दूतिपलास उद्यान।।

३. जावत-पुढवीशिलापट, वाणिय ग्रामे जान।
सेठ सुदर्शन नाम तसुं, वसै अधिक ऋद्धिवान।।
४. जावत गंज न को सकै, श्रमणोपासक तेह।
जाण्या जीव अजीव नें, जावत विचरै जेह।।
५. समवसरचा स्वामी तिहां, यावत परषद आय।
सेव करै त्रिहुं जोग करि, निरख निरख हरषाय।।

१. अनन्तरोद्देशके लोकवक्तव्यतोक्ता, इह तु लोकवर्तिकालद्रव्यवक्तव्यतोच्यते (वृ० प० ५३२)

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियग्गामे नामं नगरे होत्था—वण्णओ।
दूतिपलासे चेइए—वण्णओ।

३. जाव पुढविसिलापट्टओ। तत्थ णं वाणियग्गामे नगरे सुदंसणे नामं सेट्ठी परिवसइ—अड्ढे

४. जाव बहुजणस्स अपरिभूए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव······विहरइ।

५. सामी समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ।
(श० ११।११५)

*लय : स्वामीजी! थारा दर्शन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

***सुणो भव्य प्राणी रे,**
वीर दयाल कृपाल तणी वर वाणी रे ।। (ध्रुपद)

६. सेठ सुदर्शण तिण समैं रे, स्वाम आयां नी सार ।
कथा सुणी हरख्यो घणो रे, आनंद थयो अपार ।।
७. स्नान जाव मंगल करी रे, किया सर्व अलंकार ।
प्रवर विभूषित तनु थयो रे, निकल्यो घर थी बार ।।
८. कोरंट वृक्ष नां पुष्प नीं रे, माला सहित ने छत्र ।
मस्तक तेह धरीजतो रे, पगे चालतां पवित्र ।।
९. मोटा पुरुष छै तेहनीं रे, वागुरा कहियैं श्रेण ।
तिण करि परवरियो छतो रे, चाल्यो है नगर मझेण ।।
१०. दूतिपलास अछै तिहां रे, आयो प्रभु रै पास ।
पंचाभिगम ऋषभदत्त ज्यूं रे, जाव त्रिविध पजुवास ।।

११. वीर सुदर्शन सेठ नैं रे, मोटी परषद मांय ।
उभय धर्म आख्या तिहां रे, जाव आराधक थाय ।।

१२. सेठ सुदर्शन तिण समै रे, धर्म सुणी जिन पास ।
हरष संतोष पायो घणो रे, बाह्य अभ्यंतर तास ।।
१३. ऊठी श्री महावीर नैं रे, देइ प्रदक्षिण तीन ।
जाव स्तुति शिर नामनें रे, इम बोलै चित लीन ।।

१४. काल प्रभु ! कतिविध कह्यो रे ? जिन कहै चउविध जाण ।
प्रमाण-काल गिणीजियै रे, वर्ष शतादि प्रमाण ।।

वा०—ए अद्धाकाल नो ईज विशेष जाणवो ।

१५. यथायुनिर्वृत्ति दूसरो रे, आउखो जेण प्रकार ।
बांध्युं तिमहिज भोगवै रे, नरकादि गति नों विचार ।।

वा०—ए अद्धाकालईज आयु कर्म नों अनुभव विशिष्ट जाणवो । सर्व संसारी जीव नें ईज हुवै यथा—जिण जीवे नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देव नों जे जिण प्रकार करिकै इह भव नैं विषे आउखो बांध्यो ते आउखो तिण प्रकार करिकै अन्य भव नैं विषे पाले ते यथायुनिर्वृत्ति-काल कहियै ।

१६. जे मरण करिनैं विशिष्ट छै रे, ते मरण-काल कहिवाय ।
तथा मरण तिहज काल छै रे, कहियै मरण नैं कालपर्याय ।।

*लय : राजा राणी रंग बी रे

६. तए णं से सुदंसणे सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे
७. ण्हाए कय जाव (सं० पा०) पायच्छित्ते सव्वालंकार-विभूसिए साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ
८. सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं पायविहार-चारेणं
९. महयापुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते वाणियग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निगच्छइ
१०. जेणेव दूतिपलासे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ, जहा उसभदत्तो (भ० ९।१४५) जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ । (श० ११।११६)
११. तए णं समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स सेट्ठिस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ जाव आणाए आराहए भवइ । (श० ११।११७)
१२. तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे
१३. उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव (सं० पा०) नमंसित्ता एवं वयासी (श० ११।११८)
१४. कतिविहे णं भंते ! काले पण्णत्ते ?
सुदंसणा ! चउव्विहे काले पण्णत्ते, तं जहा—पमाणकाले
'पमाणकाले' त्ति प्रमीयते—परिच्छिद्यते येन वर्षशतादि तत् प्रमाणं स चासौ कालश्चेति प्रमाणकालः (वृ० प० ५३३)
वा०—अद्धाकालस्य विशेषो दिवसादि लक्षणः (वृ० प० ५३३)
१५. अहाउनिव्वत्तिकाले
'अहाउनिव्वत्तिकाले' त्ति यथा—येन प्रकारेणायुषो निर्वृत्तिः—बन्धनं तथा यः कालः—अवस्थितिरसौ यथायुर्निर्वृत्तिकालो—नारकाद्यायुष्कलक्षणः (वृ० प० ५३३)
वा०—अयं चाद्धाकाल एवायुः-कर्मानुभवविशिष्टः सर्वेषामेव संसारिजीवानां स्यात्, आह च—
नेरइयतिरियमणुया देवाण अहाउयं तु जं जेणं ।
निव्वत्तियमन्नभवे पालेंति अहाउकालो सो ।। (वृ० प० ५३३)
१६. मरणकाले
'मरणकाले' त्ति मरणेन वि अद्धा-शिष्टः कालः मरणकालः अद्धाकाल एव, मरणमेव वा कालो मरणस्य कालपर्यायत्वान्मरणकालः । (वृ० प० ५३३)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७. अद्धा समयादि विशेष छै रे, ते रूप काल अद्धा-काल।
चंद्र सूर्य नीं चाल थी नीपजै रे, द्वीप अढाइ में न्हाल ।।

१८. प्रमाण काल प्रभु ! किसो रे ? जिन कहै द्विविध न्हाल।
दिवसप्रमाणज-काल छै रे. रात्रिप्रमाणज-काल ।।

१९. च्यार पोहर नों दिन हुवै रे, च्यार पोहर नीं रात।
पोहर तणांज प्रमाण नें रे, हिव कहियै अवदात ।।

२०. उत्कृष्टी हुवै पोरसी रे, मुहूर्त्त साढा च्यार।
दिवस तणी तथा रात्रि नीं रे, अह निशि मुहूर्त्त अठार ।।

२१. जघन्य पोरसी एतली रे, तीन मुहूर्त्त नीं विचार।
दिवस तणी तथा रात्रि नीं रे, अह निशि मुहूर्त्त बार ।।

२२. हे भगवंत ! हुवै यदा रे, उत्कृष्ट पोरसी माग।
दिवस तणी तथा रात्रि नीं रे, अह निशि चोथो भाग ।।

२३. तदा हुवै भाग केतला रे, मुहूर्त्त भागे करि हान।
थातां जघन्य तीन मुहूर्त्त नों रे, दिवस तथा निशि जान ।।

सोरठा

२४. मुहूर्त्त केतलै भाग, घटावतांज घटावतां।
तीन मुहूर्त्त नी भाग, हुवै पोरसी जघन्य ए ।।

२५. *यदा जघन्य थी पोरसी रे, तीन मुहूर्त्त नीं होय।
दिवस तणी तथा रात्रि नीं रे, तेह थकी वृद्ध जोय ।।

२६. तिण काले भाग केतला रे, मुहूर्त्त भागे करि वृद्ध।
पोहर साढा चिहुं मुहूर्त्त नों रे, दिन तथा निशि नों प्रसिद्ध ।।

२७. श्री जिन भाखै सुदर्शणा ! रे, उत्कृष्ट पोहर जिवार।
दिवस तणो तथा रात्रि नों रे, मुहूर्त्त साढा च्यार ।।

२८. भाग एक मुहूर्त्त तणां रे, एक सौ बावीस होय।
इक-इक भाग घटावतां रे, जघन्य तीन मुहूर्त्त जोय ।।

२९. दिवस तणो तथा रात्रि नीं रे, कही पोरसी एह।
उत्कृष्ट पोहर थी इह विधे रे, जघन्य पोहर इम लेह ।।

३०. जघन्य पोरसी ह्वै जदा रे, मुहूर्त्त तीन प्रमाण।
दिवस तणी तथा रात्रि नीं रे, ते दिन थी वृद्धि जाण ।।

३१. भाग एक मुहूर्त्त तणां रे, एकसौ बावीस धार।
इक-इक भाग वधारतां रे, मुहूर्त्त साढा च्यारा ।।

*लय : राजा राणी रंग थी रे

१७. अद्धाकाले। (श० ११।११९)
'अद्धाकाले' त्ति समयादयो विशेषास्तद्रूपः कालोऽद्धा-काल:—चन्द्रसूर्यादिक्रियाविशिष्टोऽर्द्धतृतीयद्वीपसमुद्रा-न्तर्वर्त्ती समयादि:। (वृ० प० ५३३)

१८. से किं तं पमाणकाले ?
पमाणकाले दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दिवसप्पमाण-काले, राइप्पमाणकाले य।

१९. चउपोरिसिए दिवसे चउपोरिसिया राई भवइ।
अथ पौरुषीमेव प्ररूपयन्नाह— (वृ० प० ५३३)

२०. उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवई
'अद्धपंचमुहुत्त' त्ति अष्टादशमुहूर्त्तस्य दिवसस्य रात्रेर्वा चतुर्थो भागो यस्मादर्द्धपञ्चममुहूर्त्ता नव घटिका इत्यर्थः ततोऽर्द्धपञ्चमा मुहूर्त्ता यस्यां सा तथा
(वृ० प० ५३४)

२१. जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ। (श० ११।१२०)
'तिमुहुत्त' त्ति द्वादशमुहूर्त्तस्य दिवसादेश्चतुर्थो भाग-स्त्रिमुहूर्त्तो भवति अतस्त्रयो मुहूर्त्ता:—षट् घटिका यस्यां सा। (वृ० प० ५३४)

२२. जदा णं भंते ! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ

२३,२४. तदा णं कतिभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी-परिहायमणी
जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवई ?

२५,२६ जदा णं जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा णं कतिभागमुहुत्तभागेणं परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपंचम-मुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ?

२७. सुदंसणा ! जदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिव-सस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ।

२८,२९. तदा णं बावीससयभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी-परिहायमाणी जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ।

३०-३२ जदा वा जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ तदा णं बावीससयभागमुहुत्त-भागेणं परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ। (श० ११।१२१)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३२. दिवस तणी तथा रात्रि नीं रे, उत्कृष्ट पोरसी एह।
जघन्य पोहर थी इह विधे रे, उत्कृष्ट पोहर इम लेह।।

वा०—जिवारै साढा च्यार मुहूर्त्त नीं पोरसी थावै ते दिवस थकी एक मुहूर्त्त नों एक सौ बावीसमों भाग दिवस-दिवस प्रतै घटावतां-घटावतां ज्यां लगै जघन्य तीन मुहूर्त्त नीं पोरसी हुवै तिहां थकी प्रारंभी दिवस दिवस प्रते मुहूर्त्त नों एकसौ बावीसमों भाग पोहरसी मांहि बधावतां-बधावतां ज्यां लगै साढा च्यार मुहूर्त्त नी पोहरसी। पोहरसी प्रति हानि वृद्धि कही।

इहां साढा च्यार मुहूर्त नैं अनैं तीन मुहूर्त्त नैं विशेष दोढ मुहूर्त्त ते एक सौ तयांसी दिने करी वधै तथा घटै ते दोढ मुहूर्त्त १८३ भागपणैं व्यवस्थापियै। तिहां एक मुहूर्त्त नां १२२ भाग कीजै। तिवारै दोढ मुहूर्त्त नां १८३ भाग हुवै। इण न्याय पोहरसी में मुहूर्त्त नो एक सौ बावीसमों नित्य वधावणो तथा घटावणो।

वा०—'बावीससयभागमुहुत्तभागेण' त्ति इहार्द्धपञ्चमानां त्रयाणां च मुहूर्त्तानां विशेषः सार्द्धो मुहूर्त्तः, स च त्र्यशीत्यधिकेन दिवसशतेन वर्द्धते हीयते च, स च सार्द्धो मुहूर्त्तस्त्र्यशीत्यधिकशतभागतया व्यवस्थाप्यते, तत्र च मुहूर्त्ते द्वाविंशत्यधिकं भागशतं भवत्यतोऽभिधीयते—'बावीसे' त्यादि द्वाविंशत्यधिकशततमभागरूपेण मुहूर्त्तभागेनेत्यर्थः। (वृ० प० ५३४)

३३. उत्कृष्ट पोरसी ह्वै कदा जी, मुहूर्त्त साढा च्यार।
दिवस तणी तथा रात्रि नीं जी? ते भाखो जगतार।।
३४. जघन्य पोरसी ह्वै कदा जी, तीन मुहूर्त्त नीं ताम।
दिवस तणी तथा रात्रि नीं जी? प्रश्न दाय अभिराम।।
३५. श्री जिन कहै सुदंसणा! रे, उत्कृष्ट दिवस जिवार।
अठारै मुहूर्त्त नों हुवै रे, जघन्य निशा मुहूर्त्त बार।।
३६. तदा उत्कृष्ट पोहर दिन तणी रे, मुहूर्त्त साढा च्यार।
जघन्य तीन मुहूर्त्त तणी रे, रात्रि पोरसी विचार।।
३७. अथवा जदा उत्कृष्ट थी रे, निशि हुवै मुहूर्त्त अठार।
जघन्य बार मुहूर्त्त तणो रे, दिवस हुवै तिण वार।।
३८. तदा उत्कृष्ट निशि पोरसी रे, मुहूर्त्त साढा च्यार।
जघन्य थी तीन मुहूर्त्त तणी रे, दिवस नीं पोरसी धार।।

३३. कदा णं भंते! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ?
३४. कदा वा जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ?
३५. सुदंसणा! जदा णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।
३६. तदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ, जहण्णिया तिमुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ।
३७. जदा णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्तिया राई भवइ, जहण्णिए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ।
३८. तदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ, जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ। (श० ११।१२२)

३९. प्रभु! उत्कृष्ट दिवस हुवै कदा जी, अठारै मुहूर्त प्रमाण।
द्वादश मुहूर्त्त नीं हुवै रे, रात्रि तदा पहिछाण।।
४०. अथवा उत्कृष्ट थकी हुवै जी, अठारै मुहूर्त्त रात।
द्वादश मुहूर्त्त नों तदा जी, दिवस जघन्य विख्यात।।
४१. श्री जिन भाखै सुदंसणा! रे, आसाढि पूनम दिन्न।
उत्कृष्ट मुहूर्त्त अठार नों रे, बारे मुहूर्त्त निशि जघन्न।।

३९. कदा णं भंते! उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ?
४०. कदा वा उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ?
४१. सुदंसणा! आसाढपुण्णिमाए उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवई।

सोरठा

४२. पंच वर्ष जुग तास, पंचम वर्ष अपेक्षया।
आसाढि पूनम जास, दिवस अठारै मुहूर्त्त नों।।
४३. तेह दिवस नों जाण, साढा च्यार मुहूर्त्त तणो।
पोहर तणोज प्रमाण, पिण सहु नहिं आसाढि पूर्णिमा।।

४२,४३. 'आसाढपुन्निमाए' इत्यादि इह 'आषाढपौर्णमास्या' मिति यदुक्तं तत् पंचसंवत्सरिकयुगस्यान्तिमवर्षापेक्षयाऽवसेयं, यतस्तत्रैवाषाढपौर्णमास्यामष्टादशमुहूर्त्तो दिवसो भवति, अर्द्धपंचममुहूर्त्ता च तत्पौरुषी भवति। (वृ० प० ५३४)

४४. अन्य वर्ष रै मांय, जे दिन कर्क संक्रांति ह्वै।
तेहिज दिवस कहाय, अठ दश मुहूर्त्त दिन वृत्तौ।।

४४. वर्षान्तरे तु यत्र दिवसे कर्कसंक्रांतिर्जायते तत्रैवासौ भवतीति समवसेयमिति। (वृ० प० ५३४)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४५. *पोसी पूनम उत्कृष्ट थी रे, मुहूर्त्त अठारैं रात।
द्वादश मुहूर्त्त नों कहै रे, जघन्य दिवस जगनाथ।।

४६. छै भगवंत ! दिवस निशा जी, सरिखा निश्चै होय ?
हंता अत्थि जिन कहै रे, अछै सरीखा जोय।।

४७. सरिखा दिवस अनैं निशा जी, किण काले जगनाथ !
जिन कहै चेत्र आसोज नीं रे, पूनम सम दिन रात।।

सोरठा

४८. पूनम चैत्य आसोज, नय ववहार अपेक्षया।
न्याय दृष्टि करि सोभ, वृत्तिकार आख्यो इसो।।
४९. निश्चय थकी निहाल, कर्क मकर संक्रांति नां।
दिवस थकी इम भाल, आरंभीजे आगले।।
५०. अहो रात्रि अवलोय, साढा एकाणुं विषे।
दिवस रात्रि सम होय, पनर मुहूर्त्त दिन फुन निशा।।
५१. मुहूर्त्त पूर्णा च्यार, दिवस तणी इक पोरसी।
निशि नीं पिण अवधार, मुहूर्त्त पूर्णा च्यार नीं।।

वा०—ए संक्रांति नु न्याय वृत्ति में लिख्यु तिम कह्यु अनै सूर्य संवच्छर ३६६ दिन नों हुवै। तेहना बारै भाग ते १२ मास। तिहां बारमों भाग साढा तीस दिन नो ते एक मास हुवै। सर्वाभ्यंतर मंडले सूर्य आवै तिवारे अठारैं मुहूर्त्त नों दिवस बारैं मुहूर्त्त नीं रात्रि हुवै। तिका तिथि ए सूर्य संवच्छर नीं आसाढी पूर्णिमा जाणवी। तेहथी साढा एकाणुमें अहोरात्रे सूर्य संवच्छर नीं आसोजी पूर्णिमा जाणवी। तिवारे दिन रात्रि सम हुवैं अनैं सर्व बाह्य मंडले सूर्य आवैं तिवारैं १२ मुहूर्त्त नों दिवस १८ मुहूर्त्त नीं रात्रि हुवैं। तिका तिथि सूर्य संवच्छर नों पोसी पूर्णिमा जाणवी। तेहथी साढा एकाणुमें अहोरात्रे तिका तिथि ते सूर्य संवच्छर नीं चैत्री पूर्णिमा जाणवी। तिवारे दिन रात्रि सम हुवैं, ए निश्चय नय नु मत कह्यु।

५२. *काल-प्रमाण ए आखियो रे, पूछै सुदर्शण फेर।
यथायुनिर्वृत्ति-काल स्यूं जी ? जिन कहै सुण चित घेर।।
५३. नारक तिरि मनु देवता रे, जितो बांध्यो आयु न्हाल।
अंतमुहूर्त्त आदि दे रे, यथायुनिर्वृति काल।।

५४. मरण-काल प्रभु ! स्यूं कह्यो जी, जुदो शरीर थी जीव।
तथा जीव थकी तनु ह्वै जुदो रे, मरण-काल ते कहीव।।

वा०—अनैं सूत्र में दोय वार वा शब्द ते शरीर जीव नैं विषे अवधि भाव नीं इच्छा अनुसारीपणो जणायवा नें अर्थे।

५५. अद्धा-काल प्रभु ! स्यूं कह्यो जी, जिन कहै अनेक प्रकार।
समयट्ठयाए पाठ नों जी, आगल अर्थ उदार।।

*लय : राजा राणी रंग थी रे

४५. पोसपुण्णिमाए णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ।
(श० ११।१२३)

४६. अत्थि णं भंते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवंति ? हंता अत्थि।
(श० ११।१२४)

४७. कदा ण भंते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवंति ?
सुदंसणा ! चेत्तासोयपुण्णिमासु एत्थ णं दिवसा य राईओ य समा चेव भवंति।

४८. चेत्तासोयपुन्निमाएसु ण' मित्यादि यदुच्यते तद् व्यवहारनयापेक्षं। (वृ० प० ५३४)

४९. निश्चयतस्तु कर्क्कमकरसंक्रान्तिदिनादारभ्य
(वृ० प० ५३४)

५०. पण्णरसमुहुत्ते राई भवइ। चउभागमुहुत्तभागूणा चउमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ। यद् द्विनवतितमहोरात्रे तस्यार्द्धे समा दिवरात्रिप्रमाणतेति, तत्र च पञ्चदशमुहूर्त्ते दिने रात्रौ वा पौरुषीप्रमाणं त्रयो मुहूर्त्तास्त्रयश्च मुहूर्त्तचतुर्भागा भवन्ति, दिनचतुर्भागरूपत्वात्तस्याः।
(वृ० प० ५३४)

५२. सत्त पमाणकाले। (श० ११।१२५)
से किं तं अहाउनिव्वत्तिकाले ?

५३. अहाउनिव्वत्तिकाले—जण्णं जेणं नेरइएण वा तिरिक्खजोणिएण वा मणुस्सेण वा देवेण वा अहाउयं-निव्वत्तियं। सेत्तं अहाउनिव्वत्तिकाले।
(श० ११।१२६)

५४. से किं त मरणकाले ?
मरणकाले—जीवो वा सरीराओ सरीरं वा जीवाओ। सेत्तं मरणकाले। (श० ११।१२७)

वा०—वा शब्दौ शरीरजीवयोरवधिभावस्येच्छानुसारिताप्रतिपादनार्थाविति। (वृ० प० ५३५)

५५. से किं तं अद्धाकाले ?
अद्धाकाले अणेगविहे पण्णत्ते। (पा० टि० ७)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५६. समय रूप जे अर्थ छै रे, तेह तणो भाव जोय।
तेणे करी अद्धाकाल छै रे, समय भावे करि सोय।।

५६. समयट्ठयाए
'समयट्ठयाए' त्ति समयरूपोऽर्थ: समयार्थस्तद्भावस्तत्ता तया समयभावेनेत्यर्थ: (वृ० प० ५३५)

५७. इमज आवलिका भावे करी रे, मुहूर्त्त दिवस पिण एम।
जाव उत्सर्पिणी भाव थी रे, अद्धाकाल कह्यो तेम।।

५७. आवलियट्ठयाए जाव उस्सप्पिणीट्ठयाए

सोरठा

५८. समय आदि दो काल, पूर्वे जे आख्यो अछै।
तेहनोईज निहाल, स्वरूप कहियै आगलै।।

५८. अथानन्तरोक्तस्य समयादिकालस्य स्वरूपमभिधातुमाह— (वृ० प० ५३५)

५९. *बे भाग छै जिहां छेदन विषे रे, अथवा छेदतां दोय।
बे खंड शीघ्र हुवै नहीं रे, तेह समय अवलोय।।

५९. एस णं सुदंसणा ! अद्धा दोहाराछेदेणं छिज्जमाणी जाहे विभागं नो हव्वमागच्छइ, सेत्तं समए समयट्ठयाए।
द्वौ हारौ—भागौ यत्र छेदने द्विधा वा कार:—करणं यत्र तद् द्विहारं द्विधाकारं वा तेन (वृ० प० ५३५)

६० वृंद असंखेज्ज समय नों रे, तास मेलवो पेख।
तास संयोग तेणे करी रे, कहियै आवलिका एक।।

६०. असंखेज्जाणं समयाणं समुदयसमिइसमागमेणं सा एगा आवलियत्ति पवुच्चइ।

६१. संख्याती आवलिका करी रे, छठा शतक में जाण।
सप्त उद्देशे जिम कह्यु रे, जाव सागर इक माण।।

६१. संखेज्जाओ आवलियाओ उस्सासो जहा सालिउद्देसए (भ० ६।१३२-१३४) जाव— (श० ११।१२८)
सालिउद्देसए त्ति षष्ठशतस्य सप्तमोद्देशके (वृ० प० ५३५)

६२. हे भगवंत ! पल्योपमे रे, सागरोपम करि सोय।
स्यूं प्रयोजन एहनों रे ? हिव जिन उत्तर जोय।।

६२. एएहि णं भंते ! पलिओवम-सागरोवमेहिं किं पयोयणं ?

६३. पल्योपम सागरोपमे रे, चिउं गति आयु माप।
नेरिया नीं किता काल नीं रे, स्थिती कही प्रभु ! आप ?

६३. सुदंसणा ! एएहिं पलिओवम-सागरोवमेहिं नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवाणं आउयाइं मविज्जंति। (श० ११।१२९)
नेरइयाणं भंते ! केवइयं काल ठिई पण्णत्ता ?

६४. एवं स्थितिपद चतुर्थो रे, भणवो समस्तपणेह।
जावत अजघन्योत्कृष्ट स्थिति रे, तेतीस उदधि कहेह।।

६४. एवं ठिइपदं निरवसेसं भाणियव्वं जाव अजहण्ण-मणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। (श० ११।१३०)

सोरठा

६५. पल्य सागर नुं सोय, अति प्रचुर अद्धा करि।
तेहनों क्षय अवलोय, किम संभवै तसु प्रश्न हिव ?

६५. अथ पल्योपमसागरोपमयोरतिप्रचुरकालत्वेन क्षयमसंभावयन् प्रश्नयन्नाह— (वृ० प० ५३६)

६६. *छै प्रभु ! पल्य सागर तणो रे, क्षय ते सर्वथा नाश ?
अपचय ते क्षय देश थी रे, जिन कहै हंता तास।।

६६. अत्थि णं भंते ! एएसिं पलिओवम-सागरोवमाणं खएति वा अवचएति वा ? हंता अत्थि। (श० ११।१३१)
'खये' त्ति सर्वविनाश: 'अवचए' त्ति देशतोऽपगम इति। (वृ० प० ५३६,५४०)

६७. किण अर्थे प्रभु ! इम कह्युं रे, पल्य सागर नो विणास।
आगल उत्तर एहनों रे, श्री जिन देस्यै प्रकाश।।

६७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थि णं एएसिं पलिओवमसागरोवमाणं खएति वा अवचएति वा ?

६८. दोय सौ नैं छत्तीसमीं रे, आखी ढाल उदार।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी रे, 'जय-जश' हरख अपार।।

*लय : राजा रानी रंग थी रे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : २३७

दूहा

१. क्षय पल्योपम प्रमुख नों, उत्तर द्वार स्वाम।
तेहिज सुदर्शण चरित्त करि, आखै छै अभिराम ॥

*वीर सुदर्शन नें कहै ॥ (ध्रुपद)

२. तिण काले नें तिण समय, नगर हत्थिणापुर नीको जी कांइ।
सहस्रांब वन उद्यान थो, तसु वर्णन तहतीको जी कांइ ॥

३. तिण हत्थिणापुर नगर में, बल नामे थो राजा जी कांइ।
वर्णन कोणिक नीं परै, राज्य लक्षण गुण ताजा जी कांइ ॥

४. तिण बल नामा राय नें, प्रभावती पटराणी जी कांइ।
कोमल कर पग जेहनां, यावत विचरै जाणी जी कांइ ॥

५. प्रभावती देवी तदा, अन्य दिवस किणवारे जी कांइ।
तेहवै पुन्यवंत योग्य नें, एहवै वास अगारे जी कांइ ॥

६. तेह महल घर केहवो, म्यंतर चित्र सहीतो जी कांइ।
बाहिर धवल्यो ऊजलो, पेखत पामै प्रीतो जी कांइ ॥

७. कोमल पाषाणादिके, घृष्ट घस्योज घठार्‍यो जी कांइ ॥
मुहरो फेर मृदु कियो, मृष्ट सचिक्कण मठार्‍यो जी कांइ ॥

८. चित्र विचित्र चित्राम सूं, भाग ऊपरलो आछो जी कांइ।
देदीप्यमान सुदीपतो, अधोभाग तल जाचो जी कांइ ॥

९. चंद्रकांतादिक मणि करी, कर्केतनादिक सारो जी कांइ।
तिण रत्ने करि महिल नों, न्हास गयो अंधकारो जी कांइ ॥

१०. घणो सरीखो भली परे, वहिच्यो कीधो सारो जी कांइ।
भूमिभाग मनहर अछै, अति रमणीक उदारो जी कांइ ॥

११. सरस सुगंध पंच वर्ण नां, मूक्या पुष्प सुवृंदो जी कांइ।
पूजा उपचारे करी, निरखत नयनानंदो जी कांइ ॥

१२. कृष्णागर वर चीड नीं, सेल्हक धूप नो गंधो जी कांइ।
मघमघंत अद्भूत छै, घ्राण मनें सुखकंदो जी कांइ ॥

१३. सुगंध वरगंध—वास छै, सोरभ नां अतिशय कर जी कांइ।
गुटिका जे गंध द्रव्य नीं, तेह सरीख गंधागर जी कांइ ॥

१. अथ पल्योपमादिक्षयं तस्यैव सुदर्शनस्य चरितेन दर्शयन्निदमाह— (वृ० प० ५४०)

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ। सहसंबवणे उज्जाणे—वण्णओ।

३. तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे बले नामं राया होत्था—वण्णओ।

४. तस्स णं बलस्स रण्णो पभावई नामं देवी होत्था—सुकुमालपाणिपाया वण्णओ जाव···विहरइ (श० ११।१३२)

५. तए णं सा पभावई देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासघरंसि
'तंसि तारिसगंसि' त्ति तस्मिंस्तादृशके—वक्तुम-शक्यस्वरूपे पुण्यवतां योग्य इत्यर्थः। (वृ० प० ५४०)

६,७ अब्भितरओ सचित्तकम्मे बाहिरओ दूमिय-घट्ठमट्ठे
'दूमियघट्ठमट्ठे' त्ति दूमितं—धवलितं घृष्टं कोमल-पाषाणादिना अत एव मृष्टं—मसृणं यत्तत्तथा तस्मिन् (वृ० प० ५४०)

८. विचित्तउल्लोग-चिल्लियतले
विचित्तउल्लोयचिल्लियतले' त्ति विचित्रो—विविध-चित्रयुक्तः उल्लोकः उपरिभागो यत्र 'चिल्लियं' ति दीप्यमानं तलं च अधोभागो यत्र तत्तथा ((वृ० प० ५४०)

९. मणिरयणपणासियंधयारे

१०. बहुसमसुविभत्तदेसभाए

११. पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए
पुष्प-पुञ्जलक्षणेनोपचारेण—पूजया कलितं यत्तत्तथा (वृ० प० ५४०)

१२. कालागरु-पवर-कुंदुरुक्कतुरुक्क-धूव-मघमघेंत गंधुद्धयाभिरामे
कुन्दुरुक्का—चीडा तुरुक्कं—सिल्हकं (वृ० प० ५४०)

१३. सुगंधवरगंधिए गंधवट्टिभूए
'सुगंधिवरगंधिए' त्ति सुगन्धयः सद्गन्धा वरगन्धाः—वरवासाः सन्ति यत्र तत्तथा तत्र 'गंधवट्टिभूए' त्ति सौरभ्यातिशयाद्गन्धद्रव्यगुटिकाकल्पे (वृ० प० ५४०)

---

*लय : कुशल देश सुहामणो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. एहवा महल विषे अछै, पुन्यवंत सूवा जोगो जी कांइ।
सेज्या महारलियामणी, सयन थकी आरोगो जी कांइ।।
१५. तेह पल्यंक विषे अछै, आलिंगन करी सहीतो जी कांइ।
तनु प्रमाण तकिया अछै, बिहुं पसवाड सुरीतो जी कांइ।।

१६. मस्तक नैं वलि पग विषे, ओसीसा सुख सीरो जी कांइ।
बिहुं पासे ऊंचो अछै, विचमें नम्यो गंभीरो जी कांइ।।

१७. किहांइक गंडबिब्बोयणे, पाठ इसो दीसंतो जी कांइ।
रूड़ी पर रचिया अछै, गाल मसूरिया तंतो जी कांइ।।
१८. गंगा तट नीं वालुका, पग मेल्यां थी न्हाली जी कांइ।
पग नीचो जावै तदा, ए सम सेज सुंहाली जी कांइ।।

१९. रूड़ी परि निपजावियो[1], अतसी वस्त्र कपासो जी कांइ।
तेह युगल छै इकपटो, पट आच्छादन तासो जी कांइ।।

२०. रूड़ी परि रचियो अछै, रजस्त्राण सुरीतो जी कांइ।
आच्छादन नों विशेष ए, रज रक्षाय पुनीतो जी कांइ।।

सोरठा

२१. भोग अवस्था नांय, ते वेला वस्त्रे करी।
सेज्या ढांकै ताय, आच्छादन कहियै तसु।।

२२. *षट छप्पर ढांक्यो अछै, राते वस्त्रे परितो जी कांइ।
मशकगृह अभिधान ते, वस्त्र विशेषावरितो जी कांइ।।
२३. वस्त्र विशेषज चरम नों, तेह स्वभाव थी न्हाली जी कांइ।
अति कोमल होवै अछै, ते सम सेज सुंहाली जी कांइ।।

२४. रू वलि बूर वनस्पति, माखण नैं अकतूलो जी कांइ।
सेज सूंहाली एहवी, मनहर चित अनुकूलो जी कांइ।।
२५. प्रवर सुगंध प्रधान जे, पुष्प अनैं फुन चूर्णो जी कांइ।
तिण करिनैं सय्या तणी, पूजा युक्त सुपूर्णो जी कांइ।।
२६. महल सेज वर्णन तणी, बे सौ सैंतीसमो ढालो जी कांइ।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी,
'जय-जश' हरष विशालो जी कांइ।।

१४. तंसि तारिसगंसि सयणिज्जसि

१५. सालिंगणवट्टिए
'सालिंगणवट्टिए' त्ति सहालिंगनवर्त्या—शरीर प्रमाणोपधानेन यत्तत्तथा (वृ० प० ५४०)
१६. उभओ बिब्बोयणे दुहओ उण्णए मज्झेणयगंभीरे
'उभओ विब्बोयणे' उभयतः—शिरोऽन्तपादान्तावाश्रित्य विब्बोयणे—उपधानके यत्र तत्तथा
(वृ० प० ५४०)
१७. 'गंडविब्बोयणे' त्ति क्वचिद् दृश्यते तत्र च सुपरिकर्मितगण्डोपधाने इत्यर्थः। (वृ० प० ५४०)
१८. गंगापुलिणवालुय-उद्दालसालिसए
गंगापुलिनवालुकाया योऽवदालः—अवदलनपादादिन्यासेऽधोगमनमित्यर्थः तेन सदृशकमतिमृदुत्वाद्यत्तत्तथा
(वृ० प० ५४०)
१९. ओयवियखोमियदुगुल्लपट्टपडिच्छयणे
'उवचिय' त्ति परिकर्मितं यत् क्षौमिकं दुकूलं—कार्पासिकमतसीमयं वा वस्त्रं युगलापेक्षया यः पट्टः—शाटकः स प्रतिच्छादनं—आच्छादनं यस्य तत्तथा
(वृ० प० ५४०)
२०. सुविरइयरयत्ताणे
सुष्ठु विरचितं—रचितं रजस्त्राणं आच्छादनविशेषः
(वृ० प० ५४०)

२१,२२. अपरिभोगावस्थायां यस्मिंस्तत्तथा (वृ० प० ५४०)
रत्तंसुयसंवुए
रक्तांशुकसंवृते—मशकगृहाभिधानवस्त्रविशेषावृते
(वृ० प० ५४०)
२३,२४. सुरम्मे आइणग-रूय-बूर-नवणीय-तूलफासे
आजिनकं—चर्म्ममयो वस्त्रविशेषः स च स्वभावादतिकोमलो भवति रूतं च—कर्पासपक्ष्म बूरं च—वनस्पतिविशेषः नवनीतं च—म्रक्षणं तूलश्च - अर्कतूलः इति द्वन्द्वस्तत एषामिव स्पर्शो यस्य तत्तथा
(वृ० प० ५४०)
२५. सुगंधवरकुसुम-चुण्ण-सयणोवयारकलिए
सुगन्धीनि यानि वरकुसुमानि चूर्णा एतद्व्यतिरिक्ततथाविधशयनोपचाराश्च तैः कलितं यत्तत्तथा।
(वृ० प० ५४०)

१. अंगसुत्ताणि में ओयविय पाठ है। वृत्ति में उवचिय पाठ लिया गया है। जोड़ इसी पाठ के आधार पर की गई है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : २३८

दूहा

१. एहवो सिज्या नैं विषे, प्रभावती सुविधान।
अर्द्ध रात्रि अद्धा समय, सुप्त जागरा जान।।
२. न अति सूती नींद में, न अति जाग्रत न्हाल।
प्रचलायमान थकी तदा, अल्प नींद कर भाल।।

१,२. अद्धरत्तकालसमयंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी-ओहीरमाणी
सुत्तजागर' त्ति नातिसुप्ता नातिजागरेति भावः किमुक्तं भवति ? 'ओहीरमाणी' त्ति प्रचलायमाना, (वृ० प० ५४०)

३. एहवे रूपे पेखियो, मोटो स्वप्न उदार।
कारक ते कल्याण नों, उपद्रव रहित विचार।।

३. अयमेयारूवं ओरालं कल्लाणं सिवं

४. कारक धन्य तणो तिको, मंगलीक सिरताज।
शोभा लक्ष्मी सहित ते, महा स्वप्न मृगराज।।

४. धण्णं मंगल्लं सस्सिरीयं महासुविण

५. सिंघ स्वप्न देखी करी, जागी राणी आप।
वर्णन स्वप्न तणों कहूं, सांभलज्यो चुपचाप।।

५. पासित्ता णं पडिबुद्धा

*प्रबल अति सबल हरि अचल देख्यो स्वपन (ध्रुपदं)

६. हार मोत्यां तणो रजत रूपो घणो, क्षीर समुद्र नों नीर आछो।
चंद्र नीं किरण वलि कणिया पाणी तणां,
रजत महासेल वेताढ्य जाचो।।
७. एहथी ऊजलो अधिक महिमानिलो, वर्ण वर श्वेत विस्तीर्ण चारू।
नेत्र देख्यां ठरै अधिक मन नैं हरै, देखवा योग्य आरोग्य चारू।।

६,७. हार-रयय-खीरसागर-ससंककिरण-दगरय-रययमहासेल-पंडरतरोरुरमणिज्ज-पेच्छणिज्जं
पाण्डुरतरः—अतिशुक्लः उरुः—विस्तीर्णो रमणीयो-रम्योऽत एव प्रेक्षणीयश्च—दर्शनीयो यः स तथा तम्, इह च रजतमहाशैलो वैताढ्य इति। (वृ०प० ५४०)

८. पवर कलाइ स्थिर लष्ट मनोज्ञ छै,
वाटुली अति भली मृदु सुहाली।
स्थूल अति मूल जे तीक्ष्ण दाढा करी,
विडम्बित विकृत जिम मुख निहाली।।

८. थिर-लट्ठ-पउट्ठ-वट्ट-पीवर-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-तिक्ख-दाढाविडंबियमुहं
स्थिरौ—अप्रकम्पौ, लष्टौ—मनोज्ञौ ..वृत्ताः—वर्त्तुलाः पीवराः—स्थूलाः'''विडंबितं मुखं यस्य स तथा (वृ० प० ५४०)

९. सखर समारिया पवर संस्कारिया, जात्य जे कमल तदवत सुहाला।
मान उपपेत शुभ चेत सोभन मझे,
लष्ट बे ओष्ठ अति श्रेष्ठ आला।।

९. परिकम्मियजच्चकमलकोमल-माइयसोभंतलट्ठओट्ठं
परिकर्मितं—कृतपरिकर्म्म यज्जात्यकमलं तद्वत्कोमलौ मात्रिकौ—प्रमाणोपपन्नौ शोभमानानां मध्ये लष्टौ—मनोज्ञौ ओष्ठौ—दशनच्छदौ यस्य स तथा। (वृ० प० ५४१)

१०. रक्त जे कमल नां पत्र तेहनीं परै, तालुओ जीभ सुखमाल जेहनी।
कोमल मध्य ए अधिक मृदु गुण करी,
ते भणी ओपम दीध एहनी।।

१०. रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालुजीहं
रक्तोत्पलपत्रवत् मृदूनां मध्ये सुकुमाले तालुजिह्वे यस्य स तथा (वृ० प० ५४१)

११. मूस में आवियो कनक तपावियो, आवर्त्त करत तदवत वतुल्ला।
तडितवत विमल अति निमल ते सारिखा,
प्रवर शुभ नयन शोभन प्रफुल्ला।।

११. मूसागयपवरकणगतावियआवत्तायंत-वट्ट-तडिविमल-सरिसनयणं
मूषा—स्वर्णादितापनभाजनं तद्गतं यत्प्रवरकनकं तापितं—कृताग्नितापम् 'आवत्तायंत' त्ति आवर्त्तं कुर्वाणं तद्वद् ये वर्णतः वृत्ते च तडिदिव विमले च सदृशे च परस्परेण नयने—लोचने यस्य स तथा। (वृ० प० ५४१)

सोरठा

१२. वाचनांतरे वृत्त[1], रक्त कमल मृदु सारिखा।
कोमल तालु उचित्त, निर्लालिताग्र-जीभ[2] वलि।।

१२,१३. वाचनान्तरे तु 'रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालु-निल्लालियग्गजीहं महुगुलियाभिसंतपिंगलच्छं' ति तत्र च रक्तोत्पलपत्रवत् सुकुमालं तालु निर्लालिताग्रा च जिह्वा यस्य स तथा तं मधुगुटिकादिवत् 'भिसंत'

---

*लय : कडखा री

१. वृत्ति। २. निस्सारित अग्रजिह्वा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. मधु सेहत नीं तेथ, गोली पीली जे हुवै।
तदवत पीला नेत, वाचनांतरे दृश्यते ।।

१४. *पीवर मंस कर पुष्ट अदुष्ट है, जंघ अति चंग सुविशाल तासं ।
विपुल विस्तीर्ण प्रतिपूर्ण तसु खंध है,
जंघ अरु खंध नो अति उजासं ।।

१५. कोमल धवल अति सूक्ष्म वर पातला, लक्षण पसत्थ विस्तीर्ण वारू ।
एहवा खंध नां रोम ते केसरा, तास आटोप करि शोभ चारू ।।

१६. उच्छ्रितं—ऊर्ध्वीकृतं ऊंचो कियो, सुष्ठु अधोमुखीकृत सधीको ।
अधिक शोभनपणें जात ते नीपनो, भूमि आस्फालित पुच्छ नीको ।।

१७. सौम्य अरु सौम्य आकार लीला करत,
बगाइ[1] करत हरि चित्त हरतो ।
तेह आकाश थी सहज ही उतरतो, निज मुख मांहि परवेश करतो ।।

१८. ताम प्रभावती प्रवर उदार ए, जाव सश्रीक महास्वप्न जानं ।
स्वप्न में देख जागी छती हर्ष अति, जावत हृदय विकसायमानं ।।

१९. मेघ नी धाराए आहण्यो फूलियै वृक्ष कदंब नों फूल रूपं ।
तिमज राणी तणां हरष नां वश थकी,
विकस्या ऊंचा थया रोम कूपं ।।

२०. तेह स्वप्न प्रतै ग्रही निश्चै करी, उठ सेज्या थकी तुरत चाली ।
देह नें मन तणी चपलता रहित छै, विलंब संभ्रांत रहित हाली ।।

२१. राजहंसीव शुभ गमन करती छती,
जबर बल नृपति नीं सेज आवै ।
इष्ट मनोहारी मन प्रीतिकारी भला,
वचन मनोज्ञ करि नृप जगावै ।।

२२. अतिही मनगमता ओदार कल्याण करि,
वाणि शिव धन्य मंगल सश्रीको ।
कोमल मधुर मंजुल वचने करी, बोलती नृपति जगाय नीको ।।

२३. ताम बल राजाए आंण दीधां छतां, नाना प्रकार नां रत्न जाणी ।
चंद्रकांतादि मणी भांत जे चीतरचा, एहवे भद्रासणें बैठी राणी ।।

२४. गमन थी ऊपनो श्रम जे टालियो, रालियो दूर संक्षोभ राणी ।
सुख वर अथवा शुभ आसन प्रति रही,
बोलती नृपति नें मिष्ट वाणी ।।

*लय : कड़खा री

१. जंभाई

त्ति दीप्यमाने पिंगले अक्षिणी यस्य स तथा ।
(वृ० प० ५४१)

१४. विसालपीवरोरु पडिपुण्णविपुलखंधं
विशाले—विस्तीर्णे पीवरे—उपचिते ऊरू—जंघे यस्य परिपूर्णो विपुलश्च स्कन्धो यस्य स तथा
(वृ० प० ५४१)

१५. मिउविसयसुहुमलक्खणपसत्थविच्छिन्नकेसरसडोव-सोभियं
मृदवः 'विसद' त्ति स्पष्टाः सूक्ष्माः 'लक्खण-पसत्थ' त्ति प्रशस्तलक्षणाः विस्तीर्णाः केसरसटाः स्कन्धकेश-च्छटास्ताभिरुपशोभितो यः स तथा (वृ० प० ५४१)

१६. ऊसिय-सुनिम्मिय-सुजाय-अप्फोडियलंगूलं
उच्छ्रितं—ऊर्ध्वीकृतं सुनिर्मितं—सुष्ठु अधोमुखीकृत सुजातं—शोभनतया जातं आस्फोटितं च भूमावास्फा-लितं लांगूलं येन स तथा (वृ० प० ५४१)

१७. सोमं सोमाकारं लीलायंतं जंभायंतं नहयलाओ ओवयमाणं नियय-वयणमतिवयंतं

१८. सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा समाणी हट्ठतुट्ठ जाव (सं०पा०) हियया

१९. धाराहयकलंबगं पिव समूसवियरोमकूवा

२०. तं सुविणं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवलमसंभंताए अविलंबियाए
'अतुरियमचवलं' त्ति देहमनश्चापल्यरहितं यथा भवत्येवम् 'असंभंताए' त्ति अनुत्सुकया
(वृ० प० ५४१)

२१,२२. रायहंससरीसीए गईए जेणेव बलस्स रण्णो सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं मिय-महुर-मंजुलाहिं गिराहिं संलवमाणी-संलवमाणी पडिबोहेइ ।

२३. बलेण रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयण-भित्तिचित्तंसि भद्दासणंसि निसीयति

२४. आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया बलं रायं
'आसत्थ' त्ति आश्वस्ता गतिजनितश्रमाभावात् 'वीसत्थ' त्ति विश्वस्ता संक्षोभाभावात् अनुत्सुका वा 'सुहासणवरगय' त्ति सुखेन सुखं वा शुभं वा आसन-वरं गता या सा तथा (वृ० प० ५४१)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५. सुपन वर्णन तणी दोय सौ ऊपरै, एस अड़तीसमीं ढाल आखी।
पूज्य भिक्षु भारिमाल ऋषिराय थी,
'जय-जश' हरष आनन्द साखी।।

ढाल : २३९

दूहा

१. इष्ट जाव वच बोलती, सुंदर भाखै स्वाम।
इम निश्चै करि आज हूं, देवानुप्रिय ! आम।।

२. तेहवी सिज्या नैं विषे, देह प्रमाण पल्यंक।
तिमज यावत निज मुख विषे, सिंघ प्रवेश सुअंक।।

३. पेखी मृगपति स्वप्न प्रति, हूं जागी हे नाथ !
ते माटै देवानुप्रिय ! तुझ प्रति पूछूं बात।।

४. ए उदार यावत प्रभु, महास्वपन नुं पेख।
कैहवूं फल कल्याणकर, फल वृत्ति हुस्यै विशेख ?

५. *तिण अवसर बल राय, वनिता मुख थी वाय। आछेलाल।
सुण हिय धर हरख्यो घणो।।

६. पायो परम संतोष, यावत सुख नों पोष। आछेलाल।
हिरदो विकस्यो नृप तणो।।

७. मेघ धाराए जेम, नीप कदंब तरु लेम। आछेलाल।
सुरभि कुसुम तेहनां परै।।

८. पुलकित तनु थयो राय, रोमकूप विकसाय। आछेलाल।
सहज स्वप्न अवग्रह करै।।

९. ईहा प्रवेश करंत, आतम स्वभावे हुंत। आछेलाल।
आभिनिबोध प्रभाव थी।।

१०. बुद्धि उत्पत्तिया आदि, तिण करि सुपनु लाधि। आछेलाल।
फल निश्चय करै चाव थी।।

११. प्रभावती नैं राजन, इष्ट मनोज्ञ वचन। आछेलाल।
यावत रव मंगलपणैं।।

१२. मृदु मधुर सश्रीक, राणी प्रतै तहतीक। आछेलाल।
बोलंतो नृप इम भणैं।।

---

१. ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव''गिराहिं संलवमाणी-संलवमाणी एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! अज्ज

२. तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टिए तं चेव जाव नियगवयणमइवयंतं सीहं सुविणे

३. पासित्ता णं पडिबुद्धा तण्णं देवाणुप्पिया !

४. एयस्स ओरालस्स जाव महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?
(श० ११।१३३)

५,६. तए णं से बले राया पभावईए देवीए अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव (सं० पा०) हियए

७,८. धाराहयनीवसुरभिकुसुम-चंचुमालइयतणुए ऊसवियरोमकूवे तं सुविणं ओगिण्हइ
'चंचुमालइय' त्ति पुलकिता तनुः—शरीरं यस्य स तथा, किमुक्तं भवति ? 'ऊसवियरोमकूवे' त्ति उच्छ्रितानि रोमाणि कूपेषु—तद्रन्ध्रेषु यस्य स तथा
(वृ० प० ५४१)

९. ईहं पविसइ, पविसित्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं
'मइपुव्वेणं' ति आभिनिबोधिकप्रभवेन
(वृ० प० ५४१)

१०. बुद्धिविण्णाणेणं तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेइ
'बुद्धिविन्नाणेणं' ति मतिविशेषभूतौत्पत्तिक्यादिबुद्धि-रूपपरिच्छेदेन 'अत्थोग्गहणं' ति फलनिश्चयम्।
(वृ० प० ५४१)

११. पभावइं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव मंगल्लाहिं

१२. मिय-महुर-सस्सिरीयाहिं वग्गूहिं संलवमाणे संलवमाणे एवं वयासी—

---

*लय : आछेलाल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. मोटो स्वप्न उदार, हे देवी ! तुम सार । आछेलाल ।
पेख्यो अति महिमानिलो ।।

१४. कल्याणकारी एह, हे देवी ! गुणगेह । नीकेलाल ।
देख्यो तुम सुपनो भलो ।।

१५. जाव सश्रीक मुसोह, हे देवी ! मन मोह । प्यारेलाल ।
देख्यो सुपन गुणधारक ।।

१६. आयोग्य तुष्ट अमंद, दीर्घ आयु सुख कंद । प्यारेलाल ।
कल्याण मंगल कारक ।।

१७. तुम्हे देवी नंत सार, देख्यो सुपन उदार । नीकेलाल ।
वारू अर्थ वधारतो ।।

वा०—इहां कल्याण शब्द अर्थ-प्राप्ति अनैं मंगल शब्द अनर्थ-प्रतिघात नैं अर्थे प्रयुक्त छै ।

१८. अर्थ लाभ अभिराम, भोग लाभ सुख धाम । प्यारेलाल ।
पुत्र लाभ देवानुप्रिये !

१९. राज लाभ रलियात, देवानुप्रिय ! सुजात । नीकेलाल ।
इम निश्चै तुम्ह आखियै ।।

२०. पूर्ण मास नव थात, ऊपर साढा सात । आछेलाल ।
रात्रि दिवस व्यतिक्रांतिये ।।

२१. अम्ह कुल-केतु समान, केतु ते चिन्ह ध्वज जान । नीकेलाल ।
केतु अद्भूतपणां हुंती ।।

२२. कुल में दीपक जेम, उद्योतकारी एम । प्यारेलाल ।
प्रकाशकारी महाद्युती ।।

२३. कुल में गिरि सम गृह, पराभवो न सकेह । आछेलाल ।
स्थिराश्रय नां साधर्म्य थी ।।

२४. कुल अवतंसक जाण, शेखर सम गुणखाण । प्यारेलाल ।
उत्तमपणें शुभ कर्म थी ।।

२५. कुल में तिलक समान, भूषकपणां थी जान । नीकेलाल ।
तिलक कह्यो इह विध सही ।।

२६. कुल नैं विषे उदार, कीर्त्ति तणो करणहार । आछेलाल ।
कीर्त्ति प्रसिद्ध इक दिशि मही ।।

२७. कुल में नंदि करेह, समृद्धि हेतुपणेह । प्यारेलाल ।।
पवर सुकुल वृद्धि करण ही ।।

२८. वलि अम्ह कुल रै मांय, यश कारक कहिवाय । नीकेलाल ।।
यश सहु दिशि में प्रसिद्ध ही ।।

२९. कुल नैं आधार विछान, कुल में वृक्ष समान । प्यारेलाल ।
छाया आश्रयवा जोग ही ।।

१३. ओराले णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे

१४. कल्लाणं णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे

१५. जाव सस्सिरीए णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे

१६. आरोग्ग-तुट्ठिदीहाउ-कल्लाण-मंगल्लकारए णं

१७. तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे

वा—इह कल्याणानि—अर्थप्राप्तयो मंगलानि—अनर्थप्रतिघाताः (वृ० प० ५४१)

१८. अत्थलाभो देवाणुप्पिए ! भोगलाभो देवाणुप्पिए ! पुत्तलाभो देवाणुप्पिए !

१९. रज्जलाभो देवाणुप्पिए ! एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए !

२०. नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीइक्कंताणं

२१. अम्हं कुलकेउं
'कुलकेउं' ति केतुश्चिन्हं ध्वज इत्यनर्थान्तरं केतुरिव केतुरद्भुतत्वात् कुलस्य केतुः कुलकेतुस्तम् (वृ० प० ५४१)

२२. कुलदीवं
'कुलदीवं' ति दीप इव दीपः प्रकाशकत्वात् (वृ० प० ५४१)

२३. कुलपव्वयं
'कुलपव्वयं' ति पर्वतोऽनभिभवनीयस्थिराश्रयतासाधर्म्यात् (वृ० प० ५४१)

२४. कुलवडेंसयं
'कुलवडेंसयं' ति कुलावतंसकं कुलस्यावतंसकः—शेखर-उत्तमत्वात् (वृ० प ५४१)

२५. कुलतिलगं
'कुलतिलयं' ति तिलको—विशेषको भूषकत्वात् (वृ० प० ५४१)

२६. कुलकित्तिकरं
'कुलकित्तिकरं' ति इह कीर्त्तिरेकदिग्गामिनी प्रसिद्धिः (वृ० प० ५४१)

२७. कुलनंदिकरं
'कुलनंदिकरं' ति तत्समृद्धिहेतुत्वात् (वृ० प० ५४१)

२८. कुलजसकरं
'कुलजसकरं' ति इह यशः—सर्वदिग्गामी प्रसिद्धिविशेषः (वृ० प० ५४१)

२९. कुलाधारं, कुलपायवं
'कुलपायवं' ति पादपश्चा-श्रयणीयच्छायत्वात् (वृ० प० ५४१)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३०. कुल नों विविध प्रकार, वृद्धि तणो करणहार । आछेलाल ।
तास स्वभाव प्रयोग ही ।।

३१. कर पग तसु सुखमाल, पांचूं इंद्रिय विशाल । प्यारेलाल ।
स्वरूप थीज हीणा नथी ।।

३२. पंचेंद्रिय प्रतिपून, संख्या करिनैं अनून । नीकेलाल ।
अथवा पुन्य पवित्र थी ।।

३३. एहवो तास शरीर, जाव शब्द में हीर । आछेलाल ।
लक्षण वंजन आद थी ।।

३४. शशिवत सौम्याकार, कांत मनोहर सार । आछेलाल ।
प्रिय दर्शण अहलाद थी ।।

३५. सुंदर रूडो रूप, तनु प्रभा अधिक अनूप । आछेलाल ।
देवकुंवर सम जेहनीं ।।

३६. एहवो पुत्र उदार, जन्मसी महा सुखकार । प्यारेलाल ।
जबर पुन्याई तेहनीं ।।

३७. ते पिण बालक जाण, बाल भाव मूकाण । नीकेलाल ।
विज्ञक जाण विशेषही ।।

३८. तेहिज परिणत मात्र, कला बोहितर पात्र । प्यारेलाल ।
योवन वय पाम्यो छतो ।।

३९. दान देवण में सूर, तथा अंगीकृत भूर । नीकेलाल ।
तेह प्रतै निर्वाहतो ।।

४०. वीर संग्रामे जेह, विक्रांत पर भूमेह । नीकेलाल ।
लेणहार सुख साधि ही ।।

४१. विच्छिण्ण[1] विपुल अर्थ ताय,
अतिही विपुल कहिवाय । नीकेलाल ।
बल वाहन गो आदि ही ।।

४२. राज्य नों स्वामी स्वाधीन, पोता नैं वश चीन । प्यारेलाल ।
नृपति हुस्यै महिमानिलो ।।

४३. ते भणी एह उदार, देवानुप्रिय ! सार । आछेलाल ।
देख्यो तुम स्वपनो भलो ।।

४४. जावत मंगलकार, स्वपन देख्यो सुखकार । आछेलाल ।
हे देवानुप्रिय ! सुंदरी ।।

४५. एम कहीनैं राय, प्रभावती प्रति ताय । प्यारेलाल ।
इष्ट जावत वचने करी ।।

४६. वारू बे त्रिण वार, मधुर मंजुल वच सार । नीकेलाल ।
राणी प्रतै राजा कहै ।।

४७. बेसौ गुणचालीसमीं ढाल, भिक्खु भारीमाल नृप न्हाल । आछेलाल ।
'जय-जश' सुख संपति लहै ।।

३०. कुलविवद्धणकरं
'कुलविवड्ढणकरं' ति विविधैः प्रकारैर्वर्द्धनं विवर्धनं तत्करणशीलं (वृ० प० ५४१)

३१,३२. सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरं
'अहीणपुन्नपंचिंदियसरीरं' ति अहीनानि—स्वरूपतः पूर्णानि—संख्यया पुण्यानि वा—पूतानि पञ्चेन्द्रियाणि यत्र तत्तथा (वृ० प० ५४१)

३३. तदेवंविधं शरीरं यस्य स तथा तं यावत्करणात्—
'लक्खणवंजणगुणोववेयं' मित्यादि दृश्यम्
(वृ० प० ५४१)

३४. ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं

३५. सुरूवं देवकुमारसमप्पभं

३६. दारगं पयाहिसि

३७,३८. से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णयपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते
'विन्नायपरिणयमित्ते' त्ति विज्ञ एव विज्ञकः स चासौ परिणतमात्रश्च कलादिष्विति गम्यते विज्ञकपरिणतमात्रः (वृ० प० ५४१,५४२)

३९. सूरे
'सूरे' त्ति दानतोऽभ्युपेतनिर्वाहणतो वा
(वृ० प० ५४२)

४०. वीरे विक्कंते
'वीरे' त्ति संग्रामतः 'विक्कंते' त्ति विक्रान्तः—परकीयभूमण्डलाक्रमणतः (वृ० प० ५४२)

४१. वित्थिण्ण-विउलबल-वाहणे
'विच्छिन्नविपुलबलवाहणे' त्ति विस्तीर्णविपुले—अतिविस्तीर्णे बलवाहने—सैन्यगजादिके यस्य स तथा
(वृ० प० ५४२)

४२. रज्जवई राया भविस्सइ ।
'रज्जवइ' त्ति स्वतंत्र इत्यर्थः (वृ० प० ५४२)

४३. तं ओराले णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे

४४. जाव आरोग्ग तुट्ठि जाव (सं० पा०) मंगल्लकारए णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे

४५. त्ति कट्टु पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं

४६. दोच्चं पि तच्चं पि अणुबूहति ।
(श० ११।१३४)

[1] अंगसुत्ताणि में विच्छिण्ण के स्थान पर 'वित्थिण्ण' पाठ है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा

१. प्रभावती तिण अवसरे, बल राजा नैं पास।
एह अर्थ सुण हृदय धर, हरष संतोष हुलास ।।
२. बे कर जोड़ी जाव ते, सुंदर बोलै एम।
इमहिज देवानुप्रिया ! देवानुप्रिय ! तेम ।।
३. ए सत्य देवानुप्रिया ! वलि संदेह रहीत।
वांछ्यो विशेष वांछियो, इच्छिय-पडिच्छिय प्रीत ।।

४. जिम तुम एह कह्यो अछो, तेहिज वचन ए सत्य।
इम कहि ते शुभ स्वप्न प्रति, राणी अंगीकृत्य ।।
५. बल राजाइं आगन्या, दीधे छतेज जेह।
नाना मणि रत्ने करी, भांते चित्रत तेह ।।
६. एहवा भद्रासण थकी, ऊठै ऊठी तत्थ।
अचपलता तन मन तणी, जाव राजहंस गत्त ।।
७. जिहां पोता नीं सेज छै, त्यां आवी नैं आप।
सिज्या ऊपर बैस नैं, एम कहै स्थिर स्थाप ।।
८. उत्तम वर मंगलीक मुझ, स्वप्न विलोक्यो तेह।
अन्य पाप स्वप्ने करी, रखे हणास्यै एह ।।

वा०—उत्तम ते स्वरूप थकी, प्रधान ते अर्थ प्राप्ति रूप प्रधान फल थकी, मंगल ते अनर्थ प्रतिघात रूप फल अपेक्षा करी।

९. एम कही गुरु देव नीं, प्रशस्त मंगलकार।
कथा धर्ममय तिण करी, राखै स्वप्न उदार ।।
१०. स्वप्न राखवा काज ए, निद्रा भणी निवार।
स्वप्न जागरणा जागती, विचरै छै नृप-नार ।।
११. *बल नृप कहै तिण अवसरे, सेवग पुरुष बोलायो जी,
वयण मधुर इम वागरे, देवानुप्रिया जायो जी।
शीघ्र देवानुप्रिया थे, आज तुम्ह सुविशेष ही,
बाहिरली उवठाण शाला, दीवानखाना प्रति सही।
सुगंध पाणी करी सींची, अशुचि प्रति दूरो हरे,
एम भूमि पवित्र कीजे, बल नृप कहै तिण अवसरे ।।
१२. कचर प्रतै टाली करी, छगणादिक करि तामो जी,
भूमि प्रति लीपी वलि, शुद्ध करो अभिरामो जी।
अभिरामकारी भूमि कीजै, ते दीवानखाना प्रति,
सुगंध प्रवर प्रधान एहवा, पुष्प पंच वर्णा कृति।
उपचार पूजा सहित कीजै, अधिक हर्ष हिवडे धरी,
भूमि शुद्ध पवित्र कीजै, कचर प्रति टाली करी ।।
१३. कृष्णागर प्रधान ए, चोर सेला रस जाणी जी,
यावत धूप तिणे करी, गंधवर्त्ति पहिछाणी जी।
गंधवर्त्तीभूत कीजै, अन्य पास करावियै,
वलि सिंहासण रची नैं मुझ, आण पाछी आवियै।

*लय : इक दिन साधूजी वंदवा गई सुभद्रा नारो जी

१. तए णं सा पभावती देवी बलस्स रण्णा अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा
२. करयल जाव (सं०पा०) एवं वयासी—एवमेयं देवाणुप्पिया ! तहमेयं देवाणुप्पिया !
३. अवितहमेयं देवाणुप्पिया ! असंदिद्धमेयं देवाणुप्पिया ! इच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया !
४. से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता
५. बलेणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणभत्तिचित्ताओ
६. भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवल जाव (सं० पा०) रायहंससरिसीए गईए
७. जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि निसीयति, निसीयित्ता एवं वयासी—
८. मा मे से उत्तमे पहाणे मंगल्ले सुविणे अण्णेहिं पावसुविणेहिं पडिहम्मिस्सइ

९,१०. त्ति कट्टु देवगुरुजणसंबद्धाहिं पसत्थाहिं मंगल्लाहिं धम्मियाहिं कहाहिं सुविणजागरियं पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ। (श० ११।१३५)

११. तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अज्ज सविसेसं बाहिरियं उवट्ठाणसालं गंधोदयसित्त-सुइय

१२. संमज्जिओवलित्तं सुगंधवरपंचवण्णपुप्फोवयारकलियं
संमार्जिता कचवरापनयनेन उपलिप्ता छगणादिना या सा तथा (वृ० प० ५४२)

१३. कालागरु-पवरकुन्दुरुक्क जाव (सं० पा०) गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य करेत्ता य कारवेत्ता य सीहासणं रएह, रएत्ता ममेतमाणत्तियं पच्चप्पिणह। (श० ११।१३६)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेवग यावत वच अंगीकर, राय कह्यो तिम जान ए,
करी करावी आण सूंपी, कुष्णागर प्रधान ए ।।

१४. इह अवसर नृप मनरली, दिन उगैज प्रभातो जी,
सेज थकी ऊठी करी, रूड़ै चित रलियातो जी ।
रलियात चित्ते पागपीठ थी, ऊतरी नैं नरपती,
अट्टण ते व्यायामशाला, आवियो तिहां हरष थी ।
कह्यूं उववाइ विषे तिम, अट्टणसाल थी नीकली,
तिमज मंजन घरे मंजन, इह अवसर नृप मनरली ।।

वा० – 'जहा उववाइए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे'– जिम उववाइ नैं विषे अट्टणशाला ते व्यायामशाला नों वृत्तांत अनैं वलि मंजन घर नों वृत्तांत कह्यो तिण प्रकारे करिकै इहां पिण कहिवो ।

१५. यावत चंद्र तणी परे, प्रियदर्शण जन प्यारो जी,
मंजन घर थी नीसरी, आवै नृप तिणवारो जी ।
आवियो नृप बारली, उवठाणसाला छै जिहां,
सिंहासण पूर्व दिशि साहमूं, मुख करी बैठो तिहां ।
आप थी ईशाणकूणे, आठ भद्रासण वरै,
रचावै सित पटे ढांक्या, यावत चंद्र तणी परै ।।

१६. सरसव पवर करी कियो, मंगलीक उपचारो जी,
भद्रासण एहवा भला, पेखत पामै प्यारो जी ।
प्यार पामै पेखतां वलि, आप थी दूरो नहीं,
ढूंकड़ो पिण नहीं अछै त्यां, वर परेच खंचावहीं ।
अभ्यंतर आस्था मंडप, तास मध्य भागे लियो,
जवनिका नों अधिक वर्णन, सरसव पवर करी कियो ।।

१७. नाना विविध प्रकार नां, मणि चंद्रकांत आदो जी,
कर्केतनादिक रत्न थी, मंडित चित अहलादो जी ।
अहलाद चित्तज पेखतां ह्वै, घणुं देखवा जोग है,
महामूल्य वर पट्टण सेती, नीपनों आरोग है ।
सूत्रमय पट अछै सूक्षम, भांत शत चित्रित घनां,
त्राण रक्षक जवनिका रे, नाना विविध प्रकार नां ।।

१८. ईहामृग वृषभा वली, तुरग नर मगर पंखी पेखो जी,
श्वापद भुयंग नैं किन्नरा, रूरू मृग नों विशेखोजी ।
विशेष मृग नों तेह रूरू, सरभ पारासर कह्या,
चमर कुंजर वनलता, वलि लता पद्म तणी लह्या ।
एह भांते चीतर्‌या छै, जवनिका परियच भली,
अभ्यंतर पासै रचावी, ईहामृग वृषभा वली ।।

१९. नाना विविध विचित्र ही, रत्न मणी नां ताह्यो जी,
भांते चित्रित एहवो, भद्रासण सुरचायो जी ।
रचाय भद्रासण आस्तरक, मृदु मसूरे ढांकियो,
अस्त रज अथवा निमल, मृदु मसूरे आच्छादियो ।

*लय : इक दिन साधूजी वंदवा गई सुभद्रा नारी जी

तए णं कोडुंबियपुरिसा जाव…करेत्ता य कारवेत्ता य सीहासणं रएत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।
(श० ११।१३७)

१४. तए णं से बले राया पच्चूसकालसमयंसि सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, अट्टणसालं अणुपविसइ, जहा ओववाइए (सू०६३) तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे

वा०—यथौपपातिकेऽट्टणशालाव्यतिकरो मज्जनगृहव्यतिकरश्चाधीतस्तथेहाप्यध्येतव्य इत्यर्थः (वृ० प० ५४२)

१५. जाव ससिव्व पियदंसणे नरवई जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, निसीयित्ता अप्पणो उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अट्ठ भद्दासणाइं सेयवत्थपच्चत्थुयाइं

१६. सिद्धत्थगकयमंगलोवयाराइं रयावेइ, रयावेत्ता अप्पणो अदूरसामंते

१७. नाणामणिरयणमंडियं अहियपेच्छणिज्जं महग्घवरपट्टणुग्गयं सण्हपट्टभत्तिसयचित्तताणं

१८. ईहामिय-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्तिचित्तं अब्भिंतरियं जवणियं अंछावेइ
व्यालाः—स्वापद- भुजगाः……रुरवो—मृगविशेषाः शरभा —आटव्या महाकायाः पशवः परासरेति पर्यायाः …एतासां यका भक्तयो—विच्छित्तयस्ताभिश्चित्रा या सा तथा । (वृ० प० ५४२)

१९. नाणामणिरयणभत्तिचित्तं अत्थरय-मउयमसूरगोत्थयं सेयवत्थपच्चत्थुयं अंगसुहफासयं सुमउयं पभावतीए देवीए भद्दासणं रयावेइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्वेत वस्त्रे ढांकियो, तनु सुख स्पर्श पवित्र ही,
राणि काजै मृदु भद्रासण, नाना विविध विचित्र ही ।।
२०. नृप कहै नफर बोलाय नैं, अधिक हर्ष उचरंगो जी,
शीघ्र तुम्हे देवानुप्रिया ! महा निमित्त अष्ट अंगो जी ।
अष्ट अंग महा निमित्त परोक्ष अर्थ प्ररूपणा,
करणहारा महाशास्तर सूत्र अर्थ निरूपणा ।
बिहूं धारक वली कौशल, विविध शास्त्राध्याय नैं,
तेड़िये शुभ स्वप्न पाठक, नृप कहै नफर बोलाय नैं ।

दूहा

२१. दिव्य उत्पातज अंतरिख, भोम अंग स्वर जान ।
लक्षण व्यंजन एक-इक त्रिविध त्रिविध पहिछान ।।
२२. सूत्र थकी नैं वृत्ति थी, वार्तिक थी फुन जोय ।
तीन-तीन अै भेद है, अष्ट निमित्त नां सोय ।।
२३. *सेवग नृप वच सांभली, जाव कियो अंगीकारो जी,
बल राजा नां समीप थी, नीकलियो तिण वारो जी ।
नीकल्यो तिण वार सेवग, शीघ्र त्वरित चपला गई,
चंड गति वलि वेगवंतज, हत्थिणापुर मध्य थई ।
स्वप्न लक्षण पाठकां नां, घर तिहां आवै चली,
तेह पाठकां प्रतै तेडै, सेवग नृप वच सांभली ।।

सोरठा

२४. शीघ्र प्रमुख पद पंच, एकार्थे ए आखिया ।
उत्सुक उत्कर्ष संच, ते प्रतिपादन तत्परा ।।
२५. *स्वप्न लक्षण पाठक तदा, नृप नैं सेवग सोयो जी ।
तेड्यां हरख पाया घणां, अंतर आनंद होयो जी ।
अंतर आनंद अधिक पाया, मंजन वलि बलिकर्म करी ।
जाव अलंकृत अंग करिनैं, सरसव द्रोब शिरे धरी ।
एह मंगल करी निज-निज घर थकी चाल्या मुदा ।
हत्थिणापुर मध्य थई नैं, स्वप्न लक्षण पाठक तदा ।।
२६. भवन महिपति नुं तिहां, अवतंसक मुख्यावासो जी ।
तिहां आवै आवी करी, मिल्या एकठा तासो जी ।
द्वार मूले एकठा मिल, जिहां नृप नीं बारली ।
उपस्थानसाला जिहां बल नृपति सहु आवै चली ।
कर जोड़ बल अवनीस नैं, जय विजय वर्धापै जिहां ।
आशीर्वच मुख उच्चरै ते, भवन महिपति नुं तिहां ।।
२७. स्वप्न लक्षण पाठक प्रते, बल राजा ए वंद्या जी ।
पूज्या नैं सत्कारिया, सनमाने आनंद्या जी ।
सनमान दीधे जूजुआ, जे पूर्वे नरपति थापिया ।
तेह भद्रासणे बैठा, हरष थी नृप आपिया ।

*लय : इक दिन साधूजी वंदवा गई सुभद्रा नारो जी

अथवाऽस्तरजसा—निर्मलेन मृदुमसूरकेणावस्तृतं—आच्छादितं यत्तत्तथा (वृ० प० ५४२)

२०. कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अट्ठंगमहानिमित्तसुत्तत्थधारए विविहसत्थकुसले सुविणलक्खणपाढए सद्दावेह । (श० ११।१३८)

'अट्ठंगमहानिमित्तसुत्तत्थधारए' त्ति अष्टाङ्ग—अष्टावयवं यन्महानिमित्तं—परोक्षार्थप्रतिपत्तिकारणव्युत्पादकं महाशास्त्रं तस्य यौ सूत्रार्थौ तौ धारयन्ति ये ते तथा तान् (वृ० प० ५४२)

२१. अट्ठ निमित्तंगाइं दिव्वुप्पातंतरिक्ख भोमं च ।
अंगं सर लक्खण वंजणं च तिविहं पुणेक्केक्कं ।। (वृ० प० ५४२)

२३. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता बलस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता सिग्घं तुरियं चवलं चंडं वेइयं हत्थिणपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव तेसिं सुविणलक्खणपाढगाणं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ते सुविणलक्खणपाढए सद्दावेंति । (श० ११।१३९)

२४. 'सिग्घ' मित्यादीन्येकार्थानि पदानि औत्सुक्योत्कर्षप्रतिपादनपराणि । (वृ० प० ५४२)

२५. तए णं से सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठा ण्हाया कयबलिकम्मा जाव (सं० पा०) सरीरा सिद्धत्थगहरियालियाकयमंगलमुद्धाणा सएहिं-सएहिं गेहेहिंतो निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता हत्थिणपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं

२६. जेणेव बलस्स रण्णो भवणवरवडेंसए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भवणवरवडेंसगपडिदुवारंसि एगओ मिलंति, मिलित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल···बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति ।

२७. तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलेणं रण्णा वंदियपूइय-सक्कारिय-सम्माणिया समाणा पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वण्णत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति । (श० ११।१४०)

तए णं से बले राया पभावतिं देविं जवणियंतरियं ठावेइ, ठावेत्ता पुप्फफलपडिपुण्णहत्थे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताम नृपति प्रभावती प्रति, पुष्प फल प्रतिपुन हथे।
बैसाणी ते जवनिका में, स्वप्न लक्षण पाठक प्रते ।।
२८. परमोत्कृष्ट विनय करी, पाठक प्रति पूछंतो जी।
इम निश्चै देवानुप्रिया! प्रभावती मतिवंता जी।
मतिवंत देवी आज तेहवै, वास घर यावत भलो।
सिंघ स्वप्नो देख जागी, तास फल स्यूं गुणनिलो ?
ढाल बेसौ चालीसमी, भिक्षु भारीमाल नृप चंद री।
सुख संपदा पामी 'सुजय-जश' परमोत्कृष्ट विनय करी ।।

२८. परेणं विणएणं ते सुविणलक्खणपाढए एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावती देवी अज्ज तंसि तारिसगंसि वासघरंसि जाव सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा तण्णं देवाणुप्पिया ! एयस्स ओरालस्स जाव महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

ढाल : २४१

दूहा

१. स्वप्न लक्षण पाठक तदा, नृप वच सुण निर्दोष।
हृदय धार हरख्या घणां, पाया अति संतोष ।।
२. अवग्रहै ते स्वप्न प्रति, ईहा करत विचार।
अथ स्वप्न नों ग्रहण कर, आपस में संचार ।।

१. तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा
२. तं सुविणं ओगिण्हंति, ओगिण्हित्ता ईहं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेंति अण्णमण्णेणं सद्धि संचालेंति

३. तेह स्वप्न नां अर्थ नें, लाधा निज थी ताय।
ग्रह्या अर्थ जे पर थकी, संसय थी पूछाय ।।

३. तस्स सुविणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा
'लद्धट्ठ' त्ति स्वतः 'गहियट्ठ' त्ति परस्मात् 'पुच्छियट्ठ' त्ति संशये सति परस्परतः (वृ० प० ५४२)

४. विशेष निश्चै कर किया, अर्थ स्वप्न नां आप।
इतरै जाण्या अर्थ नैं, स्थिर बुद्धि थी स्थाप ।।
५. बल राजा नैं आगले, स्वप्न शास्त्र प्रति सोय।
उच्चारण करतो थको, इम भाखै अवलोय ।।

४. विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा
५. बलस्स रण्णो पुरओ सुविणसत्थाइं उच्चारेमाणा-उच्चारेमाणा एवं वयासी—

६. *नरिंद मोरा, इम निश्चै करि स्वाम,
स्वप्न शास्त्र अम्हारा, स्वामी मोरा।
तेह विषे रे, म्हारा नाथ ।।
नरिंद मोरा, स्वप्न बयांलीस ताम,
फल सामान्यपणां थी रे, स्वामी मोरा।
इम अखै रे, म्हारा नाथ ।।

६. एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा
'सुविण' त्ति सामान्यफलत्वात् (वृ० प० ५४३)

७. नरिंद मोरा, मोटा स्वप्न सुतीस,
तास बड़ो फल पामै रे, स्वामी मोरा।
ते भणी रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, सर्व मिली नैं जगीस,
स्वप्न बोहित्तर नामैं रे, स्वामी मोरा।
कहै गुणी रे, म्हारा नाथ ।।

७. तीसं महासुविणा—बावत्तरिं सव्वसुविणा दिट्ठा।
'महासुविण' त्ति महाफलत्वात् 'बावत्तरिं' ति त्रिंशतो द्विचत्वारिंशतश्च मीलनादिति (वृ० प० ५४३)

---

*लय : मुणींद मोरा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. नरिंद मोरा, जिन चक्री नीं मांय,
जिन चक्री गर्भे आयां रे, स्वामी मोरा।
अनुरागिये रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, तीसां मांहिला ताय,
चवद स्वप्न महा देखी रे, स्वामी मोरा!
जागिये रे, म्हारा नाथ।।

९. नरिंद मोरा, हस्ती वृषभ नै सींह,
स्वप्न लक्ष्मी देवी रे, स्वामी मोरा।
गुणनिलो रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, पुष्पमाल शुभ लीह,
चंद सूर्य ध्वज लेवी रे, स्वामी मोरा।
कुंभ भलो रे, म्हारा नाथ।।

१०. नरिंद मोरा, पद्म सरोवर तास,
समुद्र विमान तथा वलि रे, स्वामी मोरा।
भवन ही रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, पवर रत्न नीं राश,
अग्निशिखा दीपंती रे, स्वामी मोरा।
चवदही रे, म्हारा नाथ।।

८. तत्थ णं देवाणुप्पिया! तित्थगरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा तित्थगरंसि वा चक्कवट्टिसि वा गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झंति।

९,१०. गय उसह सीह अभिसेय दाम ससि दिणयरं झयं कुंभं।
पउमसर सागर विमाणभवण रयणुच्चय सिहिं च।।
'अभिसेय' त्ति लक्ष्म्या अभिषेकः 'दाम' त्ति पुष्पमाला
(वृ० प० ५४३)

सोरठा

११. विमान नैं आकार, भवन अछै रलियामणो।
ते माटै अवधार, विमान भवनज एक छै।।
१२. तथा स्वर्ग सूं आय, विमान देखै तसु अमा।
नरक थकी जे थाय, तसु माता देखै भवन।।

११. 'विमाणभवण' त्ति एकमेव, तत्र विमानाकारं भवनं विमानभवनम्। (वृ० प० ५४३)
१२. अथवा देवलोकाद्योऽवतरति तन्माता विमानं पश्यति यस्तु नरकात् तन्माता भवनमिति। (वृ० प० ५४३)

१३. *नरिंद मोरा, वसुदेव नी मांय,
वासुदेव गर्भे आयां रे, स्वामी मोरा।
देखियै रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, चवद मांहिला ताय,
अन्य सप्त महा सुपना रे, स्वामी मोरा।
पेखियै रे, म्हारा नाथ।।

१३. वासुदेवमायरो वासुदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे सत्त महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति।

१४. नरिंद मोरा, वर बलदेव सुमात,
गर्भ विषे बलदेवज रे, स्वामी मोरा।
आवियै रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, चवद मांहिला ताय,
अन्य च्यार महा सपना रे, स्वामी मोरा।
पावियै रे, म्हारा नाथ।।

१४. बलदेवमायरो बलदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति।

१५. नरिंद मोरा, नृप मंडलीक नीं मांय,
मंडलीक गर्भे आयां रे, स्वामी मोरा।
भालियै रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, चवद मांहिलो ताय,
अन्य एक महा सपनो रे, स्वामी मोरा।
न्हालियै रे, म्हारा नाथ।।

१५. मंडलियमायरो मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं णं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरं एगं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुज्झंति।

*लय : मुणींद मोरा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. नरिंद मोरा, देवानुप्रिया ! जेह,
एक स्वप्न महाराणी रे, स्वामी मोरा।
देखीइं रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, सांभल नृप गुण गेह,
मोटो स्वप्न उदारज रे, स्वामी मोरा।
विशेषीइं रे, म्हारा नाथ ॥

१६. इमे य णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए एगे महा-सुविणे दिट्ठे, तं ओराले णं देवाणुप्पिया! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे

१७. नरिंद मोरा, जाव आरोग्य तुष्टि जाण,
दीर्घायू कल्याणक रे, स्वामी मोरा।
कारको रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, मंगल हेतु पिछाण,
स्वप्न प्रभावती देख्यो रे, स्वामी मोरा।
गुणधारको रे, म्हारा नाथ ॥

१७. जाव आरोग्ग-तुट्ठिदीहाउ-कल्लाणमंगल्लकारए णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे

१८. नरिंद मोरा, अर्थ लाभ अभिराम,
भोग लाभ पिण भारी रे, स्वामी मोरा।
पामियै रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, पुत्र लाभ पिण ताम,
राज लाभ पिण होस्यै रे, स्वामी मोरा।
देवानुप्रिये रे, म्हारा नाथ ॥

१८. अत्थलाभो देवाणुप्पिया ! भोगलाभो देवाणुप्पिया ! पुत्तलाभो देवाणुप्पिया ! रज्जलाभो देवाणुप्पिया !

१९. नरिंद मोरा, देवानुप्रिय ! महाभाग,
नव मासे प्रतिपूर्ण रे, स्वामी मोरा।
जाव थी रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, तुम कुल केतु पताग,
जावत बाल जनमसी रे, स्वामी मोरा।
प्रभावती रे, म्हारा नाथ ॥

१९. एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीइक्कंताणं तुम्हं कुलकेउं जाव देवकुमारसमप्पभं दारगं पयाहिति।

२०. नरिंद मोरा, बाल भाव मूकाण,
जाव राज्यपति राजा रे, स्वामी मोरा।
हुस्यै सही रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, अथवा संत सुजाण,
संजम तप करि भावित रे, स्वामी मोरा।
आतम ही रे, म्हारा नाथ ॥

२०. से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे जाव (सं०पा०) रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा।

२१. नरिंद मोरा, ते माटै ए उदार,
देवी मोटो सुपनो रे, स्वामी मोरा।
देखियो रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, जाव आरोग्य तुष्टि सार,
दीर्घ आउखो जावत रे, स्वामी मोरा।
पेखियो रे, म्हारा नाथ ॥

२१. तं ओराले णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मंगल्लकारए पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे। (श० ११।१४२)

२२. नरिंद मोरा, तिण अवसर बलराय,
स्वप्न-लक्षण पाठक नों रे, स्वामी मोरा।
वच सुणी रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, हियै धार हरषाय,
कर तल जावत करनैं रे, स्वामी मोरा।
कहै थुणी रे, म्हारा नाथ ॥

२२. तए णं से बले राया सुविणलक्खणपाढगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे करयल जाव (सं० पा०) कट्टु ते सुविणलक्खणपाढगे एवं वयासी—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३. नरिंद मोरा, देवानुप्रिय ! इमहीज,
जावत तुम्हे कहो छो रे, स्वामी मोरा।
इम कही रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, रूड़ी रीत दै रीझ,
तेह निमल सुपना नैं रे, स्वामी मोरा।
सम्यग ग्रही रे, म्हारा नाथ ।।

२३. एवमेयं देवाणुप्पिया ! जाव (सं० पा०) से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ

२४. नरिंद मोरा, स्वप्न पाठक नैं विशाल,
विस्तीरण असणादिक रे, स्वामी मोरा।
च्यार ही रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, पुष्प वस्त्र गंध माल,
अलंकार कर राजा रे, स्वामी मोरा।
सतकार ही रे, म्हारा नाथ ।।

२४. सुविणलक्खणपाढए विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइम-पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ

२५. नरिंद मोरा, देई अधिक सनमान,
विस्तीरण आजीविक रे, स्वामी मोरा।
जोग ही रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, प्रीतिकारी दै दान,
सीख दियै संतोषी रे, स्वामी मोरा।
नृप सही रे, म्हारा नाथ ।।

२५. सम्माणेइ, सक्कारेत्ता, सम्माणेत्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ, दलयित्ता पडिविसज्जेइ।

२६. नरिंद मोरा, सिंहासण थी तेह,
ऊठी राणी पासे रे, स्वामी मोरा।
आवियो रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, इष्ट जाव वचनेह,
बोलंतो नृप भाखै रे, स्वामी मोरा।
हरषावियो रे, म्हारा नाथ ।।

२६. सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव पभावती देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव मियमहुरसस्सिरीयाहिं वग्गूहिं संलवमाणे-संलवमाणे एवं वयासी—

२७. नरिंद मोरा, निश्चै देवानुप्रिय ! जान,
स्वप्न शास्त्र रै मांहे रे, स्वामी मोरा।
आखिया रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, स्वप्न बयालीस मान,
मोटा सुपना तीसज रे, स्वामी मोरा।
भाखिया रे, म्हारा नाथ ।।

२७. एवं खलु देवाणुप्पिए ! सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा, तीसं महासुविणा

२८. नरिंद मोरा, सर्व बोहितंर सपन,
जिन चक्री नी माता रे, स्वामी मोरा।
जाणियै रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, तिमहिज जाव वचन,
अन्य एक महा सुपनो रे, । स्वामी मोरा।
माणियै रे, म्हारा नाथ ।।

२८. बावत्तरिं सव्वसुविणा दिट्ठा। तत्थ णं देवाणुप्पिए ! तित्थगरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा तित्थगरंसि वा चक्कवट्टिंसि वा गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति, तं चेव जाव मंडलियमायरो मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं णं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरं एगं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुज्झंति।

२९. नरिंद मोरा, देवानुप्रिय ! तुम ताय,
महास्वप्न इक दीठो रे, स्वामी मोरा।
सुंदरू रे, म्हारा नाथ।

२९. इमे य णं तुमे देवाणुप्पिए ! एगे महासुविणे दिट्ठे तं ओराले णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे जाव रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नरिंद मोरा, जाव हुस्यै राजपति राय,
अथवा भावित आतम रे, स्वामी मोरा।
मुनीवरू रे, म्हारा नाथ ॥

३०. नरिंद मोरा, ते भणी मोटो उदार,
स्वप्न देवी ! तुम दीठो रे, स्वामी मोरा।
गुणनिलो रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, जाव पूर्ववत सार,
देख्यो सुपनो वारू रे, स्वामी मोरा।
अतिभलो रे, म्हारा नाथ ॥

३०. तं ओराले णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे जाव······ सुविणेदिट्ठे

३१. नरिंद मोरा, एम करीनै सार,
तेह इष्ट वचने करि रे, स्वामी मोरा।
नरपती रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, जावत बे त्रिण वार,
दाखै महिपति वाणी रे, स्वामी मोरा।
हरख थी रे, म्हारा नाथ ॥

३१. त्ति कट्टु पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव मिय-महुर-सस्सिरीयाहिं वग्गूहिं दोच्चं पि तच्चं पि अणुवूहइ। (श० ११।१४३)

३२. नरिंद मोरा, राणी नृप नो वचन्न,
सांभल हिवड़े धारी रे, स्वामी मोरा।
आनंद लहै रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, हरख संतोष उपन्न,
कर तल जोड़ी यावत रे, स्वामी मोरा।
इम कहै रे, म्हारा नाथ ॥

३२. तए णं सा पभावती देवी बलस्स रण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा करयल जाव (सं० पा०) एवं वयासी—

३३. नरिंद मोरा, देवानुप्रिया ! इमहीज,
जावत रूड़ी रीते रे, स्वामी मोरा।
स्वप्न ग्रहै रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, बल नृप आण थकीज,
भद्रासण सूं ऊठी रे, स्वामी मोरा।
मग वहै रे, म्हारा नाथ ॥

३३. एयमेयं देवाणुप्पिया ! जाव तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता बलेणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ

३४. नरिंद मोरा, तन मन चपल रहीत,
जाव राजहंस सरिखी रे, स्वामी मोरा।
गति करै रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, जिहां निज भवन पुनीत,
आवी भवने पेठी रे, स्वामी मोरा।
हरख धरी रे, म्हारा नाथ ॥

३४. अतुरियमचवलमसंभंताए अविलंबियाए रायहंस-सरिसीए गईए जेणेव सए भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयं भवणमणुपविट्ठा। (श० ११।१४४)

३५, नरिंद मोरा, आखी ढाल अमंद,
बेसौ इकतालीमीं रे, स्वामी मोरा।
अति भली रे, म्हारा नाथ।
नरिंद मोरा, भिक्षु भारीमाल नृपचंद,
'जय-जश' सुख वर संपति रे, स्वामी मोरा।
रंगरली रे, म्हारा नाथ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : २४२

दूहा

१. प्रभावती तिण अवसरे, स्नान बलिकर्म कीध।
जाव अलंकृत सर्व करि, अंग विभूषित सीध ॥
२. ते गर्भ प्रति अति शीत नहीं, नहिं अति उष्ण असन्न।
अतिही तिक्त पिण नहिं करै, वलि अति कटुक तजन्न ॥
३. न अति कसायलै करी, अति खाटे करि नांहि।
अति मीठो तजवै करी, अधिक मने ओछाहि ॥
४. भोगवतां ऋतु-ऋतु विषे, सुख वा शुभ करि जेह।
भोजन आच्छादन वलि, गंध माल्य करि तेह ॥

५ तेह गर्भ नैं जेह हित, मित ते अधिक न उन्न।
पथ्य तिको सामान्य करि, गर्भ पोष प्रतिपुन्न ॥

६. देश उचित भूमी जिका, तेहिज देश विषेह।
काले फुन अवसर विषे, आहार भोगवती जेह ॥

७. दोष रहित फुन जेह छै, मृदु कहियै सुकुमाल।
एहवा शयनासन करी, सुख विलसै सुविशाल ॥

८. सहु जन तणी अपेक्षया, सुख वा शुभ करि जेह।
मन नैं अनुकूल कारिणी, विहार भूमि विषेह ॥

९. भला मनोरथ ऊपजै, प्रशस्त दोहला जेह।
वंछितार्थ पूरण थकी, संपन्न-दोहला तेह ॥

१०. सम्माणिय दोहलावली, पाम्या वांछित अर्थ।
तेह तणां जे भोग थी सन्मान्याज तदर्थ ॥

११. जेह मनोरथ ऊपनो, लेश करी पिण जेह ॥
क्षण पिण नहीं अणपहुंचतु, अविमाणिय दोहला तेह ॥

१२. विच्छिन्न दोहला तसु वली, तूटी वांछा तास ॥
विणीय दोहला नों अरथ, दोहला रहित विमास ॥
१३. रोग शरीर तणी तिका, पीड़ा करी रहीत।
सोग मानसी पीड़ जे, तिण करि रहित वदीत ॥
१४. गयो मोह नहिं मूढता, अल्प मात्र भय नांहि।
अकस्मात भय सहु गयो, परित्रास नहिं ताहि ॥

१. तए णं सा पभावती देवी ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सव्वालंकारविभूसिया

२. तं गब्भं नातिसीतेहिं नातिउण्हेहिं नातितित्तेहिं नातिकडुएहिं

३. नातिकसाएहिं नातिअंबिलेहिं नातिमहुरेहिं

४. उउभयमाणसुहेहिं भोयण-च्छायण-गंध-मल्लेहिं
'उउभयमाणसुहेहिं' ति ऋतौ ऋतौ भज्यमानानि यानि सुखानि—सुखहेतव. शुभानि वा तानि तथा तैः
(वृ० प० ५४३)

५. जं तस्स गब्भस्स हियं मितं पत्थं गब्भपोसणं
'हियं' ति तमेव गर्भमपेक्ष्य, 'मियं' ति परिमितं—नाधिकमूनं वा 'पत्थं' ति सामान्येन पथ्यं
(वृ० प० ५४३)

६. तं देसे य काले य आहारमाहारेमाणी
'देसे य' त्ति उचितभूप्रदेशे 'काले य' त्ति तथाविधावसरे (वृ० प० ५४३)

७. विवित्तमउएहिं सयणासणेहिं
'विवित्तमउएहिं' ति विविक्तानि—दोषवियुक्तानि··· मृदुकानि च कोमलानि यानि तानि तथा तैः
(वृ० प० ५४३)

८. पइरिक्कसुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए
पइरिक्कसुहाए' त्ति प्रतिरिक्तत्वेन तथाविधजनापेक्षया विजनत्वेन सुखा शुभा वा या सा तथा तया
(वृ० प० ५४३)

९. पसत्थदोहला संपुण्णदोहला
'पसत्थदोहल' त्ति अनिन्द्यमनोरथा 'संपुन्नदोहला' अभिलषितार्थपूरणात् (वृ० प ५४३)

१०. सम्माणियदोहला
'सम्माणियदोहला' प्राप्तस्याभिलषितार्थस्य भोगात्
(वृ० प० ५४३)

११. अविमाणियदोहला
'अविमाणियदोहल' त्ति क्षणमपि लेशेनापि च नापूर्णमनोरथेत्यर्थः। (वृ० प० ५४३)

१२. वोच्छिण्णदोहला विणीयदोहला
'वोच्छिन्नदोहल' त्ति त्रुटितवाञ्छेत्यर्थः

१३,१४. ववगयरोग-सोग-मोह-भय-परित्तासा
इह च मोहो—मूढता भयं भीतिमात्रं परित्रासः—अकस्माद्भयं (वृ० प० ५४३)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५. वाचनांतरे छै इहां, सुहंसुहेणं नाम ।
सुख थी आश्रयणीय प्रति, आश्रय करती ताम ।।
१६. सुखे सयन करती छती, ऊभी रहै सुखेह ।।
बेसै वलि शय्या विषे,. सुखे करी वर्त्तेह ।।

१७. सुखे-सुखे ते गर्भ प्रति, बाधा रहित वहेह ।
सवा नव मासे जनमियो, कोमल कर पग बेह ।।

*नंदन जायो रे ।। (ध्रुपदं)

१८. कोमल अंग सुचंग मनोहर, जयवंतो सुत जायो ।
हीण नहीं प्रतिपूरण पूरा, पंचेंद्रिय तनु पायो ।।
१९. लक्षण व्यंजन करी ललित है, गुणे युक्त गुण गायो ।
जावत चंद्र तणी पर आछो, सोम्याकार सुहायो ।।
२०. कांत मनोज्ञ घणो मनगमतो, दर्शण प्रिय देखायो ।
सुंदर रूप स्वरूप अनोपम, कामदेव सम कायो ।।
२१. तिण अवसर ते प्रभावती, देवी नीं दासी ताह्यो ।
सेवा अंग तणी नित साधै, अंग-प्रतिचारिका कहायो ।।
२२. प्रभावती सुत जन्म्यां जाणी, आवी महिपति पाह्यो ।
बे कर जोड़ी बल नृप नैं, जय विजय करी सुबधायो ।।

२३. नृपति बधावी कहै इम निश्चै, देवानुप्रिय ! रायो ।
सवा नव मासे प्रभावती सुत, जाव अनोपम जायो ।।
२४. ते भणी देवानुप्रिय तुमने, प्रीति अर्थ कहूं वायो ।
प्रिय सुत जन्मज प्रगट करूं छूं, पवर वधाइ देवायो ।।

२५. प्रिय कल्याण मंगल तुझ थावो, तिण अवसर बल रायो ।
अंगप्रतिचारिका दासी पासे, एह अर्थ सुण ताह्यो ।।

वा०—इहां टीकाकार कहै छै अनेरो पिण प्रिय थावो ।
२६. हरष संतोष लह्यो हिवड़े धर, जाव धारा कर ताह्यो ।
आहणियो जे कदंब वृक्ष जिम, जाव रूम विकसायो ।।
२७. मुकुट वर्ज नैं ते दासी प्रति, आभूषण अधिकायो ।
अवनीपति जिम पहिरचा था ते दियै बधाई मांह्यो ।।

सोरठा

२८. मुकुट न दीधो तास, राज चिह्न छै ते भणी ।
फुन स्त्री नैं सुविमास, मुकुट अनुचितपणां थकी ।।

*लय : कुंवर जायो रे

१५,१६. इह स्थाने वाचनान्तरे 'सुहंसुहेणं आसयइ सुयइ चिट्ठइ निसीयइ तुयट्टइ' त्ति दृश्यते तत्र च 'सुहंसुहेणं' ति गर्भानाबाधया 'आसयइ' त्ति आश्रयत्याश्रयणीयं वस्तु 'सुयइ' त्ति शेते 'चिट्ठइ' त्ति ऊर्द्ध्वस्थानेन तिष्ठति 'निसीयइ' त्ति उपविशति 'तुयट्टइ' त्ति शय्यायां वर्त्तत इति । (वृ० प० ५४३)
१७. त गब्भं सुहंसुहेणं परिवहति । (श० ११।१४५)
तए णं सा पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडि-पुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं
१८. अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरं

१९. लक्खणवंजणगुणोववेयं जाव (सं० पा०) ससिसोमा-कारं
२०. कंतं पियदंसणं सुरूवं दारयं पयाया । (श० ११।१४६)
२१,२२. तए णं तीसे पभावतीए देवीए अंगपडियारियाओ पभावतिं देविं पसूयं जाणेत्ता जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता करयल जाव (सं० पा०) बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति
२३ वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावती देवी नवण्हं
मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव सुरूवं दारगं पयाया ।
२४. तं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए पियं निवेदेमो ।
'पियट्ठयाए' त्ति प्रियार्थतायै—प्रीत्यर्थमित्यर्थः 'पियं निवेएमो' त्ति 'प्रियम्' इष्टवस्तु पुत्रजन्मलक्षणं निवेदयामः (वृ० प० ५४३)
२५. पियं भे भवतु । (श० ११।१४७)
तए णं से बले राया अंगपडियारियाणं अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म
'पियं भे भवउ' त्ति एतच्च प्रियनिवेदनं प्रियं भवतां भवतु ।
वा०—तदन्यद्वा प्रियं भवत्विति । (वृ० प० ५४१)
२६. हट्ठतुट्ठ जाव धाराहयनीवसुरभिकुसुमचंचुमालइयतणुए ऊसवियरोमकूवे
२७. तासिं अंगपडियारियाणं मउडवज्जं जहामालियं ओमोयं दलयइ
'जहामालियं' ति यथामालितं—यथाधारितं यथा परिहितमित्यर्थः (वृ० प० ५४३)
२७. 'मउडवज्जं' ति मुकुटस्य राजचिह्नत्वात् स्त्रीणां चानुचितत्वात्तस्येति तद्वर्जनं । (वृ० प० ५४३)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९. *श्वेत रजतमय निर्मल जल सूं भरचोभृंगार ग्रहायो।
ते दासी नों शिर धोई नें, दासी पणो मिटायो ।।

२९. सेतरययामयं विमलसलिलपुण्णं भिंगारं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता मत्थए धोवइ

सोरठा

३०. निश्चै स्वामी जेह, शिर धोयां दासीपणो।
दूर हुवै छै तेह, एह लोक व्यवहार छै।।

३०. अंगप्रतिचारिकाणां मस्तकानि क्षालयति दासत्वापनयनार्थं स्वामिना धौतमस्तकस्य हि दासत्वमपगच्छतीति लोकव्यवहारः। (वृ० प० ५४३)

३१. *विस्तीरण आजीविकायोग्यज, प्रीति दान दिवायो।
सत्कारी सन्मानी नें तसु, सीख दियै बलरायो।।

३१. विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ, दलयित्ता सक्कारेइ, सम्माणेइ सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ। (श० ११।१४८)

३२. वलि कोडंबिक पुरुष प्रतै नृप, तेड़ कहै इम वायो।
हे देवानुप्रिया ! शीघ्र तुम्ह, हत्थिणापुर में जायो।।

३२. तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हत्थिणापुरे नयरे

३३. छोडो बंदीवानज सगला, मान धान्य रस ताह्यो।।
तेह पायली प्रमुख माप ते, रूड़ी रीत बधायो।।
३४. वलि उन्मानज तुला रूप ही, सेर पाव पुर मांह्यो।
ते पिण रुड़ी रीत वधावो, जेज करो मत कायो।।

३३,३४. चारगसोहणं करेह, करेत्ता माणुम्माणवड्ढणं करेह
'चारगसोहणं' ति बन्दिविमोचनमित्यर्थः 'माणुम्माणवड्ढणं करेह' त्ति इह मानं—रसधान्यविषयम्, उन्मानं—तुलारूपम्। (वृ० प० ५४४)

३५. वलि हत्थिणापुर मांहै बाहिर, उदक करी सींचायो।
कचरो टालो लीपो जावत, करो करावो जायो।।
३६. जूप सहस्र नें चक्र सहस्र ए, पूजा विशेष ताह्यो।
महामहिमा सतकार प्रतै ए, ओछव करि अधिकायो।।
३७. ओछव करि मुझ आज्ञा सूंपो, कोडंबिक नृप वायो।
अंगीकार कर करी करावी, आज्ञा सूंपी आयो।।

३५. हत्थिणापुरं नगरं सब्भितरबाहिरियं आसियसंमज्जिओवलित्तं जाव गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य
३६. जूवसहस्सं वा चक्कसहस्सं वा पूयामहामहिमसंजुत्तं उस्सवेह
३७. उस्सवेत्ता ममेतमाणत्तियं पच्चप्पिणह। (श० ११।१४९)
तए णं ते कोडुंबियपुरिसा बलेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति। (श० ११।१५०)

३८. तिण अवसर बल राजा आयो, अट्टणसाला मांह्यो।
तिमहिज जावत मंजन घर थी, नीकलियो छै न्हायो।।

३८. तए णं से बले राया जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव जाव मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ

३९. मूक्यो दाण जगात बली कर, गाय प्रमुख नों रायो।
वलि करसण नों कर नहि लेवै, देणो मतह्यो ताह्यो।।

३९. उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदेज्जं
'उक्करं' ति उन्मुक्तकरां, करस्तु गवादीन् प्रति प्रतिवर्षं राजदेयं द्रव्यं, 'उक्किट्ठं' ति उत्कृष्टां—प्रधानां कर्षणनिषेधाद्वा 'अदिज्जं' ति विक्रयनिषेधेनाविद्यमानदातव्यां (वृ० प० ५४४)

४०. अणमाप्यां अणमिणियां द्यो वलि, नृप आज्ञा थी ताह्यो।
पर घर विषेज राजपुरुष नो, प्रवेश करिवो नांह्यो।।

४०. अमेज्जं अभडप्पवेसं
'अमिज्जं' ति विक्रयप्रतिषेधादेवाविद्यमानमातव्यां अविद्यमानमायां वा
'अभडप्पवेसं' ति अविद्यमानो भटानां—राजाज्ञादायिनां पुरुषाणां प्रवेशः कुटुंबिगेहेषु यस्यां सा तथा तां (वृ० प० ५४४)

४१. वलि किण पास दंड नहि लेणो, कुदंड लेणो नांह्यो।
कुदंड ते अपराध विना लै, ए बिहुं नृप बरजायो।।

४१. अदंडकोदंडिमं

*लय : कुंवर जायो रे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४२. अडाणे कोइ धार न राखै, गणिका वर जिण मांह्यो।
एहवा नाटक संबंधि पात्रे, सहित नगर करवायो॥

४२. अधरिमं गणियावरनाडइज्जकलियं
'अधरिमं' ति अविद्यमानधारणीयद्रव्याम् ऋणमुत्कलनात् 'गणियावरनाडइज्जकलियं' गणिकावरैः वेश्याप्रधानैर्नाटकीयैः नाटकसम्बंधिभिः पात्रैः कलिता या सा तथा ताम् (वृ० प० ५४४)
अणेगतालाचराणुचरियं अणुद्धुयमुइंगं

४३. नानाविध जे प्रेक्षाचारी, सेवित जिका सुहायो॥
इक क्षण मात्र मृदंग बजायां बिन नहि रहिता ताह्यो॥

४३. अणेगतालाचराणुचरियं' नानाविधप्रेक्षाचारिसेवितामित्यर्थः अणुद्धुइयमुइंग त्ति अनुद्धूता - वादनार्थं वादकैरविमुक्ता मृदंगा यस्यां सा तथा ताम्
(वृ० प० ५४५)

४४. अणकुमलाणा पुष्प तणी जे, माल धरी पुर मांह्यो।
प्रमुदित जन नां योग्य थकी जे, प्रमुदिताज कहिवायो॥
४५. प्रक्रीडित जन तणां योग्य थी, प्रक्रीडिता सुखदायो॥
जन करि सहित पवर पुर वलि जे, देश लोक दीपायो॥

४४,४५. अमिलायमल्लदामं पमुइयपक्कीलियं सपुरजणजाणवयं
'पमुइयपक्कीलियं' ति प्रमुदितजनयोगात्प्रमुदिता प्रक्रीडितजनयोगात्प्रक्रीडिता (वृ० प० ५४५)

सोरठा

४६. वाचनांतरे वाय, विजय वैजयंती कह्यो।
अतिहि विजय सुहाय, विजय-विजय कहियै तसु॥
४७. तेह प्रयोजन तास, तिका विजय वैजयंतिका।
तेह प्रते सुविमास, कीजै ऊंची नगर में॥

४६,४७. वाचनान्तरे 'विजयवेजइयं' ति दृश्यते तत्र चातिशयेन विजयो विजयविजयः स प्रयोजनं यस्याः सा विजयवैजयिकी ताम् (वृ० प० ५४५)

४८. *मर्यादा कुल नीं जे अथवा, लोक तणी सुखदायो।
सुत जन्मोत्सव दिवस दसां लग, राय करै हरषायो॥

४८. दसदिवसे ठिइवडियं करेति। (श० ११।१५१)
'ठिइवडियं' ति स्थितौ—कुलस्य लोकस्य वा मर्यादायां पतिता—गता या पुत्रजन्ममहप्रक्रिया सा स्थितिपतिताऽतस्तां 'दसाहियाए' त्ति दशाहिकायां—दशदिवसप्रमाणायां (वृ० प० ५४५)

४९. दस दिन सुत नां जन्म महोत्सव, करतां थकांज रायो।
शत द्रव्य सहस्र लक्ष द्रव्य लागै, एहवो याग[1] करायो॥

४९. तए णं से बले राया दसाहियाए ठिइवडियाए वट्टमाणीए सइए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य जाए य

५०. दाए य कहितां दान प्रते फुन, भाए य कहि ताह्यो।
वांछित द्रव्य नां अंश प्रते जे, दियै देवावै रायो॥

५०. दाए य भाए य दलमाणे य दवावेमाणे य
'दाए य' त्ति दायांश्च दानानि 'भाए य' त्ति भागांश्च-विवक्षितद्रव्यांशान् (वृ० प० ५४५)

५१. शत द्रव्य सहस्र लक्ष द्रव्य लागै, एहवो लाभ सुहायो।
आपै दिवरावै इण रीते, विचरै बल महारायो॥
५२. ढाल दोय सौ बयालीसमी, जन्मोत्सव सुखदायो।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, जय-जश हरष सवायो॥

५१. सइए य सयसाहस्सिए य लंभे पडिच्छेमाणे य पडिच्छावेमाणे य एवं यावि विहरइ।
(श० ११।१५२)

*लय : कुंवर जायो रे
१. पूजा का एक प्रकार।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : २४३

दूहा

१. तिण अवसर ते बाल नां, मात पिता धर खंत।
जन्म महोत्सव प्रथम दिन, स्थितिपतिताज[1] करंत।।

१. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइवडियं करेइ

२. चंद्र सूर्य दर्शन इसो, महोत्सव तीजै दिन।
छठै दिन निशि जागरण, उत्सव करत सुजन।

२. तइएदिवसे चंदसूरदंसावणियं करेइ, छट्ठे दिवसे जागरियं करेइ
'चंदसूरदंसणियं' ति चन्द्रसूर्यदर्शनाभिधानमुत्सवं 'जागरियं' ति रात्रिजागरणरूपमुत्सवविशेषम्
(वृ० प० ५४५)

३. व्यतिक्रांते ग्यारम दिने, निवृत्त जे अतिकंत।
अशुचि जात कर्म तेहनुं, करणं करिवूं मंत।।

३. एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे
'निवृत्ते' अतिक्रान्ते अशुचीनां जातकर्म्मणां करणमशुचिजातकर्म्मकरणं तत्र (वृ० प० ५४५)

४. पामे द्वादशमें दिवस, असणादिक चिउं आहार।
रंधावी जिम शिव नृपति, तिम कहिवूं अधिकार।।
५. जावत क्षत्रिय तेड़नैं, करी स्नान बलिकर्म।
यावत सत्कारी सहु, सन्मानी सुख शर्म।।

४,५. संपत्ते बारसमे दिवसे विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता जहा सिवो (भ० ११।६३) जाव खत्तिए जाव (सं०पा०) सक्कारेंति सम्माणेंति

६. तेहिज ज्ञाती मित्र नैं, जावत क्षत्रिय जाण।
यां सगला रैं आगले, दिये नाम गुणखाण।।

६. तस्सेव मित्तनाइ जाव (सं० पा०) राईण य खत्तियाण य पुरओ

७. दादा पड़दादा थकी, वली पिता नों जोय।
पड़दादो छै तेह थी, अनुक्रम आयो सोय।।

७. अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागयं

८. परंपरा बहु पुरुष नीं, तेहथी वाध्यो तंत।
वली तास कुल योग्य जे, कुल सादृश बलवंत।।

८. बहुपुरिसपरंपरप्परूढं कुलाणुरूवं कुलसरिसं

९. सुकुल रूप संतान जे, तेहिज तंतू सार।
दीर्घपणां थी दाखियो, तास वधारणहार।।

९. कुलसंताणतंतुबद्धणकरं
कुलरूपो यः संतानः स एव तन्तुर्दीर्घत्वात्तद्वर्द्धनकरं
(वृ० प० ५४५)

१०. एहवे रूपे नाम ए, गौण कहीजै ताय।
अमुख्य थकी पिण जे हुवै, ते इहां नहिं कहिवाय।।

१०. अयमेवारूवं गोण्णं
'गोणं' ति गौणं तच्चामुख्यमप्युच्यत इत्यत आह—
(वृ० प० ५४५)

११. गुण-निप्पन ए नाम दै, जे कारण थी ख्यात।
बल नृप सुत ए बाल अम्ह, प्रभावती अंगजात।।

११. गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति—जम्हा णं अम्हं इमे दारए बलस्स रण्णो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए

१२. थावो अम्हारे ते भणी, पिता नाम अनुसार।
ए बालक नों जाणवूं, महाबल नाम उदार।।

१२. तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं महब्बले-महब्बले

*प्रबल पुन्याई अति अधिकाई, जग सुखदाई जानंदा।।
महाबल नामें अति अभिरामे, अवनीपति सुत आनंदा। (ध्रुपदं)

१३. तिण अवसर ते बालक नों, कांइ महाबल नाम शुभा नंदा।
मात पिता ए दोधो मुख सूं, वदन कमल पूनमचंदा।।

१३. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति महब्बले त्ति। (श० ११।१५३)

---

*लय : चेत चतुर नर कहै तनैं सतगुरु

१. कुल या लोक की मर्यादा के अनुसार पुत्र जन्मोत्सव की प्रक्रिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. तिण अवसर ते महाबल बालक, पंच धाय करि पोखंदा।
क्षीरधाय[1] मंजण[2] नैं मंडण[3], अंक[4] कीलावण[5] तोषंदा ॥

१५. इम जिम दड्ढपइण्णा कह्यो छै, उववाइ[1] में वर्णंदा।
यावत गिरि कंदर चंपक तरु, सुखे-सुखे परिवृद्धंदा ॥

१६. मात-पिता महाबल बालक नैं, जन्म दिवस थी क्रम कृंदा।
स्थितिपतिता ते जन्म महोत्सव, रवि शशि दर्श दिखावंदा ॥

१७. छठी निशा जागरण महोत्सव, नाम धरण हिय हुलसंदा।
परंगामणं अर्थ वृत्ति में, भूमि विषे सर्पणनंदा ॥

वा०—इहां टीका में कह्यो—भूमौ सर्पणं अनैं टबा में कह्यो ऊभो रहिवूं ते थड़ी जणाय छै तथा आंगणे गोडालिये हालिवूं हुवै ते पिण ज्ञानी जाणैं।

१८. पग-पग करनैं आधो चलवो, तास महोत्सव अधिकंदा।
जीमण सीखण कवल वृद्धि फुन, बोलण महोत्सव कुर्विदा ॥

१९. कान वींधवूं वर्ष गांठ नुं, चूड़ा धरण तदा नंदा।
कला ग्रहण ते भणायवा नुं, करै महोत्सव राजंदा ॥

२०. अन्य बहु गर्भाधान जन्म फुन, आदि विषे कोतुक वृंदा ॥
रखड़ी आदि कहीजै कोतुक, करै कुंवर नां हुलसंदा ॥

२१ महाबल कुंवर प्रतै तिण अवसर, मात पिता चित आनंदा।
कांइक अधिको आठ वर्ष नों, जाणी सुत नयनानंदा ॥

२२. शोभनीक तिथि इम जिम सूत्रे, दड्ढपइण्णो दाखंदा।
जाव पर्याप्त योग समर्थज, थयो युवान शुभानंदा ॥

वा०—एवं जहा दढपइण्णो इति इण वचने करी जे कह्यु ते इम जाणवो—सोभणंसि तिहिकरणणक्खत्त-मुहुत्तंसि ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगल-पायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं कलायरियस्स उवणयंतीत्यादीति

२३. महाबल कुमार नैं तिण अवसर, बाल भाव मूकाणंदा।
योग समर्थ जान मता पित, आठ प्रासाद करावंदा ॥

सोरठा

२४. प्रासाद विषे संवाद, अवतंसक जे मुकुट सम।
एहवा अठ प्रासाद, माता पिता कराविया ॥

१४. तए णं से महब्बले दारए पंचधाईपरिग्गहिए (तं जहा—खीरधाईए
'मज्जणधाईए मंडणधाईए कीलावणधाईए अंकधाईए' इत्यादि (वृ० प० ५४५)

१५. एवं जहा दढपइण्णस्स जाव निव्वायनिव्वाघायंसि सुहंसुहेण परिवड्ढति। (श० ११।१५४)
'निव्वायनिव्वाघायंसीत्यादि च वाक्यमिहैवं सम्बन्धनीयं गिरिकंदरमल्लीणेव्व चंपगपायवे निवायनिव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढइ' त्ति। (वृ० प० ५४५)

१६. तए णं तस्स महब्बलस्स दारगस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं ठिइवडियं वा चंदसूरदंसावणियं वा

१७. जागरियं वा नामकरणं वा परंगामणं वा
'परंगामणंति' भूमौ सर्प्पणं (वृ० प० ५४५)

१८. पंचकामणं वा पजेमामणं वा पिंडवद्धणं वा पजंपावणं वा
'पयचंकामणं' ति पादाभ्यां संचारणं 'जेमामणं' ति भोजनकारणं 'पिंडवद्धणं' ति कवलवृद्धिकारणं 'पज्जपावणं' ति प्रजल्पनकारणं। (वृ० प० ५४५)

१९. कण्णवेहणं वा संवच्छरपडिलेहणं वा चोलोयणगं वा उवणयणं वा
'संवच्छरपडिलेहणं' ति वर्षग्रन्थिकरणं 'चोलोयणं' चूडाधरणं 'उवणयणं' ति कलाग्राहणं
(वृ० प० ५४५)

२०. अण्णाणि य बहूणि गब्भाधाणजम्मणमादियाइं कोउयाइं करेंति। (श० ११।१५५)
कौतुकानि—रक्षाविधानादीनि (वृ० प० ५४५)

२१. तए णं तं महब्बलं कुमारं अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासगं जाणित्ता

२२. सोभणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेंति एवं जहा दढप्पइण्णे जाव अलंभोगसमत्थे जाए यावि होत्था। (श० ११।१५६)

वा०—'एवं जहा दढपइन्नो' इत्यनेन यत्सूचितं तदेवं दृश्यम्। (वृ० प० ५४५)

२३. तए णं तं महब्बलं कुमारं उम्मुक्कबालभावं जाव अलंभोगसमत्थं विजाणित्ता अम्मापियरो अट्ठ पासायवडेंसए कारेंति

---

१. सू० १४४ का वाचनान्तर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५. *ऊंचा श्वेत वेदिका सहितज, जाण हसै उपमा नंदा ।।
रायप्रश्रेणी में जिम वर्णन, जावत ही प्रतिरूपंदा ।।

२५. अब्भुग्गय-मूसिय-पहसिए इव वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे (सू० १३७) जाव पडिरूवे ।
'अब्भुग्गयमूसियपहसिते इव' अभ्युद्गतोच्छ्रितान्—अत्युच्चान्'''पहसिते इव' त्ति प्रहसितानिव—श्वेतप्रभापटलप्रबलतया हसत इवेत्यर्थः । (वृ० प० ५४५)

दूहा

२६. मणी चंद्रकांतादि नीं, कनक रत्न नीं जेह ।
भांत करीनैं चित्र जे, वारू महल विषेह ।।
२७. पवने करी प्रकम्पिता, विजय-सूचिका जाण ।
नाम वेजयंती तिका, पवर पताका माण ।।
२८. छत्रादी छत्रे सहित, तेह पताका जोय ।
गगन तला प्रतिलंघतो, तास शिखर अवलोय ।।
२९. इत्यादिक अधिकार जे, रायप्रसेणी मांहि ।
आख्यो तिम कहिवो इहां, प्रासाद वर्णक ताहि ।।

२६-२९. मणिकणगरयणभत्तिचित्तवाउद्धुयविजयवेजयंती-पडागाछत्ताइच्छत्तकलिए तुंगे गगणतलमभिलंघमाण-सिहरे' इत्यादि । (वृ० प० ५४५)

३० *ते वर श्रेष्ठ अष्ट प्रासाद-वतंसक बिच अति सुखकंदा ।।
महा इक भवन करावै महिपति, स्तंभ सैकड़ां स्थापंदा ।।

३०. तेसिं णं पासायवडेंसगाणं बहुमज्झदेसभागे एत्थ णं महेगं भवणं कारेंति – अणेगखंभसयसंनिविट्ठं

३१. रायप्रश्रेणी में जिम वर्णन, पेक्षाघर मंडप नंदा ।
तेम इहां पिण कहिवूं वर्णक, जावत ही प्रतिरूपंदा ।।

३१. वण्णओ जाव रायप्पसेणइज्जे (सू० ३२) पेच्छाघर-मंडवसि जाव पडिरूवे । (श० ११।१५७)

वा०—'वण्णओ जहा रायसेणइज्जे पेच्छाघरमंडवसित्ति' जिम रायप्रसेणी सूत्रे प्रेक्षा मंडप, गृह-मंडप नों ए बिहुं नों वर्णक कह्यो तिम एहनों कहिवो ते इम—लीलट्ठिय सालिभंजियागमित्यादि ।

वा०—यथा राजप्रश्नकृते प्रेक्षागृहमण्डपविषयो वर्णक उक्तस्तथाऽस्य वाच्य इत्यर्थः स च 'लीलट्ठियसालि-भंजियाग' मित्यादिरिति । (वृ० प० ५४६)

३२. महाबल कुंवर प्रतै माता पितु, अन्य दिवस सुविशेखंदा ।
शोभनीक तिथि करण दिवस वलि, नक्षत्र मुहूर्त्त पेखंदा ।।

३२. तए णं तं महब्बलं कुमारं अम्मापियरो अण्णया कयाइ सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त मुहुत्तंसि

३३. स्नान बलिकर्म कौतुक मंगल, प्रायश्चित्त प्रति कुविंदा ।
सर्व अलंकृत एहवा महाबल, कुंवर प्रते शोभाविंदा ।।

३३. ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउय-मंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं

३४. नार सुहागण कुंवर प्रतै जे, मर्दन उबटन करावंदा ।
स्नान गीत वाजंत्र बजावी, हरष विनोदे आनंदा ।।
३५. कुंवर प्रतैज प्रसाधन कहियै, कज्जल नयन शुभानंदा ।
वलि शिर टीको शोभित नीको, वनिता कुंवर ओपाविंदा ।।
३६. अंग सुचंग अष्ट स्थानक वलि, वारू तिलक सुहावंदा ।
बांधै कांकण-डोर कसूंबल, अविधवाए कुविंदा ।।

३४-३६. पमक्खणग-ण्हाण-गीय-वाइय - पसाहणअट्ठंगति-लग-कंकण-अविहववहुउवणीयं
प्रम्रक्षणकं—अभ्यञ्जनं स्नानगीतवादितानि प्रतीतानि प्रसाधनं—मंडनं अष्टस्वङ्गेषु तिलकाः—पुण्ड्राणि अष्टांगतिलकाः कंकणं च रक्तदवरकरूपं एतानि अविधववधूभिः—जीवत्पतिकनारीभिरुपनीतानि यस्य स तथा तं । (वृ० प० ५४७)

३७. मंगल अक्षत दधि प्रमुख वा, गीत विशेषज गावंदा ।
भलो बोलवो आशीर्वचने, इम करिवै हुलसावंदा ।।

३७. मंगलसुजंपिएहि य
'मंगलसुजंपिएहि य' त्ति मंगलानि दध्यक्षतादीनि गीतगानविशेषा वा तासु जल्पितानि च आशीर्वचना-नीति । (वृ० प० ५४७)

३८. महाबल कुंवर प्रतै फुन कीधा, वर कोतुक रक्षा नंदा ।
वलि मंगल सिद्धार्थ आदि बहु, ते पिण करता सुखकंदा ।।
३९. कोतुक मंगल रूप अछै जे, उपचारज पूजावंदा ।
तिण करि कीधो शांति कर्म तसु, टालण विघ्न तणां फंदा ।।

३८,३९. वरकोउयमंगलोवयार कयसंतिकम्मं
वराणि यानि कौतुकानि—भूतिरक्षादीनि मंगलानि च सिद्धार्थकादीनि तद्रूपो य उपचारः—पूजा तेन कृतं शान्तिकर्म्म—दुरितोपशमक्रिया यस्य स तथा तं

४०. कुंवर भणी परणावा तरुणी, चितहरणी आनंद चंदा ।
आपस मांहि सरीखी अथवा, कुंवर सरीखी ओपिंदा ।।

४०. सरिसियाणं
'सरिसियाणं' त्ति सदृशीनां परस्परतो महाबलापेक्षया वा (वृ० प० ५४७)

*लय : चेत चतुर नर कहै तनै सतगुरु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४१. त्वचा सरीखी वलि वय सरिखी, लावण्य मनोज्ञ सरिसंदा।
आकृति रूप सरीखो ओपै, यौवन युवती गुणवृंदा॥

४१. सरित्तयाणं सरिव्वयाणं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयाणं
'सरिसलावन्ने' त्यादि इह च लावण्यं—मनोज्ञता रूपं आकृतिर्यौवनं—युवता गुणाः—प्रियभाषित्वादयः

४२. विनयवंत मतिवंत रमण नैं, कीधा कोतुक सुखकंदा॥
मंगल प्रायश्चित रमणी नैं, मेटण अशुभ विघ्न-फंदा॥

४२. विणीयाणं कयकोउय-मंगलपायच्छित्ताणं

४३. सादृस महिपति कुल थी आणी, अठ नृप कन्या ओपिंदा।
एक दिवस नैं विषे हरषधर, पाणीग्रहण करांविंदा॥

४३. सरिसएहिं रायकुलेहिंतो आणिल्लियाणं अट्ठण्हं रायवरकन्नाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हाविंसु।
(श० ११।१५८)

४४. ढाल दोयसौ तयालीसमीं, गणपति भिक्षू गुणवृंदा।
भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' आनंद पावंदा॥

ढाल : २४४

दूहा

१. महाबल नाम कुमार नैं, मात पिता तिणवार।
प्रीतिदान दै एहवूं, ते सुणज्यो अधिकार॥

*जी कांइ प्रीति दान ए दायचो जी कांइ,
उलट धरी आपंत॥ (ध्रुपदं)

१. तए ण तस्स महाब्बलस्स कुमारस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं पीइदाणं दलयंति

२. आठ कोड़ रुपिया दिया जी कांइ, सोनैया अठ कोड़।
आठ मुकुट ते मुकुट में जी कांइ, प्रवर प्रधान सुजोड़॥

२. अट्ठहिरण्णकोडीओ अट्ठसुवण्णकोडीओ अट्ठमउडे मउडप्पवरे

३. जोड़ा आठ कुंडल तणां जी कांइ, कुंडल युगल में उदार।
आठ हार वर हार में जी कांइ, इमज आठ अर्द्ध हार॥

३. अट्ठ कुंडलजोए कुंडलजोयप्पवरे अट्ठहारे हारप्पवरे अट्ठअद्धहारे अद्धहारप्पवरे
'कुण्डलजोए' त्ति कुण्डलयुगानि (वृ० प० ५४७)

४. आठ हार एकावली जी कांइ, पवर एकावली मांहि।
एवं अठ मुक्तावली[1] जी कांइ, इम रत्नावली ताहि॥

४. अट्ठ एगावलीओ एगावलिप्पवराओ एवं मुत्तावलीओ एवं कणगावलीओ एवं रयणावलीओ

५. जोड़ा आठ कड़ां तणां जी कांइ, कड़ग युगल में प्रधान।
तुडित बाजूबंध जोड़ला जी कांइ, इमज आठ पहिछान॥

५. अट्ठ कडगजोए कडगजोयप्पवरे एवं तुडियजोए
'कडगजोए' त्ति कलाचिकाभरणयुगानि, 'तुडिय' त्ति बाह्वाभरणं (वृ० प० ५४७)

६. खोम-जुगल अठ ओपता जी कांइ, खोम युगल में प्रधान।
वस्त्र एह कपास नां जी कांइ, अथवा अतसी जान॥

६. अट्ठ खोमजुयलाइं खोमजुयलप्पवराइं
'खोमे' त्ति कार्पासिकं अतसीमयं वा वस्त्रं
(वृ० प० ५४७)

७. वडग जुगल पिण इहविधे जी कांइ, एह त्रिसरिया जान।
पट्ट जुगल पिण इहविधे जी कांइ, रेशम में पहिछान॥

७. एवं वडगजुयलाइं एवं पट्टजुयलाइं
'वडग' त्ति त्रसरीमयं (वृ० प० ५४७)

८. दुगुल्ल जुगल पिण इहविधे जी कांइ, वृक्ष तणी ए छाल।
तेह थकी ए नींपनो जी कांइ, वारू वस्त्र विशाल॥

८. एवं दुगुल्लजुयलाइं
'दुगुल्ल' त्ति दुकूलाभिधानवृक्षत्वग्निष्पन्नं
(वृ० प० ५४७)

---

*लय : म्हारी सासूजी रै पांच पुत्र

१. अंगसुत्ताणि भाग २ में मुक्तावली के बाद कनकावली है, उसके बाद रत्नावली है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. प्रतिमा षट देवी तणी जी कांइ, आठ आठ कहिवाय।
श्री देवी नीं शोभती जी कांइ, प्रतिमा आठ शोभाय।।
१०. प्रतिमा ह्री देवी तणी जी कांइ, आठज रूड़े घाट।
इम अठ धृति देवी तणी जी कांइ, कीर्त्ति देवी नीं आठ।।
११. आठ बुद्धि देवी तणी जी कांइ, अठ लक्ष्मी नीं जान।
रत्न जड़ित ए छै सहु जी कांइ, षट देवी नीं पिछान।।
१२. अष्ट नंदादिक आपिया जी कांइ, मंगल वस्तु अमोल।
अन्य आचार्य इम कहै जी कांइ, लोह नुं आसन गोल।।

१३. आठ भद्रासण आपिया जी कांइ, प्रसिद्ध शरासन भद्र।
तकिया करिनैं युक्त छै जी कांइ, आसन एह अक्षुद्र।।
१४. अष्ट ताल वृक्ष आपिया जी कांइ, तरुवर मांहि प्रधान।
रत्न जड़ित ए पिण त्रिहुं जी कांइ, महिपति दै सनमान।।
१५. प्रवर पोता नां घर विषे जी कांइ, केतु ध्वजा सुप्राय।
अष्ट ध्वजा दीधी सहु जी कांइ, प्रवर ध्वजा रै मांय।।
१६. आठ गोकुल गायां तणां जी कांइ, गोकुल मांहि प्रधान।
दश सहस्र गायां तणो जी कांइ, एक गोकुल पहिछान।।
१७. नाटक आठ सुआपिया जी कांइ, नाटक मांहि प्रधान।
बत्तीस बद्ध नृत्य सहित छै जी कांइ, इक-इक नाटक जान।।
१८. अष्ट तुरंग वर हय विषे जी कांइ, सर्व रत्नमय दीस।
रत्न मांहे छै ते भणी जी कांइ, एह भंडार सरीस।।

१९. गज अठ पवर गज नैं विषे जी कांइ, सर्व रत्नमय जान।
रत्न तणां छै ते भणी जी कांइ, एह भंडार समान।।
२०. यान शकट अठ आपिया जी कांइ, पवर शकट में समृद्ध।
अठ युग वर युग नैं विषे जी कांइ, गोल देश में प्रसिद्ध।।

२१. कूट आकारे सेवका[1] जी कांइ, आच्छादित इम देख।
संदमाणी जंपान छै जी कांइ, पुरुष प्रमाण विशेख।।

२२. एम गिल्लि ते गज तणी जी कांइ, अंबाबाड़ी जाण।
अष्ट थिल्लि पिण इम दियै जी कांइ, अश्व तणो ए पलाण।।

२३. वियड यान अठ आपिया जी कांइ, वियड यान में प्रधान।
चालै वृषभ नैं हय विना जी, विज्ञान नां वश थी जान।।
२४. अठ रथ परिजाणक दियै जी कांइ, क्रीड़ प्रयोजन श्रिष्ट।
कडि प्रमाण फलग वेदिका जी कांइ, रथ संग्रामिक अष्ट।।

---

१. शिविका

९. अट्ठ सिरीओ
श्रीप्रभृतयः षड्देवताप्रतिमाः (वृ० प० ५४७)
१०. अट्ठ हिरीओ एवं धिईओ कित्तीओ

११. बुद्धीओ लच्छीओ

१२. अट्ठ नंदाइं
नन्दादीनि मंगलवस्तूनि अन्ये त्वाहुः—नन्दं—वृत्तं लोहासनं (वृ० प० ५४७)
१३. अट्ठ भद्दाइं
भद्रं—शरासनं मूढक इति यत्प्रसिद्धं (वृ० प० ५४७)
१४. अट्ठतले तलप्पवरे सव्वरयणामए
'तले' त्ति तालवृक्षान् (वृ० प० ५४७)
१५. नियगवरभवणकेऊ अट्ठ झए झयप्पवरे

१६. अट्ठ वए वयप्पवरे दसगोसाहस्सिएणं वएणं
'वय' त्ति व्रजान्—गोकुलानि (वृ० प० ५४७)
१७. अट्ठ नाडगाइं नाडगप्पवराइं बत्तीसइबद्धेणं नाडएणं

१८. अट्ठ आसे आसप्पवरे सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए
'सिरिघरपडिरूवए' त्ति भाण्डागारतुल्यान् रत्नमयत्वात् (वृ० प० ५४७)
१९. अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए
२०. अट्ठ जाणाइं जाणप्पवराइं अट्ठ जुगाइं जुगप्पवराइं
'जाणाइं' ति शकटादीनि 'जुग्गाइं' ति गोल्लविषयप्रसिद्धानि जम्पानानि (वृ० प० ५४७)
२१. एवं सिवियाओ एवं संदमाणीओ
'सिवियाओ' त्ति शिबिकाः—कूटाकाराच्छादितजम्पानरूपाः 'संदमाणियाओ' त्ति स्यन्दमानिकाः पुरुषप्रमाणाजम्पानविशेषानेव (वृ० प० ५४७)
२२. एवं गिल्लीओ थिल्लीओ
'गिल्लीओ' त्ति हस्तिन उपरि कोल्लराकाराः 'थिल्लीओ' त्ति लाटानां यानि अट्ठपल्यानानि तान्यन्यविषयेषु थिल्लीओ अभिधीयन्तेऽतस्ताः (वृ० प० ५४७)
२३. अट्ठ वियडजाणाइं वियडजाणप्पवराइं

२४. अट्ठ रहे पारिजाणिए अट्ठ रहे संगामिए
'पारिजाणिए' त्ति परियानप्रयोजनाः पारियानिकास्तान् 'संगामिए' त्ति संग्रामप्रयोजनाः सांग्रामिकास्तान्, तेषां च कटीप्रमाणा फलकवेदिका भवति। (वृ० प० ५४७)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५. आठ तुरंगम आपिया जी कांइ, तुरंग विषेज प्रधान।
आठ हाथी फुन आपिया जी कांइ, गज में पवर पिछान ।।

२५. अट्ठ आसे आसप्पवरे, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे

२६. अष्ट ग्राम वलि आपिया जी कांइ, ग्राम विषेज प्रधान।
दश सहस्र घर सहित छै जी कांइ, एक ग्राम सुविधान ।।

२६. अट्ठ गामे गामप्पवरे दसकुलसाहस्सिएणं गामेणं

२७. आठ दास मुख्य दास में जी कांइ, इमहिज दासी अष्ट।
कार्य पूछी नें करै जी कांइ, किंकर ते अठ श्विष्ट ।।

२७. अट्ठ दासे दासप्पवरे एवं दासीओ एवं किंकरे
'किंकरे' त्ति प्रतिकर्म्म पृच्छाकारिणः
(वृ० प० ५४६)

२८. इम कंचुइज पोलिया जी कांइ, खोजा वरिसधर एम।
कार्य अंतेउर तणां जी कांइ, चिंतक महत्तर तेम ।।

२८. एवं कंचुइज्जे एवं वरिसधरे एवं महत्तरए
'कंचुइज्जे' त्ति प्रतीहारान् 'वरसधरे' त्ति वर्षधरान् वद्धितकमहल्लकान् 'महत्तरान्' अन्तःपुरकार्यचिन्तकान्
(वृ० प० ५४७)

२९. सोना नां सांकल बंध्या जी कांइ, दीपक आठ उदार।
रूपा नां सांकल बंध्या जी कांइ, अष्ट दीपक श्रीकार ।।

२९. अट्ठ सोवण्णिए ओलंबणदीवे अट्ठ रुप्पामए ओलंबण-दीवे
'ओलंबणदीवे' त्ति शृंखलाबद्धदीपान्
(वृ० प० ५४७,५४८)

३०. सुवर्ण नें रूपा तणां जी कांइ, सांकल बद्ध उदार।
दीपक अष्ट सुआपिया जी कांइ, इम त्रिहुं भेद विचार ।।

३०. अट्ठसुवण्णरुप्पामए ओलंबणदीवे

३१. अष्ट दीपक सोना तणां जी कांइ, ऊर्ध्व दंडवत देख।
तीन भेद तेहनां कह्या जी कांइ, पूर्ववत संपेख ।।

३१. अट्ठ सोवण्णिए उक्कंबणदीवे एवं चेव तिण्णि वि
'उक्कंबणदीवे' त्ति उकंबनदीपान् ऊर्ध्वदण्डवतः
(वृ० प० ५४८)

३२. आठ दीवा सोना तणां जी कांइ, भोडल सहित तद्रूप।
इम ए पिण त्रिण भेद थी जी कांइ, रूप रु सुवर्ण रूप ।।

३२. अट्ठ सोवण्णिए पंजरदीवे एवं चेव तिण्णि वि
'पंजरदीवे' त्ति अभ्रपटलादिपञ्जरयुक्तान्
(वृ० प० ५४८)

३३. आठ थाल सोना तणां जी कांइ, आठ रूपा रा थाल।
आठ सोना रूपा तणां जी कांइ, थाल विशाल निहाल ।।

३३. अट्ठ सोवण्णिए थाले अट्ठ रुप्पामए थाले, अट्ठ सुवण्णरुप्पामए थाले

३४. आठ परात सोना तणी जी कांइ, आठ रूपा री परात।
आठ सोना रूपा तणी जी कांइ, पवर परात सुजात ।।

३४. अट्ठ सोवण्णियाओ पत्तीओ

३५. आठ थासक सोना तणां जी कांइ, आरीसा आकार।
आठ थासक रूपा तणां जी कांइ, सुवण्ण रूप अठ सार ।।

३५. अट्ठ सोवण्णियाइं थासगाइं
'थासगाइं' ति आदर्शकाकारान् (वृ० प० ५४८)

३६. आठ मल्लक सोना तणां जी कांइ, आठ रूपा नां सार।
आठ सोना रूपा तणां जी कांइ, सिरावला आकार ।।

३६. अट्ठ सोवण्णियाइं मल्लगाइं

३७. अष्ट पात्री सोना तणी जी कांइ, आठ रूपा री ताम।
आठ सोना रूपा तणी जी कांइ, एह रकेबी दाम ।।

३७. अट्ठ सोवण्णियाओ तलियाओ
'तलियाओ' त्ति पात्रीविशेषान् (वृ० प० ५४८)

३८. कुडछी चमचा सुवर्ण तणां जी कांइ, अष्ट सुरूड़े घाट।
आठ रूपा नां जाणज्यो जी कांइ, सुवर्ण रूपक आठ ।।

३८. अट्ठ सोवण्णियाओ कविचियाओ

३९. आठ तवा सोना तणां जी कांइ, आठ रूपा नां उमेद।
आठ सोना रूपा तणां जी कांइ, इमज तवी त्रिहुं भेद ।।

३९. अट्ठ सोवण्णिए अवएडए
'अवएडए' त्ति तापिकाहस्तकान् (वृ० प० ५४८)

४०. आठ बाजोट सोना तणां जी कांइ, आठ रूपा रा बाजोट।
आठ सोना रूपा तणां जी कांइ, मूल नहीं ज्यांमें खोट ।।

४०. अट्ठ सोवण्णियाओ अवयक्काओ

४१. आठ आसन सोना तणां जी कांइ, आठ रूपा रा आसन्न।
अष्ट सुवर्ण रूपा तणां जी कांइ, दीधा होय प्रसन्न ।।

४१. अट्ठ सोवण्णिए पायपीढए

४२. आठ सोना नां कलशिया जी कांइ, आठ रूपा नां जेह।
आठ सोना रूपा तणां जी कांइ, अथवा कचोला एह ।।

४२. अट्ठ सोवण्णियाओ भिसियाओ अट्ठ सोवण्णियाओ करोडियाओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४३. आठ पल्यक सोना तणां जी कांइ, आठ रूपा नां पल्यंक।
आठ सोना-रूपा तणां जी कांइ, आपै नृप शुभ अंक ।।

४३. अट्ठ सोवण्णिए पल्लंके

४४, आठ प्रति सेज्या सोना तणी जी कांइ, आठ रूपा नीं जाण ।
आठ सोना-रूपा तणी जो कांइ, ढोलिया प्रमुख पिछाण ।।

४४. अट्ठ सोवण्णियाओ पडिसेज्जाओ

४५. आठ हंसासन आपिया जी कांइ, हंस आकारे आसन्न ।
आठ कोंचासन आपिया जी कांइ, ए क्रोंच आकार प्रपन्न ।।

४५. अट्ठ हंसासणाइं अट्ठ कोंचासणाइं
हंसासनादीनि हंसाद्याकारोपलक्षितानि (वृ० प० ५४८)

४६. इम गरुडासन अठ दिया जी कांइ, उन्नतासन पिण आठ।
उन्नतादिक आकार छै जी कांइ, शब्द थकी शुद्ध बाट ।।

४६. एवं गरुलासणाइं उन्नयासणाइं
उन्नताद्याकारोपलक्षितानि च शब्दतोऽवगन्तव्यानि
(वृ० प० ५४८)

४७. पनतासन दीर्घासणा जी कांइ, भद्रासण प्रति पेख।
अठ पक्षासन प्रति दिये जी कांइ, मगरासन सुविशेख ।।

४७. पणयासणाइं दीहासणाइं भद्दासणाइं पक्खासणाइं
मगरासणाइं

४८. अठ पद्मासन प्रति दिये जो कांइ, दिसा सौवस्तिक जेह ।
साथिया नें रूपे करी जी कांइ, युक्त अष्ट दै तेह ।।

४८. अट्ठ पउमासणाइं, अट्ठ दिसासोवत्थियासणाइं

४९. अष्ट तेल नां डाबडा जी कांइ, रायप्रश्रेणी जेम ।
जावत अठ सरसव तणां जी कांइ, दिये डाबडा तेम ।।

४९. अट्ठ तेल्ल-समुग्गे जहा रायपसेणइज्जे (सू० १६१)
जाव (सं० पा०) अट्ठ सरिसव-समुग्गे

५०. जाव शब्द थी जाणियै जी कांइ, चूर्ण द्रव्य सुगंध।
तास पुड़ा अठ आपिया जी कांइ, आणी हरष अमंद ।।

५०. अट्ठ कोट्ठ-समुग्गे

५१. इम नागर बेल तणां पुड़ा जी कांइ, चूयवास पुड़ा एम।
तगर पुड़ा पिण आपिया जी कांइ, पुड़ा एलची रा तेम ।।

५१-५३. एवं पत्त-चोयग-तगर-एल-हरियाल-हिंगुलय-
मणोसिल-अंजण-समुग्गे

५२. अठ हरीयाल तणां पुड़ा जी कांइ, पुड़ा हींगलू ना पेख ।
टीकी प्रमुख अर्थे दियो जी कांइ, मणसिल पुड़ा विशेख ।।
५३. अंजन सुरमा नां पुड़ा जी कांइ, जाव शब्द थी एह।
रायप्रश्रेणी थी कह्यो जी कांइ, अष्ट-अष्ट दै तेह ।।
५४. दासी अठ दे कूबडी जी कांइ, जिम उववाई मांहि।
जावत दासी पारसी जी कांइ, अष्ट-अष्ट दै ताहि ।।
वा०—'जहा उववाइए' इति इण वच करी जे कह्यं[1], ते इहां हीज देवानंदा नां व्यतिकर नै विषे छै ते थकी हीज जाणवूं।

५४. अट्ठ खुज्जाओ जहा ओववाइए (सू० ७०) जाव अट्ठ
पारिसीओ

वा०—'जहा उववाइए' इत्यनेन यत्सूचितं तदिहैव
देवानन्दाव्यतिकरेऽस्तीति तत एव दृश्यम्
(वृ० प० ५४८)

५५. अष्ट छत्र वलि आपिया जी कांइ, छत्र धरणहारीज ।
दासी आठ दिये वली जी कांइ, चामर इमज कहीज ।।

५५. अट्ठ छत्ते, अट्ठ छत्तधारीओ चेडीओ, अट्ठ चामराओ,
अट्ठ चामरधारीओ चेडीओ

५६. अष्ट वींझणा आपिया जी कांइ, वींझणा नी सुविचार।
धरणहारी अठ दासियां जी कांइ, अठ वली करोडिकाधार ।।[2]

५६. अट्ठ तालियंटे, अट्ठ तालियंटधारीओ चेडीओ, अट्ठ
करोडियाओ, अट्ठ करोडियाधारीओ चेडीओ

५७. अष्ट क्षीर धाई दिये जी कांइ, जाव अष्ट अंक धाय।
दासी अष्ट अंग मर्दका जी कांइ, अल्प मर्दन करै ताय ।।
५८. घणु मर्दन करै ते सही जी कांइ, दासी आठ विचार।
दियै अष्ट दासी वली जी कांइ, स्नान करावणहार ।।

५७,५८. अट्ठ खीरधाईओ जाव (सं० पा०) अट्ठ अंक-
धाईओ, अट्ठ अंगमद्दियाओ, अट्ठ उम्मद्दियाओ, अट्ठ
ण्हावियाओ
इहांगमर्दिकानामुन्मर्दिकानां चाल्पबहुमर्दनकृतो विशेषः
(वृ० प० ५४८)

५९. दास्यां आठ दिये वलि जी कांइ, मंडन करावणहार।
पवर पोसाग सुहामणी जी कांइ, तेह करावण सार ।।

५९. अट्ठ पसाहियाओ
'पसाहियाओ' त्ति मण्डनकारिणीः (वृ० प० ५४८)

६०. अठ वण्णग पीसे तिके जी कांइ, चंदन पीसणहार।
तथा हरतालादिक भणी जी कांइ, पेषण तेह विचार ।।

६०. अट्ठ वण्णगपेसीओ
'वन्नगपेसीओ' त्ति चन्दनपेषणकारिका हरितालादि-
पेषिका वा (वृ० प० ५४८)

---

१. सू० ३०।
२. पीकदानी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६१. अष्ट चूर्ण-पेसी वलि जी कांइ, तंबूल चूर्ण ताम।
अथवा जे गंध द्रव्य नैं जी कांइ, चूर्ण कहियै आम।।

६१. अट्ठ चुण्णगपेसीओ
'चुन्नगपेसीओ' त्ति इह चूर्णः—ताम्बूलचूर्णो गन्धद्रव्यचूर्णो वा (वृ० प० ५४८)

६२. कीड़ करावै ते सही जी कांइ, दास्यां आठ उदार।
देवै अष्ट दास्यां वलि जी कांइ, रमण हसावणहार।।

६२. अट्ठ कीडागारीओ, अट्ठ दवकारीओ
'दवकारीओ' त्ति परिहासकारिणीः (वृ० प० ५४८)

६३. अठ आसन समीप बेसै तिके जी कांइ, नाटक संबंध नी अष्ट।
आज्ञाकारणी अठ वलि जी कांइ, सेवग रूपी श्रिष्ट।।

६३. अट्ठ उवत्थाणियाओ, अट्ठ नाडइज्जाओ अट्ठ कोडुंबिणीओ
'उवत्थाणियाओ' त्ति या आस्थानगतानां समीपे वर्त्तन्ते 'नाडइज्जाओ' त्ति नाटकसम्बन्धिनीः (वृ० प० ५४८)

६४. अष्ट रसोईकारिका जी कांइ, अष्ट रुखालै भंडार।
शेष बोल कहिसै तिके जी कांइ, रूढि कह्यो वृत्तिकार।।

६४. अट्ठ महाणसिणीओ, अट्ठ भंडागारिणीओ
'महाणसिणीओ' त्ति रसवतीकारिकाः शेषपदानि रूढिगम्यानि (वृ० प० ५४८)

६५. धरणहार बालक तणी जी कांइ, तेह रुखालै बाल।
रुखवालै घर पुष्प नां जी कांइ, अठ-अठ दास्यां न्हाल।।

६५. अट्ठ अब्भाधारिणीओ, अट्ठ पुप्फघरणीओ

६६. पाणी घर रुखवालती जी कांइ, अठ बलिकारक जाण।
पवर सेज नीं कारिका जी कांइ, अठ-अठ दास्यां माण।।

६६. अट्ठ पाणिघरणीओ, अट्ठ बलिकारीओ, अट्ठ सेज्जाकारीओ

६७. अभ्यंतर प्रतिचारिका जी कांइ, भ्यंतर कार्य पिछाण।
बाहिरली प्रतिचारिका जी कांइ, अठ-अठ दास्यां जाण।।

६७. अट्ठ अब्भितरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ बाहिरियाओ पडिहारीओ

६८. करणहार माला तणी जी कांइ, दास्यां आठ उदार।
पीसण वाली अठ वलि जी कांइ, देवै हर्ष अपार।।

६८. अट्ठ मालाकारीओ, अट्ठ पेसणकारीओ

६९. अपर अनेरो पिण घणुं जी कांइ, रूपो हिरण सुवन्न।
कांसी नैं वस्तर वलि जी कांइ, देवै होय प्रसन्न।।

६९. अण्णं वा सुबहुं हिरण्णं वा सुवण्णं वा कंसं वा दूसं वा

७०. विस्तीर्ण धन कनक नैं जी कांइ, यावत द्रव्य विद्यमान।
आपै अति उचरंग सूं जी कांइ, हाथ खरचवा जान।।

७०. विउलधणकणग जाव (सं० पा०) संतसारसावएज्जं

७१. जाव वंश सप्तम लगे जी कांइ, अति बहु देता धन्न।
अति भोगविवा बेहचवा जी कांइ, आपै द्रव्य राजन्न।।

७१. अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं। (श० ११।१५६)

७२. दोयसौ नैं चमालीसमीं जी कांइ, ढाल विशाल रसाल।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी जी कांइ, 'जय-जश-मंगलमाल।।

ढाल : २४५

दूहा

१. तिण अवसर महाबल कुंवर, इक-इक त्रिय नैं ताम।
दियां रुपैया रोकड़ा, इक-इक कोड़ अमाम।।

१. तए णं से महब्बले कुमारे एगमेगाए भज्जाए एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयइ

२. आपै इक-इक कोड़ फुन, सोनैया सुखदाय।
मुकुट दिया इक-इक वली, प्रवर मुकुट रै मांय।।

२. एगमेगं सुव्वण्णकोडिं दलयइ, एगमेगं मउडं मउडप्पवरं दलयइ

१. देना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. इम तिमहिज सहु जाव दै, इक-इक पेसणकार।
अन्य बहुरूप सुवर्ण वलि, जाव वेहचवा सार॥

४. तिण अवसर महाबलकुंवर, ऊपर वर प्रासाद।
अवतंसके रह्यो थको, अधिक हरष अहलाद॥

५. जिम जमाली नों कह्यो, पूर्वे जे अधिकार॥
कहिवो तिम महाबल तणो, जावत विचरै सार॥

६. *तिण काले हो तिण समय सुजान,
तेरमा विमल अरिहंत पिछाणियै।
तास प्रपोतो हो कहियै शिष्य संतान,
धर्मघोष नामे महामुनि जाणियै॥

वा०—जे भणी विमल, अनन्त के बीच अन्तर ९ सागर को। अनन्त धर्म के बीच अन्तर ४ सागर को। धर्म, शांति के बीच अन्तर ३ सागर। पिण तिण में पूण पल्य ऊंणो, एहवुं तीर्थंकर लेखा में अन्तर कह्यं छै। अनें ए महाबल ब्रह्म देवलोके दश सागर स्थिति भोगवी सुदर्शण थयुं ते माटे विमलनाथ तीर्थ नें विषे घणां सागर उलंघ्या पछै महाबल थयुं एहवुं संभवै छै।

७. जातिसंपन्नें हो वर्णक जिम केशी स्वाम,
जाव पंच सय श्रमण संग परवरचा।
पुव्वाणुपुव्वि हो कहियै पंथ सुधाम,
ग्रामानुग्राम विचरता गुण भरचा॥

८. जिहां हत्थिणापुर हो सहस्रांब वन उद्यान,
तिहां मुनि आय आज्ञा ले शोभाविया।
संजम तप करि हो आतम भावित जान,
यावत विचरै भविक मन भाविया॥

९. हत्थिणापुर हो नगर विषे तिणवार,
स्थान शृंगाटक त्रिक चउक्क चच्चरै।
यावत परषद हो पुर जन वृंद उदार,
विनय वंदन करि त्रिविध सेवा करै॥

१०. तिण अवसर हो महाबल नाम कुंवार,
मनुष्य घणां नां शब्द सुणी करी।
जन व्यूहजनवृंद हो देखी करै विचार,
इम जमाली जेम चितवणा चित धरी॥

११. तिमज तेड़ावै हो पुरुष कंचुइज जाण,
कंचुइज नर पोलियै विध वरी।
कंचुइज पिण हो तिमहिज भाखै वाण,
णवरं धर्मघोष आया निश्चै करी॥

१२. बे कर जोड़ी हो बोलै इणविध वाय,
जाव मनुष्य बहु वंदण कारणे।
एक दरवजे हो जाये छै अधिकाय,
आगल पाठ तास इम धारणे॥

३. एवं तं चेव सव्वं जाव एगमेगं पेसणकारिं दलयइ, अण्णं वा सुबहुं हिरण्णं वा जाव (सं० पा०) परिभाएउं। (श० ११।१६०)

४. तए णं से महब्बले कुमारे उप्पिं पासायवरगए

५. जहा जमाली (श० ९।१५६) जाव····विहरइ। (श० ११।१६१)

६. तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे

७. जाइसंपन्ने वण्णओ जहा केसिसामिस्स जाव पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे

८. जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। (श० ११।१६२)

९. तए णं हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर···जाव परिसा पज्जुवासइ। (श० ११।१६३)

१०. तए णं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स तं महयाजणसद्दं वा जणवूहं वा जाव जणसन्निवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा एवं जहा जमाली (श० ९।१५८) तहेव चिंता

११. तहेव कंचुइज्ज-पुरिसं सद्दावेति (सं० पा०) कंचुइज्जपुरिसो वि तहेव अक्खाति नवरं—धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छए

१२. करयल जाव निग्गच्छइ।

---

*लय : विचरत विचरत हो आया सोजत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. इम निश्चे करि हो देवानुप्रिया ! सार,
तेरमा विमल तीर्थंकर नों सही ।।
पवर प्रपोतो हो धर्मघोष अणगार,
शेष तिमज पंच सय थी आया वही ।।

१४. यावत महाबल हो जमाली जिम जाण,
नीकल्यो रथ प्रधान बेसी करी ।।
वंदना करि हो सन्मुख बेठो ताम,
धर्मकथा केसी स्वाम ज्यूं वागरी ।।

१५. ते पिण तिमहिज हो मात पिता नें पूछंत,
इतरो विशेष धर्मघोष मुनि कनैं।
मुंड थई नें हो लेसूं चरण सुतंत,
मात पिता नें कहै आज्ञा दीजै म्हनैं ।।

१६. उत्तर पड़ुत्तर हो जमाली जिम धार,
णवरं विशेष अमा पिता उच्चरै ।
विपुल राजकुल हो बालिका तुझ नार,
शेष विस्तार जमाली तणी परै ।।

सोरठा

१७. विपुल कुल तणी नार, जमाली नें मां कह्यो।
इहां महाबल अधिकार, विपुल राजकुल बालिका ।।

१८. *यावत थाका हो मात पिता तिणवार,
मन विण महाबल कुंवर प्रतै कहै ।
एक दिवस नों हो राज करो सुखकार,
एह देखण री इच्छा मुझ मन लहै ।।

१९. तिण अवसर हो महाबल नामें कुमार,
मात पिता नो वचन अणलंघतो ।
मून साधी हो बोल्यो नहिं तिणवार,
नृप पद नीं नहिं चाह चरणरतो ।।

२०. हिव बल राजा हो सेवग पुरुष बोलाय,
जिम शिवभद्र नें शिव नृप पद दियो ।
तिम इहां कीधो हो राज्य अभिषेक ताय,
कर जोड़ कुंवर नें जय विजय वधावियो ।।

२१. जय विजय वधावी हो बोलै इहविध वाय,
कह नीं हे पुत्र ! स्यूं आपां ? स्यूं वांछियै ?
शेष थाकतो हो जमाली ज्यूं कहाय,
मोटे मंडाण करै चारित्र लियै ।।

२२. जाव तिवारै हो महाबल मुनिराय,
धर्मघोष अणगार समीप ही ।
धुर सामायक हो आदि देइ नें ताय,
चउद पूर्व प्रति ताम अहिज्जई ।।

*लय : विचरत विचरत हो आया सोजत

१३. एवं खलु देवाणुप्पिया ! विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे, सेसं तं चेव जाव सो वि तहेव । (सू० १६४ पा० टि० १)

१४. तए णं से महब्बले कुमारे तहेव (श० ९।१६०-१६२) रहवरेणं निग्गच्छति। धम्मकहा जहा केसिसामिस्स (राय० सू० ६९३) ।

१५. सो वि तहेव अम्मापियरं आपुच्छइ, नवरं—धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए।

१६. तहेव वुत्तपडिवुत्तिया, नवरं—इमाओ य ते जाया ! विउलरायकुलबालियाओ······सेसं तं चेव ।
(श० ९।१६४-१७९)

१७. जमालिचरिते हि विपुलकुलबालिका इत्यधीतमिह तु विपुलराजकुलबालिका इत्येतदध्येतव्यम् ।
(वृ० प० ५४९)

१८. जाव ताहे अकामाइं चेव महब्बलकुमारं एवं वयासी—तं इच्छामो ते जाया ! एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासित्तए। (श० ११।१६६)

१९. तए णं से महब्बले कुमारे अम्मापिउ-वयणमणुयत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ। (श० ११।१६७)

२०. तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ एवं जहा सिवभद्दस्स (श० ११।५९-६२) तहेव रायाभिसेओ भाणियव्वो जाव अभिसिंचति, करयलपरिग्गहियं···महब्बलं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेति ।

२१. वद्धावेत्ता एवं वयासी—भण जाया ! किं देमो ? किं पयच्छामो ? सेसं जहा जमालिस्स तहेव
(श० ९।१८०-२१५)

२२. जाव (श० ११।१६८)
तए णं से महब्बले अणगारे धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३. चउथ छठादिक हो जाव विचित्र प्रकार,
तप करिवैं करी आतम भावतो ।
बहु प्रतिपूर्ण हो द्वादश वर्ष उदार,
चरण पर्याय निर्मल ध्यान ध्यावतो ।।

२३. बहूहिं चउत्थ जाव (सं०पा०) विचेत्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ ।

२४. मास संलेखण हो साठ भक्त अणसण छेद,
व्रत नां अतिचार आलोई पडिकमी ।
समाधि पाम्यो हो महामोटो मुनि संवेद,
काल नैं अवसर काल करी दमी ।।

२४. मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा

२५. ऊर्ध्व चंद रवि हो जिम अम्मड़[1] आख्यात,
जाव ब्रह्मलोक नाम कल्प मही ।
मुनि ऊपनों हो देवपणैं सुविख्यात,
प्रबल पुन्य करनैं बहु ऋद्धि लही ।।

२५. उड्ढं चंदिम-सूरिय (सं० पा०) जहा अम्मडो जाव बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववन्ने ।

२६. तिहां केइ सुर नीं हो दश सागर नी आय[2],
तिहां महाबल देव तणी पिण जाणियै ।
दश सागर नीं हो कहि उत्कृष्टि स्थिति प्राय,
रूप प्रचारिका ते सुर माणियै ।।

२६. तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं महब्बलस्स वि देवस्स दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।

सोरठा

२७. चउदश पूरवधार, जघन्य थकी पिण लंतके ।
ऊपजवो सुविचार, किम ए ब्रह्म ऊपनों ।।
२८. उत्तर तेहनों एह, चउदश पूरव नैं विषे ।
किंचित ऊण पढेह, एहवूं न्याय जणाय छै ।।

२७,२८. इह च किल चतुर्दशपूर्वधरस्य जघन्यतोऽपि लान्तके उपपात इष्यते, 'जावंति लंतगाओ चउदसपुव्वी जहन्नउववाओ' त्ति वचनादेतस्य चतुर्दशपूर्वधरस्यापि यद् ब्रह्मलोके उपपात उक्तस्तत केनापि मनाग् विस्मरणादिना प्रकारेण चतुर्दशपूर्वाणामपरिपूर्णत्वादिति संभावयन्तीति । (वृ० प० ५४६)

२९. *श्री जिन भाखैं हो अहो सुदर्शन ! ताम,
स्थिति दश सागर ब्रह्म कल्प मही ।
दिव्य प्रधानज हो भोग जिके अभिराम,
भोगवते थके विचरी नैं सही ।।

२९. से णं तुमं सुदंसणा ! बंभलोगे कप्पे दस सागरोवमाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्ता ।

३०. ते निश्चै करि हो देवलोक थी आम,
देव आयु क्षय करिनैं तिहां ।
चवी अनंतर हो तूं ऊपनो इण ग्राम,
श्रेष्ठि तणै कुल पुत्रपणैं इहां ।।

३०. तओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव वाणियगामे नगरे सेट्ठि-कुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाए । (श० ११।१६६)

३१. तुम्हे सुदर्शन हो बाल भाव मूकाण,
कला कुशल वय योवन पावियो ।
तथारूप जे हो स्थविर संत पैं जाण,
केवलि भाख्यो धर्म दिल आवियो ।।

३१. तए णं तुमे सुदंसणा ! उम्मुक्कबालभावेणं विण्णय-परिणयमेत्तेणं जोव्वणगमणुपत्तेणं तहारूवाणं थेराणं अंतियं केवलिपण्णत्ते धम्मे ।

---

*लय : विचरत विचरत हो आया सोजत

१. अंगसुत्ताणि भाग २ श० ११।१६६ का पाद टिप्पण एवं ओवाइयं सू० १४० का पादटिप्पण द्रष्टव्य है ।

२. आयुष्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरठा

३२. जिण आज्ञा-रूपज धर्म, निसुण्यो ते पिण धर्म नें।
वंछ्यो वारू मर्म, विशेष वंछ्यो नैं रुच्यो ॥

३३. *सुष्ठु आछो हो तुम्हे सुदर्शन ! ताम,
हिवडां पिण तेह धर्म प्रति तूं करै।
तिण अर्थे कर हो अहो सुदर्शण ! आम,
क्षय अपचय पल्य उदधि नों इम वरै ॥

सोरठा

३४. सर्व थकी जे नाश, क्षय कहियै छै तेहनैं।
अपचय देश विणास, उभय शब्द इण कारणे ॥

३५. *दोयसौ नें हो पैंतालीसमी ढ़ाल,
भिक्षु भारीमाल नृपशशि गुणनिला।
तास प्रसादे हरष विनोद विशाल,
'जय-जश' आनन्द च्यार तीर्थ भला ॥

३२. निसंते, सेवि य धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए।

३३. तं सुट्ठु णं तुमं सुदंसणा ! इदाणिं पि करेसि। से तेणट्ठेणं सुदंसणा ! एवं वुच्चइ -- अत्थि णं एतेसिं पलिओवमसागरोवमाणं खएति वा अवचएति वा। (श० ११।१७०)

ढाल : २४६

दूहा

१. श्रेष्ठि सुदर्शन तिण समय, महावीर नैं पास।
एह अर्थ प्रति सांभली, हिवड़े धारी तास ॥

२. अध्यवसाय शुभे करी, शुभ परिणामे तेह।
लेश्या विशुद्धमान करि, भावे लेश्या एह ॥

३. तदावरणी कर्म नों, क्षय उपशम करि जान।
ईहा भली विचारणा, अपोह ते धर्मध्यान ॥

४. मार्गणा रु गवेसणा, समचै अधिक सुचित।
वारू एम विचारतां, जाती-समरण हुंत ॥

५. निज भव संज्ञी रूप जे, पूरव जाति पिछाण।
तेहनों समरण ज्ञान ते, उपनों अधिक प्रधान ॥

६. जाती-समरण कर तदा, वीर कही जे वात।
सम्यक प्रकारे अर्थ थी, जाण रह्यो साक्षात ॥

†प्रभु धिन-धिन शासण रा धणी,
वले धिन-धिन आपरो ज्ञान हो।
प्रभु धिन-धिन वाणी आपरी,
वले धिन-धिन आपरो ध्यान हो ॥ (ध्रुपदं)

१. तए णं तस्स सुदंसणस्स सेट्ठिस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म

२. सुभेणं अज्झवसाणेणं सुभेणं परिणामेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं

३. तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-

४,५. मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स सण्णीपुव्वे जातीसरणे समुप्पन्ने
'सन्नी पुव्वजाईसरणे' त्ति संज्ञिरूपा या पूर्वा जातिस्तस्याः स्मरणं यत्तत्तथा (वृ० प० ५४६)

६. एयमट्ठं सम्मं अभिसमेति। (भ० श० ११।१७१)
'अहिसमेइ' त्ति अधिगच्छतीत्यर्थः (वृ० प० ५४६)

---

*लय : विचरत विचरत हो आया सोजत
†लय : रे जीव मोह अनुकम्पा न

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. सेठ सुदर्शण तिण समय, श्रमण भगवंत श्री महावीर हो।
पूरव भव संभारयो तिणे, प्रभु याद करायो हीर हो ।।
८. भव पाछिल याद आयां थकां, पूर्व काल तणी अपेक्षाय हो।
श्रद्धा संवेग दुगुणो ऊपनों, हिय पाम्यो हरष अथाय हो ।।
९. श्रद्धा तत्त्व तणी रुचि अति बधी, अथवा भला अनुष्ठान हो।
ते करवा तणी इच्छा घणी, कह्यो श्रद्धा नों अर्थ पिछान हो ।।
१०. भव भ्रमण तणो भय अधिक घणो, धुर अर्थ संवेग नों एह हो।
अथवा अभिलाषा मोक्ष नी, ते पिण तास बधी दुगुणेह हो ।।
११. अधिक आनन्द करी तदा, अश्रुपूर्ण नयन छै तास हो।
घणो हरष हिया में ऊपनो, पूर्व भव याद आयां विमास हो ।।
१२. श्रमण भगवंत महावीर नें, प्रदक्षिणा दे तीन वार हो।
वंदना वच स्तुति नमी करी, इम बोल्यो वचन विचार हो ।।

१३. एवमेयं प्रभु ! इमहीज ए, जाव ते वच एह उदार हो।
तुम्है कहो जे सत्य छै, एम कही तिहवार हो ।।
१४. कूण ईशाण विषे जई, सेठ ऋषभदत्त जेम हो।
जाव सर्व दुःख क्षय किया, पाम्या अविचल क्षेम हो ।।
१५. णवरं विशेष छै एतलो, भणियो पूरव चउदश ताय हो।
घणो प्रतिपूर्ण तिण पालियो, बारै वर्ष चारित्र पर्याय हो ।।
१६. शेष ऋषभदत्त जिम जाणज्यो, सेवं भंते ! सेवं भंते ! ताम हो ।।
प्रभु ! तुम्हे कह्यो सर्व सत्य छै, इम बोल्या गोतम स्वाम हो ।।
१७. एवो एकादशमा शतक नो, कह्यो एकादशमो उद्देश हो।
अधिकार कह्यो महाबल तणो, तिणमें वारू वैराग विशेष हो ।।
१८. ढाल दोयसौ नें छयालीसमीं, भिक्षु भारीमाल ऋषिराय हो।
तास प्रसादे संपदा, 'जय-जश' अधिक सवाय हो ।।

एकादशशते एकादशोद्देशकार्थः। ।।११।११।।

७. तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणेणं भगवया महावीरेणं संभारियपुव्वभवे
८. दुगुणाणीयसड्ढसंवेगे
९. तत्र श्रद्धा—तत्त्वश्रद्धानं सदनुष्ठानचिकीर्षा वा
(वृ० प० ५४६)
१०. संवेगो—भवभयं मोक्षाभिलाषो वेति ।
(वृ० प० ५४६)
११. आणंदंसुपुण्णनयणे
१२. समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—
१३. एवमेयं भंते ! जाव (सं० पा०) से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु
१४. उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, सेसं जहा उसभदत्तस्स (भ० ९।१५१) जाव सव्वदुक्खप्पहीणे
१५. नवरं—चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ।
१६. सेसं तं चेव। (श० ११।१७२)
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति। (श० ११।१७३)

ढाल : २४७

दूहा

१. एकादशम उदेश में, काल कह्यो जगनाथ।
द्वादशमें पिण तेहिज हिव, भंगांतरे विख्यात ।।
२. तिण काले नें तिण समय, आलभिया अभिराम।
नगरी हुंती संख वन, चैत्य वर्णक बिहुं ताम ।।
३. तिण आलभिया नगरी विषे, इसिभद्र सुत आद।
समणोपासग बहु वसै, अड्ढा ऋद्धि अगाध ।।
४. यावत धन करिनें तसु, गंज सकै नहि कोय।
जाण्या जीव अजीव नें, यावत विचरै जोय ।।

१. एकादशोद्देशके काल उक्तो द्वादशेऽपि स एव भंग्यन्तरेणोच्यते (वृ० प० ५५०)
२. तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया नामं नगरी होत्था—वण्णओ। संखवणे चेइए—वण्णओ।
३. तत्थ णं आलभियाए नगरीए बहवे इसिभद्दपुत्तपामोक्खा समणोवासया परिवसंति—अड्ढा
४. जाव बहुजणस्स अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति। (श० ११।१७४)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*श्रावक सुंदरू हो गुणिजन इसिभद्र पुत्र उदार ।।(ध्रुपदं)

५. तिण अवसर ते एकदा हो गुणिजन ! श्रावक बहू सुजाण ।
आय मिल्या छै एकठा हो गुणिजन ! बेठा आसन ठाण कै ।।

६. एहवे रूपे ऊपनो हो गुणिजन ! त्यांरे मांहोमांय ।
कथा तणो आलाप ते हो गुणिजन ! चित नां अध्यवसाय कै ।।

७. हे आर्यो ! सुरलोक में हो गुणिजन ! घणां देव नीं ताय ।
स्थिती केतला काल नीं हो गुणिजन ! दाखो श्री जिनराय कै ।।

८. इसिभद्र सुत तिण समै हो गुणिजन ! श्रावक अधिक सुजाण ।
गुरु मुख करि जाणी तिणे हो गुणिजन ! देव स्थिति नीं छाण कै ।।

९. तेह श्रावकां प्रति तदा हो गुणिजन ! बोल्यो एहवी वाय ।
हे आर्यो ! देवलोक में हो गुणिजन ! देव स्थिति कहिवाय कै ।।

१० जघन्य वर्ष दश सहस्र नीं हो गुणिजन ! तिण उपरंत कहाय ।
एक समय अधिको कही हो गुणिजन! दोय समय अधिकाय कै ।।

११. यावत दश समये करी हो गुणिजन ! अधिको स्थिती कहाय ।
संख समय अधिकी वलि हो गुणिजन! असंख समय अधिकाय कै ।।

१२. स्थिति उत्कृष्ट थकी कही हो गुणिजन ! तेतीस सागर जोग ।
तिण उपरंत विच्छेद छै हो गुणिजन ! देव तथा सुर लोग कै ।।

१३. इसीभद्र सुत इम कह्यो हो गुणिजन ! जाव परूपित एम ।
अन्य श्रावक अणसरधता हो गुणिजन ! नाणै प्रतीति प्रेम कै ।।

१४. वलि ए अर्थ रुचै नहीं हो गुणिजन ! अणसरधतां ताय ।
अणप्रतीत अणरोचता हो गुणिजन! आया जिण दिशि जाय कै ।।

१५. तिण काले नैं तिण समय हो गुणिजन ! भगवंत श्री महावीर ।
प्रभुजी जाव समवसरचा हो गुणिजन ! मेरु तणी पर धीर कै ।।

१६. वीर पधारचा सांभली हो गुणिजन ! यावत परषद आय ।
सेव करै साचै मनै हो गुणिजन ! त्रिहुं जोगे करि ताय कै ।।

१७. ते श्रावक तिण अवसरे हो गुणिजन ! वीर पधारचा ताम ।
कथा एह लाधां छतां हो गुणिजन ! हरष संतोषज पाम ।।

१८. इम जिम बीजा शतक नां हो गुणिजन ! पंचमुद्देशा मांय ।
वंदन तुंगिया नां गया हो गुणिजन ! तिम ए वंदन जाय कै ।।

१९. यावत जिन नै वंदनैं हो गुणिजन ! नमस्कार विधि रीत ।
सेव करै साचै मनै हो गुणिजन ! तन मन सूं वर प्रीत ।।

२०. प्रभू श्रावकां नैं तदा हो गुणिजन ! मोटी परषद मांय ।
धर्म कथा यावत तिके हो गुणिजन ! आण आराधक थाय कै ।।

२१. ते श्रावक तिण अवसरे हो गुणिजन ! वीर प्रभू पे ताय ।
धर्म सुणी हिये धारनैं हो गुणिजन ! रह्या हरष संतोष अथाय कै ।।

---

*लयः सुण-सुण साधूजी हो मुनिवर

५. तए णं तेसिं समणोवासयाणं अण्णया कयाइ एगयओ समुवागयाणं सहियाणं सण्णिविट्ठाणं

'एगओ' त्ति एकत्र 'समुवागयाणं' ति समायातानां 'सहियाणं' ति मिलितानां 'समुविट्ठाणं' ति आसनग्रहणेन । (वृ० प० ५५२)

६. सण्णिसण्णाणं अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—

७. देवलोगेसु णं अज्जो ! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? (श० ११।१७५)

८. तए णं से इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवट्ठिती-गहियट्ठे

९. ते समणोवासए एवं वयासी—देवलोएसु णं अज्जो !

१०. देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया,

११. जाव दससमयाहिया, संखेज्जसमयाहिया असंखेज्ज-समयाहिया,

१२. उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता । तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ।

(श० ११।१७६)

१३. तए णं ते समणोवासया इसिभद्दपुत्तस्स समणोवासगस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति,

१४. नो रोयंति, एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोयमाणा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया । (श० ११।१७७)

१५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे

१६. जाव परिसा पज्जुवासइ ।

१७. तए णं ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठा

१८,१९. (सं० पा०)एवं जहा तुंगियउद्देसए(भ० २।६७) जाव पज्जुवासंति

'तुंगिउद्देसए' त्ति द्वितीशतस्य पञ्चमे ।(वृ०प० ५५२)

२०. तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ जाव आणाए आराहए भवइ । (श० ११।१७८)

२१. तए णं ते समणोवासया समणस्स भगवओ महा-वीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२. ऊठी नैं ऊभा थई हो गुणिजन ! स्वाम प्रते सुखदाय।
नमस्कार वंदना करी हो गुणिजन ! बोल्या इहविध वाय कै ।।

२३. हे प्रभु ! इम निश्चै करि हो गुणिजन ! इसिभद्र सुत पेख।
अम्ह नैं कहै सामान्य थी हो गुणिजन ! जाव परूपै विशेख कै ।।

२४. हे आर्यो ! सुरलोक में हो गुणिजन ! देव तणी स्थिति ताय।
दश हजार वर्षां तणी हो गुणिजन ! जघन्य कहै जिनराय कै ।।

२५. समय अधिक तिण ऊपरै हो गुणिजन ! जावत तिण उपरंत।
सुर सुरलोक विच्छेद छै हो गुणिजन ! ए किम हे भगवंत ! कै ।।

२६. हे आर्यो ! इम आमंत्री हो गुणिजन ! भगवंत श्री महावीर।
तेह श्रावकां प्रति तदा हो गुणिजन ! इम बोल्या गुणहीर कै ।।

२७. हे आर्यो ! तुम्ह नैं कहै हो गुणिजन ! इसीभद्र सुत सार।
स्थिति सुर नीं सुरलोक में हो गुणिजन ! धुर दश वर्ष हजार कै ।।

२८. समय अधिक तिण ऊपरे हो गुणिजन ! यावत तिण उपरंत।
सुर सुरलोक विच्छेद छै हो गुणिजन ! सत्य अर्थ ए तंत कै ।।

२९. हूं पिण आर्यो ! इम कहूं हो गुणिजन ! जाव परूपूं सार।
सुर नीं स्थिति सुरलोक में हो गुणिजन ! धुर दश वर्ष हजार कै ।।

३०. तिमज जाव तिण ऊपरे हो गुणिजन ! सुर सुरलोक विच्छेद।
अधिक स्थिति सुर नीं नहीं हो गुणिजन ! सत्य अर्थ ए वेद कै ।।

३१. ते श्रावक तिण अवसरे हो गुणिजन ! वीर प्रभु नैं पास।
एह अर्थ निसुणी करी हो गुणिजन ! हिवड़े धारी तास कै ।।

३२. वीर प्रभु नैं वंदनैं हो गुणिजन ! नमस्कार करि ताम।
इसिभद्र सुत छै जिहां हो गुणिजन ! सहु आव्या तिण ठाम कै ।।

३३. ऋषिभद्र सुत श्रावक भणी हो गुणिजन ! स्तुति करै शिर नाम।
ए अर्थ सम्यक विनय करी हो गुणिजन !
वारूंवार खमावै ताम कै ।।

३४. ते श्रावक तिण अवसरे हो गुणिजन ! पूछी प्रश्न उदार।
बहु अर्थ प्रते हृदय विषे हो गुणिजन ! ग्रहै ग्रही नैं सार कै ।।

३५. वीर प्रभु नैं वंदनैं हो गुणिजन ! नमस्कार शिर नाम।
जे दिशि थी आव्या हुंता हो गुणिजन ! ते दिशि गयाज ताम कै ।।

३६. हे प्रभु ! इम गोतम कही हो गुणिजन ! वीर प्रभु नैं ताय।
वांदी शिर नामी करी हो गुणिजन ! बोलै इह विध वाय कै ।।

३७. हे प्रभुजी ! समर्थ अछै हो गुणिजन ! इसिभद्र सुत सार।
देवानुप्रिया आगलै हो गुणिजन ! आणी हरष अपार कै ।।

३८. मुंड द्रव्य भावे करी हो गुणिजन ! छांडी घर अगार।
साधूपणां प्रते सही हो गुणिजन ! लेवा समरथ सार कै ?

३९. जिण कहै अर्थ समर्थ नहीं हो गुणिजन ! इसिभद्र सुत न्हाल।
शीलव्रत बहु आचरी हो गुणिजन ! पंच अणुव्रत पाल कै ।।

२२. उट्ठाए उट्ठेंति, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं वदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—

२३. एवं खलु भंते ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए अम्हं एवमाइक्खइ जाव परूवेइ

२४. देवलोएसु णं अज्जो ! देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता,

२५. तेण परं समयाहिया जाव तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य। (श० ११।१७६)
से कहमेयं भंते ! एवं ?

२६. अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवं वयासी—

२७. जण्णं अज्जो ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तुब्भं एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—

२८. देवलोएसु णं देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया जाव तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगाय—सच्चे णं एसमट्ठे,

२९. अहं पि णं अज्जो ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—देवलोएसु णं अज्जो ! देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता।

३०. (सं० पा०) तं चेव जाव तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य—सच्चे णं एसमट्ठे। (श० ११।१८०)

३१. तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म

३२. समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता, जेणेव इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छंति,

३३. इसिभद्दपुत्तं समणोवासगं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेंति

३४. तए णं ते समणोवासया पसिणाइं पुच्छंति, पुच्छित्ता अट्ठाइं परियादियंति, परियादियित्ता

३५. समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया। (श० ११।१८१)

३६. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

३७,३८. पभू णं भंते ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ?

३९. नो इणट्ठे समट्ठे गोयमा ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए बहूहिं सीलव्वय-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४०. गुणव्रत तीन कहीजियै हो गुणिजन ! प्रवर वेरमण जाण।
ए नवमों व्रत आचरी हो गुणिजन ! दशमों व्रत पचखाण ।।
४१. पोषध उपवासे करी हो गुणिजन ! जिम आदरिया तेम।
तप करि आतम भावतो हो गुणिजन ! स्वस्थ चित्त धर प्रेम कै ।।
४२. पाली बहु वर्षां लगै हो गुणिजन ! श्रावक नों पर्याय।
मास तणी संलेखणा हो गुणिजन ! आतम सेवी ताय कै ।।

४३. साठ भक्त अणसण करी हो गुणिजन ! छेदै छेदी सोय।
एक भक्त छै दिन तणी हो गुणिजन ! द्वितीय निशा नीं जोय कै ।।
४४. व्रत अतिचार आलोय नैं हो गुणिजन ! पडिक्कमी सुविशाल।
समाधि पामी सुंदरू हो गुणिजन ! काल मास करि काल कै ।।
४५. सौधर्म कल्पे सही हो गुणिजन ! वर अरुणाभ विमाण।
देवपणैं महादीपतो हो गुणिजन ! ऊपजस्यै सुविहाण कै ।।
४६. केइक सुर नीं स्थिति तिहां हो गुणिजन !
च्यार पल्योपम जान।
इसिभद्र सुत सुर स्थिति हो गुणिजन ! होस्यै चिउं पल्य मान कै ।।
४७ हे प्रभु ! ते सुरलोक थी हो गुणिजन ! इसिभद्र सुत देव।
काल करी यावत किहां हो गुणिजन ! ऊपजस्यै ततखेव कै ?

४८. वीर कहै सुण गोयमा ! हो गुणिजन ! महाविदेह मझार।
सखर सीझस्यै जाव थी हो गुणिजन ! अंत करै संसार कै ।।
४९. तुम्है कह्यो ते सत्य सहु हो गुणिजन ! इम कहि गोतम स्वाम।
संजम तप करि आतमा हो गुणिजन ! भावित विचरै ताम कै ।।
५०. भगवंत श्री महावीर जी हो गुणिजन ! अन्य दिवस अवधार।
कदाचित आलभिया हो गुणिजन ! नगरी थको तिवार कै ।।
५१. शंख वन जे चैत्य थी हो गुणिजन ! निकले निकली तेह।
बाहिर जनपद देश में हो गुणिजन ! विहार करी विचरेह कै ।।
५२. एकादशमां शतक नों हो गुणिजन ! बारसमो उद्देश।
देश कह्यो छै तेहनों हो गुणिजन ! कहियै छै हिव शेष कै ।।
५३. बे सौ सैंतालीसमीं हो गुणिजन ! आखी ढाल उदार।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी हो गुणिजन !
'जय-जश' संपति सार कै ।।

४०. गुणवेरमण-पचक्खाण-

४१. पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे

४२. बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणिहिति पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेहिति झूसेत्ता

४३. सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेहिति छेदेत्ता

४४. आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा

४५. सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति

४६. तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं इसिभद्दपुत्तस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती भविस्सति। (श० ११।१८२)

४७. से णं भंते ! इसिभद्दपुत्ते देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं जाव (सं०पा०) कहिं उववज्जिहिति ?

४८. गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव (सं०पा०) अंतं काहिति (श० ११।१८३)

४९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति भगवं गोयमे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। (श० ११।१८४)

५०. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ आलभियाओ नगरीओ

५१. संखवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ। (श० ११।१८५)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल : २४८

दूहा

१. तिण काले नैं तिण समय, आलभिया अभिधान।
नगरी हुंती वर्णन तसु, चैत्य संख वन जान।।

२. चैत्य संख वन थी तिहां, अतिही दूर न कोय।
अतिही नजीक पिण नहीं, वसै परिव्राजक सोय।।

३. मोगल एहवे नाम ते, ऋग यजुर् जे वेद।
यावत द्विज नय नैं विषे, प्रवीण जाण्या भेद।।

४. छठ-छठ अंतर-रहित तप, वे बांह ऊंची स्थाप।
रवि सन्मुख आतापना, लेतो विचरै आप।।

५. तिण अवसर मोगल भणी, छठ-छठ जाव आताप।
लेतां भद्र प्रकृतिपणैं, जिम शिव नृप ऋषि थाप।।

६. यावत विभंग नाम ते, अज्ञान ऊपनो तास।
ते विभंग नाम अज्ञान ही, उपने छते विमास।।

७. ब्रह्मलोक कल्प नैं विषे, सुर स्थिती जाणंत।
अवधि दर्शन करिनैं वलि, अमर स्थिती देखंत।।

*सुणज्यो मोगल तापस नी वारता रे लाल।। (ध्रुपदं)

८. तिण अवसर मोगल भणी रे, एहवे रूपे धार। सुखकारी रे।
अज्झत्थिए यावत वली रे लाल,
उपनो मन में विचार।। सुखकारी रे।।

९. ज्ञान दर्शण अतिशेष जे रे, संपूरण सुखदाय। सुखकारी रे।
ते मुझनैं ऊपनो अछे रे लाल,
इम चिंतवै मन मांय।। सुखकारी रे।।

१०. सुरलोके स्थिति सुर तणी रे,
जघन्य दश वर्ष हजार। सुखकारी रे।
समय अधिक तिण ऊपरं रे लाल,
जाव असंख समय अधिकार।। सुखकारी रे।।

११. उत्कृष्ट दश सागर तणी रे,
तिण उपरंत विच्छेद। सुखकारी रे।
सुर अथवा सुरलोक जे रे लाल,
अधिक स्थिति न संवेद।। सुखकारी रे।।

*लय : धीज करै सीता सती रे लाल

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया नामं नगरी होत्था वण्णओ। तत्थ णं संखवणे नामं चेइए होत्था—वण्णओ!

२,३. तस्स णं संखवणस्स चेइयस्स अदूरसामंते पोग्गले[1] नामं परिव्वायए
रिउव्वेदजजुव्वेद जाव बंभण्णएसु परिव्वायएसु य नएसु सुपरिनिट्ठिए

४. छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमूहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरइ। (श० ११।१८६)

५. तए णं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स छट्ठंछट्ठेणं जाव (सं० पा०) आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए (सं० पा०) जहा सिवस्स

६. जाव विब्भंगे नाणे समुप्पन्ने।

७. से णं तेणं विब्भंगेणं नाणेणं समुप्पन्नेणं बंभलोए कप्पे देवाणं ठिंति जाणइ-पासइ। (श० ११।१८७)

८. तए णं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव (सं० पा०) समुप्पज्जित्था।

९. अत्थि णं ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने

१०. देवलोएसु णं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता तेण परं समयाहिया दुसमयाहिया जाव असंखेज्जसमयाहिया

११. उक्कोसेणं दससागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य

१. यहां 'पोग्गले नामं परिव्वायए' पाठ है तथा किसी पाठान्तर का संकेत नहीं है। जयाचार्य ने अपनी जोड़ में 'मोगल परिव्राजक' का उल्लेख किया है। संभव है, उनको प्राप्त आदर्श में यही पाठ हो। नाम का यह भेद लिपिदोष के कारण हुआ है अथवा अन्य किसी कारण से, खोज का विषय है। प्रस्तुत ग्रन्थ में यह द्विरूपता ज्यों की त्यों सुरक्षित रखी गई है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. इ मन मांहै चिंतवी रे,
भूमिआतापन जेह। सुखकारी रे।
तेह थकी पाछो वली रे लाल,
उपधि पोता नां लेह।। सुखकारी रे।।

१२. एवं संपेहेइ संपेहेत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता

१३. दंड कमंडल नैं ग्रही रे,
जाव गेरू रंग्या वस्त्र ताय। सुखकारी रे।
ग्रहण करिनैं आवतो रे लाल,
नगरी आलभिया मांय।। सुखकारी रे।।

१३. तिदंडं च कुंडियं च जाव धाउरत्ताओ य गेण्हइ गेण्हित्ता जेणेव आलभिया नगरी

१४. परिव्राजक नां मठ जिहां रे,
आव्यो तिहां चलाय। सुखकारी रे।
निज भंड प्रति मूकी करी रे लाल,
आलभिया नैं मांय।। सुखकारी रे।।

१४. जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता आलभियाए नगरीए

१५. शृंघाटक जाव पंथ में रे,
कहै जन नैं मांहोमांय। सुखकारी रे।
अतिशेष ज्ञान दर्शन भलो रे लाल,
मुझ ऊपनो सुखदाय।। सुखकारी रे।

१५. सिंघाडग जाव (सं० पा०) पहेसु अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने।

१६. सुरलोक स्थिति सुर तणी रे,
धुर दश वर्ष हजार। सुखकारी रे।
तिमहिज जाव विच्छेद छै रे लाल,
सुर सुरलोक तिवार।। सुखकारी रे।।

१६. देवलोएसु णं देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया दुसमयाहिया जाव असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं दससागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य। (श० ११।१८८)

१७. नगरी आलभिया में तदा रे,
इण आलावे करि ताय। सुखकारी रे।
जिम शिव तिम यावत वदै रे लाल,
किम ए बात मनाय।। सुखकारी रे।।

१७. तए णं (सं० पा०) आलभियाए नगरीए एवं एएणं अभिलावेणं जहा सिवस्स (भ० ११।७३) तं चेव जाव से कहमेयं मन्ने एवं? (श० ११।१८९)

वा०—शिव राजऋषि नैं अधिकारे तो हत्थिणापुर नैं विषे घणां लोक मांहोमांहि इम वदै, इम कह्यो अनैं इहां आलभिया नगरी नैं विषे बहु जन मांहोमांहि वदै इम कहिवो ते माटै आलभिया नैं अभिलापे सूत्रे कह्यू।

१८. एवं स्वामी समवसरचा रे,
जाव परिषद गई स्थान। सुखकारो रे।
वीर तणी वाणी सुणी रे लाल,
संवेग रस गलतान।। सुखकारी रे।।

१८. सामी समोसढे, परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया।

१९. गोतम तिमहिज गोचरी रे,
भिक्षाचरी नैं जाय। सुखकारी रे।
तिमज शब्द बहु मनुष्य नां रे लाल,
सुण चितव्यो मन मांय।। सुखकारी रे।।

१९. भगवं गोयमे तहेव भिक्खायरियाए तहेव बहुजणसद्दं निसामेइ निसामेत्ता

२०. तिम कहिवी सहु वारता रे,
पूछ्यो वीर नैं आय। सुखकारी रे।
वीर कहै मिथ्या अछै रे लाल,
मोगल नी जे वाय।। सुखकारी रे।।

२०. तहेव सव्वं भाणियव्वं

२१. यावत हूं पिण गोयमा! रे,
एम कहूं छूं सार। सुखकारी रे।

२१. जाव अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि एवं भासामि जाव परूवेमि—देवलोएसु णं देवाणं जहण्णेणं दस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुरलोके स्थिति सुर तणी रे लाल,
धुर दश वर्ष हजार ।। सुखकारी रे ।।

वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता

२२. समय अधिक तिण ऊपरे रे,
दोय समय अधिकाय । सुखकारी रे ।
जाव स्थिति उत्कृष्ट थी रे लाल,
तेतीस सागर ताय ।। सुखकारी रे ।।

२२. तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असंखेज्ज-समयाहिया उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।

२३. तिण उपरंत विच्छेद छै रे,
सुर अथवा सुरलोग । सुखकारी रे ।
अधिकी स्थिति नहिं देव नीं रे लाल,
तिण सूं विच्छेद प्रयोग ।। सुखकारी रे ।।

२३. तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ।
(श० ११।१६०)

२४. छै प्रभु ! सौधर्म कल्प में रे,
द्रव्य जे वर्ण सहीत । सुखकारी रे ।
वर्ण रहित पिण द्रव्य छै रे लाल,
तिमहिज प्रश्न सुरीत ।। सुखकारी रे ।।

२४. अत्थि णं भंते ! सोहम्मे कप्पे दव्वाइं—सवण्णाइं पि अवण्णाइं पि ।

२५. जाव हुंता अत्थि जिन कहै रे,
इमहिज कहियै ईशान । सुखकारी रे ।
इम यावत अच्युत कह्यो रे लाल,
इम ग्रैवेयक विमान ।।सुखकारी रे ।।

२५. तहेव (सं० पा०) हंता अत्थि ।
एवं ईसाणे वि, एवं जाव अच्चुए, एवं गेवेज्जविमाणेसु,

२६. इमहिज अणुत्तर विमाण में रे,
इमहिज इसिपब्भार । सुखकारी रे ।
यावत जिन उत्तर दियै रे लाल,
हुंता अत्थि सार ।। सुखकारी रे ।।

२६. अणुत्तरविमाणेसु वि, ईसिपब्भाराए वि जाव ?
हंता अत्थि । (श० ११।१६१)

२७. महा मोटी परषद तदा रे,
जाव गई स्व स्थान । सुखकारी रे ।
आलभिया नां बाजार में रे लाल,
लोक वदै इम वान ।। सुखकारी रे ।।

२७. तए णं सा महतिमहालिया परिसा जाव जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।

तए णं आलभियाए नगरीए..........बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ (सं० पा०)

२८. अवशेष जिम शिव नीं परै रे,
जाव सर्व दुख क्षीण । सुखकारी रे ।
णवरं इतरो विशेष छै रे लाल,
आगल कहियै चीन ।। सुखकारी रे ।।

२८. अवसेसं जहा सिवस्स (भ० ११।८३-८८) जाव सव्वदुक्खप्पहीणे नवरं

२९. त्रिदंड नैं वलि कुंडिका रे,
गेरू रंग्या वस्त्र ताहि । सुखकारी रे ।
ते पहिरयां विभंग पड़ियै छते रे लाल,
नगरी आलभिया मांहि ।। सुखकारी रे ।।

३०. आलभिया मध्य नीकली रे,
यावत कूण ईशाण । सुखकारी रे ।
आवी त्रिदंड नैं कुंडिका रे लाल,
एकांत मूकै जाण ।। सुखकारी रे ।।

३१. जिम खंधक चारित्र लियो रे,
तिमहिज चरण उदार । सुखकारी रे ।
शेष सर्व शिव नीं परै रे लाल,
यावत मोक्ष मझार ।। सुखकारी रे ।।

२९-३१. तिदंडकुंडियं जाव धाउरत्तवत्थपरिहिए परिवडियविब्भंगे आलभियं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ जाव उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ २ तिदंड-कुंडियं च जहा खंदओ (भ० २।५२) जाव पव्वइओ सेसं जहा सिवस्स (भ० ११।८३-८८) जाव ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३२. बाधा रहित सुख भोगवै रे,
एहवा शाश्वता सिद्ध। सुखकारी रे।
सेवं भंते ! गोतम कहै रे लाल,
तुम्ह सत्य वचन समृद्ध ।। सुखकारी रे ।।
३३. एकादशमां शतक नों रे, द्वादशमों उद्देश । सुखकारी रे।
आख्यो शतक इग्यारमो रे लाल,
अर्थ रूप सुविशेष ।। सुखकारी रे ।।
३४. दोयसौ नें अडतालीसमीं रे,
आखी ढाल उदार । सुखकारी रे।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी रे लाल,
'जय-जश' संपति सार ।। सुखकारी रे ।।
एकादशशते द्वादशोद्देशकार्थः ।।११।१२।।

३२. अव्वाबाहं सोक्खं अणुभवंति सासयं सिद्धा ।
सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । (श० ११।१९९)

गीतक-छंद

१. एकादशम जे शतक नों, व्याख्यान म्हैं कीधूं सही।
वर न्याय निर्णय मेलिया, फुन सूत्र अनुसारे वही ।।
२. इह विषे जो हेतू तिको, जन सुणो धर आह्लाद ही ।।
भिक्षु नें भारीमाल फुन, नृपइंदु नोंज प्रसाद ही ।।

१,२. एकादशशतमेवं, व्याख्यातमबुद्धिनापि यन्मयका ।
हेतुस्तत्राग्रहिता, श्रीवाग्देवीप्रसादो वा ।।
(वृ० प० ५५२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रज्ञापुरुर्ष जयाचार्य

छोटा कद, छरहरा बदन, छोटे-छोटे हाथ-पांव, श्यामवर्ण, दीप्त ललाट, ओजस्वी चेहरा– यह था जयाचार्य का बाहरी व्यक्तित्व।

अप्रकंप संकल्प, सुदृढ़ निश्चय, प्रज्ञा के आलोक से आलोकित अंत:करण, महामनस्वी, कृतज्ञता की प्रतिमूर्ति, इष्ट के प्रति सर्वात्मना समर्पित, स्वयं अनुशासित, अनुशासन के सजग प्रहरी, संघ व्यवस्था में निपुण, प्रबल तर्कबल और मनोबल से संपन्न, सरस्वती के वरद्पुत्र, ध्यान के सूक्ष्म रहस्यों के मर्मज्ञ–यह था उनका आतरिक व्यक्तित्व।

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्यप्रवर्तक, आचार्य भिक्षु के वे अनन्य भक्त और उनके कुशल भाष्यकार थे। उनकी ग्रहण-शक्ति और मेधा बहुत प्रबल थी। उन्होंने तेरापंथ की व्यवस्थाओं में परिवर्तन किया और धर्मसंघ को नया रूप देकर उसे दीर्घायु बना दिया।

उन्होंने राजस्थानी भाषा में साढ़े तीन लाख श्लोक प्रमाण साहित्य लिखा। साहित्य की अनेक विधाओं में उनकी लेखनी चली। उन्होंने भगवती जैसे महान् आगम ग्रंथ का राजस्थानी भाषा में पद्यमय अनुवाद प्रस्तुत किया। उसमें ५०१ गीतिका हैं। उसका गंथमान है– साठ हजार पद्य प्रमाण।

- जन्म–१८६० रोयट (पाली मारवाड़)
- दीक्षा–१८६९ जयपुर
- युवाचार्य पद–१८९४ नाथद्वारा
- आचार्य पद–१९०८ बीदासर
- स्वर्गवास–१९३८ जयपुर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

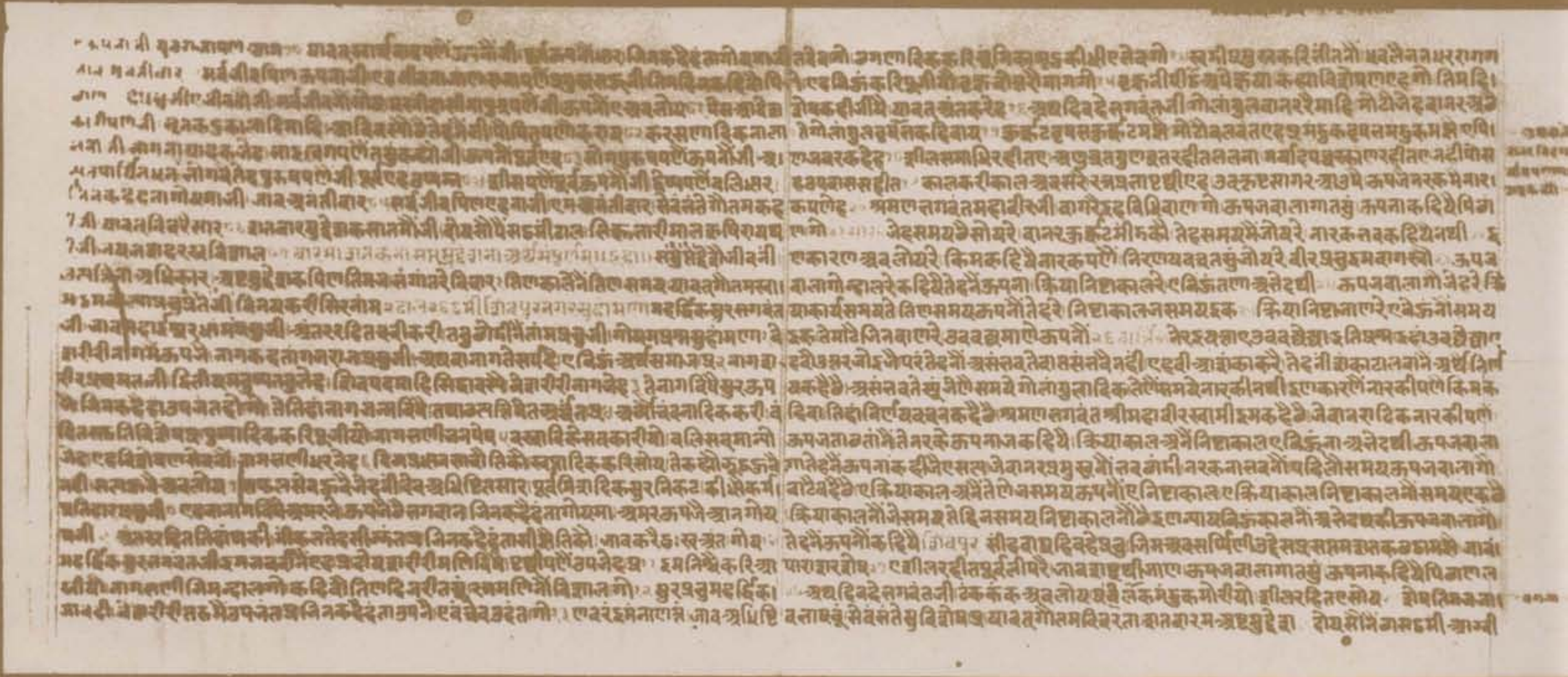

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org